अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१	कृष्णायनप्रसग	३०७	३१६
२	कृष्णजन्मोत्साहपूतनाशकागासुरतृणावर्त्तवध	३१६	३२४
३	कृष्णदधिचोरी वाक्यविलासवर्णन	३२४	३३२
४	कृष्णऊखलबन्धनयमलार्जुनउद्धारराधिका विवाहब्रह्माबच्छहरणधेनुकवधवर्णन	३३२	३४०
५	कृष्णचतुर्मासाचीरहरण दानलीला आदि	३४०	३४६
६	कृष्णरासलीला	३४६	३५५
७	कृष्णमथुराआगमन ...	३५५	३६२
८	कृष्णकुबरीगृहागमन ...	३६२	३६८
९	उद्धवव्रजआगमन	३६८	३८१
१०	कृष्णजरासन्धसमर ...	३८२	३८७
११	कृष्णरुक्मिणीहरण ...	३८७	३९३
१२	रुक्मिणीमंगल प्रद्युम्नोत्पत्ति व रतिविवाह	३९३	३९८
१	रामायणप्रसग रावण उत्पत्ति अरु युद्ध में जयपराजयवर्णन ...	३९९	४०७
२	मेघनादअहिरावणविजयवर्णन...	४०७	४१३
३	रामजन्मउत्सव	४१३	४२०
४	श्रीरामचन्द्रबाललीला ..	४२६	४३४
५	रामचरित्रवर्णन	४३५	४४८
६	विश्वामित्रमखरक्षण ...	४४८	४५७
७	श्रीरामचन्द्ररङ्गभूमिआगमनवर्णन	४५७	४७०
८	श्रीपरशुरामवनयात्रा ...	४७१	४७९
९	श्रीरामचन्द्रविवाह	४७९	४८९

अध्याय	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
१०	श्रीरामकलेवा ...	४८९	४९१
११	श्रीरामचन्द्रश्रीअयोध्याआगमनवर्णन	४९२	४९८
१२	श्रीरामवनयात्रानृपविषादवर्णन	४९९	५१०
१३	श्रीरामचित्रकूटागमन ...	५१०	५१९
१४	श्रीभरतचित्रकूटगमन	५१९	५२६
१५	श्रीभरतचित्रकूटागमन ...	५२६	५३४
१६	श्रीभरतपादुकाअभिषेकवर्णन ...	५३४	५४२
१७	श्रीरामदण्डकवनआगमनवर्णन	५४३	५५१
१८	श्रीरामशबरीगृहआगमनवर्णन...	५५१	५६३
१९	श्रीरामसुग्रीवमित्रता ...	५६४	५७०
२०	बालिवधसैनआगमन .	५७१	५७४
२१	मारुतनन्दनश्रीसीताप्रतिश्रीरामसदेशवर्णन	५७५	५८१
२२	हनुमानलङ्काविध्वस ...	५८१	५९०
२३	श्रीरामसिन्धुतटागमन ...	५९०	५९९
२४	श्रीरामसुबेलआगमन ...	६००	६०४
२५	अगदरावणसवाद	६०५	६११
२६	लक्ष्मणहितरामविरह ...	६११	६१८
२७	मेघनादवध और सुलोचनासतीवर्णन	६१९	६२६
२८	कुम्भकर्णवध रामरावणसमरवर्णन	६२६	६३३
२९	श्रीरामकरकेरावणवधश्रीअयोध्याआगमन	६३३	६३८
३०	श्रीरामभरतमिलाप श्रीरामराज्यअभिषेक	६३९	६५२
	प्रश्नावली	६५३	६५९

इति ॥

बाबा रघुनाथदासरामसनेहीकृत

बिश्रामसागर ॥

श्लोक ॥

सीतारामेति युगलं वस्तुतस्त्वेकरूपिणम् ।
परमानन्दसन्दोहं सर्वाराध्य नतोस्म्यहम् ॥
तत्प्राप्त्यै परिमार्गिता हि बहवो लोके जना नैव तत्
दातार हरिभक्तदासगुरुतो नान्यं क्वचिद्दृष्टवान् ॥
तेषामेव तु पादपद्मप्रभवा यासुस्त्वचक्ष्वाजिह
रघुनाथाखिलग्रन्थसारसुखदं विश्रामसिन्धौ इते ॥

दो० सुमिरि राम सियसन्तगुरु, गणपतिगिरासुखदानि ।
नाना ग्रन्थन केर मत, कैहौंग्रन्थनावखानि ॥
बन्दौं शारदके चरण, हरण अविद्यामूल ।
बुधिसुधिविद्या दे सुमति, ह्वै मोपर अनुकूल ॥

छं० एकरदन करिवदन सदन सुखके दुखनाशक ।
ईशतनय गणईश शीश रजनीश प्रकाशक ॥
ऋद्धि सिद्धि बुधि लेत देत हरि कुमति न जागत ।
जो सुमिरै मनलाय विघ्न ता जन के भागत ॥
जैजैगणेशगिरिजासुवनभुवनविदितयश अघहरण ।
रघुनाथदास बन्दनकरत बारबार गणपतिचरण ॥
जय अनङ्ग अरिसङ्ग उमा अरधङ्ग विराजत ।
मुण्डमाल मृगछाल कण्ठ विष व्याल जो छाजत ॥
शीश गङ्ग सारङ्ग भस्म सर्वाङ्ग लगावत ।
तीननयन मृदुवयन अयन सुख दुख नशावत ॥
दीनदयाल कृपाल हर करत्रिशूल बर गौरतन ।
रघुनाथदास बन्दनकरत करौकृपा मोहिजानिजन ॥
बन्दौं द्विजपदकमल अमल सुन्दर सबलायक ।
बन्दौं रघुपति सचिवसखा सेवकसुखदायक ॥
बन्दौं गङ्ग तरङ्ग मेदिनी कुमुद बिभाकर ।
बन्दौं सुर मुनि मनुज दनुज बिधि जीव चराचर ॥
बन्दौंकविकोविदविमल जिनवरणयोसियरामयस ।
सब मोपर किरपा करहु कहौं कथा बलपायतस ॥

रामचरित्र विचित्र अपारा * गावत निगम न पावत पारा
निजमतिसारिस तदपि मुनि गावै * मनचञ्चल तेहि तहा रमावै
श्रवण कीरतन सुमिरण सेवा * भक्ति अङ्ग भाषत महिदेवा
करन पवित्र गिरा अवहारी * सबप्रकार मुद मङ्गल कारी
अस विचारि बरणत रघुनाथा * भाषा करि हरिप्रेरित गाथा
कावन दोष गुणग्रन्थ मँझारा * कहे नागपति यहि परकारा

रोला ॥ मगण नगण अरु भगण यगण शुभ चारि कहावै ।
जगण रगण पुनि सगण तगण कवि अशुभ बतावै ॥
मगण तीन गुरु आदि देव महि सब सुखकारी ।
नगण तीन लघु देव नाग दायक बुधि भारी ॥
भगण आदि गुरु देव चन्द्र मङ्गलदा होई ।
यगण आदि लघु देव नीर आनँद प्रद सोई ॥
जगण मध्य गुरु देव सूर सुख सकल विनासै ।
रगण मध्य लघु देव अग्नि दाहन तनु त्रासै ॥
सगण अन्त गुरु देव काल नित देत उदासी ।
तगण अन्त लघु देव व्योम निरफल फल नासी ॥
मनुज कवितके आदिमहँ कीजै इन्हँ विचारिखुब ।
कहैरघुनाथ श्रीरामगुण वरणत अशुभौ होत शुभ ॥

दो० तहां मित्र कोउ दास है, उदासीन रिपु कोउ ।
अक्षर शुद्ध अशुद्ध कोउ, सुनो कहौं मैं सोउ ॥
खगकच घनवन जड़परन, छतहति सुखप्रद अङ्क ।
शेष परै जो कवित तो, करै राव ते रङ्क ॥

यहि विधि पिंगल कहत बखानी * सो है मम विशेष नहिं जानी
तेहि ते सब कहौं कर जोरी * जो कछु चूक परै लखि मोरी
सुजन सुधारि लहेउ तुम ताही * लघु गुरु वरण जहां जस चाही
मोहिं न ज्ञान बुधिबल चतुराई * कीन्ह चहौं हरिकथा सुहाई
मति अतिहीन पीन रुचि मोरी * चाहत नभै छुवन बरजोरी
यह ढीठता समुझि वर शानी * क्षमिहैं निज शिशुसेवक जानी
सुनिहैं मुदित सराहि सराहीं * रामसिया पद रत मति जाही
जिमि बालक बोलत तुतराई * सुनत मातु पितु अति हरषाई

निंदहिं कपटी खल अभिमानी * जे हरिविमुख भक्ति नहिं जानी
तासुवचन सुनि सुजन सुछन्दा * तजहिं न उड़पदोष शिवनिन्दा
रविहि उलूक कहै भल नाही * साधौ किमि धारै मन माही
निन्दाफल नाहि कह्यो बखानी * पैहैं जब तब जैहै जानी

दो० रामकथा सबको सुखद, ऋतु बर्षा की नाइँ ।
अर्कजवासा दुष्टजन, ते आपुइ जरिजाइँ ॥

यद्यपि रहै मम भणित भदेशी * परिहरि जनगुणनामते लेशी
ताते भई अनूपम नीकी * जिमिमणिमंडित चौतनी फीकी
हरिहरिजनबिन जो कविताई * सुभग प्राणबिन जिमि बपुभाई
खल बायस कर तीरथ सोई * सुजनहंस तह रमै न कोई
छन्द प्रबन्ध न हरिगुण गावै * सर्जीवनि सोइ काव्य कहावै
कहैं सुनैं मिलि सज्जन ताही * करैं प्रणाम प्रीति गुणग्राही
यथा बक्रगति सरित निहारी * तासु पाथ पावन सुखकारी
मज्जहिं ताहि महामुनि देवा * अपर न काको बरणौ भेवा

दो० श्रीपति धीपति यज्ञपति, अखिललोकपतिजोपि ।
प्रणवौं भूपति प्रजापति, करौ कृपा प्रभु सोपि ॥
बन्दौं हरिजन पदकमल, अमल तत्त्वप्रद रेनु ।
जिनकेसँगप्रभुफिरतहमि, जिमि बछरासँग धेनु ॥
यद्यपि कामी कुटिलखल, समली जन रघुनाथ ।
तद्यपि अहै तुम्हारोई, समुझि न छांडो हाथ ॥
बड़कृत अङ्गीकार जेहि, प्रतिपालत सजिताहि ।
अहिमहिहरबिपदधिअगिनि,तजतनदु खदआहि॥
बन्दौं खल मलरहित जे, रामभक्त गुणखानि ।
परदुख सोई सुख जिन्हैं, परसुख मोटी हानि ॥

हरिजन मणिकी कोठरी, आपु सु तारी आहि ।
मुयेहु न त्यागत टेक निज, तेहिते छाँड्यो नाहि ॥
सन्तस्वभावप्रभावलखि, समुझि खलनके रीति ।
तब मैं कीन्हों ग्रन्थ यह, हृदय न आन्यों भीति ॥
करि अरि केरे कुँवर को, कहा सकै करि श्वान ।
भूकत मारे जाइ हैं, यमके भवन निदान ॥
सो० बन्दौं सन्त समाज, शीशनाय करजोरि करि ।
जहँ हरिनामजहाज, अमितपतितचढ़िभवतरहिं ॥
बन्दौं गुरुपद बारहिं बारा * जासु कृपा छूटत संसारा
होत विमलमति मान बड़ाई * मिटत विभेद कपट कुटिलाई
मोहिसमपतितनयहिजग कोऊ * लघुमति अगुण बपुपलघु सोऊ
सुनगुरु गुरु मोकहँ गुरु कीन्हा * यथा दण्ड कर बावन लीन्हा
करहुँ तासु केहि भाँति प्रशंसा * जो कृत कागहि पिक बक हंसा
मलिन भक्त तजि कपट कुसङ्गा * लागेउ नाम चुनन सतसङ्गा
दो० काशी वास निवास सुरसरि पद पाथ स्वरूप ।
गुरु मूरति पशुपति प्रकट, तारक मन्त्र अनूप ॥
बन्दौं अवध अवधपुरवासी * जे अनन्य सिय राम उपासी
बन्दौं सरयू विमल तरंगा * पावन करणि करणि अघ भंगा
करहिं पान जल सुमिरि नामा * बसैं अवधमें जे बसुयामा
ते तनुतजि फिरि जगनहिंआवैं * अस प्रभाव निगमागम गावैं
बन्दौं नृपदशरथ सब रानी * दुलराये जिन सारँग पानी
बन्दौं श्रीमिथिलेश सुनयना * अवलोके रघुपति निजअयना
बन्दौं भरत लषण रिपुआरी * रामानुज सब विधि सुखकारी
छं० जयति चातसंजात जयति रविमण्डल ग्रासक ।

जयति सन्तसुर सुखद जयति निशिचरकुलनाशक ॥
जयति विजय मदहरण जयति सियशोचनिवारण ।
जयति ज्ञानगुणउदधि जयति सबसकट टारण ॥
जयति जासुउर बसत नित रघुकुलमणिशरचापधर ।
सोइ प्रभुसेवक जानिकै करौ कृपा रघुनाथपर ॥

दो० बन्दौं श्रीजानकीपद, पदुम जोरि युगपानि ।
बिधिहरिहरचिन्ततजिन्हे, शक्तिसहितसुखखानि ॥

छं० सारँगसे दृगलाल भाल सारँगकी सोहत ।
सारँग ज्यों तनुश्याम बदनलखि सारँग मोहत ॥
सारँग सम कटि हाथ माथ बिच सारँग राजत ।
सारँग लाये अङ्ग देखि छवि सारँग लाजत ॥
सारँग भूषण पीतपट सारँग पद सारङ्ग धर ।
रघुनाथदास वन्दनकरत सीतापति रघुबशवर ॥

दो० गुणागार गुणरहित हरि, गुणनियता गुणपाल ।
गुणनायकगुण निधनकर, गुणदायक गुणजाल ॥
मातृ पितृ गो मित्र द्विज, गुरुहा दुर्वृत कोउ ।
जासु नाम कीर्तन किये, शुद्ध होत जग सोउ ॥
अन्ध बिलोचन पगुपग, लहैं मूक वचनासु ।
जासु कृपाते तिमि महू, कहिहौं गुणगण तासु ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतवन्दनावर्णनोनामप्रथमोऽध्याय ॥ १ ॥

दो० बन्दौं वेद पुराण जे, करहिं रामगुण गान ।
जो सुनि प्राणी पावहीं, भोग भक्ति निर्वान ॥

बन्दौं रामनाम अविनासी * अचल अखण्ड चराचर बासी

सब सुखकरण हरणदुखभारी * जपैं जाहि शिव शैलकुमारी
भव निधान कलिमलमथनारी * पावनहू को पावन कारी
मुक्ति पन्थ विश्राम स्थाना * कवि सुसन्तके जीवन प्राना
धर्म विटप बरबीज प्रकाशक * मगल करन शोक सबनाशक
मानस रोग अनेक प्रकारा * भेषज नाम विनाशन हारा
विपति गहन घनबाण कुठारा * करि अज्ञान मृगेश निहारा
मन्त्रराज षटवरण समेता * कहत सकल निगमागमबेता
परमसरल सुमिरत सुखदाई * लोकानँद परलोक भलाई
जनमन सारँग सारँग हरिसे * जगदधि कूलकलपदलसरिसे
मुक्तिबाम श्रुति सुमन विहगा * मुनिमन पक्ष उड़त जिनसगा
कलिमलतम विधुबल्लभ गञ्जन * ब्रह्मनयन भ्रमतम प्रभञ्जन
करमकोटि करिदशन कराला * दुर्वासना उड़प करताला
जन्ममरण निशिक्षुधा पियासा * नामपियूष अशन बरबासा
ज्ञान विराग श्रवण जलजाता * कहै रघुनाथ मोर पितुमाता

दो० रामनाम बस जासु उर, अखिल मन्त्र को वीर्य ।
प्रलय अनलविषमृत्युते, सो नर होय उतीर्य ॥

सो० सोइ नाम सुमिरि सुभाय । कहौं ग्रन्थ एक बनाय ॥
विश्रामसागर नाम । सुनि लहैं नर आराम ॥

दो० सम्वत मुनिवसुनिगमशत, रुद्र अधिक मधुमास ।
शुक्लपक्ष कवि नौमिदिन, कीन्हो कथा प्रकास ॥
अवधपुरी परसिद्ध जग, सकलपुरिनसिरनाम ।
रामघाट के बाट में, रामनिवास सुधाम ॥
तहां कीन आरम्भ मैं, रघुपति आयसु पाय ।
श्री गुरुदेवा दास के, पद निजहृदय बसाय ॥

सत्गुण रजगुण तमोगुण, त्रयविधिके मुनिबाँच ।
मोक्षद स्वर्गद शुभद हैं, धरिहौं सुखप्रद साँच ॥
उमा शम्भु सीतारमण, जो मोपर अनुकूल ।
तौ करणो सो होइ फुर, अन्त मध्य अरु मूल ॥

पर उपदेश न लेश बडाई * कहौं कथा निजमति हितगाई
जग बन मन करिदुख दवदहई * हरिगुणसरि परि तब सुखलहई
श्रुति पुराण बहुविध सुरबानी * लघुमति मोरि परत नहिं जानी
भाषा बन्ध करब मैं ताते * समुझिपरै अस्माकम जाते
बचन विभेद अर्थ नहिं दूजा * यथा इन्दु शशि अर्चन पूजा
पुनि बहुमत बहुग्रन्थन माहीं * सबसग्रह बिन जानि न जाहीं
तेहिते मैं यक ग्रन्थ भकारा * धरब बरण कम अर्थ अपारा
बात बात पर बर इतिहासा * भक्ति विवेक सहित नहिं हासा
सुनि सदेह करैं जनि कोई * देखै बेद पुराण बिलोई
सबकर सारअश मत लीन्हा * मैं विश्राम सुसागर कीन्हा
आदिअन्त दोउ जानि किनारा * रामसुयश पयपावन भारा

दो० अद्भुत हास्य श्रृंगारभव, बीर बिभत्स बिषाद ।
रुद्रसुरुचि सम शान्तये, यामें नवरसस्वाद ॥

संशय भँवर करन सतसगा * अर्थ गाहिर अध्याय तरगा
कमल कवित्त सोरटा दोहा * भक्तिसुवास सन्त अलिमोहा
छन्दै विविध भातिकी मीना * सीपसकल चौपाई दीना
राम नाम मुक्ताहल भाई * जासु आव त्रिभुवनमहँ छाई
सज्जनमाल जगत हरषाहीं * दुष्टकाग बकको गति नाहीं
नानाविध इतिहास पुरानी * सोइ यहि बीच रत्नकी खानी
मन गिरिवासुकि सुरति लगावै * यहिनिधि मथै सोइ जन पावै

क्षमाशील संतोष विचारा * मोहशयन भक्तक धरिआरा
दो० उक्तियुक्ति औरेब धुनि, अर्थ भावना केर ।
चोचप्राश अन्वयजमक, जलज्वर अपर घनेर ॥
नमत तहा श्रीयुत भगवाना * यामें राम सियाकर थाना
जो चाहै प्रभु दर्शन भाई * तासु युक्ति इमि आगम गाई
प्रथमें श्रद्धा सम्मल बाधे * दूसर साधु सग शुभसाधे
तीसर भजन किया सोइ चलई * तुर्ये अनर्थ विरति बनलहई
पञ्चम निष्ठारुचि उपजावै * षष्ठ सुजान ध्यान चितलावै
सप्तम नामाशिक ह्वै जावै * जपत जीव त्रयताप नशावै
अष्टम भाव हरै दुख नाना * नवम प्रेम पयकरि अस्नाना
दशम दरश रघुपति के पावै * जीवव्याधि सब तुरत नशावै
निजस्वरूप सुख लहै हजूरी * यहि उपाय बिन दरशन दूरी
रामकृपा बिनश्रमें उपाई * पावै जिमि द्विजसुत समुदाई
ग्रन्थ अनेक नदी नदनारा * बहिआवे शुचि जासु मझारा
गी० छं० ॥
षट शास्त्र वेद पुराण मत विश्राम याही में लह्यो ।
यहि अर्थते विश्रामसागर नाम मैं याको कह्यो ॥
जे सुनहिं समुझहिं प्रीतिकरि हरिचरणमें चितलाइहैं ।
रघुनाथ ते गोपद सरिस संसार यह तरि जाइहैं ॥
दो० कलपद्रुमसम ग्रन्थ यह, सर्वसुफल दातार ।
धर्म मोक्षकामार्थ हरि, भक्तिविराग विचार ॥
बुद्धि न ज्ञान विवेक कछु, बढै न हरिपदप्रीति ।
तिन्हैं न प्रीतम लाग यहु, विश्रामोदधि रीति ॥
विविधग्रन्थ देखे सुने, जिनके कपट न शोक ।

ते प्रमुदित ह्वै वरणिहैं, पटपद प्रतिअश्लोक ॥
पैहैं सुखसम्पति यशपावन * ह्वैहैं हरिहरिजन मनभावन
कल्पित ग्रन्थ कहै जो कोऊ * याचौं ताहि जोरि कर दोऊ
यह ममकृत नुवचारक वारा * देखिनाउ शुचितहिन विचारा
जो मम मतिकल्पित कछु होई * तौ मिलि दोष न्हु सबकोई
आगे मुनिन कथन जो कीन्हा * सोई मैं भाषा करि दीन्हा
बहुग्रन्थनमा रहै जो बाता * सो एकैमा धरी सोहाता
तहँ कोइ कहै कहाहै भाखा * तेहिते मैं अर्थान बिन माखा
सुर नर पशु पक्षी जो होई * निजवाणी समुझत सबकोई
रहैं बिबिहु कोविद गिरिराया * गरुड़ बायस पास पठाया
आपु धरो पुनि हंसशरीरा * जब गुण सुने भुशुण्डी तीरा
अजहू जे सुर बाणी कहई * प्राकृतकरि समुझावत अहई
तब सब हर्ष प्रीति बढावै * नाहिंत कोइ निकट नहिं आवै
तेहिते जानि जहाकी बानी * सोई ताहि तहा सुखदानी
लेनदेन बिधि जो कछु करई * देशवाक्यते कारज सरई
दो० जेहिते निज कारज सरै, ताको निन्दै नीच ।
यथा कोल पय पानकरि, पुनि करिडारत कीच ॥
जो भाषा मानत नहीं, तो भाषा मति गाय ।
जो बोलै तौ श्वानसम,उगिलिअशनफिरिखाय॥
अबगुरुपद निजआजिदग, रामचरण शिरनाय ।
चलीकथा जेहिभांति जहँ, सो सब कहौं बुझाय ॥
पटऋतुमाहिं शिशिरऋतु जानो * फाल्गुन शुक्लपक्ष पहिंचानो
नैमिषक्षेत्र अटन तब होई * पक्ष एक निवसै सब कोई
प्रथम चक्रतीरथ जल पावै * पुनि सब पञ्चप्राग चलिजावै

यहि विधि ब्रह्मसरादि नहाई * धेनुमतिहि आवै ऋषिराई
तेहि तट व्यासदेव कर थाना * ऋषिशौनक तहँ रहैं सुजाना
बहुरि सूत आये तेहि ठामा * लखिशौनक कियोदण्डप्रणामा
चरण धोइ आसन बैठारी * धूप दीप आरती उतारी
बोले वचन सुचितकरि गाढे * हाथ जोरि सन्मुख भै ठाढे
नाथ बात कछु पूछा चहऊ * आयसु होय बचन तब कहऊ
दो० अतिशयप्रीति विलोकि तब, कहा सूत हरषाय ।
मुनिमन जनि शङ्का करौ, पूछो जो जियआय ॥
बोले ऋषि सुनिये महिदेवा * तुम जानत तिहुकालक भेवा
वेदरु शास्त्र सकल तव देखा * नित्यानित्यक कीन्हों लेखा
तुम दयाल दीनन सुखदाई * तुम तजि कहा पूछिये जाई
प्रथम कहौ गुरुमहिमा गाई * नाम महातम बहुरि सुनाई
कर्माकर्म धर्म आधर्मा * ज्ञान विराग भक्तिको मर्मा
दुख सुख स्वर्ग नरक सबभाती * कौन कर्म करि केहिमा जाती
माया ब्रह्म जीव जग जाना * हरि हरिजन गुणकरो बखाना
ब्रह्म अनादि भयो वपु आई * कीन्ह चरित कस कहौ बुझाई
चारि खानि जग जीव अपारी * उत्पति पालन अरु संहारा
दो० योग यज्ञ व्रत दान तप, बरणाश्रम कर भेउ ।
भिन्न भिन्न भाषौ सकल, रहे रहाये तेउ ॥
शास्त्र बिना नहिं ज्ञानभव, ज्ञान बिनानहिं भक्ति ।
भक्ति बिना नहिं सत्यसुख, ताते सुनिय सुशक्ति ॥
कुं० शीशभारश्रुति सर्पबिल, ग्रहमलमगसम लयन ।
कर सबकरपग अकलतरु, मोर पत्र शशि नयन ॥
मोरपत्र शशिनयन, प्राणबिन बिग्रहअहई ।

नवै न गुरुजन चरण, रामगुण सुनै न कहई ॥
करै न जो हरिकर्म हित, अटै न तीर्थ मुनीश ।
दारुयोषिता सरिस सो, धावत नावत शीश ॥
दो० हरि विषयक जो होइ जन, ताहि उचित है येह ।
महामनोहर हरिचरित, सुनै सदा करि नेह ॥
सुनि मुनिवचन सूत सुखपावा * वेदव्यास पद शीश नवाव
क्षण यक हरिकर ध्यान लगाई * पुनि मृदुवचन कहे हर्षाई
भेद तुम्हार हवै सब जाना * पूछेउ जिमि मूरुख अज्ञाना
सो मैं अब तुम्हार मत जाना * कीन्ह चहत सबकर कल्याना
धन्य धन्य तुम मुनि बड़भागी * पूछ्यो रामकथा अनुरागी
रामकथा शुभ चिन्तामनसी * दायक सकल पदारथ जनसी
मोहमहातम बसि करणीसी * अहकार करि हरिघरणीसी
अभिमत फलप्रद देवधेनुसी * स्वच्छकरन गुरुचरणरेनुसी
कलिमलभेक विपुल सरपीसी * क्रोध महिष दुर्गेदरपीसी
सुजनसमाज उडुप रजनीसी * साधु पोत पालन जननीसी
ब्रह्मलखन हित दृग पुतरीसी * मनमृगबन्धन हित सुतरीसी
लालच लोभ लवा बहरीसी * सद्गुण सकल चनकडहरीसी
दुर्वासना समूह शलभसी * दीपशिखासम दहन कलभसी
हरि भयहरणि विभाव सुतासी * दुखद अविद्या तूल हुतासी
धर्म कर्म बन्बीज रमासी * सुमतिवढावन सुखसुदशासी
ज्ञानभार भवसुगवतीसी * कविकोविदहित अजयुवतीसी
कामभुवङ्ग विषय लहरीसी * मणि मयूर पाटन गहरीसी
भर्म बलाहक जगत प्रानसी * ज्ञानगवङ्ग खरपरन सानसी
भवतरस्वान कमल बहनीसी * विरति विचार कहनि रहनीसी

शालिदुख मूषकमिनकीसी * रघुपति ध्यानकरन पिनकीसी
सबभूत पादप मधुऋतुमी * कलिमल भजन हेतु मृत्युसी
विरति विवेक नृपति मोहनीसी * सदसतोष क्षीर दोहनीसी
शोक शुक्र भवभीम गुसासी * पितर तरण हरिभक्ति सुपासी
प्रभुपद प्रीति बढावनि ऐसी * अनुदिनलाभ लोभकह जैसी
रामहिंप्रिय जिमि काकभुशासी * भक्तिमुक्तिप्रद मङ्गलरासी

दो० मङ्गल वक्ता के भवन, मङ्गल श्रोता धाम।
मङ्गल लेखकके करन, मङ्गल हो तेहि ठाम॥

इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतवन्दनावर्णनोनामद्वितीयोऽध्याय. ॥ २ ॥

दो० भगवत चरित पियूषवर, नित सेवै जो कोइ।
अन्तकालके समय में, तेहि उदबेग न होइ॥

अस हरिकथा कहा सुखदाता * सुनो प्रथम गुरुमहिमा ताता
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु पुरारी * गुरु परब्रह्म दीन दुखहारी
गुरुशरणागत जो कोइ आवै * बहुरि न सो चौरासी जावै
गुरुकृपाल अगणित गति दाता * गुरुकृपा छूटै यमनाता
महाअधम पापी नर होई * गुरु शरणागत आवै सोई
फिरि तें नरक परै नहिं प्रानी * जो गुरु वचन लेइँ फुर मानी
कहौं एक इतिहास पुरानी * मनलगाय सुनु मुनिवर ज्ञानी

सो० रहा अधिक चकनीच, करै ठगाहीं बन विषे।
नाम तासु मारीच, अतिनिर्दयकपटीकुटिल॥

तेहि एकदिन मन कीन्ह विचारा * मोसम पतित न कोउ ससारा
जबते धरयो देह जग आई * पाप करत सब उमिरि बिताई
इन अपराध कौनि गति होई * यहि विधि विपिन शोच कर सोई

तोहे अवसर गौतम ऋषि आये * जानरहें कछु सहज सुभाये
मुनिहिंबिलोकि तुरत उठिधावा * चरणनाय शिर बचन सुनावा
मैं पापी ठग कुटिल चवाई * तुम दयालु पतितन गति दाई
तेहिते प्रभू कृपा अब कीजे * मोहिं आपनो शिष्य करिलीजे
कहमुनि तोहिं शिष्य जो करहू * अर्धपाप अपने शिर धरहू
दो० सुनु ठग पद्मपुराण मैं, देखी सब निरताय।
पाप पुण्य जेहि विधिबटै, सो त्वहि कहौ बुझाय॥
यक तपसी बिषयी यक होऊ * भोजन करैं एकमहँ दोऊ
भली बुरी सगति होइजाई * पाप पुण्य आधा बटिजाई
छुवै सराहै औ बतलावै * दशवा अंश तहा बटिजावै
दर्शन ध्यान बचन सुनु जाका * सतवा अंश पाप पुनि ताका
जप तप दान धर्म यक करई * यक सेवा वाकी अनुसरई
दशौं अंश फल सोऊ पावै * पाप पुण्य जोई होइ आवै
करज काढि पुनि पाप जो करई * तीन भागफल धनदहि परई
चोरी करि धर्म करै जो कोई * पाप पुण्य तेहि कछू न होई
जो कोउ काहू प्रेरि करावै * पुण्य पाप षटअंश सो पावै
प्रजा जो धर्माधर्म कमाई * छठा अंश राजा ढिग जाई
होम पाठ सन्ध्या अस्नाना * जाप करत वा पूजा ठाना
बात करै अथवा छुइ लेई * छठाअंश निज पुण्यहि देई
आनके कर निजधर्म करावै * छठाअंश फल सोऊ पावै
दो० पिता पुत्र नारी पुरुष, गुरू शिष्य यहिभाय।
पाप पुण्य जो कछु करै, अर्ध अर्ध बटिजाय॥
असबिचारि शिषिकरौं न तोही * बाट न रोंकु जानदे मोहीं
बोला वधिक जान नहिं देहौं * जबलगि गुरु न तुम्हैं करिलेहौं

मुनि मुनि हृदय विचारहिआना * यह है खल नहि देहे जाना
सहसनेह चह निजभल भाई * परी पूरपथ देहु बताई
कह ऋषि गुरुदक्षिणदे मोही * नवनो शिष्य करौ मैं तोही
बोला का दीजै सो कहऊ * ममाटिग होइ लेउ जो चहऊ
अब जनि पाप किहेउ कछुभाई * रामनाम सो सुमिरहु जाई
परमजाप तारक ब्रह्म महा * ब्रह्महत्यादि पापहर जहा
असकहिऋषि चलिभे जिउपाई * वधिक नाम मे प्रीति लगाई
ताहिभातिन कछुकाल बिनावा * मरणकालका दिन जब आवा
ताहि लेन यमदूत सिधाये * पाछेते हरिगण चलिआये
शीशमुकुट मणिकुण्डल काना * पीतवसन तनभूषण नाना
भुज विशाल अनुपम करलाजे * हरिदरचक्र कौमुदी राजे
गणन देखि यमदूत डराने * बोले वचन कपट छलसाने
बड़ी भाग्य हम दर्शन पाये * आजु कहा यहि तीर सिधाये
दो० कहा गणन दूतौ सुनो, वधिकभक्त यहि ग्राम ।
तेहि आने आयन यहां, ले जैबे हरि धाम ॥
सुनत वचन किंकर यमकेरे * बोले निज निज नैन तरेरे
वधिक नीच पापी अन्याई * जीव हतेसि नहि जाये गनाई
बनके बन यहि कीन्हेसि नामा * तेहि तुम कहत रामकर दासा
कहगण जबते गुरु यहि कीन्हा * रामनाममे मनचित दीन्हा
किहेसि न तबते कछु अपराधू * यहिसम और कौन है साधू
असकहि लीन विमान चढाई * हरिपुरको चलिभे हरषाई

गी० छं० ॥

चलिभे विमान चढ़ाइ हरिपुर ताहि राख्यो जायकै ।
अति देखि गुरुपरताप यमके दूत गय खिसियायकै ॥

असससमुझिनरगुरुशरणहै हरिभजन जिन नाहीं कियो।
तिन पाय नरतन आय जगकरि हानि नरकहि चलिदियो॥
दो० गुरु शरणागत आइकै, जो सुमिरै सियराम।
इहां रहै आनन्द में, अन्त बसै हरिधाम॥
ब्रह्मा विष्णु महेश ते, जो अधिकी ह्वै जाय।
गुरुबिन भवनिधि ना तरे, कहत निगम असगाय॥
यामें कछु सन्देह न पैली * आदिहिते सब गुरुकरि ऐली
ब्रह्मके शिष्य प्रकृतिही जानो * प्रकृतिशिष्य महतत्त्व पिछानो
महत्तत्त्व शिषिप्रणव जो कहिये * ॐकारने विष्णुहि लहिये
विष्णु कि शिष्य लक्ष्मी भयऊ * तिनके विधिविधिके शिवकह्यऊ
रामचन्द्र अवतार जो लीन्हा * विश्वामित्र गुरू तिन कीन्हा
व्यासपुत्र शुकदेव सुभाये * जन्मलेतही विपिन सिधाये
तिन गुरु कीन्हों जनकै जाई * तब हिरदयमहँ निष्ठा आई
ब्रह्मपुत्र नारद मुनि जेऊ * मनु भगवान केरि सुनिलेऊ
दीक्षाहीन जाइँ हरि तीरा * दर्शन हेतु सदा मुनिधीरा
कछुककाल रहि जब फिरिआवैं * जब बैठैं सो ठाउँ धोवावैं
एकबात नारद लखि लयऊ * रमानाथ ते पूछत भयऊ
दो० बोले हरि नारद सुनो, तुम गुरु अबै न कीन।
सो बिचार एती जगह, नित्य पाक करि लीन॥
दीक्षाहीन जहा चलिजावै * सो जागह अशुद्ध ह्वै जावै
गुरुमुख चरण परैं जब आई * तब सोइ धरा शुद्ध होइ जाई
कह नारद सुनिये सुरराया * प्रथमैं तुम मोहि कत न बताया
कहप्रभु तुम अतिशय प्रिय मोरे * कह्यो न सुनि होई दुख तोरे
तेहिते प्रभु गुरु कीजे जाई * काहे करौं अब देहु बताई

जो प्रथमैं मिलिजाय सकारे * ताहि गुरू तुम कीन्ह्यो प्यारे
भोरमये निकसे मुनि जबहीं * धीमर देह धरी हरि तबहीं
मुनि आगे ह्वै निकसे आई * नारद देखिपरे पग धाई
तेहि गुरुकरि हरिके ढिग आये * देखत प्रभु निजहृदय लगाये
दो० कह गुरु कीन्हों कौनपै, सुनि बोले हरिराउ ।
गुरुमैं पै जो तुम कही, चौरासी कहँ जाउ ॥
मुनि नारद निजगुरुपहँ आये * समाचार सब कहि समुझाये
गुरु दयालु बोले तुम जावो * हरिते चौरासी लिखवावो
लिखि जब होहिं लौटि तब जायो * हाथजोरि युग बचन सुनायो
सुनि नारद आये प्रभुपाहीं * चौरासी जानत मैं नाहीं
सो लिखि मोहिं देहु समुझाई * ताहि देखि भुगतौं मैं जाई
कहहरि नौलख जलचरजाती * सब योनिन भरमै बहुभाती
दश लख पक्षी को विस्तारा * उडतरहै भयको उरधारा
ग्यारह लाख जाति कृमिकीटा * बीस लाख बनबिटप जो दीटा
तीस लाख पशुयोनिहि जानो * चारि लाख मानुष्य पिछानो
यह चौरासी योनि कहावै * सब भुगते बिन अन्त न पावै

हरिगीतिका छन्द ॥

सुनि गये नारद लौटि तामैं देखि प्रभु बोलत भयो ।
कहि दीन मत यह तुम्हैं कहऋषि आज गुरु मोको दयो ॥
तेहि कहत पै जिन एक क्षण मे मेटि चौरासी दई ।
अस और नाहिं कृपालु दीनदयालु गुरुसम जग हई ॥
दो० गुरु गोविंद ते अधिकहैं, यह प्रतीति मनलाइ ।
गोविंद डारैं नाक जो, तौ गुरु लेइँ बचाइ ॥
सम गुकार रू तासु हर, गुरु सोइ करै प्रकास ।

बर्णौं धर्मरु शास्त्र को, यह मैं वर इतिहास ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतमारीचनारदकथावर्णनोनामतृतीयोऽध्याय ॥३॥

दो० बन्दि राम सिय सन्तगुरु, गणप गिरासुखखानि ।
बर्णौं धर्मरु शास्त्र को, पुनिइतिहासबखानि ॥

कहा सूत गुरु महिमा गाई * सुनि शौनक बोले हरषाई
नाथ मोहिं निज किङ्कर जानो * गुरुप्रभाव कछु और बखानो
कहा सूत गुरु बिन कछु करई * ताको काज एक नहिं सरई
गुरु बिन मुक्ति पन्थ नहिं पावै * गुरु बिन नर चौरासी जावै
गुरु बिन ज्ञान भक्ति नहिं जानै * गुरु बिन आतम नहिं पहिंचानै

दो० बिन गुरुदीक्षा अफलसब, जप तप होमक्रियादि ।
ज्यों पाहन में बीजबइ, उपजै ना फल बादि ॥

तेहिपर इक इतिहास बखानो * सुन्दर ताहि पुरातन जानो
अवध उत्तरे योजन चारी * रहै नगर यक अतिसुखकारी
तामें कृष्णदत्त द्विज रहई * सुन्दरि नाम तासु त्रिय अहई
करै दान दिन प्रति अधिकाई * द्वारे अतिथि बिमुख नहिं जाई
हीरा हेम पदारथ नाना * देहिं विप्रकहँ बेदबिधाना
अशन बसन गज बाजि मिठाई * शय्या दान करै मनलाई

दो० एकदिवस द्विजबर सोई, गयो रहै कहुँ ग्राम ।
नाम सुन्दरी तासु त्रिय, रही आपने धाम ॥

तेहि दिन तेहिपुर नारद आये * करबीना शिरतिलक लगाये
रामचरित गावत हरषाई * तेहि द्वारे ह्वै निकसे जाई
ऋषिहि देखि सुन्दरि उठिधाई * करि बहु बिनय भवन लैआई
उच्चासन तापर बैठारे * हेमथार लै चरण पखारे

कछु चरणोदक कीन्हों पाना * कछु छिरक्यो सिगरेअस्थाना
धूप दीप आरती उतारी * बडी भाग्य भै आजु हमारी
मुनि आज्ञा लै पाक बनाई * कह्यो स्वामिचलि भोग लगाई
तब नारद उठि भोजन कीन्हा * अँचै बहुरि आसन पग दीन्हा
सुन्दरि बात करन तब लागी * लखि नारद बोले अनुरागी
धन्य तुम्हार मात पितु चीन्हा * जिनकी कोखि जन्म तुम लीन्हा
नरतनु पाय सफल तब भयऊ * जो मन जनसेवा महँ दयऊ
धन्य तुम्हार गुरू सुखदाई * साधुसेव जिन तुम्हें दृढाई
सो० सुनि बोली द्विजनारि, मेरे तौ गुरु हैं नहीं।
अपने हृदय बिचारि, देहुँअशनलखिदुधितकहँ॥
सुनि अस बचन देवऋषि तासू * डारे अशन वान्तकरि आसू
लखि सुन्दरि डरि बोले लीन्हा * कहि अपराध वमन प्रभु कीन्हा
कह मुनि होइ बैष्णव जो जन * करै अबैष्णव के गृह भोजन
पावै तहां जलहु बिन जानै * ताको यह प्राश्चित्त बखानै
चन्द्रायण व्रत ठानै सोई * तेहि अघते तब पावन होई
इष्टापूर्त्ति पुण्य सब वाके * किये अमिथ्या निष्फल ताके
तेहिते अधिक पाप तेहि परई * निगुरा छुवा जो भोजन करई
यहिते नष्ट कर्म नहिं आना * भ्रष्टबुद्धि करिदेत अयाना
दो० तातें सुन्दरि तव छुआ, भोजन कीन्ह अजान।
कियो वान्त यहिकारणे, नष्ट भयो मम ज्ञान॥
सुनि सुन्दरि मन कीन बिचारा * कत मैं कीन्ह धर्म अधिकारा
कत मैं विविध दान व्रत किय्यऊ * कत मैं तीर्थाटन मन दिय्यऊ
कत मैं सुवरण सींग मढ़ाई * दई गऊ विप्रन समुदाई
गुरु बिन धर्म करै जो कोई * मैं नहिं जान्यो निष्फल होई

तेहिते मुनि अब दाया कीजै * राममन्त्र मोका प्रभु दीजै
अब जनि देर लगावहु स्वामी * देखि प्रीति बोले ऋषिनामी
प्रथम जाइ कीजै अस्नाना * सुन्दरि कहा वचन परमाना
जब हरिशरण जीव यह जाई * यमगण ग्रसैं कुटुम्बिन आई
सुत पितु मातु कहैं अस बैना * भक्ति न छाजै हमरे ऐना
कोउकहै अबहिं जगतसुखकीजै * बृद्धभये पर हरि भजिलीजै
सुनि मतिभ्रम जे रहे चुपाई * लीन्ह्यो काल अचानक खाई
मृतक जानि सुत पुत्री नारी * रोवहिं स्वारथ हेतु पुकारी
तासु शोच कोउ नेक न करई * हरिहिविमुखयौं कसदुख परई
तेहिते मैं नहिं जाब नहाई * सुनि नर नारि देहिं भरमाई
रामचरण पङ्कज चित दीना * जिहिते होत पाप सब छीना
सुनतबचन मुनिअतिसुखपावा * तुलसी माल कण्ठ पहिरावा

दो० बिप्र बैश्य नृप शूद्र वा, होइ अपतिपति बाम ।
हरिव्रत धारे उचित तेहि, है तुलसीको दाम ॥
बिधिहरिहरकहँसाखिकरि, राममन्त्र तब दीन्ह ।
बैष्णवधर्म सिखाइ कै, गवन पितापुर कीन्ह ॥

तोहिक्षणमिलै तासु पति आवा * लाख सक्रोध अस बचन सुनावा
केहिके कहे लीन्हि तैं माला * जानिपरा पहुँचा तव काला
अबते तोरु चहसि जो प्राणा * नाहिंत कटिहौं शीश कृपाणा
सुनि सुन्दरि बोली करजोरी * सुनहु प्राणपति टेक जो मोरी
चहु तनु टूक टूक करिडारो * भावै अनल माहिं धरिजारो
धरती खोदि तोपि बरु देहू * तजौं न रामहिं प्रण मम येहू
जिन प्रथमैं करि पाछे छाड़ा * तिन्हैं जानिये स्वारथी भाड़ा

दो० अस अबलाके बचनसुनि, गुणि द्विज रह्यो चुपाय ।

काढ़िदेउँ तो जग हँसै, मारे हत्या आय ॥
तेहि दिनते अस नेम सो धरई * पतिका छुवा न भोजन करई
सहित प्रीति ते अशन बनावै * परसि दुरिते ताहि पवावै
यहिविधि दिनप्रति पावै खाना * देखि विप्र मन भई गिलाना
जो हमारि जूठनि निन खाई * सो अब दूरि ते देत बहाई
अबकी ऋषि आवै मम धामा * मोह गुरुकरि सुमिरौं रामा
यहिविधिद्विजमनकरतविचारा * कृपा कीन्ह नारद पगु धारा
गुरुहि देखि सुन्दरि हरषानी * शीश नाय बोली मृदु बानी
सफल जन्म भा आजु हमारा * जो निकेत रौरे पगु धारा
सुन्दर आसन पर बैठावा * चरण धोइ चरणोदक पावा
बहुरि पाच पैकरमा कीन्हा * द्रव्य भेट लै आगे दीन्हा
दो० गुरु वैद्य अरु ज्योतिषी, देव मित्र बडराज ।
इन्हैं भेट बिन जो मिलै, होइ न पूरण काज ॥
आज्ञा मागि कीन्ह जिवनारा * षटरस व्यञ्जन विविध प्रकारा
सुवरणथार परसि धरिदीन्हा * हरिहिअर्पि मुनि भोजन कीन्हा
अचमनकरि आसन जब आये * द्विज सुन्दरि ते बचन सुनाये
गुरुदिक्षा मोहिं देहु देवाई * जाते तव सगति होइजाई
सुन्दरि आय कहा रुपासा * इनहुनका कीजै हरिदासा
विप्रहु तब बोला करजोरी * पुरवहु प्रभु अभिलाषा मोरी
दिक्षा लिहे सरी मम काजू * ताते विनय कीन्ह मैं आजू
कह नारद द्विज आउ नहाई * तब तुमका हरिनाम सुनाई
सुनि मुनिवचन विप्र हरषाना * पुरनट सरि तहँ चल्यो नहाना
सग यूक पण्डितते मैं भेंटा * ठाढकीन्ह तेहिं गहिकर फेटा
पूछा कृष्णदत्त तुम आजू * हरवर चलत कौन बड़ काजू

कृष्णदत्त पण्डित ते भाषा * गुरुदीक्षा की है अभिलाषा
दो० तब पण्डित बोले वचन, कृष्णदत्त सुनिलेहु ।
यह मृत्युपक्ष कुँवार है, गुरुदिक्षा जनि लेहु ॥
यामे पिण्डदान भल कीन्हा * दीक्षा मन्त्र न चाहिय लीन्हा
कार्त्तिक शुक्लपक्ष शुभ मासा * तब तुम होयहु हरिके दासा
सुनतवचन द्विजमन भ्रम आवा * तुरत पलटि नारद पहँ आवा
कह प्रभु ववार जान अब दीजे * कार्त्तिक शुक्ल पूर्णिमा कीजे
यह सुनि नारद गे विधि पासा * विप्र रहे कार्त्तिक की आसा
ताकी अवधि न पहुचन पाई * बीचम दुहुँन काल लियो खाई
दो० पलपहारकी खबरि नहिं, धौं यामें का होय ।
आगेकी आशा करत, काल हँसै मुख मोय ॥
अस विचारि जे चतुर नर, करत न लावै बार ।
नहि जानी केहि घरी मे, काल करै सहार ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतकृष्णदत्तकथावर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय ॥४॥

कह शौनकमुनि कहौं बखानी * तनु तजि कहा गये द्वौ प्रानी
कहा सूत सुन्दरि द्विजनारी * चढि विमान हरिलोक पधारी
विप्र गयो यम के दरबारा * पाप पुण्य का भयो विचारा
यमते चित्रगोपित्र बखाना * इन बहु कीन्ह पुण्य अरु दाना
जबते जाय देह इन धारी * उभय पाप कीन्हे अति भारी
कह यम कौन पाप सो कहिये * तोहि अनुसार दण्ड गहि चहिये
एक बार इन यज्ञ जो कीन्हा * सब विप्रन कहँ न्योता दीन्हा
तहा एक हरिजन चलिआवा * कृष्णदत्त ते बचन सुनावा
हम हैं क्षुधावन्त द्विजराई * कछु भोजन मोहिं देहु मगाई

अस मुनि विप्र क्रोधकियो भारी * अनुचितवचन कहेउ दुइचारी
मुनि कटुवचन गयो उठि साधू * तेहिते यहिपर भा अपराधू
हरिजन जासु यज्ञ महँ आवैं * मिलै न अशन क्षुधित फिरिजावैं
ताकी पुण्य सकल घटिजाई * बहुरि पाप होवै अधिकाई
दूसर जब सुन्दरि गुरु कीन्हा * तेहिलखि इन अतिडाँटैं लीन्हा
ताते पुण्य छिन्न भै याकी * थोरी एक रही है बाकी
सो० सुनिबोले यम याहि, राजदेहु गजदेह अब ।
निजफलभोगीजाहि, आप कहूं नृपके भवन ॥
अस कहि धर्म विपिनजनभावा * कृष्णदत्त गजका तनु पावा
कछुकदिवस बनमाहिं बितायो * पुनि नृपचन्द्रसेन गृह आयो
चन्द्रसेन कुरुक्षेत्र के राजा * जिनके सदा धर्मकर साजा
यह सब चरित देखि द्विजनारी * मनमा शोच करै अतिभारी
सुमपतिसों वारण तनु पावा * मोह विवश मन खेद बढावा
वर लै पुनि मृतलोकहि ऐली * जहँ आशा तहँ वासा पैली
जाके घर गज ता नृप केरी * भइ सुता अतिरूप घनेरी
दो० दानदिहिसियरुकिहिसिगुरु, भै कन्या नृप केरि ।
राजाको करि द्विज भयो, दूनों जात सुमेरि ॥
कन्या जब कछु भई सयानी * गई द्विरद पहं निजपति जानी
इन देखा यह है मम नारी * भई महीपति केरि कुमारी
अस विचारि दोउ प्रीति बढाई * दिन दिन होतजात अधिकाई
एकदिवस नृप हृदय विचारी * व्याह योग्य भइ सुता हमारी
विप्र बोलि शुभवरी सोधाई * यत्न स्वयम्बर केरि बनाई
सुनि सिन्धूर निराशन त्याग्यो * करिविचार मनशोचन लाग्यो
लखि राजा वर बेग बोलावा * तबहुँ न कुम्भी दाना खावा

कृष्णदत्त पण्डित ते भाषा * गुरुदीक्षा की है अभिलाषा
दो० तब पण्डित बोले बचन, कृष्णदत्त सुनिलेहु ।
यह मृत्युपक्ष कुँवार है, गुरुदिक्षा जनि लेहु ॥
यामें पिण्डदान भल कीन्हा * दीक्षा मन्त्र न चाहिय लीन्हा
कात्तिक शुक्लपक्ष शुभ मासा * तब तुम होयहु हरिके दासा
सुनतबचन द्विजमन भ्रम छावा * तुरत पलटि नारद पहँ आवा
कह प्रभु क्वार जान अब दीजे * कात्तिक शुक्ल पूर्णिमा कीजे
यह सुनि नारद गे विधि पासा * बिप्र रहे कात्तिक की आसा
ताकी अवधि न पहुचन पाई * बीचम दुहुन काल लियो खाई
दो० पलपहारकी खबरि नहि, धौं यामें का होय ।
आगेकी आशा करत, काल हँसै मुख मोय ॥
अस बिचारि जे चतुर नर, करत न लावै बार ।
नहि जानी केहि घरी में, काल करै सहार ॥

इति श्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतकृष्णदत्तकथावर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय ॥४॥

कह शौनकमुनि कहौं बखानी * तनु तजि कहा गये द्वौ प्रानी
कहा सूत सुन्दरि द्विजनारी * चढि बिमान हरिलोक पधारी
बिप्र गयो यम के दरबारा * पाप पुण्य का भयो बिचारा
यमते चित्रगोपित्र बखाना * इन बहु कीन्ह पुण्य अरु दाना
जबते जाय देह इन धारी * उभय पाप कीन्हे अति भारी
कह यम कौन पाप सो कहिये * तोहि अनुसार दण्ड यहि चहिये
एक बार इन यज्ञ जो कीन्हा * सब बिप्रन कहँ न्योता दीन्हा
तहा एक हरिजन चलिआवा * कृष्णदत्त ते बचन सुनावा
हम हैं क्षुधावन्त द्विजराई * कछु भोजन मोहिं देहु मगाई

असमुनि विप्र क्रोधकियो भारी * अनुचितवचन कहेउ दुरचारी
सुनि कटुवचन गयो उठि साधू * तेहिते यहिपर भा अपराधू
हरिजन जाम्ब यज्ञ महँ आवै * मिलै न अशन क्षुधित फिरिजावै
ताकी पुण्य सकल घटिजाई * बहुरि पाप होवै अधिकाई
दूसर जब सुन्दरि गुरु कीन्हा * तेहिलखि इन अति डाटै लीन्हा
तातें पुण्य छिन्न भे याकी * थोरी एक रही है बाकी
सो० सुनिबोले यम याहि, राजदेहु गजदेह अब।
निजफलभोगीजाहि, आप कहूं नृपके भवन॥
असकहि धर्म विपिनजनभावा * कृष्णदत्त गजका तनु पावा
कछुकदिवस वनमाहिं बितायो * पुनि नृपचन्द्रसेन गृह आयो
चन्द्रसेन कुरुक्षेत्र के राजा * जिनके सदा धर्मकर साजा
यह सब चरित देखि द्विजनारी * मनमा शोच करै अतिभारी
ममपतिसों चारण तनु पावा * मोह विवश मन खेद बढावा
वर लै पुनि मृतलोकहि ऐली * जहँ आशा तहँ वासा पैली
जाके घर गज ता नृप केरी * भई सुता अतिरूप घनेरी
दो० दानदिहिसिअरुकिहिसिगुरु, भै कन्या नृप केरि।
राजाको करि द्विज भयो, दूनों जात सुमेरि॥
कन्या जब कछु भई सयानी * गई द्विरद पहँ निजपति जानी
इन देखा यह है मम नारी * भई महीपति केरि कुमारी
अस विचारि दोउ प्रीति बढाई * दिन दिन होतजात अधिकाई
एकदिवस नृप हृदय विचारी * ब्याह योग्य भइ सुता हमारी
विप्र बोलि शुभघरी सोधाई * यत्न स्वयम्बर केरि बनाई
सुनि सिन्धुर निराशन त्याग्यो * करिविचार मनशोचन लाग्यो
लखि राजा घर वैद्य बोलावा * तबहुँ न कुम्भी दाना खावा

यहिविधि बीति बार बहु गयऊ * तबतो नृपके अतिदुख भयऊ
कह कन्या पितु ते अस जाई * गजहि अशन मैं देहुँ कराई
बोले भूप जाहु किन अबहीं * मरिजाई तब जैहौ कबहीं
पिता बचन सुनि गै पतिपासा * बोली तुम कत रहत उदासा
बहुदिनते भोजन नहिं खायो * सो कारण मोहिं नाहिं बतायो
दो० कह गयन्द चाहत करन, नृपति तुम्हार बिवाह ।
सो विचार अब होत है, हृदय हमारे दाह ॥
जबते यहा जन्म तब भयऊ * कबहुँ न सग बिछुरि मम गयऊ
अस विचारि दुख होतहै मोहीं * ब्याही आन पुरुष अब तोहीं
ताते मैं नहिं दाना खाहूँ * बारहिंबार मनहिं पछिताहू
सुनि कन्या बोली मृदु बानी * शोच किहे दुख है अन हानी
हम जो कहा नरतनु के माहीं * भजहु राम फिर अवसर नाहीं
तब कार्त्तिककी आश लगायो * अब बारण की देही पायो
दो० तब कार्त्तिककी आशकरि, बिसर्यो सिरजनहार ।
अब चौरासी योनि में, आय पर्यो भरतार ॥
ताते पुनि मै कहत हौं, दुखतजि भोजन खाहु ।
तुम्हैं छाडि हौंना करब, आनपुरुषसँग ब्याहु ॥
सो० सुनिगज भोजन कीन, लखि नृप बोल्यो कुँवरिते ।
कौन मन्त्र तुम दीन, जो सुनि खायो तुरतही ॥
च०छ० कह कन्या वहि जन्म, केर गज अहैं मोर पति ।
मैं हौं याकी नारि, बिप्रघर जन्म रहै सति ॥
हौं गुरुकरि हरिभज्यों, भइउँ तेहि सुता आइ तब ।
इन दीन्हों बहु दान, भक्तिबिन बारणवपुभव ॥
सज्योस्वयम्बरसाजसुनि, करिभोजनतजदीनतेहि ।

बचनदीन मैं जाइजब, तबफिरभोजन कीन्हयहि ॥
सुनि अस बचन भूप हरषाना * कन्या बचन सांच नहि माना
लागे करन स्वयम्बर साजा * आये देश देश के राजा
रानी तब कन्यहि अन्हवावा * कीन्ह्यो तनु शृङ्गार सोहावा
सहित सनेह गोद बैठाई * बोली मधुर बचन सुखदाई
रङ्गभूमि आये बहु भूपा * देश देश के सुभग स्वरूपा
जो तव मन भावै महिपाला * मेल्यो तासु गरे जयमाला
अमकहि हार दीन्ह तेहि हाथा * पठई एक सहेली साथा
भूपन दिशि नहि दृष्टि उठाई * चली कुंवरि कुञ्जरपहँ आई
पर्शा उर मेल्यो जयमाला * चकित भये सब देखि भुवाला
सबहिन कही बयस लघु जानी * चांधिगई कन्या फिरि टानी
सखी सदन लाई जहँ रानी * मातु ताहि लखि बहुत रिस नी
दई सबै मति हरी तुम्हारी * नृप तजि माल व्याल उरडारी
दीनचहै विधि दुख जब जेही * ताकी मति पहिले हरिलेही
असकहि पुनि दीन्ह्योकरमालहि * श्रवने पहिरावहु नरपालहि
गई कुँवरि पुनि करि उरडारी * देखि भूप सब चले सिधारी
तब राजा अतिशय दुख पावा * असि ले कन्यै मारन धावा
श्रुतिधारी जे विप्र प्रवीना * छोरि कृपाण नृपति ते लीना
अल्पवयस यह अहै कुमारी * है अज्ञान न चाहिय मारी

सो० गोर रहित द्विज चोर, सुता नारि व्यभिचारिणी ।
यती भ्रष्टजन और, तदपि न इनको मारिये ॥

प०छ० दश गो मारे पाप, सदृश यक द्विज संहारे ।
दशद्विजवधे जो पाप, एक स्त्री के मारे ॥
दश स्त्री वध पाप, एक कन्या वध होई ।

दश कन्या बध पाप, यती यक मारे सोई ॥
दो० दश दण्डी मारे परै, जो पातक शिर आय ।
तेहिसम यक हरिजन बधे, कहतनिगमअसगाय ॥
ताते छाजन लीजिये, कीजै एक उपाय ।
वर खोजाय टीकाकरो, बहुरि देहु भौंरयाय ॥
सुनि नृप नाऊ विप्र बोलावा * वर ढूढन हित तुरत पठावा
पुर अरु ग्राम अनेकन देशा * देखे जहँ तहँ सकल नरेशा
गुग पगु अन्धा वर काना * सिरी बरी कोढा जाना
असवरु मिले जहा चलि नाहीं * कन्यासरिस मिले कहुँ नाहीं
तब द्विज नाऊ दोउ फिरिआये * राजा ते सब बरणि सुनाये
सुनि नृप कर्मबिपाक मगाई * विप्रन ते ताको बचवाई
कह द्विज कन्या कहा जो रहई * महाराज से साँची अहई
जहा तहा फैली यह बाता * हाथी राजा वर जामाता
सुनि अपकीरति नृप दुख पावा * अग्निकुण्ड तुरतै खनवावा
दो० गोमल घृत भरिदीन नृप, जरे लाग तेहि माँह ।
तेहि क्षण आये देवऋषि, खैंचिलीन्ह गहिबाँह ॥
कह नारद क्यों जरै भुवाला * सो सब बरणि मोसे हाला
बोल्योनृप गजअशन न कीन्हा * कन्या ताहि खवावै लीन्हा
मैं पूछा कस दिहे खवाई * कन्या कहा मोर पति आई
तासु गिरा हम सत्य न जानी * यत्न स्वयम्बर की सब ठानी
कन्या हारु गजहि पहिरावा * तेहि पाछे मैं वर खोजवावा
जासि कन्या वर मिला न तैसा * मिला सो आंधर पगु अनैसा
तब मैं कर्मबिपाक बँचाई * कन्या कहा सो साची पाई
ताहूपर जे पुरुष अनारी * पग पग निन्दा करैं हमारी

सो अपकीरति सुनी न जाई * ताते जरिमरिहौं अपिराई
दो० कह नारद जनिजरहु भय, है कछु एक उपाय ।
रामनाम गज सुनत सो, अवहीं नर होइजाय ॥
सुनि मुनि वचन भूप सुख पावा * बारबार चरणन शिर नावा
महाराज अब देर न कीजै * वेगि गजहि गुरुदीक्षा दीजै
जेहि अपकीरति मिटै हमारी * वरीजाय तेहि साथ कुमारी
सुनि नारद हरिमन्त्र सुनाया * गजपातक सब दूरि बहावा
मुक्तो भा कालह यक आई * तेहिशोभा कछु वरणि न जाई
वयस किशोर गौरतनु जासू * दृगविशाल शशितम मुखहासू
बाल विलोकि भूप अरु नारी * इकटक रहे निमेष निहारी
देखि सखी सब कुँवरि सराहैं * धन्यभाग्य बड़ तुम्हरे आहैं
प्रथम तनु दुख सह्यो अपारा * नाते पायो सुभग कुमारा
इमन विधि अस दीन्हो नाहा * सखी सराहि कहैं मनमाहा
तब कुमार शिशुवन्दन कीन्हा * शीशनाइ चरणन परिलीन्हा
जयजयजय ऋषिराज तुम्हारी * मोहि पापीकी विपति निवारी
गजतनुलहि मैं अति दुखपावा * ता दुखते तुम आजु बचावा
दो० आन्यो मैं तव कृपाते, अब सतसंग प्रभाव ।
दानौ जात न बाढ़ि हित, करत जहां चलिजाव ॥
तब मुनिवर बगशिक्षा दीन्हा * मुनि तेहिसहित हिये धरिलीन्हा
नृपनारी कन्या लेइ आनो * भे नारद के शिष्य बखानो
तेहि पाछे पण्डित बोलवावा * व्याहहेतु शुभ दिवस शोधावा
पत्रा खोलि विप्र अस बोला * आजु लग्न नृप अहै अमोला
सुनि नरेश मन में परतीती * कीन्ह व्याह गन्धर्व कि रीती
बहुविध दायज दीन्ह भुवाला * बड़ आनन्द भयो तेहिकाला

गी० छ० ॥

नृप कीन्ह सुता विवाह अति उत्साह नहिं वरणत बनै ।
दियो दानबहुमहिसुरन कहँ गजबाजि पटरथ को गनै ॥
दिनदिनअधिकअधिकातसुख सुरगुरुसरिस बहुभातिहो ।
गुरुशरणके परताप ते रहि सकल संशय जातिहो ॥

दो० गुरु समान तिहुँलोकमें, और न दूसर देव ।
ताते शौनक कीजिये, गुरुचरणन की सेव ॥
दीप उडुप मणिचन्द्ररवि, पञ्चप्रकृति गुरु जानि ।
वैष्णवदीक्षा सर्वपर, मुनिवर कहत बखानि ॥
वैष्णव धर्मते परे जो, धर्म निरूपै कोय ।
सो सहस्र जयमान ते, सुजनन वाढ़ सोय ॥

कु० अन्य सुराश्रय होइ तो, राममन्त्र फिरि देय ।
राममन्त्र युत जौन तेहि, अपर न देय न लेय ॥
अपर न देय न लेय, सोई पथ पाय बतावै ।
सतगुरु मानहि ताहि, ज्ञान जो जाते पावै ॥
कहत दास रघुनाथ ये, गुरु शिष्य दोउ धन्य ।
परै नरक महँ जाग जो, धर्म सिखावै अन्य ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतगुरुमाहात्म्यकृष्णदत्तकथावर्णनोनाम पञ्चमाऽध्याय ॥ ५ ॥

दो० सुमिरि राम सियसन्तगुरु, गणपगिरासुरखानि ।
वर्णों नाम प्रभाव बहु, ग्रन्थनकर मतआनि ॥

पुनि शौनक बोले कर जोरी * ऋषि सुमन्तु पद प्रीति न थोरी
नाथ मोहिं निज सेवक जानी * नाम महातम कहौ बखानी

सुनि मुनि वचन सूत हरषाने * बोले विमल वचन सुखसाने
सुनौ कहौं मैं नाम प्रभावा * जो गिरिजा प्रति शङ्कर गावा
एकबार शिव सहित भवानी * बैठे निज आश्रम सुखदानी
पतिहि प्रसन्न देखि अधिकाई * बोलीं शिवा सनेह बढ़ाई
दो० मुहुरमुहुर तुम कहतहौ, रामनाम सुखदानि ।
तासु अर्थ करि कृपा प्रभु, मोसे कहौ बखानि ॥
धन्य प्रिया तुम जगतमें, कह्यो ईश हरषाइ ।
रामनाम के अर्थही, जो पूछेउ मनलाइ ॥
चारि वेद अरु षटसहस, सब पुराण मुनि देव ।
नामप्रभाव सो उग्रअति, ते नहिं जानत भेव ॥
रामनामको अर्थ जो, सो सब जान्यो राम ।
तासु अनुग्रह से कछुक, मैं पायों सुखधाम ॥
निजमति सरिस सुनहु मनलाई * नाम अर्थ मैं कहौं बुझाई
कोटि कामसम जा तनु शोभा * अस को जो न देखि तेहि लोभा
जनक नगर जे नर अरु नारी * रमेदेखि तनु सुरति बिसारी
सप्तद्वीप के नृप जो आये * सहितविदेह सो देखि लोभाये
परशुराम बिन कारण कोही * रामरूप देखत गे मोही
बन विहरत खग मृग नर नारी * कोल किरात पात द्रुम डारी
भे सकल मिलि सेवा ठानी * रामक्रीड़ा तेहि कहत भवानी
घेरि निशाचरि लखि छवि रामा * पुनि इच्छा कीन्हेसि वशकामा
चौदह सहस असुर खरदूषण * मोहे देखि राम बिन भूषण
दो० दण्डकबन मुनि सर्व जे, ज्ञान योग तपधाम ।
रामरूप छवि देखिके, भे पूरुष ते वाम ॥
रमेहु बालि देखत रघुराया * अजरामर नहिं लीन्ही काया

रावण समर निशाचर जेते * देखि राम छवि मोहे तेते
अवध नगर नर नारि चराचर * रम्यो राम तनु देखि दिवाकर
रमुक्रीडा ताते तुम जानौ * अब सो सुनौ जो और बखानौ
जलतरङ्ग जिमि रवि अरुधामा * कनक एक भूषण बहुनामा
गिराअर्थ जिमि अग्नि उष्णता * कहत भिन्न नहिं भिन्नसो अनता
तैसे नाम रूप द्वै भावा * यदपि नाम कर अधिक प्रभावा

दो० रूपमिलतनहि नामबिन, नाम रूप बिन बादि ।
ताते दोऊ नित्य हैं, अमलअनूप अनादि ॥
रामबदन रा जानिये, आ तेहि उर पहिंचानि ।
मा मकार दोउ चरण भे, रेफ तेज चेतानि ॥

सो० कोटि भानुते भूरि, है प्रकाश यामें बिमल ।
रह्यो चराचर पूरि, परब्रह्म ताको कहत ॥
कोटि विष्णु अज ईश, कोटि शारदा शेश शशि ।
सुरपति कोटि फणीश, समप्रभाव जामें विशद ॥
नीरथ कोटि अनन्त, नाम अधिक पावनकरन ।
हरणपाप श्रुति सन्त, कहत तदपि उपमा नहीं ॥

कह रवि कहँ खद्योत प्रकाशा * सम कि लहै मुख फूँक बताशा
उपमा नाम कि नाम न आना * गुह्यभेद सुनु करहु बखाना
रामनाम अशाश ते जानौ * तीनि सिद्धि भै प्रकट बखानौ
सोह बीज और ॐकारा * अर्थ अर्थ ते करब विचारा
अर्धाकार ते ऊ पहिंचानो * रेफ सो अन्तरभूत पिछानो
हल मकार ऊपर अनुस्वारा * ताते सिद्धि भई ॐकारा
यहिविधि सोह बीज भवानी * नाम ते प्रकट मुक्तिकी दानी

दो० रामनाम ते प्रकट भई, षटबस्तुहुँ जे और ।

तिनके नाम बखानहूँ, सुनु मन करि इकठौर ॥
परब्रह्म अरु जीव जो, महानाद स्वर चारि ।
पञ्चम बिन्दु षष्ठ अवर, मायादिव्य निहारि ॥
परब्रह्म सो रेफते भयऊ * जीव रकार आदिते कहऊ
मध्याकार नाद सो कहिये * रा दीरघ ते स्वरको लहिये
हल मकार ते भा अनुस्वारा * अनुस्वार ते प्रणव विचारा
प्रणव ते भये तीन गुण जानो * सत रज तामस आदि बखानो
त्रैगुण ते त्रैदेव उपाये * ब्रह्मा विष्णु महेश कहाये
तिनते भयो सकल ससारा * रमुकीडा तेहि करत उचारा
दो० नारायणको रूप करि, जो है प्रथम रकार ।
महाविष्णु आकार ते, महाशम्भु माकार ॥
रामनाम के भीतरै, ब्रह्म जीव त्रैलोक ।
ज्योतिषिबीज नक्षत्र नभ, नगरमाहिं गृहथोक ॥
रामनाम के ध्यान में, सृष्टि ध्यान होइजात ।
जिमि सींचे यक मूल के, डार पात हरियात ॥
रामनाम को छाडि कै, करत जो अपरउपाय ।
मस्वतजि भोजनभजैजिमि, सपनेहुँ क्षुधा न जाय ॥
रमुकीडा याते बुध कहई * अपर हेतु सुनिये जो अहई
परम याग शुभ रेफ कहावै * परम विराग रकार बतावै
सो पावक के बीजहि लहिये * वडवानल आदिक जो कहिये
अस विचारि जो नाम उचारै * कर्म शुभाशुभ सो सब जारै
परम ज्ञान विज्ञान जो कहई * ताको मूल अकार सो अहई
सो सूरज का बीज यही है * सुमिरत करत प्रकाश सही है
भक्तिस्वरूप मकार सोहावनि * चन्द्र बीज त्रैताप नशावनि

तीनकाण्ड रविशशि सबजाते * रमुक्रीडा कवि बरणत ताते
सत रकार चित जानु अकारा * आनदरूप मकार विचारा
सत कहिये जो विनशै नाहीं * चित चैतन्य सकल घटमाहीं
आनँद जो नित यहै अनन्दा * ताते नाम सच्चिदानन्दा

दो० ततपद ब्रह्म सो रेफ कहि, त्वम्पदजीव अकार ।
हलमकार मायाअसी, तत्त्वमसी श्रुतिसार ॥
हल मकार क्षर माया, अक्षर ब्रह्म अकार ।
रेफ निरक्षर ब्रह्म कहि, सब व्यापक निरकार ॥
हलमा इच्छा प्रकृतिते, सकल शक्ति सजाय ।
रमुक्रीडा तेहि कहत अब, मुख्य नाम कहौ गाय ॥

कुं० विष्णु नरायण कृष्ण जो, वासुदेव हरि ब्रह्म ।
परमेश्वर परमातमा, विश्वम्भर निष्कर्म ॥
विश्वम्भर निष्कर्म, कलानिधि कलुष हनन्ता ।
केशव कमलाकन्त, विश्वबन्धु भव भगवन्ता ॥
औरो नाम अनेक जो, रटै त्यागि मुख शिष्णु ।
सुखदसकल पावनमहा, पहुँचावत पुरविष्णु ॥
सब नामन मे रामनाम, परकाशक जिय जानु ।
जिमि नक्षत्रमहँ चन्द्रमा, अरु ग्रहगन में भानु ॥
अरु ग्रहगन में भानु, कविन में यथा अनन्ता ।
निर्झर में जिमि शक्र, भक्तमें जिमि हनुमन्ता ॥
लोकन में गोलोक, सरित में सरयूधारा ।
नरनमाहिं जिमि भूप, धनुषधारिन में मारा ॥
भगवन्तन में राम, यथा शक्तिन में सीता ।
अद्रिन में जिमि मेरु, पुण्यपाठन में गीता ॥

कामधेनु गो माहि, अहिंसा धर्मनमा जिमि ।
वृक्षन में सुरवृक्ष, खगनमे बनतेय तिमि ॥
क्षमनमाहिं जिमिक्षमा, सरनमें जिमिसरस्वान ।
कर्मन में हरिकर्म, ज्ञान मे ब्रह्मज्ञाना ॥
पुरिनमाहिंजिमिअवध, मन्त्रमें जिमि ॐकारा ।
रुद्रन में मैं यथा, स्वरनमें जिमिआकारा ॥
पुष्कर तीरथ माहि, मणिन में कौस्तभ जैसे ।
सब नामन में राम, नाम तुम जानौ तैसे ॥
सुनिबोलीगिरिजावहुरि, बरणौ तिनके अर्थ अब ।
कहशिवसोऊ सुनु प्रिया, बरणौं नामसक्षेप सब ॥
नर जीवनकी संज्ञा मानौ * नर सब जाके आश्रित जानौ
ताते नाम नरायण कहिये * नर हियअयन जा तुको लहिये
हरि दुख हरत भक्तके पापा * ताते हरि अस नाम सुथापा
वासुदेव सबमा बस जोई * सब जहं बसै वासुदेव सोई
केशव सो जेहितेहु सुर सेवैं * कला अंश अवतार जो लेवैं
पोषत भरत सकल ससारा * तासु विश्वम्भर नाम उचारा
पूरण जिमि सबजगतअकाशा * सर्वभिन्न निरगुण परकाशा
ताते ब्रह्म कहावत सोई * अनत अनन्त रूप जेहि होई
दो० कृषिभूवाचक शब्द जो, ताहि कहत हैं कृष्ण ।
सबमें व्यापक रहत नित, बिपणव्यापसो विष्णु ॥
सर्वैश्वर्य सुधर्म यश, श्री विराग विज्ञान ।
षटभग जामें होइ ये तेहि कहिये भगवान ॥
राम नाम ते होत जो, सो काहू ते नाहिं ।
यह निश्चयकरिदेखियो, सकल पुराणन माहिं ॥

रामनाम निर्वर्ण है, सब वर्णन को ईश।
मुकुट छत्र ये जानिये, रेफ बिन्दु सब शीश॥
राम नाममय सर्व है, नाम प्रकृति अरु वर्ण।
रमुक्रीडा ताते कहत, सुनहु अपर परिकर्ण॥
कोटितीर्थ व्रत दान तप, कोटि योग जप ध्यान।
कोटिज्ञान विज्ञान मख, तुलै न नाम समान॥
सप्तकोटि जो मन्त्र है, चित भरमावन काज।
रामनाम परमन्त्र है, सकल मन्त्र को राज॥

रामनाम जे जपैं सदाहीं * मुक्ति मुक्ति तेहि संशय नाहीं
मूर्ध गगन तहँ बसत रकारा * त्रिकुटी बास अकार विचारा
जिह्वाबाम मकारहि जोई * निजनिजथल उच्चार सो होई
योगी अर्न रकारहि ध्यावै * अरु अकार ज्ञानिन मनभावै
पूरण नाम जपै हरिदासा * मुक्ति मुक्तिकी छाडै आसा
जैसे मन्त्र प्रयोग कहावै * तैस तैस साधे फल पावै
ते सब सिद्ध क्षिप्र होइ जाई * रामनाम सुमिरै मनलाई
जपै कौनविधि युक्ति बताओ * निजजन जानि न नाथ दुराओ
कहशिव सुनो प्रिया करिप्रीती * नाम जपनकी बरणों रीती
सतगुरुते जब पावै नामैं * करि विश्वास रटै तजि कामैं

गी० छं० ॥

तजि काम क्रोध बिमत्सरालस लोभ मोह निवारिकै।
छल मल कुसंगति त्यागि मद दुरवासना सनमारिकै॥
शुचि अंग गो मन जीति नासा निरत नित नामैं रटै।
है जाय सो नर रामही को रूप भवबन्धन कटै॥
प्रीति अप्रीति रीति बिन जाने * कहत नाम सुख लहत सयाने

अमिअगरलगद जलमलआगी * पारससम गुण कहत विरागी
अन्तर नाम जपत जो कोई * मुक्ति होत परिभक्तन सोई
रामरूप दरशन नहि पावै * ताते जन रसना मन लावै
रसना नाम रटन जो कोई * पराभक्त हरि दर्शन होई
रसना नाम रटेउ जिन जानो * तिन सबहिनके नाम बखानो

दो० लोमश नारद व्यास शुक, भृगु अगस्त्य प्रहलाद ।
गणिकायमन गयन्दद्विज, नामक जान्यो स्वाद ॥

काकभुशुण्डि नाम गति जोई * कल्पान्तौ जेहि नाश न होई
बालमीकि ध्रुव सुमिरेउ नामा * पावन भयो लह्यो बिश्रामा
नाम प्रसाद शेष महि लीन्हे * भुवन चारिदश रजसम कीन्हें
नामहिं बल मैं विषकियो पाना * वेदपुराण विदित जगजाना
सनकादिक गणपति हरिजाता * जीवनमुक्ति पूज्य सुखदाता
औरौ अमित भये हरिदासा * नाम सुमिरि गे प्रभु के पासा

सो० योगी ज्ञानी भक्त, जे सुकर्म करता सकल ।
राम नाम अनुरक्त, रसुक्रीड़ा ताके कहत ॥

सतयुग सत्य न झूठ बखानी * करि हरि ध्यान तरै भव प्रानी
त्रेता तप मख सयम करही * सुरबलि देइ जीव जग तरही
द्वापर व्रत पूजा आचारा * करि करि जीव होइ भवपारा
कलि नहिं तप व्रत सयम योगा * साधन कठिन देह बस रोगा
ताते निगम सुगम मगगावा * कलिभवसिन्धु नाम दृढ नावा
नाम प्रताप सकल युग जानू * कलिविशेष जिमि ग्रीषम भानू
अस विचारि ते नरवर ज्ञानी * जपहिंनाम ऋतुअनऋतुमानी
अन्नअशनतजि बनफलखाना * गजरथ बाजि देइ गोदाना

गी० छं० ॥

गो देइ कोटिन दान गिरि चढ़ि झांप ले तन जारहीं ।
सब करहि तीरथअटन ज्ञान पुराण वेद विचारहीं ॥
मख कोटि सुर तेंतीस राधै योग अष्टागहि करै ।
यक राम नाम जहाज बिन ससारसागर ना तरै ॥

दो० स्रवैअनलशशिव्योमफल, तम रवि देइ मिटाय ।
बिन हरिभजन न भवतरै, करे जो कोटि उपाय ॥
गरुडै खाइ भुजगवर, घृत निकसै जलनीक ।
भजन बिना सुख ना लहै, यह पाथरकी लीक ॥
असबिचारि रघुनाथ भजु, रामनाम मन ओर ।
जब होई तब होइहै, येहीते भल तोर ॥
सोइ ज्ञानी ध्यानी गुणी, दाता शूर सुजान ।
अतिपवित्र रघुनाथ सो, जो सुमिरै भगवान ॥
रामनामका अर्थ कछु, कह्यो बुद्धि अनुसार ।
नामप्रभाव अपार अति, को अस पावै पार ॥
शठ अशिष्य विषपाठकी, तिन्हें न यह मत देइ ।
राम उपासक ते कही, जो सुनि उरधरि लेइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतनाममाहात्म्यवर्णनोनामषष्ठोऽध्याय ॥ ६ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखखानि ।
कूरम कोल पुराण की, कहौं इतिहासवखानि ॥
कहशौनक हरिनामकहि, पतित तरे जग कौन ।
यह अभिलाषा सुननकी, कहौ नाथ तुम तौन ॥
वदेउ सूत हरिनाम कहि, तरिगे पतित अनेक ।

पार न पावै जो गनै, सहस शारदा शेष ॥
जो कछु मम जाने सुने, गुणे पुराणन माहिं ।
सो तवहित वरणन करौं, जो पूछेउ मोहिं पाहि ॥
बालमीकि गणिका गज जानौ * यमन केर इतिहास बखानौ
क्षीरनिमुख इक मुनिवर रहई * विपिनमध्य तनयोग न चहई
इकदिन स्वपने शुक्र विनासा * बाबी धरि ऋषि चले उदासा
तेहिते बालमीकि मुनि भयऊ * ठगनि केरि सगति होइ गयऊ
तिनके साथ विपिन नित जाई * मारि जीव धन लेइ छिनाई
सब विधिसो जब भयो सयाना * तब वन लाग अकेलेहि जाना
ब्राह्मण वैश्य शूद्र जेहि पावै * प्रथम मारि तेहि वस्तु छिनावै
जो कोइ आपुहते धन देई * विनवध किहे कबहुँ नहिं लेई
दो० एक दिवस बड़ि देरभइ, मिला न कोऊ ताहि ।
तेहि मग निकसे सप्तऋषि, कहत नाम जो आहि ॥
कश्यप अत्रै जमदगिनि, विश्वामित्र वशिष्ठ ।
भरद्वाज गौतम कहे, नाम सप्तऋषि शिष्ठ ॥
इन्हैं देखि धावा हरषाई * बोला वचन मुनिनते जाई
पोथी पत्रा देहु उतारी * नाहिंत सबन डारिहौं मारी
जानि दुष्ट बोले मुनि ज्ञानी * सुनु ठग हम पूछत इक बानी
जो तुम पाप करत अतिभारी * तिनमा कोइ औरौ सक्रियारी
यह घर जाइ पूछिये वाता * आइ हमै फिरि कीजै घाता
कहौं विहँसि मैं वृक्षन जावौं * तुमभजिजाउ कहा पुनि पावौं
तब मुनि सोइ रामकी खाई * सुनि आवा घर देर न लाई
तात मात सुत वनिता भाई * पूछेसि सबका निकट बोलाई
मैं जो लूटि मारि धन लावौं * खातसकलमिलि भोग भोगावौं

जीव बधेकर पाप जो होई * तेहिमा सभियारी है कोई
सबहिन कहा पाप जो आहीं * ताके हम साथी हैं नाहीं
दो० अस सुनि सो डरपत भयो, गयो सप्तऋषि पास ।
हाथ जोरि चरणन परयो, करयो बचन परकास ॥
महाराज हौं शरण तुम्हारी * पतितजानि मोहिं लेहु उबारी
सुत पितु मातु बन्धु त्रिय नाती * हैं सब स्वारथ केर सँघाती
सकट परे काम नहिं आवैं * सबके सब जहँ तह भजिजावैं
अब लग मैं सबका निजुजानी * करतरह्यों पातक सुख मानी
सो अब समुझि लगतडरभारी * पाहि पाहि मैं शरण तुम्हारी
दीन जानि बोले सुखदाई * मरामरा कहि सुमिरेहु जाई
सुनिसुनि बचन हृदयधरिलीन्हा * मरामरा सोइ सुमिरण कीन्हा
तिसरे शब्द राम होइ गयऊ * बालमीकि कर कारज भयऊ
जाप करत भे पातक नाशा * निर्मल हृदय भयो परकाशा
दो० तबभविष्यसियरामयश, कह्यो कोटि शत गाइ ।
शौनक नाम प्रभावअस, मरा कहे गति पाइ ॥
और सुनो गणिका इक रहई * ताके पाप पार को लहई
अन्त समय लीन्हों यम घेरी * लगे देन तेहि त्रास घनेरी
तेही समय यक हरिजन आयो * देखि नायिका बिनय सुनायो
तुम हो दीनबन्धु सुखदाई * मोहिं सकटते लेहु छुडाई
सुनि साधू मन विस्मय कीन्हा * मन्त्र याहि नहिं चाहिय दीन्हा
जो याकर कल्याण न होई * तौ प्रण जाइ हमारो खोई
बिना नाम भल होत न जानौं * याहि कौनबिधि नाम बखानौं
दो० अस बिचारि साधू कह्यो, जग जो हिन्दूलोग ।
कीर पढावत कहौ सोइ, तब तब नाशै शोग ॥

सुनिगणिका कह राम्लो आही * अस कहते तन छूटा ताही
छूटनहि हरिगण आये धाई * यम फांसीते लेत छुड़ाई
हितते सुभग विमान चढ़ावा * रामधाम तहं जाइ बसावा
अस है राम नाम सरदाई * अधम जाति गणिके गतिपाई
एकहु एक गज अतिबलवाना * करन गयो सागर जलपाना
आह गह्यो तापद पग धाई * लैगा जल गहिरे गाहलाई
फिरि गज खैंचि किनारे लावा * यहिविधि सो बहुकाल बितावा
गजके तात भ्रात सुत भामा * कछुदिन भोजन दीन्हों तामा
पाछे सयन त्यागि तेहि दीना * क्षुधा क्षीण भा बल ते हीना
कोउ सहायक जब नहिं देखा * जान्यो गा अब प्राण विशेखा
तब नहिं अर्ध नाम गोहरायो * गरुड़छाड़ि हरि तुरतहि धायो
आइ हति गज लीन बचाई * सुनु मुनि अस दयालु रघुराई
तिन्हें छांड़ि जे आनै ध्यावैं * तजि सुरसरिजल कूप खनावैं
और सुनौ मैं कहौं बखानी * रह्यो मलेच्छ एक अघखानी
एक दिवस गुवा पहँ गयऊ * बाहर ग्राम सो बैठत भयऊ
पाछे ते शूकरसुत आवा * विट ऊपर मुख मारि गिरावा
कहा यमन मा को हारामा * अस सोगत छूट्यो ता जामा
यमके दूत गहिन तेहि धाई * आड गगन तब लीन छिड़ाई
कहा गगन लीन्हों यहि नामा * अब नहिं जाय तुम्हारे धामा
कह यमदूत हराम जो कीन्हा * सो यहि नाम सुवरका लीन्हा
हरिगण कह सकटके मारे * हाइ राम अस कहेसि विचारे
दूत कहा चलि न्याव चुकाई * जाहि मिलैं सोई लैजाई
यहिविधि झगरत गे विधिपासा * बोलें ब्रह्मा जाहु कैलासा
तब चलि उमानाथ पहँ गयऊ * दोउमिलि हाल गुजारत भयऊ

दो० सुनतकहा शिवनामकर, न्याव न मोसों होइ ।
चलि वैकुण्ठ चुकाइये, श्रीपतिते कहि सोइ ॥
अस विचारि वैकुण्ठहि आये * समाचार सब हरिहि सुनाये
कह यमदूत चरण शिरनाई * इहुहै अति पापी अन्याई
मरत हराम कहेसि मुख येहीं * तात गण लै जान न देहीं
सो नियाय तुमते प्रभु होई * जो तुम कहौ करैं हम सोई
सुनत विष्णु मन कीन्ह विचारा * नाम प्रभाव अनन्त अपारा
बोले यमदूतो सुनि लीजै * याको इहैं रहन अब दीजै
सुनियमगण चलिभ खिसिपाई * हर्षे शिव निरखि मुनिराई

गी० छ० ॥

हर्षे बिरञ्चि महेश शेश गणेश नारद आदिकै ।
जहि हेतु मुनि तप करत योगी योग आसन साधिकै ॥
नहि मिलत सो पद यमन कहि हाराम बिनश्रम पायहू ।
अस जानि नामै ना जपैं तिन बादि जन्म गँवायहू ॥

दो० अस है नाम प्रभावजेहि, कहि न सकैं हरि आपु ।
ताते सन्तत कीजिये, रामनाम को जापु ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरअन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतवाल्मीकिगजगणिकाउद्धारवर्णनोनाम
सप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

दो० सुमि रेरामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं कथा भागवत की, अब इतिहास बखानि ॥
बोले मुनि कछु नाम प्रभावा * कहौं सुनौ अब अपर सोहावा
कनउजतीर ग्राम इक अहई * अजामील द्विज तामें रहई
माता पिता नाम जस धारा * सो सब साच कीन्ह करतारा

पूर्वकर्म वश तजि निज नारी * वेश्या एक लिहिसि बैठारी
सुरापान ताके सँग कीन्हा * शौच सयान दूरि धरि दीन्हा
अजा मोल लै नीचन देई * चर्म नक्र पर अपना लेई
असपातक निशि वासर करई * हृदय नेक दाया नहिं धरई
प०छं०एकदिवस इक साधु, तासु नगरी महँ आयो।
पूछेउ हरिजन धाम, सुनत दुष्टन बहँकायो॥
अजामील घर जाहु, चहौ जो तुम विश्रामा।
हरिजन जान्यो सांच, गयो चलि ताके धामा॥
दो० गणिका लखि घूमे तुरत, अजामील सुनिपाइ।
विनती करि फिरि लैगयो, आसन दीन बनाइ॥
यद्यपि मैं यहि जन्म में, दुर्भग अघयुत दीन।
तदपि पाछिले जन्म महँ, पुण्य घनी कछुकीन॥
मो० पुण्य पुञ्ज बिन नाथ मोको तव दर्शन कहां।
जोपि मिलत कहुँ साथ, तौ नहिं होतो भाव उर॥
अस कहि सीधा विटते लायो * विविधभांति भोजन करवायो
हरि प्रसन्न बोल्यो हरिदासा * तव बनिता उर पुत्र निवासा
थकि बेर जन्मब जब याही * धरो नाम नारायण ताही
नारायण जो धरिहौ नामा * तौ नहिं जैहौ यम के धामा
प०छं०असकहि हरिजन गयो, भयो जब बालक जानी।
धर्यो नरायण नाम, बचन बैष्णव को मानी॥
तासों राखै नेह, नेकु नहिं न्यारा करई।
मोहवश्य भा अन्ध, मृत्यु ते नाहीं डरई॥
दो० यहि भांतिन कछु कालगे, अन्तसमय कीं बार।
लेन चले यमदूत बहु, आये तासु अगार॥

महाभयानक रूप निहारी * अजामील डरयो अतिभारी
मुद्गर मारि डारि गर फासा * काढत जीव चले उधश्वासा
निकसत प्राण भई अति पीरा * रही न तनुकी सुद्धि शरीरा
कण्ठघेरि यमगण इक लयऊ * मुखसे बचन बोलि नहिं गयऊ
दो० तबसोइसुतकी यादिकरि, कह्यो बचन हरुवाय ।
कहां नरायण पुत्र मम, तेहिमोहिदेउदिखाय ॥
नाम लेत हरि हृदय बिचारा * दुखकी बश कहुँ मोहिं पुकारा
मोर नाम जे जग में लेहीं * तेहि कि कष्ट यमकिंकर देहीं

सवैया ॥

तुरतैहरिबोलिकह्योगणते केहुनामलियोतेहिवेगिपचावो ।
फासछोडाइचढाइ विमान बजाइनिशानमेरे ढिग लावो ॥
आयसुपाइ गये द्विज धाम विलोकिकै दूतसबै दुखपावो ।
बोलिउठे तबहीं गणते केहि कारण भौनघुसे तुम आवो ॥
इतना सुनि उत्तर गण दीन्हा * इहा रहत हरिजन हम चीन्हा
तासु फास काटन के हेता * ताते पठइनि कृपानिकेता
सुनि यमदूतन कहा रिसाई * तुमतौ गणौ बडे अन्याई
याकीसम नहिं दूसर पापी * ताको तुम हरिजन करि थापी
न्यायनि माम किहिसिमदपाना * अनजारहि लैचल्यो विमाना
सुनहु गणौ जे आमिष खाहीं * तेहिसम और पाप नहिं आहीं
याकर दोष नौन कछु होई * कृष्ण कह्यो पारथसे सोई
पशु हते जो रोम शरीरा * तितने वर्ष नरक सह पीरा
आठ जो हिंसाके गृह जानो * सो भाग्न मे साखि बखानो
जीव बधन इक आज्ञा देई * दूजो मारै वै नहि लेई
चौथो सुनो सवारन हारा * पचवा बेचनहार निहारा

अठा रसोई जौन चढावै * सतवां सो जो परसि जिमावै
अठवा खानहार जो होई * परै नरक महँ आठो सोई
दो० मोल मंगावै घर हते, ताहि द्रव्य दे कोउ।
सुखसम्पति सब नाशही, मोक्ष लहै नहि सोउ॥
द्विज ह्वै के मदिरा जो खाई * देव तुरुककर पूजै जाई
बारमुखी जो गरे लगावै * कुलका धर्म सकल घटिजावै
तेहि द्विजकी पूजा जो करई * पुण्य जाइ घटि अघ शिर परई
यामें नहिं हम झूंठ बखाना * धर्मशास्त्र में यह परमाना
तेहिते अब ऐसी जनि कीजै * याहि नरक लैजाने दीजै
अस पापी जो हरिपुर जाई * नरकहि तेहि हम डारब भाई

सवैया॥

बोले तबै गण दूतनते तुम नाममभाव न जानत भाई।
गो द्विज पापकरै नर जो अपने करते मधुलेइ छोडाई॥
चोरी करै बटपारी करै गुरुतल्प धरै पग आमिष खाई।
औरहु पापकरै बहु जो हरिनामलिहे सबही जरिजाई॥
दो० गणिका यमन गयन्दसे, वालमीकि अघखानि।
नाम कहत सब तरिगये, कहँलगिकहौं बखानि॥
कोटि गऊ जो देवै दाना * ग्रहण करै काशी अस्नाना
मकर प्रयाग बसै जो जाई * यज्ञ करै दश महस सोहाई
गिरि सम हेमदान कर कोई * राम नामसम तुलै न सोई
यथा द्वैमुक मुद्रा जग माहीं * है सब एक पदिक सम नाहीं
वस्तु अमोल यथामति कहहीं * जिनजानाजस तसफल लहहीं
सकलहि परिहाम जो करई * राम नाम सुमिरत अघ हरई
अस हरिनाम प्रकट जग थाहीं * शेश महेश रटतहैं जाहीं

सोई नाम याते कहि आवा * याकी सम को भक्त कहावा
कह यमदूत सुनहु गण जेता * कब यहिं कीन रामते हेता
यह तौ पुत्र नाम कहि टेरा * ताते हम दियो दुःख घनेरा
जो यह लेत रामकर नामा * तो हमते याते का कामा
कहगण हरिजन जो कहिगयऊ * ताके वचन मानि यहि लयऊ
करि उपदेश सन्त दिय नामा * ताते भक्त भयो यह रामा
चारौ युग श्रीशारँगपानी * साची करि आये जन बानी
यहिविधि दूतन कहै समुझाई * लीन्हो ताहि विमान चढाई
रामधाम लैगे यहि भाती * यमकिंकर चलिभे खिसियाती

हरिगीतिका छन्द ॥

खिसियाहि चलिभे दूत यमके देखि महिमा नामकी ।
अस अधम पापी खल सुरापी निर्दयी हरि वामकी ॥
सो अन्त समय पुकारि सुत को नाम हरिपुरका गयो ।
अस राम नाम प्रभाव सुनि अतिहर्ष शौनकके भयो ॥

दो० नारायण इति नाम कहि, अजामील भो पार ।
ताते सन्तत कीजियो, राम नाम उच्चार ॥
सुत वनिता धन धाम जो, सब इहनै रहि जाइ ।
नरक स्वर्ग यमलोक मे, नामै होत सहाइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसचमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतअजामीलप्रसङ्गवर्णनोनामाष्टमोऽध्याय ॥८॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
धर्मदूत संवाद अब कहौंअसकन्दवखानि ॥

सो० कह शौनक हरपाइ, अजामील जब ना मिल्यो ।
दूत धर्मढिग जाइ, कहा कहिन सो वरणिये ॥

कह्यो सूत यमदूत रिसाई * धर्मराज पहँ पहुचे जाई
दण्ड फांस सब दीन्हो डारी * देखो रविसुत दशा हमारी
जाहि अधम पापी हम चीन्हा * तेहि तर्वाढगलामन मनकीन्हा
अन्तसमय सुन नाम पुकारा * तुरत हारगण ताहि उबारा
लीन्हेनि बहुरि विमान चढाई * रामधाम तहँ राखेनि जाई
अस अनरीति न हमें सोहाई * ताते तव ढिग आयन साई
दो० दण्डफांस लीजै अपनि, कह्यो सबन शिरनाइ ।
दूतकर्म नहि करब अब, अस कहिचले रिसाइ ॥
रिसह जानि यमराज बोलाये * करि सनमान निकट बैठाये
कह धर्म दूत सुनो मम बाता * है हरिनाम सकल सुखदाता
सतकार जो अवकर आही * सूक्ष्मरूप कहत मुनि ताही
सो नहिं नशै तपादिक कीन्हे * यतन अनेक दानविधि दीन्हे
सो वह सूक्ष्म अब को मूला * सुकृत नाम नाशत सब शूला
ताते ताके अघ सब नाशै * जिमि तम सहजै भानु प्रकाशै
जो जन लेइ रामकर नामा * तेहिते तुमते है का कामा
तिनके निकट न जायो भाई * देखि दूरिते दिखो बराई
सुनत दूत कह जगके माहीं * नाम एक बरलेत को नाहीं
जो उनके ढिग जान न पाई * तो मृत्युलोक करब का जाई
कह रविसुत दूतो मुनि लेहू * मैं जो बूत तामे मन देहू
राम कहत जो नर जगमाहीं * सो व्यवहार नेह कछु नाहीं
गुरु ते राम नाम जिन पावा * करि विश्वास सो हृदयबसावा
जो कोइ कोटिन करै उपाई * मारै त्रासि लोभ दिखाई
तदपि राम तजि अन्त न ध्यावै * सो हमरे लोकै नहिं आवै
अस हरिभक्त बिलोक्यो जबही * कह्यो प्रणाम दूरते तबहीं

साकट कह तुम धरि लेआवो * नरक डारि सबकर्म भोगावो
बाले दूत जोरि युग पानी * इक सशय हमरे उर आनी
पाचतत्त्व की सब की देही * किमि जानब ये राम सनेही
भक्तनकेर चिह्न कहौ गाई * जाते हम उन ढिग नहिं जाई
बहुरि कहौ साकट कर भेदा * जिन्हैं लाय देई बहु खेदा
कह रवितनय सुनौ रे भाई * भक्तचिह्न मैं कहौं बुझाई
कण्ठविषे तुलसी की माला * मस्तकमें दिय तिलक बिशाला
शङ्ख चक्र भुजमूल सोहाये * भुवनपवित्रकरण भुवि आये
हरि की कथा सुनैं हरषाई * राम नाम सुमिरैं मन लाई
जीवबधन हित अस्त्र न धरहीं * देखत दीन दया अतिकरहीं
क्षमा शील सतोषे गहहीं * बाल वृद्ध सबके प्रिय रहहीं
मन क्रम काहू दुःख न देवैं * अति उदार सन्तनकहे सेवैं
अस हरिभक्त हरीसम जान्यो * यामें रञ्चक भेद न आन्यो
दो० जो कदापि भक्तन विषे, कछुक दोष दरशाइ ।
तथा देहकृत मानिये, भक्तन परसै नाइ ॥
भक्तदोष प्राकृत नहीं, तिन्हैं न बाधक होइ ।
औरनको पावन करन, सद समर्थ है सोइ ॥
ताको यह दृष्टात विचारो * सो सुनिके सदेह निवारो
जो गङ्गा मे रेणु दिखावै * तो का गङ्गप्रभाव मिटावै
ब्रह्मद्रव जगमगत जहाँ * हरत ब्रह्महत्या क्षणमाहीं
तैसे सन्त गोविन्द पियारे * सब दोषनको भञ्जनहारे
तातें तुम्हें कहो समुझाई * भक्तन ढिग जनि जायो भाई
दो० भक्तन के लक्षण कहे, कछु सक्षेप बखानि ।
अब साकट वर्णन करौं, सोउ लेहु तुम जानि ॥

साकट जेहि हरिभक्ति न भावै * साधनलखि मन क्रोध बढावै
साकट पर जे निन्दा करई * परमुख देखि बिनानल जरई
साकट सो हिंसारत रहई * तजै सुपन्थ कुपन्थै गहई
साकट जो परद्रव्य चोरावै * परअपकार सदा मन भावै
साकट सो भोगै परदारा * करै अकारण क्रोध अपारा
जिव बदले जो जीव मरावै * साकट मास बिराना खावै
गुरु पितु मातु वचन नहिं मानै * साकट औरनका दुख ठानै
इमि नर विमुख रामते याहीं * डारहु आनि नरकके माहीं

दो० कौन कर्म करि लहत नर, नरक स्वर्ग में बास।
सो हमते बर्णन करौ, जानि आपने दास॥

कह यमदूत सुनौ जेहि कर्मा * परत नरक महं कहौं सुमर्मा
हिंसाकरै बचन कटु भाखै * सुनै बेद परतीत न राखै
दै बिश्वासघात जो करई * प्राणी सोइ नरक मह परई
देव बिप्र सन्तन दुखदाई * पर निन्दा करै अपन बडाई
बिनासमय भोगै जो नारी * परत नरक मद मास अहारी
रजस्वला तिय गर्भिणि होई * तासों रमण करै जो कोई
बिप्रै न्यवति बहुरि नहि देवै * सो नर नरक बास को लेवै
शूद्र भील श्वपचाधम कोई * भगवद्भक्ति परायण होई
तिन्हैं जानिकै करै जो तर्का * मन्दबुद्धि सो भोगै नर्का
जे निज देह माझ अभिमानी * आतम बुद्धि लखै अज्ञानी
हरि कलत्र अपना करि मानै * प्रतिमामात्र देव करि जानै
सलिलमात्र तीरथ जिन जाना * सन्तन मे कछु भाव न आना
ते गोखर सम जानौ प्रानी * परत नरक महं वाचक ज्ञानी
अर्चै बिष्णु शिलाकरि मानै * श्रीगुरुदेवै नरकरि जानै

वैष्णवकी जो जाति विचारै * अन्यदेव सम विष्णुहि धारै
हरि हरिजन चरणोदक होई * तीर्थबुद्धिकरि मान सोई
राम नाम मन्त्रन सम धरई * सो नर घोर नरकमहँ परई
गोशाला अरु ग्राम जरावै * धूत चौर्य परनिंद मन लावै
देखे बिना दोषदे शीशा * नरक परै सो विरंचीशा
तीरथ देव गऊ अस्थाना * मध्यगली धर्मशाला जाना
जाय मैल विष्ठा जो करई * जीव वधै सो तन में परई
पूजै नाहिं सन्त घर लाई * और देखि मन क्रोध बढ़ाई
रोव गुरुते बात चोरावै * हरियशनाजि नरकीरति गावै
भक्तन को यश कभू न कहई * रामभक्त ते विमुखहि रहई
पर अवगुण जो करै उघारा * ते शठ भुगतैं नरक अपारा
नारी जो निजपति धिक्कारै * आन पुरुषका गले लगावै
पतिते बोलै वचन कठोरा * रामते विमुख धर्म मुख मोरा
अस नियपरै नरक के माहा * यामें कछु संशय है नाहीं
पाप कर्म सबते तम होई * ऊंच नीच चाहै करै कोई
दो० नरक परत जेहि कर्म करि, सो मैं कह्यो बखानि।
स्वर्ग मिलै सो कहत अब, दूत लिह्यो तुम जानि॥
श्रद्धासहित करै जे दाना * पूजैं उत्तम विप्र सुजाना
होम यज्ञ तीरथ व्रत करहा * जप तप गायत्री मन धरहा
पर उपकार सदा मन भावै * द्वारे अतिथि विमुख नहिं जावै
बोलै वचन सबन सुखदाई * ते नर वसैं स्वर्ग महँ जाई

१—ॐकार पितृरूपेण गायत्रीमातर तथा।
पितरौ यो न जानाति स विप्रस्त्वन्यरेतज ॥

काहूकेर बुरा नहिं चहहीं * रक्षा करत जीवकी रहहीं
मान-परावो गिरन न देहीं * सत्य वचन इन्द्री गहि लेहीं
वैष्णव देखि करैं परनामा * रजकण जितने लागैं यामा
तितने शत मन्वन्तर माहीं * वसै स्वर्ग कहि आगम जाहीं
नारी पतिव्रता जो होई * धर्मवान कोमलचित सोई
पति कुष्ठी दारिद्री जानो * रोगी कृपण अन्ध पहिंचानो
कामी क्रोधी कैसो होई * नारि ईश सम मानै सोई
पति के संग सती होइ जावै * सो तिय सत्य स्वर्गसुख पावै
सो० आश्रम-धर्म दृढ होइ, विहँग कपोता का सरिस।
बसै स्वर्गमहँ सोइ, बहुत काललगि जानियो॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतयमदूतसवादवर्णनोनामनवमोऽध्याय ॥९॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपतिगिरा सुखदानि।
कहौं इतिहाससमुच्च की, अबइतिहासबखानि॥

सुनत दूत अस पूछ लीन्हा * विहँग कपोत धर्म क्या कीन्हा
सोउ नाथ अब कहो बखानी * जाई गृह आश्रम जेहि जानी
कह धर्म सुनहु दूत मनलाई * बदौं कथा सुन्दर सुखदाई
बधिक एक अति निर्दय रहई * विपिन जाइ जावन कहँ गहई
निशिदिन नीच जीव संहारै * पाप दोष नहिं हृदय विचारै
एकदिवस यक बनाह सिधावा * तामें जीव न एकहु पावा
उत्तर दिशिते आंधी आई * भया अंधेर न सूझै राई
गरज्यो मेघ प्रलय की नाई * भाग्यो सुनत पन्थ नाहिं पाई
वृष्टिहीन पुनि अतिशय लागी * पाथर परत सबै सुधि भागी
जहा तहा जल बहै घनेरा * पाव न अड़ विपत्तिने घेरा

माघ मास कांपै सब देहा * सहै बास करि करम सनेहा
क्षुधा सतावै ज्यों ज्यों तनको * होवै पीर अधिकही मनको
पवन जोर ते पक्षी जानो * गिरि गिरिपरे वृक्षतर मानो
दामिनि चमक कपोती देखी * धाइबधिक तेहि गह्यो विशेखी
दो० आपु कालके गाल में, सो न विचारयो अन्ध।
वाहि पींजरा माहिं करि, चलतभयो मतिमन्द॥
शोचत सुमन कपोती सोई * मम पति आजु अकेलो होई
मन्दिर तिनकर जह रहावा * तेहि द्रुमतरे बधिक सोइ आवा
आया ताकी सयन निहारी * बैठा समिटि सुपास बिचारी
शीत क्षुधावर बोलि न जावै * काठ सरिस तनभा दुख पावै
ताही समय कपोत सा आयो * प्यारी बाम धाम नहिं पायो
दो० मोते पहले आवती, नित्य बधू गृह माहिं।
आजुरही कहँ प्राणप्रिय, कछू कुशल है नाहिं॥
असविचारि मनशोचन लाग्यो * मोह प्रबल हिरदयमहँ जाग्यो
मैं जु अकेल रह्यों घर माहीं * बिन बनिता जीवन कछु नाहीं
नारि पुरुषते अन्तर परई * धिकतेहिनरहि जो गृहमनधरई
आश्रमकी शोभा त्रिय जानो * बनिता बिना वृथा सुख मानो
नित तित दृष्टि कपोतहिं फेरी * देखी बधू पींजरे गेरी
बिस्मय कीन्ह कपोती जबहीं * बोल्यो बचन बिकलह्वै तबहीं
अहो प्रिया अब मैं का करिहौं * तुमबिनु प्राण त्यागिकै मरिहौं
पतिको बिकल कपोती जानी * बोली बचन धर्म नय सानी
हे पति त्यागो शोच सनेहा * दुख मूल जानो जग गेहा
मिलनबियोग दुखसुख साथा * तातें शोच करिय जनि नाथा
देखो तुम बिचारि मन माहीं * जगमें कोउ काहू कर नाहीं

धाम वाम तन धन सुत भाई * एक दिवस सबही छुटि जाई
जो कछु धर्माधर्म कमावै * अन्त समय सो सग सिधावै
अधरम करे भरै यम त्रासा * धर्म ते लहै अमरपुर बासा
ताते धर्म करौ मन लाई * याते लोक प्रलोक भलाई
बधिक आश्रम तुम्हरे आयो * याको पूजि करौ मनभायो
पति मति बैरी याको जानो * बैठो शरण तुम्हारी मानो
विपति परे जो करै सहाई * होय तासु यश त्रिभुवनमाहीं
घर आये सत्कार न करई * नाश पुण्य पाप शिर परई
धनि वह गेह कुटुंब परिवारा * जाते होवे पर उपकारा
ताते याकी सेवा करहू * गृहस्थ धर्म सो हिरदे धरहू
करौ धर्म जनि देर लगावो * फिरि ऐसो अवसर नहिं पावो

दो० सुनत कपोती के वचन, कीन कपोत विचार ।
मैं पक्षी मानुष्य यह, किमि पोषों यहि बार ॥
अस कहि उतर्यो वृक्षते, गयो बधिकके पास ।
सन्मुख ह्वै श्रद्धा सहित, कीन्हों बचन प्रकास ॥
मोको आज्ञादेहु कछु, सोइ करौं यहि बार ।
धन्य भाग मेरे प्रभू, जो तुम आये द्वार ॥

सुनि किरात बोला असि बानी * कहो कपोत सुनहु सुखदानी
मोको शीत सतावै भारी * सो काहू विधि देहु निवारी
तब कपोत चढ़ि चहुँदिशि देखी * वरत बृहद इक पुर मे पेखी
विहँग जोव करि पहुँचो जाई * जरत समिध गहिलायो धाई
कोंक उजारि भूमि मे डारी * तामें अग्नि दई परजारी
औरो पात सूख तरु केरे * चुनि चुनि लाइ अग्नि महँ गेरे
तापो बधिक शीत भयो नाशा * चेतनु ह्वै पुनि वचन प्रकाशा

दो० पर उपकारी बिहँग तैं, शीत निवारे मोर।
अब कछु भोजन दीजिये, क्षुधा सतावै घोर॥
सुनि कपोत मन कीन विचारा * धिक है पशु पक्षी अवतारा
चरिचुनिकै निज पेटहि भरहीं * पर उपकार कौन विधि करहीं
धनि वै मनुष बहुत सुख डारैं * धिक हम आपन उदर पसारैं
भयो कपोत खेद उर भारी * विनवित गृहको बसब उजारी
भुवन कूप कृमि कुटुँबविलासा * होइ पाप जन जाइ निरासा
रुदन कपोत कियो बहुतेरो * केहिविधि हरौं दुख यहिकेरो
शोचतही मन कीन विचारा * त्रयविधिते चहि परउपकारा
धर्म सधै तो करौं उपाई * हर्षि बधिकते बोल्यो जाई
धीरज धरौ अतिथि मनमाहीं * देत अहार देर अब नाहीं
दो० करि परिकमा अग्नि को, कूदि पर्यो तावीच।
यह सब कौतुक देखिकै, बधिक कियो शिरनीच॥
सो० पूरब पुण्य प्रताप, उदय भयो वैराग तेहि।
लाग्यो करन कलाप, मोसममन्द न बुद्धिकोउ॥
धन्य धन्य पक्षी तन तेरो * धिक जीवन मम मानुष केरो
नरतन लहि का कीन्ह कमाई * पाप करत सब बयस गेवाई
कबहू कछू सुकृत नहिं कीन्हों * नहिं काहूकर दुख हरिलीन्हो
धिक धिक मोकों बारहिबारा * धनि विहग जेहि धर्म विचारा
मैं जो किये अति पातक भारी * अब तप करि सब देहों जारी
अस कहि डार्यो जालहि फारी * तुरत विहागिनि दीन निकारी
दो० छूटि कपोती फन्द सों, ऐसे करत विचार।
पति बिन जीवन नारिको, जगमें वृथा निहार॥
यों कहि गिरी अग्निमहँ सोई * भई सती साचो यह जोई

मध्य अग्नि महँ दीख बिमाना * पति तावीच बैठ जिमि भाना
बिहँसिनिको तनुपलटि जो गयऊ * ताहू केर दिव्य बपु भयऊ
पति लखि भेंट्यो गरे लगाई * गयो दुख सन्ताप नशाई
रक्षक दुख कीन्हों धर्महेता * सुख जो भयो गनै को तेता
ताते धर्म कीजिये भाई * यामें जनि रहिगे कदराई
नारि पुरुष दोउ चढ़े बिमाना * गण लै उडे मगन मन जाना
जय जय देव किहिनि हरषाई * सत्यलोक तहँ राखेनि जाई
दो० प्रवरा प्रवरी की कथा, भई कही मैं सोय।
बधिकहाल बरणों बहुरि, सुनि राखो हिय जोय॥
बधिक बिपिन तपकीन्हो भारी * मगन ध्यान तनसुरति बिसारी
इकदिन अग्नि लगी चहुँपासा * बधिक देह जरिवरि भइ नासा
अघ जो रहे जरे तन सगा * बधिक सो राच्यो हरिके रगा
दिव्य बिमान पारषद लायो * तापर चढिकर स्वर्ग सिधायो
कपटी कुटिल कीर अघधामा * सज्जन सग लहो बिश्रामा
गृहस्थ धर्म जस तस यह गावा * सुनि दूतन अतिशयसुख पावा
कह यमचरण चार शिरनाई * अब हम मृत्युलोक कहँ जाई
कोने ठौर जाइ हम रहिये * कहा न जाई कृपाकरि कहिये
बोले यम जो पूछेउ आई * तुमहिं देहुँ अस्थान बताई
जे नर हरि पूजन मन धरहीं * लै चरणोदक भोजन करहीं
कथा सुनै हरि कीरति गावै * ठाकुरद्वारे मं नित जावैं
कुटुंब सहित गुरु साधुन सेवैं * क्षुधित देखि तेहि भोजन देवैं
दो० हरि गुरुदासन ते रहे, सांचो निश्छल जौन।
तिनके ढिग जनि जायहू, दिग्गो त्यागि ये भौन॥
पिता अवज्ञा पुत्र न करहीं * द्वारे अतिथि बिमुखनहिं फिरहीं

यज्ञ होम करि विप्र जिमावैं * सन्तनकी सगति चलि जावैं
बेद बचन राखैं विश्वासा * इनने ठौर तुम्हार न वासा
अस अस धाम त्यागि तुम देहू * बसो जहा सोऊ सुनि लेहू
जहा न कथा राम की होई * हरिकी भक्ति न जानै कोई
पुत्र न मानै पितु की सीखा * जेहि घर लहै न भिक्षुक भीखा
कण्टक वृक्ष होइ जेहि थामा * तहा जाइ तुम करो मुकामा
जिवहिंसा जाके घर होई * मदिरा मास मीन भख जोई
हरि तजि पूजै भूत पिशाचा * वेश्यारत कह सत्य न बाचा
अस नर जहँ तहँ बसिये जाई * मरे नरक महँ डालो लाई
सूने भवन दीप नहि बरई * गणिका आय नृत्य जहँ करई
गृह जूठनि जारा लपटाना * पर्व परे नहिं देवैं दाना
सुना पराई घरमा आवे * रहै निरादर दुख जहँ पावै
पर्व परे भोगें जो नारी * बसहु जाइ अस भवन विचारी
बासी अन्न जो दिनप्रति खावै * जेहि गृह सन्त न आदर पावै
कलह होइ जह साझ सकारे * साधु विप्र जे करैं दुखारे
बिना दीप निशि भोजन खाहीं * बसहु दूत तिनके घर माहीं
दो० मातु पिता कहँ देहि दुख, करैं कहै जो वाम।
तहा बसौ तुम जाइके, जे न भजहिसियराम॥
आपु भक्त घर साकट नारी * सुन कलत्र सब मास अहारी
तिनका छुआ जो भोजन खाई * भक्तिधर्म सबही घटिजाई
अवशि बसौ तिनके गृह शोधी * जे सतगुरु ते भये विरोधी
छोरे केश रहैं जो नारी * बहु साधु से लड़ैं प्रचारी
मरघट चारि पन्थ जो होई * अजयापुत्र रहैं जहँ सोई
ये अस्थान कहे मैं बरणी * औरो लेहु जानि लखि करणी

धर्मराज के वचन सुहाये * सुनि यमदूतन के मनभाय

गी० छं० ॥

भयो सुनत यमदूतपुर रविपूत जो वर्णन कियो ।
उठि नाइशिर मनमुदितह्वै सबफांस मुद्गर करलियो ॥
यह दूत यम संवाद वर्णों सुनै जे अरु गाइहैं ।
तेहि भूत अपर पिशाच यमके दूत नाहि सताइहैं ॥
दो० लक्षण धर्माधर्म के, ऊंच नीच जे आहिं ।
जनरघुनाथविचारि कछु, लिखे ग्रन्थके माहिं ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
राममनेहीकृतमृहधर्मयमदूतकथावर्णनोनाम
दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
नाशकेत भारत्य की, कहौंइतिहास बखानि ॥
धर्मराज निजगणन ते, बोले निकट बुलाय ।
गङ्गयमुन के बीच इक, द्विज तेहि लावहुजाय ॥
जामें गिरि द्विग बस्ती आहीं * तामें विप्र रहत है वाहीं
नाम शालमलि ताकों जानौ * गोत्र अगस्त्यकेर पहिंचानौ
पूरण आयु भई सब ताकी * लावहु बेगि नहीं अब बाकी
सुनि यमदूत सकल हरषाने * निजनिज वाहन सबन पलाने
कोइ कूकर शूकर पर कोई * करमें भुजे भयानक सोई
कोई चले महिष चढि बीरा * बडेबडे दशनलिहे धनु तीरा
कोइ खरपर आरूढ पिछाना * कारी देह सुमेर समाना
कोइ मुरदा पर किहे सवारी * ठाढे केश गदा करधारी
कोई सिंह चित्ता चढे धाये * लोहित लोचन भौंह चढाय

कोइ बसहा पर आसन कीन्हे * फासी अरु मुद्गर कर लीन्हे
यहिभाँतिन यमदूत सिधाये * बमन विप्र जहँ तेहि पुर आये
सो० सोइ गोत्र सोइ नाम, दूसर द्विज तामें रहत ।
यम घुसिगे तेहिधाम, डारि फास आसन लगे ॥
दो० उभै घरी के बीचमहँ, मारिलिहिनिद्विजमांड ।
मुसक बाँधि लचलत्तभे, रहे कुटुम्बी रोइ ॥
तात मात सुत भ्रात तन ग्राम धाम धन जोइ ।
सब जहँ के तहँइ रहे, सग चल्यो नहिं कोइ ॥
भूसुर कहँ आगे करि लीन्हा * यमपुर ओर पयाना कीन्हा
मृत्युलोक ते यमपुर जानो * सहसछियासी योजन मानो
आठ ठौर तेहि मारग माहीं * अतिशयकष्ट होत सुख नाहीं
प्रथमै दुइ सहस्र मग जोई * तामें दुख सुख कछु नहिं होई
एक सहस योजन तेहि आगे * सिंह बहुत लखि अतिभै लागे
जे बैठे साधुनके माहीं * तिन्हें दुख तहँ व्यापै नाहीं
योजन पाच सहस अस होई * काटे परत लोह सम सोई
पायन में सो चुभि चुभि जावै * तामें प्राणी बहु दुख पावै
गज रथ बाजि पालकी दीन्हा * ते नर तेहि चढि जाते चीन्हा
उभै सहस योजन यहि भाँती * बारू तपत रहत अति ताती
सुवरणदान दिहिनि जिनलीन्हा * तिनका तहा न व्यापै सोगा
योजन द्वादश सहस अगारा * परत विषम खाड़े की धारा
रथ कर दान काम तहँ आवै * नाहित नर अतिशै दुख पावै
आगे योजन आठ हजारा * मिलत तहा जल गाहिर अपारा
मही दान दीन्हें सुख पावै * उतरत पावन में छुइ जावै
योजन तीस अगारू जाई * अन्धकार तहँ अति दुखदाई

दीप दान तहँ काम आवै * ठाकुरद्वारे जौन बरावै
की ब्राह्मणघर की मग माहीं * साधुभवन की तुलसी पाहीं
तीरथ माहिं कथाके नेरे * वारि दीप ते जाहिं उजेरे
सो० आगे योजन आठ, महाभयानक मग मिलत ।
चढ़ा उतरके घाट, होत तहां प्राणी बिकल ॥
दो० तेहि के आगे मिलत है, योजन सहस अठार ।
तपतभानु भूश शीशपर, तहँ अतितुदन अपार ॥
तेहि मारग में सो सुख पावै * कुवा बावली ताल खोदावै
की पौसारा दीन बैठाई * की ठाकुरद्वारे पहुंचाई
अरु मारग में वृक्ष लगावै * ऐसा दान काम तहँ आवै
सहस छियासी योजन येही * पृथक पृथक देख्यो द्विज तेही
आगे जाय यमपुरी तीरा * दरसी तहँ यक नदी गंभीरा
नाम तासु बैतरणी आही * मच्छ रुधिर भरा तेहिमाही
गोजर बीछि सर्प अरु कीरा * उतरत पापी पावहिं पीरा
सौयोजन की चाकल सोई * देखत प्राण बिकल तहँ होई
जो अपने स्वामी को मारै * कन्या कामिनि द्विज सहारै
जीव बध अरु सबै सतावै * पुर जङ्गल महँ आगि लगावै
तिन्हैं प्यास तहँ लागे भाई * रक्त पीव सोइ पीवैं जाई
दो० अमिष अहारी मद पिया, ज्वारी चोर कसाय ।
बटपारी जो पातकी, दुखपावत अधिकाय ॥
कोउ उछरत बूड़त कोऊ, लहरि सङ्ग बहिजात ।
काहू बीछी सर्प बहु, कीड़ा नीचे खात ॥
सो० जो कोउ पापी होय, ताहि रुधिर की लखिपरै ।
पुण्यवान कहँ सोय, देखिपरै घृत क्षीर की ॥

छ० होम यज्ञ व्रत कीन दीन जिन सबको दानहि ।
पूजे द्विज त्रिपुरारि किये तीरथ अस्नानहि ॥
पुरटदान पटदान तुला गज वाजि जो दीन्हो ।
आज्य मिठाई खीर दही पोथी व्रत कीन्हो ॥
सन्तचरणमें प्रीति जिन गुरुद्विज पितजानि गुन ।
ते वैतरणी शैल चढ़ि उतरिजात नहिं होत दुख ॥
जिन गोदान दीह समाग * पारि पूछ ना होई पाग
यहिविधि नदीउतारि द्विज पाई * पुनह यमपुरी देखो जाई
योजन सहस तासु विस्तारा * तीन द्वार चारि दिशा
पूरब उत्तर पश्चिम जानो * चौथा दक्षिण द्वार बखानो
धर्मवान जो प्राणी भयऊ * सो तो तीन द्वार है गयऊ
दक्षिण द्वारे मे सो जाई * जो नर पाप कीन्ह अधिकाई
विप्र साधु सुरभिन दुख दीन्हा * अरु विश्वास तीन जिन कीन्हा
दुष्ट बड़े तन मन दुखदाई * सब जीवन की तहँ पुराई
चोरी करै चौपया मारे * पर्वी पसारि पन्थ मे डारे
कन्या बेचि द्रव्य जे लेही * छल करिके काहू विष देही
हरिते विमुख सदा जे रहई * काम क्रोध तृष्णा वश बहई
वेद पुराण शास्त्र नाहि मानै * गुरुते कपट सयानप ठानै
दुखी दीन कहँ आप सतावै * झूठो साखि भरन जे जावै
साधू ब्राह्मण सेवन नाहीं * किहिनि न दान पर्व के माहीं
अस प्राणी दक्षिण दिशि जाई * यम किंकर तेहि बहुत सताई
दक्षिणद्वार गयो द्विज सोई * जाय शालमलि देख्यो जोई
दो० तहा सिंह बहु श्वान वृक, सर्प गीध अरु भाल ।
अन्धकार नहिं जान कोउ, राति दिवसका हाल ॥

नरक हजारन हैं जहां, परे पतित रहे रोइ ।
त्यों त्यों मारैं दूत शिर, रक्षक तहां न कोइ ॥
तिनमें बड़े जे मुख्य हैं, नरक अठारह जानि ।
भिन्न भिन्न कर नाम अब, सबके कहौं बखानि ॥

प० छं० ॥

प्रथम इक कुम्भीपाकजानि । अतिशै दुखदाई ताहिमानि ॥
जो विप्रगऊपशुपहि मारि । ब्रह्मचारीको तप देहिंटारि ॥
अरुदानदेत इटकै जो नीच । सो परतनरककुम्भीकेबीच ॥
है कुम्भसरिस मुखछोटजासु । षोड़श योजन बिस्तारतासु ॥
तामें मलमज्जाअतिनिहारि । दुखपावत पापी नररुनारि ॥

क० छं० ॥

दूसर नरक अवीचिनाम । तामें पल नाहीं है अराम ॥
गुरु अरु कन्या वधै कोइ । भक्ष्यअभक्ष्य जो खातहोइ ॥
जो पाहुनआवै निज निकेत । तेहि न करै सनमान हेत ॥
नरक अवीची परत सोइ । नर नारी चाहै सोइ होइ ॥

हरिगीतिका छन्द ॥

अब नरक तीसर नाम रौरव है भयानक सो महां ।
तेहि देखि डरपत जीव यारू तपत रहती है तहां ॥
पग जरत प्राणी करत रोदन दौरि चहुँदिशि जावहीं ।
अति होत व्याकुल एकक्षण विश्राम नाहिंन पावहीं ॥

तो० छं० जिन राज बिषे नाहिं न्याव किया ।
बिन औगुण पर्जाहि दण्ड दिया ॥
जिन ब्राह्मण वेद पढ़े जु भले ।
तेहि मारग आपु सो नाहिं चले ॥

केहुँ आरत आइ कै प्रश्न करी।
ग्रह टेढ़ बताइ सो वित्त हरी॥
धरि पाखंड रूप फिरैं जग में।
हरि विमुख सो बूड़ि रहे अघ में॥
जप संयम पूजन नाहि करैं।
तप तीरथ यज्ञ न ध्यान धरैं॥
व्रत दान कभू जे ना करते।
तम रौरव माहिं परैं नर ते॥

चौपनरक गुरु जिमि है नामा * गुरुरस अस औटत है तामा
जो काहू की भाजी मारै * अरु काहू का बुरा विचारै
पट गुड लौण जो लोह चुरावै * गुरु जिमि नरक सोइ दुखपावै
पचवा कूप नरक तहँ सहई * तामें प्राणी अतिदुख लहई
कूपसमान बननि तेहि केरी * पीब रक्त कृमि तामें हेरी
तासु निकट बैठे बहु कागा * बड़ि बड़ि चोंच भयानकनागा
परे जीव जबहीं उतराहीं * मारैं चोंच रसातल जाहीं

दो० रामभक्ति जिन नहि करी, गुरुदिक्षा नहिं लीन।
रामनाम सुमिरयो नहीं, साधुसग नहिं कीन॥

सो० मानुष देही पाय, कह्यो सुन्यो नहि रामयश।
दासी सग कराय, कूपनरक महं सोइ परत॥

छटवा कीट नरक है जानो * तामें कीड़ा भरे बखानो
पापिन के तन चोटैं सोई * तामें त्रास अधिकही होई
मारि मारि मछरी जिन खाई * है कृमि रहे निरै महँ जाई
मलो वस्तु जो छिपिकै खावैं * अरु काहू को अन्न चोरावैं
दुखी दीन लखि दया न करहीं * कीट नरक महँ सो नर परहीं

सतवा असीपत्र बन नामा * ताके पत्र दुधारे श्यामा
पापिन को तामें घसिलावैं * कटिकटि जायँ बहुरि जुरिआवैं
त्राहि त्राहि तहँ जीव पुकारैं * त्यों त्यों दूत परिघ शिर मारैं
जिन कीउ अपने मित्रहि मारा * काटेनि हरिअर वृक्ष गँवारा
कामी कुटिल अकारण क्रोधी * परनिन्दक गुरु सन्त विरोधी
गोखा बरत भङ्ग जे करहीं * असीपत्र महँ सो दुख भरहीं
दो० अठवाँ दारुण नरक है, जेहि देखत भय होय।
जे कामी है नारि नर, तहँ पावैं दुख सोय॥
बहुत खम्भ नररूप तहँ, बहु हैं नारि अकार।
बरत रहत इकरस सदा, दोउदिशि काष्ठ अपार॥
जो नर परत्रिय गरे लगावैं * पकरि खम्भमहँ ताहि भेंटावैं
कहैं कि चीन्हिलेहु सोइ नारी * जेहिके सङ्ग कियो सुख भारी
जे त्रिय आन पुरुष सग करहीं * तहा जाय तेऊ दुख भरहीं
परबी परे बरत वा होई * तेहि दिन मैथुन करै जो कोई
सोउ खम्भ महँ जात भेंटावा * यमके दूत अधिक तेहिं तावा
कहैंसिकि तुम मानुष तनपायो * करि करि मैथुन ताहि गवायो
तुमते खर शूकर भल जानी * बरष बरष सन्तोषै आनी
हरिकी भक्ति कियो सो नाहीं * सहा कष्ट अब दारुण माहीं
नवम नरक निश्वास कहावै * तामें श्वास न घूटी जावै
सो० ब्राह्मण विधवानारि, सर गुरु अंश चोरावहीं।
कहै न बचन बिचारि, परे सोइ निश्वास महँ॥
दशवा कुल शकुल है भारी * नामें तो अति दुख अधिकारी
अग्निसमान जरत द्रुम रहही * दशयोजनके चाकल अहहीं
योजन पांच घेर विस्तारा * एक एक का न्यारा न्यारा

बँधे जँजीरन में तहँ पापी * हाय हाय बोलैं सतापी
ब्राह्मण क्षत्री शूद्रहु वैसा * भारी पाप कीन जिन जैसा
मारैं जीव मास लै खावैं * ते नर यही नरक दुख पावैं
गेरहौं नरक सुईमुख नामा * सूचीछेद परे जिव तामा
जिन सतगुरु की निन्दा कीना * सन्तन दोष लगावत हीना
तीरथ बहिमुख बेद पुराना * सबहिनकी निन्दा जिन ठाना
नारि बधे अरु विप्र सतावैं * सो सूचीमुख नरकहि जावैं
बरहौं घोर नरक अस नाऊ * सो विकराल भयानक ठाऊ
तामें सिंह स्यार अहि शूकर * भालु भेड़िया कागरु कूकर
जिन रसना हरिनाम न लीन्हा * कटुक बाद साधुन ते कीन्हा
कबहुँ न कोमल बचन उचारे * तेहि मुख नाग लगावत कारे
सन्त दरश जिन कीन्हों नाहीं * निरखि गयो नहिं पग भूमाहीं
परत्रिय देखि कुदृष्टिहि झाकैं * तिनकी काग निकारन आखैं
जो कोउ पुर में आगि लगावै * तिनका मास भेड़िया खावै
जो कोउ वनपशु पक्षी मारै * ताका पेट सिंह धरि फारै
जो कोउ काहुइ मारै भाई * शूकर ताके हाथ चबाई
जिन हरिचरित सुनै नहिं जाना * सीस औटि डारै तेहि काना
जिन नर अमिय अहारै कीन्हा * गोला लाल पिवावै लीन्हा
पीवत गोला करै पुकारा * त्रास देइँ यमदूत अपारा
तब तो भख्यो परावा मासू * अब कत रोवत बड़े बड़े आसू
काँट चुभत अपने दुख मान्यो * पर को सकट देत न जान्यो

दो० बिन दावा नित रहत जे, फूल पात चुनि लेत।
तिन्हैं मारि भक्षण किओ, केवल रसना हेत॥

कर्म किओ जस भोगौ सोई * नरक अघोर माहिं अस होई

तेरहों शूली नरक कहावै * शूली सम दुख तामें पावै
जो नर पाप करै अधिकाई * करि शिकार मृग मारे जाई
नाहक नर शूली धरि दीन्हों * जिन वनमाहिं ठगाही कीन्हों
काहूको शस्त्रन ते मारै * तेहि यम शूली नरक में डारै
नरक चौदहों है दुख खानी * अग्निकुण्ड तेहिनाम बखानी
तामें अग्नि बरै अति भारी * जाहि देखि डरपे नर नारी
जरैं जीव बहु ताके माहीं * हाय हाय बोलैं धिधियाहीं
कोउ कहैं मैं बहुत पियासा * जल पियाइ फिर दीजै त्रासा
दूत कहैं सुनु रे मतिहीना * तू तो दया धर्म नहिं कीना
प्यासे को जल नाहिं पियायो * भूखे को नहिं कबहुँ खवायो
साधु ब्राह्मण अरु गुरु भाई * पूज्यो नहीं कबहुं घर लाई
महगा परे नहिं दीन्हों दाना * पेट भरो नित बैल समाना
धिक धिक रे मूरख नर लोई * अपना किया भुगत अब सोई
पानी मांगत कौने ज्ञाना * प्रथमें अग्निकुण्ड नहिं जाना

दो० नरक पन्द्रहों है जहां, तेलयन्त्र ता नाम।
कोल्हूकी सम सो बना, डरत देखि नर वाम॥

जो चौराइ पर खेतहि काटै * नित दिन मात पिता कहँ डाटै
भूमि पराई लेइ छिनाई * परपत्नी परवश लै जाई
तुला चढ़ाय घाटि जो देवै * तेलयन्त्र सो वासा लेवै
सोरहों नरक नाम दुखदाई * तामें तो है दुख अधिकाई
जो मद पीवै आमिष खावै * झूठे काहू दोष लगावै
पर औगुण जो करै उघारा * दुखी दीन कहँ नाहक मारा
भक्ति छुड़ावै निगुरा करई * कहे कहाये जो परहरई
दुखद नरक में सो दुखपावै * जो नर कीन्ही कृत बिसरावै

सो० नरक सत्रहों जानि, अन्धकार जेहि नाम है।
महाभयानक मानि, तामें कछु सूझे नहीं ॥
जे राकस अतिनिरदै कोही * तन अभिमानी हरिजन द्रोही
गरे बिराने करद चलाव * अन्धकार दुख सोई पावै
नरक अठरहों है दुखधामा * ह्वै बिलोचन ताकर नामा
तामें नर अन्धा ह्वै जावै * भरमत फिरै कष्ट बहु पावै
जो मग चलत जीव नहिं पेखै * क्रोधदृष्टि ह्वै साधुहि देखै
अरु परनारि कुदृष्टि निहारै * कण्टक तेरि बाटमें डारै
बिधवा नारि नयन जो आजै * खाइ पान परपतिके काजै
जो ठाकुरद्वारे नहिं जावै * साधु गुरु लखि शीश न नावै
अन्धे को देवै बहकाई * परै बिलोचन में सो आई
दो० नरक अठारों साल महँ, देखि डरयो मनमाहिं।
तनकापत सबकछुबचन, मुखते आवत नाहिं ॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतयमपुरीवर्णनोनामएकादशोऽध्याय ॥११॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणपतिगिरा सुखदानि।
वर्णौं कर्मबिपाक कछु, सोइ इतिहास बखानि ॥
फिरि दूतन आगे करि लीन्हा * यमकी सभा ठाढ़ तह कीन्हा
बिप्र बिलोकेउ धर्मक रूपा * मारकण्ड्यो सम तेज अनूपा
रतनजटित शिरमुकुट बिराजै * श्रुतिकुण्डल गलमाल सुसाजै
चारि बेद के पढ़नेवारे * और मिमासा जाननहारे
बहुत शास्त्र रचि आप बनाये * धर्मक्षेत्र जग माहिं चलाये
बैठे सिंहासन हरवाही * शोभाकान्ति अधिक तिनमाहीं
और ऋषीश्वर बहु सतिवादी * धर्मराज दिग तिनकी गादी

जाँहि जब यमगण लैजावे * ठाढ करे रविसुत के ठावें
कहैं माहेश वहा लैजावो * चित्रगोपै याहि दिखावो
दो० गुप्त प्रकट पुनि पाप जो, करत जीव जगमाहि ।
सो सबलिखिलिखिधरतहैं, तनको चूकत नाहि ॥
पाप पुण्य ते सब कहि देहीं * रविसुत निजकानन सुनिलेहीं
धर्मसहित तब न्याय चुकावैं * जे जस करै सो तस फल पावैं
पापिनको लै नरक मे डारै * यमकिंकर शिर मुद्गर मारैं
धर्मवान् तै स्वर्ग सिधावैं * आगे बाजन बजत जावैं
पहुँचैं स्वर्ग निकट जब जाई * आगे मिलै अप्सरा आई
नृत्य करत भीतर लैजावैं * सिंहासन ऊपर बैठावैं
कहैं कि हम हैं तुम्हरी दासी * रहिये एकमने बच स्वामी
देवदेव हैं करैं निवासा * हेमाले सुख भोग विलासा
सब सो पुण्य कहौं समुझाई * जासे बसत स्वर्गमह जाई
जिन नर दान द्विजनको दीन्हा * साहकर अपमान न कीन्हा
सब जीवनकी दया विचारी * काहुहु दुख देवै नहिं मारै
वेद पुराण सुनै सुख पावै * कथा कीरतन में मन लावै
योग तपस्या तीरथ करहीं * संयम सहित बरत अनुसरहीं
गाइ वस्तर घोड़े हाथी * गौवें दई बाछरा साथी
कन्दमूल फल अन्न जो दीन्हा * विप्र साधुन आदर कीन्हा
मग मे वृक्ष विपुल लगवाये * कूप बावली ताल खनाये
कातिक माह बशाख नहाये * नागे पगनों पर पहिराये
औरौ धर्म विविधविधि कीन्हा * स्वर्गमाहिं तिन बासा लीन्हा
दो० जो कोइ करै सो आपु को, परको करै न कोइ ।
अपना कीन्हा पाइहै, ऊंच नीच किम होइ ॥

जिन दीउ गुरुते दीक्षा लीन्हा * मनलगाइ हरि सुमिरन कीन्हा
साधुनकी सेवा जिन करहीं * मन्वने वचन मोह उपरहीं
दान करै सो हरिको अर्पै * बोलै सत्य झूठ नहिं झर्पै
करै भक्ति सतसंगति जाई * अस नर ते वैकुण्ठ सिधाई
तिनको धर्म तीर नहिं न्याऊ * जे हरिभक्ति करै सतिभाऊ
यानिधि धर्मराज के पासा * जाइ न एको हरिका दासा
पापिनको यम यहिविधि करहीं * प्रथमै नरक माहिं लै टरहीं
बहुत काल लगि नरक भोगाई * फिरि जगमें जनमावत भाई
पूरब जिन जस कीन्हे कर्मा * तैसा आइ लेत जग जन्मा
जो नर ब्राह्मणहत्या कीन्हा * जन्म निपुत्री तेहि जगलीन्हा
गऊ पापते होइ मलेछा * जो नहिं करै जीव की रक्षा
जो काहूका सोन चोरावै * जन्म पाइ कुष्ठी ह्वै जावै
मदिरा पीने मेढ़क होई * मारै पथ रोगयुत सोई
द्विज पुस्तक पढ़िनाहिं विचारा * बहुत रहै विषयाकी धारा
हरिकी भक्ति करी सो नाहीं * तेई होत सर्प जग माहीं
जिन गणिकाकी संगति ठानी * रासभ होत आइ सो प्रानी
जो द्विज मास अहारी होई * ताको दान देइ जो कोई
दोनो गीदरका तन पावै * परकी निन्दा मुख कर गावै
जिन पलदान दीन अधिकारा * पावै बाघ सिंह अवतारा
जो कोइ कन्या होती मारै * सो गिरगिट की देही धारै
झूठा वाद विवाद बढ़ावै * सो कच्छप की देही पावै
देवयोग्य दान नहिं करहीं * सो शठ बकुला का वपु धरहीं
दान देन जो बरजै कोई * सो तौ लदुवा घोड़ा होई
कर्ज खाइ कोई मारि जाई * हूँके वृषभ भरै सो आई

जो साधुनकी निन्दा कीन्हा * शूकर केर जन्म तिन लीन्हा
जो कोइ धरी धरोहरि नाटै * अरु पत्तिन के पर जो वाटै
साधुहिं दोष लगावै जोई * सोइ विष्ठा कर कीडा होई
जो काहूका लोह चोरावै * होइ नहारू बहु दुख पावै
जो काहूको अन्न चोरावै * होवै बहिरा सुना न जावै
दो० ब्राह्मण अरु हरि भक्त कहँ, लातन मारै जोइ ।
जन्म पाइ जगके विषे, सोई पगुल होइ ॥
आपु होत गुरु गुरू न कीन्हा * सोइ बिलाव होत हम चीन्हा
जो नित क्रोधी हरषै नाहीं * सोई होत नकुल जग माहीं
है विश्वास करै दुष्टाई * सो है कुरंग बसै बन जाई
दान देइ पाछे पछितावै * सो नर जन्म मेष कर पावै
जिन करपूर कपास चोराई * सो शुत्रा होवै मति भाई
बैल बधिया करै करावै * सोइ नपुंसक लवा है जावै
जो अनहोती करै लडाई * सो बनकी माखी है जाई
गुरु ब्राह्मणका अंश चोरावै * सो मरु देश भुजग तनु पावै
नरतन पाइ करै परपीडा * सो होवै मोहरी का कीडा
ज्ञान पाइ गुरु ते फिर जावै * सो शरीर कोढी का पावै
जो सन्तनकी हाँसी करई * जम पाद सिरी है मरई
भीतर कपट उपरते प्रीता * सो पापी धारै तन चीता
पर प्रमदन ते जो रति करही * सो जगमाहिं श्वान वपु धरही
देखि दोष जो आमिष खावै * सो नर गीधकेर तनु पावै
पापि सहित जिन दीन्हो दाना * सोई होत द्विरद जगजाना
हरिजनमाहिं छूति जिन मानी * होत छछूदरि सो मलखानी
सो० बिना लगाये भोग, जे नर भोजन करत नित ।

होत तासु तन रोग जन्म मिलत तेहि कागकर॥
दो० जह लगि खोटे कर्म है, सो सब दुखकी खानि।
सोई करि नर परत है, चौरासी मे जानि॥
स्वर्ग पुण्य क्षीण ह जावै * पुनि सो मृत्युलोकको आवै
नरतन मिले निन्ह अतिपावन * सुत बनिता धन धाम सुहावन
कर धर्म स्वर्गहि सुख पावै * अधरम कर तो नरक सिधावै
हरि की भक्ति करे नहि जबलौं * आवागमन मिटै नहिं तबलौं
यहि भातिन यम लेखा लीन्हा * जोहि जसचहा ताहि तस दीन्हा
पाछे यमगण द्विज दिखावा * रासि हरि निनके वचन सुनावा
रे दूतो मतिमन्द अनारी * आजु कसूर किया तुम भारी
अस्यनाम द्विज और रहायो * ताको तजि याको ले आयो
सुनि यमदूतन वचन बखाना * धीरज नाथ इन्हें हम आना
धर्मराज तब द्विज सनमान्यो * मनमें निज अपराध पिछान्यो
कैसो पापी होवै कोई * बिना अबादे आव न सोई
यहु द्विज बिना अबादे आयो * अस विचारि यम वचन सुनायो
दो० हे द्विज तोको देखिकै, लागि दया अति मोहिं।
जो भावै सो मागु वर, आजु देहुँ मैं तोहिं॥
कह द्विज जो प्रभु किरपा कीजै * तो मृत्युलोक जान मोहिं दीजै
जितनी मोरि आयु है बाकी * तितने दिवस वहा मोहिं राखी
अबलगि मैं कछु धर्म न किहेऊ * झूठे जगत माहिं मन दिहेऊ
जबते देख्यों पुरी तुम्हारी * नरकनिरखि लाग्यो डर भारी
ताते अस मत मोसे कहिये * जाते फिरि तव धाम न अइये
कह यम पापी पुण्यी दोऊ * मोरे पुर आवत है सोऊ
राम भक्ति जग करै जो कोई * तिनपर मेरा दण्ड न होई

चक्र भुक दिशि क्या करई * इक दिशि गरुड़ न कबहू टरई
एक ओर सब पार्षद ठाँरे * हरिरक्षा तिनपर सब ठौरे
तिन्हें विरोधि कहाँ कित रहऊ * मन क्रम वचन सत्य मैं कहऊ
तातें द्विज अब जग में जाई * सुखप्रद भक्ति करो हरषाई
बिन हरि भक्ति इन्द्र दुख पावै * पुण्यक्षीण मृत्युलोकहि आवै
राम भक्त को पात न होई * भक्ति बीज अजरामर सोई
सुनि द्विज धर्महि शीश नवायो * तुरतपलटि मृत्युलोकहि आयो
मृतकशरीरमाहिं पुनि आयो * लालिगृहवासिनको दुख भाग्यो
पड़ो कोलाहल नगर मँझारी * सुनत चले देखन नर नारी
भई भीर बहु विप्र निकेता * आये चलि पुरवासी जेता
पूछन लगे कहाँ तुम गयऊ * केहिभांतिन फिरि आवतभयऊ
फंदा लालमल यमगण आये * महा भयानक रूप बनाये
मारि मोहि यमलोक सिधाये * आठ ठौर मग दुख अतिपाये
देखि एक वैतरणी भारा * तामें पीव रक्त कृमि छारा
गयन यमपुरी दक्षिण द्वारे * तहाँ हजारन नरक निहारे
तिन में जीव परे बहु शोरा * देखत धीरज भाग्यो मोरा
दूत हमें लेगे यम पासा * तिन मोहि देखत वचनप्रकासा
याके नाम और द्विज भाई * तेहि तजि यहि दीन्हों दुख आई
मोसे कहिनि मांगि वर लीजै * मैं कह बहुरि जान मोहि दीजै
और बात इक देहु बताई * जातें फिरि तब लोक न आई
तिन कह रामभक्ति कर जाई * कबहू न नरक परहु पुनि भाई
ज्यहिविधिगयन जबनविधिआयन * सो हमतुमसे बरणिसुनायन
जे नर चतुर सुजान सुकर्मी * लागे करन भक्ति मिलि मर्मी
आतु लालमल गुरुहिं बोलाई * राममन्त्र लीन्हों हरषाई

हरिगीतिका छन्द ॥

लीन्हों हरषि द्विजमन्त्र तारक बहुतविधि उत्सव कियो ।
पितुमातुसुत तियबन्धु कोउ घर रहन राकत नाहिं दियो ॥
करि नेम सुमिरे नाम पूजन ध्यान नित हरिको करे ।
सतसग साधन सेव हरियश कहै सुनि मन में धरे ॥

दो० यहिविधिरघुपतिभक्तिद्विज, कीन्हों अतिअभिराम ।
अन्तसमय सब कुटुंब लै, बस्यो रामके धाम ॥
जन रघुनाथ विचारिकै, भक्ति करो सतिभाय ।
नातरु फिरि पछिताहुगे, नरतन बीतो जाय ॥
बहुत जन्म सुकृत कियो, ताको फल नर देह ।
कहै रघुनाथ सो पाइकै, जन्मसुफल करिलेह ॥
चौरासी लख कोश में, यक दरवाजा छोट ।
ताहि पाइ जो ना करै, तो फिरि भरमै कोट ॥
काल सचानो शिर खड़ो, ताहि डरै नहिं नेक ।
फूलो फिरै समुद्र में, करत कुकर्म अनेक ॥
आखिर को फिर ना रहै, मरना तोहि विशेखि ।
ताते हरि भजि लीजिये, यही लाभ मन पेखि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसचमनआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतगृहधर्मकर्मविपाकवर्णनोनाम
द्वादशोऽध्याय ॥ १२ ॥

दो० सुमिरि राम सियमन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
वर्णौं महभारत्थ की, पुनिइतिहासबखानि ॥
कह शौनक यह जगतमें, कोउ धनी कोउ रङ्क ।
कोउ भोगी रोगी कोऊ, भूपति भिक्षुक शङ्क ॥

कोउनिशिदिनदुखहीसहत, कोउ न्मतमरिजात ।
कोउ जियत बहुकालतक, कोउ विनपुत्र लखात ॥
काहूके जननी जनक, मरत बालपन माहिं ।
सो यह कारण कौन है, कहौ नाथ मोहिपाहि ॥

सुनि तब सूत वचन अस भाखा * लखि अधिकारी गुप्त न राखा
शौनक जो तुम पूछेउ आई * सो सब कर्म प्रभाव लखाई
कर्म ते दुख सुख रोग अरोगी * कर्म ते भिक्षुक भूपति भोगी
कर्म ते मरै बाल पितु माता * और बात कछु नाहन ताता
इक इतिहास कहौं अब गाई * जाहि सुनत बहुव्याधि नशाई
यक द्विजगुण निधिनाम सुजाना * सर्वशास्त्रनको जोहि ज्ञाना
तेहिके यक कन्या भै आई * नाम सुवर्ता छवि अधिकाई
चारि वर्ष की भई कुमारी * तबही तासु मरी महतारी
तबगुणनिधिनिजमनहिं विचारा * बिनतिय भवन बनव धिक्कारा
कन्या युत सो बनहि सिधायो * तामें मुनि आश्रम बहु पायो
तिनके ढिग यक कुटी बनाई * रहन लग्यो द्विज अतिहरषाई
करन लाग कन्याहि प्रतिपाला * विप्र जानिये बड़े दयाला
विविध भांति के चित्र बनावै * लाय खिलौना ताहि खिलावै
राखै ताहि प्रसन्न सदाही * होइ उदास कबहुँ सो नाही
मातुहीन अरु बालकुमारी * तेहिहित द्विज सन्यास न धारी
भई सुवर्ता जबै सयानी * तब द्विज ब्याहकरन मनआनी
इतनें माहिं काल धरिखायो * मनइच्छा सो करन न पायो
मृतक पितहि लखि कन्या रोवै * व्याकुलअधिक धीर नहिं होवै
कहै सुवर्ता बहुविधि बानी * पिता पिता कहि रोदन ठानी
दो० मोको तजि कितको गयो, अहो पिता परबीन ।

दयावन्त सब भाँति तुम, मैं कन्या अतिदीन ॥
अब इत रक्षक कौन हमारा * मात पिता भ्राता नहिं प्यारा
हाय हाय मैं का कर्म कीन्हा * ऐसा दुःख दैव मोहिं दीन्हा
जरौं अग्नि की जलमें बहिहौं * कीचड़ि गिरि गिरि महिमरिजैहौं
पटकै दोउ कर शिर भूपाहीं * बिनापितु मा मम जीवन नाहीं
सुनि कन्या का रोदन भारी * उठि दौरे ऋषि सयुत नारी
सो० आये सब तेहि तीर, समझावैं बहुभाँति करि ।
धरै न मन में धीर, तात मातकहि शिर धुनै ॥
ऋषिपत्नी बहु करैं प्रबोधा * नहिं उपजै ताके उर बोधा
लखि यमके मन करुणा आई * ततक्षण द्विजका रूप बनाई
पहुँचे आइ सुवर्ण तीरा * कह्यो बचन मृदु सुखद गँभीरा
दो० हे कन्ये मति रुदन करु, धरु धीरज मनमाहिं ।
अपने कर्मन केर फल, जाय कहू सो नाहिं ॥
आगे करै सो अब भुगतावै * अब जो करै सो आगे पावै
कल्प कोटि तक घटै न साई * अवशिनेव भोगन कहँ होई
कर्म बीज होना फल अन्ता * तेहि निरवन्त होत कोइ सन्ता
ताते कुँवरि न रोदन कीजै * पाछिल कर्म किन्हो तस लीजै
कह कन्या भावी प्रभु तोना * पूरब कर्म कीन्ह हम कौना
विप्र कहा सुनु सुता सयानी * प्रथम जन्म तव कहौं बखानी
पूर्व जन्म गणिका तै अहई * उजयनि नगरमाहिं घर रहई
सुन्दररूप नयन चपलाई * जेहि चितवै तेहि लेइ लोभाई
पुरके लोग बहुत वश तेरे * जो तुम कहो करैं वहि बेरे
तेहि पुर विप्र रह्यो इक ज्ञानी * पुन तासु विज्ञान पिछानी
पूजा करै धर्म शुभ सावै * पापकर्म नहिं कछु अवराधै

एक दिवस सो सहज सुभाई * तव द्वारे है निकसो आई
दीखे तुम्हें भूल्यो बुधि ज्ञाना * रह्यो ठाढ़ तहँ मनी दिवाना
तब तू जानि नाहि बोलवावा * आदरकरि निज ढिग बैठावा
वाही प्रीति तुम्हीं से लागी * मातु पिता बनिता निजत्यागी
तेरे विषय बसे दिन रातीं * चलता करत दियनोहिं सोहाती
इकदिन तेरे भवन मँझारा * दूसर कामी आइ पधारा
विप्र शूद्र ते भई जो रारी * शूद्र द्विजै तहँ डारयो मारी
दो० यम किंकर तेहि लैगये, डारोने नरक अघोर ।
शूद्र तुरन्तै भाग तब, भयो नगर महँ शोर ॥
काहू द्विज गृह आइ पुकारा * तव सुत गा गणिका घर मारा
सुनि पितु मातु नारि दुख पाई * रोदन करत धाम तव आई
पुत्र विलोकि अधिक दुख पागे * ताको शाप देन तब लागे
तासु मातु बोली अति बानी * पुत्र वियोग न धीरज आनी
है वेश्या तैं सुत वश कीन्हा * यन्त्र मन्त्र करि धन हरिलीन्हा
फिर ताको डारे मरवाई * हमकहँ दुख दारुण दिलवाई
पुत्र विछोह कराये मोहीं * मातु हीन होई दुख तोहीं
दो० पिता तासु ऐसो कह्यो, याल अवस्था माहिं ।
पिता तोर मरि जाइहै, जहा हितू कोउ नाहिं ॥
कह्यो भार्या पति बिना, मोहिं किये तैं जैस ।
रह्यो कुवांरी नाह विन, सह्यो कष्ट तुम तैस ॥
ऐसो तोको शाप जो, दियो तिहूं मिलि जानि ।
ताते दुख यहि उमिरिमें, भयो कर्मगति आनि ॥
सो० भले बुरे जो कर्म, विन भोगे छूटत नहीं ।
धरे जो कोटिन जन्म, सङ्ग न छांड़त एकछण ॥

सुनत सुबर्ता बोली बानी * द्विज तुम कहा सत्य मैं जानी
जन्म पाछिलो तुम कहि गाया * जेहि क्रमते मैं अस दुख पाया
इक सन्देह होत मन मोरे * सो अब पूत्रतिहौं करजोरे
मैं दारिक अतिअधम अपावनि * बहुनाहन ते नेह लगावनि
विषय मनोरथ नित प्रतिपाले * बहुमनन्य के घर मैं घाले
जननिजनक कुलधर्म सो त्यागे * जे मेरे संग नेकहु पागे
कहौं कथा सब पापे कीन्हा * भलो कर्म स्वपने नहिं चीन्हा
द्विजकुल जन्म कौनविधि पायो * सबदिन खोटे कर्म कमायो
अरु तुम दरशदियो किमि आई * सुनि मूसुर बोला सुख पाई
दो० जौन कर्म ते विप्रकी, सुता भई तू आइ।
दीन दरश मैं पुण्य जेहि, सुनु सो कहौं बुझाइ॥
एक विप्र हरिभक्त सुजाना * समदरशी गुण ज्ञान निधाना
गो गज श्वान विप्र चाण्डाला * सबमें इक दीखै नदलाला
जप तप आदि धर्म जो टानै * तेहिकर फल अर्पै भगवानै
इन्द्री जीति मेरि मन राखै * झूठ वचन मुखते नहिं भाखै
कामरु क्रोध मोह मद त्यागी * रहित लोभ हरिपद अनुरागी
मैं अरु मोरि तोरि नहिं जानै * दुख सुखको सामान्य पिछानै
नहिं कछु आश्रम बन्धन ताके * कुल कुटुम्बकर मोह न जाके
जिन चाहै तितहीं बसि रहई * हर्ष शोक नहिं विस्मय गहई
एक दिवस पुरवासा लेवै * दूजे दिन तहँ ते चलिदेवै
विचरत सहज सुभाय सोहायो * यक दिन नगर तुम्हारे आयो
देखि श्वेत तव द्वारे माहीं * बस्यो सन्त निशिखोटपन नाहीं
मैले बसन शरीर कृशाना * त्यागे विषय भोग जो नाना
आधी रात भई निशि नासा * बैठे भजन करै हरिदासा

दो० तहाँ समय कुतवाल की, फेरी पहुँची आइ ।
करो सन्त सो कौन तू, सो तौ मौन रहाइ ॥
तिन्हें उत्तर कछु दियो न जबहीं * चोर चोर परि पकड़्यो तबहीं
द्विजकछु साचवचन समुझायो * दुष्टन मन विश्वास न आयो
रचि चले ले अपने साथा * नहिंकछु दयमान्यो द्विजनाथा
तब जाग अरबे घर माहीं * शोर सुनत आई तिन पाहीं
दीप मँगाइ तिन्हें दिखरायो * तब तुम तिनसे बचन सुनायो
जो यह चोर होइ सुनि लीजै * तौ चाहौ सो हमको कीजै
सुनि तबवचन तिहिनि छुटकाई * कर गहि तू निज मन्दिर लाई
चरण पखारि पलँग बैठाया * धूप दीप करि पद शिरनावा
कथा कछुक दिन ममगृह रहऊ * पहिरौ वसन जोनपिपि चहऊ
षटरस भोजन करौ बनाई * जाने देह पुष्ट ह्वै जाई
सुनत सन्त बोल्यो शुभबानी * ज्ञान विराग भक्तिरस सानी
दो० धन्य मातु तव भाटको, मोहिं चही कछु नाहिं ।
वृथा सकलसुख जगतके, बिनशिजान क्षणमाहिं ॥
क्षुधा तृषा सुखभोगकी, कछु इच्छा नहिं मोहिं ।
सहजआइ निकस्यो इहां, सत्य सुनायो तोहिं ॥
तुम समान मैं और न चीन्हा * पर उपकार आजु तै कीन्हा
पर उपकारी धनि नर नारी * भवसागर सो होवै पारी
तुम पर तुष्ट होइँ भगवाना * मेटै जग कर आवन जाना
मोको कछु चहिये नहिं माई * करहु शयन निज सेजहिं जाई
यहिविधि सन्त कयो समुझाई * तब तै पुनि बोली शिरनाई
महाराज मैं धनिहौं आजू * दर्शन पाइ सरे सब काजू
पापनारिणी मैं असि नारी * जेहि भवतरौं सो कहौ विचारी

कह्यो सन्त भवतरण जो चाहै * तौ हरिशरण आइकै गाहै
काम क्रोध मद मोह निवारै * निज अभिमान दम्भ परिहारै
तृष्णा लोभ मच्छरता दहई * इन्द्रिन के मारग नहिं बहई
थिर स्वभाव एकान्त निवासी * दुख सुख सम चित धर्मप्रकासी
उपज्यो न ताहि मृतक पहिचाने * मिल न हर्ष शोक गय आने
नारायन्त सब जग का देवै * आतमअवज अखण्डित पेखै
शम दम शील दया उर राखै * गुन ते गर्वित वचन न भाखै
परदुख दाखि तासु दुख हरई * हरि हरजन की सेवा करई
रामनाम सुमेरै मन लाई * राम छाड़ि चित अन्त न जाई
ऊठत बैठत भोजन पावत * श्वास श्वासप्रति नामै ध्यावत
आन उपाय सकल परिहरई * केवल राम नाम मन करई
सो ससार तरै सनि माना * याम कछु सदेह न आनो
मुक्त होइ भव बन्ध छूटै * फिरे तेहि यमकिंकर नहिं कूटै
ताते तुमहू येही कीजे * नर तन पाइ सुफल करिलीजे
भय निद्रा मैथुन आहारा * सब योनिन में मिलत निहारा
हरि सुमिरण याही ते होई * सब योनिन सम ताहि न खोई
दो० ऐसे तोहिं उपदेशही, करत भयो भिनसार।
सब उठि रमतो भयो, धरि हरिपद उर सार॥
तब तोहिं उदय भयो वैराग * विषयविलास वमनसम त्यागा
धर्मवृत्ति हिरदय मई आयो * कवन मृतिका सरिस निहारयो
तजि घर बन में बासा कीन्हो * रामचरण बहु चित दीन्हो
द्विजरक्षा करि हरिको ध्यायो * जन्म विप्रकुल तेहि पुनि पायो
प्रथमै द्विजन शाप जो दयऊ * तेहिते तोहिं दुख यह भयऊ
सन्तकृपा यमजाल न परेऊ * सन्तकृपा सब पातक जरेऊ

सन्तकृपा ते नरक न लहेऊ * चौरासी बिच नाहिंन बहेऊ
सन्तकृपा मैं दर्शन दीन्हा * पूर्वकर्म तब वर्णन कीन्हों
यह मैं भेद सकल कहि गावा * जा तुम पूरब कर्म कमावा

इति श्रीविश्रामसागरसत्यमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतसुवर्णाकथावर्णनोनामत्रिदशोऽध्याय ॥ १३ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपतिगिरा सुखदानि ।
कहौ मिमांसा शास्त्र मत, सोइइतिहासबखानि ॥

सुनत सुवर्ता वचन उचारा * नाथ शोक तुम मोर निवारा
तदपि सुरति करि दुख है आवत * मोह विवश मन बोध न पावत
ताते बात कहौ अब सोई * जाते फिरि मोहिं दुख न होई
कह द्विज सुनु कन्या मनलाई * तह दुख जहँ सनेह सरसाई
बिन सनेह दुख होय न कैसे * शुक मूषक सुन स्वेदन जैसे
सब जीवन में समता आनै * शत्रु मित्र मध्यस्थ न मानै
वपु धरि हानि लाभ जो होई * कर्मन के शिर राखै सोई
जैसे नारि गौतमी कीन्हा * पुत्रशोक तेहि भयो न चीन्हा
कह कन्या सुनिये द्विजराई * कथा गौतमीकी जो चलाई
मैं अज्ञान न ऐसे जानो * ताते करि विस्तार बखानो
बोला विप्र कुँवरि सुनि लेहू * कहौं कथा तामें मन देहू

दो० ज्ञानवन्त धीरज बड़ी, दया हृदय वैराग ।
नारि गौतमी जानिये, हरिपद में अनुराग ॥

करै तपस्या वन के माहीं * पाम्कठिन कहि जात सो नाहीं
ताके रहै पुत्र एक जानो * खेलै तहँ निर्भय पहिचानो
एकदिन एकनरू शिशु गयऊ * काट्यो सर्प तुरत मरि गयऊ
तहँ एक बनिक देखि यह हाला * डारिकास एक जो सोइ व्याला

लायो जहां गौतमी रहई * नाना [illegible] बन अस कहई
अ०छ० बालक निहारे । सर्प ने मारे ।
बड़ो दुष्ट जान्यो । पकरि ताहि घान्यो ॥
तजो नाहि याको । बदल लेउ वाको ।
चहो जाय पोषो । भयो ब्रह्मदोषी ॥
ऐसे बचन सुने भयकारी * बोलत नहिं गौतमी नारी
अहो बधिक मैं कहौं सो काजे * [illegible]
याहि हते सुत जाये नाहा * वृथा [illegible]
कह्यो कीर हिंसक ठग कोई * ताहि [illegible]
बालक दोषा सर्प अनारी * मैं तो याहि [illegible]
मुनि गौतमी कहा अस बाना * मुये को [illegible]
कामी क्रोधी हिंसक नेगी * [illegible]
बढ़ मूढ़ तृष्णा के जाये * [illegible]
रामविमुख निन्दक अभिमानी * पापी [illegible]
वेद विदूषक हरिजन द्रोही * भुजग भूत [illegible]
ये सब जीव मृतक सम जानो * मूरख [illegible]
अपने कर्मते मर्यो कुमारा * अपने कर्म तुम जाय निहारा
अपने कर्म सर्प बाँधे आवा * जस कीन्हेसि तैसा फल पावा
परको दुख देवे जो कोई * सोई दुख ताहू कहँ होई
बोले गिरा कूप की जैसी * चाही समग मिले तेहि तैसी
जो दरपन का थाप उठावै * तैसी भाव ताहि बनि आवै
पिछिले जन्म कर्म किय जैसे * भोगे देह धारिके तैसे
बालक नहीं सर्प ने मारो * वाके कर्म ताहि मह्यो
तेहिते बधिक छाड़िदे येहू * दोष भुजगहि नाहक देहू

मांति नीतमी कर अंग बना * बोला उरग पाय उर चैना
आमि है कछु दोष न मेरा * मैं तो फिरौं मृत्युका प्रेरा
बालक मांति कयो बाग * मई भेट इहि विपिन मंझारा
डस्यो न मैं तेहि सहज सुभाग * बिना मृत्युकी आज्ञा पाये
अरु मुनि मृत्यु तहां चलिआई * बोली वचन सत्य सुखदाई
सो० हौं नहिं खायो बाल, नहीं बध्यो यहि सर्प ने।
दई जो आज्ञा काल, सोइ करौं मैं आइकै॥
मैं हौं कालराय की चेरी * आज्ञा होइ असी या मेरी
काल वह ताको मैं खाऊं * बिनानिदेश निकट नहिं जाऊं
भु० छं० सुनि बैन ऐसे जबै कालराया।
धरी देह चिप्र उसी ठौर आया॥
कस्यो सर्प नाही नहीं मृत्यु मारयो।
नहीं रोग कोई जो मैं नाश धारयो॥
करै कर्म जो जैस तैसाहि पावै।
बिना भेद जाने हमें दोष लावै॥
मरै औ जियै वृद्ध बालक जवाना।
सो तो कर्महीते नहीं और आना॥
कोई कर्म कैके बहुत काल राहै।
कोई कर्म कैके अगिनिमें न दाहै॥
कोई कर्म कीन्हो हमैं जीति लीन्हो।
बस्यो बिष्णु के धाम विश्राम चीन्हो॥
दो० कोई कर्म करि नीचते, भये ऊँच कोइ गर्त।
कोइ बोरत तारत कोई, सिरजत पालत हर्त॥
कोइ जलडूबै तरु गिरै, अगिनि जरै विष खाय।

कोइ सहस्रन रोग कोउ, सर्प डसे मरिजाय ॥
काहुइ सिंह भेड़िया खावै * कर्म किहिनि तासि मृत्युहि पावै
चित्रकेतु सुत गज ह्वै जनमा * रानी सकल गिंजाई बनमा
पग तर पीसि गई मरि जोई * बिषद बदला लीन्हेनि सोई
कीर बिछोह जानकी कीन्हो * है सो रजक निन्दि बन दीन्हो
दशरथ दुख अन्धन का दयऊ * पुत्र शोक तनु त्यागत भयऊ
चतुरानन कन्या को धायो * तेहि कर्मते शिव शीश गिरायो
बालिहि राम बाण ते मा ो * द्वापर मे सोइ बदल बिचाऱ्यो
व्याध भयो द्वापर महं सोई * कृष्णचरण माऱ्यो शर जोई
गान्धारी सुत शत गे मारे * कमठ अण्ड रुज हेत बिदारे
कर्म ते इन्द्र भाल भग पाई * कर्मते नृप बर भयो जराई
कर्मते भे नृप नहुष कुजन्तू * कर्मते रवि शशि राहु ग्रसन्तू
हरि बृन्दाते जो छल कीन्हा * तेहिक्रम आप जन्म जगलीन्हा
नारद शाप बिष्णु कह दयऊ * कर्मते शम्भुलिङ्ग गिरि गयऊ
कहलगि कहौं कर्म जस कीन्हा * तस सबहिनामाल भोगै लीन्हा
तेहिते कर्म प्रधान जग अहई * दुख सुख जीव कर्म करि लहई
सो०सम्पति बिपति कलेस, उत्पतिपालन यश अयश ।
होत कर्म ते तैस, यामें दोष न मोर कछु ॥
सुनत कालके बैन, बुद्धि फिरी तब बधिककी ।
भा बिराग उर ऐन, छाडिदिहिसितेहिसर्पकहँ ॥
सर्प मृत्यु अरु काल, जिततें आये तित गये ।
भयो बधिक उर शाल, कर्म पाछिले सुरतिकरि ॥
दो० बधिक गौतमी के चरण, पुनिपुनि शाशनवाय ।
लग्यो योग जप तपकरन, कुलकी रीति गँवाय ॥

वधिक गौतमी की कथा, भई जौन बिधि जानि ।
सो कन्या तोसों कही, मैं संक्षेप बखानि ॥
अस ब्राह्मणके बचनसुनि, मनमें कीन्ह विचार ।
पुनि कन्या बोलत भई, बचन महा सुखसार ॥
मेरे मन को दुख हरयो, कह्यो बोध बहुभाति ।
गयो मोह अज्ञान अब, हृदय में आइ शान्ति ॥
सो० योगी जानत भेव, अगले पिछले जन्मकर ।
सो मोसों कहि देव, हे स्वामी तुम कौन हौ ॥

कह्यो विप्र सुनु कन्या बाला * मैं हौं यम पापिन दुखदाता
तोको दीन दुखी अति देखा * कीन्हो बोध आय द्विज भेखा
मागो वर भावै जो ताहा * अतिप्रसन्न जिय जानहु मोहीं
कह कन्या पितु मातु हमारा * सुहृद बन्धु सगरे परिवारा
बसैं स्वर्ग जब लगि शशिभानू * यही मोहिं दीजै वरदानू
एवमस्तु कहि यम चलिभयऊ * तुरत सुवर्ती यह व्रत लयऊ
जप तप लागी करन उदारा * कन्दमूल भखि भोग बिसारा

गी० छ० ॥

बिसराय तन सुख भोग जगके तुच्छ मन में जानिकै ।
लागी करन हरिभक्ति सुमिरन ध्यान ज्ञान पिछानिकै ॥
सब कर्मबन्धन काटिकै श्रीरामऊ धामें गई ।
सुर सिद्ध मुनि गति जौन दुर्लभ भजन करि पावत भई ॥

दो० आठपहर चौंसठ घरी, तिनमें भजिये राम ।
जन रघुनाथ न भूलिये, यही सयानो काम ॥
यह इतिहास पुनीत में, बरण्यो मति अनुसार ।

कहै रघुनाथ जो उरधरै, भवसागर है पार ॥

इति श्रीविश्रामसागरमनआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतगोतमीसुतनोधर्मप्रसंगवर्णनोनाम
चतुर्दशोऽध्याय ॥ १४ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं भार्त्तकी कथा कछु, अवधविलास बखानि ॥

सो०पुनि शौनकमुनि पाहिं, पूछ्यो दोउ कर जोरिकै ।
दान तपस्या माहिं, अधिककहासोबरणिये ॥

सुनत सूत बोले हरषाई * सुनु शौनक मैं कहौं बुझाई
तप ते दान अधिक है जानी * श्रद्धा सहित करै जो प्रानी
बहुत कष्ट करि द्रव्य कमावै * तेहि परमारथ माहिं लगावै
ताको यश त्रिभुवन महं होई * बसै स्वर्गमह निश्चय सोई
जो सुधर्मकरि फल नहिं चहई * तौ हरिभक्त परमपद लहई
तापर एक इतिहास बखानो * सुन्दर महा पुरातन जानो
मुद्गल विप्र एक सुत नारी * बसत रहे कुरुक्षेत्र मँझारी
सीलावीनि विरात अति गहई * पाख एक तक जोरत रहई
डेढ़ सेर जब इकठे होई * पीसि बनावै भोजन सोई
साधु विप्र प्रथमै भुगतावै * पाछे अपना सब मिलि पावै
यहि भातिन बीते बहु काला * द्विज निजधर्म करै प्रतिपाला

अ० गी० ॥

एक दिवस ऋषि दुर्वासा । सुनि विमल बड़ाई तासा ॥
ते लेन परीक्षा आये । हरिजन का वेष बनाये ॥

म०छ० करु देह क्षीन । तन वसन हीन ॥
द्विज द्वार आय । तप को छिपाय ॥

लखि विप्र सोय । अति मगन होय ॥
दण्डवत कीन । पग धोय लीन ॥
आसन पधारि । आरति उतारि ॥
दोउ पानि जोरि । बोल्यो निहोरि ॥
महाराज धनि भाग हमारे * जो निकेत तुम आइ पधारे
जेहि गृह सन्तचरण नहिं जावैं * अश्मशान तहँ भूत रहावैं
तव दरशन निर्मल मन भयऊ * सचिनकर्म सकल जरिगयऊ
मोजन रहै सो आगे राख्यो * दीन वचन बहु मुखते भाख्यो
सुनि द्विजवचन गूढ सुखदाई * पावन लग्यो सन्त हरषाई
जैइकयो कछु जूठनि रक्षऊ * सो ऋषि बोधि बगलमें गाखऊ
एकौ ग्रास न तिनको बाच्यो * विप्र प्रसन्नभयो मत साच्यो
दुर्वासा चलिमे निज गेला * मुद्गल मन नहिं आयो मैला
पट पखवार ऐसे करेऊ * खाइ जाइ द्विज दोष न धरेऊ
और भाव दिन दिन अधिकाई * नेक कृपणता मनहिं न आई
लखि दुर्वासा दूगुन भावा * भीतर बाहर यकसम पावा
बोलत भये विप्रते बानी * हर्षसहित निर्मल सुखदानी
लो० छं० धन्य तुम जगमाहिं । असदानि दूसर नाहिं ॥
निजअशनहमकोदीन। बडदान तुमने कीन ॥
तिहुँलोक में यश तोर। होई वचन फुर मोर ॥
अरु विष्णु के पुर जाइ। वासिहौ तहां सुखपाइ ॥
जो मुनिनदुर्लभभक्ति। मिलिहै तुम्हे सोशक्ति ॥
असबचनसुनिद्विजराय। बोल्योबचन शिरनाय ॥
सो० अहो सन्त सुख भौन, तुम किरपा जापर करौ ।
मोक्ष आदि सुख जौन, मिलतसहजमे आइतेहि ॥

ब०छ० यहि विधि करत बतकही विप्र सुजान ।
स्वर्ग लोक ते लाये दूत विमान ॥
सुर विमान की उपमा कही न जाय ।
सात स्वर्ग की विभव जु माहि लखाय ॥
रतन जटित अति उज्ज्वल शोभावान ।
उतर्यो नभ ते मानों चन्द्र समान ॥
सु० छ० ॥
सुर दूत पुनि बन्दन कही । इन्द्रादि देवन की सही ॥
तव हेतु जिय आयो भलो । चढ़िस्वर्गको अबहीं चलो ॥
अस बैन दूतन के सुने । मनमाहिं द्विजमुद्गल गुने ॥
बोल्यो बहुरि हरषाइकै । दूतौ सुनो मनलाइकै ॥
सो०सुरपुर दुख सुख कौन, गुण अवगुण तामें कहा ।
कहो कृपा करि तौन, हा प्रभु जाते जानिये ॥
कह्यो गणन हे सन्तकृपाला * तुमको सब मालुम है हाला
दीन जानि प्रभु दाया करऊ * हमते प्रश्न ऐसि उच्चरेऊ
सुनो स्वर्ग सुख बरणौं सोई * जन्म मरण की व्याधि न होई
भय न कलेश लेन नाहिं देना * क्षुधा तृषा नाहिं व्यापत जेना
कल्पविटप मनसाका पूरा * छाह बसे होवै दुख दूरा
रतनजटित हेमालय बनऊ * सुभग सेज पट भूषण घन्यऊ
दिव्यरूप है बासा पावै * सेवा करन अप्सरा आवै
स्वर्ग माहिं अत सुख है भाई * सो हम तुमको दीन बताई
दुख अब ताते सुनो ऋषीशा * कहौं सोई जो आखिन दीशा
इकनो कछु कर्तव्य न होवै * जाते पुण्य बढ़ै अरु खोवै
करी कमाई जो फल खावै * खात खात कमनी है जावै

परकी पुण्य अधिक लखि सोई * तबै ईर्षणा मनमें होई
पुण्यक नाश सब है जाने * फिरि सो मृत्युलोक को आवै
जप तप यजन ते सुरलोका * मिलत इमपि ताहूमें शोका
देवदूत की ऐसी बानी * सुनि मुद्गल बोल्यो सुखमानी
काम क्रोध मद मत्सर आदी * जह अति तहँके सुख सबवादी
स्वर्ग माहिं है दुःख अपारा * तेहि मन चाहत नाहिं हमारा
निश्चलधाम होइ जो कोई * हमते बरणि सुनावो सोई

दो० कहं गन स्वर्ग पताल ये, सब नाशक ये जानि ।
स्वर्गलोक बिधिलोकलौं, सबकी होवै हानि ॥
विष्णुलोक नित थिररहै, उतपति परलय नाहिं ।
सुख तित बहुत प्रकारके, बसत सन्त तेहिमाहिं ॥
जन्म मरण तामें नहीं, अकस ईर्षणा व्याधि ।
आनन्दै आनन्द है, रामधाम अनादि ॥

तो० छं० तहँ रहतहैं हरिराय । ऐश्वर्यकछु कहौं गाय ॥
जेहिराजसब ब्रह्मण्ड । चौदहभुवन नवखण्ड ॥
बैकुण्ठगढ़ आजीत । चाकर सकल सुरमीत ॥
बीरञ्चि जासु देवान । है फौजदार ईशान ॥
मातङ्गवसु दिगपाल । पानी भरै घनमाल ॥
कोतवालहै यमराज । नक्षत्र मानहु बाज ॥
मुस्तौफि चित्रगुपित्र । मुंशी लँबोदर तित्र ॥
पुरदेव कानूगोइ । आजीरअखिल सोइ ॥

स० छं० अरु सूर्यशेष विचारी । कुबेर जासु भण्डारी ॥
चहुँखानि लाख चौरासी । तहँ सब करिखन वासी ॥
करै परारब्ध कर भोगा । रहै सबपर कर्म दरोगा ॥

अहदीग्रह रोग अनन्ता । जागीर तगीर करन्ता ॥
यमदूत पियादा फिरहीं । जे रामविमुख ते धरहीं॥
महिपेशलोक बँदिखाना । बहुनरकभाकसीजाना ॥
हरिधर्म पोत बिनदीन्हे । तहँपरतआइशठचीन्हें ॥
बिनबेद प्रतिग्रह धारी । ते जानहु सबै बेगारी ॥
परबी पञ्च ग्रह जानो । तहसीलदार यहमानो ॥
जब तपव्रतदानहिं करहीं । तेनरजनु पोतहिंभरहीं ॥
मद काम क्रोध अहँकारा । डकइत लूटत ससारा ॥
सतसग नकीब तयारा ।सोकरतफिरतहुशियारा॥
है अनपूरणा मोदी । दे सबै अहारै सोदी ॥
वकील बीर हनुमाना । जयविजयरहतदरवाना॥
शुचि सेवक भक्त पियारे । जिनकेहितनरतनुधारे ॥
सुरलोकमकल जागीरा । सरसहनाजासुममोरा ॥
अरु धर्म नवीन करारा । है भक्ति बड़ी सरकारा ॥
नोयतिहै अनहद तासा । चोपै बर बारहु मासा ॥
भूलोक जासु बाजारा । तहँ होत कर्म व्यापारा ॥
सेराइ द्वीप अरु खण्डा । धनुकालमृत्युपरचण्डा॥
बन बाग अठारौ बागा । हैं सातो सिन्धु तड़ागा॥
परबत सब बिल्ली जाना । तरुवनभ दीरघ ताना ॥
बन्दीगण बेद कहावैं । जे नेतिनेति यशगावैं ॥
जिनकीप्रिय लक्ष्मीरानी । साहेली गिरा भवानी ॥
दे भक्ति मुक्ति दो दाना । तेहिधेतकसन्तमुजाना॥
है ऋद्धिसिद्धि जेहिदासी ।सोनिशिदिनकरैंखवासी॥

दो० कोटि कोटि ब्रह्माण्ड है, रोम रोम प्रति जासु ।

कहै रघुनाथ बखानि कोउ, पार कि पावै तासु ॥
सुनि प्रभाव असविष्णुको मन हर्ष्यो महिदेव।
पूज्यो हरिपुरकिमिमिलै, ताको कहिये भेव ॥
मिलै जो वह पद भक्ति से योग ज्ञान मन लाय।
और उपाय करै किते बिष्णुलोक महं जाय ॥
सो० देवदूत के बयन, सुनि बोल्यो मुद्गल बहुरि।
जाहु आपने अयन, कह्यो अन्दना सुरनते ॥
दो० देवदूत भेजे स्वरग, आप भक्ति मन लाय।
कारणीबल निजकुटुबयुत, बस्यो विष्णुपुर जाय ॥
सो० तपते अधिकी दान, सह श्रद्धा के जो करै।
होय भुवन बिख्यात, भक्ति मिलै पुनि द्विजसरिस॥
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमुद्गलप्रसंगवर्णनोनामपञ्चदशोऽध्याय ॥१५॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणपतिगिरा सुखदानि।
हरि धर्मोत्तर ग्रन्थ की, कहौं इतिहास बखानि ॥
सो० सुनि शौनक सुख पाय, नायशीश बोल्योबहुरि।
नाथ कहो समुझाय, पुण्य बढ़त केहिद्रव्यते॥
कहो सूत मुनि कहौं बुझाई * जेहि धन धर्म बढ़ै अधिकाई
सुकृत करि जो द्रव्य कमावै * तेहि परमारथ माहिं लगावै
बाढ़ै पुण्य पाप है नासा * सो नर जाहै स्वर्ग मे बासा
अधरम करि जो द्रव्य कमावै * धर्म माहिं पुनि ताहि लगावै
ताकी पुण्य बृथाही जानो * सुना एक इतिहास बखानो
नृप यक वीरभद्र अस नामा * सोरठनगर माहिं ताह धामा
करै पुण्य बहु मातंत राजा * गज रथ भूमि पताकी बाजा

सो०सुवरण मोंग मढ़ाय, मुक्ता पूंछ रजत खुर।
पीताम्बर ओढ़वाय, देहु धेनु द्विजवरहिं ॥
अन्नादान करै पटराना * यज्ञमहोत्सव बहुविधि ठाना
तेहिपर एकबार विधि योगा * नृप गह लक्ष्मी नगर रो रोगा
निशा अचानक नगर लुटायो * केहु कीन नहिं पावै पायो
रानी नृपत आनथिके बेरा * भागवने कोइ नहिं देरा
आये एक नगर के माहा * हेतुरामाय रह दिग नाहीं
करमुक्तका एक नृप चीहा * बेंचि कछुक दिन भोजन कीहा
नातेदार रहे पितु मामा * रानी सहित गये तेहि धामा
तहाँ नहीं कछु आदर पाया * बहुरि भूप भगिनी पर आयो
जानि अभाव जनक लघुभाई * तिनके निकट गयो चलि राई
सो० रहे तहा कछु काल, पुनि लागे अनखान सब।
चलिअ तुरत भुवाल समुझि कर्मगति मनधिये ॥
दो० जाके भवने जाइँ चलि, बात न पूछै कोइ।
बिपति परे हरिबिन कोई, काहूको नहिं होइ ॥
कुं० कमलकर पितुसरितपति, गरलसुधा शशि भाय।
मित्र भानु ब्रह्मा तनय, विश्वभरा जेहि माय ॥
विश्वभरा जेहि माय श्री रम्भा दोऊ भगिना।
बहनोई हरि इन्द्र, नाति शिव सुन्दर भगिनी॥
अस परिवार सुसारजड़, जारिदियो निशियाम।
बिपति परे रघुनाथ बिन, कोइ न आयो काम ॥
भूखन मरन लग नृप रानी * भिक्षा कीरि युक्ति तब ठानी
घर घर भिक्षा करै भुवारा * तनपर बसन न जुरै अहारा
कछुककालयाविधि चलिगयऊ * नृप रानी से बोलत भयऊ

सुमारगढ़ इक शाहु सुजाना * मानिक नाम विदित धनवाना
बचन पुण्य जात जो कोई * मानिक शाहु लेनहि सोई
कागद पर लिखि तुला चढ़ावै * ताहि बराबर सोन देवावै
रानी कहा गुनो नृप राई * तुमहू कीन्ह पुण्य अधिकाई
तामें कछुक बेचि लै आवो * पहिरो बसन पेट भरि खावो
जो जगमें तनु रही हमारा * करब दान पुनि बहुत प्रकारा
कह राजा रानी सुनि लेहू * मारग को खरचा कछु देहू
सुनि रानी तुरंत उठि धाई * गृह गृहने भिक्षा करिलाई
नृपके बसन बांधि मोह दीन्हा * गणपति सुमिरि पयाना कीन्हा
तेहि बासर निशि में तरु पाई * रह्यो सो तिय दिन भोजन राई
दूसरे दिन चलि मग यक पायो * करि मज्जन नृप भोरी लायो
सोकि तृण हरिभोग लगावा * ताहिक्षण यक अभ्यागत आवा
कुशलक्षेम बोला हर आई * सुनि नृपके मन करुणा आई

दो० होय धनी कङ्गाल जो, तथपि रहै उदार।
जन्म दरिद्री धन लहै, करि न सकै उपकार॥
द्वै भोरी अभ्यागतहि, दीन्हीं करि सन्मान।
दुइ पुनि अपना खाइकै, कीन्हो बहुरि पयान॥

तिसरे दिवस शाहु पहँ आयो * आदर करि राजा बैठायो
पूछेउ बणिक कहाते आये * को हौ कौने काज सिधाये
सुनि नरेश अनचचन प्रकासा * सोरठने आयन तुम पासा
बचन पुण्य हेतु यह ताता * तुमहूं लेत सुनी हम बाता
असस्नुनि शाहु उतरु तब दीन्हा * बेचहु पुण्य जवन कछु कीन्हा
लिखि कागदपर तुला चढ़ावो * साची लिखो द्रव्य जेहि पावो
दश सहस्र मख कीन्हो राई * सो लिखिमानिक तुला उठाई

पलरा दोऊ रहे समाना * रती न चढ़ा महीप लजाना
बोला शाह और लिखि धरहू * साची लिखो झूठ परिहरहू
सो०हेम गऊ गज बाज, दीन्हों कन्या दान जो।
तुला चढ़ायो राज, सोऊ सब बिरथा भयो ॥
जहलगि लोग रहे तेहि ठामा * हिनू गुमाश्ता चार गुलामा
सबन कही झूठे तुम अहऊ * ठगहीकरि सुखसम्पति चहऊ
जो तुम करते दानरु धर्मा * कञ्चन चढत न कौने मरमा
लाखेश्वर बोला शाहु सुजाना * कौने समय कीन तुम दाना
बीरभद्र कह सुनिये शाहू * जब हम थे सेरठके नाहू
गजरथ तुरग पालकी याना * भृत्य मृत्य बहु चमू खजाना
तब यह दान दीन्ह हम भाई * तुमने साची कहा बुझाई
बोला बिट का चढै भुवारा * यह अधर्म कर धर्म तुम्हारा
लूटिबारि परजे दुख दिहेऊ * बनितनकहँ बिनबस्तर किहेऊ
बछरा गऊ बेदि ले आयो * हरियर बृक्ष अनेक कटायो
आपा कोउ फिरियादी दीन्हा * ले धनसाच न्याय नहिं कीन्हों
सो धन आनि धर्म तुम ठाना * ताते कौन पुण्य परमाना
जबते रङ्क भयो तुम राई * तबते पुण्य किएउ कछु भाई
दो० कह्यो महीपति बचनमृदु, सुनिये शाह सुजान।
भिक्षा करि भोजन मिलै, काहेम कीजै दान ॥
कु० कीन्ह पयाना यहाँको, सुमिरि हृदय गणराय।
तेहिमगइकमरकेनिकट, भौंरी चारि लगाय ॥
भौंरी चारि लगाय, आपे हरि आस उठावा।
तेहिसमय मम निकट, एक अभ्यागत आवा ॥
क्षुधित देखि मैं तासुको, उभय मधुकरी दीन्ह।

रघुभवन सबते सुनहु, यही पुण्य जग कीन्ह ॥
मानिमानिकलिकितुला चढ़ायो * दाहिनी गहि धरि हेम उठायो
तबही पला गरु ह्वै गयऊ * पुनि लै पुष्ट चढ़ावत भयऊ
ज्यों ज्यों कनक पानि चढ़ावै * त्यों त्यों पला आ एक गरुवावै
जहँ लगि सुकरप शाहु निकेना * ह्वै भोग सम भयो न नेता
बोला मानिक सुनहु, नरेशा * अब नहिं हेम हमारे लेशा
जोहिहै जो कछु है सार लीजै * अपने नगर पयाना कीजै
सुनि नृप मोहिया कट मंगायो * सकल कनक तिनमाहिलदायो
लीन्ह मंग सिपही नाना * जिनसोरठ कहं कीन्ह पयाना
पहुंचे दिन तिमिरे घर आई * लखिगलिहमा सुख अधिकाई
बहुरि तेन नृप मानि अनेका * चतुरंगिणी एकले एका
दीन्ह ढंका अरि भूपपर, चढ़ा चमू लजाय ।
रामकृपा तेहि जीतके, लीन्हो राज छिनाय ॥
आय निकल महीसब कीन्हा * विप्रनदान विविधविधि दीन्हा
कमल लाग पुनि राम मुआरा * पाले प्रजा अनेक प्रकारा
अरम कलुक होन नहिं पावै * करै ताहि नृप दण्ड देवावै
लागेहु करन भक्ति युत रानी * छाड़ि अजातकर्म सनमानी
आवै साधु नगर गे कोई * मिले पुर चलि भूपति सोई
करि प्रणाम मन्दिर लै आवै * पदपखारि निजशीश चढ़ावै
शोडश भांति पूजि सनमानी * मन जोगवन रहै भूपतिरानी
सुनै कथा हरिकीरति गावै * तजि सतसंग अनत नहिं जावै
सेवक सचिव करै पुर काजा * विष्णुचरण सेवै नित राजा
भवन बनाय सुवस्तु भराई * मुदित देइ महिदेवन राई
सुमन वाटिका बाग लगाये * बापी कूप तड़ाग खनाये

करै जो धर्म कर्म शुभ जानी * वासुदेव अर्पै नृप ज्ञानी
सहित नेम सुमिरै हरिनामा * क्रोध न लोभ मोह मद कामा
युक्तिसहित करि भोग विलासा * समयपाय तनु तजि अनयासा

हरिगीतिका छन्द ॥

अनयास निज वपु त्याग भो हरिरूप करि आयुध धरे ।
भुज चारि उर पट मुकुट कुण्डल तिलक शिर मालागरे ॥
आरूढ़ सुभग विमान लखि सुर सुमन बहु बरपायहू ।
जप योग तपते अगम सो पद भक्ति करि नृप पायहू ॥

दो० कह रघुनाथ अधर्म करि, पुनि हरि सुमिरण कीन्ह ।
करम बन्धते छूटिकै, मोक्ष स्वरूपी लीन्ह ॥
तजिकुकर्म शुभकर्म करि, द्रव्य कमाय जो कोइ ।
ताहि लगावै धर्ममे, तपते अधिकी होइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसत्वमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतवीरभद्रप्रसगवर्णनोनामषोडशोऽ याय ॥१६॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
महभारथ सद्ग्रन्थ को, कहौं इतिहास बखानि॥

सो० शौनक सहित हुलास, पूछेउ कै पद धर्म के ।
कितउतपति कितनास, कितअस्थितिविस्तारकित॥

कु० कह्यो सूत मुनि धर्म के, चारि चरण पहिचान ।
प्रथम सत्य पुनि दया है, और तपस्या दान ॥
और तपस्या दान सत्यते उतपति सोई ।
दया तहा विस्तार, क्षमा ते अस्थिर होई ॥
नाश होतहै लोभ करि, क्रोधौते दूरी रह्यो ।
कृतयुगचहुँपुनितीनिफिरि, दुइकलिइकबेदनकह्यो ॥

दो० सुनशौनकाजिहिंभांतिजिन, धर्मकिहिनितनुधारि ।
लिखे पुराणन में कहौं, तिनमें ते दुइचारि ॥
भूप त्रिसंकुतुभुजबली. महिमण्डलरिगुजीति ।
दीन्ह्यो सुख गोद्विजप्रजन, सहित वेदकी रीति ॥
चन्द्रप्रभा रहै तिनकी बाला * जिन जाये हरिचन्द्र नृपाला
बदनावति हरिचन्द्र कि रानी * जासु सुयश त्रिभुवन में जानी
रोहिताश्व रह तासु कुमाग * इन्द्रावती बधू सुकुमारा
करै राज्य हरिचन्द्र नरेश * धन अधर्म कर लेइ न लेश
तासु राज्य कोउ दुखी न रहई * चारों वर्ण धर्म निज गहई
सब सुन्दर सब निरुज शरीरा * सब गुणज्ञ सब पण्डित धीरा
तेहि पुर रामभक्त नर नारी * सन्त समागम रुचि अधिकारी
निशि दिन भूपप्रीति हरिचरणा * सुमिरण पूजन वन्दन करणा
सो० वापी कूप तड़ाग, खनवाये मारग बिषे ।
लगवाये बहु बाग, बनवाये हरिहरभवन ॥
दो० विटपफुलफलसहितगिरि, प्रकटभई गलियान ।
कामधेनु भै भूमिजल, कहे देहिं धन आन ॥
धर्म बचन मन जो करै, सो अरपै भगवान ।
भक्तिवन्त भूपालबर, हरि तजिरतिनहिंआन॥
प्रतिसम्वत सब माल खजाना * देइ लुटाइ न राखै दाना
नृप कीरति सब जग में छाई * जहा तहा मुनि करें बडाई
कहैं कि नृप हरिचन्द्र समाना * है न अवर धर्मज्ञ जहाना
सुनि कौशिक मुनि कहा रिसाई * अबहीं नृप सत देहु डिगाई
तुरतै अवध पुरी चलि आयो * कोलक कुनप बिशाल बनायो
प्रविशि वाटिका चांडन लागे * घुरघुरात रखवारे भागे

ते भूपति पहँ जाय पुकारे * सुवर देत इक बाग उजारे
सुनि नरेश पठये भट भूरी * आये सब जहँ कोल गरूरी
दो० करि उपाय हारे सकल, कोल सु निकरयो नाहिं ।
सुनि हरिचन्द्रतुरङ्गचढ़ि, पहुँचे तेहिके पाहिं ॥
भाग बराह टाप सुनि पावा * देख ताहि भूपति रपटावा
कहुँ लखि परत कबहुँ दुरिजाई * सघनविपिन इमि गयउ लिवाई
आगे बढ़ि मुनि युक्ति उपायो * यक पुत्री यक पुत्र बनायो
आपु भये पण्डित तेहि बेरा * लागे करन ब्याह तिनकेरा
अग्र बराह दीख नहिं जबहीं * आये नृप तिनके ढिग तबहीं
लखि क्षितिपति बोला द्विजसाँई * यहि कन्या के है नहिं कोई
पायँ पूजि याके नृप देहू * तुम धर्मज्ञ जगत यश लेहू
कह हरिचन्द्र विपिन के माहीं * है कछु प्रभु मेरे ढिग नाहीं
नगर माहिं जो चलते देवा * सब विधिते तहँ करतिउँ सेवा
विप्र कहा कछु सगुन करीजै * गृहलिवाइ पुनि चहो सो दीजै
है लगाम कुञ्जी तव तीरा * तोहिते पद पूजौं रण धीरा
तुरतै नृप पद पूजे लीन्हा * विश्वामित्र स्वाल पुनि कीन्हा
म तुम्हार पण्डित हौं राजा * मोको कछु दीजै महराजा
भूपति कहा मांगि द्विज लेहू * कनक तीनि मन राजन देहू
कह हरिचन्द्र दीन द्विजराई * चलहु भवन मन लेहु भराई
कन्या कुँवर गुप्त ह्वै गयऊ * मुनि नृपसङ्ग अवध चलिभयऊ
राजा बाजि चढन तब लागा * छीनिलीन मुनि गहिकर बागा
दो० कह ऋषि कन्याहि देइकै, पुनि नृप फेरे लेत ।
अस अधर्म नाहिं चाहिये, तनक वस्तु के हेत ॥
अस कहि आपु भये असवारा * पाइ पियादे चले भुवारा

पहुँचे नहीं अंश्व के साथा * आगे बढ़ि टरै ऋषिनाथा
नृप सुकुमार बहुत श्रम पायो * कछुदिन रहे अवधपुर आयो
लखि नृप खुशी भये नरनारी * गये भूप निज भवन मँझारी
सुभग गलीचा एक बिछायो * करि सनमान मुनिहिं बैठायो
चरण पखारे वारि मुख नाई * भोजन कहँ पूछा पुनि राई
सुनि मुनि कहा हेम मम दीजे * पीछे अपर बात कछु कीजे
तब नृप कनक भराइ मँगावा * कह्यो लेहु मुनि वचन सुनावा
कुलीदान दियो म्वाहिं राई * द्रव्य सकल तेहि भीतर आई
जहँ लगि टाप घोड़के वाजी * तहँ लगु भई हमारी राजी
मेरि द्रव्य मोसो कहै लेहु * औरै कनक आनिकै देहु
नाहिंत कहौ दीन नहिं राई * हम अपने आश्रम का जाई
कह नृप शिर काटै जो कोई * ऐसि बात हम ते नहिं होई
दो० सुनि सुत रानी भूपतिहु कह्यो शीश धरि माथ ।
मनु मनु सोनेपर हमैं, बेंचि लीजिये नाथ ॥
अस सुनि तिन्हैं लीन अगुवाई * बेचन हेतु चले ऋषिराई
अकोने प्रजा लै हेम सिधाये * राजे मोल लेन बहु आये
विश्वामित्र कह्यो तिन हेरी * प्रजाकि द्रव्य हवै नृप केरी
यान देश तहँ बिकहु नरेश * चले बनारस सहत कलेश
आगे मुनि पाछे नृप रानी * तेहि पाछे सुत रोहित जानी
मुनि दूसर द्विज देह बनाई * बैठ्यो पुर कूप पर जाई
राजहि देखि समीप बोलायो * पूछेउ हाल महीप बतायो
बोला विप्र भूप सुनि लाने * गो द्विज दूरि पान जल कीजे
कह नृप द्विज नाह दिये बिन भाई * पियब न पाय प्राण मरु जाई
दो० असकहि अवनृपचलिदियो, रानी पहुँची आइ ।

कह्यो विप्र जल पीजिये, पेइ गये है राइ ॥
रानी वैसे वचन सुनायो * राहितारव पाछे सुत आयो
ब्राह्मण कहा पियउ सुन पानी * आगे पेड गये नृप रानी
कुंवर कह्यो वे वृद्ध विचारे * छाडिन धर्म प्यास के मारे
हम तो द्विजहि दिहे बिन हेमा * घटब नहीं लार यह नेमा
अतिधर्मज्ञ हिये हम जाने * गाधिसुवन मनमाहिं लजाने
चलत चलत काशी महँ आये * मुनि ले बीच हाट बैठाये
विप्र एक रानिहि ले गयऊ * मनभरि हेम देइ सो दयऊ
मालाकार कुंवर कहँ लीन्हा * फुलवारी महँ डेरा दीन्हा
राजहि लिहिसि डोम यक आई * पाइ पुष्ट चलिमे अविराई
नृपने कही श्वपच अस बानी * भरा करो नादन महँ पानी
सुनि नृप नीर भरन तब लाग्यो * कहमुनि भूप सत्य नहिं त्याग्यो
जो जल भरै चले मुनि आवे * फोरे नाँद पाथ बहिजावे
देखि श्वपच निय तिनते लरई * बैठ रहत कछु काम न करई
सुनि कह डोम भूप सुनु बाता * हम तुम बीच ईश जगत्राता
बाचाबद्ध नृपति तो किय्यऊ * मरघट निकट बास तब दियऊ
लै शव यहा जो आवै कोई * दण्ड लिहे बिन दाह न होई
निशा आइ हमका धन देऊ * भोजन मात्र तात तुम लेऊ
दो० यहिबिधिबसतमशाननृप, बहुत दीन धन आइ ।
सुखी डोमनायक परम, हितकारी जन पाइ ॥
कछुककालयहिबिधिचलिगयऊ * तब मुनि रूप सर्पको लयऊ
हरिचंद सुतहि डस्यो सो जाई * दीन्हों ताहि रविहिं सौंपाई
रानी जब खबरि यह पाई * रोदन करत कुंवर पइ आई
लै लहास गंगा के तीरा * गै जहि घाट रहत नृपबीरा

नारि विलाप करत बिधि नाना * मृत शव देखि भूप दुख माना
पुनि धरि धीर महीपति कहई * ईश रजाइ शीश पर अहई
दुख सुख देह पार्थ सग लागे * मिलन बिछोह स्वप्न जिमि जागे
जल अकाश क्षिति पावक बाता * मिलै कौन परपञ्च विधाता
नरवररूप मोहवश शोचा * परधन गये करै दुख पोचा
दो० प्रकट भयो तनु जानिये, सो मोचत तब तीर।
जीवन नाशन नित्य है, अस विचारि धरु धीर॥
हाट मर्कट गति देखु निहारी * हरि आधीन सकल तनुधारी
चाक कुलाल फिरत है तौलौं * अध आधार लफरिया जौलौं
भव ससार काल कर भोगा * आपु न देखत आनहि सोगा
अस्थि मांस विष्ठा तन ढयऊ * चर्म लपेटि सहाय न भयऊ
तेहि पर कहत मोहि सम आना * कछु दिन गये रही नहि माना
अल्प आयु बहु करत उपाई * मृत्यु शिरखड़ी न ताहि डराई
बलिपशु पाठ घास जिमि चरई * बूड़त आपु आन को धरई
दो० जगत विकटवन कुरगमन, माया जाल पसारि।
काल शिकारी बिन खबरि, लीन अचानक मारि॥
दारु नारि तन ममता डोरी * कर्म नचावत है चहुँ ओरी
दश इन्द्री सुर निजनिज थोरा * खैंचत जहाँ तहाँ बरजोरा
मूसत पाच चोर करदङ्गा * रहतहित है निशिदिन सङ्गा
जाव कुशल कैसे कहि जाई * जिमि खेती हरवाहे खाई
शोक समान देखि सब परई * सुखी सो जो हरिपद मन धरई
दुख कर मूल मोह है रानी * सो तजि सपदि मानु ममबानी
दण्ड नाटपर हमकह दीजै * पाछे पुनदाह निज कीजै
रानी कहा सुनो नरपाला * तुमते कछू छिपा नहि हाला

कहो द्रव्य कहवा मैं पाई * जो लै तुम्हैं दीजिये आई
दो० कह नृप कर लीन्हें बिना, हौं नहि दाहन देहुं ।
स्वामी केर निदेश तजि, नाहक अधरम लेहुं ॥
सो० तेहि ते मे अब जाय, पूछौ प्रभुते हाल यहु ।
जो वे देहैं बताय, साइ करब पुनि आइकै ॥
असकहि हरिचंद नगर सिधाये * गाधिसुवन मरघट तहँ आये
रानी से अस बचन उचारा * बैठि लिहे कत मृतक कुमारा
रानी सकल हाल कहिदयऊ * पुनि मुनि ऐसे बोलत भयऊ
जो दुरवृत नाह करी निदेशा * तौ तोहिं दहन न देइ नरेशा
तेहिते मैं तोहिं देउ बताई * भस्म सकल तन लेहु लगाई
बालक यक आकर्षि जो लीन्हा * सो रानी कहँ मुनिवर दीन्हा
कह्यो कि लै मठ बैठो जाई * मैं तुम्हार सुत देउ जराई
सुनि रानी गै मण्डप जबहीं * कौशिकमुनि पुर आये तबहीं
जहँ तहँ अस दीन्हो गोहराई * नगर तुम्हारे डाकनि आई
पूछिनि कहा हवै मठमाहीं * यामें झूठ कहत हम नाहीं
गई अबै पुरते सहमोदा * लीन्हें यक बालक शव गोदा
चौपाई० सुनि सब धाये । तेहि ढिग आये ॥
रूप निहारी । अति भयकारी ॥
बालक चीन्हा । गहि कर लीन्हा ॥
नृपपहँ ल्यायो । कहि समुझायो ॥
भूप रिसाई । दिहिसि टँगाई ॥
कह्यउ कि धावो । श्वपचहि लावो ॥
गरदन मारो । करो न वारो ॥
हिसक त्यागे । भल नहिं आगे ॥

दो० गा इक धावन डोमगृह, कह्यो हाल समुझाय ।
तेहि पठवा हरिचन्द्र कहँ, चलि आये तहँ राय ॥
राजा निज रानी पहिंचान्यो * तनको मोह न मनमें आन्यो
कंता तुरत उठायो राई * मारी शीश बिलग ह्वै जाई
आइ तबै हरि कर गहि लीन्हा * जयतिजयति नभ देवन कीन्हा
धनि रानी धनि नृपति महाना * तज्यो न धर्म सह्यो दुख नाना
सुदिन सफल धर्मज्ञ कहावै * कुदिनकसौटी परि खुलि जावै
बिन प्रहार बिन साचे हीरा * अगे कि सके काचकर खीरा
यज्ञशास्त्र जिमि सबकोइ बाँचै * शूर सोइ जो समर न काँपै
मुनि ते कह्यो रिसाइ खरारी * तुम्हरे मत्सरता अति भारी
जप तप संयम करते भयऊ * आदिसुभाव तदपि नहिं गयऊ
अस धर्मज्ञ नृपहि दुख दीन्ह्यो * यामें कहा लाभ का चीन्ह्यो
धर्म छोडावन इनकर आयो * फूकन चहत सुमेरु उड़ायो
तपकर तुम्हें बहुत अभिमानू * सो नहिं रही सत्य यह जानू
सुनि मुनि चरण परे ह्वै दीना * प्रभु अपराध बहुत मैं कीना
करहु सो क्षमा जानि अज्ञानी * नृपपद परहु कह्यो प्रभु बानी
सुनि मुनिगहे चरण तजि माना * लखिनृपकीन सकुचिसनमाना
तुरत पुत्र दीन मँगवाई * जो प्रथमै रवि कासों पाई
दो० नृप हरिचन्द्रहि जानिकै, पुरबासी सब लोग ।
भूपसहित विनती करी, भये दरश विधियोग ॥
सो० बोले विष्णु बहोरि, जो भावै सो मांगिये ।
कह नृप दोउकर जोरि, मोको कछू न चाहिये ॥
रानी ते धृभऊ सुरराई * मागी जो कछु वाको भाई
रमानाथ नारी ते भाषा * मागहु बर जो मन अभिलाषा

राना कहा नाथ मुनि लाजै * प्रथमै भक्ति आपनी दीजै
जहँ जह जन्म धरब हम जाई * तह तह हरिचन्द्रे पति पाई
पुत्र मिलै गेहणा समाना * राजकाज धन धाम खजाना
याहि विधि मुनि सागे नहिं आई * जानि नाथ दरश तव पाई
यह बरदान देहु मोहि स्वामी * और न चाहिय अन्तर्यामी
सुनि हरि सजलनयन होइ आयो * प्रेमसहित निजहृदय लगायो
तुम समान त्रिय जासु अगारा * कस न होइ तह धर्म अपारा
चलहु आज निज राज कराजै * प्रजा अनाथ तिन्हैं सुख दीजै
सुनि हरिचन्द्र अवध चलिआये * पुरबासी लखि रत्न लुटाये
सिंहासन भूषित बैठारे * जगनिवास बैकुण्ठ पधारे
बहुरि सकल सजन करि दूरी * रानी सहित किहिनि सुख भूरी

गी० छ० ॥

सुखभूरिकरि नृप रानि परजन विविधविधि पालत भये ।
तजि अन्त समय शरीर त्रिन परिशर्म हरिपुरका गये ॥
यह कथा नृप हरिचन्द्र की तुम ते कही समुझाइकै ।
अब और एक इतिहास भाषौं सुनहु मुनि मनलाइकै ॥

सो० हंसध्वज नृप तासु, तनय सुधन्वा हरिभगत ।
निजय पुरोहित्यो आसु, शङ्खलिखितखलद्विजनहित॥
रन्तिदेव नृप आन, बहु दिन मे भोजन लहे ।
विप्र शूद्र शठ ज्ञान, सनमाने तब मिले हरि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतहरिचन्द्रसुधन्वाख्यानवर्णनोनाम
सप्तदशोऽध्याय ॥ १७ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपतिगिरा सुखदानि ।
वर्णौं भारत की कथा, कछु दालभ्य बखानि ॥
सो० शौनक मनमें गुण्य, पूछ्यो पद शिरनाइके ।
जिवरक्षा कृत पुण्य, होत कहा सो वर्णिये ॥
सुनि सुमन्त बोले हरषाता * नीक प्रश्न कीन्हो तुम ताता
धर्ममूल जिव रक्षा जानो * सुनो तासुकृत पुण्य बखानो
जहँ तकसब तीरथ करि आवै * गया माहिं नित पिण्ड परावै
गौ भूमि हय पट माणिक हेमा * देहि विप्रगृह करि नित नेमा
यज्ञ सुसकल करै बहु दाना * सयम नेम तपस्या ठाना
ये सब पुण्य जो तुला चढावै * जिवरक्षा सम सोउ न पावै
राजा शिवि की कथा बखानौं * जिवरक्षा तिन कीन्ही जानौं
नृपति यज्ञ करत इकबारा * रहे तहां महिदेव अपारा
इन्द्र अग्निशिवियश सुनिपायो * लेन परीक्षा दोउ मिलायो
अग्नि कपोत वपुष तब कीन्हा * बाजरूप बासव धरि लीन्हा
भाजि कपोत बाज रपटाया * नृप जहँ यज्ञ करत तहँ आवा
दो० बैठे शिवि लखि गोदमें, दुख्यो कपोत डराय ।
धरि बाज बोलत भयो, नृपते बचन बनाय ॥
अहो भूप धर्मज्ञ तुम, महूँ सुनी यह बात ।
मोह कृपणता है नहीं, तनको तुम्हरे गात ॥
तै सबको पाल महिपाला * भन्न अभन्न कहा नर बाला
अवगुण देखि छिपावै जानी * गुणको सदा करत उरआनी
द्वारे अतिथि जो कोई आवै * तुमते विमुख जान नहिं पावै
अब जनि धर्म छाड़िया राऊ * यशते रहै अयश जग छाऊ
भोजन मांस कपोत रहावो * ताको तै क्यों गोद छिपायो

भूखो हौं बहु दिन को राई * याको मोहिं देहु पकराई
राजा कहा श्येन सुनि लीजे * याकी आश छोडि अब दीजे
पक्षी टरपि शरण मम लीन्हा * तजौं न याहि परण दृढ कीन्हा
शरणागत आये जो त्यागै * ब्रह्महत्या ताके शिर लागै
दो० लोभ क्रोध वश परिरहै, करै न रक्षा जासु ।
सो नर पापी नीच खल, मुख नहिं देखिय तासु ॥
मुख देखे सुकृत घटिजाई * रमपान लखि सुख अधिकाई
तेहिते यहि तजिहौं नहिं भाई * शीशहु जो कोउ काटे आई
बोला श्येन सुनत असि बाता * मैं तोहि सुना रहे बड़ताता
धर्मटेक सो छाडि भुवाला * लै अपयश जीहां के काला
दिये अहार होइ जिव रक्षा * तजि हठ लेहु मानि सो शिक्षा
किये अहार प्राण फिर रहई * नाहिंत तन तजि मारग गहई
मोरे मुये बहुत कर नाशा * जननिजनक सुतनारि विनाशा
एक जीव की रक्षा करहु * बहुतेनकी शिर हत्या धरहु
बिन विवेक वरमहु कर कोई * पाछे तेहि पछिताऊक होई
करमन की गति भीनी राई * पुण्य करत पातक ह्वै जाई
तेहिते नृपति मानि अब लीजे * मोर अहार होइ मोहिं दीजै
सो० कह शिबि सुनहु शचान, शरणागत रक्षा करै ।
यहिसम धर्म न आन, सो मैंनिजहिरदयधर्यो ॥
दो० सोइ पण्डित धर्मज्ञ सोइ, सतिवादी मतिधीर ।
शीलवन्त ज्ञानीश जो, हरै पराई पीर ॥
मोहिं इच्छा कछु स्वर्ग कि नाहीं * नहिं वैकुण्ठ जानके माहीं
मुक्ति भुक्ति की चाह न करहू * नरक परनको मैं नहिं डरहू
इक अभिलाष यहै मन माहीं * आवै शरण तजौं तेहि नाहीं

जो मोपर प्रसन्न भगवाना * देहि टेक हिय यही न आना
तन धन धाम धाम सुत जाहीं * तजौं न ताहि शरण जो आहीं
मोहि कपोत परम प्रिय भाई * ताको कहौं तजा किमि जाई
और चहौ सो लीजै मांगी * सुनि शचान बोला भय त्यागी
भूमि धाम धन अन्न अपारा * लिहु भरी नहिं काज हमारा
मम भक्षण पक्षी है येहू * सो नहिं देउ तौ अब सुनि लेहू
आपन मांस खवायो मोहीं * दयावन्त तब जानौं तोहीं
तुला चढ़ाइ कपोतहि दीजै * तेहिसम धरहु देर मन कीजै

कुं० सुनि शिवि मनहरषितभयो, कह्यो धन्य ममभाग।
अमद अस्वच्छ शरीर यह, परम्पारथ में लाग॥
परम्पारथ में लाग, धन्य जननी जिन जायो।
दीन्हों जात जराय, कहौ केहि कामें आयो॥
हरिसुमिरण अरु कर्मशुभ, साधै पाइ नरदेह पुनि।
जीवन ताही को सफल, बोल्यो बहुरि शचान सुनि॥

वृथा करै कत बाद भुवारा * क्षुधित जात है प्राण हमारा
राजा तुरत तुला मंगवायो * पलरा पर कपोत बैठायो
दूजे पला मांस निज धरऊ * आपन गुरू कपोतै करऊ
तब राजा फिर काटि चढ़ावा * विहंगपला नहिं समसरि आवा
काटि काटि कैयो बेर डारो * उठ्यो न भूले नेकु निहारो
चढ़ि बैठ्यो नृप तब हरषाई * देखि अग्नि हरि रहे लजाई
सुर देखैं नभ चढ़े विमाना * कहैं कि अस प्रण कहू न टाना
जय जय धन्य धन्य नृप करहीं * सुमन बरषि निजनिजपुर फिरहीं

दो० अग्निपुरन्दर कपट तजि, प्रकट्यो आपन रूप।
द्वै प्रसन्न बोलत भये, धन्य धन्य तुम भूप॥

विश्वमाहि तुमसम नृपति, है नहिं कोइ और ।
प्रण कीन्हो भल होइहै, तेरो यश सब ठौर ॥
मेघ नदी जल भूमि द्रुम, सन्तजन्म जो लेत ।
केवल विधि परकट किये, परमारथ के हेत ॥

तुम समान राजा जे आहा * तउ जानिये सजन माहीं
इतनेन की जो निन्दा करहा * रौरवनरक माहि सो परहीं
तेरे तनयो जाय उबारे * होइ नवीन सभग सुखदाई
हम शठ हठवश कुकरम कीन्हा * नाहक आग तुम्हें दुख दीन्हा
सो अपराध क्षमो करि दाया * अमकहि सुरपति स्वर्ग सिधाया
यज्ञ जबै पूरण ह गयऊ * तब भूपति मन हर्षित भयऊ
गण विमान लाये हरषाई * विष्णुलोक इन्द्र गवनि जाई
जो यह कथा सुनै अरु गावै * यमकिंकर तेहि नाहिं सतावै
शिविकी कथा कहौं ना जाना * और सुनो एक कहौं बखानी
केकी नगर रहै एक शाह * बहिमान पर द्रव्य अथाह
देवदत्त अस ताकर नामा * सुयशा नाम नारि को वामा
एक बार पतिपद शिरनाई * बोली वचन मधुर सुखदाई
सुनहु नाथ निगमागम गावै * नरतन बड़े भाग्य ते पावै
तेहिलहि जोहरिभजन न करहीं * जगत भार शिर ऊपर धरहीं
सो पाछे पछितात अभागी * जिमिनगवाल अमोलि कत्यागी
ताते पति हरि भक्तिहि कीजे * नरतन पाइ सुफल करिलीजे
धनते धर्म करहु मन लाई * आखिर अन्त संग नहिं जाई
ऐसे वचन नारि जब कह्यऊ * सुनिशुचिशाह परम सुख लह्यऊ

दो० धर्म करन लागे ललकि, तन मन धन ते दोउ ।
जो मांगै तेहि देइ सोइ, विमुख न जावै कोउ ॥

नवधा भक्ति करै नित नेमा * विप्र वैष्णव पद अति प्रेमा
यहिभांतिन बहु दिवस बिताये * लेन परीक्षा धर्म सिधाये
रूप अघोरी का धरि लीन्हा * शाह दुवार स्वाल आ कीन्हा
हरि वैश्य भीतर ले गयऊ * मुदित मनोरथ पूरन भयऊ
कह्यो अघोरी सुनु अनुरागी * मोको आज क्षुधा बहु लागी
पुत्र तुम्हार वर्ष षट करा * तेहि आमिष मन चाहत मेरा
दोउ प्राणी मिलि सुनवध कीजै * लोभ न तनको मनमें लीजै
निजनिज कर मांहिं देहु खवाई * ना द्वैमके तो अन्त जाई
सुनत शाह शाहुनि अस वयना * खेजत मते बोलायो अयना
मारन लगे दोउ मिलि जबहीं * बालक बचन कहन भा तबहीं
मातु न मातु धरे मह रहीं * अब हो दूरि न खेलन जैहीं
सो० अहो सुवन तव कर्म, होत जो खेलन को लिखा।
तो कत लेत्यो जन्म, आइ हमारे जठरमहँ ॥
अस कहि बात कीन हरषाई * बोटी बोटी बिलग बनाई
कह्यो अघोरी सो प्रभु लीजै * देर भई यहि भोजन कीजै
सुन तेहि कहा कि मैं नहिं खैहौं * इतने में तनको न अघैहौं
निजनिज आमिष दीजै थारा * जेहिते जाइ उदर भरि मोरा
स्वप्नल जबै काटन कह कीन्हा * तुरते धर्म हाथ गहिलीन्हा
सुंग है आपन वपु प्रकटायो * देवदत्त सो बचन सुनायो
अहो शाह सुनु मैहीं धरमा * आयो लेन तुम्हारो भरमा
धन्य धन्य तुमहो पनि ताता * धर्म हेतु सुत कीन्हो दाता
तुम्हरी पुण्यै घटी नहिं भाई * दिनदिनअधिकअधिकअधिकाई
विष्णुलोक बासहो तिहुँ प्रानी * जन्म मरण की होई हानी
पुत्र तुम्हारे बालकन माहीं * खेलत हवै अमिथ्या नाहीं

सुनि यक सेवक शाह पठायो * तेहिके सग कुवर चलि आयो
देखि मातु पितु हर्षित भयऊ * हृदय लगाय माथ भरिलयऊ
दो० भये बिदा तब धर्म करि, देवदत्त सनमान ।
हरिपुरते आवत भयो, ताही समय विमान ॥
गी० छ० ॥
आयो विमान निकेत निर्मल रत्नसागर मणिमयो ।
लयो धाय गगन चढ़ाय तिनका विष्णुपुर बासा दयो ॥
लखि देव जयजयजयति कहिकहि सुमन बहु बरषायहू ।
रघुनाथ गुरुपद माथ धरि यह कथा सूत्तम गायहू ॥
दो० धन्य पुत्र हरिभक्त जो, धन्य पतिव्रत नारि ।
जासों परमारथ बनै, धन्य सो दर्वि निहारि ॥
इति श्रीविश्रामसागरसत्रमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतशिविवादेवदत्तप्रसगवर्णनोनाम
अष्टादशोऽध्याय ॥ १८ ॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप शिरा सुखदानि ।
वर्णों भारतग्रन्थ को, पुनि इतिहास बखानि ॥
अग्निदेव कर पुत्र यक, तासु सुदर्शन नाम ।
धर्मवान गोजीतवर, क्षमा शील तपधाम ॥
बोधवान नृप निज सुता, दीन्ही द्विजे विवाहि ।
दोऊ प्राणी मिलि बसे, कुरुक्षेत्र महँ जाहि ॥
निशि दिन धर्म सुदर्शन भावै * अतिथि द्वारते निमुख न जावै
मन क्रम करै साधु की सेवा * अन्तै स्वामी सन्त देवा
यहिविधिकछुककाल चलिगयऊ * इकदिन द्विज मनशोचत भयऊ
साधुन में नाहि त्रियको भावा * अरघअङ्ग तेहि वेद बतावा

म न होउँ गृह हरिजन आवै * बनिताते सनमान न पावै
तो भर्म धर्म होइ सब नासा * जो आदर नहिं पावहि दासा
नारि पुरुष दोउ इकमत होई * तोहि कर धर्म डिगै नहिं कोई
हो० अस बिचारि निज बधूते, बोल्यो विप्र सुजान ।
सन्त सेव हिरदे धरौ, जाते होय कल्यान ॥
सन्त सेव हरि सेव से, शतगुण अधिकी जानि ।
निजमुख प्रभु वर्णन कियो, धर्मोत्तर में मानि ॥
पुरुह धरत नैवेद्य तेहि, शुद्ध करौं मैं देखि ।
स्वाद लेत मुख दास के, कह हरि विलिते पेखि ॥
सर्वाराधन में परे, हरि अवराधन आहिं ।
जनसेवा तेहिते अधिक, कहशिव आगममाहिं ॥
गोविंद पद पूजन करैं, सन्तहि सेवैं नाहिं ।
ते नहि प्रीतम विष्णुकहँ, दम्भिकभाजन आहि ॥
आवै बैष्णव जासु घर, पावै नहि सनमान ।
नशै पुण्य सौ जन्म की, कह स्कन्द पुरान ॥
यमन क्षेत्र निश्चय तहा, जहा न सन्तस्थान ।
बासै जब हरिक्षेत्र सो, बद वाराह पुरान ॥
साधुभजे भजिजात हरि, जिमिशिशुगर्भ मँझार ।
बिन जननी तोपै नहीं, इमि कह अमृतसार ॥
अद्धायुत हरिभक्त कहे, अन्न खवावे कोइ ।
सोई सोमपर्वत सरिस, दिनादिनअधिकी होइ ॥
साधुसेव कीन्ही नहीं, जिन नरतनको पाय ।
ते नर पशुते अधिक हैं, पेट भरन को चाय ॥
पचिपचिमर्त्योकुटुम्बहित, परमारथ नहि कीन ।

धिकधिक ताकी बुद्धिको, तजि अमृत विष पीन ॥
ताते सुमुखि मानु मम बाता * जाते मोर तोर कुशलाता
तन मन धन सन्तन कह दीजे * है अधीन चरणोदक लीजै
गृहस्थाश्रम को धर्म है याही * हरिजनआइ विमुख नहिं जाही
जो कछु सन्त कहै सो कीजै * सुखप्रद वचन मानि मम लीजै
जो त्रिय कहा करै पतिकेरा * सो पावै सतिलोक बसेरा
सुनि पतिवचन नारि सुखपाई * बोली वचन कपट नहिं राई
अहोनाथ म्वहिं धर्म दृढायो * सुनि तववचन मोहिं अति भायो
तनमनधनकरि सन्तहि पोषिहौं * है पति परण तुम्हारी रखिहौं
पतनी सो जो अनी सम्हारै * विमुख करै सो शठ निरवारै
पति सो जो त्रियकी पति राखै * निज पतिविन त्यहिको पतिभाखै
ऐसे वचन कहे जब नारी * सुनत विप्र उरभा सुख भारी

दो० दोउ धर्म लागे करन, तन धन सो तजि नेह ।
विविधभाति सेवा करै, सन्त जो आवै गेह ॥
यहिभातिन बहुकालगे, रह्यो सुयश जग छाय ।
मृत्यु दुवारे आइकै, मुहुर मुहुर फिरिजाय ॥

कबहुं धर्म पटनी नहिं होई * तात मारिसकै नहिं सोई
यमहिन सुनो सुदर्शन कानन * गये रहैं तह समिधी आनन
धर्म परीक्षा लेन सिधाये * वेष वैष्णव कर बनाये
जहं द्विजभवन तहां चलिगयऊ * बोलवनी ते बोलत भयऊ
हे धर्मज्ञ सुना मैं तोही * मनमथ आजु सतावत मोहीं
तेहिते अपने तनका दीजै * जेहिते अङ्ग सङ्ग करिलीजै
सुनि करजोरि कह्यो द्विजबामा * लीजै अशन वसन बहु दामा
ऐसी बात न कहौ गोसाईं * बोले धर्म और कछु नाहीं

केवल चहौं शरीर तुम्हारा * जातो लाग्यो चित्त हमारा
जो न देहु तो मारग लीजे * हे मा एक बात कहि दीजे
सुनि असवचन नारि शिरनाई * मन मे शोच कीन अधिकाई
मेटौं तो प्रण कीन सो जाई * सग क्या पतिव्रत नशाई
दो० शोचतहो श्रुति के बचन, हे आये तब आदि।
पतियाज्ञा विय करै तो, पतिव्रत जाइ न बादि॥
तब हरिजन ते बोली नारी * किरपा हमपर कीन मुरारी
यह तन धन सब तुम्हर स्वामी * हम सेवक सब विधि अनुगामी
सुनि हरि कुटी कपाट लगायो * ताही समय सुदर्शन आयो
मांगसुननाहियेसकुचि न बोला * दीन्हो भेद अतिथि तब खोला
मोर मनोरथ पुरवत नारी * खडे रहो तल द्वार मझारी
सुनत सुदर्शन अतिसुख पावा * धन्य धन्य पति बचन सुनावा
धन्य प्रिया तव पितु अरु माई * पूज्यो सन्तहि हेत बड़ाई
आखिर तनु नहि रहत तुम्हारा * है जातो कृमि विष्ठा क्षारा
सो बपु वैष्णव हेत लगायो * राख्यो धर्म मोहि अतिभायो
अहो सन्त मन निश्चल होई * मानि शङ्का मान्यो तुम कोई
धाम धाम तन धन जो हेरो * सो सब जानो साधुन केरो
मैं भवविधि सन्तन को दासा * और न मेरे आन उपासा
पुण्य हमारि उदय भे आज * जो घर सन्तो तुम्हारो काज
बचन सुदर्शन के सुनि प्यारे * धर्म निकरि आये तब द्वारे
धन्य धन्य तुम धनि तव बाला * प्रण आपन कीन्हो प्रतिपाला
दो० अहो सन्त मैं धर्म हो, यह पतिव्रता नारि।
लेन परीक्षा आयऊं, नहिं कछु दोष विचारि॥
तुमसम पुण्यसलोक नहिं, तीनिलोक महँ कोइ।

जस कीन्हो तस जगत मे, काहू ते नहि होइ ॥
देव दनुज नर नाग मुनि, गणिकातजिजगमाहिं ।
नारिदोष को देखिकै, रोष करै को नाहि ॥
तुम्हरे क्रोध भयो नहि राई * ऊपर ते बहु किनो बड़ाई
नहीं कृपणता मान न मोहा * समजित इन्द्रजीत न कोहा
बिष्णुलोक तहे बसिहौ जाई * आजुइ लेन विमान जो आई
अर्धङ्गी तव आये अङ्गा * सन्ना रहीं सो तुम्हरे सङ्गा
अर्ध अङ्ग ते सारिता होई * बोधवती कहवाई सोई
जो कोइ मज्जी याहि मझाग * तासु पाप सब हरहि छारा
असकहि धर्म भे अन्तर्धाना * गण लै आये सुभग विमाना
घोडा सहस लगे त्यहि माहीं * पवन समान उडत जे जाहीं
पति पत्नी तेहि माहि चढायो * लखि सुर हर्षि सुमन बरसायो
अपने पुण्य प्रताप ते दोऊ * गे हरिपुर जाने सब कोऊ
दो० द्वारे मृत्यु बैठी रहै, सत देखन के काज ।
प्रण छूटै तौ मारहू, ज्यों तीतर को बाज ॥
सो० प्रण जबे छूट्यो नाहि, चली तुरत खिसिआइकै ।
जाति न मृत्युघरमाहिं, है मुनि पुण्य प्रतापते ॥
पढ़ै सुनै नर कोइ, यहइतिहासजोनित्यप्रति ।
मृत्यु अकाल न होइ, भाषत भीषमपर्व इमि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतसुदर्शनकथावर्णनोनाम
ऊनविंशोऽध्याय ॥ १९ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
वर्णौं भारतग्रन्थ की, पुनि इतिहास बखानि ॥

और सुनो मैं करौं प्रकासा * बहुला गऊकेर इतिहासा
चन्द्रावती पुरी एक अहई * चन्द्रसेन राजा तह रहई
द्विज हरिभक्त बसै तेहि ग्रामा * बहुला गऊ तासु के धामा
उज्ज्वल अङ्ग हंसकी नाहा * विचरै सदा अभय बनमाहीं
रोहितागिरि यमुना तट एका * गुफनमाहिं रहैं जीव अनेका
वृक्ष सघन बेली उरझानी * चारो तरफ भरा तेहि पानी
एक दिन बहुला सङ्ग विहाई * चरन चरत परवतपर आई
सिंह एक निकसा अतिभारी * बड़े बड़े रदन बदन भयकारी
बहुले देखि सामने धावा * निकटजाय असवचन सुनावा
जीवन कठिन जानु निज गाई * लेहौं तोहि आजु मैं खाई
जो आवै इहि बन के माहीं * मोसे सो उबरत है नाहीं
सुनिहरिबचन गऊ बिलखानी * बछरा छोट आपनो जानी
केहरि कहु राखै केहि काजू * बचिहौ नहिं हमते तुम आजू
बन्दु बहुला सुनु केहरि भाई * आपन शोच मोहिं नहिं राई
जो उपजे सो निश्चय नाशै * जो नाशै सो पुनः प्रकाशै
प्रीति पुत्र की हृदय में गाढ़ी * तेहिते मोह अग्नि मोहिं बाढ़ी
प्रथम पुत्र जावा मैं याही * पियतअबै पय तृण नहिं खाही
सो० बच्छ छीर पियाय, फिरि मैं इहनैं आइहौं ।
तब तुम लीन्ह्यो खाय, सुनिबोल्योमृगराजहँसि ॥
दो० जो कोउ शूली चढ़त पर, लगन लिखावै धाय ।
तैसे तैं मृत्यु भूलिकै, बछरा के ढिग जाय ॥
मेरे फन्द आय जो परेऊ * सो जानो जग जन्म न धरेऊ
तैं चाहै निज पुर को जाना * मोहिं बनाये निपट दिवाना
घर मे जाय पुरुष को पैहौ * प्राण देन फिरि काहेक ऐहौ

ताने हौ नहिं कही जाई * सुनि बहुला बोली अकुलाई
विप्र गऊ पितु मातै मारै * बनिता बालक गुरू सहारै
कन्या ब्याहि और को देव * दोउ जनन ते पैसा लेवै
साधुन की निन्दा मुख गावै * हरिहर तजि जो आनहि ध्यावै
इन करमन का पाप जो जागै * नहिं आऊ तो मम शिर लागै
झूठी साखि सभामहं बोलै * अतिथि निरादर बासन डोलै
तुला चढाय घाटि फिरि देवै * माफिन में पुनि पोताहि लेवै
कथा होत जो दुन्दि मचावै * विघ्न करै होने नहिं पावै
चोरी ब्वारी रत परनारी * हरिहिमक मद मास अहारी
येते कर्म किहे जो पापू * नहिं आवौं तो मम शिर थापू
दो० हरिविमुखन ते मित्रता, रामजनन ते रोष।
जो नहिं आऊ तो परै, मेरे शिर यह दोष॥
मात पिता जे सेवै नाहीं * भली वस्तु जे छिपिकै खाहीं
दै विश्वास दगा करिजावै * साधु गुरु में दोष लगावै
हरिहरजन गुण कह न सुनई * परअपकार लागि शिर धुनई
औरौ पापकर्म जो होई * नहिं आवौं तो लागै मोही
सुनत सिंह बोला हे गाई * शपथ तोर मोरे मन भाई
हमरे मन विश्वास तिहारो * जित चाहौ तित बेगि सिधारो
आयो आतुर तीर पियाई * असजानि जान्यो ठग्यो बनाई
दो० अहो सिंह तव ठगन की, समरथ काको आहि।
ठगा चहै जो और को, सोई शठ ठगि जाहि॥
अस कहि आयसु हरिको पाई * हुँकरत बहुला तुरत सिधाई
पहुँची जब बछरा के तीरा * बाल बिलोकि गई गंभीरा
अङ्गज जननि देखि दिगआवा * चूमि चाटि मा दुग्ध पियावा

चित उदास अम्बाकर जानी * बोला बच्छ अग्र ह्वै बानी
मातु बिकल देखो मैं तोही * कारण कौन बतायो मोही
बहुला कहा पियहु सुत हीरा * जेहिकारण आइउ तव तीरा
आजु निहारि लेहु मोहिं बेटा * कालिहते नहिं होई पुनि भेटा
बन में हरि घेरयो कहि खैहौं * सौंहे दे आइउं फिरि जैहौं
बोला बच्छ जाउं मैं माता * तेरे बदले ग्वहिं हरि खाई
धर्मवान माता तैं आही * तव सेवा मोहि करनो चाही
जाते मम होवै उद्धारा * सुनि बहुला अस बचन उचारा

दो० हे सुत आई मृत्यु मम, तेरी आई नाहिं।
मेरी बदि तू कौन बिधि, जैहै हरिमुख माहि॥

सो० सुनु सुत मम उपदेश, नखी नारि नृप शृङ्गधर।
सरि सशस्त्र अकुलेश, इन बिश्वास न कीजिये॥

अमकहि चलि गोयन दिगआई * देखि मिली सुरभी सब धाई
पूछन लगीं कुशल कित रहेऊ * गिरि पर गहन सिंह तहँ गहेऊ
खाये लेत रहै मृगराजा * सौंह देइ आइन सुत काजा
सबसों बिनय करौं कर जोरे * क्षमा कीजिये अवगुण मोरे
हौं अब जात सिंह के पासा * सुनत सखी सब भई उदासा
बोलीं बिलखि शास्त्र अस कहई * झूठ कहिय प्राण जो रहई
तेहिते बहुला तुम मति जावो * घर बैठो निज प्राण बचावो
बहुला कहा सखी सुनि लेहू * अस उपदेश हमैं मति देहू
आपन प्राण बचन के हेता * झूठ कहै तेहि जानो प्रेता
परके प्राण झूठ कहि बाचै * झूठ नहीं सो जानहु साचै
जाकी मृत्यु मरै नर सोई * आपु अकेलो संग न कोई
सत्य समान धर्म कोइ नाहीं * पाप न झूठ सरिस जगमाहीं

शिवते झूठ कह्यो चतुरानन * जगमहँ पूज्य नहीं तेहि कारन
सियते झूठ नदी गो कहेऊ * भक्ष्य अभक्ष्य गुप्त है बहेऊ
हरि श्रुति निन्दा झूठ बखानी * भये बोध सोइ पातक जानी
उमा शम्भु ते झूठ उचारा * त्यहि कारण दुख लह्यो अपारा
नर वा कुञ्जर धर्म बखाना * तेहि अब भयो अगुष्ठ पषाना
तेहिते सत्य तजब हम नाहीं * अस कहि चलो केशरी पाहीं
नमस्कार सब गौवन कीन्हा * सत्यहेतु जीवन तनु दीन्हा
चलत चलत बहुला तह आई * बैठो रहे जहा मृगराई
बालत भई सिंह मोहिं खावो * हो आं निज क्षुधा मिटावो
देखि व्याघ्र कह बैठो माई * अब न खाव तोहिं चहु मरिजाई
सतिवादी कहुँ दुख को पावै * तिमिर कबहु दिनमणिहिमिटावै
कान्हो सत्य जौन कछु कहेऊ * तब आवनमोहिं अचरजभयऊ

दो० सत्यमाहिं सब लोक हैं, सत्यमाहि सब धर्म।
ज्ञान मुक्ति है सत्य मे, सत्यमाहिं शुभ कर्म॥
धन्य धाम तब धन्य पुर, धन्य चरत तृण जौन।
धन्य धरणि जहँ पगधरौ, धनि किसान है तौन॥

धनि तव क्षीर धन्य जिन पीन्हा * धन्य तुम्हार दरश जेहि कीन्हा
मै निज भागि धन्यकरि चीन्हों * जबते दरश आपको कीन्हों
अब बहुला सो दीजे जानू * जेहिते होय मोर कल्यानू
बहुला कहा सिंह सुनि लेहू * हिंसाकरन छाड़ि अब देहू
हरि सुमिरण में तन मन दीजे * यह उपदेश माने मम लीजे
को तुम हो सो कहहु बखानी * सुनि कण्ठीरव बोला बानी
हे स्वामिनि मैं हौं गन्धर्वा * विद्या रूप केर उर गर्वा
देवशाप छीपी तनु पायो * यहि तनुते बहुपाप कमायो

तुम्हरे दरश भये अघ नाशा * छूटो शाप हृदय परकाशा
मैं प्रसन्न हो तुम घर जाई * मम अपराध क्षम्यो ये माई
अस कहि हरिसुमिरनमें लाग्यो * भोजन नीर देहसुख त्याग्यो
कछुदिन में तनु छूटत भयऊ * चढि विमान सुरपुरकहँ गयऊ
बहुला जब आई निज धामा * पुत्र सखिन पायो विश्रामा
सत्य वृत्ति सबहिन उर धारी * बच्छसहित भइ धेनु सुखारी

हरिगीतिका छन्द ॥

सुखसाथ रहि कछुकाल चलत विमान लेन जो आयहू ।
नृपसहित पुरनरनारि द्रुम पशु आदि सबन चढायहू ॥
लै उड़े गण लखि देव बरषे सुमन घन जय जय कियो ।
गयो लांघि सातौं स्वर्गपर गोलोक में वासा लियो ॥

दो० बहुला हरिसम्वाद नित, कहै सुनै जो कोइ ।
रहै सदा आनन्द में, मृत्यु अकाल न होइ ॥

छप्पय । धाममाहिं जो पढै, सुक्ख बालक का होई ।
गऊखरिक जो पढ़ै, वृद्धि गौवन की सोई ॥
दुखी होइ सो पढै नहीं तौ श्रवणान करई ।
होइ सकल दुख नाश, और तन रोगौ हरई ॥
बहुतमहातम भारतमें, कह्यो कछुक मैं गायकै ।
मुक्तिचहै रघुनाथ भजु, रामनाम मन लायकै ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतसुदर्शनबहुलाकथावर्णनोनाम
त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
वर्णौं जैमिनि की कथा, कछु अस कन्द बखानि ॥

सो० मोरध्वज नृप एक, धर्मधुरन्धर नीतिरत ।
रामभक्ति की टेक, बधू पिङ्गला पतिव्रता ॥
तासु राज्य कोइ दुखी न रहई * जन अधर्मपर भूप न लहई
बाल वृद्ध यौवन नर नारी * बसैं जान तेहि नगर मँझारी
सब मिलि करैं भक्ति हरिकेरी * नृप रानी उर प्रीति घनेरी
माला तिलकसहित जो आवै * सनेह नृप आगे उठि धावै
भवन लायके चरण पखारै * चरणोदक सीस मारग धारै
दो० गङ्ग नहाय सहस बर, द्वारावति सत्य जान ।
सन्तचरणजल जो पियैं, तुलै न तेहिसम आन ॥
सो० सिंहासन बैठाय, षोडश विधि पूजन करै ।
नित नवनेह बढाय, सेवैं नृप सुत नारि युत ॥
ब्यहिदिन सन्त न कोई आवै * तेहिदिन आप न भोजन पावै
चोर सात मिलि कीन्ह बिचारा * हरिजन के आगान भुवारा
साधुन केर बेष धरि लेहू * सब चलिये मोरध्वज गेहू
नृप ते प्रथम सेव कराई * पान पाय मुसब धन भाई
अस कहि सुन्दर बेष बनायो * मानो हरि राजा गृह आयो
देखि दण्डवत कीन महीपा * मानो लख्यो स्वातिजलसीपा
पदपखारि आसन बैठायो * धूप दीप आरती उतारयो
अन्त पुर में आसन दीन्ह्यो * सुत बनिता सब सेवा कीन्ह्यो
एक दिवस राजा मन आई * वन की शोभा देखिय जाई
छप्पय । अस बिचारि कसवाइ, अश्वचढि चले भूप जब ।
चमू चार असवार, अनुग पाछे लागे सब ॥
सघनबिपिन में गये, फिरैं जहँ मृग करिहरिसँग ।
बोलत बिबिध बिहंग, फूल फूले नाना रँग ॥

बिहरतबीतोदिवस निशि, पायकीन्ह बिश्राम तहँ ।
शुभतड़ाग पुरइनिकमल, करत भंवर गुञ्जार जहँ ॥
इहां देखि घर सून, चोर मूसन मन लायो ।
हीरा हेम निकारि, भवन बाहेर धरिआयो ॥
ढोवत बीती रैनि, लोभ वश कछू न जान्यो ।
रानिहिं डार्यो मारि, बाधि बसु बेगि परान्यो ॥
इतते सातौ जात हरि, उतते आवत राज ।
देखि हिये सशय कर्यो, पर्यो चरण तजि बाज ॥
बोल्यो दोउ करजोरि, क्षमौ प्रभु गुनह हमारी ।
रानी नारि सुभाव, अवज्ञा किहिसि तुम्हारी ॥
चलिये बहुरि निकेत, चेत हमरे तव होई ।
सुनि ठग गये सखाय. राय ते बोले सोई ॥
साधु नही हम चोर हैं, धन मूसा सो लेहु ।
है दयाल हम सबन पर, जीवदान अब देहु ॥
कह्यो भूप धन धाम, वाम सुत देह हमारी ।
हवै सकल तव नाथ, बृथा कत होत दुखारी ॥
ऐस वचन जनि कहौ, लोग सुनि करिहैं शोरा ।
कहि हैं परगट गुप्त, सबै हरिजन हैं चोरा ॥
गहिकर लाये भवनको, सिंहासन बैठाय ।
रानिहिमृतक निहारिकै, शोच न मन मे आय ॥
कुं० लाग्यो पुनि सेवा करन, नृप सन्तन की आय ।
कनक थार सातहुँन के, धोये चरण बनाय ॥
धोये चरण बनाय, मृतक रानी तहँ लायो ।
रुण्डहि मुण्ड मिलाय, रामकर ध्यान लगायो ॥

सींच्यो चरणामृतहि, प्राण घट माहीं जाग्यो ।
उठी तुरत हरपाय, भूपलखि भाषन लाग्यो ॥
आजु तुम्हें निद्रा बहुत, कहा कि घेरी आय ।
सन्त चले जब रूठिकै, राख्यो क्यों न मनाय ॥
हाथ जोरि रानी कह्यो, सुनो प्राणपति बात ।
सोइगई मैं आजु अति, इन्हें न जान्यों जात ॥
कह नृप पद अवते गहो, गहे रानि सुखभेरि ।
मन में भयो न मैल कछु, लागे सेवन फेरि ॥
प्रतिमा तीरथ मन्त्र गुरु, वेष जो वैष्णव कोइ ।
जाकी जैसी भावना, ताहि तैस फल होइ ॥

तब हरि पुनिपुनि आयसु मागा * बोले नृप सहित अनुरागा
जो मन चहौ सो हमते लीजै * चोरी कर्म छाडि प्रभु दीजै
जम भेर कह सपति दाता * हरष समेत बिदा तब कीहो
ऐसी भक्ति देखि भगवाना * मनबचक्रमते निजजन जाना
मोरध्वज पर दाया कीन्हो * चक्र सुदर्शन रक्षक दीन्हो
इति भाँति दुख दारिद आवै * नृप के नगर न पैठन पावै
एक दिवस यमदूत जो आये * चक्र सुदर्शन लखि रपटाये
भागत यम पहँ पहुचे जाई * दण्डफास सब दिहिनि चलाई
लखि हरि कहा हवै का भाई * सुनि गण बोले बचन रिसाई
दण्ड हमार तिहु पुर माहीं * ऊच नीच कोउ छाडत नाहीं
मोरध्वज पुर जान न पायन * खेदेहु चक्र इहा भगिआयन
यह अनुचित देखी महराजा * हम ते यह सपरी नहिं काजा
सुनि रविसुत मन कोप बढायो * दूतन सहित विष्णुपहँ आयो
शीश नाय कह अरज हमारी * सुनहु नाथ त्रिभुवन सुखकारी

तब आज्ञा ते जगत मँझाग * सब पर रहत है दण्ड हमारा
मोरा तुम पुर तुम हमारे * गे नहिं रोयो चक्र तुम्हारे
दो० नृतनकर अभिमान भा, दीन्हिनि फाँग चलाय ।
सो यह कारण कौन है, नाथ कहौ समुझाय ॥
हँसियोले हरिगुनहुयम, नृपमन भक्त न कोय ।
तेहिने दीन्हों चक्र निज, रखवारी कहे सोय ॥
केहि विधि जायँ नृत तब, मेरे जन के पास ।
सुनत विप्रपति जोरिकर, कीन्हों वचन प्रकास ॥
छप्पय । भूपे करे केहिभाति, यज्ञ मे कहिये मोहीं ।
कह प्रभु कहे न बनी, चलो दिखरावों तोहीं ॥
बसहि रिंहकरि आपु, साधुकर रूप बनायो ।
आये नृप दरबार, देखि उठि पद शिरनायो ॥
सिंहासन पधराय कै, षोडश विधि पूजा करी ।
भोजनको पूछत भयो, तब नृप ते बाले हरी ॥
सिंह एक मम भाध, प्रथम भोजन तेहि दीजे ।
कह्यो भूप का चही, तौनि तनवीरहि कीजे ॥
मृग को मांस जु देहु, आन मांउज नहिं खाई ।
किनो भक्तिप्रण तजहु, किता शिरुलेहु बोलाई ॥
भक्ति तुम्हारी नातजा, कोटि विघ्न किन होय ।
सुतवनिताधनधामतन, लग जाइ नहिं कोय ॥
इमि सहित यक दास बोलाई * कह्यो कि आनहु सुनहि लेवाई
आज्ञा मानि कुंवर दिग गयऊ * खेलत बोलि लयावत भयऊ
पुनहि लोरि नृप वचन प्रकासा * हमरे इक आगे हरिदासा
तिनके संग इक नाहर आहई * तुम्हरो मांस खाय सो कहई

सो कस आज्ञा अहै तुम्हारी * मेटहु सशय आजु हमारी
सुनि ताम्रध्वज कह शिरनाई * धन्य सो तन परस्वारथ आई
धन्यधाम जह अतिथि कि सेवा * धन्य शिष्य जानै गुरु देवा
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरई * धन्य पुत्र पितु आज्ञा करई
धन्य ग्राम जो सुरसरि तीरा * धन्य तपी तामस बिन धीरा
धन्य सो नगर जहा रजधानी * राजा धन्य धर्ममतिमानी
धन्य दास जो आयसु मानै * धनि स्वामी सेवा पहिचानै
धन्य ज्ञान जो इन्द्री जीतै * धन्य सो प्रीति न याचै मीतै
धन्य सभा जहँ पण्डित होई * पण्डित धन्य क्रियायुत सोई
धनि धन पाइ जो त्यागन करई * धन्य दरिद्री पाप न चरई
धन्य सुखी जो विषय निवारै * धन्य साधु जो मानस मारै
धन्य सो क्षमा समरमह आनै * धनि दाता नहिं दान बखानै
धन्य सो द्रव्य दानमहँ लागै * धनि प्रभुता मद मान न जागै
धन्य कर्म जो भगवत हेता * धन्य ज्ञान वैराग्य समेता
धन्य विरति जो राते भगवानै * धन्य सो कवि हरिचरित बखानै
धनि नर परअवगुणहिंछिपावै * धनि विद्या विकार मिटिजावै

दो० दयावान सो देश धनि, कहत वेद बुध लोइ।
रामभक्त जहँ ऊपजै, धन्य जाति कुल सोइ॥
धन्य घरी रघुनाथ तब, जब होवै सतसङ्ग।
जन्म तासुको सफलजो, रँगै राम के रङ्ग॥

अहो पिता मोहिं भा सुखभारी * जो हरि मागी देह हमारी
अब यह परस्वारथ मे आयो * धनि जननी ऐसो तन जायो
रोग दोषबश छूटै काया * स्वारथ शास्त्र रजाइ कटाया
विष्ठा कृमी खाक होइ जाई * कहाँ कौन स्वारथ फिरि आई

माता भार मुई दशमासा * सही अनेक मगने तेहि त्रासा
सोचन लग्यो न परहितमाहीं * मानव जन्म धिग्ग है ताही
दो० भजन परारथ कर्म शुभ, सर्व पाय नर देह ।
लोचन ताको सफल है, अरु सबक सुख गेह ॥
अस कहि पितै नवायशिर, चलिभे कुँवर प्रवीन ।
आये केहरि सन्त जहँ, कहे वचन है दीन ॥
अब भोजन हमको करिलीजे * अहो सिंह तुम देर न कीजे
बार बार ऐसन जब कीजे * सुनि यम निजनन प्रकटत भयऊ
रूप चतुर्भुज हरि कर लाहा * प्रकट कृपादि कहे दर्शन दीन्हा
धन्य धन्य तुम धन्य अभाग * आप सराहत सिर्जनहारा
कहे रविनन्दन अब यहाँ रहे * मन तुम्हार तुमने अधिकारी
जाम श्रीपति तब कीन बड़ाई * सो निजनयनन देख्यो आई
बोले प्रभु वर मागु नरेशा * प्रणतपाल मेरो यह पेशा
मोर रूप कह सब सुखदायिनि * आपनि भक्ति देहु अनपायिनि
एवमस्तु कहि कृपानिधाना * बोले पुनि सुनु भूप सुजाना
कर्म भक्ति जबलगि यह देही * अन्तसमय मम धाम सनेही
अस कहि हरि यम गुप्त सिधाये * अपने अपने मन्दिर आये
धर्म गुणन से कथा बखानी * भई प्रीति मन मिटी गलानी
जो जन चरित सुनै नित एहा * होइ सन्त पद पावन नेहा

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमोरध्वजकथावर्णनोनाम
एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

दो० सुमिरि राम सिवसन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बर्णौं हरि अस्मृतिमत, कछुसोइकथावखानि ॥

रानिहि मार्‍योहरिणलखि, तदपि न भयो अभाव ।
पुत्रहि दीन्हो द्वीपि जन, हित मोरध्वज राव ॥

याहिविधि भक्ति करै नरनाहा * दिनप्रति बाढ़ अधिक उछाहा
भूप धर्म जो वेदन गाये * सो सकला द्विजिपाने लगावे
सुर भूसुर सुरभिन आने मान * वैष्णव फल विष्णुहि सम जान
श्रीपति चरण लीन मन जासू * लुब्धम रूप जिमि रंग न पासू
बहुतकाल यहि विधि चलिगयऊ * और सुनो जो कलनी लयऊ
कीन धर्मसुत यज्ञक राजा * पठ वाणि छाड़्यो वर बाजा

दो० कृष्ण विजय बभ्रूवहन, नीलध्वज वृषकेतु ।
हसध्वज औरौ सुभट, मेग रक्षाके हेतु ॥
चलत बाजि आयो सोई, मारध्वज के ग्राम ।
ताम्रध्वज गहि बाधि पट, बाध्यो लै निजधाम ॥

चढ़ि रथ आगे आप सिधायो * पाछे ते अर्जुन सन आयो
होन लागे अति मार [illegible]
सात दिवस भरि [illegible] * [illegible] जीति न जाहि
अर्जुन आदि वीर जे रहेऊ * दिये विदार विकल सब भयऊ
लखि अचंत निज मन्दिर आयो * बड़पगार भा [illegible] सुनायो
भक्ति करत जाकी निन रहिय * तिनते युद्ध करन को चहिये
मोहि दुखहरन सुरन सुखकारी * धर्यो आय वपु कृष्ण मुरारी
सुनि ताम्रध्वज कही हु बाता * अनजाने अनीति मैं ताता
यहा कृष्ण पारथ ते कयऊ * सात दिवस इहने हू गयऊ
मोरध्वज है भक्त हमारा * तेहिते लरे न पैहौ पारा
सुनि कपिध्वजके मा अभिमाना * हमते बड़ा भक्त को आना
जिनके वश निन रहत गोपालय * धनुष केरि विद्या उरआलय

यह अभिमान कृष्ण प्रभु जाना * लगे विचारन हमि भगवाना
अ० छ० जाय द्वैत ते ज्ञान जाय कुल द्विजहि सताये ।
जाय नीचसंग सुमति जाय सुध भोजन खाये ॥
जाय क्रोध ते धर्म जाय आदर नित मांगे ।
जाय नीति बिन राज्य जाय शूरापन भागे ॥
जाय ज्ञान ते मोह जाय अघ हरिगुण गाये ।
जाय तिमिर रवि उदय जाय बिश्वालस आये ॥
जाय यती वशकाम जाय यश लोभ बढाये ।
जाय गृही बिन कार जाय सुख सबहिं सताये ॥
जाय कुमति ते द्रव्य जाय संतोष ते ममता ।
जाय कपट ते प्रीति जाय रिस कीन्हे समता ॥
जाय सखाते शोच जाय पातकते शोभा ।
जाय सुपथ ते रोग जाय वैराग्य ते लोभा ॥
जाय जन्म अरु मरण रामके सुमिरण कीन्हे ।
जाय गुरू ते भर्म कर्म निज रूपहि चीन्हे ॥
शान्ति जाय परवर्तिते दोष जाय दिहे दान ।
कहे रघुनाथ यो जातहै भक्ति किहे अभिमान ॥
ताते अबहीं देहु मिटाई * नातरु बढत बढत बढिजाई
कृष्ण कहा पारथ सुनु मोहीं * आवो भाक्ति देखावों तोहीं
आपु वृद्ध द्विजनपु धरि लीन्हा * बालकरूप विजय कहँ कीन्हा
आगे चलि मोरध्वज द्वारा * हरि पूजन मर्द्ध रहे मुवारा
द्वारपाल जा खबरि जनाई * बोले नृप बैठारहु जाई
कहत दोउ जन चले रिसाई * सुनि नृप परे चरणमहँ धाई
करि सन्मान सुआसन दीन्हा * हाथ जोरि हमि पूछे लीन्हा

कौन हेतु आयो महराजा * आयसु होय करौं सोइ काजा
हम सरिखेनते बनत न आना * तुम्हरी सेवा ते कल्याना
दो० विप्र कही जो देनकी, करो प्रतिज्ञा राइ ।
तो मैं मागो जाहिते, बचन बृथा नहि जाइ ॥
कह नृप कीन्ह प्रतिज्ञा मागो * तबतो विप्र कहन अस लागो
जातरहेन बन हरि यक मिलऊ * गहिमि आय बालक मोहिंदिलेऊ
तब मैं कह्यो छाड़ि यहि दीजे * याके बदले मोको लीजे
सिंह कहा भोरध्वज राऊ * तासु अङ्ग दाहिन लै आऊ
तो मैं बालक देहु बचाई * नाहिं तो याहि डारिहौं खाई
हौं तब अङ्ग देन कह राऊ * छाड़ौंसि तब बहु सौंह कराई
सोई लेन आयो तब द्वारा * अपर हेतु नहि कछू हमारा
सुनि रानी बोली हरषाई * अरधङ्गी निय वेदन गाई
ताते ग्वहि केहरि को दीजे * पुत्र कह्यो नहि मोको लीजे
बहुरि कृष्ण बोले सुनिलेहू * केहरि वचन कहा यक येहू
दयो पुत्र हाथ गहि आरे * चीरे हर्ष समेत भुवारे
सुनि आरा नृप लीन मगाई * रानी पुत्र गह्यो तब आई
शिर धरि चीरन लागे कसे * बढ़ई उभय तासु कहँ जैसे
चीरत आयो नाना तीरा * बाये दृग भरि आयो नीरा
दो० निन्दनिन्दिकहि नीर लखि, चले कृष्ण अनखाय ।
दोउकर टेकि करोत नृप, पूछेउ ठाढ़ कराय ॥
केहि कारण प्रभु चल्यो रिसाई * तोनि बात ग्वहि कहो बुझाई
देत क्षोभ तेरे है आवा * तेहिते यक अम्बक जल छावा
कह नृप मोरे क्षोभ न राई * बाम अङ्ग रोवत यहि लाई
मैं न लख्यो परमारथ माहीं * मोसम भाग्यहीन कोउ नाहीं

तुम्हरे दाहिने मों नहिं आवा * सुनत कृपाल महासुख पावा
फेरयो शीश कमल कर जबहीं * भये नवीन देह नृप तबहीं
सजल नयन प्रभुहृदय लगायो * जय कहि देव सुमन बरषायो
कह्यो कि नृप मांगहु वरदाना * जो इच्छा मन होइ सुजाना
कोटि मांगि जो देहुँ भुवाग * तुमते नवहुँ न हौं उऋारा
तुमरी भक्ति कीन्ह तुम मोरी * रहि न सुधि होत दिशि तोरी
दो० भूप कहा जो हुपदहु, करै निहारे साथ।
ताको तुम गिरि मेरुसम, मानिलेत हौं नाथ॥
एक बात मागत हौं स्वामी * मो मोहिं दीजै अन्तरयामी
आगे युग लागी कलिकाला * कुटिल प्रभावनरूप कराला
तामें करनी भरुन केरी * लेइ न नाथ अरज यह मेरी
कलिमें भक्त नाम की आसा * करनी लिहे न होइ प्रकासा
सुनत वचन कह विहँसि मुरारी * जो मांग्यो सो दीन्ह्यो हारी
निज के हेतुहि अब कछु कहिये * प्रभुपदप्रीति यही मोहिं चहिये
कह प्रभु धन्य धन्य तुम राजा * धन्य पुत्र निय सहित समाजा
अस कहि हर्षित बिदा जो भयऊ * देखि दर्प पारथ कर गयऊ

गी० छं०॥

जब देखि नृपकी भक्तिको अभिमान पारथ को गयो।
गिरि चरण श्रीगोपालके ह्वै दीन अस बोलत भयो॥
नहिं मन्द मोसम कोउ तुमते नाथ हौं सेवा लई।
धिग तेहुँ पर अहँकार राखत भक्त मोसम नाहई॥
लोभवश गुरु मित्र भ्राता पुत्र बहु जीवनि हते।
समुझि कुल करतूति अपने दोष जायँ नहिं गने॥
परपीता द्विज कानीन हमरे पिता गोलक गारज।

हम कुण्ड कटु अग्रज जुवारी हद्दहारी नारिजू ॥
अतिकष्टकरि भो ब्याहु सो त्रिय पञ्चभरतारी भई ।
गुण हीन हरिछल पीन पावर निधन निर्बल निर्दई ॥
ऐसेहु पर नहिं जानियत धौं काहिते रीझेउ हरी ।
बनवान विप ऋष रिपुनते सब ठौर तुम रक्षा करी ॥
छ० दुरबल के बल भूप भूपके बल को बल है ।
तस्कर के बल राति धनिहि धन घातै छल है ॥
मूरख के बल मौन मानिनी के बल रोदन ।
क्रोध के बल खलबचन मयनके बामविनोदन ॥
द्विजके श्रुति कबिबलबरण खगके पर शरकरलहौ ।
तेहिप्रकार यदुनाथ तुम नाथ हमारे बल अहौ ॥
दो० कह रघुनाथ सनेहिनर, यहिविधि बिनती कीन्ह ।
मोरध्वजकी यह कथा, यथाबुद्धि कहि दीन्ह ॥
मोरध्वजकी यह कथा, पढ़ै सुनै नित नेम ।
होय भाव भक्तन बिषे, बढ़ै राम पद प्रेम ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमनआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमोरध्वजआख्यानवर्णनोनाम
द्वाविंशोऽध्याय ॥ २२ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वर्णौं महापुराण को, अब इतिहास बखानि ॥
सुनहु मुनिहु मनलाइकै, सुन्दर कथा अनूप ।
कही जौन शुकदेवजी, सुनी परीक्षित भूप ॥
सोई कथा मैं कहौं बुझाई * रामचरण जेहि रति अधिकाई
सतयुग भे मनु जगयश जासू * नृप उत्तानपाद सुत तासू

सुरुचि सुनीति रहैं दोउ रानी * विधुवदनी गुणरूप सयानी
उत्तम नाम सुरुचि सुत जायो * ध्रुव सुनीतिके वेदन गायो
सुरुचि महीप प्रिय अधिकाई * सो सुनीतिके महलन जाई
अब सेर भरि देइ अनुराग * ताहीते दोउ करैं गुजारा
पांच वर्षके ध्रुव जब भयऊ * खेलतनृप जहं तहं चलि गयऊ
ठाढ़े भये आगे हरुआई * लखि नृपरुख लिये गोदउठाई
देखि सुरुचि अति उठी रिसाई * दिहिसि उतारि गोदते धाई

दो० बैठन को नृपगोद जो, लिखा होत तव कर्म ।
तौ सुनीति के जठर में, काहेक लेत्यो जन्म ॥
पूत अभागिनि केर है, चहो गोद नृपकेर ।
अब मिलतहै सेरभरि, सोउ न मिलिहै फेर ॥

चौ० तपबिन होइ कि राज साजबिन होइ कि कारज ।
गुण कि होइ बिनटहल बिनागुण होइ कि चारज ॥
धनबिन मित्र कि होइ मित्रबिन होइ कि सदसुख ।
सिद्धि कि बिनबिश्वास दासबिन मिटै कि भवदुख ॥
अघबिनहोत कि अयश शुभ यशकि होइ बिनदानके ।
होत भुक्ति युत मुक्ति कहुँ बिना भजे भगवान् के ॥

अस कहि याह पकरि ध्रुवकेरी * मन्दिर बाहर दीन खदेरी
रोवत ध्रुव माता ढिग आयो * देखत जननी गोद उठायो
क्यहिं माको सो कहिये मोसे * का अपराध भयो सुत तोसे
कह ध्रुव पिता गोद मोहिं लीन्हा * रानी छीनिडारि मोहिं दीन्हा
दूरि दूरि कहि घरते काढ्यो * सुनिदुर्वचन मोहिं दुख बाढ्यो
ऐसी विधि मोको दुख दियऊ * राजा कछु मन्यो नहिं कियऊ
तातें मैं पूछत हौं ताको * काकी शरण अहै सुख मोको

कह्यो मातु सुखनिधि भगवानू * सोइ पितुमातु बन्धुमेरा जानू
जेहि प्रभु राखि गरभ में लीन्ह्यो * पानीके बुद प्रकट वपु कीन्ह्यो
गरभ मोचि पुनि बाहर लायो * मात पयोधर क्षीर पियायो
याहिविधि पुष्ट किहे सब अङ्गा * जनमत मरत तजै नहिं सङ्गा
जिय अपरामी ताहि न जानै * सकट परे तबै कछु मानै
ताते सहै बिपति बहु भाती * चौरासी लख आवत जाती
असजिय जानि भजहु भगवान * सुमिरत जाहि शम्भु धरि ध्यान
सो प्रभु विश्वरूप श्रुति कहई * सुनो तात जेहि संशय दहई

च० छ० ॥

पद पताल शिर ब्रह्मधाम । अपर लोक है अङ्गनाम ॥
नयन दिवाकर दिशा कान । अश्विनीकुमारबाजासुघ्रान॥
घनकेशअम्बुपतिजीहजानु।निशिदिननिमेषआननकृशानु॥
दिगपालबाहुहैपवनश्वास।रोमावलिबिटपलघुदीर्घबास ॥
नारी सरिता अरु अजाहासु । अ रलोभ यमदशन तासु॥
अस्थिअद्रि रसशब्द भोग । जानै बिरला कोउ चतुर लोग॥
बिष्णु प्रजापति वीर्य तोय ।भृकुटी विलासमसोइकालहोय ॥
उदर सिन्धु माचो प्रसङ्ग । ईश थूल इतना जु अङ्ग ॥

सो० अहङ्कार त्रिपुरारि, चतुरानन सोइ बुद्धिवर ।
मन द्विजराज विचारि, चेतनरूप अनूप हरि ॥

दो० सो प्रभु सचराचरबिधे, पूरण व्योमसमान ।
भजनबिना नाहिं लखिपरत, ज्यों बिनमथेकृशान ॥
असबिचारि सब शोचतजि, रामचरण चितदेहु ।
सुर दुर्लभ तनु पाइकै, ताहि सुफल करिलेहु ॥

ऐसे बचन सुने धुर जबहीं * हाथ जोरि बोले इमि तबहीं

तुम कत दुखी सुखी वह रानी * तौन भेद मोहिं कहौ बखानी
कह रानी प्रथमै तन माहीं * सपन्यो दान दीन कछु नाहीं
रायु संग हरिगजन न भावा * खर कूकर सम सेति गँवावा
नेसकेलुकर्म पोचभल कीन्हा * सो जनमतविधिशिरलिखिदीन्हा
नहिं जानी केहि सुकृत तेरे * भये प्राप्ति गुण गोविंद केरे
तेहिते कोइ दुख निकट न आवै * परारब्ध तेहि तनु भुगतावै
दो० जो कछु लिखा लिलाटमे, सो होवे परिणाम।
चहै पैर घर रङ्कके, चहै महीपति धाम॥
यद्यपि हरिके भजनकरि, होत सुरी ते काट।
नरवर्षन ते है गई, विधिवरषै बढिवांट॥
तातें सुत तुम ऐसी करहू * रामचरण पङ्कज चित धरहू
भुक्ति मुक्ति हरिदर्शन पावो * जो तजि काम नाम लवलावो
यहि विधि मातुदीन जब जाना * सुनि ध्रुवके अतिशय मनमाना
पूरवका कछु सुकृत जागा * ध्रुव के भयो विमल वैरागा
उठि जननी ते आज्ञा मांगी * करिहौं भजन विपिन गृहत्यागी
बोली मातु अबै तू बारो * शत सम्वत जनि बन पगु धारो
क्षुधा तृषा जब आनि सताई * केहिते भोजन मंगिहौ जाई
शीत उष्ण बरषा दुख पैहौ * का बन औढिहौ काह डसैहौ
बाघ सिंह बक शूकर आई * औरौ जीव बहुत दुखदाई
बालक देखि देहैं दुख भारा * का उपाय तब चलौ तुम्हारा
दो० सुनि ध्रुवकह मातातुरत, गयो ज्ञान का तोर।
अबहीं ते हमते कहै, हरि रक्षक सब ठौर॥
गरभ माहिं रक्षा करी, जहां हितू नहिं कोइ।
अबका परखि न मानि है, विपिन गये मह सोइ॥

अस कहि ध्रुव चलिभे हरषाई * मन्त्रिन भन्यो नृप ते धाई
ध्रुव बालक बन जात तुम्हारा * का निदेश तव है यहिबारा
कह नृप सोन सेर युग देहु * अबहीं ध्रुव फेरि तुम लेहु
मन्त्री सुनि आये ध्रुव पासा * अस्थिरकरि अस बचन प्रकासा
सेरभरे कर दुइ सेर खाहू * लउटि चलो घर बनहिं न जाहू
जेहिं प्रभु दीन सेरमे दूना * तेहिके भवन अन्नरका सूना
हरिमारग ते फिरब न भाई * करै जो कोई कोटि उपाई
मन्त्रिन आइ कहा नृपपाहीं * चले जात ध्रुव आवत नाहीं
राजा कह्यो ग्राम एक दीजै * मानै तबै फेरि ध्रुव लीजै
सचिवन ध्रुवको ग्राम सुनायो * तब ध्रुव अधिक सनेह बढ़ायो
मनमें अभय मनोरथ जागा * तुरत मिलन ग्राम इक लागा
नाम जपते धौं का होई * मोरे मन प्रतीति असि सोई
ताते हम अब लौटब नाहीं * मन्त्रिन जाइ कही नृप पाहीं
तब राजा आपुइ चलि आयो * चौथाई कहि अर्ध सुनायो
बहुरि कह्यो सब राजहि लीजै * नानाभांति भोग चलि कीजै
सुनि पितुबचनकहतध्रुवभयऊ * प्रथमैं सेर अन्न नहिं दयऊ
जेहि न कोइ ताकर प्रभु सोई * प्रभु जाके ताके सब कोई
जब मैं रामचरण चित दीन्हा * तब तुम नाम राज्यकर लीन्हा
हरिसम्मुखते जो फिरि आवो * सती स्वामकरि ताहि लजावो
दो० रानी जबहीं गोदते, दीन्हों मोहि उतारि।
तबहीं क्यों न सँभारेऊ, मोह करत अब हारि॥
जबलग हरिके दर्श न पैहौं * तबलग जगमें मुख न देखैहौं
मन्त्री नृप सब कहि कहि हारे * हठ करिकै ध्रुव बनै सिधारे
मिले ध्रुवै नारद मग माहीं * पूछेउ कित आयो कित जाहीं

जननिजनकको कित तवग्रामा * हे सुत कहाँ कहा तव नामा
बोले ध्रुव पितु मातु मुरारी * आना मित्र मोहि सुखकारी
सोइ कुल जाति कुटुंबपरिवारा * सब जीवन को सिरजनहारा
जबलग ऐसे पिते न जानै * तबनक झूठ साच करि मानै
जगमहँ जेहिविधि बदसबकोऊ * तुमने कहि समुझाऊ सोऊ
नृप उत्तानपाद पितु अहई * माता उभय नाम ध्रुव कहई
पिता गोद लखि दूसरि माता * दिहिसि उतारिकहिसि कटुबाता
दो० रोवत जननी पहँ गयो, तेहिमोहि दीन्हों ज्ञान ।
हे सुत सुखसपन्यो नहीं, बिना भजे भगवान ॥

तब मैं बनको चल्यों रिसाई * सचिवन कहा भूप ते जाई
राजा तब बहुलोभ दिखायो * सब तजिहौं हरिशरण तकायो
तुम कोहौ निज नाम बखानो * मैं बालक नहि ऐसे जानौं
कह ऋषि नारद नाम हमारा * गो दोहन विचरो ससारा
सुनि ध्रुव गिरे चरण हरषाई * ऋषि उठाय लिय गोदलगाई
चलु ध्रुव तोहि फेरि लै जावौं * राजाने सन्मान करावौं
राज करो चलि ब्याह करीजै * बालक एक होइ सुनिलीजै
सुतहि राज दै बनहि सिधारो * सब राजन की साखि विचारो
कानन सिंह बाघ बहु रहई * भालु भेड़िया देखत गहई
निशिचरबिपुल फिरत दुखदाई * बड़े बड़े भय मानत भाई
तहँ बालक को कौन उबारा * ताते मानौ वचन हमारा
शीत उष्ण बरषा दुख पावै * क्षुधा तृषा जब अधिक सतावै
तब कोहिते दुख कहिहौ गोई * तहँ नहिं मातु पितानुज कोई
करणी कठिन न कीन्ही जावै * विपिनजाइ कत प्राण गमावै
दो० कह रघुनाथ अनेकविधि, मुनि भय रहे देखाय ।

ध्रुवके तनक न शङ्कभय, रामकृपा दृढताय ॥
कह ध्रुव हरिरटक सब टावा * घरवन फिरतचलत नेच गावा
जैसी कर्म भावनी होई * तैसी मृत्यु पाव सब कोई
आखिर यह तन यकदिनछीजै * तोहिते हरिसुमिरण करि लीजै
माता पिता नारि सुत नाती * को काको सब पथिक लखाती
इन सबहिनते सरत जो काना * तो तजि क्यों बन जाते राजा
राज पाके मद होइ आवै * करै अनीति नरकको जावै
राज नरक दोउ मग रहई * यहिते मोहि नहि भावत अहई
ताते मोहिं हरि भक्ति दृढावो * कृपा करो गुरुमन्त्र सुनावो
मैं बडभागी हौं ऋषिराया * यहि अवसर तव दर्शन पाया
दो० लागत लव ज्यों वृष्टिमें, बूडत बोहित साथ ।
मरतबन्धन्तरिमिलैतिमि, मोहिमिले तम नाथ ॥
बन्धुवैर परनारि सँग, न्यायम कीजै देर ।
भोजन दान सुकर्म में, नाहिं लगाई बेर ॥
ताते बेगि सुदीक्षा दीजै * पतितै प्रभु पावन करिलीजै
नारद ध्रुवके मन की जानो * भूत भविष्य वर्तमान पिछानो
तब ध्रुवको दीन्हो उपदेशा * मूलमन्त्र ज्यहि जपत महेशा
आसन ध्यान कह्यो जप नेमा * नवधा भक्ति बतायो प्रेमा
शम दम सत सन्तोष विचारू * ज्ञान विराग दया उर धारू
काम क्रोध मद मत्सर लोभा * छाडो मान मोह छल छोभा
सो० विद्या जाति महन्त, यौवनको मद रूपमद ।
तजै यतनकरि सन्त, पांच काटिये भक्तिके ॥
औरो विघन भजन में भाई * ऋद्धि सिद्धि सब घेरै आई
इन्द्र डरपि अप्सरा पठावैं * छलबलकरि सो आनि डिगावैं

जारए कृपा करै असुरारी * नहिंने सकल जाई जिन्हारी
मुनि शिक्षा दै जबहिं सिधाये * तब ध्रुव चलि मधुवनमें आये

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरमध्य उजागरश्रीरघुनाथधाम-
रामसनेहीकृतध्रुवम ध्रुवनआगमनोनाम
त्रयोविंशोऽध्याय ॥ २३ ॥

दो० सुमिरिरामसियमन्तगुरु, गणपतिगिरा सुखदानि ।
राजनीति संयुत कहौं, मोहु इतिहास बखानि ॥
पांच बरष के बयस ध्रुव, धर्म करी कछु नाहिं ।
मुनि मा ते उपदेश लहि, आये मधुवन माहिं ॥

एकपाय भे ठाढ मुजाना * निश्चलमन करि हरिको ध्याना
अन्नत्यागि फलमूल जो खायो * फलहु तजे तब पात चबायो
दसहु छांडि जल कीन अहारा * जल परिहरि भे पवन अधारा
यह चितवनि रहत चित लाई * कब देखौं हरिपद सुखदाई

दो० पवन तजत लागे जरन, सुर सब शक्र डरान ।
जैसे केहरि को निरखि, अस्थि लिये मुख श्वान ॥

मायां देवी तुरत बुलाई * कहिनि कि ध्रुवहि डिगावहु जाई
मेना और उर्वशी मज्जा * आइ जहं ध्रुवमहित अनङ्गा
ऋतु बसन्त बिरचेसि अमराई * नवपल्लव फल फूल सुहाई
गुञ्जत अलिगण कुञ्ज विहङ्गा * बाजन बाजन उठत तरङ्गा
नृतहिं अप्सरा भाव बतावैं * ऊंच स्वर कल किन्नर गावैं
बहुविधि किन्हेनि उपाय घनेरी * छूटी नहिं समाधि ध्रुव केरी
ऐसे ध्रुव डिगिहैं नहिं जाना * तब देवी माया छल ठाना
रूप बनाइ सुनीतिक लीन्हा * पुत्र पुत्र कहि रोदन कीन्हा
प्रथम आंधी आनि चलाइसि * परे उपल जलमल बरसाइसि

भीजे पट कट कट रद होवै * कापै कुणप पुत्र कहि रोवै
घरते नृप मोहिं दीन निकारी * जा ध्रुव ढिग जाकी महतारी
केहिकी अब मैं शरण जावों * बोलो लाल बहुत दुख पावों
शीश धुनै कर दैदै मारै * हायहाय वदि बचन उचारै
दो० शोर सुनत रघुनाथ तब, ध्रुव की जगी समाधि ।
लगे विचारन मनैमन, हरिचरणन चित साधि ॥
एकाएकी कानन माहीं * किमि रानी आवत मोहिं पाहीं
जो अज्ञान होत तो औती * प्रथमैं कन माहें बनै पठौती
जानि परत यह माया अहई * आई छलन मोहिं सुत कहई
नारद बचन यादि जब कीन्हा * पुनि ध्रुव रामचरण चित दीन्हा
रघुपति कृपा न भूलै सन्ता * जिमि नट लहै जमूड़ा अन्ता
बहुप्रकार सो सचि पचिहारी * तब लजाइ सुरलोक सिधारी
इन्द्र आदि सुर ह्वै ह्वै दीन्हा * मधुसूदन की बिनती कीन्हा
महाराज ध्रुव तेज अपारा * तोहिते सुरपुर छूट हमारा
तिष्ठन कौन ठौर प्रभु पाई * जरत विबुध जह जहं चलिजाई
ताते हमैं राखि प्रभु लीजै * ध्रुवको जाय दरश अब दीजै
व्याकुल लखिसुरकृपानिधाना * मन बच कर्म दास निज जाना
आये हैं ध्रुव निकट मुरारी * लगि समाधि तनसुरति बिसारी
कृश लखि शङ्खनाद हरिकीन्हा * खोलि नयन ध्रुव तबही दीन्हा
आगे खड़े दीख भगवाने * भक्तवछल शिव रूपनिधाने
दो० तडित विनिन्दक पीतपट, नीलजलद तनश्याम ।
इन्दुवदन वारिज नयन, करआयुध अभिराम ॥
शीश मुकुट वनमाल उर, छवि मनोजहरिभास ।
ध्रुवविलोकि लागे करन, अस्तुति सहित हुलास॥

श्र०छं० नमो राम सुखधाम नमो जगदीश दयालं ।
नमो अशेष अलेख नमो सुरमुनि प्रतिपालं ॥
नमो अनाथननाथ नमो सन्तन हितकारी ।
नमो शम्भु अज ईश नमो निरगुण गुणधारी ॥
नमो अपार अगार नमो निरकार निरामय ।
नमो अभेद अछेद नमो निरखेद निरामय ॥
नमो अजीत अतीत नमो परमात्मानन्दं ।
नमो निकर्म निभर्म नमो निज ब्रह्मसुछन्दं ॥
नमो अरूप अनूप नमो सुरभूप उजागर ।
नमो वीर रणधीर नमो तारण भवसागर ॥
नमो शरण दुखहरण करण ततकाल निहालं ।
नमो तुमेक अनेक नमो कालहु के कालं ॥
नमो कृष्ण तोहि कृष्ण तोहि राम बलरामं ।
तुहीं दशो अवतार तुहीं सारण सब कामं ॥
नमोनमो जयजयतिजय अधमउधारणअघहरण ।
रघुनाथदासयहिभांतिध्रुवअस्तुतिकीन्हींगहिचरण

दो० सजल नयन प्रभुअङ्कभरि, लीन्हों हृदय लगाय ।
कह्यो पुत्र वर मांगिये, जो तेरे मन भाय ॥

मधुभारछन्द । सुनि । गुनि ॥ ध्रुव । ध्रुव ॥

मांगौं कहा जगत पति देवा * सब नश्वर बिन तुम्हरी सेवा
अवि खांव लगि दवि जो होई * त्रिभुवन राज पाव जो कोई
जाप मरण करण सुख कैसो * सपने की सम्पति भ्रम जैसो
तोहित नाथ कृपा जो कीजै * प्रेमभक्ति आपनि मोहिं दीजै
योगयज्ञ जप ज्ञान विरागा * क्रिया काण्ड बहुभांति बिभागा

भक्ति बिना गुण सोहत कैसे * जीव बिना तन भूषण जैसे
सतसङ्गति भवनिधि जलयाना * देव दया करि सो भगवाना
सुनि ध्रुववचन सरल छलहीना * बोले प्रभु भञ्जन दुख दीना
साची बात कही तुम ऐसी * मेरे भक्त कहत हैं जैसी
सुर नर नागलोक विधिहूको * मोबिन भक्त गनत सब फीको
पर तव मातु बहुत दुख पायो * राज हेत तैं बन को आयो
जो निजपुर अबहीं लेजावों * जगमें जाहिर नाहिं करावों
तौ सब जनिहैं ध्रुव मरि गयऊ * की बन खाय जनावर लयऊ
जो जगमें अपकीरति होई * तो केहिकाम धाम मम सोई
ताते प्रथम राज चालि कीजै * छत्तिस सहस बरस लग लीजै
पुनि मम लोकहि आवो ताता * चढि विमान संगलीन्हे माता
तब ध्रुव कह्यो जोरि युग पाणी * राजते नरक होत श्रुति बाणी
कहभगवान अधर्म जो करई * सो नृप जाय नरकमहँ परई
धर्मवान क्यों नरकें जावैं * राजनीति रत दोष न आवैं
बोले ध्रुव मम नीति न जानी * कह हरि सुन मैं कहौं बखानी

अ० छ० कहै न मिथ्यावचन मूढ मन्त्री नहि राखै ।
दैकै लेइ न फेरि अजानै असन न चाखै ॥
मित्रै देइ न दुख अमित्रै ना पतिआवै ।
सबते राखै हेत बिप्र ना भूलि सतावै ॥
दण्ड न विरथा करै पुत्र सम परजै पालै ।
जूवा चोरी मास मद्य हिंसा ये टालै ॥
परत्रिय मातुसमान द्रव्यपर विषसम जानै ।
तजै कोह मदमोह द्रोह तनछोह न आनै ॥
करै सदा सत्सग भक्त भगवत सम लेखै ।

गङ्गाखे हरिचरण करण मुनि क्या विशेखे ॥
रिपुते ठानै समर गृह निजमन्त्र न खोले ।
मानै कवि बुध वद गिरा कटु कभी न बोले ॥
लोभी लम्पट द्विज न धर्म अधिकारी करही ।
दान देइ लखि पात्र पाठ पूजा अनुसरही ॥
जप तप सन्ध्या धरत करि तजै खजाना कोप ।
कहै रघनाथ ऐसे नृपै रती न लागै दोष ॥
दो० दश सींचै छाँट जबर, भुकेन माहिं दे टेक ।
फूले फल सोइ लेइ नृप, चिरजिव माली एक ॥
जो न चलै यहिरीति नृप, अवशि नरक सो जाय ।
अब सुनु परजनको धरम, जाते दोष नशाय ॥
कृषी वणिज व्यापार में, नफा मिलै जो जानि ।
दशांश दे विप्र कहँ, दोष न लागै हानि ॥
जो द्विज पावै और कहँ, चौथ्याई दे सोइ ।
लेइ देइ विश्वास करि, दोष नाश तब होइ ॥
सेवाकरि धन जो लहै, यथाशक्ति दे दान ।
तो नाहिं लागै दोष कछु, कुकरम करै न आन ॥
तातें तुम ध्रुव राजहि करहू * जो मैं कह्यो सो मारग धरहू
मम आज्ञा मानै जो कोई * ताहिकि कछु दुख सपनेहु होई
मोरी सीख करौ तुम राजू * भुक्ति मुक्ति दै सारो काजू
यों कहि राजकाज सब साजै * विविध प्रकार बाजने बाजै
सुनु अपार प्रकट प्रभु कीन्हों * तम्बू सेज बिछौना दीन्हों
गज रथ बाजि पालकी याना * चोपदार दरवानी नाना
बणिक बजाज सराफ सोनारा * हलवाई, जोहरी चमारा

जहलग भूपन केर समाजा * सो सब प्रकट कीन महराजा
भक्तवछल प्रभु किरपा कीन्हो * चक्रवर्ती ध्रुवको करि दीन्हो
शङ्खादिक बहुभाति बजाई * चली कटक अति बरणि न जाई
दो० हरिकी आज्ञा मानिकै, ध्रुव चढ़ि चले गयन्द ।
जनरायन हरिकृपाते मिटिगे सब दुख फन्द ॥
देश देशके नृप सुनि पाई * ले ले भेट मिले ते आई
करि सनमान सुना निज देही * दायजु अमित कहातक लेही
यहि भातिन निजपुर नियरायो * नारद तब नृपके ढिग आयो
कह्यो पुत्र ध्रुव आवत तेरो * हरि दीन्हो तेहि राज घनेरो
राजा कहा विपिन गा सोई * अब ध्रुव कैसे जीवत होई
जल बढ़िगयो कि अग्नि जरायो * सिंह सर्प धौं बाघन खायो
वृषभ महिष हय अजा हेराई * सकल काम तजि ढूढन जाई
मैं अपराधी बालक न्याया * चल्यो गहन उठि मग न लाग्यो
नारद कहा शोच जनि करहू * बेगिहि आवन धीरज धरहू
सुनि सुनीति उर भा सुख भारा * मुनिअसत्य क्यों कहत विचारी
तेहि समय ध्रुव दूत पठायो * नृप उत्तानपाद ढिग आयो
सब वृत्तान्त कहा तेहि गाई * सुनतै भूप उठा हरषाई
रानी सहित सचिव पुरवासी * ध्रुव ढिग चले विहाय उदासी
ध्रुवके ढिग नृप जब आयो * पितहिदेखि ध्रुव उठिशिरनायो
लीन महीपति गोद लगाई * गदगदि मनहु नाग फिरि पाई
अश्रुमाल भरि भेटी माता * प्रेमाशुन ते सींच्यो गाता
दो० पुरलोगन कहँ भेटिके, पूछि कुशल बहुभाति ।
आसन दीन्हो सबनकहँ, यथायोग्य सब जाति ॥
राजा ध्रुव के कान बढ़ाई * धन्यधन्य तुम धनि तुव माई

जो हरिभक्ति हृदयमहं धारी * सो पितानक पितर उधारी
सुन नर मुनि सब करत विचारा * पुत्र बिना मिथ्या संसारा
एक पुत्र जन्मे अस आई * शतपीढ़ी के नरक पठाई
एक सुवन सुरपुर पहुचावै * निरयचास यमफास छोड़ावै
मोसम भाग्यवन्त नहिं आना * पुत्र मिला हरिभक्त सुजाना
सुनिकर जोरि विनय ध्रुव कीन्हीं * तुम्हरी कृपा भक्ति प्रभु दीन्हीं
विषय भागते जीवनार करा * बासर गयो निशा तब आई
हरि विश्वकर्म आज्ञा दीन्हीं * कमलपुरी क्षणकमह कीन्हीं
मणिमय मन्दिर प्रभुरचिलिहऊ * तेहिमह ध्रुवकह बासा दिहऊ
लाग रहत सकल हरषाई * भावभक्ति दिनदिन अधिकाई
अरिन जीति विप्रन सुख दीन्हा * भुजबलसकल विश्वबशकीन्हा
पुत्र सँभाल प्रजन कहँ सबै * अवरमवर धन कबहु न लवै
कथा कीरतन ध्यान कराहीं * सुमिरण करत याम चलिजाहीं
ध्रुव राजा की आज्ञा मानैं * राजा ध्रुवहि बड़ाकरि जानैं
यकदिन करि विचार वनगयऊ * हरिसुमिरणकरि हरिपदलयऊ

दो० ज्यों पङ्कज जलमें रहत, अरु सनेह पयमाहि ।
त्यों ध्रुव करत राजसुख, लिप्त होइ कहु नाहिं ॥
यहिविधिछत्तिससहस्रबर्ष, कीन्हो भोग बिलास ।
कछुदिन बाकी रहे जब, तब मनभयो उदास ॥

कमल छन्द ॥

साधु विप्र । बोलि छिप्र ॥ पूछि काम । दीन दाम ॥

गी० छं० ॥

दियो राजकाज सुपुत्रकहँ पुनि आपु बनहिं सिधायहू ।
तेहि कीन्हि प्रथमे आश्रम तहँ हरिकेर ध्यान लगायहू ॥

कछुकाल बीते बिष्णुकेर विमान ढिग आयो भलो।
गण लिहिनि ध्रुव चढाइ तापर हर्षि वैकुण्ठ चलो॥
ध्रुव कह्यो तिनत मातु हमरी रहत तेहि लै लीजिये।
वह जात चढी विमान आगे देखि आनँद भीजिये॥
यहि भाति पहुँचे जाय ध्रुवका अचल हरिपदवी दई।
रघुनाथ सकल नक्षत्र अजहू करत परिकमा हई॥

दो० ऐसी हरिकी भक्तिहै, ताहि करत जे नाहि।
तिन्हैं जानिये पशूसम, सींग पूछ बिन आहि॥
ध्रुव चरित्र रघुनाथजन, कह सक्षेप बखानि।
पढ सुनै करिनेम तेहि, होय दैत्य दुख हानि॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतध्रुवचारत्रवर्णनोनामचतुर्विंशोऽध्याय ॥२४॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणपतिसारदासुखदानि।
अब नरसिंहपुराण की, कहौं इतिहास बखानि॥
जगतविदित वैकुण्ठ है, जहा बसत भगवान।
द्वारपाल जय बिजयदोउ, अतिभुज बली सुजान॥
एकबार सनकादि तहँ, आये जनु चहुँ बेद।
ब्रह्मानन्द मगन मन, बालस्वरूप अभेद॥

रमानाथ के दर्शन हेता * लगे जान ऋषि हरषि निकेता
जयरुविजय दोउरोकि बखाना * बिन आयसु नहिं पैठो जाना
सुनि मुनि दीन शापकरि कोहू * तीनिजन्म तक राक्स होहू
भयो शोर सुनि सबहिन जाना * श्रीसमेत आये भगवाना
कहहरि इन बहु कीन्हो पापा * मुनिभलकिन्योदिन्यो जो शापा
तब बोले सनकादि विचारी * प्रभु अपराध कीन्ह हम भारी

[illegible] * [illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible] * [illegible]

आय दियो उपदेश शोक तेहि कछुक मिटायो।
गर्भ रहैं प्रह्लाद ज्ञान सब तामें पायो॥
रहे तहा बहुकाल मातु ओदर के माहीं।
करै भजन मन मुदित कष्ट तन व्यापै नाहीं॥
हरणाकुश को सिद्धिभो तपविधि भाख्यो आइ।
अहो पुत्र बरमागिये ऋधिसिधि जो मनभाइ॥
जो मोपर परसन्न प्रभु तौ दीजै बरु येह।
तौ दीजै बरु येह हमैं जो सृष्टि तुम्हारी॥
मरौं न काहू हाथ बात मोको यह प्यारी।
राति दिवस नहिं मरौं गगन नाहिंजलहथियारा॥
दैकै बरु विधि गयो भयो तेहि हर्ष अपारा।
गरजि चढ्यो घर आपने सूनो देख्यो आइ॥
कोपि चढ्यो फिरि इन्द्रते सुरपुर लीन छिडाइ।
घरलायो त्रिय आपनी जन्म लीन प्रह्लाद॥
जन्म लीन प्रह्लाद भयो तेहि आनँद भारी।
दिये दान गज बाजि याचकन किये सुखारी॥
करै राजि मनमगन विप्र गौवन कहँ मानै।
हरि देवनते द्रोह आपनो बैरी जानै॥
यहि भातिन बीतत भये भोग करत कछु काल।
बड़े भये प्रह्लाद तब खेलैं जहँ कहुं बाल॥

मनोहरछन्द॥ सुनो एक हाल तेहि नगर कुम्हार बसै, धोखे ते बिलारी बच्चा आवाँ मे लगायो है। पाछे सुधि आई शीश धुनै पछिताई तहां, आयो प्रहलाद पास कहि समुझायो है॥ जपो रामनाम जासे सरै सब

काम निशि, बीती चारिजाम राम राम रटलायो है ।
होतेही प्रभात खोलबो लागयो मथ रेंगन को, मिटिगयो शोक प्रहलाद मन भायो है ॥

च० छ० ॥

इकदिवस सुगारी मनहिं विचारी पढ़नयोग प्रह्लाद भयो ।
कविगुरुके लरका सब्बनमाका बोलिनिन्हेंसुतसौंपिदियो ॥
लागे चटसारा तहँ बठारा बाल अपारा जहां रह्यो ।
पाटीकरलिहुँ अंगनमझिय पढ़ी द्विजन यहि भांति कह्यो ॥
तेहिअर्थ लगायोपोथि बहायो नित्यवग्य रामराम लिख्यो ।
लखिविप्रसुजानी कहि मृदुबानी भरेउ यह काह सिख्यो ॥
तब पितु सुनिपैहै बहुत रिसैहै मरिहै धरिहै शिरपोरी ।
ताते यहि बारी डारु बिगारी मानहुँ सतबाणी मोरी ॥

पाताकुलक ॥

कहप्रह्लादा । सुतअह्लादा ॥ विप्रसुनीजै । सत्यभनीजै ॥
विद्यानामा । उर्मजुनामा ॥ अधिकसोआही । पढ़ौमैताही ॥

तो० छ० ॥

सुनिये सुत वेद पुराण कहै । विद्याममनाधन और अहै ॥
नहिं चोर चोरायसकै न जरै । सुखदेश प्रदेश न भूप हरै ॥
गुणरूप पराक्रम बुद्धिघनी । सतसेवकबंधु अनेकधनी ॥
बिन विद्यासों नर साहत यों । बहुहमनमेंयकचागलज्यों ॥
तेहितेसुत विद्या नित्य पढ़ो । जेहिपावहुराजगयन्दचढ़ो ॥
अस बैन सुने द्विजके जबहीं । प्रह्लादजुबोलिकह्योतबहीं ॥

दो० विद्या धन कुल रूप मद, प्रभुता यौवन नारि ।
ये बाधक हरिभक्ति के, कह बुध बेद बिचारि ॥

व०छं० तेहिते मैं यह विद्या पढ़व न नाथ।
सुनि महिपुर प्रह्लाद के गहि दोउ हाथ॥
लाये जहँ हरणाकुश कहिनि रिसाइ।
पढ़ न तव सुत राजन हमहि सिखाइ॥

कड़पाछन्द॥ बिहँसि प्रह्लादको गोद बैठारिकै कही मुख चूमि सुत पढ़ो काहा। रामही नाम सब पढ़नमें सार है पढ़ा हम सोई सुनि हृदय दाहा॥ बदत बुध बेद यह दुष्टकी रीतिहै प्रीति आधर्म में अधिक लावै। ज्ञान वैराग्य हरि भक्ति भव भयदहन नाम गुणग्राम जेहि नाहिं भावै॥ कही हँसि देव शठ क्रूर ऐसी बढ़ै आइ कोइ बाल भरकायदीन्हा। बहुरि प्रह्लादते कहत सुनिलीजिये शत्रु को नाम नहिं चहो लीन्हा॥ सकल जगईश सब जीवको पोषना तासुते तात का बैर कीजै। छाड़ि मद मान शुभ ज्ञान हिरदै धरौ करौ हरिभजन जग सुयश लीजै॥

दो० शत्रु न काहूकेर हरि, मित्रहु नाहिन तात।
जैसो देखै मुकुर में, तैसो ताहि लखात॥
सुनेयचन अस असुरपति, रिसवशदिहिसिउतारि।
कहिसि द्विजनते याहि लै, जाहु पढ़ावो मारि॥

हा०छं० सुनि पुनि द्विज लाये चटसारहि।
लिखि दीन्हेनि सुत पढ़ो पहारहि॥
आपु गये पुर कहँ कछु कामहि।
पेतनि लिख्यो प्रह्लाद श्रीरामहि॥

श०छं० लखि बालक सब। द्विज आये तब॥
सज्जा ते जैसे। बोले ऐसे॥

दो० कहा शिशुन प्रह्लाद ते, हठ तुम करते काहि ।
मात पिता गुरु जो कहैं, प्रमुदित कीजै ताहि ॥
सुनि बोले प्रह्लाद तब, मात पिता गुरु सोइ ।
करै जो सन्मुख रामके, जहँलग निजबल होइ ॥
अमृत पलटे देइ विष, पारस बदले काच ।
जानिबूझि तेहि लेइकोउ, कहौ सखो सब सांच ॥
पढ़नसुननसो इसुफलजो, रामचरण रति होइ ।
नातरु फिरि मूरुख भला, बाद न ठानै कोइ ॥
सुनहु तात यहि जगके माहीं * दुख निशिदिनसुखसपनेहुनाहीं
देखहु तुम निज हृदय विचारी * उपजत चारि खानि तनुधारी
अण्डज जो अण्डा ते होई * पिण्डज प्रकट गर्भ ते सोई
स्वेदज श्रमशीकर ते जानौ * उद्भिज सग वारिकर मानौ
भ्रमत जीव सब योनिन माहीं * दुख बहुभाति बरणि नहि जाहीं
पाप पुण्य जब सम दोउ होई * ईश कृपा नरतन लहै सोई
प्रथम जीव जलमाहीं आवै * जलते बहुरि अन्न में जावै
जाके भवन जन्म भा चहई * सोई अन्न खात वह अहई
अन्नते रस रसते सुक्रकारी * रुधिर बीर्य यक मास निहारी
जब युवती रतिदानहिं पावै * तब सोइ जीव गर्भ में आवै
रज बीरज यकत्रिनमहं मिलई * पंचयेंदिन बुद्बुद उठि खिलई
दो० सतये दिन फेना उठत, दशयें पिण्ड पलबीश ।
मासदिवसजब होत तब, निकसन लागत शीश ॥
उभै मास भुज जाघ लखाई * तिसरे पेट बिलग ह्वैजाई
चौथे मास अंगुरी कर रोमा * छाइ मास सरत्वजा जु छोमा
पूरणगर्भ सातये मासा * अठयें बाकसहित चलश्वासा

नवयें मास चेतभा भाई * पूर्वजन्म सतकी सुधि आई
बिष्ठा मूत्र उपर है बाहि * चोटत कीट अनल तन दाहि
पीड़ित सदा अधोमुख रहई * तह न मातु पितु केहि दुख कहई
तब भगवान केरि सुधि कीना * बोलत भयो वचन है दीना
दीनदयालु कृपालु मुरारी * अशरणशरण हरण दुखभारी
प्रभु यहिबार मोहिं निरवारो * कर्मक्षेत्र में लै तनु डारो
तहँ तव चरणकमलचितलावों * जाने गर्भवास नहिं पावों

दो० चारि ठौर सब नरन के, कछु वैराग चढ़न्त।
गर्भमाहिं शवके निकट, कथासुनत रतिअन्त॥
बिनयसुनी तब कृपानिधि, पवन चलाई एक।
योनि छाड़ि बाहर भयो, भूल्यो ज्ञान बिवेक॥
पिता शुक्र बहुते कुँवर, भा रज अधिक कुमारि।
रज वीरज दोउ सम तहा, होत नपुसक धारि॥
कर्म होत जैसे कछू, तैसाही फल होय।
तैसाही सुख दुखको, भोग करत नर सोय॥
कर्म सो त्रिविध सञ्चित, परारब्ध क्रियमान।
भरै धरे बपु करै जस, तस भोगै तन आन॥

याहिविधि लीन जन्म जगआई * बिनयक वचन बोलि नहिं जाई
पुनि भा कछुक चेत तब जाग्यो * कहा कहा कहि रोवन लाग्यो
सुत उतपतिसुनि पितु महतारी * हर्षित गान करैं मिलि नारी
छठी भई पुनि बरहों कीन्हा * नामकरण शिशु मुखमें दीन्हा
करत मूत्र बिष्ठा जहँ परिया * स्वच्छास्वच्छगनन नहिं करिया
माताहू कछु भेद न जानै * सुत धौं केहिहित रोदन ठानै
मन अनरूगित करै उपाई * जेहिते अधिक होत दुख आई

पाछे वर्ष बालापन गयऊ * पुनि पचगण्ड अवस्था भयऊ
यदि सुनि खेल कूद के माही * नव मनत गत चिन्तो नाही
जननी कहत पुत्र बड़ भयऊ * यह नहिं जानत सुत घटिगयऊ
बहुरि कुमार अवस्था आई * कसव करन लाग्यो तरुणाई
भा विवाह वर भामिनि पाई * प्रमुदित षोडश वर्ष बिताई
तब तहँ तरुण अवस्था लागी * काम अग्नि हिरदे बिच जागी
बनितनते अति हेत बढ़ायो * आपन सुख तिनमें लखिपायो
दो० यथा गृहप शावकाहियले, चपिचायत सह प्रीति ।
निज तालुगत तनुजमपि, मानत तोष अभीति ॥
तन हेरै फेरै नयन, वयन वदै मद साथ ।
हिंसारत निजमत चलै, मलै मोक्ष दोउ हाथ ॥
चालिस वर्ष लगे तरुणाई * रही बहुरि आई वृद्धाई
भये पुत्र उपपुत्र घनेरे * होत दुखी तिनके दुख तेरे
निशिदिन चिन्ता करतअपारा * सबन केर मोमे प्रतिपारा
कष्ट सठ कुशवारी के जाँ * को तेहि चारा देत सदीवे
तिनके हेत करै अघ नाना * नहिं जानै मरि यमपुर जाना
नाम न हरि हरिजन गुणलीला * कहे न सुने मुदितमन शीला
बातनहीं वृद्धापन गयऊ * जरा अवस्था आवत भयऊ
तनबल गयो गिरे सब दाना * डगमग चलत सुनत नहिं काना
हरजन बहुत अकाम विचारी * दीन्हों खाट दुवारे डारी
पुरे पैंवरिपर छुधा सतावै * मागत कहे कहा कोउ पावै
तृषा लागि जल देत न कोई * बकत तहा मुख आवत जोई
बारके कहे मरिउ नहिं जाही * का यमराज बिसरिगे थाही
जिनके हित परलोक बिगारा * ते सब नियत किहिनि किनारा

इकदिनयमगण लीन्हेनि मारी * सुनत दीन पुर बाहेर डारी
लै जब गये दूत यम पासा * देखन दिहेनि नरकमहँ वासा
प्रथम दुखद नरक भुगतायो * पुनि चौरासी में जनमायो

दो० जीवत नाना दुख सह्यो, बिना भजे भगवन्त ।
अब चौरासी के विषे, भोगौ कष्ट अनन्त ॥
धिग धिग ताकी बुद्धिको, नरतन बोहित पाइ ।
तरै न जो जगजलधिसों, आतमहत गति जाइ ॥

तेहिते तात नरक परिहरहु * रामभक्ति हिरदय महँ धरहु
सबै अम्बुभुक कुश रस पाई * उवैं दिवाकर पश्चिम आई
मृगजल निरखि तृषा बरु जावै * राम विमुख सुख जीव न पावै
सुनि सब बालक बोले सोई * इक संशय हमरे मन होई
हम तुम जन्म लीन इक संगा * खेलत रहेन विहग तुरङ्गा
तुम हरिभक्ति कहा यह पाई * मुनिदुर्लभ पुराण श्रुति गाई

दो० छं० ॥

सुनिप्रह्लादकह्योहरिणाचजब ।मारोगयोपितुगातपकोतब॥
इन्द्र सकोपिदैत्यपुरछेकिकै । मातुहमारीसगर्भहिदेखिकै ॥

भु० छ० ॥

विचारयोहियेमेंतबपर्वतारी ।असुरशुक्रतेगर्भयाकेमैंभारी॥
वधेयाहिनीकोनतौशत्रुहोई ।करीरारिआगेखलीदुष्टमोई ॥

दो० तेहि अवसर नारद तहां, आइ कही अस बात ।
यहिके उर हरिभक्त है, सुर सुखदायक तात ॥
सुनिकै नारद के बचन, तब चलि भये सुरेश ।
दुखित देखि मुनि मातुकहँ, लगे देन उपदेश ॥

सवैया ॥

तजिशोचहियेहरिनामधरौ जो हवै सुखदायकदु खप्रहारी ।
जेहिध्यायतशेशगणेशदिनेशरटपीसनकादिउमात्रिपुरारी॥
सुनबन्धुमखात्रियमातु पिताधनधामसमैरबिकोमयवारी ।
तावेच धाम्रतहै मृगज्यों न जपै जगपालकसिन्धुमुरारी ॥

दो० यहिविधिमुनिसममातुकहँ, उपदेश्यो दिनसात ।
मैं सचेत जननी जठर, सुन्यों कह्यो सोइ तात॥

सुनि प्रह्लाद बचन अनुरागे * दण्डप्रणाम करन सब लागे
भल उपदेश हमें तुम दीन्हा * मात पिता स्वारथरत चीन्हा
यम कहि बैठे निजनिज ठामा * लागे लिखन गमही रामा
तेहि अवसर दोउ महिसुरआये * प्रह्लाद लखि बचन सुनाये
विद्या पढ़ो आठ शटनाऊ * हठ कीन्ह कछु नाहिं भलाई
हाटकलयन बहुत हठ ठाना * मारे गये हवै तब जाना
भक्तपक्ष कर हठ है नीका * शटनाकर हठ दुखप्रद जीका
सुनिरिसकरिद्विजधरिदोउहाथा * लाये तहँ जह निशिचरनाथा
महाराज तव सुत यह कैसा * कालकूट हरिघटमह जैसा
नाम राम जग राम पुकारै * पढ़न न विद्या हम पचिहारे
विप्र बचन सुनि गोद उठाई * बोला अधिक सनेह बढ़ाई
तुम सुत जेठे सब सुखकारी * तुमहीं राजकेर अधिकारी
ताते विद्या पढ़ो सचेता * सुखद सिखावन सुत तव हेता

नि० छं० यद्यपि तुम तात यह बात हितकी कही ।
तदपि मोहिं नीकि नाहिं लागि तनकौ सही ॥
लोक में सुखद परलोक में अकाज को ।
ताते हौं न पढ़ौं तात करौं नाहिं राजको ॥

गि० छं० ॥ सुनि यह बानी । अतिहिय ठानी ॥ अवनि गिरायो । गज मँगायो ॥ कड़ हुहि लीजै । पग तर दीजै ॥ यह दुखदाई । बचे भलाई ॥

म० छ० ॥

प्रह्लादहि मात । सुनीयह बात ॥ नहँपतितीर । कह्योधरिधीर ॥
मा० छं० नाथ बात मानि मोरि । पुत्र यजे यही गोरि ॥
राम नीचही समान । परारही देहु जान ॥
छोड़ पुत्र याहि लेहु । राजकाज ताहि देहु ॥
तुम ज्ञान नारि तीन । कहे सुने धर्म कीन ॥
इति श्रीप्रह्लादनारिदिनानाधर्मवर्णनध्याय ॥ २४ ॥

दो० सुमिरिरामसिरमन्त्रगुरु, गजप गिरा सुनहानि ।
बरनौं श्री प्रह्लाद को, पुनि इतिहास पुरानि ॥
गए निज मंदिर पठायो, आयो जहँ प्रह्लाद ।
बैठ्यो सुत पिता पढ़ो, तजि हठ वाद विवाद ॥

प० छ० ॥

सुनिनंदन मन राखिजेइ । तुम गुरु कहो हरिपदसनेह ॥
सकलनाथ गुरु कहँ प्रमान । तिन मनका होवै पहचान ॥
कहँ प्रह्लाद [illegible] ॥
[illegible] ॥

दो० [illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥

ता० छं० ॥

ताहिसमय पुरलोगबुझाये । आरतहै अस बैन सुनाये॥
नाथ सुनो बड़ शोच हमारे । बाल सबै प्रह्लाद बिगारे ॥

नो० छं० ॥

तिनकेरिदशानहिंजानकही । कछुरोवतहांसतहांलसही ॥
कछु नाचत गावत गोपरहै । पुलकांग बिलोचननीरबहै ॥
हरिनाम निरन्तर रटै मुखते । किन येऊ पियूष कहै हमते ॥
चिकजीवनहै जगमेंतिनको । मनलाग न यारसमेंजिनको ॥

दो० सुनो नाथ प्रह्लाद जो, फिरि जैहैं चटसार ।
तोहमन बांसैथननकहुं, त्यागब नगर तुम्हार ॥

ता० छं० ॥

यादिविधिके सुनि बैन सरारी । मुष्टिक एकभवांडके मारी ॥
विप्रनते पुनि बोलयोरिसाई । खोयहु बालक भक्ति पराई ॥

दो० गुरुनन्दन तुम बन्धु दोउ, तात करिय न रोष ।
भयो कालवश बाल यह, विप्र तुम्हार न दोष ॥

असकहिपुनिसुतके दिशि डोला * रामनाम सुमिरत लखि बोला
अबते मानि लेहु मम बानी * नाहिंत होत प्राण की हानी
सुनो तात मतन की टेका * छूट न जो दुख परै अनेका
सुनि प्रह्लाद बचन करि क्रोधा * बांधो थाम प्रचण्डमि योधा
गजकुमार सकै वो बांधी * सुभट समूह रहे चुप साधी

च० छं० ॥

तब ध्यानहि धावा बांधि बनावा गिरिते दीन्हेसि डारी ।
उपरै हरिलीन्हो भयहरिदीन्हो लागि न तानि बयारी ॥
पुनि जकड़ि जँजीरन मोरगभीरन दिहिलि दुष्ट थोरवाई ।

साकरिकहँ तोरी भक्तहि छोरी किहिनि किनारे आई ॥
तब गज मँगवायो तरेडरायो देखत कुञ्जर भाग्यो ।
महिखोदिगडायोअहिलपटायोतेहिक्षणविपतिनत्याग्यो ॥
तुपकैं बहुदाग्यो घाव न लाग्यो पुनि फेरेउ शिर आरा ।
दोउचरण बँधायो उरध टँगायो तीरन तकितकि मारा ॥
उर चुभ्यो न एका ताप अनेका नामप्रताप न व्यापी ।
सब करैं विवादू यहिदिग जादू तेहि बल बचत प्रलापी॥
सुनि ताकी भगनी हरवरमगनी नाम ढूंढला आई ।
उर लै प्रह्लादै अतिअहलादै बैठि अग्नि लगवाई ॥
निशिचर हरषाने जरत पिछाने काठकपाट लै आवैं ।
डारैं तिहिमाहीं छप्पर ढाही चरखफरक जो पावैं.॥
बहुनकी माला नरभखवाला गुहि गुहि आइ चलायो ।
जपिये मनुलाई हँसै ठठाई बड हरिभक्त कहायो ॥
भोरहि प्रहलादा गुत अहलादा बैठे धूरि उड़ावैं ।
जरिगे तमचारी दुष्टनि नारी नभनिर्जर गरियावैं ॥
भावत रघुनाथा यह सब बाता भइ सतयुग के माहीं ।
करि साधुसे द्रोहा है बश मोहा अबलगु जारीजाहीं ॥
दो० देखि सखा प्रह्लादके, हर्षि मिले सब धाय.।
दनुजराय बोलत भयो, पुनि निज ढिग बैठाय ॥

सु० छ० ॥

हौं बहुत्रासदई सुत तोकहँ । तथपि तू न डरै कछुमोकहँ ॥
तातसुनो जिनके उरहैं हरि । तेनिर्भयकोउकाहसकैकरि ॥
तोलगसंसृतिशोकसतावत । जौलगरामकनामनध्यावत॥
है सब तापप्रनाशनको गद । देखु समीप अहबपुते हद ॥

म० छं० ॥ सुनि बचन ऐस । शर लाग जैस ॥ गहि खम्भ धाइ । बाँधिसि रिसाइ ॥ तब प्राणहर्ण । मै कीन पर्ण ॥ कर खड्ग काढि । जनु तड़ित गाढि ॥ बोला कठोर । कहँ राम तोर ॥ जेहि रहे सुघेड़ । अब राखिलेइ ॥

बि० छ० ॥

रामहूनारहवै सचराचर मे नहि मानुतौ यो लखिलीजै । नामके अक्षर चौगुणकै पुनि पाच मिलायके दूगुन कीजे ॥ आठकभागदिये रघनाथ बचै युग अक तहां मनुदीजै । मोहूमें रामहै तोहूमें राम है खड्ग में रामहै खम्भसुनीजै ॥

श्रीछन्द ॥ खम्भा । माहे ॥ भाष्यो । जैसे ॥

दण्डकछन्द ॥ गगड़गडगडान्यो खम्भफाट्यो चरचराय। निकस्यो नरनाहर को रूप अतिभयानो है । कटकटकटावै दाढ़ै दशन लपलपावै जीभ अधर फरफरावै मोछव्योम व्याप्यमानो है ॥ भभरिभरभराने लोग डडरिडरपराने धाम थथरिथरथराने अङ्ग चितै चाहतखानो है । कहत रघुनाथ कोपि गर्जे नरसिंह जबै प्रलयको पयोधि मानो तड़पितउतड़ानो है ॥

गी० छ० ॥

गर्जो महाधुनि घोर शब्दक शोर तिहुँ पुरमा भयो । चौंके विरञ्चि डेरान वासव ध्यान शङ्कर तजिदयो ॥ लेलरारत दिग्गजकोलकूरम कलमल्यो अहि महिहली । नर नाग सुर भे बिकल उछरेउ सिन्धुजल मारुत चली ॥ दनुजराज देखा नरहारी * बोला बचन सक्रोध पुकारी । हरि कुहुक तोरि मैं जाना * छलकरि वध्यो बन्धु बलवाना

तासु बैर लेने हित तोहीं * खोजिफिरेउं कहु मिल्यो न मोहीं
अब नरहरि तनु धरि मम नेरे * आयो कठिन कालके प्रेरे
अस कहि कीन्हेसि गदा प्रहारा * गहि नरसिंह धरणि दै मारा
पुनि उठि लरत धरत हरि धाई * बहुत काल दुमि भई लराई
बिकल जानि सुर रमानिवासू * उरु धरि उदर बिदारेउ तासू
लखि सुर हरषि सुमन बरषायो * जय जय कहि दुन्दुभी बजायो
आँतें काढि पहिरि उर हारा * तदपि न निवरित क्रोध अपारा
नारदादि सनकादि मुनीशा * सहित शक्र कमलाजगदीशा
डरहिंसकल कोइ निकट न जावैं * दूरिहि ते सब बिनय सुनावैं
कह बिधि कमलाते तुम जाहू * निकटबासिनी हरिकी आहू
सुनि कमला कर कानन धारा * हम अस रूप न कबहु निहारा
दो० तब सुर सब प्रह्लादकी, बिनयकिहिनिढिगआय।
चतुरानन बहु प्रीतिते, बोले हृदय लगाय॥
निकटजाहु प्रह्लाद तुम, हम सब देव डरात।
सुनत गये नरसिंहपहँ, हर्ष शोक नहि गात॥
दीनदयाल ललकि उरलायो * बिछुरा बन बालक जनु पायो
हासुन तोहिं नीच दुख दीन्हा * पायसिफल लख आपन कीन्हा
अब मोहिं अतिप्रसन्न जियजानू * मांगु तात अभिमत बरदानू
सुनहु नाथ तव भक्ति जे करहीं * मनमें कछु कामना धरहीं
ते वै बनिक न आशिक जानी * फल उद्योग नफा अनुमानी
हर्ष न कछु चहिये किरपाला * सुकृति सुभक्तिहि देहु दयाला
यह बरदान मिले प्रभु मोका * बिमुख गिना पावें परलोका
सुनि नरसिंह कह्यो हरषाई * सुनहु तात मम भक्ति बड़ाई
कुं० जाके कुलमें भक्त मम, नाम लिहाड़ी होय।

एक एकशत आपनी, पीढ़ी तारत सोय ॥
पीढ़ी तारत सोय, पिताकी चौबिस जानो ।
मातुकी गनि बीस, वामकी षोडश मानो ॥
द्वादश पुनी और, एकदश भगिनी ताके ।
दश पुत्रा की और, आठ मासी गै जाके ॥
दो० कुल पवित्र जननी सकल, भागवनी महिवास ।
स्वर्ग स्थित पितरोपि धनि, येहु वश मम दास ॥
जब जगपति अमवचन सुनाये * जन प्रह्लाद हिये अति भाये
नाम जासु प्रेम परतीती * सो त्यहिप्रिय लागत यह रीती
पुनि नरसिंह कही अति बाना * वचन हमार मानेथे ताता
यदपि तुम्हें इच्छा कछु नाहीं * तदपि मन्वन्तर राजि कराहीं
गी० छ० ॥
करिय मन्वन्तर एकको सुत राज्य अब मोरे कहे ।
हौं करत मायाते तुम्हारी विनय करि हरिपद गहे ॥
मम तोर याहि चरित्र नित सह मोद सुनिहैं जे गाइहैं ।
रघुनाथ ते निश्शङ्कही भवबन्धते छुटि जाइहैं ॥
दो० यह चरित्र प्रह्लादकर, बरण्यो जन रघुनाथ ।
श्रीगुरु देवादास के, चरण कमल धरि माथ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतप्रह्लादचरित्रवर्णनोनाम
षड्विंशोऽध्याय. ॥ २६ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
मारकण्डेयपुराण कछु, भोगल कहौं बखानि ॥
रघुपति इच्छा प्रकृति सो, रच ब्रह्माण्ड अनेक ।

विधिहरिहरगुणथापिबहु, कबहु कबहुँ रहएक ॥
पुनि शौनक बोलत भये, नाथ कहा यहिवार ।
अवधपुरी भूलोक महँ, आई केहि परकार ॥

कहा सूत सुनिये मुनिज्ञाना * यहां भेद मैं कहौं बखानी
एक बार जल बाढन भयऊ * सब ब्रह्माण्ड बूडि तह गयऊ
ल जीवन की तत्त्व भवाना * अग्निकण महँ आइ समाना
हरि तब शयन शेषपर कीन्हो * मोहो माया जगत न लाहो
विष्णु श्वास तें भे चारिवेदा * आदि पुरुष जे बरणत भेदा
नाभितेएक कमल तह निकस्यो * सो पङ्कज जल ऊपर विकस्यो
तब तांग ब्रह्मा भे आई * चारिभुजा मुखचारि लखाई
जलविलोकिविधि हृदय विचारा * कह माता कहँ पिता हमारा
कमलनाभि गहि तरका गयऊ * पुनि ऊपर कह आवत भयऊ
विपुल बार अब ऊपर आया * पद्मनाभिको अन्त न पायो
तब नभते भे गिरा सोहाई * मिला न प्रभु बिन तप सेवकाई
सुनि अज चित्त ध्यानमें दयऊ * बहुत कालपर दर्शन भयऊ

स०छ०तहँ विष्णुके श्रुतिमैलसे । प्रकटे असुरयुगशैलसे ॥
लखिकै तिन्हैं ब्रह्म डरेउ । तबदेवकीविनतकिरेउ ॥

ब्र० छ० ॥

जयजयमाता । सबसुखदाता ॥ जगतकहावै । तबउपजावै ॥

मो०छ० तोही आदि माया । निगम नेति गाया ॥
तोही कर्षिणि हरणी । तोही विश्व भरणी ॥
जलज माहि मोही । प्रकट कीन्ह तोही ॥
जगत बस तुम्हारे । तरण वृक्ष चारे ॥

पा० छं० ॥

हरिबश तोरे । सोवत भोरे ॥ देहु जगाई । करै लराई ॥
असुरसंहारै।हमै उबारै॥सुनि तब माया । हरिहिजगाया ॥
मधुकैटभ देख्यो हरे जागे * दोउ ब्रह्मा कह मारन लागे
तोहीं विष्णुहि दिये जगाई * तब ब्रह्मा अति शोर मचाई
केशव दीख दुष्ट कहं आये * क्रोधित ह्वै असुरन पर धाये
हान लागि जल माहिं लड़ाई * जीति न जाइ बली दोउ भाई
पाँच सहस्र बर्ष चलि गयऊ * मधुकैटभ तब बोलन भयऊ
हम प्रसन्न तुमपर भगवाना * लखि शूरता अहौ बलवाना
ताते बर भावै सोइ लीजै * कह हरि शीश आपने दीजै
दो० हँसिबोले दोउ दीन्ह हम, जो तुम मांग्यो नाथ ।
पर जल में जनि मारिये, बाहर काढ़ो माथ ॥
हरिछं० तब हरि उरु धीर । जल पर बध करि ॥
लीलाछं० मरन लागे जबै । बचन बोले तबै ॥
भूमि तनुकी रचौ । सृष्टि तापै रचौ ॥
तब हरि असुर हते निज पानी * तासु ज्योति प्रभुमाहिं समानी
तबते मधुसूदन कहवाये * कैटभारि गुण आगम गाये
भूमि भई तिन तनकी जानो * नाम मेदिनी ताहि बखानो
जलके ऊपर रही सो छाई * जिमि नलिनी सरपर उतराई
जलकर पारावार सो नाहीं * कच्छप एक रहत त्यहिमाहीं
मस्तक कबहिं चरण रग हेरे * कैयो कैयो योजन केरे
दो० सप्तसहस शतकोटि यक, अर्बयोजन परमान ।
कूरममुख पूरब दिशा, पश्चिम पूँछ बखान ॥
तापर शेषनाग डाम रहई * जैसे मूल मेरु पर अहई

फन हजार ताके श्रुति काहा * यकफनपर यक रहत बराहा
मशक समान जानि नहिं पावा * अस तनु गेर सो आगम गावा
वसुधा दशन बराह के धारी * निलसम गने कोल अस भारी
कु० आठौ दिशि दिग्गजरहैं, महि रक्षा हित दुन्द।
ऐरावत पुनि पुण्डरिक, वामन चौथ मुकुन्द॥
वामन चौथ मुकुन्द, पराजित यम सारभ कुज।
हेमदन्त परमान, अठारह योजन के दुज॥
दुज द्वै योजन केर, सृष्टि त्र योजन पाठा।
पट पट योजन ऊंच, बली अति दिग्गज आठा॥
दो० यहिविधिथिरकरिभूमिप्रभु, विधिको आज्ञा दीन।
सृष्टिरचौ यहि धरणिपर, सुनिविधि शिरधरिलीन॥
ब्रह्मा सृष्टि रचन जब थापी * पचास कोटि योजन भूनापी
मनते विधि जग रचने लागे * इच्छते बहु सुत उपरागे
सनकादिक आदिक जे भयऊ * माया रहित सकल बन गयऊ
तब बायें भुज ते शतरूपा * दहिने उपजाये मनु भूपा
तिनहू बनका कीन पयाना * लखि ब्रह्मा तब रोदन ठाना
ताते रुद्र प्रकट भे गेरा * कत रोवत हम रचब घनेरा
कोई चीन कोइ पीन विशाला * कोइबिनाशिर कोइ विपुल कपाला
कोइ बिनकर मुखदगपगकाना * कुटिल कराल केहूके नाना
यहि बिधि भूत बहुत उपजाये * एकहि एक लेहिं सो खाये
तब विधि तिन्हें बरजि सौंपाये * रुद्रन सहित विष्णुपहँ आये
प्रभुते सब निज हाल निरूपा * मुनि मिलिगे जहँ मनुशतरूपा
बोले सुवन राज्य चलि करहू * बचन हमार हृदय महँ धरहू
शाम सनोप दया सुविचारी * जहँ तहँ अहै सुखद व्यवहारी

[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]

दो० बहुरि तीन कन्या भई, सकल सुलक्षण खानि।
देवहुती प्रसूति अरु, परसूती ये जानि॥
मनुते मे मनुष्य मनुराया * तेहिते मानुष नाम कहाया
राज्य करत बीते बहु काला * यकदिन कीन्ह विचार भुवाला
विषय करत चारिउ पन गयऊ * तदपि न इन्द्री निरपित भयऊ
भक्तिविमुख सुख दुःख समाना * अमविचारि बन कीन्ह पयाना
नारि सहित नृप नैमिष आये * हर्षि गोमती माहि नहाये
तहा विप्र हरिदेव प्रवीना * कनकलतायुत नारि नवीना
करहिं तपस्या भगवत हेता * अशनवसन तजि अवधनिकेता
तागे करन तहँ तप आपू * द्वादश वर्ष मन्त्रकर जापू
गौर श्याम सिय राम स्वरूपा * धरें अहर्निश ध्यान अनूपा
कन्दमूल फल कछुदिन खाये * पुनि सब त्यागि नीरपर आये
षट सहस्र सम्वत जल पीनो * पुनि गखिवान सोउ तजिदीनो
वर्ष सहसदश भख्यो समीरा * पुनि सोउ तजिदीन्हो मति धीरा
मन अभिलाष यहै दिनराती * प्रभु कहँ देखि जुडावय छाती
निर्गुण निराकार निरखेदा * नेति नेति ज्यहि गावत वेदा
ब्रह्मा विष्णु महेश सुमेषा * जासु अशते होत अलेषा
दो० सोइ प्रभु सेवा बश रहत, कहत निगम असगाय।
जो यह सत्य तो पूजिहैं, मम अभिलाषा आय॥
तो०छ० इमि वर्ष दशहजार। रहे दोउ बिन आधार॥
कृशगात नातनवारि। नहिं नेक मानी हारि॥
ह० छं० लखि तप अतिभारी। हरि अज त्रिपुरारी॥
चलि मनु ढिग आये। मृदु वचन सुनाये॥
यु०छं० मागहु वर सुत सोई। जो इच्छा मनु होई॥

मनु कहत न भयऊ। पुनिपुनि फिरिके गयऊ ॥
चौ० छं० ॥ प्रभु जगस्वामी । अन्तर्यामी ॥
निज जन जान्यो । नन्य पिछान्यो ॥
च० छ० ॥
तब अ नभ बानी सुनु नृप रानी मागहु जो वर भावै ।
सुनि गिरा सोहाई उठे मोटाई जिमि बरते कोइ आवै ॥
बोले हरषाई प्रेम बढ़ाई सुनु सेवक सुरधेनू ।
विधि हरि हरनायक सुरनम्हायक प्रणतपाल सुखदेनू ॥
जो शम्भुहु भाव मुनिजन ध्यावै काकभशुण्डि सुनैना ।
सोइ राम अनूपा श्यामस्वरूपा देखौं मैं भरि नैना ॥
अस बचन विनीता परमपुनीता सुनि प्रकटे भगवाना ।
सुमेतन घनश्याम लखिशतकाम लाजत नीरजपाना ॥
शशिमुखदुविसीवा चिबुकग्रीवा अधरअरुणशुकनासा ।
नवअम्बुजलोचन रिपुमदमोचन रदकपोल हरिहासा ॥
भुगण मणिजाला उर वनमाला भाल तिलक उरभारी ।
श्रुतिकुण्डललोला मुकुटअमोला भृकुटी धनु अनुहारी ॥
कटि कसे निषङ्गा कर शारङ्गा पीत बसन लपटाये ।
करि कन्ध जनेऊ कच शुभ तेऊ विविधसुगन्ध लगाये ॥
लखि नखतछवीरा नाभि गँभीरा उदररेख त्रय राजै ।
राजिवदीउचरण मुनिमनहरणं जिन ध्यावत अघभाजै ॥
जो सब जग मोहै वायें सोहै आदिशक्ति सुखखानी ।
जेहि अंश ते अघटै अगणित प्रकटै उमा रमा ब्रह्मानी ॥
दोउ रूप अनूपा मनु शतरूपा थकटक रहे निहारी ।
पुनि गिरे सुजाना दण्ड समाना अपुकी दशा बिसारी ॥

दो० बहुरि तीन कन्या भई, सकल सुलक्षण खानि ।
देवहुती अवकूति अरु, परसूती ये जानि ॥
मनुते मे मनुष्य मनुराया * तेहिते मानुष नाम कहाया
राज्य करत बीते बहु काला * यकदिन कीन्ह विचार भुवाला
विषय करत चारिउ पन गयऊ * तदपि न इन्द्री निरपित भयऊ
भक्तिविमुख सुख दुःख समाना * असविचारि वन कीन्ह पयाना
नारि सहित नृप नैमिष आये * हरि गोमती माहि नहाये
तहा विप्र हरिदेव प्रवीना * कनकलतापुन नारि नवीना
करहिं तपस्या भगवत हेता * अशनवसन तजि अवनिकेता
लागे करन तहँ तप आपू * द्वादश वर्ष मन्त्रकर जापू
गौर श्याम सिय राम स्वरूपा * धरें अहर्निश ध्यान अनूपा
कन्दमूल फल कछुदिन खाये * पुनि सब त्यागि नीरपर आये
षट सहस्र सम्वत जल पीनो * पुनि गलिवात सोउ तजिदीनो
वर्ष सहसदश भरयो समीरा * पुनि सोउ तजिदीन्हो मतिधीरा
मन अभिलाष यह दिनराती * प्रभु कहँ देखि जुडाय छाती
निर्गुण निराकार निरखेदा * नेति नेति ज्यहि गावत वेदा
ब्रह्मा विष्णु महेश सुमेधा * जासु अशते होत अलेषा
दो० सोइ प्रभु सेवा बश रहत, कहत निगम असगाय ।
जो यह सत्य तौ पूजिहैं, मम अभिलाषा आय ॥
तो०छ० इमि वर्ष दशहजार । रहे दोउ बिन आधार ॥
कृशगात नातनवारि । तहि नेक मानी हारि ॥
हं० छं० लखि तप अतिभारी । हरि अज त्रिपुरारी ॥
चलि मनु ढिग आये । मृदु वचन सुनाये ॥
यु०छं० मांगहु वर सुत सोई । जो इच्छा मनु होई ॥

मनु कछु कहत न भयऊ। पुनिपुनि फिरि कै गयऊ॥

चौ० छं० ॥ प्रभु जगस्वामी। अन्तर्यामी ॥
निज जन जान्यो। नन्य पिछान्यो ॥

च० छं० ॥

तब भै नभ बानी सुनु नृप रानी मांगहु जो बर भावै।
सुनि गिरा सोहाई उठे मोटाई जिमि धरते कोइ आवै॥
बोले हरषाई प्रेम बढ़ाई सुनु सेवक सुरधेनू।
बिधि हरि हरनायक सुरनसहायक प्रणतपाल सुखदनू॥
जो शम्भुहु भावै मुनिजन ध्यावै काकभशुण्डि सुखैना।
सोइ राम अनूपा श्यामस्वरूपा देखौ मैं भरि नैना॥
अस बचन बिनीता परमपुनीता सुनि प्रकटे भगवाना।
शुभतन घनश्याम लखिशतकामं लाजत नरिजपाना॥
शशिमुखछबिसीवा चिबुकग्रीवा अधरअरुणशुकनासा।
नवशम्बुजलोचन रिपुमदमोचन रदकपोल हरिहासा॥
भूषण मणिजाला उर बनमाला भाल तिलक उरभारी।
श्रुतिकुण्डललोला मुकुटअमोला भृकुटी धनु अनुहारी॥
कटि कसे निषङ्गा कर शारङ्गा पीत बसन लपटाये।
करि कन्ध जनेऊ रुचि शुभ तेऊ बिबिधसुगन्ध लगाये॥
नख मखतछबीरा नाभि गँभीरा उदररेख त्रय राजै।
राजिवदोउचरणं मुनिमनहरणं जिन ध्यावत अघभाजै॥
जो सब जग मोहै बाये सोहै आदिशक्ति सुखखानी।
जेहि अंश ते अघटै अगणित प्रकटै उमा रमा ब्रह्मानी॥
दोउ रूप अनूपा मनु शतरूपा यकटक रहे निहारी।
पग गिरे सुजाना दण्ड समाना वपुकी दशा बिसारी॥

प्रभु तुरत उठायो हृदय लगायो फेरेउ शिर निज हाथा ।
मागहु वर सोई जो मन होई सुनि बोले नरनाथा ॥
पदपद्म तुम्हारे देखि हमारे सब पूजे मनकामा ।
लालसा जु एका है माँगिबेका कहत लगत भय तामा ॥
जानत तुम स्वामी अन्तर्यामी पुरवहु मम अभिलाषा ।
सब सकुच बिहाई माँगहु राई नाहिं अदेय प्रभु भाषा ॥
बोले महिपालक तुमसन बालक इनमम चहौं पतोहू ।
बिपचिक इव जानो ईश न मानो देव यहै करि छोहू ॥
दो० एवमस्तु कहि कृपानिधि, पुनि बोले सुरराव ।
आपु सरिस पहौं कहा, महीं होब सुत आय ॥
शतरूपा ते कह्यो बहोरी * देवि मागु वर जो रुचि तोरी
जो पति मागा सोइ प्रिय मोहीं * मानौ मैं ईश्वर करि तोहीं
सुनि मृदु गूढ बचन छलहीना * कह प्रभु जो माग्यो सो दीना
अब तुमदोउ ममआयसु मानी * बसो जाय सुरपति रजधानी
तहँ कछुकाल रहेउ सुखपाई * युग त्रेता जब लगिहै आई
तब तुम ह्वैहौ अवध भुवारा * तहँ होब मैं तनय तुम्हारा
इच्छा मय नर देह बनाई * अवतरिहौं अशनयुत आई
करिहौं चरित अनेक प्रकारा * जो सुनि नर ह्वैहैं भवपारा
असकहि पुनि प्रभु द्विजपहँआये * मागु मागु वर बचन सुनाये
नारि समेत विप्र अस भाषा * देहु नाथ वर यह अभिलाषा
दो० इनसमान कन्या मिले, तुम समान जामात ।
यह वर दीजै कृपाकरि, और न चाहिय तात ॥
एवमस्तु कहि कृपा निधाना * बोलत भे सुनु विप्र सुजाना
त्रेता जनक होब तुम सोई * नाम सुनयना इनकर होई

नव तव तनया शक्ति हमारी * ह्वै है अशन सयुत चारी
मैं जामात्र मिलब तहँ जाना * अस कहिभे प्रभु अन्तरधाना
मनु शतरूपा द्विज द्विजनारी * बसे जाय चहुँ स्वर्ग मँझारी
जब महि अवतरिहैं वर लागे * सो चरित्र वर्णब पुनि आगे
हि०छ० ॥

यह इतिहास जौन मैं कही । लोमश रामायण महँ सही ॥
पद्मपुराण साखि पुनि भारै । सुनिकर कोइ सन्देह न करै ॥

इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतब्रह्माकीउत्पत्तिअयोध्याकीउत्पत्तिस्वायभुव-
मनुकथावर्णनोनामसप्तविंशोऽध्याय ॥ २७ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वर्णौं सुखसंहिता कछु, बिष्णुपुराण बखानि ॥

कह शौनक शम्भू मनु पाछे * कीन राज्य केहि कहिये आछे
बोले मुनि जब नृप बन गयऊ * तब उत्तानपाद पति भयऊ
तिनते ध्रुव ध्रुवते सुत दूना * कछु दिन पाछे ह्वैगा सूना
लखि बिरंचि प्रियव्रतै लयाये * कीनि राज्य भलि प्रजा रिझाये
सात पुत्र तिनके मे चीन्हें * ताते सात द्वीप करि दीन्हें
दो० जम्बू और पलाक्ष है, शालीमल कुशचारि ।
क्रौंच संकलाद्वीप षट, पुष्कर सात बिचारि ॥
सागर अन्तर जानिये, इन द्वीपन में तात ।
क्षारक्षीर दधि मधु मदिर, इक्षु जल सागर सात ॥

जम्बू द्वीप तासु बिस्तारा * योजन लक्ष केर निरधारा
जम्बू फल तहँ नदी बहावै * ताते जम्बू द्वीप कहावै
सेमरादिदै गिरि बहु रहई * गङ्गादिक सरिता बहु बहई

नृप अग्नीध्र तहा मे चण्डा * नवसुत करिदीन्हे नवखण्डा
दो० ईला रमणक हिरणिकुर, हरि वृप किंपुरुपाल ।
भरत माहि उपद्वीप बहु, भद्ररास ध्वजमाल ॥
सौ योजन का देश बनावा * सर्व देश का मण्डल गावा
अयशत मण्डलका यकखण्डा * विष्णुउपासी बसत अखण्डा
तामे चहु वर्णन के नामा * द्विज नृप वणिक शूद्र अभिरामा
जम्बुद्वीप के चहुँ दिशि हेरा * चारसिन्धु लखयोजन केरा
ताके आगे द्वीप पलाशा * उभयलाख योजनकर आशा
तामे पाकरि विटप सोहावे * ताते द्वीप पलाश कहावे
इयमबाहु तह के नृप हेरे * भये मान बालक तिन केरे
जवै सुभद्र सात शिव रासा * क्षेम अभय अमृत हरिदासा
ताते सात खण्ड करि दीन्हे * सप्तिहुगिरिद्रुममधि धरि दीन्हे
दो० तामे विप्रै हंस कहि, क्षत्रिहि कहत पतङ्ग ।
वैश्यहि बुध शूद्रै बदत, न्याग अपर बहु अङ्ग ॥
ताके चारो तरफ है, सागर दर रस केर ।
है लख योजन मे तहां, तरणि उपासक ढेर ॥
ताके अग्र शालमलि द्वीपा * चारि लख योजन कर दीपा
रुद्र सहस योजन कर तामे * शेमलतरु खगपति रह जामे
द्वीपशालमलि न्यहि कहनावा * यज्ञबाहु नृप तहा रहावा
सात सुवन तिनके भे चीन्हे * तिन हित सातखण्ड करि दीन्हे
ऐयायन आविज्ञान सुरोचन * समर सोम परिभद्र विमोचन
दो० तहँ विप्रै वद मृत्रधर, नृपै बीजधर भाव ।
वैश्यहि योलन यशधर, शूद्रहि दुग्धधर गाव ॥
तेहिके चारो तरफ है, सागर मदिरा केर ।

चारि लक्ष योजन तहाँ, चन्द्र उपासी ढेर ॥
तेहि आगे कुश द्वीप जु अहई * आठ लाख योजन श्रुति कहई
तेहिमधि कुशकर विटपसोहावा * रुद्र सहस योजन का गावा
सुर हिरण्यरेत तहँ को * सात पुत्र भे तिनके हेरे
नाभिगुप्त रटकनि वसुमाना * वसुविवक्त कम्पुनव्रत जाना
तेहिने सात खण्ड करि दीन्हे * मारे गिरि मर्यादा के लीन्हे
दो० तहँ ब्राह्मण को कुशल कहि, क्षत्रिहि कोविदकाम ।
वैश्यहि अभिजित वस्तु है, शूद्रहि कोकिलनाम ॥
तेहिके चारों दिशि रह्यो, घृत को सागर पूरि ।
आठ लाख योजन तहाँ, अग्नि उपासी भूरि ॥
क्रौञ्चद्वीप तेहि आगे आई * सोलह लख योजन तह गहई
क्रौंच विहंग रवि तेज सुहावा * क्रौंच द्वीप तेहिने कहवावा
घृतकुरट तह के नृप जाना * तिनके भे सुत सात सुजाना
मेघपृष्ठ भाजीष्ट सुनामा * मगुरुह लोहित वनपति आमा
सात खण्ड करि तेहिते बाटे * मर्यादा हित गिरि तरु पाटे
दो० तहँ विप्रहि पुरुषा कहत, क्षत्रिहि ऋषि वाराय ।
वैश्यहि भद्रा भनत हैं, शूद्र देवक गाय ॥
ताके चारों तरफ है, षोडश योजन फेर ।
क्षीरसिन्धु तहँ के मनुष, उदक उपासी ढेर ॥
शाकद्वीप तेहि आगे सोहा * बत्तिसलख योजन कर जोहा
तहँ शाकेन केर तरु अहई * शाकद्वीप तेहिते सब कहई
मेघजनिय तहँ के नृप धीरा * सात पुत्र तिनके भये वीरा
चित्ररेफ पुत्रमान पुरोजय * धन्नविश्व बहुरूप मनोजय
तिनहिन सातखण्ड करिदयऊ * सोई नाम खण्डन कर भयऊ

दो० तहँ विप्रै बद बालजी, क्षत्रिहि कहत अमीर ।
वैश्यहि भाषत विरुजकर, शूद्रै धारक धीर ॥
ताके चारो तरफ है, दाधिकर सागर नीक ।
बत्तिस लख योजन तहां, पवन उपासी ठीक ॥

ताके आगे पुष्कर द्वीपा * चौसठि योजन केर समीपा पुष्कर का तरु तहा रहावै * ताते पुष्कर द्वीप कहावै इन्द्रद्वन राजा तहँ केरे * रमन धातुकी मन युग हेरे तिनहित उभयखण्ड करिनाखै * गिरि तरु मर्यादा हित राखै

दो० तहँ विप्रै पारस कहत, क्षत्रिहि भनत भुजङ्ग ।
वैश्यहि बोलत भरथरी, शूद्रै भनत कुरङ्ग ॥
ताके चारों तरफ है, सिन्धु शुद्ध जलकेर ।
चौंसठि लख योजन तहा, ब्रह्मउपासक ढेर ॥

चिन्तामणिछन्द ॥ ताके आगे परै भूमि । रातीमाटी केरि भूमि ॥ पौने सोरह लाख हेरि । ताके आगे हेमकेरि ॥ गोपालछन्द ॥ आठ करोरि बन्तालिस लाख । योजन जानहु एकपाख ॥ लोकालोकी आदि अद्र । औरहु बीसन आहि भद्र ॥ बीरछन्द ॥ अब तात । सुनु बात ॥ नभकेरि । मखहेरि ॥

दो० जाम्बू मध्य सुमेरुयक, लख योजन परमान ।
तामधि इकइस लोकहै, सो सब करौं बखान ॥

कुं० बासुकि भूतरु यमसुदत्त, किन्नर ब्रह्मराक्षेश ।
राकस कालरु चितगुपित, योगिनि गन्धर्बदेश ॥
योगिनि गन्धर्बदेश, सुअर्यम महत तपसुजन ।
सत्य सुदिव्य सुनाग, देवपिप्पल विशुकर्मन ॥

विशुकर्मादिक छांड़ि, अहैं औरो नाना पुर।
पावक पवन पुरारि, ब्रह्म वैकुण्ठ दिवासुर॥
इकलख योजन भूमिते, है ऊचा रविलोक।
सहस बहत्तर योजन, तेहि बिमानकर ओक॥
तेहि बिमानकर ओक, उदयकृत इन्द्रपुरी जहँ।
धर्मपुरी मध्याह्न, अस्तभव वरुणपुरी महँ॥
अर्धलाख योजन रहै, धनदपुरी उत्तरेक।
इकइससहस योजन छस, चले पलकबिच एक॥
यकलख योजन भानुते, है शशिलोक उछार।
योजन अरतालिस सहस, मे ताको विस्तार॥
मे ताको विस्तार, एक लख पर मङ्गरपुर।
तेतालिस हजार, माहि बिस्तार तस्य फुर॥
यहिबिधि इकइकलाखपर, बसैं ग्रह नखत अनेक।
बर्णै जन रघुनाथ किमि, सबन अहै है एक॥

यह इतिहास कह्यो जस जानी * अब पूछो सो कहौं बखानी
सुनि शौनक बोले हरषाई * हाथ जोरि चरणन शिरनाई
दीनदयाल बचन सुनि तोरे * अति आनन्द भयो उर मोरे
तृप्त न होत श्रवण मम स्वामी * सरितसमूह सिन्धु जिमिगामी
तेहिते मोहिं निज किङ्कर जानी * अब सरयू की कथा बखानौ
प्रकटी किमि भूलोकम आई * को लायो सो कहौ बुझाई
सुने सूत मुनिवचन बिनीता * रामकथापर प्रीति पुनीता
धन्य धन्य कहि बारहिं बारा * बर श्रोता मैं तुम्हें निहारा
सुनो तात सरयू जिमि आई * उतपान मैं सो कहौं बुझाई
ब्रह्मा कहँ जानत ससारा * जिन सिरज्यो जगकर बिस्तारा

तिनके भवन तीनि रहैं इसी * सप्या स्वस्ति और सावित्री
तिनके तनय मरीची भयऊ * नाम प्रेमजा प्रिय विधि दयउ
सुत मरीचके कश्यप जानो * दशत्रिय तिनके नाम बखानो

गेलाछन्द ॥

प्रथमै अदिती अमर कोटि तेंतिस जिन जाये।
दिति के दैत्य अपार नाग कद्रुम के गाये॥
विनता सुत खगनाथ चन्द्र सोमावति केरे।
सुरावती के सूर्य रहत जग जासु उजेरे॥
पादवती जो सवाव लक्ष पर्वत की माता।
दमावती सुन ऋषै अमोघा खग संजाता॥
इराते तृण वृक्ष जौन लागत परकाजै।
नखरेखासुत मेघ कोटिछप्पन उपराजै॥
तिनके अमृतवृष्टि किहे सब जग सुख पावत।
कश्यपते भै सृष्टि सकल श्रुति ऐसे गावत॥

तोमरछन्द ॥

श्रीकश्यप के सुत भानु। द्वै नारि तिनके जानु॥
छाया प्रभा अस नाम। विश्वकर्मजा अभिराम॥
युग पुत्र छाया जाय। यमराज शनि दुखदाय॥
शनि बहिनि यमुनानाम। यम भयहरणि प्रदकाम।
प्रभा के अश्विनीकुमार। प्रकटे हरण रुजभार॥
तिनके तनय मनुभूप। शुचिरेखा नारि अनूप॥
तिनके तनय इक्ष्वाकु। जिनकी न प्रजा विश्वाक॥
सरयू नदी तिन आनि। भूपर बहाई जानि॥
केहि भांति लाये नाथ। विस्तार बरणौ गाथ॥

कह सूत अवध भुवाल । इक्ष्वाकु भे जेहिकाल ॥
बैठे भवन एकबार । नृप कीन रवत विचार ॥
पुर पास सरिता होइ । तौ लहै सुख सब कोइ ॥
दो० गृह स्नान सो अधम है, मध्य कूपकर होइ ।
उत्तम सर अवती करै, उत्तम उत्तम सोइ ॥
सो० असमन समुझि नृपाल, गुरु वशिष्ठ पहँ आयहू ।
नाइ कमलपद भाल, कहतभये निज कामना ॥
मुनिवशिष्ठ हियहर्षित भयऊ * दो नमिलि गाकन्या दिगगयऊ
बोलतभये नदी यक चहिये * कहा सा मिलै कृपाकरि कहिये
कहनन्दनी सुनहु मुनि ज्ञानी * सुना एकही कहौं बखानी
एक समय बैकुण्ठ मँझारी * बैठे नारायण युत नारी
महादेव हरि दर्शन हेता * आये तहं गिरिसुता समेता
नारदादि सनकादि मुनीशा * चतुरानन सुमनस सुरईशा
सबहिन आइ आइ शिरनायो * प्रभु आदर करिकरि बैठायो
सभा देखि शङ्कर अनुरागे * लागे करन नृत्य हरि आगे
नारद वीना तहाँ बजावै * ब्रह्मादिक सुर सग गवावै
छयो राग रागिनी छत्तिस * समगुण ग्राम सप्तस्वर बत्तिस
ताल मृदङ्ग तँबूर सितारा * बाजन बढ़यो विनोद अपारा
देखि नृत्य रीझे भगवाना * बोले हर मागहु बरदाना
कह पशुपति जो दाया कीजै * तौ मोहि भक्ति आपनी दीजै
सुनि शङ्कर के वचन मुरारी * बोले दीन नयन भरि बारी
सोइ जल पातभयो मुनिराई * लीन कमण्डलमहँ विधि धाई
तीरथ भयो शुभ सो रहई * लावहु जाय ब्रह्मपहँ अहई
दो० सुनि वशिष्ठ हरषितभये, गये पिता के लोक ।

सुख शोभासहँकर निरखि, भे मुनि विगतविशोक॥

ब्रह्मभवन पुनि देख्यो जाई * परि न जात कछु तासु निकाई
चतुरानन के दर्शन कीन्हे * भाल तिलक कर वेद जु लीन्हे
धरे कमण्डल श्रम सोहायो * लखिवशिष्ठ चरणन शिरनायो
विधिरहँ ध्यानमाहि लवलाना * बैठिगये तह मुनि परवीना
नवमहस भवन चलि गयउ * तब अज ध्यान निवारत भयउ
मुनिलखि हरि हृदय लगायो * कह्यो तात केहि कारण आयो
तब वशिष्ठ मृदुवचन उचारे * नृप इक्ष्वाकु यजमान हमारे
तिनके पुर दिग मारिता नाहीं * तेहिते हौं आयो तुम पाहीं
अब मम काज भया यहि मोहीं * दीजै जेहि मोको यश होई
सुनि विधि हरि कमण्डल लायो * चल्यो प्रवाह मग गनि धायो
गगन ते गिरि गह आकाशा * गिरि सुमेरुगह कीन्हो वासा
दैरावत के गह दोउ लागे * गह पहाड़ चढ़ी चढ़ि आगे
सो जल गिरो भूमिपर जाना * तेहिते गङ्गा नाम बखाना
पुनि जल मानसरोवर आवा * हो मराल मनि जनि दुखपावा
मानसरोवर विधि मन तेरे * भयो धाम हरिका तेहि नेरे
जाय वशिष्ठ दाहिने ठाढ़े * लगे करन तप तन मन गाढ़े
विदुष काज लागि नृप तप कीना * तब्यो अहार भयो तन छीना
तब हरि ज्ञानवान दरसाई * कह्यो वशिष्ठ रोइ मोहिं
[illegible] * [illegible] वशिष्ठ चरण शिर नायो
[illegible] * [illegible] देव तप किया [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]
[illegible] * [illegible]

बोले हरि हलकोरहु पाथा * अबहीं निकरि चलै तव साथा
तब वशिष्ठ जज्ञ जाय हलोरा * चली निकसि सरयू बरजोरा
गिरि पुर ग्राम धाम करि पावन * बही अनवतर आइ सुहावन

दो० सुनि नृप पुरबासिन सहित, आये अपगातीर।
पूजन कीन्हों विविध विधि, दीन दान भय भीर॥
आय आय सुरबधुनयुत, कीन्हेनि तहँ अस्नान।
नाम धरे त्रय नयनजा, सरयु वशिष्ठी जान॥
दरश परश मज्जन करत, हरत पाप श्रुति गाय।
अन्तकाल हरिपुर बसै, रबिसुत भय मिटिजाय॥
सरयू की उत्पत्ति इमि, मुनिन कही रघुनाथ।
केहु पुराण में बदत बुध, है रघुपति पद पाथ॥

कामाछन्द॥ बाय। पायें॥ केरो। हेरो॥

तोमरछंद॥ दोउभांतिमङ्गलमूल। मोहि देहु ह्वै अनुकूल॥
सियरामनाम अबीर। सुमिरौं सदा तवतीर॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास रामनरेशकृतामातोद्वीपनवखण्डप्रमाणश्रीसरयूउत्पत्ति वर्णनोनाम अष्टाविंशोऽध्याय ॥ २८ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
पिककृत अविगतिपुराणमत, कहौं भागवतबखानि॥

सुनि शौनक बोले शिरनाई * गङ्गा कौन भांति महि आई
केहि विधि उतरनि में सो गायो * प्रभु प्रभाव कछु बरणि सुनायो
कह्यो सूत नृपनगर जो भयऊ * जिनबहुभांति प्रजहिसुखदयऊ
तिनके कैशे सुमति द्वै नारी * पुत्र बिना निन रहैं दुखारी
इकदिन नृप दोउ त्रियन समेता * बन तप करन गये सुत हेता

कीन कठिन तप तीनिहु प्रानी * वरम्जूहि बोले भृगु बानी
केशी कहा पुत्र इक दीजै * एवमस्तु अतिसुन्दर लीजै
मागहु कहन सुमतिने लागे * साठिसहस सुवन तिन मागे
वर दै भृगु आश्रमै सिधाये * वधुन समेत भवन नृप आये
असमञ्जस सुत केशी जायो * शिशुनकेमिससोबिपिनसिधायो
सुमतिके भे सुत साठि हजारा * घृतघटमें कीन्हो प्रतिपारा
वीर महा रणधीर सक्रोधी * मारे असुर सकल जिन शोधी
एकबार नृप मखकर साजा * कीन्होतहँलिखिछाड्यो बाजा

दो० इन्द्र ताहि गहि कपिलके, पाछे बाध्यो जाइ।
रखवारे नहिं दीख तब, कहिनि भूपते आइ॥

सुनि सुत रहे सुमतिके जेता * चले सकल ढूढ़नके हेता
सात द्वीप नवखण्ड मझायो * श्यामकरण को खोज न पायो
तब लागे माहे खोदन सोई * तीनि दिशा दिशि डारिनिजोई
पुनि ढूढ़त उत्तर दिशि आये * तहा कपिलमुनि ध्यान लगाये
पाछे अश्व बँधा लखि मानी * बोले सगर सुवन कटुबानी
पकरि तुरङ्ग आड़ में आना * हमें विलोकि धरिमि बकध्याना
सुनि मुनाश करि क्रोध निहारा * सब यकसग भये जरि छारा
समुझि बूझि विषपान जो करई * कहो तात सो काहे न मरई
इहां शोच मन कीन भुवारा * भे बहु दिन नहिं फिरे कुमारा

दो० तब असमञ्जस के तनय, अशुमान कहँ बोलि।
कह्यो खबरिलै बिपिनकी लखिहयलावहु खोलि॥

सो० सुनत चले हरषाय, जहँ तहँ खोजत नगर बन।
मिले गरुड़ मग आय, कही कथा सब जिमि जरे॥

कारन्तछन्द ॥

अस खबरि पाइ । जलनिधि नहाइ ॥
तिल उदक दीन । पुनि गवन कीन ॥

संयुताछन्द ॥

खगनाथ युत तहँ आयहू । मुनि चरण शीश नवायहू ॥
करि विनय आशिष पायकै । हय लै चले हरपायकै ॥

तोमरछन्द ॥

यह बनते सुनु तात । परमार्थकी यक बात ॥
जो गङ्ग आवे भार्य । तो होहि पितर कृतार्थ ॥
मुनि अंशुमान निहोरि । कह गरुड़ते करजोरि ॥
अब गङ्गकी उत्पत्ति । कहिये कृपा करि सत्ति ॥
आये महीपर जासु । तरिहैं पितरसम आसु ॥
बोले गरुड़ हरपाय । उत्पत्ति सुनु कहौं गाय ॥

त्रेतायुगमें बलि मख ठयऊ * इन्द्रलोक लै नो मनु भयऊ
तब हरि हिय विचार अस कीन्हा * प्रह्लाद में यह पद दीन्हा
सो बलि लेन चहत करि यागा * तेहिहित बामन तन अनुरागा
बामन आगुर के कहि कारण * भे प्रभु सो कहिये अहिचारण
मागन केर हेतु हरि जाना * तेहिते बामन भे भगवाना
मागन मरण उभयसम अहई * मान बड़प्पन नेह न रहई
सो० तृणते लघु तूलाइ, तूलहुते लघु याचकहू ।
कत न उड़ावत वाइ, मागनकर भय मानिकर ॥
यातें हरि बामन तन भयऊ * अदितिकेजठरजन्म आलयऊ
यज्ञोपवीत भयो जब जाना * भिक्षा हेत चले भगवाना
बड़दानी सुनि बलिपह आयो * बहुप्रभुता मुख बरणि सुनायो

बलिविलोकियकटकरहि गयऊ * अस वपु कबहु न देखन भयऊ
कह बलि मागु जो भावै तोही * पग तीन पृथ्वी दे मोही
मम समान दाता लहि तुमने * मांगत बना न मागहु अबते
बामन कहीं सुनहु नरपाला * द्विज तोष चाहीं सब काला
दो० असन्तोष द्विज दोषयुत, सन्तोषी नृप चारि ।
सहलज्जा गणिका अधम, निरलज्जा कुलनारि ॥
कहा शुक्र महिपाल सुनु, ये हैं श्रीभगवान ।
छलन हेतु आये तुम्हैं, देहु न इनकहँ दान ॥
दो० छं० ॥
जो भगवान कह्यो तुम येहैं । हानदेहौ टलिकै नहि लेहैं ॥
ताते यहै हितहि ते दीजै । नाम चली धनलैकहकीजै ॥
शुक्रकहापुनि सुनहु भुवारा । अबतेमानहु वचन हमारा ॥
द्रव्यहीन नर व्याकुल रहहैं । सर्व ठौर मन्दादर लहहैं ॥
बिनापराध मित्रजन भाखै । त्रियसनेहकरिवचन न भाखै ॥
तेहिते धनकी रक्षा ठानहु । दर्वे ते सर्वे वश मानहु ॥
कहबलिदेनकह्यो इनकाश्रव । जोनहिदेहुतो धर्म नशैसब ॥
झूठसमान न पातक आनजू । बोलतभेधनिशुक्रसुजानजू ॥
चौ० छं० श्रोतु ब्यौर । पांच ठौर । झूठ कही । दोष नहीं ॥
दो० निज त्रियते पुनि ब्याहमे, धनहित सङ्कटप्राण ।
गोद्विज हिसामे कही, झूठ न दोष प्रमाण ॥
जिनकर रक्षन लोक सब, असुर हते जिन हाथ ।
तिनकर मागत भीख अब, किमपि न दीजै नाथ ॥
अबनिरवनिधनतनसँग सबहीं * पुनिअससमयमिलै नहिं कबहीं
असकहि करन सकलप लागे * प्रविशे कवि करवामहँ आगे

रुक्यो नीर हरि डाभ चलायो * फूटि आंखि सकल करायो
तब बामन निज देह बढ़ाई * पग भू जह लोक ध्रुव जाई
स्वर्गभयो कटि शिवपुर पेट्ठ * रविसुत लोक हृदय जा भेट्ठ
कण्ठ आय तप लोकहि भयऊ * आनन सत्यलोकमहँ गयऊ
ऐसो दीर्घ रूप हरि कीन्हा * पुनि पृथ्वी नापन मन दीन्हा
दो० तलअतलबितल तलातल, रसातल पाताल।
सप्त पतालन एक पग, नापे कृष्ण कृपाल॥
प्रथमै भू दूसर भुवर, तीसर स्वर जन चारि।
पञ्चम सत्य छठा महर, पुनिविधिलोकनिहारि॥
सात स्वर्ग ये जो मैं बरणा * सो सब नापे दहिने चरणा
ब्रह्मलोक जब हरिपद गयऊ * चीहिचलाक धाइ सो लयऊ
धरेउ कमण्डलुमहँ चतुरानन * गङ्गा भई रहत जग जानन
तप जो करहु गङ्ग महि आवैं * तब तुम्हार पुरुषा गति पावैं
गङ्गा को उतपति इमि जानो * बामन कृत अब सुनत बखानो
द्वैपग सकललोक जब भयऊ * एक पग बाकी रहि गयऊ
बलि बामन पग पीठि नपाई * रीझि कहा मागो बर राई
जो प्रभु मोपर किरपा कीनै * यही रूप निज दर्शन दीनै
एवमस्तु कहि बलिहि लवाई * राज्य सुतल को दीन्हो जाई
द्वारपाल ह्वै श्रीभगवाना * रहत सदा तहँ राम जग जाना
याही ते हरि सन्मुख ठीका * कृग कोप छल तिनकर नीका
दो० बड़े बड़ेन ते छल करहि, जन्म कनौडे होय।
वृन्दा श्रीपति शिरलसै, गति बामन बलिजोय॥
यह सब चरित गरुड़ जब गावा * अशुमान सुनि अति दुख पावा
पुनि रघुनाथ गये हरिपासा * आये अशुमान निजवासा

देखि सगर उर लीन लगाई * खबरि सकल पुनन कै पाई
यज्ञ कीन्ह भूसुर मनमाने * कछुदिनरहिगृह पुनि अकुलाने
राज्य सु अंशुमान कह दयऊ * आप तपनहित गो वन गयऊ
अंशुमान के भये दिलीपा * तिन्हैं थापि बनगे नरदीपा
भागीरथ दिलीप के सूनन * भे जेहिनाम चारिदश भुवन
तिन्हैं राज्य दे बन अनुरागो * करितपकठिन तहँ तन त्यागो
भागीरथसुत काकुथ भयऊ * दे तेहिं राज्य आप बन गयऊ
लागे तप गङ्गा हित करना * रविसन्मुख ठाढ़े इकचरना
सहस वर्ष बीते विधि आये * मागु तात वर वचन सुनाये
कह नृप जो किरपा प्रभु कीजै * तो गङ्गा महि आवन दीजै
बोले अज हम छाड़ब जबहीं * जाई गङ्ग रसातल तबहीं
तेहिते अब शम्भुहि अवराधो * मागहु वर ते रखि हैं साधो
सुनि नृप दिव्यवर्ष शिवध्याये * मागहु वर हर आइ सुनाये
गङ्गा रोकिलेहु करि दाया * कीन कबूल गङ्ग सुनि पाया

दो० जाउँ रसातलसहितशिव, जटा बढ़ायो ईश।
छाड़्यो अज इकवर्षलों, रही भुलानी शीश॥
ध्यायो नृप राख्यो जटा, भई धारा तहँ तीन।
सुरपुर गङ्ग पाताल इक, रही महीपर पीन॥
सुरपुर मन्दाकिनि कहत, परभावती पताल।
गङ्ग कहाई अवनिलखि, बोले मलिन नृपाल॥
हे सुरसरि हरि भक्त जे, रहि समस्त बेकार।
तिनके तन स्पर्श से, नाशी पाप तुम्हार॥

सुनि समोद नृप मग सिधाई * स्वच्छ करत पुर सागर आई
तरे पितर भागीरथ केरे * अजहुँ उधारत पतित घनेरे

याहिविधि मुनि गङ्गा महिआई * जासु महातम बरणि न जाई
दशसहस्र संवत तप करई * मख व्रत दान नेम आचरई
सकल पुण्य लै तुला चढ़ाने * गङ्ग महातम सम नहिं पावै
सुरमुनि मनुज सिद्ध बहुनाना * गङ्गा के व्रत सबहिन ठाना
हरिजन भाव बहुत विधि राखै * प्रभु का पादोदक श्रुति भाखैं
जिमि घनसोष्णवोष्णतमखावै * तिमि गङ्गा कलि पातक धोवै
दो० दृष्ट्वा अघ शतजन्म के, पीत्वा अघ शत दोष।
मज्जन जन्म सहस्र के, हन्ति गङ्ग कलि जोय ॥
नीपे कुञ्जर शौच न होई * तो हरिधाम बसै नर सोई
वश्यकेर बालक इक मरेऊ * कफन की रज मुखमें परऊ
भयो न भूत गयो सुधामा * देखि सिद्ध कीन्हों परनामा
विप्र एक गणिका रत जाना * अन्तकाल निकसै नहिं प्राना
वारमुखी मुख थूक्यो थाई * तजि तन बरया विबुधपुर जाई
पक्षी गिरो मृतक ह्वै नीग * मिटगै तासु सकल भवभीरा
गङ्ग महातम अहै अपारा * थकै कहत मुख शेष हजारा

गीतिका छन्द ॥

कहि थकै शेषसहस्रमुख मैं एकका वर्णन करौं।
निज बुद्धि माफिक कह्यो कछु तवहेतु हरिपद उरधरौं ॥
ते धन्य सुरसरि तीर रहि लाह नाम नित्य नहावहीं।
रघुनाथ ते तन त्यागि कै परधाम निश्चय जावहीं ॥
सो० नाथ नाय रघुनाथ, मागत दीजै जननि मोहि।
जन्म जन्म तव पाथ, पावौं गावौं राम गुण ॥

इति श्रीविश्रामसागरतत्वमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतगङ्गातात्पर्यनोनामैकोनत्रिंशोऽध्याय ॥ २९ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बर्णौं ब्रह्मपुराण को, अब इतिहासबखानि ॥
सुरसरिमहिमाअगमसुनि, बामनकथा रसाल ।
पुनि शौनक बोलत भये, नाइ सूतपद भाल ॥

प्रभु आनन्द भयो अति मोरे * सुनि इतिहास सुधारस बोरे
इक लालसा और उर जामी * सो अब पूरण कीजे स्वामी
एकादशी की उतपति कैसे * भइ जगमाहँ बखानौ तैसे
सुनत सूत बोले सुख पाई * भली प्रश्न कीन्ही ऋषिराई
सबसुख कराये हरणि अघभारी * पार होत भव सुनि नर नारी
सोइ इतिहास सुनावो तोहीं * जसकछु समुझिपरो उर मोहीं
सतयुगमाहिं असुर इक भयऊ * मुरअसनाम सबनि दुख दयऊ
शङ्खासुर सुत पितु बध जान्यो * तब बन जाइ तहा तप ठान्यो
पद्मासन ढिग आइ बखाना * मागु सुवन निजरुचि वरदाना
बोला सुनि सुरमुनि मनुजादा * श्रीधर हर लोकप सहपादा
जहँलगि सृष्टि रची तुम होऊ * हमते समर न जीतै कोऊ
एवमस्तु कहि ब्रह्म सिधायो * मुर वर पाइ वेश्म निज आयो
भुजबल जीति सकलमहिपाला * पुनि दल साजि सुरनपर चाला
भयो युद्ध अति खेचर हारे * शक्र सहित भागे भयमारे
दनुजराज लखि अतिहरषाना * बैठारे तहँ आपन थाना
दिगपालन पर बहुरि सिधारा * जहा तहा भइ मार अपारा
बरुण कुबेर काल यमराई * लै लै जिय सब गये पराई
सकललोक तपबल बश कीन्हे * निज सेवकन बास तहँ दीन्हे
तब सुर सहित इन्द्र शिव पासा * आइ नाइ शिर, हाल प्रकासा
नाथ असुर भय देव दुखारी * ब्रूहि उपाय मिटै दुख भारी

कह हर श्वेतद्वीप तुम जावो * कमलनाभिकहँ विपति सुनावो
शम्भुवचन सुनि सुर सुरईशा * आये तुरत जहां जगदीशा
सम्मुख है लोचन भरि वारी * हाथ जोरि अस्तुति अनसारी

तोटकछन्द ॥

जय जय जगदीश अजीशपति । करुणारससागरशुभ्रमति ॥
जय दीनदयाल कृपाल प्रभो । तवपूरिरह्योजगमाहिविभो ॥
जबहीं जब दुःख हमैं जु परेउ । तुमहीं तब सकट नाथ हरेउ ॥
अब निशिचर एक भयो सुर है । सुरदीननिकारि लियोपुरहै ॥
दिगपाल सबै मिलि देवहरी । भय त्रासित आइ पुकारकरी ॥
तेहिते अब नाथ कृपा करिये । दनुजै दलि सो दुखको हरिये ॥
सुनि दीनगिरा वरविष्णु तबै । करिहौंकलिकोपननाशसबै ॥
कहियो विधि साजि चलै दलका । दिगपालन देवनकेहलका ॥
यह सुद्धि तमीचर पाइ वली । लै सेन लसन्मुख आइ रली ॥
नभ पूरि रही रज रोरकरै । पर आपन बीच न बूझिपरै ॥

चामरछन्द ॥

इत उत बरि जयति जय पुकारि धावहीं ।
चक्र बाण शक्ति शूल भिण्डि ले चलावहीं ॥
शीश पाणि पाय भूमि खण्ड खण्ड ह्वै गिरै ।
उट्टि उट्टि रुण्ड वारि मारु मारुकै भिरै ॥

तोमरछन्द ॥

पुनि चल्यो सुर बलवान । करि क्रोध काल समान ॥
कर धनुष शर भरि लाय । सब चले देव पराय ॥
सुरनाथ जूझन लाग । रण त्रसित इन्द्रहु भाग ॥
हरिका ग्रस्यो सुरभूप । भय विष्णु क्रोध सरूप ॥

हरि चक्र मार्यो ताहि । नहिं कीन्हि तनिकौ आहि ॥
तरज्यो तमीचर धाइ । शठ हरिहि मारिसि आइ ॥
यहि भाति युद्ध करत्त । भई सहस बरषैं गत्त ॥
मुनि सिद्ध हाहा कीन । तजि समर विष्णुहि दीन ॥
भागत निशाचर नाथ । धावत भयो हरि साथ ॥
श्रम बिपुल बद्री आइ । प्रविशे गुहा महँ धाइ ॥
रह मिहवत अस नाम । योजन तरणि बढताम ॥
यकद्वार तामधि तात । सुर दीख विष्णुहि जात ॥
लै संग निज भट सर्व । प्रविश्यो गुहा युत गर्व ॥
दानव बधनके लाय । प्रभु कीन एक उपाय ॥
भये आप निद्रावस्य । कन्या भई उर तस्य ॥
बल विपुल तेज अपार । है जगत जेहि आधार ॥
तन दिव्य पट भुज चारि । अलकार आयुध धारि ॥
प्रकटी जो माया आदि । जेहि डरत शिव ब्रह्मादि ॥
लखि दनुज करिकै क्रुद्ध । लागो करन तहँ युद्ध ॥
प्रकटी दशौ दिशि आगि । कित जाहि दानव भागि ॥
हमि भये सब जरि छार । निकसी सुगन्ध अपार ॥
भा शकुन इन्द्रहि नीक । आये गुहा साबीक ॥
कियो कन्दरा परवेश । सुर नारदादि गणेश ॥
देखी सबै जगमात । बैठी प्रफुल्लित गात ॥
बासव सहित अनुराग । अस्तुति करन तब लाग ॥

मदनमोदकदण्डक ॥ जयति जगजननि अघहरनि मनमगनिकर अयुध बर चक्र असि शूल धरणी । सर्व गुणभवनि दुखदवनि दानव सुरभि व्याधजन पञ्चहरि

विघ्नकरणी ॥ रोग सब तरणि भयहरणि कलि कालिका
शांतिका शत्रु परचण्डरूपी । भूत प्रेत व्यंतर शाकिनी
डाकिनी विहंग हिंस जाल दुर्ग धनुषी ॥
दो० यहि विधि अस्तुति इन्द्रकरि, देवन सहित निशान ।
बरषि सुमन जयजयति कृत, तबजागे भगवान ॥
सुरसुरपतिदिकपालमुनि, विनयकिहिनिसयभानि ।
देखिअसुरबध विष्णु तब, बोले मन हरषानि ॥
भुजंगप्रयातछन्द ॥ किहो देवि कल्याण देवन्य केरो ।
बरे मांगिये जो चहै चित तेरो ॥ कहा शक्ति प्रगटी मैं
तपते तुम्हारे । असुर दुष्ट आवन लगे मर्य मारे ॥
सुनो नाथ मोको नहीं याचि आवै । कृपाकै सो दीजे तुम्हें
जान भावै ॥ यथा विष्णु चल लोक मेरे में गाहो । ।
एकादशि शरीरिसुमे नाम लाहो ॥ सबो निद्धि सांसिद्धि
फल तुम दाता । जुहोवो सदा भय हिरण्याक्ष घाता ॥ रहै
धर्म पूजे तुम्हें नेमधारी । मनोकामना पाइहैं नर औ नारी ॥
दो० यहि प्रकार वरदान दै, हरि भे अन्तर्धान ।
उतपति एकादशी की, इमि मैं कीन बखान ॥
यह शौनक यह कहौ बखानी * कौनी भांति रहै व्रत प्रानी
सुनि मुनिवचन मन सुखमाना * तान सुनो अब व्रत विधाना
एकादशी मन कीन जो चाहै * दशमी ते अस नेम निबाहै
मसुरी माष काम तिज सगा * कोदव चणक शाक परवगा
अल्प अहार वार इक करहै * मधु अरु शाक दूसो परिहरहै
उठै एकादशि होत बिहाना * शुचिकरि मध्यदिवसअस्नाना
केशवि की पूजा प्रति ठानै * पोडश भांति भजै भगवानै

काम क्रोध मद लोभरु माया * तप्त तोय मद मैथुन जाया
निद्रा हास्य मदर्शत बोले * तजि रदधावन झूठ न बोले
राति जागरण करै सुजाना * सुनै कथा हरिकीरति गाना
प्रातक्रिया करि विप्र बोलाई * यथाशक्ति सनमानै भाई
तैलामिष परान्न पुनि भोजन * मैथुनादि तजि द्वादश सो जन
यहि प्रकार जो करै विधाना * ताकर फल सुनिये दै काना

दो० काशी सेवै अब्दशत, अचवै बारि केदार ।
उभय सहस गोदान दे, तीरथ अटै अपार ॥
होम यज्ञ करि शत सहस, विप्र जेमावै कोय ।
एकादशी व्रत के रहे, सम नहि कोई होय ॥

सो० जो व्रत सहित विधान, रहै राखि विश्वास उर ।
आवै अन्त विमान, बसै विष्णुपुर जाइ सो ॥

रोलाछन्द ॥

निराहार फल पूर्ण दुग्धते आधा रहई ।
फल अहार चतुराश कन्दते अठवा लहई ॥
करै उदर भरि अशन अश शतका फल पावै ।
उभयबारते सहस अश फल निगम बतावै ॥
एकादशी के दिवस अन्न खावै जो कोई ।
अथवा देवै काहु दोष ताको बहु होई ॥
बरतकरण परिहरै रहै विषयारस लीना ।
आस आस पर परत ब्रह्महत्या तेहि चीन्हा ॥

दो० दशमी वेधी ना रही, करी द्वादशी वर्त ।
पचालिस तक चाहिये, सठियानी पुनि हर्त ॥

सो० बरष एकके माहि, एकादशी चौबिस परैं ।

सुनौ सबनके नायँ, फल समेत वर्णन करौं ॥
अगहन असित एकादशिकेरा * शयनबोधनी नाम निवेरा
विप्र कहिशत न्याति जेमावै * यहि व्रतसम फल सो नहिं पावै
मार्गपक्षसित मोक्षद नामा * जो रहि पुत्र पाव हरिधामा
तेहिपर यक इतिहास बखानो * ब्रह्मपुराण केर तुम जानो
गोकुल नगर रहै एक राजा * वैषानस अस नाम विराजा
नरक परा पितु स्वप्ने देखा * जागत भा उर खेद विशेखा
राजकाज सुख नीक न लागै * मनविचारिकेहिविधि दुख भागै
पुरुषा जातु अधोगत होई * जीवत वृथा पुत्र जग सोई
अस कहि मुनि अभ्याश्रम आयो * करि प्रणाम निजशोच सुनायो
कहिऋषि तव पितु ते इकबारा * ऋतुवन्ती प्रिय भोग विचारा
सुनि रतिदान दीन नहिं राई * तेहि अघ पस्यो अधोमुख जाई
दो० मार्गशीर्ष सितपक्ष की, एकादशी व्रत स्वच्छ ।
करिदीजै फलदान तेहि, लहै पिता तव मोक्ष ॥
सो० सुनि नृप मन्दिर आइ, करि व्रत दीन्हो दान तेहि ।
पुण्य परम गति पाइ, जय कहि सुर बर्षे सुमन ॥
रहै जो व्रत जस रीति, पावै अन्त विमोक्ष सुख ।
पढै सुनै करि प्रीति, वाजपेयफल सोउ लहै ॥
सत्य झूठ की बात, जानै निगम कि रामजी ।
मोहिं हरि हेत सुहात, अधिकनाम कलिकामतरु ॥

इति श्रीविप्रमसागरसर्वमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतएकादशीउत्पत्तिमार्गशीर्षकृष्णपक्षशुक्लपक्षशयनबोधिनीमोक्षदाकथावर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।

कहाँ वामन पौराण मत. ब्रह्मवैवर्त दखानि ॥
कह शौनक कहिये ऋषिराऊ * पौषअसितव्रत केर प्रभाऊ
कहा नाम किन पूजन कीन्हा * सुनि सुमन्त्र अस बोले लीन्हा
सुफला नाम अहै यहि ताता * जाने अजानि किहे फलदाता
करै सहस जो कन्या दाना * तुले न यहि व्रत रहे समाना
यहिपर एक सुनो इतिहासा * महिषम नृप चन्द्रावलिवासा
तासु पुत्र बड़ भयो अधर्मी * लम्पट चोर मदप हतकर्मी
सुनि नरेश बन दीन निकारी * करै निवाह विहग मृग मारी
पौषकृष्ण हरिवासर बारा * मिला न कछु त्यहिदिवस अहारा
क्षुधित रह्यो चल दल तरसोई * निद्रा लुब्ध भई नहिं कोई
व्रतप्रसाद-ते भा मन पावन * जान्यो आपुहि बशलजावन
आइभवन पितुपद शिर नायो * समय सनह राजपद पायो
अनजाने व्रत कर फल ऐसा * जानि किह नहिं जानो कैसा
जो यह कथा सुने या गावै * कन्या दान दिहे फल पावै

इति श्रीपौषकृष्णएकादशीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, पौषशुक्ल हरिव्रत कथा ।
अब म्वहिं देउ सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

यहि कर नाम पुत्रदा कहिये * अवशि पुत्र फल धारे लहिये
लक्ष्मी नारायण हित सेवै * सयम नियम पूर्व लखि लेवै
याहपर एक कहौं इतिहासा * केतुमान नृप भाद्र निवासा
तेहिके तनय न एकहु भयऊ * यकदिनकार विचार बन गयऊ
देखे तहँ खग मृग तरु नाना * मटत मिले मुनि सोम सुजाना
करिविनतीनिजदुख सबकहेऊ * सुनिमुनिमब्रवीत जस चहेऊ
पौषशुक्ल व्रत पुत्रद नामा * करहु जाइ पूजो मनकामा

भवन चारु ब्रत जेहिउ बृथा * हरिप्रसाद सुत लहेउ अनूपा
जो यह कथा सुनै अरु गावै * मान सम्पति नानाविध पावै
इति श्रीपापमुक्तएकादशीमाहात्म्य सम्पूर्णम ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, माघकृष्ण हरिव्रत कथा ।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

षट्तिलकर नाम षट्तिला अहई * कारे ब्रत नेम निरन्तर दहई
तिल पिण्डन मे हरिहि पधारै * विविध भाति पूजा अनुसारै
तिल पावै तिल विप्रै देवै * ताम पुण्य सुरपुर सुखलेवै
याहि पर यक इतिहास बखानो * रहै पुरम शशि ब्राह्मण जानो
नाना नेम धरत मो ठानै * दान देन मिक्षा नहि आनै
नाहिं चिन्ता हरि जाप आई * दान्ही मृतिका द्विज रिसाई
अन्तकाल त्यहि पुण्य प्रतापू * लहा स्वर्ग शुचिमन्दिर आपू
तहँ धन धान्य कछू नाहिं देख्यो * आपहि महामन्दकरि लेख्यो
हरि मत दयनुन ते भागी * यक षट्तिला पुण्य दुरि मागी
दरश हेतु गत काहू दयऊ * ऋद्धि सिद्धि सब ताके भयऊ
जो यह कथा सुनै या गावै * नम्य अवश्य पुण्य सरसावै
इति श्रीमाघकृष्णएकादशीमाहात्म्य सम्पूर्णम ॥

सो० कह शौनक शिर नाय, माघशुक्ल हरिव्रत कथा ।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

माघशुक्ल हरिवासर केरा * जया नाम अघ हरत सबेरा
यहिपर यक चरणों आख्याना * इन्द्र अप्सरा रहै छबिवाना
नितप्रति सो हरि आगे जानी * मालपुष्पगन्धर्व देखि लोभानी
निरखि निलज शापवश दयऊ * होहु पिशाच जाय द्वय भयऊ
यनुगम रहै सहै दुख नाना * माघशुक्लव्रत किहिनि अजाना

हरिप्रसाद गे स्वर्ग यानचढि * इमि भविष्यउत्तर भावतिपाढि
जो यह कथा सुनी वा कही * करी कृपा तेहिपर प्रभु सही

इति श्रीमाघशुक्लएकादशीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय फाल्गुनकृष्ण हरिव्रतकथा ।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

विजया नाम याहि श्रुति गावै * याके रहे विजय नर पावै
अवधनगर नृपदशरथ के सुत * पितुवच बनगत बन्धुवधूयुत
तहँ जानकी हरी दशकन्धर * मिलि रविसुतहि चढ़े लै वन्दर
दधितटआपु अनुज मनठयऊ * यकदालय ढिग पूछन गयऊ
नाथ कहौ केहिविधि रिपुजीती * सुनि मुनिवर बोले करि प्रीती

दो० फाल्गुनकृष्णविजयअस, नाम एकादशि केर ।
करहु जाय तेहि कृपाते, जितिहौ शत्रु घनेर ॥

सो० आय कीन व्रत राम, रणचढि मार्यो दशमुखहि ।
सिय सोदरयुत धाम, पहुँचत पायो रामपद ॥
कल्पभेद यह बात, वद असकन्दपुराण इमि ।
पढे सुनै जो तात, सो न सहै यमत्रास पुनि ॥

इति श्रीफाल्गुनकृष्णएकादशीमाहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, फाल्गुनसित हरिव्रतकथा ।
अब म्वहिं देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

आमर्दकी नाम यहि जानो * गोशत दिये अधिक फल मानो
धात्री तरु पूजे मनलाई * देइ दान बहु विप्र जेंवाई
हरिसुमिरनजन भजन प्रकाशै * आधि व्याधि दुख दारिद नाशै
याही व्रत कीन्ह्यो सुग्रीवा * तस्य प्रसाद लह्यो सुखसीवा
राजा नल दमयन्ती रानी * यहि व्रत करि भइ विपदा हानी

आमदकी भान दुर्वासा * नृप परतम करि भये निरासा
जो यह कथा सुनै या गावै * पुष्कर मज्जन कृत फल पावै
इति श्रीफाल्गुनशुक्लआमदकीमाहात्म्य सम्पूर्णम ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, चैत्रकृष्ण हरिव्रत कथा ।
अथ म्वाहि देउ सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

पापमोचनी यहि कर नामा * शुभगति लहै किये विश्रामा
यहिपर एक इतिहास बखानौं * भावष्योत्तर पुराण को जानौं
च्यवन पुत्र मेधावी नामा * कै तपस्या विपिन अकामा
इन्द्र डरपि अप्सरा पठायो * हावभाव करि आय डिगायो
रमत वरष बीत्यो पचासी * बोली अह जाव नभवासी
कहमुनिएकलपा जानै डोली * होत प्रात जायो मुनि बोली
कै वर्ष की तब गवि प्रमाना * मुनिहि चेत तब भा दुखनाना
दीन्ह शाप तुहि है अप्सरणी * होहु पिशाची तपक्षयकरणी
मुनि कम्पित है चरणन नई * कीजै कृपा भूल बड़ि भई
कह ऋषि चैतकृष्ण उपवासै * करु हरिवासर ते अघ नासै
सुनि अप्सरा कीन व्रत भारी * है पावन सुरलोक सिधारी
जो यह कथा सुनै या गावै * चन्द्रायणव्रतकृत फल पावै
इति श्रीचैत्रकृष्णपापमोचनीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, चैत्रशुक्ल हरिव्रत कथा ।
अब म्वाहि देउ सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

कामद नाम एकादशि येहा * करत हरत जेहि कलुष सनेहा
याहिपर एक सुनौ इतिहासा * पुण्डरीक नृप सुतल निवासा
गन्धर्वी ललिता ताहि तीरा * क्रीड़त करी नृपान त्यहि भीरा
मदनातुर है गान बिगारा * दीन शाप निशिचरवपु धारा

पतिगतिलखिलज्ञितविलसानी * किकरोमि को गच्छक ठानी
एकदिन कानन कीन पयाना * विद्याशिखर मिले मुनि नाना
पूछे ते निज विपति सुनाई * तिन कह कामद व्रत कर जाई
सुनि व्रत दान ताहि करि दयऊ * राक्षसत्व गत गन्धर्व भयऊ
चढ़ि विमान निजपुर पगुधारा * सुनत कहत अघ दहत अपारा

इति श्रीचैत्रशुक्लकामदामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, वैशाखेसित हरिव्रत ।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

नामवरूथिनियहि मुनिगाइनि * सबसुख रामभक्ति वरदाइनि
विप्र मुख एक यह व्रत करेऊ * जात जागरण हरिमग धरेऊ
बोला द्विज लौटतमोहि खायो * शपथ खाय हरिमन्दिर आयो
करि जागरण प्रात तह गयऊ * जनप्रसाद मृगपति तजि दयऊ
अन्त समय हरिपुर गा सोई * कहत सुनत गोशत फल होई

इति श्रीवैशाखकृष्णावरूथिनीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, वैशाखशुक्ल हरिव्रत कथा ।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

मोहनि नाम काम फलदाई * विष्णुचरण मैं चितलाई
षोड़श भाति महिन अभिलाष * करे प्रदक्षिण जग श्रुति भाष
विष्णुहि चारि अर्घ हरिकाहीं * रविहि तीन चक्रय एकचाहीं
हरि द्विज झूठ विवाद न टानै * गरभाले पादुका न आनै
अंग पृष्ठ उपदिशि वामा * करै न जप तप होम प्रणामा
यहि विधि द्वादश दोष बराई * हरिहि भजे सब पाप नशाई
यहि पर एक इतिहास बखानो * कूर्मपुराण मैं तुम जानो

दो० श्रीरघुनाथ वशिष्ठ ते, कह्यो स्वप्न के माहि ।

देखत हौं मैं दशमुखै, भयवश सूनत नाहिं ॥
कहौं सोव्रत जेहिकरि अघजाहीं * सुनि वशिष्ठ बोले प्रभु पाहीं
राम राम तव धारण करई * ऐसे कलुषी भवनिधि तरई
प्रश्न लोकहित किहेउ कृपाकर * सित वैशाख रहो हरिवासर
सब दुख दोष देत करि हानी * सुनौ एक इतिहास पुरानी
सरस्वती तट सोमवती पुर * बसै वैश्य धनपाल नाम चुर
ताहु तनय बड पापी भयऊ * तस्कर जानि काढि तेहि दयऊ
धूतकर्म करि दिवस बिनावै * जहा तहा गहि पीटी जावै
नृप भय बहुरि बसा बनजाई * खग मृग तहके बधकरि खाई
एकदिन जाह्नवी चलि न्हायो * कौडिन्याश्रमलखि शिर नायो
महापतित मैं किमि अघ नासै * कह मुनि करु मोहनीमुपासै
सुनिव्रत रहत दहत अघभयऊ * दिव्य देह ह्वै हरिपुर गयऊ
जो यह कथा कहै वा गावै * सो व्रत अनेकेर फल पावै
इति श्रीवैशाखशुक्लमोहनीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, ज्येष्ठकृष्ण हरिव्रत कथा ।
अब म्वहिं देहु सुनाय, मुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

ज्येष्ठअसितव्रत अपरा नामा * दोषदलनि दायक मनकामा
एक इतिहास सुनौ श्रुति कहऊ * सत्यवनी एक ब्राह्मणि रहई
हरिमिलनेहितज्यहिंहि पूछै * केहिलावै तजि आमदवृच्छै
लखिलालसातासुलालच मानै * बोले सत्यवनी मनि मुनि
ज्येष्ठकृष्ण अपरांव्रत रहऊ * मिलीसोदपति जाहि तुम चहऊ
करनलागि व्रतसहित विधाना * द्विजन ज्यवाय देइ बहुदाना
तनु तजि अन्तकाल लहि जोई * भई आद सत्यभामा सोई
पुण्यफलन ते पुण्य एक दिन * बुझेसि आपनि बहीकहीतिन

अस अपराव्रत भूधृत गावै * पढत सुनत गोशत फल पावै
इति श्रीज्येष्ठकृष्णअपरामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, ज्येष्ठशुक्ल हरिव्रत कथा।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनिसुमन्त्र बोले हरषि॥
यहि व्रत नाम निर्जला सेवै * हरि पट धेनु विप्र कहँ देवै
द्वादशी दिन पारन करई * सो नर यमयातना न भरई
बरण्यो व्यास भीम ते याही * अन्नअशन नहिं व्रतदिन चाही
यहि तन सो चण्डाल समाना * मरे लहै दुर्गति दुख नाना
बोले भीम करिय कस ताता * बृषभ उदर अन रहा न जाता
तौ तुम एक निर्जला कीजै * बारौ मास केर फल लीजै
सुनि बिधि करन बृकोदरलागे * जातभये हरिपुर तनु त्यागे
जो यह कथा सुनै वा गावै * गया पिण्ड दीन्हे फल पावै
इति श्रीविश्रामसागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतचतुर्दश
एकादशीमाहात्म्यवर्णनोनाम एकत्रिंशोऽध्याय ॥३१॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
बरणौं विविधपुराण की, पुनि इतिहास बखानि॥
सो० कहशौनक शिरनाय, असित अषाढ़ हरिव्रतकथा।
अब म्वहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि॥
महा पुनीत योगिनी नामा * यहि व्रतरहे होइ सिधि कामा
यहिपर एक इतिहास बखानो * विधि वैवर्त केर तुम जानो
अलकापुरी यक्षपति पाली * वटुकहेम रह तिनकर माली
तस्याङ्गना मृगाक्षी नामा * प्रीत्यासक्त रहै वशकामा
शिवपूजन कुबेर नित जाहीं * यकदिन सक पहुँचायसि नाहीं
तब धनपति निजअनुग पठावा * रमत देखि तहँ आय सुनावा

सुनि कुबेर बोले करि रोसा * नुर हेलन कृत देइ भरोसा
यहि अघ कुष्ठ होइ अष्टादस * कहतै भयो गयो कानन तस
सहि कष्ट तब मन पछिताई * मार्कण्डेय लखि निपति सुनाई
कह मुनि योगिन्यामपवासै * करु जेहि पुण्य कुष्ठ तव नासै
सुनि मत्र करत भयो बपुनीका * कहत सुनत सुखप्रद सबहीका

इति श्रीआषाढकृष्णयोगिनीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कहे शौनक शिरनाय, सितअषाढ हरिमत कथा ।
अब मोहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

सुरशयनी यहि नाम अनूपा * ध्यहिधरि हृदय तरिय भवकूपा
मिथुनस्थे अब हरिहि सोवावै * तुलाराशिगत बहुरि जगावै
तत्य पुरः चतुराब्द कि मासा * करै नेम, रहि बरन उपासा
मृदुवादी होवै गुडत्यागी * पुष्प तेल गन्धव सौभागी
कटुक कषाय तजै छवियन्ता * रविगनमयहरि सुमिरणसन्ता
रक्त कण्ठ ताम्बूल नेवारे * पदाभ्याङ्ग वस वाहन द्वारे
माहतापि नृप होय विशोका * पय दधि तजै जाय गोलोका
तजै अन्न सो सुरपुर बासै * लान ते अयनके अघ नासै
हरिमन्दिर मार्जनी जो करई * दीपदान लेपन अनुसरई
काम क्रोध मद लोभ गेवावै * सो सायुज्य मुक्ति नर पावै
जाहेतेहि भांति देइ जो दाना * सो प्राणी होवे धनवाना
नृत्य गान कृष्णालय करई * सो नर भक्ति लहै वर बरई
अम्बरीष पतनी पद्मावति * पुरह रही हरिमन्दिर गावति
दीन लगाय चून निजपानी * तेहिफल भई अवधकी रानी
करि हरिभक्ति गई प्रभुधामा * बहु पुसनकर मारेउ कामा

कहत सुनत तेहि प्रभुनिजजाने * इमि नारदी पुराण बखाने

इति श्रीआषाढशुक्लदेवशयनीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, श्रावणतम हरिव्रतकथा ।
अब मोहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

श्रावण कृष्ण कामिकानामा * सेवत दोऊ लोक विश्रामा
पूजै विष्णुचरण चित लाई * तासु पुण्य कछु बरणि न जाई
गङ्गा गया गोदावरि पुष्कर * वाराणसि प्रयाग मज्जै नर
अन्न पटादि दानदे सोई * यहिव्रत सरिस तदपि नहिं होई
पुण्य बढावनि स्वर्ग निसेनी * यक इतिहास सुनौ सुखदेनी
सुभग सुमन रुकमागद नागा * आवै लेन सुरी सह रागा
यक दिन एक रहिगई भूमा * वृतन्ताक करि लाग्यो धूमा
सुनिनृपमाली ते तह आवा * देहु पठाय स्वर्ग मोहिं भावा
केहि विधि तव सुकृत सरसाई * कामद व्रत दीजे यक राई
कह नृप यहा न जानै कोई * कीन अजान लयावो सोई
तब नृप नगर पिटाई डौंडी * सुनिआई यक बनिककि लौंडी
दीनदान व्रत लहि सुरनारी * चढ़ि बिमान निजलोक पधारी
देखि प्रभाव करन नृप लाग्यो * सुतत्रिय प्रजनसहित अनुराग्यो
छलि मोहनी कठिनवरुयाचा * तदपि तज्यो नहिं हरिव्रतसाचा
प्रणविलोकि हरिदर्शन दीन्हेउ * सलमोहनिहि थूकली कीन्हेउ
इमि ब्रह्माण्डपुराण बखानै * कहत सुनत अघनाशत मानै

इति श्रीश्रावणकृष्णकामिकामाहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, श्रावणसित हरिव्रत कथा ।
अब मोहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

श्रावण शुक्ल पुत्रदा नामा * लहै पुत्र यहि करि अभिरामा

यहिपर एक इतिहास भनीता * माहिषपुर रह नृप महिजीता
पुत्रहीन कछु रचै न नेका * द्विजन बूझि बनगा दिनएका
तहां मिले लोमश कालाना * पूछे ने बोला है दीना
तनुतहि कुष्ठ न पग हमधारे * कहि अब भयो न पुत्र हमारे
कहमुनि पूर्व बनिक तुम रहेऊ * धर्मवान एक दिन जल बहेऊ
तृषित मनुष्य पेत रहै गाई * पीन तहि तुम मारे भगाई
तेहि अवअंगज मिल्यो न दीजे * अब पुत्रदा एकादशी कीजे
सोई श्रवण सुनत गृह आयो * कीन्हो व्रत प्रताप सुत पायो
जो यह कथा सुनै या गावै * गङ्गा स्नान किये फल पावै

इति श्रीश्रावणशुक्लपुत्रदामाहात्म्य सम्पूर्णम ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, भाद्रअसितहरिव्रत कथा ।
अब मोहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

अजिता नाम अस्य प्रदेसा * हृषीकेश पूजै युत प्रेमा
यहिपर सुनु इक कथा पुरानी * नृप हरिचन्द्र रहे बड़ दानी
विधिवश राज्य भ्रष्ट भे नारी * सुत निय देह गई बिकि जाकी
दुर्व्रत जन मृत चले प्रहारी * बोले लखि गौतम दुखभारी
अजिता वरत करो हरिचन्दा * मिटै सकल दुख होइ अनन्दा
सुनि महिपाल तहे व्रत कीन्हा * सुतनियराज्य बहुरि हरि दीन्हा
जो यह कथा सुनै वा गावै * दश गोदान दिहे फल पावै

इति श्रीभाद्रकृष्णअजितामाहात्म्य सम्पूर्णम ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, भादव सित हरिव्रत कथा ।
अब मोहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

यहि हरिवासर पद्मा नामा * सबदुख हरणि करणि सुखधामा
यहिपर एक कहौं इतिहासा * मान्धाता नृप अवधनिवासा

धर्मवान गोजीत अमानी * प्रजाअशङ्क बसैं तहँ जानी
तीन बर्ष जल मेघ न दीना * भग लोग सब सुख ते हीना
नृपहु दुखित है कच्छ सिधावा * मिलिअशङ्करहि सो कष्ट सुनावा
कह मुनियक बृथलो तप करई * तेहि अघ महि जलछीट न परई
करु हत ताहि आज जल बरसे * हिंसा करब न बरु जग झरसे
तोह ते देहु धर्म उपदेशा * नभसित हरिव्रत करौं नरेशा
भले नाथ कहि कीहो आई * प्रजजन हित भै वृष्टि अघाई
सहमम्बित सुन लयो नरेशा * कहत सुनत तेहि मिटन कलेशा

इति श्रीभाद्रपदशुक्लपक्षमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कहशौनक शिरनाय, आश्विनकृष्णहरिव्रतकथा।
अब मोहि देहुसुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

नाम इन्दिरा यहि सुख देनी * नरक निवारण स्वर्ग निसेनी
तापर एक कहौं इतिहासा * इन्द्रजीत नृप महिपर बासा
सविता तस्य अधोमुख रहेऊ * नारद आय भूपते कहेऊ
कह नृप किमि होइहै निस्तारा * बरत इन्दिरा रहो भुआरा
देहु ताहि फल करि नृप दयऊ * त्यागि अधोमुख हरिपुर गयऊ
जा यह कथा सुनै वा गावै * नैमिषक्षेत्र अटे फल पावै

इति श्रीआश्विनकृष्णइन्दिरामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कहशौनकशिरनाय आश्विन सितहरिव्रतकथा ।
अबमोहिदेहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

पापाकुशा नाम यहि जानी * अशुभकर्मनाशिनि सुखदानी
सुनुइतिहास कृष्ण जिमि कहेऊ * चेतन नाम बिप्र यक रहेऊ
बिद्या वित गर्वित नहिं सूझै * आप समान न आनहि बूझै
दो० बिद्या बाद प्रमाद धन, शक्ति सुपर दुख हेत ।

खल सुसाधु विपरीतकरि, ज्ञान दान सुख हेत ॥
विद्या विद्याहरण हित, पढ़न होत खल दूंट ।
चह्यो निकामन मीनको, घुसि आयो गृह ऊट ॥
सो० यकदिन सोवत माहिं, कहेउ मनुष यक नगर में ।
भूप रहेउ है नाहिं, चलु तहँ मिलिहै राज तोहि ॥
चल्यो हर्षि वश मोह, मग नद लखि लाग्यो हलन ।
मध्यनगर सह कोह, चावत जाग्यो सहित दुख ॥
करि विचार कुम्भजपहँ गयऊ * तिन उपदेश यथोचित दयऊ
पढ़ै सुनै का फल सुन येही * करि विवेक हरिपद चित देही
दो० दशरथनन्दननन्दनचरण, कमल अमल अनुराग ।
कोनबढ़्योबादहिपढ़्यो, मढ़्यो मोह मद दाग ॥
आनंद काल मगर तुम होवा * मध्य वयस मह लाव विरोवा
पाप सकुला करि अघ जारा * हरिपद भजि परलोक सुधारा
कौन आइ व्रत बुद्धि प्रकामी * सुमिरन करि भा हरिपुरवामी
जो यह कथा सुनै या गावै * व्रतफल चतुरअश सो पावै
इति श्रीआश्विनशुक्लपापाकुशामाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥
सो० कह शौनक शिरनाय, कार्त्तिककृष्ण हरिव्रतकथा ।
अब मोहिं देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥
रमणी नाम रहै जो कोई * सो नर इन्द्र समीपी होई
गाहि पर एक सुनै आख्यानै * नृप मुचुकुन्द भले व्रत ठानै
सुता तस्य शशिभागा नामा * शोभनपति आवा पितुधामा
छुधित अशननिजनारितेमागा * सुनतकहेउ पतिते शशिभागा
आज अहै हरिवासर नाथा * पशु पक्षी कोइ लहै न पाथा
होत हंस गति कौन अकाजू * बड़ भाग मृत्यु पाई आजू

भावावश त्यागे न्यहि प्राना * हारपुर गा चाढे सुभग विमाना
बहुत कहा कहिये विस्तारी * व्रतप्रभाव सब पुरी उधारी
जो यह कथा सुनै वा गावै * अन्नदान दीन्हे फल पावै

इति श्रीकार्त्तिककृष्णरमणीमाहात्म्य सम्पूर्णम् ॥

सो० कह शौनक शिरनाय, कार्त्तिकसित हरिव्रतकथा ।
अब मोहि देहु सुनाय, सुनि सुमन्त्र बोले हरषि ॥

परबोधिनी नाम यह नीकी * दायक सकल कामना जीकी
यहिव्रत सरिस अपर व्रत नाहीं * अघतमजिमिबलोकिरविजाहीं
जनक नगर इक रूपा रहेऊ * हारानीशि जागिमित्रमग चहेऊ
तेहि प्रसाद मन भई गलानी * तजिआस देह भजि शारंगपानी
वितदत्त्वाग्निल भय सुरबाला * नृत्य गान व्रत करै रसाला
सहित सनेह जपै हरिनामा * ब्रह्मचर्य अस्थित हरिकामा
व्रतप्रसाद सोइ गोपकुमारी * भई अधिक गिरिधरै पियारी
वृन्दावन विहार जग जाना * इत्य वदति स्कन्दपुराना
कार्त्तिक में सुनै सुमन चढावै * हरिहि तासु फल बरणि न जावै
देवोत्थानी हरिव्रत गाता * सुनत कहत फल लहत पुनीता
ये चौबीसौ नाम बखाने * एकादशी के जो मम जाने
विधिवतकरि हरिसुमिरण करई * गोपद इव भवसागर तरई

गीतिकाछन्द ॥

भवतरै गोपद सरिस जो शुचिनेम करि व्रत ठानई ।
पावै बरत षटअशफल जो कथा सुनै बखानई ॥
कलिकाल पापपयोधि जपतप योगमख आश्रम तजै ।
रघुनाथदास प्रतीतिते सतसंग करि रामै भजै ॥

दो० रामभजन बिन कर्म जो, सोसब तुच्छ लखात ।

यथा शुद्ध दशगुण चित, अङ्ग गत्र नहि जान ॥
एकादशी वरदानि तोहि, मानु याचि सब कोइ ।
लखो कामफलदेहु मोहि, राम चरण रति होइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसमतआगरप्रथउ नागरधीरघुनाथदास-
गमसनेहीकृतचौथोमोएकादशीमाहात्म्यवर्णनो
नामद्वात्रिंशोऽध्याय ॥ ३२ ॥

दो० सुमिरिरामसियमन्तर, गणप गिरा सुखदानि ।
कार्तिक माहात्मम यथा, कहौ इतिहास बखानि ॥

पुनि शौनक बोले मृदु बानी * कहिअविधिभई तुलसिका जानी
विष्णु शीश धारी केहि हेता * यही कहौ प्रभु कृपानिकेता
कथा सूत मुनिये ऋषिराई * विष्णुपुराण कहत इमि गाई
तुलसी नाम रहै एक नारी * तेहि हरिदेत कीन्ह तपभारी
हू प्रसन्न आये भगवाना * बोले सुमति मागु वरदाना
देखि रूप बोली कर जोरे * पति हू सदा रहौ उप मोरे
सुनि लक्ष्मी तापर कर कोहू * दीन्हो शाप विटपजड़ होहू
कमलहि शाप दीन तेहि एहा * बसहु जाइ तुम नीचन गेहा
सुनत बचन तुलसी मे कहेऊ * विटप होउ तुममम प्रियरहेऊ
मैं धरि शालग्राम शरीरा * रहिहौ ममसि सदा तव तीरा
प्रथमगण्डकी कामिनि यकपूर * तपकारमागिम बसिय सदाउर
मैं कह चरित होउ यहि भोरे * शिलारूप बसिहौ उर तोरे
एक कल्प इस श्रुति गाई * दूसरि विधि अब सुनो सुनाई

गीतिकाछन्द ॥

इकबार शिव मगजात सुमिरतनाम तहँ बासव रहेउ ।
लखि कहेउ योगी होहु ठाढ़े चित्त भव मारग गहेउ ॥

तब इन्द्र दर्पित धाइ आइ रिसाइ अम बोलत भयउ ।
माने कहा नाहिं मोर तैं शठ हेरि हम तन चलि दयउ ॥
सुनि यक्ष बचन महेश क्रोधित नयनतीसर ते तहां ।
प्रकटी अगिनिकी ज्वाल तीक्षणजरन हरिलाग्योमहां ॥
ह्वै विकल बासव गिरेउ चरणन त्राहि त्राहि पुकारेहू ।
लखि दीन शम्भु कृपाल पावक तोयनिधि महँ डारेहू ॥
त्यहि बृहदते तहं भयो बालक सिन्धु सुतकरि पालेऊ ।
विधि आइ कीन्ह्यो कर्म मानहुं धरि जलंधर चालेऊ ॥
गतकाल कछु भा तरुण वृन्दा नाम नारी पायऊ ।
सो कालनेमि कि सुता मन बच कर्म पतिपद ध्यायऊ ॥
दो० भयो जलंधर प्रबल अति, जीतिजगतबशकीन्ह ।
निशिचरपतिह्वै निशिचरन बासजहां तहं दीन्ह ॥
एक दिन सभा बैठ रहे सोई * सकल समाज आपनी जोई
गह कबन्ध देवि अम कहई * शीश तोरि केहि काटा अहई

दो०छं० ॥

सुनो नाथ इक समय देव दानव सब आये ।
मथ्यो सिन्धु गिरि डारि रत्न चौदा तहँ पाये ॥
कामधेनु गज अश्व कल्पतरु विष शशि जानो ।
धनुष धन्वन्तर कम्बु रमा रम्भा पहिचानो ॥
कौस्तुभमणि वारुणी सुधा ये चौदा कहेऊ ।
दिये बांटि हरि सुरन मास मधु अमृत भयऊ ॥
तेहि हित श्रीभगवान मोहनीरूप बनायो ।
निकट आइ सुर असुर उभय पातिन बैठायो ॥
बाटन लागे आपु सुरा दैत्यनकहं दीन्हों ।

देवन पायो पियुष तहां उठि मोहू पी हौं ॥
रविशशि दिहिनिवताइ त्रिष्णुकाट्या शिरमोरा ।
देवासुर संग्राम भयो सागरतट घोरा ॥
ऐरावत सुरधेनु कल्पतरु रम्भा चारी ।
लैगे वासव स्वर्ग सम्पदा सकल तुम्हारी ॥
सुनि निश्चरपतिदूत सूतदिग तुरत पठायो ।
जाइ कहा चरदेहु वस्तुजो दधिकी लायो ॥
दूत वचन सुनि शक्र कह्यो जा निजपति तीरा ।
लेइआइ अब वस्तु होइजो अति बलवीरा ॥
करि महिमण लराज जीति नरभावरण्डा ।
अब आवै चढि समर करौं तेहि तन शतखण्डा ॥
दूत जलंधर पास आइ सब हाल सुनावा ।
यातुधान सुनि कोपि कटक लै आतुर धावा ॥
अमरावती गरेरि इन्द्र बहुकीन लराई ।
मरै न मारे असुर सुरनयुत गयो पराई ॥
तब हरिसन्मुखजाइ विविधविधि विनयसुनाई ।
दुखित जानि भगवान दनुजते कीन लराई ॥
भे व्यनति कछुकाल समरलखि रीझि मुरारी ।
कह्यो जलंधर मांगु होइ रुचि जौन तुम्हारी ॥
जो मोपर परसन्न नाथ दीजै वर येहा ।
कमला के संयुक्त बसौ तुम हमरे गेहा ॥
एवमस्तु कहि कृष्ण कीन तेहि गृहा निवासू ।
शोभा तिहुँपुर केरि आइ तहँ कीन प्रकासू ॥
तब वासव ह्वै विकल गये चतुरानन तीरा ।

कह्यो सकल दुख रोइ सुनत विधि दीन्हों धीरा ॥
नारदते तब कह्यो जलंधर बली अपारा ।
मरण तासु शिवहाथ अपरते मरी न मारा ॥
जो शङ्करते वैर करै तौ सुर सुख लहई ।
सुनिनारद पितु वचन दनुज जहँ आये तहई ॥
लखि मुनि दीन अशीश नाइ शिर नृप बैठारा ।
बोलो बीणा धरण आजु कितते पगुधारा ॥
सुनि नारद बोले निजकाजू * हम कलास गये रहे आजू
तहा करत त्रिपुरारि विहारा * शीश जटा उर नरशिर हारा
नग्न अमङ्गलरूप विशेखी * तहा नारि यक सुन्दर देखी
इन्दुबदनि मृगनयनि विराजै * रति शतकोटि देखि छविलाजै
जोहके घर ऐसी त्रिय होई * तेहि समान जगमें नहिं कोई
सुनि नारदके बचन सुरारी * लीन राहु का तुरत हँकारी
बोला शठ शङ्करपह जाऊ * कह्यो देहु त्रिय जो भल चहऊ
क्षिप्र राहु शङ्कर पहँ आवा * निजपतिकर सन्देश सुनावा
सुनि महेश कियो क्रोध कराला * कीरतिमुख प्रकटेउ ततकाला
गदापाणि दृग अतिभयकारी * डरपि राहु बहु विनय उचारी
सुनि पशुपति तब दीन बचाई * आवा जहा निशाचर राई
सब वृत्तान्त तहा कर कहेऊ * सुनि सागर सुत उर अतिदहेऊ

गीतिकाछन्द ॥

उर दह्यो तुरते सयन सग अपार लै शठ धायहू ।
बहु होत अशकुन गुनत नाहिं सो शम्भु सन्मुख आयहू ॥
षटबदन आदि गणेश भूत पिशाच भिरे प्रचारिकै ।
द्रुम अस्त्र शस्त्र चलाइ एकहि एक डारत मारिकै ॥

कोउ परे कहरत धावबम कोइ शीशविन जहँ तहँ फिरैं ।
कोउ मारु मारु पुकार कोउ यक बाण लागत महि गिरैं ॥
यहि भाति कीन्हो युद्ध शिव शशिमास तब हुहस्यो हियो ।
ह्वै श्रमित गिरिजानाथ हरिको ध्यान समरै में कियो ॥
नाथ हरौ मम सङ्कट भारी * तुरत प्रकट तहँ मुरारी
बोले हरि तुम सुनो पुरारी * पातव्रता है याकी नारी
तेहिप्रभाव खल जीति न जाई * करहु कि काहु न कोटि उपाई
ताते यहि आड़ो कछु बेरा * मैं व्रतभग करौं तेहि केरा
असकहि यती स्वरूप बनायो * गुहा निकट वृन्दा के आयो
उदित भूमि तरु द्वारे पाई * बैठे आसन रुचिर बनाई
तेहिरजनी रज निशिचरनारी * देख्यो स्वप्न भयकर भारी
मनो जलधर खर आरूढा * मुण्डित शिर गा दक्षिण मूढा
चौंकिपरी व्याकुलअतिशोचा * प्रातभये गृहकाज न रोचा
क्षण द्वारे क्षण भीतर जाई * यती बिलोकि विष्णुपहँ आई
शीश नाइ निजस्वप्न सुनावा * कह हरि सुरहित अवसर पावा
सुनु वृन्दा पुराण अस कहई * अस स्वप्ना दुखदायक अहई
तव पति समर शम्भुकर आजू * मरी अनन्द करी सुरराजू
तोहक्षण माया करधरशीशा * गिरा आइ आगे तेहि दर्शा
विविधविलापकिहिसिपतिचीन्हा * जरिहौं सग चिता रचि लीन्हा
कह हरि वचन मानु यकमोरा * तौ अबही पति जीवै तोरा
रुण्डमुण्डधरि वसन ओढाई * सुमिरौ निजमत धरी अढाई
यहउपायकरिसुनि तेहिकिहेऊ * वानअर्द्धधरि दर्शपट दिहेऊ
उठ्यो जलधर माया केरा * वृन्दहि तब सुख भयो घनेरा
मायाधीश चरण शिरनाई * गई तुरत निज मिलै लवाई

काढ़ि अशन कछुताहि खवाई * पौढे दोउ परयङ्क बिछाई
कीन विहार छूट मन तासू * भयो तेजहत दनुज उदासू
तब शिवसमर जलन्धर माझो * शिरभुजजहँ वृन्दा तहँ डाझो
माया का पति गयो बिलाई * मर्म जानि तहँ हरि दिग आई

घरीछन्द ॥

बिष्णु चीर । देखि धीर ॥ क्रोध कीन्हि । शाप दीन्हि ॥
बरवैछन्द ॥ छल्यो मोहि तुम धरिकै यती स्वरूप ।
होउ मनुज अब जाय चराचर भूप ॥
तहां मोर पति होई प्रबल मुरारि ।
यही रूप धरि हरिहै नारि तुम्हारि ॥
दो० अमकहि चिता सवारि बर, बैठि जरी पति सङ्ग ।
तासु भस्म लै रमापति, लपटाई निज अङ्ग ॥
सो० इहाशक्र सुखपाइ, सुरगण मुनि दिग्पाल मिलि ।
उमानाथ पहँ आइ, लागे सब अस्तुति करन ॥

तोटकछन्द ॥

प्रणमामिभवंभवभयशमन । करुणामृत सिन्धुकलिदमनं॥
निरपुण्यगुणाअमककरण । जय श्रीशिव संकटके हरण ॥
अबिकल्पकलानिधि बेदविभु । सर्वज्ञ सदा परमीश प्रभुं ॥
चिदकाशक नित्य निरावरण । जय श्रीशिवसंकटके हरणं ॥
निरवश निराश्रय साधपुप । अबलाखेडपारअजाअदुख ॥
शनशीलगुणाकरक अरणं । जय श्रीशिव संकटके हरण ॥
अतुलित बलवीर्य विरक्तबरं । गुणज्ञान गिरा गोतीतपरं ॥
मदमोहनिशा दरणं तरणं । जय श्रीशिव सकटके हरणं ॥
हरिकुन्दकपूर समासुतण । सब भस्म विभूषित भूरिगणं॥

छवि केन्द्रप कोटि दिवाकरणं । जय श्रीशिव संकटकेहरणं॥
मृदुमौलि जटामधि गङ्ग बमै । बरबाल छपाकरभाललसै॥
त्रयअम्बक शूलकरं धरणं । जय श्रीशिव सकटके हरणं ॥
उरमुण्डहस्तकाम्बरव्यालचमं । श्रुति कुण्डललोलकपोलधमं
शुकघ्राण शरीरनमिन्दुवरण । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
डमरूकर कण्ठ भु गछजै । चरणाम्बुज चिन्तत दुःख भजै॥
भव आरण तारणककरणं । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
सुर सन्तकबन्धजगोपलनं । भखभाववनागहरिं दलनं ॥
भुजदण्डप्रचण्ड क्षय करणं । जय श्रीशिव संकटकेहरणं ॥
वृषभध्वजवाहनभूतिमिशं । गिरिनन्दनिराजितबामदिशं ॥
प्रणपालक घालक दुष्टजनं । जय श्रीशिव संकटके हरणं ॥
नहिं ध्यावत जीवतुम्हे जबलों । दुखपावत जावतहैतबलों ॥
जग श्रीदरदानि उमारमण । जय श्रीशिव सकटके हरणं ॥
रघुनाथ कहे सुनि क्रोधगयो । तुरंत गौरीश प्रसन्न भयो ॥
सिद्ध रुद्रएकादश जोपि पढै । दुखदैन्यनशै सुखभूरि बढै ॥
यहिविधि विनय कीन्ह असुरारी * तब निन ते बोले त्रिपुरारी
सुनहु सकल सुर वचन हमारा * विष्णुकृपा में निशिचर मारा
चलौ चलौ अब तिनके पासा * आये चलि जहं रमानिवासा
अमरण यतारूप प्रभु देखी * पृथक पृथक करिविनयविशेखी
रहे अधोमुख तब भगवाना * मनाहे माहिं देवन सनमाना
हरिगाते देखे सुरनदुख पायो * तब महेश विधि युक्ति उपायो
बोले उमा पद्मा जद्मानी * कयो प्रसन्न करहु हरिजानी
सो० प्रभु आज्ञाशासन मानि, गई तिहू भगवान पहँ ।
ले आरति निज पानि, कीन्हों हरिगुण गान कछु ॥

पुनि भारी भस्म जल लयऊ * धरो मही तरुधात्री भयऊ
देखि भवानी वेसे ठाना * यतीवेल उपजी जग जाना
कीन इन्दिरा सोइ उपावा * अजगन्धा तुलसी तरु पावा
शीतल छाह सुगन्ध लही जब * है प्रसन्न हरि खोले दृग तब
वृन्दा तनु तुलसी भे आई * हर्षि विष्णु निज शीश चढाई
अधम निशाचरपति मन कीन्हा * हरिछाल ताहि उत्तमपद दीन्हा
देखि दव छांव हने निशाना * तुलसिहि अतुलपूज्यअनुमाना
विष्णुप्रयाकालकलुपनिक दानि * जयजयजयतुलसी जगव दानि
तव प्रभु सब देवनने कहेऊ * परमप्रीति वृन्दावश भयऊ
तेहितनु पाय तुलसि कर रूपा * गयो विरह सुख भयो अनूपा
लक्ष्मीवास हृदय मम अहई * तुलसी सदा शीशपर रहई
जो मन क्रम याहि सेवन करिहैं * सो कृतान्तपुर पांव न धरिहैं
दलकरि प्रीति जो ममाशररावी * तुलसी मिश्रितभोजन चाखी
दीपदान देई जो कोई * कोटि यज्ञफल तिन का होई
कण्ठ लग्न जो तुलसी धारी * सो सब काल शुद्ध विन वारी
तस्य दरश भे जानहु मेरो * करौं सदा हौं जन उर डेरो
तुलसी धारि करी शुभकर्मा * वढी सो अधिक कोटिगुणधर्मा
नर वा नारि जो ममव्रतधारी * सो तुलसास्त्रककर अधिकारी
तुलसी सदा नाम मम ध्यावे * तासु पुण्य कहि कापै जावे

दो० तुलसी धारकमात्र जो, होई भक्ति विहीन।
सोऊ पूज्य है विप्र कहँ, और कहा नर दीन॥

कु० तिलक दाम धरि देखिके, करी जो निन्दा तासु।
सो मलेच्छ जाता अशक त्यागी सङ्गति तासु॥
त्यागी सङ्गति तासु दोष नत लागी भारी।

ज्यों हरहट के सङ्ग, जाइ कपिला गो मारी ॥
मारी गो जिमि जात, तिमि यमगण दहैं दुखदिलका
प्रमुदित ह्वै जा सुनै सोउ जान्या दुष्टनको तिलक ॥
दो० तुलसी स्रक धारे विना, करी जा भाजन अन्न ।
पग्म अपावनि पाथसो, लख्यो न जनु नरतन्न ॥
जेहि आदर मैं देउँ जग, तेहि निदरे अस कौन ।
भूपवचन परिहरि प्रजा, बसै कि सा सुखभौन ॥
श्रीमुख बानी शीशधरि, गे सब निज निज थान ।
कार्तिक महातमकी कथा, यह मे कीन बखान ॥

इति श्रीविश्रामसागरसत्वमतआगरअयउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतश्रीतुलसीमाहात्म्यवर्णनानाम
त्रयस्त्रिंशोऽध्याय ॥ ३३ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
वर्णौं भारत की कथा कल्कवृत्तान्तबखानि॥
सुनि शौनक बोले मृदुबानी * रायधर्मिष्ठर मख जब ठानी
तामें अचरज भयो जु कोनू * मोकहं नाथ सुनावो तोनू
करहंसछन्द ॥ हँसि कह्यो सूत । जब धर्मपूत ॥
कृत करणलाग । है बालविभाग ॥
तब सब मिलि बोले आमिबानी * पूरण मखभइ केहिविधिजानी
घण्ट एक तब कृष्ण बधाया * भाजनकह द्विजात्रपुलपुलायो
जेइ विप्र खारिका जब लयऊ * घण्ट विप्र कछु शब्द न भयऊ
बोले कृष्ण प्रणत हितकारी * यज्ञहीन भइ भूप तुम्हारी
ताही समय नकुल इकआवा * लोट्यो तहं जहँ द्विजनअचावा
भयो न सब बपुष हरि तासू * तब तौ मन कारलान उदासू

बहुरि पुकारे सभामहँ कहई * मिथ्या यज्ञ भूप तव यहई
विप्र एक मेतुवा मख कीही * तेहिसम अपरयज्ञ नहिं चीन्हीं

दो० सुनत सभाके लोग सब, नकुलै निकट बुलाय ।
पूछ्योद्विजमम्वाकिम्किरी, सो अब कहौ बुझाय ॥

सुन तव अचरज रूप लखाई * सुनि न्योरा बोला हरषाई
मेतुवायज्ञ भई जेहि राना * कहौ सुनौ नृपसुनि करि प्रीती
द्विज एक कुरुक्षेत्रमहँ रहई * नाम शिलोचन तेहि सबकहई
पूत पतोहू अपना नारी * चारिहुनका हरिभक्त पियारी
शीला की बृति करि तन पोषै * प्रथमै साधु विप्रकहँ तोषै
यहिविधि करत गये बहुकाला * एकबार तह पर्यो दुकाला
पशु पक्षी सब भये दुखारी * लङ्घन करि निकर नर नारी
कठिन विप्रहूको अति जाये * बीनन जाइ अन्न नहिं पाये
चुनिचुनि धरत मासयुग गयऊ * तीन पाव तव इकठे भयऊ
सोइ भुजाइ मेतुवा बनवायो * तामे चारिउ भाग लगायो
धर्म वैश्वा रूप बनाई * आये तुरत जहा द्विजराई
देखि शिलोचन पद शिरनायो * आदर करि आसन बैठायो
चरण धोय मेतुवा धरे आगे * कितने धर्म ग्यान तव लागे
आपन भाग जेइ जब लीन्हा * क्षुधा न मिटी छिजहु निजदीन्हा
सोउ पाय पर तृपित न भयऊ * तव द्विजशीशनाइ निजलयऊ
चतुरनारि पतिकी गति जानी * बोली वचन धर्मनयसानी
है पति भाग मोर तो दीजै * क्षुधित न जाइ जात सो कीजै

दो० सांची प्रीति पिछानि कै, सोऊ भाग द्विज दीन ।
भयो न पूरण मन्त्र लखि, बोला पुत्र प्रवीन ॥

रोलाछन्द ॥

अहो पिता अब भाग मोर ले सन्त देहू ।
करहु परण यह पूर जाइ चह तन धन गेहू ॥
सुत यद्यपि तुम बड़े तदपि मोहि पालन योगू ।
भयो वृद्ध मैं तुम्हें अब करना सुख भोगू ॥
ताते पोषहु देह ज्यों बहु वर्ष लगे जेहि ।
धर्मविना जो जिये पिता जग मृतकजानि तेहि ॥
सबै धर्म तन गये ताहि जीवत पहिचानो ।
असकहि दीन्हो भाग भक्ष खाये न अघानो ॥
पुत्रबधू जियजानि दीन निजभाग मगन होइ ।
भयो तृप्त तब सन्त वचन बोल्यो ऐसे मोइ ॥
हे द्विज मैंहो धर्म लेन आयो नव अन्ता ।
देखि गयो हिय हारि नहीं कोउ तुमसम सन्ता ॥
अब तजिकै मृतलोक बसो चलि हरिपुर भाई ।
घटी न तुम्हरी पुण्य और दिन दिन अधिकाई ॥
नाही समय विमान देवगण तहँ ले आये ।
जयजय कहि सुर सुमन सुमन द्विजपर बरषाये ॥
लीन्हो चढ़ुन चढ़ाय जाय हरिपुर महँ राख्यो ।
देख्यो धर्मप्रताप किहे ऐसा फल चाख्यो ॥
जित अँचवा रहँ अतिथि तहां मैं निकस्योधाई ।
भयो अर्द्ध तनु स्वर्ण सर्वजल रहा न राई ॥
गी०छं० ॥ हमरी उमिरिमहँ और दूसरि यज्ञ वैसी ना भई ।
जहँ हो लख्यो फल अछत आधी देह हरिकी ह्वैगई ॥
तब ते फिरैं बहु तीर्थ यज्ञन सर्व काहूना कियो ।

इहनौ यही उरधारि लाख्यो मेटि नहि खोटपनदियो ॥
दो० सुनि न्याराके बचनन्रप, शोच कीन्ह मनमाहि ।
पूछिनि प्रभुते यज्ञ यह, पूरण भय कत नाहि ॥
सुनत कृष्ण बोले हरषाई * यही भेद मैं कहौ बुझाई
याहेममा न वैष्णव नहिं आयो * ऋषिसमूह मिलिजहँतहँखायो
जो तुम कह्या, भक्त ये नाहीं * है परिजात गर्भ इन माहीं
कुल विद्या महत्त्व छबि ज्वानी * पाच कोट ये भक्त के जानी
इन ते भक्त न नेरे आवत * अतिसुकुमारि देखि डरपावत
तेहि त निरअभिमान जो होई * पूरण चहो जेवावो सोई
ऐसे भक्त कहाँ हम पाई * तवपुर हो तौ देहु बताई
बालमीकि श्वपचा बड़ साधू * लावहु जाइ सहित अहलाधू
सुनि प्रभु वचन युधिष्ठिर धाय * करि सन्मान भवन लैआय
परसे अशन द्रौपदी नाना * सो सब भक्त एकमहँ साना
पञ्चाली लाख कृत अनुमानै * सूपच रस स्वाद का जानै
तेहि जेवत पर घण्टा बाजा * एकै बार खुशी भा राजा
बासुदेव मन विस्मय आवा * बारक बार शब्द सुनि पावा
ग्रास ग्रास पर चहिये बाजा * अस विचारि बोले यदुराजा
सभालोग सब सत्यहि भाख्यो * यहिअवसर दुराव जानिरार्यो
क्षोभकीन्ह केहि हृदय विशेखा * बढ़ि मान्यता भक्त के देखी
निज उर बान द्रौपदी कहेऊ * सुनि हरिउचहु दोषगइगहेऊ
चलदल ज्ञान पुराण ते होई * सुर नर मुनि पूजन सबकोई
तुलसी स्वच्छ चहै तह जामै * तिमिममजन पावन सबठामै
बरत नाम हरिवासर अहई * नदीनाम सुरसरि श्रुतिकहई
देहनाम जिमि रमानिवासा * बरण नाम तिमि मेरे दासा

अच्युतकुल निजजन्म निरीक्षा * मातृयोनि जनु लीन परीक्षा
ताने ऐसी कबहुँ न कीन्ह * चलौ भक्त ते पूछै लीजै
सत्रामोलि आइकही असिबानी * डरिउ क्यों एकहि मह सानी
बोले भक्त भोग भगवाना * लागि गयो सब भयो समाना
पावत परत स्वाद अनुमानो * यहि तें मैं सब डारि साना
सुनि जन वचन हर्ष उरछायऊ * भक्त जेइँ जब अचवत भयऊ
नकुल जाय परसाद सो पावा * सकल शरीर स्वर्णकर भावा
सकल समाज दोख अस कहई * अमित प्रभाव भक्ति कर अहई
द्वादश कोटि रहे द्विजभूरी * श्वपच भक्त न भे मख पूरी
बहु सुनि थ पम्पासर कच्छा * शबरी पदरज ते भा स्वच्छा
कुम्भजन्यास आदि मुनिनाना * हरिभाज को नहिं भयो महाना
तब सुजाति रिपु पूछै लीन्हा * केहिगुणवश तुमकहँ वश कीन्हा
सुनहु धर्मनन्दन करि नेहा * मोहिंजनसमनाहिं प्रियानिजदेहा
तब पुर परमभक्त यह नेमा * सुनहु तासु वरणों जप नेमा

गीतिकाछन्द ॥

जप नेम संयम करहिं ध्यान अमान सदा रहावहीं ।
सम शील सत सन्तोष दया विचारि क्षमा गहावहीं ॥
छलहीन इन्द्रीजीत उर वैराग मद मोहै तजै ।
गत काम क्रोधरु लोभ भय मोहिं छोड़ि आनै नाहिं भजै ॥

दो० ममगुणगावत पुलकितन, ममजनसों अतिप्रीति ।
तेहिते मैं वहि वश रहत, अभ्यागत की रीति ॥
यहि प्रकार रघुनाथ हरि, भाष्यो भक्त प्रभाव ।
सुनत युधिष्ठिर के भयो तब भक्तन पै भाव ॥

सो० पुनि बोले कर जोरि, वर्णाश्रम के धर्म प्रभु ।

सुनने की रुचि मोरि, भक्तिसहितसो बरणिये ॥

वीरछन्द ॥

सुनिप्रश्न । वदकृश्न ॥ द्विजधर्म । करकर्म ॥

दो० सन्ध्या भजन होम जप श्रुति पठनार्चन देव ।
क्षमा तोष द्विजधर्म यह, अभ्यागत की सेव ॥
क्षमातेजबलअचल कलि, अति उदार द्विजदास ।
ये गुण जती केर फुर, उर मेरो विश्वास ॥
आस्तिकबुद्धि विनीतव्रत, दानोद्यम आरम्भ ।
ये लक्षण नर वैश्य के, विप्र भक्त निरदम्भ ॥
तिहु वरण की सेव करि, जो पावै सो लेइ ।
सत सन्तोषी कपट बिन, शूद्र धर्म है येइ ॥
मिथ्यावाद अशौच अरि, नास्तिक कुटिल कठोर ।
ये लक्षण नर नीच के, कामी क्रोधी चोर ॥
सत्य क्षमा परस्वार्थ रत, राट मद मार कुकर्म ।
तृष्णा बिन चहुँ वरण के, ये साधारण धर्म ॥
अपने अपने धर्म करि, अन्त अमरपुर जाइ ।
वरणभ्रष्ट भोगै नरक, अब सन आश्रमराइ ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इन, तिनहुनको विधिएक ।
गर्भाधानादिक सकल, संस्कार कर नेक ॥
क० जनो भय गुरु पास रहि, पढ़ै वेद पद सेइ ।
दण्ड कमण्डलु मृगचरम, माल मेखला लेइ ॥
माल मेखला लेइ, वैश्यनरा बिन्दु न त्यागै ।
सन्ध्योपासन शौच, कारा नीनो अनुरागै ॥
रागै नाहिं जगमाहिं, लघु यज्ञान्कर रत्याग्रगा ।

ब्रह्मचर्य के धर्म, ये ममसम मातै गुरुजनां ॥
ब्रह्मलोक जो चहै तौ, रहै यहीं पथ माहि ।
कामी कामिनि केर सँग, भूलेहु ठानै नाहि ॥
भूलेहु ठानै नाहि, चहै जो होन सकामा ।
तौ श्रुति पढ़ घर आइ, करै युवती अरु धामा ॥
धाम मांझ जप दान, मख करत रहै श्रुतिधर्म ।
यज्ञ करावन दत, ग्रहण वेद पढ़ावै ब्रह्म ॥
पर ये तीनों आइ इमि, जिमि पावक को नीर ।
ब्रह्मतेज नहिं रहत है, तेहि त्यागत मतिधीर ॥
तेहि त्यागत मतिधीर, सिलोकरि तन निरवाहै ।
ममसुमिरण ममध्यान, अन्त मेरो पद लाहै ॥
लाहै क्षत्री यह करै, पालन सबको वरि ।
रण सन्मुख मरि जाय, नहिं घर घर उपरि ॥
गृहवासी को धर्म तिन, करै पांच मखभेव ।
प्रथमपाठकरि ऋषिजजप, बहुरि होमकरि देव ॥
बहुरि होम करिदेव, भूतबलि श्राद्ध ने पीनर ।
अन्न नीर ते अतिथि, कहां शत्रु कहँ मीतर ॥
मित्र मानि सब काहु, समझि काहुहू न दुखावै ।
मिथ्या जानै जगत, कुटंब पन्थी ठहरावै ॥
मिले न मुद गत शोच, रहै पाहुन समतासी ।
करै सदा मम भजन, तरै सो वसि गृहवासी ॥
जब जाको विपदा परै, वैश्य वृत्ति सो लेइ ।
जब मिटि जावै आपदा, तब आपनि गहि लेइ ॥
तब आपनि गहि लेइ, एक सुत भेव न जानै ।

चहौ रहै घर माहिं, मुक्ति अस गेही पावै ॥
पावै सोइ तमद्वार, होय जो जग आसक्ता ।
मैं मै करि कुल सजै, भजै नाहिं मेरो भक्ता ॥
भक्ता के गुण नाहि, आहिं उर खल लक्षण सब ।
अन्तसमयपछितात, जात किरतान्त तीर जब ॥
यहिविधि बरष पचास रहि, तब जावै बन माहिं ।
ऋतु ऋतु को तप करै तहँ, कचनख नाखै नाहि ॥
कच नख नाखै नाहि, निरस है भोग बिसारै ।
कन्द मूल फल खाइ, पौष प्राणायम धारै ॥
धारै बलकलबसन, रमनहित आवै ऋधिसिधि ।
छुवै न बानप्रस्थ, केर लक्षण है अति बिधि ॥
बन बसि होइ पवित्र मन, तब लेवै सन्यास ।
दण्ड कमण्डलु धारिकै, करै इकान्त निवास ॥
करै इकान्त निवास, सुधाहित पुरमे आवै ।
द्विजघर चुटकी सात, मागि मग्गिसरतट जावै ॥
जाइ करै तहँ पाक, प्रथम कछुभाग निकारै ।
की देवै लखि पशुहि, किंवा त्यहि जलमा डारै ॥
डारै पगमग देखि करै, मम सुमिरणशुचितन ।
यह लक्षण संन्यास, नहीं तो भेषबहुतबन ॥

दो० परम धरम सन्यास करि, लहै परम पद हंस ।
परदशविधिके बिप्रलखि, लेइ तीन कर अंस ॥

कुं० तत्त्वज्ञान जब होत तब, छूटि जात सब मान ।
यद्यपि हृदय अतिबुधितदपि, बरतै बाल समान ॥
बरतै बाल समान, ध्यान मेरो मन माहीं ।

क्षुधा तृषा तप शीत तिन्हें कछु व्यापै नाहीं ॥
नहिं मद माया मोह, भय निरंकार दृढ़मत्व ।
जीवत मृतक समान, यह परमहंस करतत्व ॥
दो० परपददायक धर्म यह, परमहंस पद श्रेष्ठ ।
जो ये लक्षण होयँ नतु, भयो जानिये भ्रष्ट ॥
हे नृप जे मम भक्त हैं, रहित बासना चित्त ।
तदपि करैं शुभकर्म कि, जग कल्याण निमित्त ॥
जैसे सविता के विषे, अन्धकार नहिं लेश ।
तदपि करत परकाश जग, परमुखहित उपदेश ॥
यह नृप भक्तन के शुभकर्मा * यह देव सर्वोपरि धर्मा
छनिगिरिवर बोले लखि प्रीती * सुनहु अब भक्तन की रीती
मेरी कथा सुनै अरु कहई * सहित सनेह नाम मम गहई
पूजा में अति निष्ठा धारै * विविध भाति अस्तुति विस्तारै
वन्दन करै प्रदक्षिण देई * साष्टाङ्ग चरणामृत लेई
सब भूतन में मोको जानै * मम जन तेहि मेरो तन मानै
मेरे हेतु करै सो करै * मो बिन जीव नाहि परिहरै
मेरे हेतु अरथ सब त्यागै * आठहु भोगन ते वैरागै
योग यज्ञ जप तप अरु दाना * शयनासन भोजन जल पाना
इत्यादिक सब मम हित करही * जाते अन्तर सो परिहरही
सदा आप को माहिं निखेदे * प्रेमशस्त्र ते ग्रन्थिहि छेदे
मुक्ति भुक्ति की करै न आसा * तिनके हृदय करौं मैं वासा
ऐसो जब मम भक्तिहि लह्यऊ * तब अवशेष न कछु रहि गयऊ
प्रेम भक्ति हृदय जेहि नाहीं * ते सब धर्म अधर्म कराहीं
भक्ति स्वतन्त्र चारि फलदाता * सकलजीवसुखप्रद जिमि माता

विरति विवेक ज्ञान विज्ञाना * होत तुरत त्यहि करत सुजाना
सोइ शुचि साधु सुघरवर सोई * यस्य भक्ति मम किंचित होई
जिन ममभक्ति हृदयमह धारी * सब सुधर्म्म के ते अधिकारी

दो० बरणाश्रम कर मानयदि, तबतक श्रुतिकरदास,।
बरणाश्रम ते त्यक्त जे, श्रुति ऊपर तेहि वास ॥
ज्यहिकरि होत प्रसन्न मैं, बिनही श्रम अतिहाल।
सो भाष्योनिज भक्तिसुनि, पुनि बोल महिपाल ॥
हे प्रभु जो सब धर्ममय, हैं तव भक्त अखेद।
कर्म उपासन ज्ञानकत किये त्रिकाण्डी वेद ॥

एकै कस सिद्धान्त न राखा * सोऊ भेद सुनिये प्रभु भाखा
जाको जस देख्यो अधिकारी * त्यहिहित तैसी बात विचारी
जिनजगजालझूठकरि जान्यो * ब्रह्मलोक तक दुख अनुमान्यो
बहुरिहु ताके उद्यम त्याग्यो * विधिनिषेधविनग्रहि अनुराग्यो
तिनको ज्ञान योग अधिकारा * अस्थिर है मम करै विचारा
अरु जिनके समता दृढ़ नाहीं * राजत कछु प्रवृत्ति के माहीं
परम सगुण मुनिके मुखमाने * मेरो भजन सत्य करि जानै
तिनकहं भक्तियोग सुखकारी * तरै आपु तारै संसारी
अरु जे विषयन के आधीना * तिन के उद्यम में लवलीना
कथासुनन को नहिं सवकासा * नहिं ममभजन कर अभ्यासा
तिन को कर्म योग सुखदाई * गहै न भूलि निषेधी भाई
जो शुभकर्म तजै श्रम गेही * सो रामश्वपच न छुइये तेही
तनमें जोर न घर में दाना * नृपसारिकारे कि लहै कल्याना
जे तुतपर तिनहुन मा हाहीं * ते अतिशय उत्तम प्रिय मोहीं
फलइच्छा सो सकल मिटावै * अन्त समय ममलोक सिधावै

दो० बहुत जन्म जप योग तप, धर्म ज्ञानरत होइ ।
होय हृदय जब शुद्ध तब भक्ति लहै मम सोइ ॥
करै कृपा मम सन्त जब, तब नहिं दूजे ठौर ।
गुरु सो मेरो रूप है, सब देव शिरमौर ॥
दशकर्म में व्रतबन्ध में, तीरथ होम सराध ।
षटस्थान गुरु विप्र है, दिक्षा गुरु ममसाध ॥
सुनिगिरिधर के बचनबर, हरष्यो भूप सुजान ।
एकादश असकन्ध मत, यह मैं कान बखान ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतयुधिष्ठिरयज्ञवर्णाश्रमधर्मसारभाक्तसाधन-
वर्णनानामचतुस्त्रिंशोऽध्याय ॥ ३४ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
स्वसनम्मुच्चय आदि बहु सतमत कहौ बखानि ॥
सो० पुनि शौनक शिरनाय, बोले द्विजपद नाइशिर ।
नाथ कहौ समुझाय, सतसंगतिमहिमाकहुक ॥
सुनत सूत बोले मुख पाई * सतसंगत सम कछु नहिं भाई
सौ सहस्र सम्वत तप करही * अयुत गङ्गानत उठि अनुसरही
चान्द्रायण व्रत आदि अपारा * करै योग जप दान निहारा
जहलग है तीरथ फिर आवै * लग सतसंग सरिस नहिं पावै
सात स्वर्ग सुख मोलहु करा * धरै तुलापर एकहि बेरा
सतसंगति लवभरि करै कोई * तेहि सम सुख दूसर नहिं होई
निस्संशय जानहु यह भाई * सत्य महातम राम दोहाई
गङ्गा पाप ताप शशि हरहीं * दारिद दूरि कल्पतरु करही
साधु संग मा जो मन लावै * ततकाल तिहु ताप नशावै

दोइ घरी यक घरी सोहाई * हरि के जन तिष्ठे जहँ आई
तीरथ सकल तहाँई जानो * महा तपोवन सोइ पिछानो
दो० सन्तन की बाणी सुनै, प्रेम सहित जो कोइ।
गङ्गादिक सब तीर्थ फल, बिन अस्नानहिं होइ॥
अन्तकालहू जाके पासा * भक्त अकामी करै निवासा
ब्रह्महत्यामय पापी होई * भगवत धाम पाइ है सोई
सतसगति भवनिधिमहँ नावा * चढै सो पार हो सतिभावा
साधु सग ते शीतल होई * जन्म मरण क्षण मे जाइ खोई
साधु सगते पातक जावै * ज्यों पावक ते शीत नशावै
सतसगति गति पलटै ऐसे * पारस ते लोहा हरि जैसे
अधमहु साधु सग जो आवै * पावन हो बेद अस गावै
ज्यों अपबित्र नीर मधु सङ्गा * गङ्ग मिलत पावन ह्वै गङ्गा
तिलसँग फूल फुलेल कहायो * साभरि भयो खेत जो आयो
नीर क्षीर की सगति पाई * बर्णमिट्यो सोइ मोल बिकाई
वृक्ष अनेक भाति के कोई * मलयागिरि सँग चन्दन होई
बेनु करील होत नहिं जानो * सारहीन हतभाग्य पिछानो
ऐसे जे नर भ्रष्ट अभागी * बैठे साधुन ढिग अनुरागी
सगतिफल लागत नहिं कैसे * नागबेलि बिच रमसर जैसे
जिनके भक्ति बीज उर छायो * सतसगति जल जनहीं पायो
ऊगत तुरत सुनहु मुनि तामें * अमीवृष्टि ते नभ नहिं जामें
उदय दिनेश सबहिं लखिपरहीं * पै उलूक गीदर निशिचरहीं
ताते सतसगति का करहीं * जो नर बचन हृदयनहिं धरहीं
जिनजिन बचन सन्तकरमाना * तिन तिन का होगा कल्याना
सो सब बरणि कौन पै जाहीं * तदपि कछुक बरणौं तुमपाहीं

अजामील शठ पातक धामा * साधुसंगमिलि लहेसि अरामा
बालमीकि मुनि भे मुनिवर्द * समऋषिन की संगति पाई
द्विज दुदुभी प्रेत यक भयऊ * लहि गोकरण संग तरिगयऊ
दो० महादेव का संग करि, कीर अण्ड सुनि भेव।
चेतन ह्वै पुनि उड़ि गयो, भयो व्याइ शुकदेव॥
व्यासमञ्ज नारद का कीन्हा * तपनि मिटी भे शीतल चीन्हा
पीपरसंग च्यवन का पायो * झपनसहित सुरलोक सिधायो
श्यामपुत्र के संग समाजा * भे भवपार परीक्षित राजा
पांच हजार यज्ञ सुत जवने * नारद संग जाइ वन गवने
विप्र एक गृह दुखपस दीना * भिक्षाहेतु जान तन कीना
वैश्य एक निकस्यो मदभरेऊ * रथका चक्र लाग द्विज गिरेऊ
मरनलाग तापर करि क्रोधा * मातलि देन चले तब बोधा
तुरत धरेउ सियार शरीरा * आये चलि ब्राह्मण के तीरा
बोले विप्र शोक परिहरहू * नेक विचारि हृदयमह करहू
दुख सुख हानि लाभ संयोगा * कर्मन ते पावत सब लोगा
जो जस कर्म सो तस फल पावे * आनहिं विरथा दोष लगावे
यद्यपि हम पशुयोनि मझारी * ऐसा शोच करहिं नहिं भारी
करमयहीन न संशय टानो * जो कछु होइ भावई मानो
यद्यपि हम कछु धर्म न करहा * तद्यपि प्राणघात नहिं चरहीं
जीव बचे बड़ पातक जाना * ताते विप्र देहु जनि प्राना
देखो तुम विचारि मनमाहीं * नश्वर सम तन दूसर नाहीं
जासु विवश सचराचर सोहा * नरक स्वर्ग अपवर्ग अरोहा
तातें हरि सुमिरण करिलेहू * छोड़ कुबुद्धि याहि तजिदेहू
तन छूटेपर बड़ दुख पावै * नहिं जानी कहि योनि समावै

ब्राह्मण तन तैं उत्तम पायो * जगतसुखन लगि वादिगँवायो
खानपानहित द्विज नहिं आयो * तप के कारण ईश पठायो
दो० सुनिजम्बुक के बचन द्विज, करन लग्यो तपजाइ।
मिटिगे सब दुख अन्त महँ, बस्यो स्वर्ग सुखपाइ॥
अस सतसग अहै मुनिराई * गई तुरत द्विजव्याधि नशाई
अवरसुनहु विधिसुतयकमयऊ * जाजुलिऋषितपहित बन गयऊ
कीन्ह तपस्या तन सुधि टारी * खगन कीन घर जटा मझारी
अण्डा दै पकि फूटि उडाने * शिरते निकसत जाजुलि जाने
तबऋषिके उपज्यो अभिमाना * मोहिंसमानतप कियो न आना
तुरत भई नभवाणी टेरी * तुलाधार सम तप नहिं तेरो
समता भक्ति जासु उर आई * रहत बनारस देखो जाई
सुनिजाजुलिऋषि तुरत सिधाये * तुलाधार बनिया घर आये
देखि कीन सनमान अपारा * चरण धोइ आसन बैठारा
पूछयो क्यहिहित आयहु आजू * आज्ञा होइ करौं सोइ काजू
कह ऋषियश तुम्हारसुनिमोहीं * भा सुख अब कछु पूछब ताहीं
मैं बन तप बहुकाल कमावा * तुम्हरी समसरि ना सुनपावा
कौन-धर्म तुम साधन अहऊ * सो हमते किरपाकरि कहऊ
तुलाधार कह रामहिं ध्यावो * रामहिं के गुण मुख ते गावो
काय बचुन मन सन्तहि सेवो * विप्र ब्यवाय दान बहु दवो
ताकर फल तनको नहिं चाहौं * अरपौं हरिहि सुमारग गाहौं
चारिखानि जहलगि तनधारी * सबमहँ ब्यापक एक मुरारी
यह विचारि सबको शिरनावो * ऊच नीच नहिं मनमें लावो
दुखा दारद्री होइ जो कोई * सेवो ताहि नरायण जाई
डाडा पकार घाटि नहि देहू * झूठ न कहौं पराश न लेहू

काहूहि शत्रु मित्र नहिं मानों * मैं मेरी तेरी नहिं आनों
आय हर्ष न गये विषादा * दुखसुखसम नहिं करों विवादा
सोमन के मारग नहिं बहऊ * पाचहु विषय प्रहारे अहऊ
करि हरि मीन कुरङ्ग पतङ्गा * एक एक वश बिसरत अङ्गा
सबकी वश सो किमि सुखपावे * त्यहि ते मो मन दूरि रहावे
काहुह दुख देवो नाह पावों * राम नाम निशि वासर ध्यावों
याते शान्ति बसी उर आई * दुरमति भ्रम सब गयो नशाई
निजदुखनिजगुणकहा नचाही * तुम पूछेउ मैं बरण्यों ताही
कहमुनिशान्तिकवनविधिआवे * सुनहु निगम यहि भांति बतावे

दो० सात भूमिका ज्ञान की तिनबिनहोइ न ज्ञान ।
ज्ञानबिनानहि शान्तिसुख. सो अब करों बखान ॥

कुकुभाछन्द ॥

प्रथम भूमिका है शुभ इच्छा दूसरि जानु विचारै ।
नित्य वस्तु हिरदय लै राखै आर अनित्य निवारै ॥
तीसरि तन मानसा कहावै तन मन इन्द्री रोकै ।
चौथी सत्यायुत सब जग में आतम एक विलोकै ॥
पञ्चम अंश शक्त निजरूपै तामें निश्चय आनै ।
छठई नाव पदारथ तेरे होत वद्धि लगहानै ॥
सतई तुरी भूमिका जानो मैं त्वैं ऊहा न रहई ।
सप्त भूमिका ये कहवावै बिन गरु ना कोइ लहई ॥

ये सातों साधन बनि आवै * उपज ज्ञान शान्ति तब पावै
जब ते शान्ति बसे उर आई * काम क्रोध मद जाहिं नशाई
उर बासना रहै नहिं कोई * भय कलेश सशय जायं खोई
समाचित रङ्क राव बड़ छोटा * समाचित घर बन सज्जन खोटा

समचित शीत उष्ण बरषाना * कञ्चन मृतिका नारि परवाना
समचित मातु बन्धु सुत दारा * सम अरि मित्रहु अपन पराया
ब्रह्मानन्द मगन नित रहई * जीवनमुक्त सोई नर अहई
अमहसो यह ज्ञान कहावत * रामकृपा ते कोइ कोइ पावत
अति दुस्तर मारग यह भाई * बरणत सुलभ करन कठिनाई
ताते ज्ञान चतुर नर अहई * तजि सब रामभक्ति यक गहई
ज्ञान बिराग आपही आवै * गोसँग ज्यों घृत बच्छहु पावै
ताते मुनि तुमहू अस करहू * ज्ञानभक्ति हिरदयमहँ धरहू

सो० जे कोइ भक्ति बिहाय, ज्ञान हेतु बहुश्रम करहि।
मानहुँ तजि सुरगाय, आक दुहै पय लागि शठ॥

महारामायणे श्लोकौ ॥

ये केवला द्वैतमतानुरक्ता श्रीराममूर्तिं विमला विहाय। ते वै मदान्धा हृदये स्वमूर्तिन्त्यक्त्वा यजन्ति प्रतिबिम्बकुम्भम् १ ये रामभक्तिममलां सुविहाय रम्या ज्ञाने रता प्रतिदिन परिक्लिष्टमार्गे। आरान्महेन्द्रसुरभीं परिहृत्य मूर्खा अर्कम्भजन्ति सुभगे सुखदुग्धहेतुम् ॥ २ ॥

सो० ज्ञान ते पर पद जाइ, करै निरादर हरिचरण।
गिरै सो पुनि तम आइ, प्रभ रक्षित नहि जन कबहु ॥

भागवते ब्रह्मस्तुतिश्लोको ॥

येन्येरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः। आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधो नादृतयुष्मदङ्घ्रयः १ तथा न ते माधव तावकाः क्वचिद्भ्रश्यन्ति मार्गात्त्वयि बद्धसौहृदाः। त्वयाभिगुप्ता विचरन्ति निर्भया विनायकानीकपमूर्धसु प्रभो ॥ २ ॥

दो० न सो पुराण न संहिता, न सो काव्य इतिहास ।
न सो शास्त्र तीरथ बरत, जहां न हरिहर दास ॥
योग कुयोग मखादि गुण, अवगुण ज्ञानाज्ञान ।
त्रिधाविधा बिपति सुख जहँ न राम रतिमान ॥
नारदादि सनकादि मुनि, अज शंकर शुकदेव ।
लोमशभृगुसबज्ञानविधि, भक्ति करत है तेव ॥
मुनिनाजुलिऋषिहरषितभयऊ * ज्ञानभक्ति हिरदय धारि लयऊ
तुलाधार कहं गुरुकरि जान्यो * जैसे गरुड भुशुण्डिहि मान्यो
बसी शान्ति उर भर्म नशायो * तब नम बानी को शिरनायो
ऋषि सब जग मे ब्रह्म निहारो * अम सतसङ्ग प्रभाव अपारो
दो० ब्रह्मजीव जग वृक्ष है, सतसगति फलसार ।
चरचा अमृत रस भरी, बीजहु तासु मँझार ॥
बीजहु तासु मँझार है, इमि भाषत श्रुतिअङ्ग ।
जो चाहै हरि दरश सो, करै सदा सतसङ्ग ॥
पियुष पताल न पाइये, पियुष न चन्द्र मँझार ।
पियुष मिलत सतसङ्ग मे, इमि कहै अमृतसार ॥
ताते जन रघुनाथ निन, करु सतसङ्ग बिचारि ।
प्रभुपद बढै सनेह उर्यहि, जन्म मरण जाय हारि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतजाजलितुलाधारप्रसगवर्णनोनामपञ्च-
त्रिंशोऽध्याय ॥ ३५ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहा समुच्चय की कथा, कछु एकादश जानि ॥
बहुरि सूत बोले हे ताता * जाजलि केरि कही मैं बाता

अपर सुनहु यक नहुष भुवारा * भयो इन्द्रपद लेन विचारा
सो यज्ञन करि चढ़या विमाना * इन्द्रलोक सूनो सुनि काना
वृत्रासुर मा । सुर-शा * त्याहि हन्या ते दुरे नदीशा
नहुष जाय सिंहासन बैठा * प्रभुता पाइ आइ मद पैठो
सहस बरष कीन्ह्यो सुख राई * इन्द्राणी ढिग कभू न आई
तब नृप तासों वचन सुनावा * अब त्वहिं इन्द्र मानु सतिभावा
सुनत शची अतिशय दुखपायो * ध्यायो गुरुहि तुरत ढिग आयो
शीशना निज विपात सुनाई * दीन देखि मुनि युक्ति बताई
नृपते तुम अस जाइ सुनावो * आवाहन चढ़ि ममढिग आवो
शची आइ नरपति ते कहेऊ * सुनतनहुष अतिशयसुखलहेऊ
षटज आदि द्विज लीन लगाई * चढ़ि पालकी चल्यो हरषाई
कामातुर ह्वै कहेसि रिसाई * सर्प सर्प चलिये ऋषिराई
सुनि अगस्त्य तब दीन्हों शापा * होहु सर्प तुम अपने पापा
दो० त्याहिक्षण उतरि पर्यो पद, कर्यो बचन परकास ।
शाप दूरि कब होइ है, कहो जानि निजदास ॥
कह अगस्त्य द्वापर के अन्ता * प्रकटी धर्मतनय यक सन्ता
सो आई तुम्हरे ढिग जबहीं * चरण छुवत निस्तरिहौ तबहीं
कौनभांति हम जानब ताही * कुब्जज कह्यो चिह्न इकआही
पूछउ ज्ञान उतरु जब पायो * जानि तासु पद शीश धरायो
असकहि मुनि पुनि चले सिधाई * भये सर्प नाहुष तब आई
गिरि कन्दरा रहे बहु काला * हिरदयउठै आगिनिकीज्वाला
बड़ कष्ट करि द्वापर पायो * बनोबास पाण्डव जब आयो
द्रुपद स्वयम्बर रच्यो अनूपा * जुरे तहां दिशि दिशिके भूपा
तब खगपति ते कह्यो गोपाला * पण्डन कहँ लावहु ततकाला

आज्ञा शिरधरि गरुड़ सिधाये * कुन्ती पुत्र पाँचों जन लाये
सोर गुरुतीर निहँ बैठाई * कृष्ण पास आये खगराई
राजै तृण लागि तहँ जाना * भीम से कह्यो जाइ जलआनी
देखि तड़ाग निकट चलि गयऊ * चापपाइ आइ निकसतभयऊ
योजन एक कुण्ड मिरगला * उरग नहीं जनु मुरनिकाला
पूछेउ पाम भीम के आई * कहु जग महँ जीवत को भाई
जो कोइ मनुष होइ बलवाना * सुनि अहिलीनयहिउरज्ञाना
खैंचि श्वास लीन्ह्यो मुखडारी * यहा युधिष्ठिर जानि अबारी
पठयो नरहि सरहि चलि आयो * देखि सर्प अस बचन सुनायो
को जीवत जगमहँ नर सोई * शनविद्या जाके कर होई
तमुभि सो जानहीन धरिखायो * तब नकुल महिपाल पठायो

समानिकाछन्द ॥ ताल तीर गे जबै । नाग बोलि यों तबै ॥ जीव धन्य कौन है । रूपवान कौन है ॥

वीरछन्द ॥ सुनि सर्प । करि दर्प ॥ मुख बाइ । गयो खाइ ॥

यहा युधिष्ठिर कह सहदेऊ * लेउ जाइ माइन कर भेऊ
गये तीनि जन एक न आयो * नहिं जानी कौने बिलमायो
तब सहदेव निकट नर गयऊ * अजगर देखि कहत दासभयऊ
जीवत जगमें काहि पिछानी * विद्यावान होइ जो प्रानी
भक्तिविहीन ज्ञानावन चीन्ह्यो * तुरत निगलि सहदेवहिलीन्ह्यो
बहुरि युधिष्ठिर आपुहि आये * चतुरथवा लखि बचन सुनाये
किवाती अचरज का भागी * पन्थ कौनि मोदित नर नारी
चहु प्रश्न का उत्तर दीजै * तेहि पाछे नृप नीरहि पीजै
धर्मतनय बोले हरषाई * सुनौ यथामति कहौं बुझाई

दो० भट्ट सोह कृशानु रवि, धवनि श्वास मद वारु ।

निशि दिन घन दरबीचरप, क्रम कुट काल लोहारु ॥
जीव सार सम कूटत जाई * यह वार्त्ता मो मन माई
सुनि पन्नग प्रसन्न अति भयऊ * तत्क्षणउगिलिभीम कहँ दयऊ
चारि खानि जहलगि तनुधारी * जलचर थलचर नभचर नारी
मरण एक दिन सबकर होई * शेष रहे अचरज है मोई
सुनी भुजङ्ग बात यह जबहीं * उगिलिदिहिसि पारथकातबहीं
पन्थ सो जाहि महाजन थापै * नकुल उगिलिदिहिसितबचापै
दुसरे दिन बड़ भोजन पावै * परवश होइ न अन्नरण रहावै
भजै राम तजि काम कुकर्मा * सोइनर मुदित न सशय भर्मा
कृष्ण बहिर्मुख शवसम प्रानी * होइ न यमविधि सब गुणखानी
अस पुनि सुनि सहदेवै दयऊ * बहुरि राव ते बोलत भयऊ
महाराज वचनामृत तोरे * सुनि आनन्द भयो अति मोरे
अब निजचरण शीश ममधरहू * दीनदयालु कृतारथ करहू
कारण कौन भाल पग गखी * हमने भेद कहौं सो भाखी
पूरब भेद नहुष सब बरना * विप्रशाप जेहिविधि निरतरना
सुनिनृपअहिशिरचरण छुवावा * भे अपहानि दिव्य वपु पावा
आयो तुरत विमान समीपा * चढि हरिपुर को गयो महीपा
अस सतसङ्ग प्रभाव घनेरा * जेहिलागि गा दुख नाहप केरा
और सुनो एक मर्म्म साहू * रह धनहीन दीन सबकाहू
धनहित उद्यम किहिसि अपारा * होइ नफा नहिं घटा निहारा
करछुकाढि युगवृषभहि लायो * नहिपारि जोतन गेत सिधायो
मगमा वृषभ चीनि मचलाई * भागन परे ऊँटपर जाई
माचिबीच गर्दनि के उरझी * उनमत उठ उठो नहिं सुरझी
दो० चले घसीटत वृषभ दौउ, भये मृतक अपिराह ।

लखि मङ्की सोचन लग्यो, महि तन शीश नवाइ ॥
ताहीं छण दनाश्रय आये * दुखित देखि असवचन सुनाये
अहो तात मत धीरज नाहीं * क्या शोच करि क्यों तनु दाहीं
दुख सुख कर्म भाव हाथा * कस मिटे लगी सो माथा
तेहिते चतुर शोच नहि करहीं * होनहार सोइ हिरदय धरहीं
विन दातव्य द्रव्य नाह पावै * देश विदेश चहीं फिरि आवै
पूरव पुण्य होय जो भाई * विन आरम्भ मिलै धन आई
बहु नर उद्यम हीन हयाना * ते धनवन्त दुखी बुधिमाना
पाछिल धर्म जानिये आना * और तासु जौंन सरि बाता
आदौ दान दिश्यो नहिं ऐसो * अब चाहत धन मिलौ न कैसो
तेहिते उर सतोष धारो * तृष्णा डानि दुष्ट निवारो
नहिं कछु सुख सतोष समाना * चौबिस गुरु करि हम यह जाना
दो० सुनि मङ्की बोलत भयो, मुनिपद शीश नवाइ ।
कौन कौन गुरु किहेउ प्रभु, सो मोहि देउ सुनाइ ॥

बीरछन्द ॥

सुनिदत्त । निजुमत्त ॥ मृदुबोलि । कह्यो खोलि ॥
तोटकछन्द ॥ प्रथमै गुरु जानौ भूमि किह्यो । तेहिते जु क्षमा अरु शान्ति लिह्यो ॥ जल दूसर सर्व पवित्र करै । जिमि सज्जन जीव के पाप हरै ॥ गुरु तीसर वायु अमल अहै । मम त्यों गति सन्त समान वहै ॥ मृग बेदहि गुरु गुनितान मेरे । तेहि भारि विषय सुख चित्त हेरे ॥ शशि पञ्चम आतप ज्यों हरहीं । हरिके जन शीतल त्यों करहीं ॥ छठयें रवि ज्यों रस सर्व ग्रहै । न लिपै परि त्यों जग सन्त रहै ॥ अभके

समतागिनि आज्य परे । निघटे तिमि कामिनि भोग करे ॥ नभ अष्टम पूरणब्रह्म तथा । नवमानँद-दाजन वृक्ष यथा ॥ दशमोदधि आय घट न बढ़ै । जन त्यों सुख दुःख समान बढ़ै ॥

भवर एकादश निरनि सुपासू * पुहुप पुहुप की लेइ सुवासू
नाहिं वृक्ष का दोष विचारै * कहहिं मन्त्र तेहि निरनि थहारै
कीटहि शब्द सुनावत ऐसो * सो है जान भृङ्ग ले जैसो
द्वादश अहि नाहि मौन बनावै * तैसहि भक्ति बनै जह पावै
तेरहो गुन हाथी कह कीन्हा * कामविवश परवश भा चीन्हा
तब ते काम नेवारन भयऊ * रामचरण पङ्कज चित दयऊ
मकर चौदहो रसना स्वादा * अमिष गह्यो सहित अहलादा
एखनाहिं भयो गयो पुनि प्राना * नन्यो सकलग दुखद पिजाना
दशशल्यलभ दियाकी ज्योती * देखत जरत मती ज्यों होती
तेसे नर लखि विष फसि जाहीं * सो विचारिहो देखत नाहीं
जेहि देखो तेहि आतम जानो * और न दूसर भेदहि आनो
षोडश चीलह एक ले मारू * उन्न भई सरमोर अकारू
बहुत विहग तेहि पछुआयो * दीन्हो छाडि तबै सुख पायो
तबते चित पहुग नहिं करहू * जहा तहा निरन्द विचरहू
सप्तदशों गुन अजगर भोगे * निगलख खावै सोइ खावै
अष्टादश गुन वेश्या एका * वेठी परि शृङ्गार अनेका
एकोदश व्यसनी इक आता * दै वीरज गर्भ लेन सिखाता
तुरन पिङ्गला भेज सवारी * मन देखत निशिवासर नोनारी
युगलयाम रजनी चलि गयऊ * वेश्या रूप बोध नव भयऊ
आशात्यागि भजेसि भगवाना * वही आत्म मैं निरदन स्नाना

दो० गुरु बोनेसों बानकर, दीख बनावत तीर।
भूप गयो तेहि अग्र ह्वै, महित शब्द अति भीर॥

चयहू धाय पूछा यहि ओग * नृप गा मैं न सुनी कछु शोरा
तहँ मैं सिखेहु यान का भेदा * रहौं लीन तजि जग क खेदा
विंशम मिथुन कपोता भयऊ * विपिन कपोती अण्डा दयऊ
फोरे सेट बड़े शिशु भयऊ * इकन्नि बधिक देखि गहिलयऊ
आये दोउ लिहे मुख चारा * पुत्र बिना घर सून निहारा
बधिक तीर देखे अकुलाई * गिरी कपोतिनि जालहि जाई
देखि शोच अतिकीन्ह विहङ्गा * फसा आपह सब के सङ्गा
अतिबल मोह देखि मैं जाना * तबने तज्यो भज्यो भगवाना
गुरु इकसर्वा मकरी भाई * पूरन तारु निगलि गिरि जाई
ऐसे देश जगत करि सोई * अन्न आपुमह लेत समोई
उभय विंश जानहु मधुमाखी * रस रस आनि इकट्ठे राखी
खाइनि नहिं निजकाज न कीन्हा * आइ छोड़ाइ आनही लीन्हा
तेसहि कृपण द्रव्य को पाई * पुण्य न करहि सकहिं नहिं खाई
विविध भांति राखै महि गोई * करहि भोग तेहि आनहिं कोई
तेहिने सग्रह करा न दामा * नृपभय चोर बरन ठग तामा
गुरु तेहसवा कन्या जानहु * तासुचरित अब सुनहु बखानहु
करन सगाई युग जन आये * मात पिता तेहि घर नहिं पाये
कन्या तब कीन्हेउ सन्माना * आप लगी पुनि कृटन धाना
चूरी खटकत भई गलानी * डारेसि फोरि कछुक निजपानी
द्वै लगरही खटक नहिं जाई * एक गाखि कुटिमि हर्षाई
तबने सीस धरि चिन्ता * एकाएक रहौं मैं निन्ता
बहुतन सग कलह मैं आवै * एकाएक परम फल पावै

चौबिसवा गुरु किहेउँ शरीरा * जेहिं लगि सब नर साहत पीरा
दो० पालत पट रस स्वादहै विविध बसन पहिराइ ।
तेल फुलेल लगाइ नित, सेवा करी बनाइ ॥
सो० अन्त समय की बार, सग न चालै एक पग ।
और सकल परिवार, सो आपन किमि होइ है ॥
आपन तन जान्यो नहि जबते * करनलग्यो निजस्वारथ तबते
निज स्वारथ सोई कहवावै * जो कछु रामभजन बनिआवै
भजनबिना जीवहि सुख नाहीं * बिरि हरिहर समीप चहु जाहीं
चौबिस गुरु करि जो मत पायो * सो मैं तुमकहँ सकल सुनायो
सुनि मङ्की उर उपज्यो ज्ञाना * जगत झूठकरि तबहिं पिछाना
मुनिपद शीश नाइ बन गयऊ * जपतपकरि तन त्यागत भयऊ
हरिपुर बसेउ जाय दुख खीशा * अस सतसग प्रभाव मुनीशा
कह शौनक यक सशय मेरे * दत्तात्रयी पुत्र किन केरे
यहो भेद प्रभु देउ बताई * सुनत सूत बोले हर्षाई
सो० अत्रय ऋषिकी नारि, त्रय देवन कर अंश लय ।
कीन्हों पुत्र विचारि, नाम धर्यो दत्तात्रयी ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमङ्कीदत्तात्रयीसवादचौबिसगुरुवर्णनोनाम
षट्त्रिंशोऽध्याय ॥ ३६ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं समुच्चय चरित कछु, कछु जैमिनिमत आनि ॥
बहुरि सूत बोले करि येहा * धन्य धन्य शौनक तव नेहा
जो पूछेउ सो बरणि सुनावा * और सुनौ सतसङ्ग प्रभावा
सबते अधिक ज्ञान यह पावन * पुत्र पिता सबाद सुहावन

विप्र एक कश्यप अस नामा * मेधावी सुत अति अभिरामा
जानवन्त ममता उर नाहीं * एकदिन प्रश्नकिहेसि पितुपाहीं
पिता कहो काकर तप करिये * जाते भवसागर को तरिये
कह कश्यप सुन बेद पढ़ीजे * ब्रह्मचर्य करि गृह सुख कीजे
बानप्रस्थ बहुरि सन्यासा * धारण करि कीन्हो बनवासा
जप तप योग यज्ञ तह ठान्यो * यह करतव्य है तुम्हे बतान्यो
सुनि मेधावी उत्तर दीन्हा * मृत्यु विवश हम सबकहं चीन्हा
जब चाहे तबहीं संहारे * बाल वृद्ध नहि तरुण विचारे
सो किहिविधि चहुँआश्रमकरई * अमर होइ सो हिरदे धरई
लोमशादि मुनिचिरजिवआही * टूटत रोम कलप के माही
तेऊ डरत मृत्यु ते भाये * लोहड़ा रहत शीश औंधाये
और सुनो पाण्डव मनसाना * कीन्हो जब तम छाइयो बाना
अर्जुन कृष्ण हम बृषकेतू * चले सकल रक्षा के हेतू
दुस्तर सिन्धुपार जब गयऊ * दीप एक बन देखत भयऊ
तहं बकदालभ ध्यान लगाये * सबन जाइ मुनिपद शिरनाये
चरण छुवत बकदालभ जाना * नयन खोलि कीन्हो सनमाना
लागे कहन चरित हरिकेरे * बहुविधि जो निजनयनन हेरे

दो० चित्रकोटि चत्रलाख पुनि, उभय सहस अवतार।
भये दाशरथि राम के, मेरी दृष्टि अगार॥

सुनि अर्जुन बोले तिनहीं ने * तुम्ह यहा कितने दिन बीते
कह मुनि सुनहु तात मन लाई * आदिहि ते सब कहौं बुझाई
निमिष अठारह काष्ठा जानो * तीस काष्ठकी कला पिछानो
तीस कलाकी होत मुहूरति * तीस मुहूरति का दिन पूरति
पन्द्रह दिवस केर पखवारा * उभय पाख का मास बिचारा

बारहमास बिगत जब होई * तेहिका बरस कहत सब कोई
सत्रह लाख अठाइस बरषा * सतयुग रहत सकल सुर हरषा
बारह लाख छानबे हजारा * त्रेता रहत सुखी ससारा
दो० आठ लाख चौंसठ सहस, द्वापर रहत समान।
चारि लाख बत्तिस सहस, बर्ष रहत कलि जान॥
चारि सहस युग बीतत जोई * तब ब्रह्मा का इक दिन होई
राति तेतनहीं तब बिधि स्वावै * सृष्टि धरे उर कल्प कहावै
तीस कल्प बीतत अजमासा * बारह मास बरस परकासा
ऐसे बरस एक शत जाई * तब लगि ब्रह्मा जीवत भाई
मरे पितहि परलै ह्वै जावै * ब्रह्मकल्प सोई कहवावै
ग्यहिं देखत एते दिन भयऊ * ब्रह्मा बीस नाश ह्वै गयऊ
एक बार ब्रह्मा इक आये * चारि भुजा मुख चारि सोहाये
करतल चारि बेद तन पीना * रामचरित गावत लवलीना
मोते कहिनि ध्यान तजिदीजै * हमते कछुक चतुरता कीजै
तेहि समय बॉडर इक आई * हमें वाहि लै चला उडाई
उलटत पलटत नाघत खण्डा * देखा जाइ आन ब्रह्मण्डा
तह बिधि बैठ आठमुख सोहा * आठ भुजा बसुदेवहु जोहा
कौ भगवान बिधिते बिधि भाखा * ब्रह्मअह इत्य सुनि माखा
दो० अबतककह्योसोकह्योपर, अब न कह्यो अज नाम।
ब्रह्मा ये मय आठ मुख, जेहि करतल सबकाम॥
इतनीकहते पवन पुनि घूमी * उभय लपेटि चली नभ झूमी
उहाते उडेन आन मह गयनू * सोरह मुख बिधि देखत भयनू
पुनि बत्तिस चौसठि छानावा * दुगुन दुगुन मुखका बिधि पावा
जेहि देखा सोऊ उड़ि जाई * गगन पार सब निकसे जाई

दो० तहां पुरुष इक दीख वर, जेहि तनु अतिविस्तार ।
बदनअनन्त अनन्तभुज, बेद अनन्त अपार ॥
कीन बन्दना तिन सनमाना * सब ब्रह्मन का गा अभिमाना
कछुक बार रहि आवसु पाये * फिरिनिजनिजआश्रमकहँ आय
सुनि अद्भुतअतिशयसुख पावा * बहुरि जोरि कर बचन सुनावा
हे प्रभु कत उजारमहँ रहऊ * शीत उष्ण बरषा शिरसहऊ
लेत्यो इक मन्दिर बनवाई * सुनत बचन बोले ऋषिराई
लघु-जीवन जग कौने हेता * धन सञ्चो अरु करी निकेता
मृत्यु खड़ी शिर सन्मुख हेरै * जब चाहै तबही मुख गेरै
जो कोइ सुरी चटावा जावै * तब रहि गये कौन सुख पावै
सुनो पिता ऐसे जे अहहीं * नेऊ डरत मृत्यु ते रहहीं
औरन की अब कौन चलावै * जो नित जन्मि जन्मि मरजावै
तेहिते तान मोह तजि देहू * करहु रामपद पङ्कज नेहू
निशिवासरऋतुजेहिविधिजावै * त्यों तुम्हरी नित आयु सिरावै
देखत जात सकेत न होवै * दहते महल माहिं कत सोवै
प्राण अन्त कछु बनै न माहीं * उठी हाट जिमि वस्तु न पाहीं
श्लोक—यावत्स्वस्थमिदं देहं यावन्मृत्युश्च दूरतः ।
तावदात्महितं कुर्यात् प्राणान्ते किं करिष्यति ॥

गीतिछन्द ॥

सुनि पुत्रके अस बचन विमल विराग कश्यपके भयो ।
दाउ त्यागि तृणसमधामधनसुत वास बनका चलिदयो ॥
जप योग संयमसहित करि हरिभक्ति तन मन जीतिके ।
गये अन्तसमय विमान चढ़ि प्रभुधाम बस्यो प्रतीतिके ॥
सो० ऐसा है सतसङ्ग, जाके करते अघ नशत ।

लागत हरि का रङ्ग, भागत संशय शोक भ्रम ॥
और सुनो विश्वासु नागा * मन्दालसा सुता छुटि भागा
तालकेतु लैगा हरि ताही * ऋतुध्वज गालवमलगतचाही
बध करि ताहि सुतासोइ लीन्हा * विश्वासुहि आय पुनि दीन्हा
ब्याहयुक्ति तिन नृप ते ठानी * गहिपर बोली कुंवरि सयानी
तीनि वचन मोहिं देवै नाहू * ताके सग करब हौं ब्याहू
इक तो जो मम द्वारे आवै * मगन विमुख जान नहिं पावै
दूसर मोहिं जीवन नरनाहा * करै न अपर रतिसग ब्याहा
तासर जो बालक हौं जावौं * द्वादश सम्वत गर्भ खेलावौं
अस्प्रणकठिनसमुझिमनमाहीं * अबतक मोहिं वरी केहु नाहीं
रतिध्वज वचन देइ नहं परणी * धूमसुनहि लाये घर घरणी
कछुक काल बीते सुत भयऊ * चारेउ का नहिं कबहु दयऊ
आपु खेलावै तिन अरु रानी * देइ ज्ञान तनुजै यहि भाती

श्लोक ॥

शुद्धोसि बुद्धोसि निरञ्जनोसि संसारमायापरिवर्जितोसि ।
ससारस्वप्न त्यजमोहनिद्रा मन्दालसा वाक्यमुवाच पुत्रम् ॥
बडे भाग सो नरतनु पावो * सुरदुर्लभ पुराण श्रुति गावो
ताहि पाय, निज राम न ध्यावा * पिग जीवन जग बादि गँवावा
ताते सुत हरि सुमिरण करहु * ज्ञान विराग हृदय महँ धरहु
क्षुधा तृषा सुख दुख अरु हानी * काम क्रोध मद मोह नेवारी
सुत पितु मातु बन्धु अरु नारी * ये सब हैं स्वारथ के सङ्गी
अन्त समय कोउ काम न आवै * बीचहि मिलै बीच रहि जावै
तिन्हैं त्यागि वन गवनहिं कीजै * अहनिश रामरसायन पीजै
क्षण क्षण तेरी आयु सिरानी * ज्यों करतल जल निपटत जानी

काल अचानक सब का मारै * बाल वृद्ध नहिं तरुण विचारै
तातें बालपनहिं ते चेतौ * वेगि लगावो हरिपद हेतौ
दो० यहु प्रकार मन्दालसा, दीन सुतै उपदेश।
भयोज्ञानहिरदयविमल, गयो विपिन मुनिवेश॥
सो० यहि भांतिन पट बाल, पठये बन उपदेश करि।
सप्तम भये भुवाल आइ निकट बोले बिलखि॥
हे भामिन सुनिये मम बाणी * भयउ वृद्ध हम तुम दोउ प्राणी
बालक बन पठयो सब आछे * वर्गे राज्य को हमरे पाछे
तेहिते यहि गर्व्वो गृहमाहीं * बारबार बिनवौं त्याहि पाहीं
सुनि पतिबचन पुत्र घर गर्व्यो * नामो ज्ञान चक्षु नहिं भार्व्यो
पर नित शोचहि करै अपारा * परी नरक यह पुत्र हमारा
तब एकयन्त्र बाँधि भुज दीन्यो * बिपति होइ यामें सोइ कीन्यो
कछुदिन बीते दोउ मरिगयऊ * पाछे अलरक राजा भयऊ
सुनि बन बन्धु गये ते आये * तजहु राज बड़ दोष मनाये
तो महीप मानेसि नहिं राई * बखरा मागन दीन खदाई
दो० तब ते काशीराज पहँ, फिरिआवौ मे आय।
निज निज हीसा देनकहि, लाये ताहि चढाय॥
कछुकदिवस अलरकनृप लंगऊ * भयो असित तब रण परिहरेऊ
गयोभागि बनविपति विचारो * खोलि मुद्रिका ताहि निहारो
दो० जगतजाल में मति परै, केवल दुख यहिमाहिं।
सत्य कहौं सतिमतिकहौं, सुतसुख सपन्यो नाहिं॥
सो० रामविमुख नर जौन, किह्यो न संगति तासुकी।
साधु संग सुख भौन, मिलत ज्ञानहरिभक्तिजहँ॥
दो० खग मृग किन्नर नाग नर, दैत्यासुर समुदाइ।

युग युग में जे तरे ते, सकल साधुसँग पाइ ॥
अस मुद्रिका मारुत जब देख्यो * खोजन दत्तात्रय का लेख्यो
पद्मोचरणनिजविपतिसुनायो * मुनिवर बहुविधि ज्ञान सिखायो
गयो मोह मुख भयो अपाग * करि हरिभक्ति भयो भवपारा
अस सतसंग अहै अधिकाई * गइ छणांम भवव्याधि नशाई
ताते साधु संग नित कीजे * मन क्रम त्यागि कुसंगति दीजे
कु० भक्तिलता सतसंग जल, सनधा पल्लव पाय ।
शाखा ज्ञान विराग गुरु, लघु क्षमादि समुदाय ॥
लघु क्षमादि समुदाय, प्रेमसों सुमन सुहावन ।
हरि प्रापति फलमधुर, महादुख दोष नशावन ॥
प्रथम अजाते रक्षिये, बढ़े भये नहि शक्ति ।
बेधे रहे कर हमि कहै, कल्पलता हरिभक्ति ॥
दो० जन्म कन्या जनक ते, रहै जनक के गोद ।
होइ पुत्र तब विधिसुखद, इमि कहे भक्ति विनोद ॥
प्रभु पयोधि धन सन्त है, हरि हरिजन यों मान ।
सुशक्तिलते रघुनाथ हमि, करत साधु आसान ॥
इति श्रीविश्रामसागरसत्वमतसागरअभउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतपुत्रपितासंवादअलर्कप्रसंगवर्णनोनाम
सप्तविंशोऽध्याय ॥ २७ ॥
दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सांख्यशास्त्रमत कहौं कछु, कछु वेदान्त बखानि ॥
सुनि शौनक बोले हरषाई * सतसंगति महिमा पहु गाई
और एक बर्णो इतिहास * जेहिते होइ ज्ञान परकासा
मयनजीत गुरु भूपति गहै * नीतिमान परजे बहु चाहै

तेहि के पुत्र बग्ध दश कैरा * मरो मृतक सो करमन फेरा
राजा शाप मौन अतिभारी * प्राण तजन की मन विचारी
तेहि अन्तर लोमशऋषि आये * नृपहि दुखित लखि वचनसुनाये
हे नृप शोक करो तू काको * तेरो पुत्र नहिं न पितु वाको
पुत्र शरीर पग तव आगे * रोवत मृगा जाय के लागे
जनमे मरे न भयो न होई * नित्य अरूप अचल है सोई
शस्तर काटि सकै नहिं नाही * पावक जारि सकै नहिं ताही
नीर-भिजोय सकै नहिं वाको * मारुत शोषि सकै नहिं ताको
ऐसा यहि आतम कह जानो * मनमहँ तासु शोच मति आनो
याको मृतक कहै जो कोई * महा मूढ़ अज्ञानी सोई
नाशवन्त है देह पिछानो * जीवात्मा अविनाशी जानो
दो० देह अङ्ग न्यारे करो, जहँ तक होत विनाश।
उत्पति भय जेहि भातिते, करन नरक को वास॥
प्रथम ब्रह्म अव्यक्त अखण्ड अमाया * इच्छा करि पुरुष उपजाया
पुरुषेच्छा ते प्रकृति प्रभेदा * प्रकृति ते भयो महतत्व देवा
महतत्त्व ते भो निरवाण * निरवाण ते प्रणव निहारा
प्रणव ते भये तीनि गुण गाऊ * सत रज तामस प्रकट प्रभाऊ
त्रयगुण की माया आलापी * जिनते भा तनु अनित उपाधी
सतते वासुदेव चित जानो * और चौदहा देव पिछानो
रजगुण ते ब्रह्मा ऋषि भयऊ * दशो वायु इन्द्री दश जयऊ
तामस ते शिव जानो राई * आठ अन्त करण लखाई
अहं ते भा अकाश लहि पोला * उपज श्रवण सुनन जे बोला
नभ ते भई पवन अरसाई * तासो भुक दृगरूपहि हरसो
अग्नि ते जल रसना रस चाहै * जल ते पृथिवी गन्ध जो लाहै

यक ते एक प्रकट ह्वै आई * जब सिमटै सब जाइ समाई
दो० सतरजतम बुधि चितअहं, शब्द अस्परश रूप ।
रसनग धमिलगाठिपरि, तब उपज्यो मन भूप ॥
तेहिते अन्तःकरण नृप, गने जात हैं चारि ।
मनबुधिचितअहंकारअब, विरती कहौं विचारि ॥
ज्ञान विचारि शील विश्वासा * धीरज निश्चय मतिवृतिभाषा
सुरात चपलता आगन उमगा * राग आदि चितवृत्ति प्रसगा
मैं तैं मान मालनता दोषा * अहङ्कार की विरति सरोषा
दुख सुख भय सकल्प विकल्पा * लाज उम्राटनमनवृति थल्पा
एक वस्तु बहु नाम कहाये * अन्न चून जिमि रोटी गाये
अब इन के इन्द्रिन के देवा * जे जे हैं वरणौं सो भेवा

कुकुभाछन्द ॥

मन के देव चन्द्र बुधि ब्रह्मा वासुदेव चितकेरे ।
अहङ्कार शिव दिशा करण के नयन भानु सुर हेरे ॥
रसना वरुण त्वचाके मारुत नासा अश्विनि जानौ ।
मुखके अग्नि इन्द्र हाथनके देव गुदा यम मानौ ॥
लिङ्ग देवपरजापति सिरजत चरणन विष्णु विराजै ।
चौदह देव रहत यहि तनु सँग नित निर्भय ह्वै गाजै ॥
दो० नारी चौदह सहस हैं, यहि शरीर के माहि ।
तिनमा चौबिस मुख्यहैं, सब कोइ जानत नाहि ॥
कमलनाभि ते दश उरध, दशै गई अध जान ।
युग दक्षिण उत्तर उभय, तिनमा दश परधान ॥
तिन दशहुन के नाम बखानौं * जहँजहँ बसै सोऊ तुम जानौं
बायें इडा पिंगला दाये * मध्य सुषुमना तीनि गनाये

बामे चक्षु गन्धारी रहई * हस्ती जिह्वा दहिने अहई
पूषा कर्ण दाहिने अहई * पुनि यशस्विनी बाये लहई
नाभी माहिं अलम्बक राजै * कहुलि नासिकामाहिं विराजै
मुख अस्थान शंखिनी केरा * ये नाड़िन के नाम निबेरा
दश पवनों है याहि तनु माहीं * निज निज थलमें सोउ रहाहीं
प्राण पवन हिरदयमें बासा * जेहितेनिशिदिन निकसतश्वासा
गुदा अपान नाभि सामाना * कण्ठ उदान सर्वतनु व्याना
नाग वायुते उठै डकार * कूरम नयनन पलक उघारै
देवदत्त आवै जमुहाई * किरकिल छींक लगावै भाई
मुये धनजय देह फुलावै * ये दश पौन शरीर रहावै

दो० इन्द्रिय दश तत्त्व पांचते, प्रकट भई यह जानि।
उभय उभयसों प्रीति है, सांच कहौं बखानि॥

मुखते कहन श्रवण यक सुनई * त्वचा पाणि अमपरसै गुनई
नयन चरण ते प्रीति रहावै * नयन कर्म पद लय पहुंचावै
रसन उपस्थ भोग दोउ चाहैं * गुदा नासका नेह निबाहैं
मन इन इन्द्रिनके सुख लागी * भूल्यो ब्रह्म क्रान्ति सबभागी
ताते भयो दीन मतिहीना * मन बासा अब कहौं प्रवीना
हिरदयबीच कमल यक अहई * पखुरी आठकेरि तहं रहई
जेहि दलपर मन बैठन धाई * तब तहँ तैसी विरति लखाई
पूरब दल पर जब चलिजावै * दया धर्म धीरज उपजावै
दल अगनेय माहिं पग धरतै * क्षुधा तृषा निद्रालस बरतै
दक्षिण मद मत्सर छल छोहा * अहंकार उपजै अरु कोहा
नैऋति दलो माहं हठमाया * आशा तृष्णा शङ्क गनाया
पश्चिम दल समता उपजावै * आनंद निरभय चित्त रहावै

वायव उच्चाटन सतापा * भय लज्जा वरतै उर पापा
उत्तर स्वप्नपर जब मन तिष्टा * हँसी विनोद काम की चिष्टा
ईशानें सुधि बुधि सतोषा * क्षमाशील सत विरति अदोषा
मन आठौ पसुरिन पर धावै * पवन समान वार नहिं लावै
तेहि मनका रोकन कोइ सन्ता * पकरि लगावत चरण अनन्ता
नातरु जगत सिन्धु महँ भज्जा * बाहत कर्म बीचिकन सज्जा
कुं० और सुनो तत्त्व पाच से, जो प्रकटे तनु माहिं ।
काम कोह मद मोह भय, बोलन नभ ते आहिं ॥
बोलन नभते आहि, वायु ते बाढ़े काया ।
बल करना सुनि चलन, परसि संकोच बताया ॥
पावक ते आलस क्षुधा, तृषा नींद सेग ब्योर ।
जलते मेटक रक्त कफ, बिन्द पसीना और ॥
दो० महीतत्त्व ते जानिये, अस्थि मास अरु चाम ।
नारी रोमा सर्ब मिलि, भा शरीर बेकाम ॥
तनु झूठा झूठा करन, झूठा सब संसार ।
तनु सच्चा सच्चा जगत, सच्चा कर्म बिचार ॥
तनुमें तुर्त नेह है मूला * व्यापक सूक्ष्म लिङ्ग अस्थूला
तिनकी चारि अवस्था कुरिया * जाग्रत स्वप्न सुषोपति तुरिया
वानिहुँ चारिभाति की करी * परा पश्यन्ती मध्य बखरी
दश इन्द्री अरु पाचौ तत्त * तिन ते तनु अस्थूल अनित्त
बाल युवा वृद्धापन रोगा * सोवत जागत सीतल योगा
मल आरन नव द्वार निहारा * शूल मरा ये लगे बिकारा
जाग्रत तासु अवस्था जानौ * नेत्रन जो कछु करत पिछानौ
दो० दशौ वायु अरु तीनगुण, पांच मातरा भास ।

चौदह स्वर अन्त करण, यामें करत विलास ॥
पांच तत्त्व इन्द्री दशौ, और पांच मेंग बाय ।
सतगुण हू दश देवना, सोइ रहा सुख पाय ॥
सोवन स्वप्न दोष कन जोई * लिङ्ग देह तुम जानौ सोई
लिङ्ग देह जे तत्त्वन केरा * सो मैं तुमसे करौं निवेरा
प्राण अपान समान उदाना * व्यानवायु सत रज तम जाना
अन्त करण चारि स्वर चारौ * पाच मानग सोउ निहारौ
बीसि तत्त्व ते लिङ्ग शरीरा * स्वप्न अवस्था तासेंग बीरा
जीव नाम ताही को परही * लिये मना सोई अवतरही
कर्म करत तस भोगन भाई * स्वर्ग नरक महिमण्डल आई
सो० जन्म मरण सुख शोग, क्षुधा पिपासा जानिये ।
ये षट उरमी रोग, जीव सग लागे रहत ॥
लिङ्ग शरीर नाम तब पावै * जब नर अजपा में मन लावै
अजपा किं जो सोम्मि उसामा * सुमिरै नाम सहित विश्वासा
स्वास लेत रा तजत मकारै * जागत सोवत नाहिं बिसारै
होइ बासना तब सब नासा * मिले ब्रह्ममहँ जिमि जलवासा
आनँद प्राण मनोमय कोसा * तिनहु केर तनु सूक्ष्म पोसा
अधिक नींद सोवै जब प्रानी * रहै न तासो कछु पिछानी
सुषुप्तमा प्रकाशित भोपाने * तस्य अवस्था आहि सुषोपति
तीनि अवस्था ना सत चीना * सतसग तुरिया नित्त नवीना
ईश्वर जीव भेद मिटिजावै * तुरी अवस्था सोइ कहावै
कोइ कोइ सन्त लहन है याको * लक्षण सुनौ बतानौं ताको
प्रेम विवश तनकी सुधि भूली * गदगद कण्ठ रोम रहै फूली
कबु उठि चलत बैठि कबु जाई * कहुँ नाचत करताल बजाई

बोलत बचन औरको औरा * समुझि परत मानहु मतिबौरा
जर्द बदन तनु चढ़त न मासू * नहिं लागत जेहि क्षुधा पिपासू
बूझि परत नहिं पर्वत गाऊ * को हम कहा जात केहि ठाऊ
समचित शत्रु मित्र नर नारी * समचित पुत्र पिता महतारी
हौं तू बन्धु गई सब खोई * त्याग अत्याग तहा नहिं कोई
दोष अदोष मिटी भ्रमकाई * निज स्वरूप सुख रहे समाई
मन चित अहकार नहिं जावै * बुधि पहुँचतपहुँचत नशिजावै

दो० जैसे पुतरी लोन की, दधि थाहत गलि जाइ।
त्यों आतम के खोजते, सुधि बुधि जात हेराइ॥
ज्यो सुरज के तेज ते, देखि परत रवि जात।
त्यों आतम के तेज ते, आतमरूप लखात॥
ऐसो मत जिनका मिल्यो, ते नर जीवनमोष।
ज्यों चाहे त्योंही रहै, तिन्हें न दोष अदोष॥

चारि अवस्था बरणि सुनाई * जहं जहँ बसैं कहौं सो गाई
जाग्रत को चक्षुन में बासा * लिङ्गदेह कर कण्ठ निवासा
कारण तनु हिरदै महँ राजै * तुरी अवस्था गगन विराजै
परमातमा ब्रह्म को जानो * सबसे पृथक् जो आदि पिछानो

दो० पुरुष प्रकृति महतत्त्व निरं, ओंगुण अन्तःकर्म।
इन्द्री सुरतत वायु तनु, इनते परे जो ब्रह्म॥
परकाशक चर अचर का, परमात्मा सो एक।
जैसे बहु जल कुम्भ में, रबिलखिपरतअनेक॥
आदिअन्त मधिमोश सोइ, पश्यति जे मतिधीर।
जिमि मृतपात्र अनेकबिधि, बसनतत्त्व गोक्षीर॥

श्लोक ॥

एकं च मृत्पात्रमनेकरूपमेकं च क्षीरम्बहुवर्णधेनु ।
सुवर्णमेकम्बहुभूषणानि चैक परात्मा हि शरीरभिन्न ॥

दो० सो शरीर आनित्य है, नित्य आत्मा ब्रह्म ।
तू ताही को अंश है, भूल्यो है के भर्म ॥
जैसे मन्दिर कांच के, जातभयो कोइ श्वान ।
आपनि छांही देखिकै, भूंकत भा हैरान ॥
जैसे मूरख सिंह ने, आपन रूप निहारि ।
कूदि परेउ जलकूप में, दूजो भर्म सम्हारि ॥
यथा शचान उड़ान नभ, निकसा जहँ गचकाच ।
निजतनुछांह विलोकिजड, टूट भग्न भय च्वाच ॥
तेरे ही अज्ञान ते, दूजो भासत आइ ।
ज्यो बिच फूटी आरसी, मुखबहु परत लखाइ ॥
अपने ही अज्ञान सों, सब से कीन्हो बैर ।
तेरे दुख तोको भयो, और न दूजो गैर ॥
तातें तूही एक है, नित्य अखण्ड अरूप ।
जीवग्रन्थि को छाडिकै, लखौ आपना रूप ॥
काम क्रोध मद मोह भय, राग द्वेष अभिमान ।
मैं तैं हिंसा शोक श्रम, जीव लक्ष परमान ॥
जब तक इनके बश रहै, गाहै गोमन नाहि ।
सबतक अपनेहुं ना मिलै, निजस्वरूप के माहिं ॥
जीव आतमैं कर्म है, परमातमा विसाग ।
जानि राखौ यहि भेद का, जानत ज्ञानी लोग ॥
कर्म उपासन ज्ञानमत, तीनि बंद के माहि ।

जो ततपर है तिन विषे, कहियत ज्ञानी ताहि ॥
ज्ञान भानु हरिभक्ति चख, वर्म मुकुर लें हाथ ।
देखि परै निजरूप तब, कहत दास रघुनाथ ॥

गीतिकाछन्द ॥

शुभकर्म ज्ञानरु भक्ति तिहुँ विन जन्म मरण न छूटई ।
चहुँजाइ सुरपुर नागपुर महि गिरत यमगण कूटई ॥
सुनि भूप ऋषिके वचन क्षिप्रै पुत्रशोक विहाइकै ।
लागे करन जप योग सयम ज्ञान मुक्तिहि पाइकै ॥
दो० कह्यो सूत शौनक सुनो, ऐसा है सतसङ्ग ।
सेनजीन नृप ब्रह्म में, भयो लीन तजि अङ्ग ॥
सत्य दृढावन मोक्षप्रद, कुमति हरण त्रैशूल ।
सतसगति असजानि नर, कस न करैं सुखमूल ॥

इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
गममनेहीकृतसेनजीतप्रसङ्गवर्णनोनाम
अष्टत्रिंशोऽध्याय ॥ ३८ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु गणप गिरा सुखदानि ।
श्रीहरिवंश पुराण की, कहौं अब कथा बखानि ॥
पुनि शौनक बोलत भये नाइ सूत पद भाल ।
सतसगति महिमा कछुक, कहिये और कृपाल ॥

कह्यो सूत सतसग समाना * और न दूसर बस्तु जहाना
जो सतसंग करै मनलाई * उपजै ज्ञान मिटै भ्रमकाई
मोक्ष आदि सुख चाहै कोई * सतसगति करि पावै सोई
जप तप योग करै बन दाना * सतसंगति विन लघुफलजाना
सतसंगति क्षणमात्रहु होई * तेहिसम तुलै न तपलवकोई

सुनौ एक इतिहास पुरानी * जाने परै महातम जानी
मुनि बशिष्ठ यकचार सुभाये * गाधिसुवन के आश्रम आये
विश्वामित्र बहुत सनमाना * रहे तहा कछु दिन सुखमाना
चलन लगे जब विधिसुत गेहा * कीन विचार गाधिसुत येहा
पूजा इन्हैं दीजिये काहा * जेहिते सुखी जाय ऋषिनाहा
लाख बरष जो तप मैं साधा * तेहिमा मुनिहि देउँ अब आधा
करि सकल्प दीन ऋषिराई * पाइ बशिष्ठ चले हरषाई

दो० यक दिन विश्वामित्रहु, गे बशिष्ठ के भौन।
तिन दीन्हों सतसंग फल, उभयधरी कर जौन॥

गाधिसुवन मुनि कह्यो रिसाई * मैं तोहिं तप दीन्हों अधिकाई
तेहिनमयगलपरी किमिकीन्हो * न्यावचुकावन दोउचलिदीन्हो
आये शम्भु तीर कैलासा * तिन पठयो ब्रह्मा के पासा
तब दोउ ऋषि ब्रह्म पह गयऊ * सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ
चतुरानन अस कहा विचारी * जाहु तौऊ हरि पास सिधारी
सुनिविधिवचन दोउ मुनिनाथा * जाइ विष्णुपद नायो माथा
गाधिसुवन बोले हरषाई * नाथ न्याव इक देहु चुकाई
हमरे भवन गवन इन कीन्हा * जमकछु बना सो आदरदीन्हा
विदा होत तप सहस पचासा * इन दीन्हों मैं सहित हुलासा
हौं चलिआयो इन के धामा * कछुक दिवस कीन्हों विश्रामा

दो० चारि घरी सतसग इन, कीन्हा स्वश्र मेझार।
तेहिमाते युगदण्ड मोहि, दीन्हों चलतीबार॥

दुइ मा तें का है अधिकाई * यहै न्याव प्रभु देउ चुकाई
सुनिमुनिवचन विष्णुअनुमाना * ऋषिसतसग प्रभाव न जाना
जो मैं बहुविधि कहब बुझाई * तबहुँ न इनकी संशय जाई

असमनसमुझि कह्यो श्रीनाहू * दुइ मा एक शेषपहँ जाहू
तिन का लावहु इहा लिवाई * पुनि प्रभुसहित चले हरषाई
जाइ शेषपहँ भाख्यो हाला * कह अनन्त जो तुम यहिकाला
धरेहु धरणि दुइमा ते कोई * देहुँ पुकाइ न्याव मैं सोई
कहऋषिलाखबरष तपकीन्ह्यो * तेहिमा अर्ध बशिष्ठ दीन्ह्यो
आधा रहा हमारे पाहीं * तेहि तप तेज महीं रहिजाहीं
धरेउ शीश शेष शिर टाला * सधी न क्षिति ऋषिभये बिहाला
तब विधिते हरि कह्यो बुझाई * सुनि बशिष्ठ बोले हरषाई
चारि घरी स्वप्ने के माहीं * साधुसग कीन्ह्यो बहु नाहीं
दो० उभयघरीऋषिकादिन्ह्यो, रही उभय मम पास।
ताके फल बल भूमि यह घटपर करौ प्रकास॥
सुनिसिरखैंचिलीन्ह अहिराऊ * महि रहिगे सतसग प्रभाऊ
सगप्रताप देखि अधिकाई * गाधिसुवन तब रहे लजाई
योग तपस्या त्यागन कीन्ह्यो * सतसगति में तन मन दीन्ह्यो
अस सतसग अहै ऋषिराई * और सुनो अब कहौं बुझाई
द्विज इक रहा बडा अविचारी * तस्करकर्म करै सहि गारी
सो इक दिवस नर्मदा पासा * गयो तहा निवसै हरिदासा
तिनकी चोरी करिबे हेता * बसतभयो निशि सन्तनिकेता
कथा भई कछु बार तहाहीं * अनमन बैठिरहा तिन पाहीं
जब रजनी बीती युगयामा * तब हरिजन कीन्हेनि विश्रामा
सोवत जानि बिप्र अरु गाई * चोरी करन लाग हरषाई
लखियमराजक्रोध अति कीन्हा * बोलि दूत अस भाषे तीन्हा
यहि भक्तनकी कीन्हेसि चोरी * लावहु बेगि नरक महँ बोरी
वह द्विज है सन्तन के ठाई * ताहि लेन कीनी विधि जाई

कह्यो धर्म जौनी विधि पावो * नौनी भाति यहा तक लावो
सुनत दूत यक तड़क भयऊ * हरिजनधाम तहा चलि गयऊ
मन्दिर निकट रहा लगिबाटा * निकसा द्विजचोरन्ह महि काटा
जलपत जानि सन्त सब धाये * चरणोदक तुलसी मुख नाये
राम राम कहु राम बखाना * इतने माहिं मुक्त भे प्राना
मुद्गर मारि डारि गरफासा * दूत ले आये यम के पासा
लरिके द्विजधर्म तेल औटायो * बरन कराह माझ डरवायो
भयो सनेह सुरभिसम ताहीं * करै अनन्द परा तेहि माहीं
बहुरि बरत खम्भा भेटवायो * शीतल भा गोला औटायो
पियत सीसभा अमी समाना * अमियनागभे सलिलकृशाना
लोहाकाट सुमन सम भयऊ * नव तो डारि नरक महं दयऊ
विष्टा पीब कीट सब भागा * धर्मराज लखि अचरज लागा
करत विचार मनहिमन लाये * ताहि समय ऋषि नारद आये
बोले बैवरवन कर जोरे * नाथ एक बड़ि सशग मोरे
यह पापी अति चोर लबारी * ताहि दीन हम सामति भारी
याके दुख कछु भयो न राई * सो कारण मुनि जानि न जाई
दो० धर्मराज के बचन सुनि, बोले ऋषि हरषाइ ।
याहि मँगायो कहा ते, सो मोहि देहु बताइ ॥
तब रविसुत सब हाल बखाना * जेहिविधि सन्तन दिगते आना
सुनि यमबचन कहा ऋषिराजू * बड़ अपराध कीन तुम आजू
सन्तमहातम तुम नहिं जाना * जिन्हें बखानत बेद पुराना
जगमहं नहिं कोइ सन्तसमाना * जिनबश सदा रहत भगवाना
दासी शिशु मैं पाद उछिष्टा * विधिसुतभयो ऋषिनमहं शिष्टा
बूझहु हरि ते सग प्रभावा * तिन मोहि जलचरपास पठावा

देखन मरउ धरेउ बपु नाना * पुनि शुकपहँ पठयो भगवाना
सोऊ निज शरीर तजि दयऊ * तब नृपसुतते वृक्षन भयऊ
देखत आवा दिव्य विमाना * तेहि चढ़ि बोला सुवन सुजाना

दो० प्रथमै मैं जलचर रह्यो, जहां दरश तुम दीन।
तेहि फल पायो कीरतनु, तहाँ कृपा तुम कीन॥
शुकतनु तजि नृपसुत भयो, पुनि भे दरश तुम्हार।
अब नभजात विमान चढ़ि, इतना लखा हमार॥

सो० सम्भाषण अस्पर्श, करे धरे जो सेव उर।
तस्यसुकृतफलमर्म, कहिनसकतश्रुति सहसमुख॥

सुनि मोरे मन आनद छाया * सन्तप्रभाव अमित लखि पाया
रहे विप्र यह निकट पासा * तुम अहि बनि कीन्ही जो आसा
सो पुन राम गम जब टेगा * कहि न छाति दिन्हो तेहि वेगा
अवन कहा मानि मम लीन * याको पंठ धाम हरि दीन
अग शौनक सतसग प्रभावा * यह पापी पन्धाम सिधावा
नारदपुराण केर इतिहासा * यह मैं तुम ते कीन प्रकासा
नलिनी दलगत जलकण जैसे * नर जीवन है चपल तैसे
सुख ही सज्जन सगति करई * तेहि नौका चढ़ि भवनिधि तरई
चहुँयुगचहुँश्रुति कहत लोई * बिन सतसगति तरै न कोई

हरिगीतिकाछन्द॥

सतसंग बिन नहिं तरत भवनिधि दान व्रत बर यहु करै।
अस जानि जे नर चतुर करि सतसग हरि नाम रटै॥
जग आइ नर तनु पाइ सपनेहु साधु के ढिग ना गयो।
तेहि जानिये पशुसरिस मानुष देह भय तो का भयो॥

दो० साधुन के सतसंग की, महिमा अगम अपार।
वरणी जन रघुनाथ कछु, निजमति के अनुसार॥

इति श्रीविश्रामसागरसमुद्रआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतसत्कथामाहात्म्यवर्णनोनाम
एकोनचत्वारिंशः प्रा० ॥ ३९ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
कहौं नवम अस्कन्ध मन, कछु ब्रह्मानन्द बखानि॥

बहुरि सुत बोले मृदु बानी * मुनी कथा कवि कहा बखानी
एक बार यमराज प्रवीना * आपन दूत बोलि सब लीना
कह्यो कि मृत्युलोक के माहा * तुम्हरा को दुसरिहा नाहीं
एके बात यह जानि रहियो * साधुन का कछू न गहियो
वे तो हैं परमेश्वर प्यारे * रहैं राम कर बाना धारे
बन्धन सबहा पञ्च मताही * स्वर्ग रसातल भूतल माहीं
स्वर्गदेव अहितल अनुसरही * मनुजपूज महि निजहित करहीं
तिहिते जो तुमहू लखि पावा * तुरत दूरि ते शीश नवावो
जो मम आपनेच्छा मलाहि * ता न सुनायो सुनहि जाई
साधु दुखते बिकल पावै * तन धन कुटुम नाश ह्वै जावै
जिन जिन वैर भक्त सा ठाना * पापनि दुख बहु सुनो प्रमाना
दो० हिरण्याकुश प्रह्लाद ते, दुर्योधन पञ्चालि।
कंस उग्र रावण अनुज, भे सुकण्ठ अरु बालि॥

दुर्वासा ऋषि बहु दुख पावा * अम्बरीष ते वैर बढ़ायो
नृप नृगसे गिरगिट जग जाना * श्वपच भक्तसो मरयो माना
धृष्टबुद्धि ना आपुइ मारा * चन्द्रहास का मरन विचारा
सुरति सुमन्त्रा ते गुप्त ठानी * राखलिखित सुखआवे भे हानी

सुनत दूत बोले कर जोरी * कहो नाथ विस्तारि बहोरी
केहि विधि दुर्वासा गे जारे * दृष्टबुद्धि गे केहि विधि मारे
नृग गिरगिट भे केहिविधि आई * पृथक पृथक सब कहौ बुझाई
कह रवितनय कहौं मति यथा * प्रथमें अम्बरीष की कथा
राजा अम्बरीष बड़ साधू * तिन के उरमें क्षमा अगाधू
सब मन कृष्ण चरण में राखै * मुख ते रामकथा नित भाखै
करसों हरिमन्दिर बर झारै * नयनन ते प्रभु रूप निहारै
शिरमि श्यामपद करत प्रणामा * रसनै प्रिय प्रसाद प्रभुनामा
श्रवणनि सुनै चरित हरि केरे * अपरकाज के जात न नेरे
कहँलगि कहौं चरित मैं तिनके * व्यजनाहरिहि डोलायो जिनके
तिन के भवन गये दुर्वासा * ता दिन व्रत नृप रहे उपासा
ऋषिहि देखि भूपति सुखपायो * दीन निमन्त्रण सबै टिकायो
रैनि जागरन करि उत्साहू * होत विहान उठे नरनाहू
प्रातक्रिया करि आइ महीशा * जान्यो द्वादशी पल तीशा
बूझो गुरु बोलि का कीजै * पारन हम अब केहिविधि लीजै
मुनि की पूजा है युगयामा * होत विरोध किहे दोउ कामा
भृगुमुनि कहा शिला हरिधोई * करहु पान कछु दोष न होई
दो० गुरु की आज्ञा पाइकै, नृप चरणोदक लीन ।
दुरवासाऋषि जानि तहँ, आइ क्रोध अति कीन ॥
रे नृप हमैं निमत्रण दीन्हे * तोहीं प्रथम पान जल कीन्हे
क्रोध अगिनि ते तवकुल जेता * करहु भस्म शठ तोहिं समेता
असकहि पटक्यो जटाविशाला * प्रकटी तुरत अगिनिकी ज्वाला
सन्मुख चली भूप के जबहीं * नरपति रागहिं सुमिरेउ तबहीं
चल्यो सुदर्शन चक्र कराला * अगिनिखाकफरिमुनि तगचाला

भागे ऋषि गे अज शिर नाई * तेहि क्षण बृहद ब्रह्मपुर छाई
कीन्ह विदा ब्रह्मा बरियाई * हरिद्रोही को सकै बचाई
तब गे ऋषि शङ्कर के पासा * देखि शम्भु अस वचन प्रकासा
पढ्यो पुराण सहस सब वेदा * जान्यो नहिं भक्तन कर भेदा
महाप्रलय महँ बचन न कोई * तबहु न नाश भक्त कर होई
अचल धाम साकेत बिहारी * निवसत तहां दिव्य वपुधारी

मार्कण्डेयपुराणे सदाशिववाक्यं दुर्वाससं प्रति ।

श्लोक ॥

महति निलये ब्रह्मन् ब्रह्माण्डस्तु जलप्लुतः ॥
न तत्र नाशो भक्तानां सर्वेषां च विशिष्यते ॥ १ ॥

ताते जाहु यहाते भागी * नाहिन जरी नगर मम आगी
तब बैकुण्ठ गये दुर्वासा * व्याकुल गात बचन परकासा
हे ब्रह्मण्य देव आगहर * शरणपाल पूरण करुणाकर
हाय, हाय प्रभु लेहु बचाई * चक्र सुदर्शन देहि जराई
सुनु द्विज कहा रमापति देगी * म्वहिं नहिं शक्ति बचावनकेरी
हे यहि विधि अगणितगुण मेरे * भक्तवसलता के सब चेरे
यथा तमारि तेज के पासा * दीपोगण नहिं करत प्रकासा
भक्तन पराधीन हौं कैसे * पक्षी बन्धो डोरि महं जैसे
साधुन मेरो उर अस कहेऊ * तिन तजि क्षणहू जात न रहेऊ
दारागार पुत्र अपताना * तन धन गेह मानि कल्याना
सकल त्यागि मम शरणं आवैं * ते हम ते कैसे तजि जावैं
प्राणते अधिक भक्त प्रिय मोहीं * दुर्वासा समुझावौं तोहीं
तिनसे वैर कीन्ह तुम जाई * भागो यहां न रहे भलाई
होत कपूर मोर कछु भाई * तो मम कहे माफ ह्वै जाई

सदा दास मम की रखवारी * फिरहि चक्र को सकै उबारी
ताते जो निज चहौ उबारा * तो फिरि जाउ भूप दरबारा
बड़े दयालु दीन दुखहारी * देखत तुम कहँ लेहैं उबारी
ऐसे बचन कहे जगदीशा * सुनिऋषिचले काटिजनशीशा
अम्बरीष ढिग पहुँचे जाई * भे शीतल नृप लीन बचाई
पद पखारि भोजन करवाये * तिन पाछे उठि आपहु पाये
दो० लज्जित ह्वै ऋषिराज तब, कीन्हों तप बन जाइ।
भावै सो बर मागिये, कह्यो रमापति आइ ॥
दुरवासा बोले बिहँसि, यह बर दीजै मोहि।
दशसहस्र अंबरीष ही, जन्म बरनकहँ होहि ॥
सो० सुनि बोले भगवान, अम्बरीष मम भक्त है।
सो न धरी तनु आन, देन कह्या सो लेहु तुम ॥
जन्म हजार आन के जोई * मम अवतार एकसम होई
ताते अम्बरीष हित लागे * दश अवतार धरब हम आगे
सहजस्वभाव प्रणत अनुरागी * नरतनु धरेउ दासहित लागी
अस प्रभु प्रणतपाल को आही * भजिबयोग्य भजिय जगजाही
अपर देव आपै बर देवै * आपै मरण मागि मुद लेवै
रामभक्ति बिन केवल ज्ञाना * साउ निरस श्रमसाधन नाना
जैसे बिना पुरुष की नारी * केहिते दुख निज कहै बिचारी
पदबेलन्द परे जो पाऊ * तो लोकौ परलोक न टाऊ
सौभागिनी करै क्रम खोटा * तऊ ताहि बाढ़ि पतिकी ओटा
गोपी, गोप पाण्डु सुत पांचा * कौन कुकर्म करत तिन याचा
कृष्ण कृपा सब ठा जय पाई * यज्ञ ऋषभ निज देह जराई
दो० भगवतगीता में कह्यो, अर्जुन ते गोहराय।

भक्ति योग छीजै नहीं, सबदिन बर्धत जाय ॥
भ्रष्ट भये पन्थी सरिस, कीन पन्थ मे वास ।
भोरभयेपुनि चलिमिल्यो, तिमिमाको मम दास ॥
दैवी माया गुणमयी. महा दुरत्यय पात ।
मम आश्रय है अधमसो, विनप्रयास तरिजात ॥

इति श्रीविश्रामसागरअम्बरीषकथावर्णनानाम
चत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४० ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बरणौं जैमिनिकी कथा, कछुनृपनीति बखानि ॥
पुनि यमराज कह्यो मृदुबानी * अम्बरीष की कथा बखानी
अब सुनु दूसरि कथा सुनाऊ * भूप एक केरलपति नाऊ
तिन के तनय भये चन्द्रहासू * मूलनरत्न जन्म भा तासू
कछुदिनबादिविपति आगजागी * शशिहासे धाई लयभागी
कुन्तलपुर कुन्तलय नरेशा * जेहि नृप राव कर देइँ हमेशा
तस्य देवान धृष्टबुधि नामा * रही आइ धाई तेहि धामा
करि किङ्कर पालत सुत सोई * तिनकर भेद न जानत कोई
यहि बिधि भये बरष षटकेरे * बुद्धिमान अतिरूप घनेरे
तेहि यकादिन ब्रह्मभोज प्रकासा * जुरे ऋत्वज तँग शशिहासा
विषया नाम सुता निज लीन्हे * बैठ देवान चिद्विज चीन्हे
यहि कन्या का याही बालक * बरी निशाप कह्यो उद्दालक
अहमुतापति यहि बिधि चाही * दुष्ट बाल बन पठयो ताही
जाइ दूरन्तर बोले सोई * लेउ घाइ जो तुम्हरे होई
पिता मात पाये इत आयो * निज हमका बध हेत पठायो
है यक बोली सुखद हमारी * मनिलीजे पुनि डारो मारी

रहे गण्डकीसुत मुख बीचा * पूज्यो मानस शिरकरि नीचा
दो० तदाकारहूँ हतन हित, दई नयन की सैन।
लखिजल्लादनके कठिन, भई दया उर ऐन॥
हरिप्रेरित रघुनाथ्थल, बोले आपुस माहि।
ऐसो सुन्दर बाल यह बधन योग्य है नाहि॥
छठी आगुरी कर रहै, काटिलिहिनि सोइ चीन्ह।
शशिहासै बनछाडिकै, जाइ देवानै दीन्ह॥
सो० छाहँ किहे खगभाल, चहुँ दिशि बैठे घेरि मृग।
आयो इक महिपाल, नाम कुलिन्द अपुत्र सोइ॥
चन्द्रहास लगि लीन उठाई * प्रमुदित मनहुँ रङ्क निधि पाई
गा ले भवन कीन उतसाहा * दिहिमि दान जाको जस चाहा
निजसुतसमुझि पढावतभयऊ * पुनि नृप गजनिलक सो दयऊ
लागे करन राज हरषाई * पालहिं प्रजहि सुखी सब भाई
मन क्रम करे भक्ति हरि केरी * सन्त समागम प्रीति घनेरी
गृह गृह प्रति हरिगणगण होई * रामनाम सुमिरन सब कोई
जो कोइ भक्त भवन चलिआवै * करि प्रणाम आसन बैठावै
षोडश भाति पूजि सनमानै * हरि हर जन में भेद न आनै
एक बार निज कटक बनाई * सुदिन साधि नृप चढा बजाई
जहँ तहँ परी मारु नृप जीते * कोइ कोइ आइ मिले भयभीते
सब सों राम भक्ति कबुलाई * करन कहै तब देवै जाई
यहि प्रकार नृप जीति बसाये * पुनि निजपुर चंदनावति आये
पिते पूछि अरु मानि बडाई * नृप कुन्तल पै चौथि पठाई
पहुँचे मृत्य भूप दरबारा * दीन देवान खजाने डारा
सो० उतरे ताही धाम, हरिवासर तेहि दिन रहे।

राम राम सियराम, कहिनिशि कीन्हो वाससब ॥

भोर भये जागे सब प्राणी * आइ देवान कही कटुवाणी
काकुलिन्द राजा तब पायो * हाइ हाइ करि रानि बितायो
बोले सेवक राजै कोई * मरा कहै मरिगा सोइ होई
हमरे नृप कर सुत अस भयऊ * सब भूपनते कर निज लयऊ
इन्हैं जानि जन चौथि पठाई * सुनि देवान मन सशय आई
सुत कुलिन्द के रहै न कोई * भयो कबै सुनि बोले सोई
भूप शिकार गयो यक बारा * मिल्यो तहा यक सुभग कुमारा
आनि भवन सुतमानि पढ़ायो * दीनराज्य निज भक्ति बढ़ायो
सुनि देवान विस्मय उपरेजा * सोइ न होइ जेहि मारन भेजा
तुरतै गयो महीपति पासा * हाथ जोरि अस बचन प्रकासा
नाथ सुता मम भई सयानी * नृपसुत यक ठहरत वर जानी
जो राउर की आज्ञा पावा * मह देखि निज नयनन आवा

सो० सुनि नृप आयसु दीन, तुरत भवन निज आयहू ।
बोलि मदनसुत लीन, कहेसि भाव बरखोजहित ॥

है तयार चदनावति गयऊ * चद्रहास लखि आदर दयऊ
शुद्धबुद्धि सोइ बालक देखा * बहुरि विचारेउ मरण विशेखा
दुखद दुष्ट अहि मचाधीना * रालवशहित विधि कछू न कीना
ऊपर हित अन्तर कुटिलाई * बोला बचन निकट बैठाई
खरच भूरि तुम्हरे लघु लाभा * बहुरि चहत मोहि देवै काभा
जो इहया आवै मम बस्ना * तो करिदेहु तुम्हे मे सस्ता
कह चंद्रहास कौन विधि आवै * तुम बिन वहा न कोऊ पावै
तातें तुमहीं जाउ सिधाई * चीन्हत वहा तुम्हे सब भाई

चामरछन्द ॥

और एक काम धाम लोग बाग यों कही।
जात चन्द्रहास को पठाय दीजियो सही॥
देखिवे कि लालसा देखाइ देइ आइये।
कन्दही मदन तेजु वेगि मांगि लाइये॥

असकहि खलदक चीठी कीन्हों * तामें यह श्लोक लिखि दीन्हों

श्लोक ॥

विषमस्मै प्रदातव्यं त्वया मदन शत्रवे।
कार्याकार्यं न कर्तव्यं कर्तव्य किल मे प्रियम्॥१॥

लै खत चन्द्रहास चलि भयऊ * मारत हय कुन्तलपुर गयऊ
भूप वाटिका देखि सोहाई * उतरि नहान्यो सर सुख पाई
हरिपूजन करि बसन बिछावा * बांधि अश्व सोये तेहि ठावा
ताही समय महीपकुमारी * सखिन सहित आई फुलवारी
चम्पक मालिनि नाम सुधन्या * विषया नाम देवान कि कन्या
चन्द्रहास को दखि लोभानी * पाग पत्र खोल्यो निजपानी
बांचि पितहि खीझी मनमाहीं * मारन योग कुँवर ये नाहीं
काजरु पोंछ दृगन ते लीन्हो * विष जहँतह विषयालिखिदीन्हो
शम्भु शिवा बारे ते से * होहु प्रसन्न मिलै वर येई
छविमय मूरति हृदय बसाई * नृपजा सहित भवन निज आई
चन्द्रहास जागे लखि बारा * आये शिप्र देवान दुवारा
भेटि मदन कर पाती दीन्हो * बांचि वेगि बड़ आदर कीन्हो
तुरत पुरोहित लीन्ह बोलाई * दई ब्याहि विषया सुत पाई
हरषित युवतिन मङ्गल गाये * विप्रन दान विविध विधि पाये
बाजैं बाजन राग मिलाये * नाचैं नटी चटपटी लावै

दुसरे दिवस देवान सिधावा * बेगवन्त निजपुर का आवा
भाटन कीरति-विरचि सुनाऊ * श्रवण सुनत जनु लागत घाऊ
भवन जाय सुत दूलह देख्यो * राग रङ्ग बहु भाति परेख्यो
जरे अङ्ग सुत बोले रिसाना * किहे कहा जस तव परवाना
बाचि पत्र शिर पीटन लागा * लिख्यो कहा मैं मन्द अभागा
पुनि मारन हित रचेसि उपावा * सुना अनाथ रहे मोहिं भावा
चन्द्रहास यद्यपि पग परेऊ * तद्यपि दुष्ट दया नहिं करेऊ

दो० दुष्ट न छांड़त दुष्टता, कैसो होय अधीन।
ज्यों जल कोमल में चलै, जोंक बक्र प्रतिलीन॥

पुनि नृप दरबार पठायो * आपु उभय जल्लाद बुलायो
बोला जाउ शक्तिमठ दोऊ * डारेउ मारि जो आवै कोऊ
तब शठ चन्द्रहास ते बोला * आवहु पूजि देवि कुल मोला
सुनत चलै करतल धरि धारा * तेही समय कुन्तले भुवारा
बोला गुरु ते शीश नवाई * होइ सुगति जेहि कहो उपाई
कहगालवऋषिसिखसुनिलीजै * राजसुता चन्द्रहासै दीजै
सब सों नेह गेह तजि राई * सीतापति सुमिरो वन जाई
मुनिनृप कहा अबै कोउ जावै * चन्द्रहास मम पास लै आवै
मदन विचारि तुरत उठि धायो * पूजन जात पन्थ में पायो
बोला चलो भूप बोलवाया * देई गव्य काज निज आया

शिष्याछन्द॥देवी पूजै हौं जावो। राजापै कैसे आवौं॥
थारी मोको लावोजू। राजातीरा जावो जू॥

देवी पूजै मदन सिधाये * चन्द्रहास राजा ढिग आये
देखत ब्याहि सुता निज दयऊ * राजतिलक करि बनका गयऊ
इहां मदन ने शक्तिनिकेना * दुष्टन मारा खड्ग सचेता

धर ते मुण्ड विलग करिदीन्हे * अस फल खलसंगति के कीन्हे
दो० दुष्टसंगती जो करै, ताहू को दुख होय।
देह जीव खोरियाघरी, शिर रसना मति जोय॥
देखि हाल काहू कही, धृष्टबुद्धि सो जाय।
आयनिरखिसुतशिलाशिर, पटकिमरा कहिहाय॥
जो जनका अनभल तकै, सोइ जाय शठ खीश।
ज्यो रजते मारै रबिहि, उलटिपरै निजशीश॥
चन्द्रहास सुनि यह सब हाला * निरवैरी सम सन्त कृपाला
आयो चलि देवी के धामा * कीन शक्ति लरि नृत्य प्रणामा
बोली ये दोउ शत्रु तुम्हारे * मैं क्रोध करि आनु संहारे
मागहु वर जो तुम्हें सोहाई * देहु मातु फिरि इन्हें जियाई

छप्पयछन्द॥

तस्कर के कुल धर्म दुष्ट के कुल गम खाना।
किरपिन के कुल दान मूढ़ के कुल विज्ञाना॥
कसबी के कुल लाज शान्त कुल नर कामिनि के।
व्यसनी के कुल द्रव्य धाम कुल खल भामिनिके॥
हिंसक के कुल दया दिल कपटी के कुल मित्र सग।
कहै रघुनाथ सनाथ इमि हरिजन के कुल शत्रु जग॥
दो० दुर्जन तजै न दुष्टता, सज्जन तजै न हेत।
कज्जल तजै न श्यामता, मोती तजै न श्वेत॥
सुनि जियाय देवी दोउ दीन्हों * सन्त सताये कर फल चीन्हों
कीन राज जल पङ्कज नाई * दीनि भक्ति भुव में फैलाई
हैं न जनै वृष दवजल जारै * यथा भूप तम प्रजा प्रचारै
जो यह कथा सुनै वा कहई * धन वृधि होय हर्ष में रहई

फल लमिनि में बहुविधि राखा * यातें हौं संक्षेप भाखा
देखो दरिजन ते करि द्राहा * आपुइ दुख पायो बश मोहा
असिहरिभक्तिसुखदछल त्यागी * तनु धरि कर सोइ बड भागी
दो० यज्ञ न विद्या दान तप, जप न शील गुण धर्म ।
ते मनुष्य महिभार हित, प्रकटे नाहक ब्रह्म ॥

इति श्रीविश्रामसागरसत्रमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतचंद्रहासआख्यानवर्णनोनामएक-
चत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४१ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं उत्तरा अर्धमत, कहु धर्मोत्तर जानि ॥
पुनि गविसुन दूतन ते कहेऊ * चन्द्रहास गण सुनि तुम लहेऊ
और सुना यक भयो भुवारा * नाम निरग जानत संसारा
चक्रवर्ती नृप नाति निधाना * ठानै धर्म अनेक विधाना
हरि विषान खुर रजत मढ़ाई * जलजजूम गुहि बसन ओढाई
सुरभी सहस विप्र कहं देवै * तेहि पाछे जल अन्नहिं सेवै
तेहिपुर श्वपच भक्त यक रहई * देवक नाम ताहि सब कहई
सुतन जानि हरि दाया कीन्ही * कामधेनु तेहि का प्रभु दीन्ही
पुरवासी विप्रन लखि पाई * आइ भूप ते बात चलाई
भुजङ्गप्रयातछन्द ॥ महाराज है डोम के एक गाई ।
नहीं दूसरी तामसा भू लखाई ॥ सुनी स्वर्गके माहिं है धेनु
ऐसी । न जानी श्वपचने लही भाति कैसी ॥ भलीभांति
ते जो इसे दान दैवै । मखै कोटिहूते परे पुण्य लेवै ॥ सो
तातें गऊ आनि विप्राहि दीजै । अमित्पुण्यको फल इसी
योस लीजै ॥ महीपाल सुनते हिये लोभ कीन्हो । कही

मोल लावो अभी दाम दीन्हो ॥ गये विप्र बोले बिकन धेनु तेरी । जु बेंचौ कहा है नहीं गाय मेरी ॥ प्रभुकी अहै भोग पय को लगावो । बचै जोनि जूठन्महु ताहि पावौं ॥ भयो क्रोध विप्रै गयो भूप पारी । कह्यो नाथ शूपचके है मान भारी ॥ गऊ को दुहै क्षीर घृत आपु खावै । तुम्हैं लेत जानी प्रभू की बतावै ॥ पशू शूद्र नारी शठं ढोल यावत । बिना दण्ड दीन्हें नहीं ठीक आवत ॥

दो० कह महीप विप्रहु सुनो, शूपच है हरिदास ।
ताहि सतावै सोइ जो, चहै निरय को वास ॥

ताते हौं न सतावन साधू * पुण्य करत होई अपराधू
बोले विप्र बहुरि हरषाता * स्वारथरत अधर्म की बाता
सुनहु भूप यह है चण्डाला * कहा भयो पहिरे गलमाला
श्वान ग्वाल गङ्गाजल होई * ताहि पवित्र कहैं नहिं कोई
क्षीर धरे मदभाजन माहीं * होत कबहुँ सो पावन नाहीं
तैसे भक्ति शूद्र की राजा * ताहि सताये कछु न अकाजा
मानहु पितर विप्र सुर गाई * होत महाफल जिन सेवकाई
यहिविधि द्विजन कहा समुझाई * सुनि नृपके मन दुर्मति आई
बुद्धिमान कैसा होइ कोई * कहे सुने ते मति भ्रम होई
तब नृप सेवक ते अस भाषा * लावहु छोरि धेनु करि माषा
आयसु पाइ तुरत जन धाये * बरबस सुरभि भक्त की लाये
भक्त द्रोह लखि धीपति आपू * द्विज मुख नृपै देवायव शापू
निज अपराध प्रभु जात बचाई * भक्त दोष सो नहिं सहिजाई
सोइ सुरभी अरु गऊ हजारा * दई विप्र कहँ एकै बारा

मुदित महीसुर त्यायो धामा * फिरि आई सुरभी तेहि ठामा
दूजे दिन नृप दान जो कीन्यो * सहस सग नाह को दीन्यो
हाँकि विप्र निजभवन सिधावा * हेरत फिरत प्रथम जेहि पावा
बोला प्रथम मोरि यह गाई * दूसर कहै आज मैं पाई
झगरत गे ये दोउ नृप पामा * कोपित ह्वै अस बचन प्रकासा
रे नृप तू अति है अन्याई * धेनुदिहेसि फिरि लिहेसि फिराई
बोले भूप क्रोध जनि कीजै * सहस धेनु यहि बदले लीजै
बोला प्रथम विप्र सुनु राई * मैं तो लेब यहे निज गाई
अपर देउ तुम कोटि समाजा * तदपि होइ नहिं यहिसम राजा
दूसर कह्यो मोह का कहई * देके दान लीन अब चहई
दुविधा परि नृप शोच बढावा * मूड हलावत बचन न आवा
शीश तोर गिरिगिट सम कापा * गिरिगिट होउ हमारे शापा
कह नृप बचन अमोघ तुम्हारा * होई किमि उद्धार हमारा
करुणा करि सो देउ बताई * सुनि बिनती बोले द्विजराई
द्वापर युग यदुबंश मँझारा * कृष्णचन्द्र लेहि अवतारा
सुनु नृप तिनके चरण सनेहा * छूटो तव गिरिगिट की देहा
असकहिद्विज निजमन्दिरगयऊ * कालपाइ यमगण गहि लयऊ
लैगे दूत धर्म दरबारा * पाप पुण्य का कीन बिचारा
पुण्य ते पाप भयो अधिकाई * प्रथमै कहा सुगुतिहीं राई
बोले भूप बहुत जो होई * प्रथमै मोहि भोगावो सोई
इतना कहत न लागी बारा * गिरिगिटका तनु भयो भुवारा
द्वारावती निकट इक कूपा * लाग्यो रहन तहा नरभूपा
दिव्य बरषशत जब चलिगयऊ * तब अवतार कृष्णकर भयऊ
बालचरित कर कसे मारी * बसे आइ द्वारका मँझारी

तहँ इक दिन प्रभु यदुन समेता * आये बन शिकार के हेता
लागि तृषा सब भये दुखारी * हृदहु जल अस कह्यो मुरारी
खोज करत पावा सोइ कूपा * किरिकिल देह परे जहँ भूपा
लागे सब कादन यदुबीरा * तबहुँ न निकसे अधम शरीरा
विप्रशाप अरु हरिजन कोपा * निकसे किमि पापन ते तोपा
यदुन आइ तब हरिते कहेऊ * सुनि आये जहे नृग नृप रहेऊ
बाम चरण असपरस्यो जबहीं * दिव्य स्वरूप भयो नृप तबहीं
देखि चरित बोले यदुराई * को तुम अहो कहो सो गाई
कह नृप मैंहों निरग नरेशा * जाकर दान विदित सब देशा
महिरनजलकणनभ उडुजाना * गनिन नातजिमिनिमिममदाना
कह हरि कीन्ह्यो दान अपारा * कौन हेतु गिरिगिट तनु धारा
तब नृप सब वृत्तान्त सुनावा * जेहिकारण गिरिगिट तनु पावा

दो० दान विभूषण लोक में, दान स्वर्ग सोपान ।
दान दलै दुख दोष नहि, दानसरिस हितुआन ॥

सुनि बोले गिरिधर करि छोहा * अब जनि कह्यो भक्त ते द्रोहा
मम जन मोहिं प्राण ते प्यारे * सदा रहत जे शरण हमारे
करहुँ सदा मैं तिन की रच्छा * सग सेग फिरौं यथा गोवच्छा
ममजनादिशि तिरछे लख कोऊ * लेहुँ निकारि तासु दृग दोऊ
जो मम जनहि चलावै हाथा * डारौं काटि तासु कर माथा
जो मम जन ते बैर बढ़ावै * देहुँ मिटाइ रहन नहिं पावै
पाँच मास सम्वत त्रै पाचा * मध्य विनाश बचन मम साचा
तेहि पाछे यमदुख चौरासी * खर कूकर शूकर तनु पासी
जो मम जन की सेवा करई * मानहु मम सेवा अनुसरई
यद्यपि हौं स्वतन्त्र सब भाती * तदपि रहत जनवश दिनराती

भक्त हमारे बान्धव प्यारे * हम भक्तन के बन्धु पियारे
मेरे भक्त गुरू हैं मेरे * हो गुरु उन कर वे मम चेरे
जहँ ममभक्त सकल सुख तहवा * गङ्गादिक तीरथ सब जहँवा
मेरे भक्त लगत जेहि प्यारे * ते वल्लभ हैं परम हमारे
विषयिउ भक्त होइ जो कोई * अहै पवित्र तवहुँ जन सोई
जिमिमाशिशुहि सँवारिस भौती * देत डिठौना तिमि मम रीती
भक्त दोष जो मन में लावै * सो नर नीच निरय दुख पावै
कीट पतङ्ग आदि जो कोई * मुक्तिक्षेत्र सब की गति होई
वैष्णव द्रोही सुगति न पावै * आगम शास्त्र वचन अस गावै

श्लोक ॥

मुक्ति कीटपतङ्गानां सर्वेषामिह देहिनाम् ।
मुक्तिक्षेत्रमिदं प्राप्य वैष्णवे द्वेषिणां विना ॥ १ ॥

भक्तन की निन्दा जो करई * सो नर प्रकट कोल लखि परई
निन्दा विष्ठा उदर न भरई * साधुन को पावन मित करई
जो वैष्णव की करै बड़ाई * निश्चय सो भवनिधि तरिजाई
वैष्णव परम धर्ममय जानो * परम धर्ममय वैष्णव मानो
वैष्णव परमाराधन हेरे * परम गुरू वैष्णव सब केरे
वैष्णव सगति करै जो भोजन * विमल होइ कलिमलते सो जन
वैष्णव कर चरणामृत पावै * कोटि जन्मकर पाप नशावै
सन्त उछिष्ट सहित जो खाहीं * ब्रह्महत्यादि पाप नशि जाहीं
श्वपच होइ मम भक्तिहि करई * सोइ उत्तम सोइ भवनिधि तरई
जाको दीजै तासों लीजै * मोहिं सम ताकी पूजन कीजै
भक्ति हीन जो होइ कुलीना * पण्डित जप तप ज्ञान प्रवीना
वाके सब गुण जानहु ऐसे * मृतक देह के मण्डन जैसे

दो० विचरत सन्त जो अवनिपर, तीरथ पावन हेत।
देखि डरै जो जगत को, तिन्हैं परमसुख देत॥
सो० संसृतिसिन्धु अपार, तामधि बूड़त जीव सब।
तिन्हैं उतारनहार बोहित सन्त स्वरूप मम॥
मेरो सग सन्त को जानौ * सन्त सग मेरो करि मानौ
हे नृप मैं अरु वै द्वै नाहीं * मैं ही हौं सन्तन के माहीं
काहुइ अस तनु धरि उद्धारौं * काहुइ सन्तरूप ह्वै तारौं
सन्तन के चरणन की रेनू * मुक्ति भुक्तिदायक सुरधेनू
भक्त कहैं सोई मैं करहूं * सन्तन के हित नरतनु धरहूं
भक्त मोहिं हैं परम पियारे * सुनि नरेश तब बचन उचारे
प्रभु तुम जेहि आपनजनकहऊ * जिनकेविषशादियमनिशिरहऊ
तिनके लक्षण मोहिं सुनावो * जिनकी महिमा निजमुख गावो
ह्वै प्रसन्न बोले प्रभु तत्क्षण * सुनहु भूप सन्तन के लक्षण
परम कृपालु द्रोह नहिं जानैं * क्षमावन्त अरु सत्य बखानैं
निन्दारहित द्वन्द्व उर समता * पर उपकारी सुहृद न ममता
आये काम बुद्धि थिर रहैं * इन्द्री जीति नम्रता गहैं
अल्प अशन एकान्तनिवासी * सदाचार सम्रहन में बासी
शीतलचितयुत विरति विचारा * धर्मसहित निज रहित विकारा
दयावन्त षट् उर्मी जीता * मोह मान अपमान अतीता
ज्ञान मानप्रद परम प्रवीना * परसुख सुखलखि परदुख दीना
मित्र मित्र हित मित्रहि खावै * तेहि प्रकार नित मोको ध्यावै
चारि प्रकार मुक्ति नहिं लेहीं * सब तजि मम सेवा मन देहीं
दृढ़ विश्राम न लोभ न रोषा * यथालाभ तामें सन्तोषा
जो कोउ चलि शरणागत आवै * ज्यों त्यों करि तेहि ज्ञान उपावै

घनघ घजाति अशाबु अचाही * आसन त्रासन सदगुण ग्राही
प्रेम नेम दृढ़शान्ति स्वरूपा * समाचिन सुख दुख निर्धन भूपा
दृष्टिपूत करि महि पगु धरहीं * वस्त्रपूत जल पानहि करहीं
सत्यपूत करि वचन उचारैं * मनसि पूत करि कारज सारैं
यद्यपि वेद रूपमय गाये * वर्णाश्रम के धर्म दृढ़ाये
सोउ शुभाशुभ ते सब तजहीं * काय वचन मन मोकहँ भजहीं
मम अधीन सदाही रहई * साधन को बल भूलि न गहई
मोहीं को परता करि मानैं * स्वपनेहु उर आपा नहि आनैं
दो० बैठे जहँ जब सन्त मिलि, सात पाच इकठौर।
तह मम बात चलावहीं, करैं न चरचा और॥
कोउ कह दश अवतार मुरारी * धर्म सकल सुन्दर सुखकारी
मीन वराह कमट पहिचानो * नरहरि वामन भृगुपति जानो
रामचन्द्र नंदनन्दन लीने * नवम बोध निकलङ्की दीने
दशमा हैं अवतार विशाला * मनमोहन रघुपति नंदलाला
इन युगमा को बड़ सुखरामी * बोले तब रघुनाथ उपासी
दो० राम हमारे बड़े हैं, लघु तुम्हारे कान्ह।
केहिविधि जाने जाहिं निज, प्रभुता करो बखान॥
प्रथम सोमकुलकृष्णतव, शशि सम तेज प्रकास।
भानुबंश श्रीराम जी, रवि समान द्युति भास॥
जन्म समय श्रीराम के, भयो महा आनन्द।
तब वसुदेव दुराइ कै, डारि गये गृहनन्द॥
राम हमारे भूप हैं, रैयत तुम्हरे लाल।
यशुमतिसुत नाथे वृषभ, राम अस्थि थल ताल॥
बकी न मोही देस विष, असुर न मोह्यो कोइ।

मातु न मोटी बाधती मोहा युवतिन लोइ ॥
सो० युवतिन की यह रीति, पुरुष मनोहर देखिके ।
करहि वाम बश प्रीति, बहुरि बजाई बासुरी ॥
दो० मोहन हमरे राम हैं, कछू न करतब कीन ।
देवदनुजमुनि नाग नर, मोहि विलोकत लीन ॥
जो कहौ केकयि दीनवन, तासु भेद घटि जात ।
कह्यो सहिता में सुनौ, एक समय सुरनात ॥
बचन बद्ध करि मातु ते, कह्यो चतुर्दश वर्ष ।
राजसमयमोहिदिह्योवन, सोइ कीन्हो तजि हर्ष ॥
करहि मार्यो कृष्ण तव, सो नरपति दुखदाय ।
रावण बश सुर नरअसुर, ताहि बध्यो रघुराय ॥
बेदवती दशशीश ते, कह्यो रहै मैं तोहि ।
तव पुर पैठि बिनाशिहौं, हेतु गई तेहि सोहि ॥
कृष्ण छोडाये मातु पितु, निज निजका सबलोग ।
राम नेवाजे देव मुनि मनुज आन तजिभोग ॥
प्रथम खबरि लगवाइकै, कूबर दीन सुधारि ।
चरण परासि पावन करी, रघपति गौतमनारि ॥
जरासन्ध के समर मा गये भागि गोपाल ।
पीठि न दीन्ही रण विषे, काहुह राम कृपाल ॥
चोरी कीन्हीं कृष्ण तव, परभामिनि में प्रीति ।
राम न बोले झूठ कछु, भूलि न चले अनीति ॥
ब्रजपति विधिकृष भेपकर, हरेउ मान अवधेश ।
त्रिष्णु अङ्ग भृगुनाथ हू कीन्हे सुबश विशेश ॥
कृष्ण गोबर्द्धन कर धरेउ, यह सेवक को काम ।

सोइ कारज सब कपिन तें, करवायो श्रीराम ॥
कृष्ण पीन दावानलहि, नाथ्यो काली नाग ।
राम सेतु करि अरिसमर, अमित निवारे नाग ॥
विप्र सुदामा मित्र से, तन्दुल लै धन दीन ।
राम कपीश विभीषणहिं, दुरदिन में नृप कीन ॥
मरबस दीन्हो गोपिकन, तदपि तज्यो यदुराउ ।
ऋणी भये हनुमान के अस रघुबीर सुभाउ ॥
कृष्ण शरण उद्धव भये, पुनि पठये तप हेत ।
तिन्हे हमारे राम जी, राज परमपद देत ॥
दश सहस्र दशसै बरष, कीनि अनधबसि राज ।
फिरियादी बक श्वान है, भे इनतोदिशिसमाज ॥
अहिमहि अशसु अनुजासिय, दीन्होजगहितत्यागि ।
आपु स्वपुर गे यान चढि, कृष्ण सकृत शरलागि ॥

अस हैं राम हमारे स्वामी * अखिलरूप के कारण नामी
अपर कहै सिद्धान्त हमारा * पूरण हैं सकलो अवतारा
समभक्त में सब एकै अहई * रूप धरे चौबिस श्रुति कहई
हैं सब एक कनक जिमि यद्यपि * होत न राशि रतीसम तद्यपि
बोले अपर सकल श्रुति साग * राम नाम है इष्ट हमारा
सुखदायक दुख पातक हरता * सब इष्टन को पूरण करता
ब्रह्म बहा बिन रामा होई * रा बिन रघुपति कहैं न कोई
मा बिन महादेव हा कहिये * रेफ बिंदु बिन प्रणव न लहिये
कृष्ण रहित रा कसन कहावै * महावीर बिन मा न रहावै
रा बिन राधा धा रहि जावै * आ बिन सीता सीत कहावै
दुर्गा रमा शारदा भयरौं * गवरि गणेश आदि हरि गयरौं

करि विचार देखै बुध कोई * राम मन्त्र महं अक्षर दोई
जीव यथा लघु तेहि बल जागै * देव सरिस फल देत जो मागै
जेहि जाने बिन कछू न जानै * पशु समान तेहि बेद बखानै
नाम विवश है रूप सदाहीं * रूप नाम बिन आवत नाहीं
बिना नाम पुर धाम न पावै * जानत नाम कहत मिलिजावै
अगुन सगुन युग ब्रह्म कहावै * सुखप्रद परि नामै नहिं पावै

दो० ब्रह्मसो व्यापकसकलघट, आनँद अमल अखण्ड ।
तदपिबसितजगजीवसब, सहतविविधविधिदण्ड ॥
प्रीति सहित जो नापकहँ, रटै राखि बिश्वास ।
यहां सदा सुख मे रहै, अन्त रामपुर बास ॥
निरगुन ते बड़नाम यश, सो मैं कह्यो बुझाइ ।
अब सरगुन ते कहत हौं, सुनौ सुजन मनलाइ ॥

रामरूप धरि असुर-सहारे * सुरनर मुनि सब किये सुखारे
नाम जपत ते सुखी सदाहीं * योगन के दुख देखि मिटाहीं
कृष्णकुणपधरिगिरिकरलीन्हेउ * ब्रजबासिन की रक्षा कीन्हेउ
नामजपत अहिपाते माहि लीन्हें * भुवन चारिदश रजसम चीन्हे
राम कामअरि कर धनु भञ्जा * भृगुपतिसहित नृपन मद गञ्जा
नामरसिक तृण सम ससारा * तोहि कलि खिसिआइ विचारा
कृष्ण एक दावानल पीन्हा * ग्वाल बाल सब बाहर कीन्हा
नामसुमिरिशिवविषकियोपाना * जड़कुजीव जेहि सब जग जाना
राम गीध शबरी मुनिनारी * है प्रसन्न मन भय ते तारी
नाम सुमिरि शठ तरे अपारा * अजहू जपत होत भवपारा

दो० राम सुकण्ठ बिभीषणै, दीन्हि राज निजकाज ।
नामसुमिरिसज्जनतजहिं, बातमरिस जगमाज ॥

राम सिन्धु सा सेतु करि, भये पार लै सैन ।
नाम सुमिरि हनुमान गे, कूदि पियो घटजैन ॥
रामरावणहिंरणनिधनि, कीन्हि राजि बसिबास ।
नाम जपत युत मोहदल, होत बिनहिश्रम नास ॥
राम काम करिअनघहरु, अवध जात लै धाम ।
नाम उधारत तिहुँ भुवन, जो सुमिरै सहसाम ॥
हनुमत्संहितायां हनुमद्वचन श्रीरामं प्रति ॥

श्लोक ॥

राम त्वत्तोधिकं नाम इति मे निश्चिता मतिः ।
त्वयैका तार्यतेऽयोध्या नाम्ना च भुवनत्रयम् ॥

अस है इष्ट हमार महाना * शिरधरि रघुहिन कीन प्रमाना
जे अनुरूप ते बाद बढ़ावै * जाननहार महासुख पावै
एक कहैं सब है अभिरामा * नामरूप अरु लीलाधामा
यहि प्रकार की बातैं कही * मेरे हित आपस महँ लरही
सो बातैं मोकहँ अति भावै * सुनौ जाय मे निन के ठावै
जैसे विपुल सुतन की बानी * सुनिहरषत पितु निजसबजानी
तैसे मैं सुनि सुनि हरषाऊ * जाई जहा नह तहँ चलिजाऊ
दो० प्रेम प्रशंसा विनय युत, वेग वचन ये आहिं ।
तेहिते होत अनन्द चुर, फुर उर लागत नाहिं ॥
भरत के लक्षण सकल, सुखद सुनाये तोहि ।
जिनकरिकै पक्षी सरिस, निजबशकीन्हे निमोहि ॥
सुनि नरेश अतिशय सुखपायो * सन्तनपद पुनि पुनि शिरनायो
देवदूत तेहि अवसर बीरा * लै विमान आये नृप तीरा
कृपा चरण शिर नाइ नरेशा * चढ़ि विमान गवन्यो सुरदेशा

गीतिकाछन्द ॥

सुरलोक गयन्यो भूप नृप तमकूप के दुख माशेहू ।
लखि देव बरपि प्रसून प्रभु तब यहुन ते परकाशेहू ॥
करि दान यश अभिमान के नृप द्रोह हरिजनने ठयो ।
तेहि पाप पायो ताप द्विजकी शाप दरशन ते गयो ॥
अस जानि मन अनुमान कबहू सन्तको न सताइयो ।
बनिपरै कीजै सेव नाहि बनिपरे तौ शिर नाइयो ॥
यहि भाति के सुनि बचन यमके गणन अतिसुख पायहू ।
शिर नाइ दण्ड उठाइ तब सब मृत्युलोक सिधायहू ॥
दो० सन्तन को उतकर्ष जो, कहै सुनै नित नेम ।
बढ़ै भाव भजन विषे कहै रघुनाथ सुक्षेम ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतनृगप्रसङ्गसन्तलक्षणवर्णनानाम
द्विचत्वारिंशाऽध्याय ॥ ४२ ॥

दो० सुमिरिरामसिवसन्तगुरु गणप गिरा सुखदानि ।
धर्मशास्त्रमत कहौं कछु, मनुस्मृति जु बखानि ॥

सुनि सन्तन की विपुल बड़ाई * पुनि शौनक बोले शिर नाई
नाथ कहौ अस कौन उपाई * जा करि जीव सुखी ह्वै जाई
कौन देव के सुमिरण छूटे * जेहि ते पितर नरक ते छूटे
कौन देव है सब फल दानी * सुनत सूत बोले मृदु बानी
शौनक सुनो सत्य मोहिं पाहीं * राम समान आन सुर नाहीं
जिन के सुमिरण ते सुर सारे * बिन प्रयास ही होत सुखारे
जिनि तरुमूल निपेचन माहीं * डार पात फल सब हरिआही
अमजियजानसकलांबिदासा * गगहिंमजहिं तबहिं सब आसा

तीन प्रकार भजन हरिकेरा * व्यासतुमन शुकदेव निबेरा
निःकामी जो रामहिं ध्यावै * तासु विवश प्रभु आपु रहावै
मोक्ष काम करि कोई सेवै * ताको राम मोक्षपद देवै
सर्व कामकरि सेवै दाना * ताकी हरि पूजाह सब आसा
एहि प्रभु के शरणै आई * जासु कृपा अनुकृपा भलाई
अपर देव मेरो करि दुःखा * होइ प्रसन्न देहि जग सुःखा
जो नवाविधि बने न कोई * कोपि विनाश तासु करै सोई
तातें नारायण भग देवा * नहिं तिहु काल सन्य यह भेवा
दो० सर्वशास्त्र अवलोकि कै, निपुनि कीन विचार।
ध्यान योग मङ्गलकरन, हैं रामैं तत सार॥
जो निज पितर चहै निस्तारा * तौ हरिभक्ति करै विस्तारा
जैसे कास महीपति गाये * सुनि शौनक पुनि वचन उचारे
जो प्रभु कहि प्रकार नर हारी * तारे पितर वहौ विस्तारी
कहिवियि भक्ति करी हरिकेरी * बोले सूत सुनो मुनि केरी
शोरापुर यक कन्ता कहेऊ * कास नाम नाम नृप रहेऊ
अन्तसमय यमगण चलिआये * मारि बाधि निजलोक सिधाये
दोष भानुसुत लेखा लीन्हा * पुनि दूतन कहे आयसु दीन्हा
जाहु जाय नरक पुर येहू * चौदह लाख वर्ष दुख देहू
आगमु मारु नरक दिग लाये * पीव रक्त जामें कृमि छाये
चौरासी योजन कैसा * सोरह योजन गाहर निबेरा
पर जीव मूर्ख उतारहीं * एकौ पल सुपास नहिं नाहीं
तरे कंठ तन कर बेहाला * जारहिं मध्य आग्नि की ज्वाला
ऊपर यमगण मारहिं नाना * देखि त्रासु नृप कारण ठाना
ताही नरक भोगि नृप केरे * भुगतत रहे एकोत्तरि हेरे

भूपहि लखि रोदन निज ठाना * सुनि महीप अस बचन बखाना
को तुम हौ जो हमहिं निहारी * लागेहु रोदन करन पुकारी
हे नृप हम हैं पितर तुम्हारे * तुम हौ पुत्र हमारे प्यारे
बोले भूप बहुरि निज पाहीं * काहे परेउ नरक के माहीं
की तुम दान कबहुँ नहिं कीन्हा * की तुम विप्रनकहं दुख दीन्हा
की सन्तहि कोलेहु कटुबानी * बोले बहुरि पितर सुत जानी
दीन्ह पुत्र शय्यादिक दाना * गज रथ बाजि पालकी नाना
पूजे देव बिपुल बहुभाती * विप्र जेवाये दिन अरु राती
ये सब कीन्ह द्रव्य पर आनी * ताने भई पुण्य की हानी
जीव मारि बहु कीन्ह अहारा * ताते पावा नरक अपारा
जीव बधे कर पातक भारी * गावन कावे कोविद श्रुतिचारी
पुनि गुरु ते हरिमन्त्र न लीन्हा * ताते नरक बास यम दीन्हा
जेहिं प्रभु नखशिख देह सँवारी * जहँ तहँ रक्षा कीन्हि हमारी
तासु भजन हम कीन्ह न भूली * काहे न पुत्र अधोमुख झूली
अब लग रही तुम्हारी आसा * कबहुक हैं हैं हरिके दासा
तब हमार होइ निस्तारा * बसब जाइ सुरलोक मँझारा
सो तुमहू हरिभक्ति न कीन्ह्यो * आइ निरयमहँ बासा लीन्ह्यो
कह नृप जो अब छूटन पावहुँ * तौ तुम का सुरलोक पठावहु
है हरिभक्त भजहु भगवानहिं * जाते पावहुँ पद निर्वानहिं
सुनि बोले यमगण रे बन्दा * प्रथम क्यों न रँगेहु हरिरङ्गा
अब यमजाल परेहु जब माहीं * तब हरिभजन केरि सुधि आहीं
जैसे कोउ गृह फनक लागे * कूप खनावत अति अनुरागे
परत धार जिमि बेगुर बावै * होत गुद्ध गद नींव उरावै
तथा तुम्हार मनोरथ कारन * असकहि लगे नरक महँ डारन

तेहि अवसर इक हरिजन आये * तिनहि देखि यमके गण धाये
पद शिरनाइ कीन्ह अतिआदर * लाये वैवस्वत ढिग सादर
देखि कृतान्त उठे हरषाई * करि दण्डवत लीन्ह उरलाई
कनक सिंहासन आसन दीन्हा * पद पखारि पादोदक लीन्हा
धूप दीप करि दोउ कर जोरे * लागे अस्तुति करन बहोरी
देखि प्रभाव नृपहु ढिग आवा * रामभक्त सो विनती लावा
नमो नमो तुम पतितन तारन * नमो नमो प्रभु विपतिनिवारन
नमो नमो तुम पर उपकारी * मोहिं नरक ते लेहु उबारी
सुनि विनती भे सन्त दयाला * रविसुत से बोले तत्काला
याको, छाडि काम ते दीजे * उनका कहा हमारो कीजे
करहिं जाइ हरिभक्ति नरेशा * मिटहिं जाहिं सकल कलेशा
सन्तन कहा मानि यम लीन्हा * तुरतहि छाडि नरेशहि दीन्हा
ऐसे हैं हरि भक्त कृपाला * सहज निकसिनरकहिंनिहाला
छूट भूप मृतलोकहि आवा * मृतक देह निजप्राण समावा
उठत नृपति भे लोग सुखारे * सकल कहे बड़भाग हमारे
दो० तब महीप यमलोक की, कथा कही सब गाइ ।
जेहिबिधि देखे पितर निज, दीन्हो सन्त छोड़ाइ ॥
यमपुर हम निज नयनन देखा * बिन हरिभक्त महादुख पेखा
ताते भक्ति करब अब हमहू * जाते नरक न जाई कबहू
निम चोलि शुभ घरी शोधाई * केहि दिन शरण राम की जाई
पत्रा लखि द्विज बचन उचारा * प्रातहि गुरुमुख होहु सुवारा
अस सुनि भूप दान बहु दीन्हा * करिसनमान विदा तब कीन्हा
जब ते नृप हरिशरण बिचारी * तब ते भे सब पितर सुखारी
बैठे निकरि नरक के पासा * कहै कि सुत होई हरिदासा

कब हम जाब अमरपुर भाई * असकहि हुलसाह हँसाहि उठाई
दो० तावत भरमन पितृ जग, पिण्ड हेत हर बार।
यावत कुल में कृष्ण कर, भक्त न होत कुमार ॥

पद्मपुराणे श्लोक ॥

तावद्भ्रमन्ति संसारे पितरः पिण्डतत्परा ।
यावत्कुले सुतः कृष्णभक्तियुक्तो न जायते ॥

स्कन्दपुराणे ॥

पचन्ति नरके पितरो नृत्यन्ते च मुहुर्मुहुः ।
सद्वंशे वैष्णवो जातः स मे त्राता भविष्यति ॥

इहा पुरोहित कीह विचारा * सब विधि गा रोजगार हमारा
जब राजा हरि का जन होई * ज्योतिषमन्त्र न मानी कोई
नहिं अब धेनु बेढ़ाई कबहीं * पाच सात का दई हमहीं
सुनी ज्ञान जब सन्तन केरा * भाई नहीं बचन तब मेरा
हरिसेवा में मन चित देई * आन देव को नाम न लेई
तातें सो अब करौं उपाई * जाते होइ न वैष्णव राई
सुनिबोली द्विजभामिनि तबहीं * नृप के भवन जाहु तुम अबहीं
रानी ते यस कहउ बुझाई * शय्या निकट राउ नहिं आई
सुनि द्विज लै पञ्चाङ्ग सिधाये * तिसरे पहर भूप गृह आये
रानी लखि उठि माथ नवाया * आशिर्वाद दीन बैठावा
पत्रा खोलि कहा द्विज बाता * फेरो विधि तुम्हार अहिवाता
सब विधि बना रहै तब साजा * पै अब चाहत होन अकाजा
कौन अकाज भूप जो काल्हीं * लेई गुरुदिक्षा प्रण पाल्हीं
तब तुम्हार सम भाति अकाजा * राजपाट सब छोड़ी राजा
भक्ति ज्ञान में मन चित लाई * घरको कामें सकल बिसराई

तुम्हरे निपट न धाई कबहीं * चाले होहि तीरथ जब तबहीं
सोवत करहु यतन तुम सोई * जात भूप न बैराग होई
जैसे यम कीजे सो गावहु * रूप मोहनी वेष बनावहु
करि कटाक्ष मोहो नृप आजू * काम विवश लखि कीजेउ काजू
विप्रहि वेदा द्रव्य दे कीन्हा * अपना रूप रचन मन दीन्हा
जहँ लग वियन केर भण्डारा * अङ्ग अङ्ग धरि सकल सवारा
निशा पाइ पात सेज सिधाई * हास विलास कीन्ह सुख पाई
जब अनङ्गवश भूपहि जाना * पर्कार खुट करि वचन बखाना
स्वर्गलोक ते तुम फिरि आयहु * हमाई न कछु दीन्हेउ सब पायहु
बोले नरपति मागहु प्यारी * जो कछु इच्छा होइ तुम्हारी
विधि हरि हर को माया दीजे * तो हम कन्त मागि वर लीजे
तब महीप वैदेवन रोपी * त्वाई मोह हरषि बहुतेरी
सुनि बोली पति यह वर दीजे * जहा राज तह भक्ति न कीजे
भक्ति किहे वह होत असमा * ताते मैं वरजत हौं राजा
दान पुण्य भल करहु भुवाला * आस्र फल पावहु ततकाला
सुनि महीप बोले अकुलाई * बनेहु न मागत वर दुखदाई
जप तप यज्ञ दान बहु करहीं * भक्ति ज्ञान बिन जात न तरहीं
किहिनि दान तिन भक्तिविहाई * ते गिरिगिट अहि गज भे आई
ताते अब मोहि आयसु देहू * कीजे भक्ति परम फल येहू
रानी सुनि पुनि वचन उचारा * प्रथम क्यों वाचा तुम हारा
देखहु शिवि दधीचि कर्ण कीन्हा * वाचा वश आपन तनु दीन्हा
नृप हरिचन्द्र बड़े रजधानी * वाचा भरिनि डोमघर पानी
मनुवंटम जिनकी महि माटी * वाचा वश दीन्हेनि शिर काटी
अम्बर गयासुर दानव अहई * वाचावश्य अधोमुख रहई

दशरथ देन कह्यो वरदाना * बचन न तजहु तजेहु सुत प्राना
विष्णु बचन चपलामत हारा * तेहि ते आपन दधिसुत मारा
सो तुम छाडत निजमुखभाखी * ब्रह्मा विष्णु शिवहि करिसाखी
परेहु भूप दुविधा महं कैसे * गहिमुख साप छछूंदरि जैसे
तजहुँ भक्ति तौ नरकहि जैहौ * बाचा तजे अधिक दुख पैहौ
यहिविधानेजमनर्ठाकजोआनी * दीहिसि छाडि भक्त अज्ञानी

दो० कल्पलता तजि मूढ़जिमि, किंशुक लावै कोइ ।
सोइ कीन्ही नृप क्वासहू, समुझै चहुँ भक्त होइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतराजाकासथाख्यानवर्णनोनाम
त्रिचत्वारिंशोऽध्याय ॥ ४३ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वर्णौं भारत की कथा, क्वचितान्यौ मत आनि ॥

तजतहि भक्ति दूत यम केरे * पुरिखा बहुरि नरक महं गेरे
ऊपर से मुद्गर शिर दयऊ * त्रिविंशत योजन भीतर गयऊ
जब उछरत तब मारत धाई * कह कि अब क्यों उछरत आई
जेहि सुतकी तुम आश लगाई * द्विजरानी तेहि छला बनाई

दो० जानिबूझि नृप रामकी, दीन्हिसि भक्ति, बिहाइ ।
आगुहि परिहै मन्दमति, यही नरक मो आइ ॥

यह सुनि नरकी करहिं पुकारा * केहि खल भुरयो पुत्र हमारा
द्विज हत्या ताके शिर दीन्हा * बैष्णव होत मने जेहि कीन्हा
तेहि सम पापी अपर न पावा * हरषमाहिं जेहि हमे रोवावा
ऐसे बचनसकल मिलि बोलहिं * उछरहिं कबहुँ कबहु शिर खोलहिं
तेहि अवसर तहँ नारद आये * नरकन ते अस बचन सुनाये

परे अधोमुख पतित अपारा * तुम कहँ बहु कष्ट पुकारा
है मुनि हमरे कुल नृप त्रासा * होन लहन चाहैं हरिदासा
दीन्हों बरजि ताहि अब कोई * तेहि ते हमैं महा दुख होई
अजहूँ जो ताको समझावै * कोटि यज्ञ कीन्हें फल पावै
सुनि नारद के लागा दागा * नरकिन ने यम वचन सुनाया
जो मैं सुत समझावौं तोरा * सत्य वचन नहिं मानौ मोरा
ये जड़ जीव हवैं जगमाहीं * सन्त कहा ते मानत नाहीं
कहैं कि धनहिन करहि प्रबोधा * समुझै नाहिं भक्तन का बोधा
नरकिन कहा सुनहु महराजा * ऐसे वचन न बोलौ राजा
अधम देखिगा दशा हमारी * सुनत अस्तुति करौ तुम्हारी
जो कुजाति नहिं मानहि बाता * गगन रौंदि देखावहु साता
गाड़ै बीच अजिर के माहीं * मोहर भरे नृप जानत नाहीं
इतना सुनि मुनि तुरत निधाये * देखि भूप के मन्दिर आये
मुनिहि विलोकि दण्डवतकरेऊ * हाथ जोरि अस्तुति अनुसरेऊ
धन्य आजु हम धन्य मनीशा * तुम्हरो दरश दीन जगदीशा
जीवहि दुरलभ वस्तु अनेका * दुरलभ सन्त समागम एका
अब भोजन का कहिये भेवा * केहि विधि मिलै रसोई देवा
कह नारद आदिलिनि केरा * ससि विष्ठासम जल मधु हेरा
शास्त्र न जानि केहू की गाँवा * पद्मपुराण वचन अस गावै

गौरीतन्त्रे श्लोकः ॥

कृष्णमन्त्रविहीनस्य पापिष्ठस्य दुरात्मनः ।
श्वानविष्ठासमन्नान्नं जलं च मदिरासमम् ॥१॥

पद्मपुराणे ॥

अवैष्णवास्तु ये विप्राः चाण्डालदधमास्स्मृताः ।

तेषां सम्भाषणस्पर्शसोमपानादि वर्जयेत् ॥ २ ॥

स्कन्दपुराणे ॥

अवैष्णवगृहे भुक्त्वा पीत्वा वा ज्ञानतोऽपि वा ।
शुद्धिश्चान्द्रायणे प्रोक्ता इष्टापूर्त्तं वृथा सदा ॥ ३ ॥

राममन्त्र तुम सुना न काना * आज्ञा मागत कौने ज्ञाना
नरतनलहि हरिभक्ति न कीन्ह्यो * झूठे जगत माहिं मन दीन्ह्यो
देख्यो तुम नृप यमपुर सासति * तदपि हृदय नहिं आई दहसति
बड़े भाग ते छूटन पायो * इहा आइ पुनि ज्ञान गवायो
प्रसवसमयजिमिवियपति त्यागै * दुख बीते फिरि तासों पागै
तेहि प्रकार तव मति भइ राजा * जानिबूझिनिज किहेउअकाजा
पुरिखा देखि नरक महँ आयहु * भक्तिकौलकरि सुधि बिसरायहु
बोले भूप सुनहु मुनि ज्ञानी * रूप सँवारि छला मोहिं रानी
मागिसि बर करि कौल करारा * कहिसि करौ जनि भक्ति अुवारा
तब मैं ताहि बहुत समुझावा * वाके मन तनकहु नहिं आवा
वाचा की सुनि कानि बिसारी * तेहि ते हम हरिभक्ति बिसारी
कह नारद सुनिये नृप भेदा * नारि सुभाव कहत अस बेदा
रहित अचार बिचार बिहीना * परम भयाकुल छलबल पीना
चञ्चल बुद्धि चपल अवगाही * सदा अकच्छ लाभि सुख स्याही
श्रवण नासिका भेद अभङ्गा * बिगत प्रसाद मलिन सब अङ्गा
इतने अवगुण नारि मँझारा * कस न करे नृप तव अपकारा
दुष्ट नारि मत मानै सोई * तव सम जनीचेर जो होई
जे जे भे भामिनि बस राजा * तिनसबहिनका भयउ अकाजा
शशि शृङ्गीऋषि बिधि सुरराई * अपर प्रसङ्ग सुनौ मन लाई
कुण्डल नाम रहै द्विज एका * उग्र बुद्धि घर द्रव्य न नेका

निर्धन जानि तासु की नारी * नित उठि देहि हजारन गारी
इकदिन द्विज निजपुस्तकलीन्हा * उठि परदेश पयाना कीन्हा
तेहि मग इक तड़ाग लखिपावा * करिमज्जन शिर तिलक लगावा
पुनि हरिकथा कहन द्विज लागा * बाबी मध्य रहे इक नागा
तेहि हरिकथा सुनी सुख माना * तपनि मिटा कछु हृदय जुड़ाना
लागे करन विसर्जन जबही * आवा निकट निकसि अहि तबही
मोहर एक धरि बोला बानी * को तुम अहउ कहउ सुखदानी
कुण्डल कहा विप्र हम हों * विद्याधर जानत सब कोई
विधि अनकृपा परमदुख पायन * अब धनहिन परदेश सिधायन
बोला सर्प दूरि जनि जावा * हम का हरि की कथा सुनावो
मोहर एक देवे नित तोही * काहुइ पे न बतायहु मोही
यह सुनि द्विजमन हर्षितभयऊ * निकटहि राम लाभ करि दयऊ
लाग सुनावन विविध पुराना * पावहि एक मोहर नित दाना
भा धनवान महल बनवावा * सुभग बाजि निजद्वार बंधावा
भूषण बसन अनेक प्रकारा * पहिरै आप सहित सुत दारा
एक दिन भवन परोसिनि आई * बोली करकल ते हरुगाई
तुमतौ रहिउ-दुखित धन हीना * किन तुमका यह सम्पति दीना
बोली विप्रबधू सुनु माई * को जाने कहँवा पति पाई
जो तुम ते पति भेद न गावा * तौ केहि काम वाम धन पावा
पुरुष नारि ते अन्तर करई * तौ सम्पति पावक महँ परई
तेहि ते पूछेहु आहु सँभारी * अस कहि चली गई सो नारी
द्विजगामिनि तब रही रिसाई * दीन्हेसि अमरण सकल चलाई
द्विज पुस्तकपढ़ि घर जब आवा * दुखित देखि असबचन सुनावा
कौनि व्यथा तोरे मनमाहीं * सो सब कहउ प्रिया मोहिं पाहीं

कैयो बार विप्र जब बूझा * बोली तब तुमका नहि सूझा
रहेउ रङ्क अब सम्पति लहेऊ * कितसों हम ते भेद न कहेऊ
सुनि बोला द्विज शिर करधारी * याही हित कीन्हेउ रिस भारी
भूषण सजहु तजहु मन खेदा * सुनो कहउँ मैं धनकर भेदा
पुर दक्षिण है एक तड़ागा * तेहि तट रहत हवै यक नागा
दिनप्रति ताहि पुराण सुनावौं * मोहर एक तहँवा मैं पावौं
इतना सुनि उठि भोजन कीन्हा * पनि सुत तिन्हें जेंवावै लीन्हा
निशा पाय द्विज सोवनलागा * बोली सुत ते करि अनुरागा
सरके निकट आजु तुम जावो * सर्पहि मारि द्रव्य खनिलावो
सुनि पोथी कुदारि गहि लयऊ * भोर होत सर के तट गयऊ
तलक दीख विप्रसुत आवा * लखि कुदारि मन शोच बढ़ावा
कीन्ह विप्र जब कथा प्रसगा * निज बाबी ते सुनहि भुजगा
तब द्विज विविध रागिनी फेरी * तदपि न लागि धान तेहि केरी
दो० करन विसर्जन लाग जब, तब निकसा सो व्याल ।
मोहर एक चढ़ाय कै, बहुरि फिरा ततकाल ॥
भीतर भवन हलन नहिं पावा * ऊपर दुष्ट कुदारि चलावा
कछुक पूछ कटिगै अहि केरी * काटेसि घुमरि मरा तेहि बेरी
इहा विप्र जाग्यो परभाता * सुत कित गा पूछी यह बाता
बोली त्रिय कछु कामहि गयऊ * सुनि ब्राह्मण के विस्मय भयऊ
उठा तुरत द्विज अहिढिग आया * मृतक तहा निज बालक पावा
रोदन कीन्ह लीन्ह उर लाई * कीन्ह क्रिया विधिवत घरआई
कछुदिन बादि सर्पढिग आया * धरि धीरज अस बचन सुनायो
आय पुराण सुनहु यजमाना * केहि कारण हमते दुख माना
बोला अहिं अब सो रस गयऊ * जब ते तुम बनितहिकहि दयऊ

तुम्हरे सुतकर शोच अपारा * हमरे लूम केर दुख भारा
तहि ते जाहु घूमि निज धामा * अब हम ते तुम ते नहिं कामा
यह सुनि विप्र पलटि गृह आवा * सुतकर दुख कछु धनदुख पावा
देखहु भूप नारिवश भयऊ * द्रव्यलाभ सुत दूनहु गयऊ
जैसे विप्र कीन्ह निज हानी * तेहि प्रकार तव मात बौरानी
दो० भगवत भजन छोडाइ निज, धर्म दृढावै कोइ।
ताहि त्यागिये शत्रुसम, परमहितू किन होइ ॥
तज्यो पिते प्रह्लाद मा, भरत विभीषण भाइ।
गुरुवलि व्रजबनितावरनि, भे सब मङ्गलदाइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरमवमतथागरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
गममनेहीकृतकासनारदसवादकुण्डलप्रसगवर्णनानाम
चतुश्चत्वारिशाऽध्याय ॥ ४४ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि।
महभारत सदग्रन्थ की, कहौं इतिहास बखानि॥
अपर सुनौ परसग सुनावौं * जनीचेर का रूप लखावौं
जब भारत कर भा आरम्भा * चले पाण्डुसुत गाडन खम्भा
दो० बोले तब सहदेव से, प्रमुदित चारो भाइ।
होइ जीति केहि भातिसों, साइति देहु बताइ ॥
कह सहदेव सुनहु बलवाना * प्रथमै उन ते कीन बखाना
अब तुमका केहि भाति बताई * तेहि ते शकुन सुनहु यक भाई
स्वीचेर पुरुष जो पावौ * ताहि आन कुरुक्षेत्र गड़ावौ
ऐहै चलि जम्बुक तहं दिनते * सकल भेद तुम पैहौ तिनते
यह सुनि कृष्ण भीम सिधाये * घूमत एक नगरमहं आये
तहिपुर रहत रहै यक तेली * सुनहु तासु की रीति नवेली

बैठी पलग तासु की वामा * अपना करहि धामकर कामा
झारि पांति घर जल भरिलावे * कूटि पीसि पुनि अशन बनावै
ताहि पवाय खाय तब अपना * बहुरि करै सब टहल अलपना
एक दिवस गै आगि बुझाई * रविदिन मागि फिरा नहिं पाई
तब बनिता बोली ता केरी * है पग लाग महाउर मेरी
जो तुम कन्ध चढ़ावहु मोही * आनि देउँ म पावक तोही
सुनतहि लीन्हेसि कन्ध चढ़ाई * चला मुदित मन लाज बिहाई
मागे जाय अग्नि जेहि द्वारे * ताल बजावहिं बालक सारे
प्रमदा सब हांसि हँसि असबोलैं * भले आगि ये म गन डोलैं
कोउ निलज्ज कहि देवैं गारी * कोउ कहैं नीच डारिदे नारी
करहिं कुबुद्धिनिःहिविधिबाता * हमैं न अस बर दीन्ह निधाता
पुरुष दोख पुरुषन ते कहई * ये दोऊ निलज्ज बड़ अहई
जो इमि होती नारि हमारी * डरतेन ताहि जानते मारी
एक कहै अस देव न करई * दुष्ट नारि नर पाले परई

दो० दुष्टा भार्या मित्र शठ, उत्तर - दायक भृत्यु।
सर्पसहित गृहबास रिपु, सबल सो जीवत मृत्यु॥

यह सब चरित भीम जब देखा * जनांचेर निश्चय करि लेखा
नारि उतारि ताहि धरि लायो * कुरुक्षेत्र के माहि गड़ायो
आपु रहे छिपि चढ़ि तरु डारा * आये तहँ तब बहुत सियारा

दो० तेहि तेली के अग्र सब, सूँघे एक सियार।
बोला मांस अशुद्ध है, हम नहिं करब अहार॥

जो हम याको भक्षण करिबे * कोटिन बर्ष नरक महँ परिबे
तब जम्बुक सब पूछन लागे * है अशुद्ध केहि कारण पागे
सुनि जम्बुक तब उत्तर दीन्हा * यहि कबहू शुभकर्म न कीन्हा

नृपहि के डर डरत रहाना * हरि गुरु जनपद शीश न नावा
तेहि ते शिर अशुद्ध है भाई * जानिबूझि हम केहिविधि खाई
श्रुति अशुद्ध गुरुमन्त्र न लाहिमि * दृगमलीन जनदरश न कीन्हिमि
मुख अशुद्ध हरिनाम न टेरिसि * गर अशुद्ध तुलसी नहिं गेरिसि
कर अशुद्ध कुछ किहिमि न दाना * उर अशुद्ध दण्डवत न ठाना
उदर अशुद्ध प्रसाद न खाइमि * पग अशुद्ध तीरथ न सिधाइसि
सुनि सियारमुख बोला नाना * कीन्हो तुम अशुद्ध सब गाता
हमें लागि है मूल अपाग * कहौ काहि अब करी अहारा
तब जम्बुक सब शिशुन प्रबोधा * आजुके दिन मन करहु समोधा
कालिहि युद्ध होइ यहि ठाऊँ * लायहु पल जितना मन भावै
चलिहैं अस्त्र शस्त्र विधिनाना * जक्ति है बड़े बड़े धर्मयाना
मरुवा कीन्हे जिनकर मामा * होइ हमहि देवपुर बामा
पुनि सियारमुख बोले बाना * को जीता को हारी ताता
जम्बुक कहा जीति है सोई * प्रथम पताका रोपि है जोई
सुनि यह शकुन भीम घरआये * बलकन सहित सियार सिधाये
देखहु नृप त्रियके बश भयऊ * उर करि रामभक्ति तजि दयऊ
जम्बुकहू नहिं जानि ताही * तैसी गति नृप तुम्हरी आही
अतिअकाज रानी तब कीन्हा * भक्तिमाहिं बाधा करि दीन्हा
कर कहा अबला कर मोहे * तोहिं समान पतित जो होई
यह सुनि राजा बहुत लजाना * माथ नाइ अस बचन बखाना
मानहु मैं निज कीन्ह अकाजू * अस प्रभु नाम सुनावहु आजू
नारद कहा तयारी कीजै * तब तो राम मन्त्र हम दीजै
यह सुनि नृप मन्त्री हँकरावा * भीतर बाहर भवन लिपावा
कुम्भ पुरान सकल करि दूरी * नूतन कलश धरे जल पूरी

विप्र वैष्णवन सकल बोलाये * गुरुमुख होत जानि सब आये
भई भीर नृपद्वार अपारा * बाजहिं ताल मृदङ्ग सितारा
गधव करहिं रामगुण गाना * लखि समाज भूपति हरषाना
तब बोले ऋषि ते कर जारी * अब का आयसु होत बहारी
कह नारद रानी ढिग जावो * ताहू ते आयसु लै आवो
जो न मुदित मन आज्ञा दही * लाग्यो मारन तुरतै तेही

दो० भले नाथ कहि भूप तब, गे रानी के पास।
बोले आयस देहु अब, होई हरि के दास॥

सुनि रानी अस बचन उचारा * नृप हरिगा है ज्ञान तुम्हारा
हम तुमको बहुबिध समुझावा * तदपि तुम्हार मन नहिं आवा
इतना सुनि नृप मारन लागा * बोली तुरत सहित अनुरागा
हे पति मैं यहि बिधि परकासा * हमहूं तुम होई हरिदासा
वैष्णव कन्त अवैष्णव नारी * ऊट बैल कर जोत बिचारी
पुर के लोग सुनत डर पाये * गुरुदिक्षा हित सब चलिआये
तब नारद अतिकरुणा कीन्हा * बाहुमूल रामायुध दीन्हा
ऊर्ध्वपुण्ड्र पुनि तिलकलगायो * द्वादश मन्त्र सहित सो न्हायो
बखो बहुरि हरि मिश्रितनामा * पहिराई तुलसी की दामा
तेहि पाछे कछु आहुति की हों * राममन्त्र महिपालहि दीहों

दो० राममन्त्र गुरु बदन ते, जहि उर करहि प्रवेश।
होत शुद्ध सो तुरत हमि, कहत सहिता शेश॥
सर्व मन्त्र ते अधिक है, वैष्णव मन्त्र अखेद।
बिष्णु मन्त्रहू ते अधिक, राममन्त्र बट बेद॥
ब्रह्महत्या गुरुतल्पगा, स्वर्ण चोर मदिराप।
सर्वन्येव विहंसि अघ, राममन्त्र को जाप॥

जब हरिमन्त्र सुना नृप काना * पुरिखा सब चढ़े गये विमाना
पुनि रानी को मन्त्र सुनावा * तेहि पाछे आवा सोइ पावा
तब नृप द्विजन दक्षिणा दीन्हा * सब विध तोष सबनकर कीन्हा
सो शोभा मुख बरणि न जाई * रही भक्ति सब पुरमा छाई
जहँ तहँ होहिं चरित हरिकेरे * जपैं नाम सब साझ सवेरे
कह नारद मैं देखों जाई * तब पुरिखन केमी गति पाई
सुनिमुनिबचनबिदानृप कीन्हा * तब सातो गगरा कहि दीन्हा
तब पितरन हैं मांहि बताये * असकाह ऋषि यमलाकाह आये
दूतन ते अस पूछा जाई * नरकी व कित गये सिधाई
सुनि दीन्हेनि उत्तर यमदूता * रामदास भा उनकर पूता
तेहि ते वे सुरलोक पधारे * छूछे परे हैं नरक हमारे
सुनि नारद के भा सुख भारी * आये चलि बैकुण्ठ मझारी
बैठे रहे तहा यमराजा * दूतन सहित आपने काजा
जब मुनीश हरिपद शिरनावा * तब प्रभु ऋषिते बचन सुनावा
आये हैं रविसुत फिरियादी * कहे कि हम बैठे हनु बादी
नारद भक्ति दृढ़ाइ तुम्हारी * साली कीन्हेनि पुरी हमारी
जग महँ सब होइ हैं तव दासा * को आई फिरि हमरे पासा
तेहि ते अब हम जाव न तहवा * पापी सब आवत हैं जहँवा
केतनो मैं इनका समुझावा * तदपि न मानत मोर मनावा
कह नारद हम कीजे काहा * जाइ ते मानि जाइ यमनाहा
बोले धर्मराज तुम जाहू * जगमें भरमायो सब काहू
जेहि ते रामभक्ति तजि सारे * आवहिं तब सबलोक हमारे
कह नारद हम ते नहिं होई * कोटि उपाय करहु किन कोई
तुम चाहो भरमावो जाई * हरिहू कहा भला है भाई

जे होइ हैं दृढ़ भक्त हमारे * ते नहिं लगि हैं कहे तुम्हारे
तजिहैं भक्ति मोरि नहिं कबहीं * सुनि चलिभे रविके सुत तबहीं
आये भूप काम के आमा * नाउतरूप बना यक तामा
लाग हलावन दोउ कर शीसा * अपर बजावहिं बाजन बीसा
कौतुक देखि लोग जुरिआये * माथ नाइ अस बचन सुनाये
किमि होवै हमारि कुशलाना * देहु बताइ कृपा करि दाता
बोला जो चाहौ कल्याना * तौ तुम सेवहु बीर मसाना
पूजहु शक्ति भक्ति करि भारी * पावहु तुरत पुत्र धन नारी
की भैरव मरही का सेवो * अजया पुत्र महिष बलि देवो
इनते मन वाञ्छित फल पैहो * जेहि कोपिहौ तेहि तुरत नशैहो
क्षेत्रपालहि पूजहु कोई * तेहि ते विघ्न न कबहू होई
पाचहु पीरन में मन देहु * जिनते मनवाञ्छित फल लेहु
महावीर है शङ्कर देवा * मिलहि न कछुफल इनकी सेवा
दानवति बहु है जग माहीं * को जानहि फल मिलै कि नाहीं
रामभक्ति जो बेदन गाई * सो तौ है अतिशय दुखदाई
जो नर हरि की भक्ति प्रकाशै * सुत वित नारि तासु की नाशै
रोग भोग बहुभाति सतावै * जह निकसै तहँ हँसी करावै
यहि विधि कष्ट सहै बहुकाला * तब कबहू हरि होइ दयाला
तेहिपर ताहि कछू नहिं देहीं * मूरख यहि मत का मन देहीं
सुनि सुनि दूतन की अस बाणी * हार ते विमुख भये बहु प्राणी
रामभक्त जे रहे सुजाना * तिन तनको विश्वास न आना
जे मतिमन्द विषयरस पागे * ते प्रभु का तजि पूजन लागे
वनितन का देहीं इमि सीखा * गलिनगलिन मिलिमागहु भीखा
लूटि बजार भक्ति कहँ पूजौ * मिटहिसकलदुखसुख नित भूजौ

काहुहि यन्त्र मन्त्र सिखराये * काहुहि भूत चढ़ाय छुड़ाये
काहुहि दीन्ह सुता सुत नारी * काहुहि दीन्हेनि धन बहुभारी
एकहु बात कबहु फुर होई * सकल सत्यकरि मानहिं सोई
दो० यहि विधि जग भरमाइकै, गे यमपुर यमदूत ।
सोई रीति संसार में, अजहू है कह सूत ॥

छन्द ॥

कह सूत अजहू रीति सोई रही जग में छायकै ।
सब मानि नर सब करत जेहि ते परत अघ में आयकै ॥
मतिधीर जे गम्भीर जन ते झूठ मन में जानिकै ।
तजिभर्म नानाधर्म हरि की शरण भे सुख मानिकै ॥
दो० रामभक्ति दृढ़ करन हित, हरन भर्म तमरूप ।
बरणी जन रघुनाथ तेहि, यह इतिहास अनूप ॥

इति श्रीविश्रामसागरसत्रमतत्यागरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतराजाकंसकथावर्णनोनाम
पञ्चचत्वारिंशोऽध्याय- ॥ ४५ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
भक्तिरत्न मत कहौं कछु, पातञ्जलि जु बखानि ॥
कह शौनक नवधा भगति, कहौ योगयुत मोहि ।
जो बरणयो ऋषि व्यासते, सोइ सुनावौं तोहि ॥
भा जब शिष्य नारद कर राजा * बोला तब हित महितसमाजा
नाथ भये सब शरण तुम्हारी * बिन गुरु होत न दृढ़ता भारी
जिमिरिशिशु अम्बु दूधबिन पीन्हें * मरै न भरै क्षीणता लीन्हें
कहै नारद सुनु नृप प्रसङ्गा * है हरिभक्ति केर नव अङ्गा
दो० श्रवण कीरतन अस्मरण, पदसेवन अरचन्य ।

बन्दन दास्य सखात्मनय, वदन नव ये गन्य ॥
दशई प्रेम लक्षणा जानो * पृथकपृथक अस सफलवखानो
जो हरिकथा सुनै मन लाई * तासु श्रवण मग हरि उरआई
बसि पङ्कज अघ नाशै कैसे * शरदकाल जलमल हरै जैसे
विषयी विरत विमुक्तहु माहा * हरिगुण सुनन सबनकहँ चाही
वीतराग हरि चारत त कामा * है करि कोः कि लहैं कहु शोभा
अज गिरीश योगेश्वर आदा * अपर भय ज मुने श्रुतिवादी
रामचरित सुन काउ न छकदा * अब न रुचै तोह जानहु मन्दा
जो नर हरिगुण सुनै न काना * सो खर ऊँट कोल सम श्वाना
भयो निरादर भाजन भारी * तेहि ते श्वान कथो निरधारी
असद बात बहुविधि क परणा * चरत ऊँट सम ताते बरणा
बहै भार गृह का दिन राती * तेहि ते खरसम कथों कुजाती
आमत अनन्द कथा के माही * श्रवण समेत सुनै को नाहीं
दो० प्रवरा चातक हस शुक, मीन मक्षिका बैल ।
श्रोता द्वादश भाति के, मधुवृतमचुरशैल ॥
द्वादश में षट उत्तम जानो * अपर अधम अब दोउ बखानो
अन्य मान दृग लोग अधीरा * पद छेदक असमज्ज शरीरा
बादरासक निद्रावश मानी * बिन विश्वास अहित अज्ञानी
रुद्र दोष बिन श्राता होई * चरितामृत तब पावै सोई
ताते भूप दोष तजि सारे * सुनो कथा हरि की निरवारे
दो० कथा प्रीति ते सफल है, मोक्ष हेतु को कर्म ।
कथारहित जो कृत करै, सो केवल पयशर्म ॥
श्रवण परीक्षित भलकरि जाना * अब सुनु कीर्तन भक्ति सुजाना
प्रभु के जन्म कर्म बहुतेरे * मङ्गलप्रद जे अहै घनेरे

राजा रहित तिन्हें जो गावै * सो निश्चय अभिमत फल पावै
सान्दादि ऋषि जहँ लग रहेऊ * मनु हर हरिगुण तबहिन कहेऊ
रामचरित वरण्यो मो बानी * सुभग सन्य शुचि मङ्गलसानी
हरिबिन विषम बादि सबधन्धा * इमाप प्रोक्त द्वादश अरुकन्धा
वक्ता पाच प्रकृति के जाना * रवि शशि उड़ मणिदीपसमाना
वक्ताहू में दो इक होही * तजि ये याग सुनावो तोही
पक्षपात धनचाह अधीना * श्रोता नहि समुझै परवीना
प्रश्न करै नेहि उत्तर न देवै * सारवस्तु सुनि तर्क न लेवै
मूर्ति बाधि के वचन उचारै * मूरख सो ऐसे उर धारै
प्रेम प्रतीति प्रीति बिन नीका * पूछन बात परे अति रीका
बहुत पाप श्रोता जब कहहीं * तब ऐसे वक्ता शिर परहीं
दो० यदि गुणि वेद पुराण हरि, भक्ति न कीन्ही सार।
ज्यों पशु चन्दन भार धरि, भरमत जेहि नेहिद्वार॥

श्लोक आदिपुराणे॥

यथा खरश्चन्दनभारवाही भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य।
तथा च विप्रा: लिशास्त्रगुप्ता सद्भक्तिहीना खरवद्वहन्ति॥
दो० ज्यों विधवा के शीश मे, सोहै नहि सिंदूर।
गुण चतुराई रामबिन, त्योंहीं जानो फूर॥
गावै विधवा अपन कहि, बनरा दुलहिन केर।
पतिसुख लहै न स्वप्नहू, तिमिहरिजन बिनफेर॥
विद्या गोधन वेद चहुं, भक्ति दूध जब भक्ष।
पावै बरतावै तनुज, लहै किलन बिनअक्ष॥
तेहिते रसिक अनन्य है, कहै राम गुणग्राम।
तब पावै शोभा यथा, वलितचन्द्रनिशियाम॥

कीर्तन शुकमुनि भलकर जाना * अब सुनु सुमिरन भक्ति सुजाना
श्रीपति को सुमिरन जो करई * गोपद इव सो भवनिधि तरई
गणिका यमन गयन्द अजामिल * कीर आदि कविकटुउधरे किल
विषयिन भजै विषय को पावै * रामै सुमिरि राम ढिग जावै
विधि हरि हर गणपति अहिराई * सुमिरन ते पाई प्रभुताई
हरि सुमिरन सब सुखको मूला * हरि सुमिरे नाशै सब शूला
हरि सुमिरन कीजै जिमि गाई * चरताफिरत शिशुविसरि न जाई
हरि सुमिरन कीजै जिमि कामी * तजि हिय होत नारि अनुगामी
हरि सुमिरन कीजै जिमि लोभी * निशिदिन रहै द्रव्यहित क्षोभी
हरि सुमिरन कीजै जिमि चातक * गनै न हानि लाभ निज मातृक
रामनाम जिन सुमिरन कीन्हेउ * तिन जन सकलधर्मकरिलीन्हेउ
राम नाम जिन हिरदे धारा * तिन का कहा करै संसारा
राम नाम कर सुमिरन साचा * जेहि याचे जग होइ अयाचा
बहुत जन्म को पुण्य विहीना * राम नाम मुख जात न लीना
दम्भी ते जो नाम उचारै * पावक सम अघ तूलहि जारै
शत्रुभाव करि जो कोउ ध्यावै * सोऊ होय मुक्त श्रुति गावै

दो० भृङ्गी भय ते कीट ज्यों, होत भृङ्गतन अन्त।
तैसे अरि अघ त्यागि वपु, धरत रूप भगवन्त॥
राम नाम के बीच में, मनका देहु मिलाइ।
करि हरिसम रघुनाथ सो, सहजमाहि छुटिजाइ॥
कलिके कलुषी नरन नहिं, आन धर्म अधिकार।
राम नाम इति वर्ण युग, जपि ह्वैहैं भवपार॥
ते बडभागी जीव जे, कलियुग में हरिनाम।
सुमिरैं सुनिरावै सुखद, सकल कृतारथ धाम॥

पाप दहन हरि नाम मे, इतनी शक्ती आहि ।
जितनी पापी मरन को, पाप करन की नाहि ॥
चरणाली जो राम इति रमना करै बखान ।
तामैंग बैठिय बोलिये, मोक्षिय श्रुतिपरिमान ॥
श्रुतिः ॥ यश्चारणाली रामेति वाच वदेत्तेन सह संवसेत्तेन सह संवदेत्तेन सह सम्भाषीयात ॥

दो० रामनाम कलि कामतरु, कहत सकल श्रुतिसाध ।
लहै काम फल जो धरै, उर तजि दश अपराध ॥
सो० दश अपराध सो कौन, नाथ कृपाकरि बर्णिये ।
सुनो कहौं मैं तौन, मनकमाहिना माहि जम॥
कुं० गुरु अवज्ञा एक प्रति, जन हरि निन्दा ताप ।
गनै ब्रह्म मे भेद पुनि, करै नाम बल पाप ॥
करै नाम बल पाप, नाम परताप न जानै ।
बिन सरधा उपदेशि, दोष पुनि शास्त्र न मानै ॥
मानै ठगि रघुनाथ, भजै निज इन्द्री कटु उर ।
ये दश तजि अपराध, जपै नय नाम फल गुर ॥
दो० तेहिते तुमहूं दोष तजि, जपहु नाम निश्शङ्क ।
मसलोक सुख नाहि रुचै, और कहा नृप रङ्क ॥
सहित दोष निरदोषहू, राम नाम जो लेइ ।
सबहूं ताकी भाग्य की, को अस उपमा देइ ॥

सुमिरन भले बान प्रह्लादा * अब सुनु सेवन भक्ति मवादा
सेवन भक्ति कौन श्री नाके * नहि ते बसी विशद उरपाके
दो० देव यक्ष गन्धर्व नर, असुर इतर कोइ होइ ।
जो सेवै हरिपद कमल, सब सुख पावै सोइ ॥

हरिपद सेवन बिन मनज, जहा जहां चलि जात ।
तहां तहां भययुत रहत, मृत्यु न छोडत खात ॥
तेहि ते रामचरण नित सेवो * अर्चन भक्ति छठी सुनि लेवो
परमानन्द दानि हरि पूजा * इहि ते सुगम उपाय न दूजा
केवल हरि अर्चन के कीने * लहत तीन सुर सकल प्रवीने
जिमि सींचे जर सब तरु तीपे * हरित न होइ पात जो पीपे
मुख ते अशन प्राणही पावे * सब इन्द्री तिरपित है जावे
प्रभु आनन्दसिन्धु सुखधामा * करुणाकर परिपूरण कामा
सो निज पूजा चहै न कबहीं * निज कल्याण हेतु करै सबहीं
हरिहि पूजि पूजित है येहू * पावै सुख सपात निज गेहू
ज्यों निजमुखतिलकादिलगावे * सोइ दर्पण प्रतिबिम्ब सुहावे
श्रीपति मान दिहे बिन प्रानी * लहै न कबहु मान अज्ञानी
प्रभुकर मान करै नर जबहीं * हरिहु ताहि सन्मानत तबहीं
प्रभु आदरेउ धन्य नर सोई * ताह सम बडभागी नहिं कोई
सकल देव गनि ताहि सराहै * चरण रेणु तेहि पावन चाहै
ऐसी है हरि पूजन ताता * पुनि पेमरे केरि नहिं बाता
दम्भ सहित मद दुष्ट धनादी * करहिं यतन सो श्रम सब बादी
जल अंकुर दल दूब चढावे * बिन मद सो उत्तम गति पावे
दो० मारु दारु हरि चित्र पवि, पुरट मनोमय रत्न ।
ये प्रभु प्रतिमा आठ विधि, पूजै जन करि यत्न ॥

तोटकछन्द ॥

हरिपूजन षोडश भांति कही । प्रथमै आवाहन कीन चही ॥
पुनि आसन पादरघाचमनं । अस्नान पटाहुनि सुव्रतनं ॥
शुचि चन्दन पुष्प सुधूपदिपं । नैवेद्य तेबूल विनय अर्पिप ॥

परदक्षिण पांडश भांति दृढ़ । चरणामृतनागनकोटिगिर्थं ॥
दो० जल दल चन्दन चक्र दर, घण्टशिला हरिताव ।
अष्ट वस्तु मिलि होत है, चरणामृत सुखदाव ॥
फल चरणोदक लिहे कर, कहेतक करौं बखान ।
भूमि परे पातक तथा, अवमृत दीपविधान ॥
चारि चरण युग देश कटि, मुखमण्डल इक बार ।
सप्त चक्र सर्वाङ्ग पर, इमि आरती उतार ॥
श्रीहरि पूजा अमित फल, परमपुण्य सुखदानि ।
ताते सन्तन कीजिये, प्रीतिसहित हितमानि ॥
अब सुनु दूसरि विधि कहौं, जाहि करत सनकादि ।
अगजग रूप अनूप हरि, आसन देहु अनादि ॥
पादपुष्टता अर्घ अपि, शुचि सनेह अस्नान ।
बसन विनय सब सद्गुण, चितचन्दन सिकशान ॥
धूप वासना दीप निज, बोध हर अविवेक ।
अशुभाशुभ तूला सवृत, गोवर्तिका अनेक ॥
विरति वह्निकरि अर्पिये, विविध भाव नैवेद्य ।
प्रेम ताम्बूल सुगन्धपन, पाइ मिटत भवभेद ॥
सदन सत्य पर्यङ्क पर, रामहि शयन कराइ ।
क्षमा दया परिचारिका, तब सुदेह लगाइ ॥
यहि विधि जो पूजन करै, हरै सकल सन्ताप ।
निरवर्ती की रीति यह, केवल हरि का जाप ॥

पूजन भले कीन्ह पृथु राजा * पूरब पश्चिम सनक समाजा
अष्टैं वन्दन शक्ति अनूपा * प्रभुवन्दन सब का सुख रूपा
वन्दन करै जोरि कर जबहीं * मङ्गल सो नर पावत तबहीं

सुकृत जीव हरि सन्मुख आवै * मन बच क्रम करि शीश नवावै
सो हरिधाम मोक्ष सुख लहई * इमि भागवत माहि विधि कहई
सकृत प्रणाम प्रभुहि कर कोई * तेहि मम दश अश्वमेध न होई
दश अश्वमेधी पुनि जगजावै * कृष्ण प्रणामी बहुरि न आवै
मग रासि गिरे व्यथावश पर्ई * विवश नाम हरि बन्दन करई
तासु महाअघ सचिन नाशै * प्रीतिसहित फल कोन प्रकाशै
बन्दन कीन दान पति आछे * अपर भये बहु आगे पाछे

दो० हरिप्रणाम महिमाअमित, को करिसकै बखान।
तेहि ते बन्दन राम की, करहु मानि कल्यान॥

सतवें भक्ति दास्य अस नामा * दास भाव है सेवै रामा
तासु नाम सुमिरत अघ जरई * जासु चरणजल भवरुज हरई
जासु कटाक्ष चहै विधि ईशा * भजै जाहि सनकादि मुनीशा
तेहि प्रभु केर दास जब भयऊ * कौन कर्म बाकी रहि गयऊ
तिन का कछू न चाही कबहीं * दास भये पुर स्वारथ सबहीं
दास भाव बिन जरनि न जाई * इमि दुर्वासा कह्यो बुझाई
जो यावत हरि मन नहिं तावत * सुकृत सदन रागादि चोरावत
दास भये धन हर्ता जेते * लगहि भक्ति साधन महँ तेते
भगवत हेत सकल व्योपारा * होत सुखदशुचि मिटत विकारा
दास सरिस प्रिय प्रभुहि न कोई * रघुपति तिलकमाझ हम जोई
बैठे जहँ सब सबविधि चीन्हा * तिलक दास हनुमान दीन्हा

दो० काय बचन मन कर्म करि, सो अरपै भगवान।
बिधि निषेध नहि नाथवश, दास भाव सो जान॥
नारायण को दास जो, भयो न लहि वर वृत्ति।
जियनसोशवसमकहनहमि, पाराशर अस्मृत्ति॥

अष्टम भक्ति सखत्व कहावै * रघुपति सखा परमसुख पावै
नन्द गोपिका अरु ब्रजवासी * भये मित्रता करि सुखरासी
निशिचरपति सुग्रीव निषादा * भये सखा करि रहित विषादा
अपर मित्र प्रति स्वारथ चाहै * राम सखा सुख ते सुख लाहै
अपर सखा कोउ जाइ विदेशा * तेहि वियोग दुखहोइ अंदेशा
अन्तरयामी राम कृपाला * निकट रहत सन्तन सब काला
अपर मित्र में अस गुण नाहा * जस गण है रघुनन्दन माहीं
यहि ते सब सुख तुच्छ विचारी * श्यामसुन्दर ते कीजै यारी
मन मलीन पूरब कृत दोषा * पुनि नामे डारत करि रोषा
ताते सम्पति पुनि पुनि लहई * किमि उद्धार होइ श्रुति कहई
जिमि कोइ केतु पकरि नद गहेऊ * किमि उतर फिरि फेनुइ गहेऊ
वासुदेव वोहित सुखधामा * सकल विश्वदायक विश्रामा
जबलग तिन में प्रीति न करई * तबलग कर्मसिन्धु नहि तरई

दो० प्रभुपद प्रीति सो होतही, मिटत त्रिविधदुखदोष ।
सकल सुसाधन कर फल यतनै करिय न मोष ॥

नवई भक्ति मुना मोहिं पाही * आतम अर्पण सम कोइ नाही
जो निज देहादिक प्रभु पासा * करै समर्पण तजि सब आसा
सो निश्चिन्त रहत सब काला * तासु फिरि प्रभु करत कृपाला
जिमि वोइ वृषभ अश्व निजबंचे * तासु यलहिन करत निशोंचे
राम मया भाजन सो अहई * हरि ऐश्वर्य मोक्ष ते लहई
तर्कशास्त्र अरु नय विचारी * अहै जीव कहँ सब सुखकारी
ते सब निगम नीति अनुकूला * करै भली विधि नहिं प्रतिकूला
परम पुरुष श्रीपति गुणसागर * अन्तरयामी राम उजागर
तिन पा आतम करै निवेदन * तौ सब साच जानिये खेदन

तन मन हरिहिहि अर्पण कीना * तौ धर्मादिक फल परवीना
गुणातीत सोइ अहै विवेकी * नृपवलिकेरि टेक जिन टेकी

दो० तेहि ते सर्वसु अर्पिकै, निर्भय हरिगुण गाव।
आखिर इक दिन छूटिहै, अब सुनु शरणप्रभाव ॥
देव पितर ऋषि भूतकर, ऋणी अहै सब कोय।
हवन श्राद्ध अध्ययनबलि, कर नित तब मुच होय ॥
नाहितसबविधिकर्मतजि, गहै शरण हरि करि।
तब छूटै ऋण पाप कोइ, तेहि तन सकै न टेरि ॥
अथवा ऋण दीन्हें विना, रहै ब्योहर आधीन।
सोनरइमि दिनभरै जिमि, ऋणीधनिकवशदीन ॥
थाते कृष्ण कृपाल के, युगपद सब सुखदानि।
परम कृपालय जानिकै, शरण गहौ प्रण ठानि ॥

जे नर रामचरण सुखकारी * शरण गह्यो जब दृढ व्रतधारी
प्रबलकाल तेहि लखिःमिकहई * यह अब हमरे वश नहिं अहई

दो० देखौ सुर नर असुर अहि, किन्नर खग गन्धर्व।
काल कलेवा ह्वै रहे, ब्रह्मादिक जग सर्व ॥
बचत न कोई काल ते, जहँ तक आवत दृष्ट।
करतग्राम वड़वाग्नि ज्या, यों कह योगवसिष्ट ॥
ऐसो काल कराल सो, डरत जासु दिशि देखि।
जे हरिशरण न गहैं ते, शठ सम पशुके लेखि ॥
प्रेमलक्षणा प्रेम करि, रहत न देह सँभार।
दशधा भक्ति कहाव सो, यह सब ते अधिकार ॥
दश भक्तिन महँ एकहू, जिन राखी उर धारि।
सोइ वल्लभ श्रीरामकहँ, कहा पुरुष कह नारि ॥

सन्तदास अरु शिष्यता, पुनि वात्सल्य शृंगार ।
जलमहिमरुभुक नभमुये, भक्ति पञ्च रससार ॥
श्रीगुरु देवादास के, चरणकमल धरिमाथ ।
कहे भक्ति के अङ्ग सब, सुखप्रद जन रघुनाथ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसकमनसागरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ
दासगमनहीकृतनवधाभक्तिवर्णनोनामषट्-
चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

दो० सुमिरिरामसियमन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
योगशास्त्र मत कहौं कछु, हंसोपनिषद जानि ॥
बोले नृप बहुत सुख पाई * बिन गुरु यों सदपन्थ बताई
पातञ्जली शास्त्र के माहीं * कह्यो योग विधि सो मोहिं पाहीं
कह मुनि भले सुनो मनु लाई * सगन स्वल्प करि कहौं बुझाई
दो० आठ अङ्ग है योग के, यम नेमासन साधि ।
प्राणायाम प्रत्याहार अरु, धारण ध्यान समाधि ॥

प्रथम यमअङ्ग ॥

सत्य अहिंसा पुण्य धृत, क्षमा अचाह असङ्ग ।
ब्रह्मचर्य निरभय भवन, गुणभुक धिरयमअङ्ग ॥

द्वितीय नेमअङ्ग ॥

शौच धर्म जप तप अतिथि, हरि गुरु सेव सन्तोष ।
सौम तीर्थ उपकार पर, निर्छल नेम अदोष ॥

तृतीय आसनअङ्ग ॥

चौरासी आसन कहे, तिनमा उभय विशाल ।
एक पद्म दूजा शुद्धमनि, सो साधे शशिभाल ॥

चतुर्थ प्राणायामअङ्ग ॥

चतुर्थ प्राणायाम करै, षट चक्कर को शोधि।
इकाधार स्वाधिष्ठान पुनि, मनिपूरक को बोधि॥
चौथा अनहद चक्र कहि, पँचवा नाम बिशुद्ध।
छठवां आज्ञा समुझिकै, जपै मन्त्र रा शुद्ध॥
पूरक में षोडश जपै, कुम्भक में चौंसट्ठि।
रेचक में बत्तिस कहै, हरे हरे जनि हट्ठि॥
ज्यों ज्यों ठहरै पवन उर, त्यों त्यों मन्त्र बढ़ाय।
कुम्भक आठ प्रकार की, सनो कहौं अब गाय॥
प्रथमैं सूरज भेदनी, पूरै पिंगल बात।
रेचै बाये रोकि कछु, हरै वायु रज गात॥
उभय उजाई पवन की, पूरि धरै उर माहि।
ईडा ते रेचन करै, कफ रज लेधर जाहिं॥
तीसरि शीत जो कारणी, पेय घ्राण ते पौन।
सीसी कहि मुख ते तजै, भजै क्षुधा तिरपौन॥
चौथि शीतली पूरई जीह बदन ते प्रान।
रोंकि निवारै नाक तेहि, करै वृद्ध ते ज्वान॥
पँचई आस्त्रिक श्वास ते, भरै तज अति शिघ्र।
थके करै रवि शशि ठहरि, मिटै त्रिबिध रुजाबिघ्र॥
छठी भ्रामरी भृग धुनि, भरै श्वास ते वाय।
रेचै ताही शब्द ते, मन चञ्चल ठहराय॥
सतई मूर्च्छा नाम को, सुमिरै श्वास उसास।
प्रभुद्द मिलावै दुख हरै करै पेट दुख - नास॥
अठई केवल जो कही, प्रथमै मन्त्र गनाय।

सो कुम्भक सो शिष्ट है, जिमि मनुपन में राय ॥

पञ्चम प्रत्याहारअङ्ग ॥

पञ्चम प्रत्याहार जो, बिषय ओर मन जाइ।
घेरि लगावै ध्यान में, ज्यों निज सुत को माइ ॥
तब आपुइ बश होइ है, जिमि बनियाँकर भून।
तदपि सजग रहिये सदा, रिपु सम जानि कपूत ॥

षष्ट धारणाअङ्ग ॥

षष्ठम धारै धारणा, पाचों तत्त्वन केरि।
प्रथमैं गुरु गोबिन्द की, प्राण पवन हिय हेरि ॥
काल ज्ञान तेहि लखै जो, बरण्यो बिबिध प्रकार।
चक्षु चक्र छाया पुरुष, दीप गन्ध ध्रुवतार ॥
भ्रू अदिष्टि नौ दिन जपै, घ्राणअलख दिन सात।
तालू लौं जपि पाच दिन, एक रसन सुख बात ॥
प्रश्नन बिबिध प्रकार की, हैं सुरही में लेखि।
जो सब समुझा चहै तौ, लेइ स्वरोदय देखि ॥

सप्तम ध्यानअङ्ग ॥

सतवां अङ्ग है ध्यान का, सोउ चारि बिधि मीत।
पदस्थ पिण्डस्थ रूपस्थ वा, चौथा रूप अतीत ॥
पदस्थ जो श्रीराम के, चरण कमल उर लेइ।
नखशिखलौं छबि निरखि पुनि, पायँन मे मन देइ ॥
करते करते ध्यान यह, हरि को प्रापत होइ।
की कुम्भक करि प्रणव युत, जापत पावै सोइ ॥
तूजा ध्यान पिण्डस्थ है, शोधै पिण्ड सरोज।
भ्रमर गुफा चढि युक्ति ते, त्रिवलीको लहै खोज॥

रूपस्थ ध्यान तीसर सदा, चितवै भृकुटी ओर।
लखै ज्योति उडुमाल शशि रवि प्रकाश सब ठौर॥
चौथा रूपातीत सो, ध्यान शून्य का होइ।
करत शून्य है आपहू, रहै न भवरज कोइ॥

अष्टम समाधिअङ्ग॥

अटवां किहे समाधि के, आपा जात नशाइ।
ध्याता ध्यान जु एक है, मिलै तुरी में जाइ॥
अष्टाङ्ग योग जो मैं कहो, सो तुम समुझेउ तात।
अब सुनु जो षट करम मैं, प्रथमैं कीन्हे जात॥
प्रथमैं तानो नाक ते, डारि दुहू मुख ओर।
दूजा धोती झीन पट, निगलि निकारै कोर॥
तीजा बस्ती गुदा ते, नीर खैंचि तजि देइ।
चौथा गज जलयुक्ति युत, रोचि उदरभरि पेइ॥
पँचवां न्योली कर्म ते, नलै बिलोई जाहि।
छठवां आटक दृगन की, पलक लगावै नाहिं॥
अब सुनु मुद्रा पच विधि, प्रथम खेचरी होय।
मुख में तासु निवास है, बढ़वै जीभ बिलोय॥
दुसरी मुद्रा भूचरी नासा जासु निवास।
प्राण अपान जुदी जुदी, करि देवै यक पास॥
तीजी मुद्रा चाचरी, बसै दृगनबिच सोपि।
नासा आगे दृष्टि धरि, देखै अचरज गोपि॥
चौथी मुद्रा गोचरी, करत श्रवण में बास।
ज्ञान सुरति यक होत है, अनहद शब्द प्रकास॥
पँचई मुद्रा उनमुनी, बस सो दशये द्वार।

पावै सिद्ध समाधि तहँ, होय वासना क्षार ॥
बन्धन चारि प्रकार सुनु, महाबन्ध पुनि मूल ।
जालंधर उड्यान चहु, हरै हृदय की शूल ॥
योग क्रिया रघुनाथ सब, बरणी मति अनुसार ।
गुरुबिन सधत न समुझि तेहि, कीन्हों नहि बिस्तार ॥
योग तपस्या के किहे, मिलै ऋद्धि अरु सिद्धि ।
तिन में वहै न चतुर मोहू, अब सुनु किनकी वृद्धि ॥
प्रथमैं अणिमा लघु करै, दूसरि महिमा मोट ।
तीसरि लघिमा तूलसम, गरिमा करै बडोट ॥
पँचई प्रापत चह तहां, फिरि आवै अतिहाल ।
छठी प्रकाम सु चहु धरै, सतई ईशता जाल ॥
बशीकरन सिधि आठवीं, करै चहै तेहि वश्य ।
रामभजन बिन बादि अब, सुनुयककमनिधिदश्य॥
महापद्म अरु पद्म पुनि, कच्छप मकर मुकुन्द ।
शंख खर्ब नीलाठये, नवई निद्धि जु कुन्द ॥
ऋधिसिधिभई तौ क्याभयो, जो न भज्यो रघुवीर ।
खग बहु उडत अकाश में, कृमि बहु नोघत नीर ॥
लोक रिझाये हानि बडि, लाभ तुच्छ सन्मान ।
वाह वाह कहि भाड के, सर्प डसतगं प्रान ॥
तेहिते त्रयविधि कीजिये, हरि को सुमिरन सार ।
सत्य सत्यमिति नाथ फिरि, कहौ सहित विस्तार ॥

चौबोला छन्द ॥

सुनु सुमिरन की बात कहौ अब तोहिरे ।
जहिते इन्द्रिन सहित अचल मन होहिरे ॥

पद्मासन को करै न तौ सिध जानिकै।
मेरुदण्ड सम राखि चिबुक उर आनिकै॥
नासापर की दृष्टि तिर्कुटी ठाम को।
सुमिरै सांस उसास रामही नाम को॥
रटतो मिलै मिठास आस आगे परै।
अग्नि फूल से प्रथम पुरह लागत भरै॥
कछु दिन में लखिपरै दीपकी ज्योति जू।
पुनि तारन के माहँ बिन्दु द्युति होति जू॥
सनइर सनइर सोम सूर बहु देखई।
सहस कमल पर परम आतमहिं पेखई॥
बडी बिरह की लाय पाय सखरासही।
झिलमिल झिलमिल जगत तेज में भासही॥
ज्यों जलनिधि में बूडि बिलोकै माहि जू।
दशदिशि दरशै जलै और कछु नाहि जू॥
बाजै अनहद नाद तहा दशभांति जो।
बरणौं तिन की रीति रहनि है जाति जो॥
प्रथम भँवरगुञ्जार अङ्ग पुलकावई।
पुनि सुनने पर नाद सु आलस आवई॥
तीसरि धुनि सुनि शंख प्रेम पीड़ा जगै।
चढै अमल सुनि घण्ट शीश घूमन लगै॥
पञ्चम बाजत ताल अमी बरसावही।
षष्ठ मुरलि तजि कण्ठतरे सोइ पावही॥
सप्तम भारी सुनत चढै छविमूर की।
अन्तरयामी होय लखै गति दूर की॥

अष्टम अकनि मृदङ्गनाद अनहद सुनै।
अपर न जानै कोइ काल यह तिहुँगुनै॥
नवम नफीरी सुनत अगोचर होइ जू।
चहै तहाँ चलि जाय न देखै कोइ जू॥
पुनि होवै अस्थूल दशा सब देव की।
दशईं केहरिनाद सुनत अहमेव की॥
गांठि कठिन खुलि जाय होय सो ब्रह्म ही।
सत चित आनंदरूप मिटै सब कर्म ही॥
जिमि हिम हिलिमिलि उदधि कहावै उदधिही।
होय बह्नि सँग बह्नि दहत जो संगही॥
करै सदा यह ध्यान बैठि एकान्त में।
अल्प अशन अनरक्त रहै रस शान्त में॥
लोहित निज पग पानि मूदि नवद्वार को।
सुनै सुरत ते शब्द अनेक प्रकार को॥
भावत जन रघुनाथ सनेही राम के।
भये यही करि सन्त निवासी धाम के॥
जो चाहै हरिभक्ति भजै अवतारसों।
करै ध्यान सब अङ्ग समुझि गुरुद्वारसो॥
जपै इष्ट को नाम प्रेम मन ठानिकै।
सदा सर्वगत ईश सबको जानिकै॥
सुन्दर श्यामस्वरूप हृदय उर आवही।
ब्रह्मलोक का सुख न तब तेहि भावही॥
अन्त भावना सरिस लहै भगवन्त को।
प्रभुताकर प्रभु पुनि प्रतिपालक सन्त को॥

अल्प इष्ट को अल्प भूरिको भूरि है।
चाहवन्त को निकट चाह बिन दूरि है॥
कहत उपनिषद वेद सो ईश व पार है।
जो जन करणी कर करणिही सार है॥
करणी ही है ऋद्धि करणि ही सिद्धि है।
बिन करणी नहि होत किसीकी बुद्धि है॥
ताते जन रघुनाथ सुकरणी कीजिये।
अशन बिना नहि होत तृप्त मुनि लीजिये॥

दो० सिफत करै का खाड़ की, धरै न मुख अभिराम।
लहे स्वाद रघुनाथ किमि, तिमिसुमिरनबिननाम॥
हरिसुमिरन कीन्ह्यो नहीं, कैसे सुख सरसाय।
हरदी जरदी तब चढ़ै, जब मरदी भलजाय॥
सुमिरन बिन जानै कहा, कोइ हरिनाम प्रभाव।
जिमि माणिकके मोलको, मानिक परखै पाव॥
कुटिल कृतघ्नी कूर ते, रामतत्त्व जनि गाय।
अन्धे कर हीरा परी, देई दूरि चलाय॥
रामतत्त्व गुरुभक्त ते, कहिये जानि कृतज्ञ।
पदिक पारखी लेइगो, होइ न क्योंकर अज्ञ॥
बेदरु शास्त्र पुराण कर, कहेउँ जो व्यापकमत्त्व।
अब सुनु भाषौं स्वल्प मे, तिन सबहिनको तत्त्व॥

कु० चारि वेद के अङ्ग षट, प्राण सूत्र व्याकर्ण।
शिक्षाज्योतिष छन्दविधि, पुनि निरुक्त निजवर्ण॥
पुनि निरुक्त निजवर्ण, वेद के चहुं उपवेदा।
ऋग का आयुर तत्थ, चिकित्साशास्त्रअखेदा॥

यजुर्वेद, कर धनुर्वेद, तत युक्त शास्त्र कहि ।
साम कर गन्धर्व नस्थ, संगीत शास्त्र सहि ॥
दो० सही अथर्वण को अरथ, शिल्पशास्त्र युत धारि ।
अपरमिमांसा आदि हैं, हैं षटशास्त्र बिचारि ॥

चरपटछन्द ॥

तत्त्वमसी कहै सामवेद । ब्रह्म जीव है प्रकृतिभेद ॥
प्रज्ञा नद ऋग्वेद वयन । शीव स्वयं आनन्दअयन ॥
ब्रह्म अग्निपद यजुर भाखि । चेतन सबमहँ भरतसाखि ॥
यं आतमा अथर्वण आह । मेरी सब कोइ भरत चाह ॥
सकल वाक्यको यही अर्थ । ब्रह्म जीव माया अनर्थ ॥
अब सुशास्त्र मत सुनु सुजान । जेहि विधि मुनिवरकरतगान
दो० प्रथम मिमांसा शास्त्रके, जैमिनि मुनि आचार्य ।
धर्मविषे रघुनाथ भनि, स्वर्गादिक फलकार्य ॥
द्वितिये वैशेषिक शास्त्र, तस्याचार्य कणाद ।
शून्य पदारथ ज्ञानफल, भावाभाव विवाद ॥
न्यायशास्त्र गौतम ऋषय, भाष्यो तर्क विशेखि ।
प्रमाणादि षोडश अरथ, बोध प्रयोजन लेखि ॥
चतुरथ पातञ्जलि लियो योगशास्त्र सुखमूल ।
विषयनिरोधनचित्तविरति, नाशकर्मश्रित शूल ॥
पंचवां शास्त्र जुसांख्य के, कर्ता कपिलयोगीस ।
प्रकृति पुरुष निर्णय विषे, हेतु त्रिविधदुखखीस ॥
षष्ठम शास्त्र वेदान्त के, आचारय मनिव्यास ।
ब्रह्म जीव की एकता, विषय मोक्षफलनास ॥
सो० सर्ग, विसर्ग, स्थान, पोषण उक्ति मनोतरपि ।

मुक्ति निरोध इशान, आश्रय देशपुराण मत ॥
दो० वेदस्मृति पुनि संहिता, आगम निगम पुरान।
एक वाक्यता सबनकै, वैद्य एक भगवान ॥
एक नगर के बहुत पथ, सरल सूध चलिजात।
अन्त प्राप्ति एकै नगर, त्यों शास्त्रन की बात ॥
वेद शास्त्रन सहित जो लगै काव्य की रीति।
तौ न होय सन्देह कछु, ज्यों पुत्रन को प्रीति ॥

अरिल्लछन्द ॥

चौहटहाट समान वेद चहुं जानिये।
विविध भाति की वस्तु विकत तहँ मानिये ॥
जो जेहि रुचै सो लेइ देइ धन धाम को।
परिहां। लीन्ह्यो जन रघुनाथ रतन हरिनाम को॥
पावन पर्वत सरिस वेद अरु शास्त्र हैं।
विविध भाँति की धातु रहत तिनमाञ्च हैं ॥
जो जेहि रुचै सो लेइ भले हित मानिजू।
परिहा। सन्तन लीन्ही भक्तिमणिनकीखानिजू॥
दो० वेद विपिन बूटी वचन, हरिजन किमि आकार।
खरी जरी तिनके कने, खोटी गहत गवांर ॥
श्रीगुरु देवादास के, चरणकमल धरि माथ।
इतिहासायन ग्रन्थ यह, पूर कीन रघुनाथ ॥

गीतिकाछन्द ॥

रघुनाथ गरुपद माथधरि कह्यो रामयश हित मानिकै।
कल्याणकर्ता पुण्यमत तो पापहर्ता जानिकै ॥
कहिहैं जे सुनिहैं सहित नेह विदेह गति पैहैं सही।

मनकाम करुणाधाम को शुचि नाम सो दृढ़करि गही ॥
दो० रामचरित गावत सुनत, विघ्न करत जो कोइ ।
जन्म जन्म तेहि उदर मे, रोग जलधर होइ ॥
विश्रामोदधि ग्रन्थ मे, तीनि अयन है तात ।
इतिहासायन कृष्णायन, रामायण सुखदात ॥
प्रथमायन परमान गनाई * उनइसमे सत्तारि चौपाई
दोहा छमे पचास सोहाये * उनहत्तारि सोरठा गनाये
कुण्डलिया चौबिस पहिचानो * तोटकछन्द अठारह जानो
कुकुभा चारि मालिका दोई * अष्टपदी तेरह है जोई
तोमर उनइस चरपट साना * हरियक आठ भुजङ्गप्रयाता
सुनि मधुभार सरपिका बारा * रोला मनु अश्लोक अठारा
बरवै तीनि सुवैया चारी * युगपङ्कज बाटिका निहारी
शशि समानिका यवसुन्दरी * दोधक तीनि साम्रया दुन्दरी
इकइस छप्पय तारक चारी * है छब्बिस गीतिका करारी
हरिगीता कुकरहन मराली * चिन्तामणिमधु हिरणिगोपाली
कीमाकमल विजय हरिलीला * निशिपालिका मनोहर शीला
श्री अमृत गति अमृत युक्ता * एक एक ये छन्द मुक्ता
दो० अर्धभुजङ्गी सयुता, करपा है है धीर ।
शशिमुख दीपक पादकटि, चारिचारि पुनि वीर ॥
बीस चतुष्पद हंसकल, उभय अरिल्ल आसान ।
चारिसहस पुनि पांचशत, हैं अश्लोक प्रमान ॥
हरि प्रेरित रघुनाथ जन, जो कछु कीन बखान ।
विश्रामोदधि के विषे, सो जानो विद्वान ॥
विद्वन बिन जाने कहा, विद्वन को पैशर्म ।

जैसे बंका मेहरी, प्रसवपीर को मर्म ॥
दुर्जन देखै दोष पर पेखै नहिं गुण शील ।
जक्ष मुहर के महल में, योजन छिद्र पिपील ॥
संस्कृत प्राकृत पारसी, विविध देशके बैन ।
भाषा तावो कहन कवि, तथा कीन मैं पैन ॥

इति श्रीविश्रामसागरेरघुनाथदासकृतेइतिहासायनखण्डसमाप्तम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बिश्रामसागर ॥

श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृत कृष्णायनखण्डप्रारम्भः ॥

भुजंगप्रयातछन्द ॥ नमो शारदा नारदा ज्ञान-बुद्धि । नमो गुरुगणेशं हर बिघ्नसिद्धि ॥ नमो राम घनश्याम काम स्वरूपं । नमो जानकी जन्ममाता अनूपं ॥ नमो भारतं जय लषण शत्रुआरी । नमो केसरीनन्दनं सुखकारी ॥ नमो दीनदानी सदा शिव भवानी । नमो बिष्णु कमलं नमो ब्रह्मबानी ॥ नमो मीन बाराह नरसिंह कूरम् । नमो बावनम्परशुरामातिशूरम् ॥ नमो कृष्ण बलबिर्ध्यमानं किशोरी । नमो कालिके देवतयतीसकोरी ॥ नमो सारयू गङ्गभू भानु धर्मं । नमो बेदब्यासं निगम हर्णभर्मं ॥ नमो ऋद्धिआशी सहस बुद्धिराशी । नमो सन्त आनन्त मुक्तिप्रकाशी ॥ कहत दास रघुनाथ युग हाथ जोरे । करो सर्ब ऊपर कृपादृष्टि मोरे ॥ दो० जाते कृष्ण कृपालु के, कहौं चरित चित चोर ।
अर्थअमितआखरनमित, होइ रमित लखिथोर ॥
रामभक्ति की सुनि प्रभुताई * पुनि शौनक बोले शिरनाई
नाथ बचन नव अमी समाना * नृप न होत उदधि मम काना
तेहि ते अब करुणा करि गावो * कृष्णचरित कछु मोहिं सुनावो
सुनि सुमन्तु बोले हरषाता * भली प्रश्न कीन्हो तुम ताता

सुनो कहौं हरिचरित सुहाये * जौन परीक्षित ते शुक गाये
सो सब करि संक्षेप बखानो * आदिहि ते तामें मन आनो
द्वापर कृष्ण लीन अवतारा * कीन्हें चरित अनेक प्रकारा
कलि आवत गवने निजलोका * सुनिपाण्डवनकीनअतिशोका
राज्य परीक्षित को सौंपाई * अपना गले हेवारे जाई
विष्णुरात जब ते नृप भयऊ * परजनकहँ बहुविधिसुखदयऊ
एकदिवस का सुनो हवाला * विजयहेत निकसा महिपाला

दो० एक ठौर देखन भयो, वृषभ एक यक गाय।
भयवश भागे जात दोउ, यक नर मारत जाय॥

तेहि के चिह्न नृपन के ऐसे * करतब करत नीच जन जैसे
तब तौ भूप निकट चलिगयऊ * वृषभ धेनु ते बूझत भयऊ
को तुम अहौ जात कित भागे * यह को है मारत केहि लागे
कह्यो वृषभ मल निश्चय नाहीं * बोली तब सुरभी नृप पाहीं
ये हैं धर्म धरणि हम आनू * कलि के भय ते भागे जानू
कलिमल मलिनकरी सब प्रानी * वरणाश्रम के धर्म न जानी
विप्र सुमारग पग नहिं देहैं * बेचिहैं वेद धर्म दुहि लेहैं
विप्रभ कुपन्थ निरत दिठियारे * केहि अवलम्बहिं अन्ध विचारे
क्षत्री छलमय कलिमलमूला * बणक विप्र वेद प्रतिकूला
वणिक महाजन गाह मुनामा * वचन मधुर अति करतब वामा
शूद्रहिन निज धर्म विचारू * अशुभ जीवका अशुभ अहारू
धर्म सुतीरथ सन्त समानी * तहँविशेष कलिकुटिल विरानी
काई सुरसरि विमल तड़ागा * फूलत फरत समय बिन बागा
तिनकरफल पुनि दुरित दुकाला * विविधव्याधिवश जीवविहाला
सुकृती लघु जीवन सल नाना * दाता निधन कृपण धनवाना।

याचक बहुजग कोइ इक दानी * होइहैं अगणित वाचक ज्ञानी
भूमि बीज बिन षटरस स्वादा * पाट थोर बड़ बाद बिबादा
नृप सरोष सब प्रजा दुखारी * कबधौं मिटी देव सब गारी
काल कर्म महिपाल अधीना * बरणत बेद मांई मतिहीना
प्रीति सुकाट अकारण कोहा * करब मातु पितु गुरु ते द्रोहा
दोहगासुतिय सोहागिनि चेरी * गुनब जाति अच्युत कुल केरी
ठाकुर क्रूर सचिव मतिहीना * ह्वै हैं पुरुष नारि आधीना
धनी कुलीन गुणागर सोई * धनी सुसाधु यदपि खल होई
साधु सुशील सुजाति सुजाना * धनबिन सहिहैं दुख अपमाना
बकता विपुल सुनी नहिं कोई * गुरुशिष अन्ध बधिर मति होई
उपदेशक आचरण मलीना * बेचिहैं धनहित नाम नगीना
चतुर चोर भट जे बटपारी * सब नरनारि सुमन रुचिकारी
गिरही रङ्क यती धनवाना * शूद्र पुराणिक विप्र किसाना
निरबल साधु सकल खलकामी * दासमुजाति नीच जन स्वामी
मोतिका पात्र अमूषण केशा * परिकर बसन बिछौना शेशा
नाटिल कुमेचक सिद्ध शरीरा * परधन पचव ते बड धीरा
जीवन थोर दुराशा भारी * सत्य कहब ते होब लबारी
चालहैं सुरुचि अनेकन पन्था * होइ ह लुप्त सुभग सद्ग्रन्था
सोई सद्ग्रन्थ जहा हरि नामा * धर्म बिबेक भक्ति अभिरामा
सुत पितु दुःक कर बिन ब्याहे * पुनि रिपु होब नारि सुख चाहे
दो० तीस बर्षकी आयु नर, होइ कलि अधिआइ ।
अष्ट अब्द की कामिनी, जनमी सुत पतिपाइ ॥
सुरुचि कुसंग अरुचि मतसङ्गा * तुलसिहि हँसब सराहब गङ्गा
पातिव्रतरोध परपति रत नारी * पुरुष्टित बाजब परम लबारी

काये करि शास्त्रो शब्द बखाना * निन्दिहैं हरि हर बेद पुराना
ताज कुल कुटुंब होब बैरागी * तिनहुन माहिं ईर्षना लागी
बेष बिशद बानन में शूरा * भक्ति भजन में कादर कूरा
जो कोइ हरिसुमिरन परकासी * करिहैं सबमिलि तिनकी हासी
गाजा चरस तमाल उड़ाई * होई कलि तेहिकेरि बड़ाई
जोतिहैं हर नहिंके इक बर्द्धा * रही न नेकु धर्म की सर्द्धा
विद्या बणिज कृषी सेवकाई * होई फल लघु श्रम अधिकाई

दो० तरु बड़ झाऊ बिटप सम, सुरभी अजा समान।
मेघ बर्षि हैं ओस सम, बये न जमि हैं धान॥

कलि के दोष कहे कछु गाई * सुनहु जे अहैं गुनी सो राई
कलियुग मनकर पातक नाही * पुण्य पुनीत मनोरथ माही
बाचक पाप जाइ पछिताये * सरयू सरि हरिपदजा न्हाये
काया ते पातक जो होई * बिन भोगे छूटत नहिं सोई
सतयुग देश ग्राम बेताही * द्वापर कुल कलि में कर जाही
कलि में रामभक्त तनु धरिहैं * ते बहु जीव कृतारथ करिहैं
रामभक्ति करि करि नर नारी * भवसागर तरि हैं यह भारी
काल कर्म गुण प्रकट स्वभाऊ * भक्तिसमीप जात नहिं काऊ
कृतयुग जो गति ध्यान किहे ते * त्रेतायुग मख दान दिहे ते
द्वापर युग हरि पूजन ठानी * पावत रहैं जौन गति प्रानी
सो गति कलि हरिके गुण गाये * पैहैं नर जपि नाम सुनाये
कलि केवल परमारथ हेतू * राम नाम भवसागर सेतू
साधन नाम सिद्धफल नामा * जेहि न प्रतीति नाहि निधिबामा
धर्म चारिपद कलि यकठाना * जेहि तेहि भाति किहे कल्याना
जब शुभपन्थ सकल मिटिजाई * तब कछु हरि अवतरिहैं आई

सुनि नृप कोपि चला कलिओरा * रे खल नाम सुने नहिं मोरा
तब कलि डरपि चरण मे परेऊ * बहुत भाँति अस्तुति अनुसरेऊ
जो कछु आयसु होइ तुम्हारा * सो हम कीजे याही बारा
जबलग हम जग राज करीजे * तबतक आपन अमल न कीजे
देहु मोहिं अस्थान लगाई * जहँ हम बसहु कटकयुत जाई
द्यूत चौर पणिका मद्यपाना * कनक बसहु इनने अस्थाना
सुनि नृपमुकुट बैठ सुखपाई * सुरमनि मिटी असुरमनि आई
चला भूप कछु तृषा सतावा * शृङ्गी ऋषि के आश्रम आवा
भानसियंतत्र ते मनअनुमाना * हमं देखि ठानिसि बकध्याना
मृतक सर्प धनुकोर उठाई * कण्ठ लगेटि चल्यो हरषाई
मुख्यो सुवन शृङ्गीऋषि केरे * आवा तुरत पिता के नेरे

दो० पन्नग कण्ठ बिलोकिकै, दीन्हेसि शाप रिसाइ।
सप्तम दिन नरपाल को, काटै तक्षक जाइ॥

काढि उरग तब पितहि जगावा * भूपति को वृत्तान्त सुनावा
शाप दीन सुनि अति रिसियाने * कीन्ह निपट अकाज अयाने
जेहिके चलतविचिर सुख कीजे * ताहि कि चहीं दण्ड अस दीजे
शुचि सेवक कछु चूकै कबहीं * चतुरस्वामितेहितजत न तबहीं
धर्मवान जो जाई नृप ऐसा * नहिं जनियत अब आवै कैसा
अस कहिऋषिचलिभे चित चेता * भूपहि बोध देन के हेता
यहाँ महीपति मुकुट उतारा * तब मन शोच कीन्ह अधिकारा
कौन कर्म कीन्हों मैं आजू * हेरि कछु बड़ दोष अकाजू
जो आकर फल मोहि विधाता * देइ अछत तन तो भलिबाता
तेहि अवसर ऋषि पहुँचे आई * लखि नृप पर्यो चरणअकुलाई
बोले ऋषि भई तुम्हे शरापू * सजग होउ अबहीं ते आपू

कह नृप अति बड़ दोष हमारा * औरहि मा तर तनय निवारा
नृप तुम कछु अपराध न कीन्हा * होनहार है परबल चीन्हा
सुर मुनि दनुज नाग नरमाहीं * हानी टारि सकत कोउ नाहीं
हिरण्यकशिपु दशकन्धर कसा * औरो भये भूरि तिनि बसा
जीवनहित बहु किहिनि उपाई * काल पाइ कोउ बचे न राई
गरुड़ कपोत चह्यो बचायो * अजगर के मुख में धरिआयो
होनहार जो सुन्दर होई * तो जग मारिसकै नहिं कोई
कनककशिपु प्रहलादै डाटा * का करिसकै टाट बहु टाटा
बालि बधन सुग्रीवै चाहा * कहा वैरकरि कीन्हिनि बाहा
चन्द्रहास का सब जग जाना * का कीन्हिसि करि यत्न दिवाना
अम्बरीष पर रिस अति कीन्ही * मुनिवर कौनि बड़ाई लीन्ही
सचिव सुबन्धु चह्यो जरावा * शङ्खलिखित फल आयुष पावा
सुरुचि चह्यो ध्रुवहहि विनासा * रामकृपा अविचल भयो दासा
पाडुसुतन कहँ बहुत सताइनि * दुरयोधन कछु की है पाइनि
ब्रह्म अस्त्र तब ऊपर प्रेरा * द्रोणपुत्र का कीन्हेसि तेरा
जाकी मौत निकट जब आवै * तेहि रजु केर सर्प ह्वै जावै
तेहि ते होनहार है जेती * नीकि जबूनि होति है तेती
सन्त चहैं कछु देहिं मिटाई * अपर न टारि सकै कोइ राई
असकहि ऋषिनिजआश्रमआये * भूप तुरत सुनि सहज सुभाये
राजकाज तजि सकल अवासा * आइ कीन गङ्गातट बासा
व्यास पराशर आदि मुनीशा * जुरे आइ तहँ बहु अवनीशा
कोउ कहै करो भूप गोदाना * कोउ मुनि बरत बतावै नाना
दो० तेहि अवसर शुकदेव जी, आये नङ्ग धड़ङ्ग।
ताल बजावत बाल बहु, डारत लै रज अङ्ग॥

शुकहि देखि जे रहे अखाई * ज्ञान वृद्ध लखि भे सब ठाढ़ि
आसन दीन भूप सनमाना * आपन जन्म धन्य करि जाना
बोले बहुरि जोरि युग पानी * कहो भद्र की बात बखानी
हे नरेश मन शोच न कीजे * नृप खट्वाग बात चित दीजे
उभय घरी में भद्र गति जाकी * तुम्हें समाहित जीवन वाकी
हरि चरितामृत पान कराई * तुम्हें नारि देहौं मैं राई
असकहि कहन भागवत लागे * लागे सुनन भूप अनुरागे
प्रथम कछु कामना देखाई * पुनि प्रभुचरित कहे हरषाई
जनउत्पति अस्थिति संहारा * ब्रह्मनिरूपण ज्ञान उचारा
भक्ति योग वैराग विवेका * भा अरस्कन्ध समापन एका
तब दूजे में लाग लगाया * पुनि कहु योग कृपानिधि गाया
विधि नारद की कथा बखानी * चौबीसो अवतारहि जानी
जगउद्भव कहि पूरण कीन्हा * तब अस्कन्ध तीसरो लीन्हा
कथा मिलन प्रभास विखाना * कथा विदुर मैत्रेय संवादा
सम विकार सहित ब्रह्मण्डा * रूप विराट कहन में अण्डा
सूक्ष्म थूल काल की करणी * पुनि ब्रह्मा की उत्पति बरणी
बाये हिरण्याक्षधराजिमि आनी * बाराह की उत्पति बखानी
दक्षिण मनु शतरूपा केरी * कही कथा त्रेसुता निबेरी
पुनि कर्दम का कथो विहारा * नव कन्यन ते सृष्टि अपारा
देवहुती अरु कपिलक ज्ञाना * बरणि चौथ अब करन बखाना
दक्षयज्ञ जेहि विधि भइ गङ्गा * सतीमरण फर कथो प्रसङ्गा
ध्रुवचरित्र पुनि तिनकर बंशा * कही कथा पृथुकेरि प्रशंसा
पुनि प्राचीन मरुत जिमि कीन्हा * कहिनि सीख नारद जो दीन्हीं
तुर्य पूरि पञ्चम गहि पानी * बरणी प्रियव्रत केरि कहानी

ऋषभ केर अख्यान सुनावा * भरत मृगी करि जो दुख पावा
पुन जड़भरत रहूगण ज्ञाना * कथो भूप भा नारि अजाना
द्वीप सिन्धुगिरि सरिता धरणी * रवि शशि उडु मर्यादा बरणी
ज्योतिचक्र पाताल प्रमाना * बरणे नरक महादुख नाना
प्रथम अजामील इतिहासा * धर्म दूत संवाद प्रकासा
दो० सहस एकादश पुत्र वर, दक्ष किये उत्पन्य।
नारद ज्ञान सुनाय कै, विपिन पठाये धन्य॥
तब तिन साठि सुता उपजाई * तिन ते सृष्टि भई अधिकाई
कश्यप के जन्मे सुत नाना * सुरगुरु हरि का बैर बखाना
विश्वरूप बध बासव कीहों * हत्या लागि बाटि जिमि दीन्हों
इन्द्र वृतासुर युद्ध बखाना * नहुष भये जिमि पन्नगयाना
चित्रकेतु की कथा सुनाई * भे उनचास पवन जिमि आई
सप्तम कहि प्रहलाद चरित्रा * बरणाश्रम के धर्म पवित्रा
अष्टम कहे मन्वन्तर चौदा * गज नारद की कथा मसौदा
कूरम कर अवतार सुनाऊनि * सागर मथत रत्न जिमि पाऊनि
अमर असुर सुरमत्त कहानी * बलि बामन की कथा बखानी
नवम माहिं रविवंश बखाना * नृप की कथा कीन तहँ गाना
च्यवन शकु की कथा सुनाई * अम्बरीष की कीन बड़ाई
सगर भगीरथ अनि मनभाये * रामचरित प्रमुदित कछु गाये
निमि प्रसंग निरणय जग केरी * परशुराम की कथा निबेरी
दो० रविशशिवंशमिलाप कहि, हल्ला युद्ध संयोग।
धरणी शतनु की कथा, पुनि ययाति कर भोग॥
पुनि यदुवंश कहा विस्तारी * जामें प्रकट भये गिरिधारी
दशये कहा कृष्ण अवतारा * बकी शकट तृणावर्त मारा

यमलार्जुन तिनका गति दीन्हों * वत्सबकासुर जिमि बधकीन्हों
कंसनिधन विद्या जिमि पाई * जरासन्ध की कहों लडाई
रुक्मिणि हरण द्वारके आये * औरो चरित दशम बहु गाये
गेरहें कहा यदुनकर नासा * नव योगेश्वरजनक बिलासा
हरि उद्धव को ज्ञान सुनायो * दत्तात्रय द्विज का यश गायो
बहुरि भये प्रभु अन्तर्धाना * सो चरित्र सब कीन बखाना
द्वादशयें युगलक्षण गायो * निकलङ्की अवतार बनायो
होई सम्भरगढ़ अभिरामा * विष्णुदत्त ब्राह्मण के धामा
दलि मलेच्छ पुनि सतयुग होई * कुमात सबन की जाई खोई
उत्पति तीनि तरह की भाखी * परलय चारिभाति की गाखी
दो० इतनी कथा सुनायकै, शुक मुनि कीन्ह पयान ।
नृपहि, आयो दिव्य बिमान ॥
चढ़ि नरेश हरिलोकहि गयऊ * जय बानि देव करत सब भयऊ
तब शौनक ते मुनिबर ज्ञानी * जनमेजय की यज्ञ बखानी
बेदन की शाखा उपशाखी * मारकण्डेय की परलय भाखी
द्वादश रवि की कथा सुनाई * सूक्तम सकल भागवत गाई
जो नर पाठ नेमयुत करहैं * तासु दोष दुख श्रीपति हरिहैं
दो० श्री गुरु देवादास के, चरण कमल धरिमाथ ।
अखिलभागवतकेर मत, वरण्यो जन रघुनाथ ॥
पुनि शौनक बोले शिर नाई * नाथ सकल भागवत सुनाई
तब अभिलाष एक उर आई * कृष्णकथा सुन्दर सुखदाई
दशम बहुरि किपाकरि गावो * करि विस्तार पूर्वार्ध सुनावो
श्री उत्तरार्ध नाथ तुम गावा * इतिहासन महं सो सुख पावा
तहि ते बालकृष्ण लीला अब * कहो मोहिं करिकृपा नाथ सब

केहि कारण प्रकटे गोपाला * केहि विधि माखो कस गुआला
बहुरि रुक्मिणी मङ्गल गावो * भा विवाह केहि भाति बतावो
औरहु किहिनि चरित बहुतेरे * सो सब कहहु देव हित मेरे
बोले सूत सुनहु मुनि ज्ञानी * प्रथमे ते सब कहौं बखानी

इति श्रीविश्रामसागरसमनआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतकृष्णायनप्रबन्धवर्णनोनाम
प्रथमोऽध्याय ॥ १ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
भारत मतकरि कस की, उत्पति कहौं बखानि ॥

नगर एक मथुपुर अभ नामा * कालिन्दीतट अति अभिरामा
उग्रसेन रहे नाम भूपा * पवनरेख रमणी रतिरूपा
देवक उग्रसेन को भ्राता * तिनहुं कि तिया मनोहर गाता
इक दिन उग्रसेन की नारी * सकलशृंगार किहिनि छवि भारी
सखिन संग ले उपवन देखन * गई पुथक है लागी पेखन
तेहि अवसर दानव इक आवा * भूपरूप धरि हाथ चुलावा
बोली पति ऐसो मन कीजै * दिनरति किह पुण्य सब छीजै
तेहि माना नहिं कछु अपयोगा * बरबस किहेसि ताहुसंग भोगा
तेहि पाछे निज वपु प्रकटावा * नृपपत्नी लखि वचन सुनावा
रे खल नीच छल तै मोहा * कोहसि शाप देतिहौं तोहा
बोला मैंहौं दनुज जुझारा * कालनेमि है नाम हमारा
सतयुग समर विष्णु त्रैटाना * शाप न देहु लेहु वरदाना

दो० तुम्हरे हमरे अंश ते, होई बालक एक ।
महाप्रतापी भुजबली, जीती भूप अनेक ॥

सर्ती असुर निकर बलभारे * बिन भगवन्त मरी नहिं मारे

सुनत प्रसंग भई तब रानी * आई जहँ सब सखी सयानी
हँसि बोली बनिता तब ऐसे * बिगलित भये बसन तब कैसे
भ्राता कपि यक निकट हमारे * धाइन भागि तासु भय मारे
तेहि ते अब चलिये निजधामा * सुनि आई गृह निजनिज बामा
गर्भ अवधि सुखसहित बिताई * माघशुक्ल कुज तेरसि आई
जन्मा सोर बालक अघराती * भये उपद्रव नाना भाँती
उमसेन बहु द्रव्य लुटाई * कंस नाम बुध गाखिनि आई
मा जब बड़ा बालकन सङ्गा * खेलन जाय करै तहँ दङ्गा
फोरै कुप भरन जल देगे * भुजबलमन्त न काहुह लेगे
मगध देश यक रोज सिधावा * जरासन्ध पै जाय हरषावा
तिन के रहीं सुता युग आधी * लावा तिन्हें परणि सहमाधी
दो० नाम अस्ति प्राप्ति मनहुँ, मन्मथ की करवाल ।
लग्यो करन सुखसदनबसि, तिनयुत कंस भुवाल ॥
एक दिवस भूपति ते बोला * तोहीं करौं राज्य अटोला
अस कहि कीन्हिसिंघ अभागा * अपना कटन राज्यसुख लागा
असुर मगावी विपुल बटोरे * जे रिपु समर मुरे नहिं मोरे
तिन्हें संग लै यक दिन आवा * जीतिनिकर नृपपुर फिरिआवा
अपर सुनो देवक की बारी * नाम देवकी रहै कुमारी
तिन को ब्याह करन के काजा * सोमवार्य बर जहँ तहँ राजा
सूरसेन के सुत वसुदेऊ * सबहिन कही उन्हें बरिदेऊ
दो० तब नरेश वसुदेव को दीन्हीं सुता बिवाहि ।
दोउदिशि भा उतसाह अति, सो कापै कहिजाहि॥
हय गज स्यन्दन हेम पट, रत्न अनेकन दीन ।
याचक सब परितोषिके, बिदा बहिनि कर कीन ॥

पठवन चला आपु सुखमानी * तेहि छण भई गगन इमि बानी
यहि कन्या के बालक होहीं * अठवा सुत मारी नृप तोहीं
सुनि नृप उतरि केश गहिलीन्हों * खड्ग काढ़ि मारन को कीन्हों
तब बोले बसुदेव पुकारी * प्रमदा बध पातक है भारी
तेहि ते याहि छाड़ि नृप दीजे * बोला तुम कछु शोच न कीजे
आगे तरु विषफल फलै कोई * डारै ताहि काटि भल सोई
यहि हति तुम्हें परणिहौं आना * सुनि बोले बसुदेव सुजाना
नृपकछुतवभगिनीनहिं घालक * रिपु तुम्हार है इनकर बालक
जबहीं सुत प्रकटी जगशाई * देहौं तुम्हें तुरत मैं लाई
सुनि विनती दीन्हिसि तबन्यागी * आये दोउ निजगृह अनुरागी
कछु दिनगये समय जब आवा * प्रथमैं पुत्र देवकी जावा
लै बसुदेव गये नृप पासा * जानिसि हैं साचे हरिदासा
बाल बिलाकि दया उर आई * कहिसि शोच निजसुत लैजाई
तेहि अवसर नारद नहँ आये * क्षिप्र निधनहित बचन सुनाये
कस कहा लरिकाई कीन्ह्यो * जानिबूझि निजरिपु तजिदीन्ह्यो
सुनि महीप असबचन उचारा * अष्टमसुत है काल हमारा
दो० तबनारद लिखिचक्रगणि सकल भये बसु सोइ ।
को जानै नृप शत्रु जो, प्रथमैं आवा होइ ॥
असकहिकसशिशुहिधरिमारेउ * यहिविधि षट बालक सहारेउ
तब देवकी महादुख पावा * मनहीं मन श्रीपति को ध्यावा
कस बश मम कीन्हिस खीशा * यह विपदा हरिहौ कब ईशा
बढ़े पाप पृथ्वी गरुआनी * शिव बिरंचि ते बिनती ठानी
सब मिलि गये जहा भगवाना * अस्तुति करत भये विधिनाना
सुनि बोले लखि दीन मुरारी * निर्भय होउ देव मुनिझारी

धरिहौं मैं नरतन अब आई * हरिहौं सकल भूमि गरुआई
करिहौं पूर मनोरथ सब के * भाव दिवश कारज जब तबके
आवसु सबहिं दीन पुनि एहू * गोकुल जन्म जाइ तुम लेहू
वेद अचन का दीन रजाई * गोपी होउ सकल तुम जाई
पाय रजाय सबन सोइ कीन्हा * आपु बोलि निजमायहि लीन्हा
दो० कह्यो देवकी के गरभ, है सतवा मम अंश।
ताहि रोहिणी के जठर, करिआयो निरशंश॥
सुनि सोइ करत भई हरिहांसा * जाना मवन गर्भ भा नासा
अटये बास आपु हरि लयऊ * वदन प्रकाश चन्द्रसम भयऊ
अक्त सुगन्ध बढ़त छवि जाई * कम दिहिमि लखिवदि डराई
वर हथकरी निगड़ पग डारे * जड़ि कपाट पहरू बैठारे
निसते कहेसि होय सुत जबहीं * सुनि तुम हमें जनायो तबहीं
अहिविधि गये कछुक दिनबीती * जेहि हरिप्रकट सुनहु मो रीती
भादों मास पन अंधियारा * उडप रोहिणी अरु बुध बारा
तिथि अष्टमी राते अंधियारी * झिमिकिझिमिकिवर्षतबरबारी
प्रभु आगमन जानि सुर आये * करि विननी पुनि गगन सिधाये
खुलेगे सकल पटल के तारे * भे निग्रावश सब रखवारे
अरु वसुदेव देवकी दोऊ * छूटि गये बन्धन ते सोऊ
जब आचाहिशि शशि हरषाना * प्रकट भये तब श्रीभगवाना
क्षीरसिन्धु गोलोक निवासी * शोभासदन सकल सुखरासी
शीश वसन श्रुतिकुंडल लोला * उरविशाल बनमाल अमोला
शंख चक्र गद पद्म विराजै * मणिभुजचारि विप्रपद भ्राजै
दो० पीत बसन उपवीत उर, राजत नयन सरोज।
अंगअंगपर रघुनाथजन, वारत अमित मनोज॥

लखिवसुदेव ब्रह्म कहँ चीन्ह्यो * अंजलि जोरि दंडवत कीन्ह्यो
पुनिउठि कह्यो तुम्हें मैं जाना * परमपुरुष हौ तेज निधाना
परम ज्योति अद्वैत अविकारी * निर्गुण ब्रह्म त्रिगुण तनुधारी
कंसासुर त्रासत निशि भोरा * हरहु नाथ मम संकट घोरा
पुनि मुनि प्रभुहि देवकी जानी * बन्धु त्रासयुत विनय बखानी
अहो पुराणपुरुष अविनाशी * निजानन्द निर्गुण गुणराशी
काल व्याल ते मनुज डेराने * सर्व लोक कहँ जात पराने
तजत न मृत्यु जहा चलिजाही * निरभय होत कतहुँ सो नाहीं
तव पद पदुम प्राप्त जो होई * पदरजा सुख पावत सोई
मृत्यु डेरन लागी तव ताही * सेवन चरणकमल जो आहीं
ऐसे तुम मम उदर निवासी * है नरलोक बड़ी उपहासी
बोले तब श्रीपति सुनु माई * जेहि ते तव मन संशय जाई
पूरव जन्म मोहि तुम मोही * याचेहु बर तुम सम सुत होही
भक्तवछल मे विरद विचारा * भयउ आइ तोहि तनय तुम्हारा
कंस महा खल सुनते आई * तौ मोहिं गोकुल देहु पठाई
यशुमति के उपजी मम माया * लावहु तहि उठाय करि दाया
कछु दिन नन्दभवन करि लीला * मिलब तुम्हें पुनि बन्धुसमीला
अस कहि शिशु है रोवन लागे * दास मातु पितु अतिअनुरागे
नार बेवार समेत उठावा * लै बसुदेव चले तम छावा
कालिन्दी जब लगे मँझावन * यमुना बढी छुवन पद पावन
गुलक जह कटि गरतक आई * शिर धरि ठाढ रहे टरपाई
लखि प्रभु पाछे पाउँ पसारा * परसि बहा मुरवनतक धारा
उपर शेष सहसफण छाये * उतउन हरि तरि गोकुल आये
प्रवेशे महरि भवन के माही * प्रकटी गुना निद्रे सधि नाहीं

शिशु सोवार तिन आगे दीन्हों * ले बालका गवन पुनि कीन्हों
निम्मन निलय बहुरि पहलाग * बन्धन परे पौरिया जागे
सुनि बन्या का रोदन जाना * मा सुत नृप ते जाय बखाना
सुनत कंस आपुः चाल आवा * तब देवकी बहुत समुझावा
तदपि न मन मानिसि पापीनी * लाइसि हानि सुता विपरीनी
पटकन लाग शिलापर नीचा * करते तड़पि गई नभ बीचा
बोलत भई कंस तव हन्ता * प्रकट होइ गुप्त है कहुं अन्ता
सुनि नभगिरा उठा अकुलाई * गिरा देवकी के पग धाई
मैं अपराध कान सुन मोरे * हानहार सो टरत न टारे
कंस ज्ञान उपदेशव कैसे * दीप प्रकाशन आनहि जैसे
कह देवकी सुना हे भाई * निजकृत कर्म न तोरि लगाई
जो जस करै सो तस फल पावै * बिन समझ परदोष लगावै
दुख सुखप्रद जग में नाहं कोई * मनमाने कर भ्रम हो
यह सुनि उठि निजमंदिर गयऊ * सचिवबोलि अस बूझत भयऊ
कहो कहा अब करेक होई * तन्मा कहुं अन्त अरि सोई
बोले दुष्ट सुनो महराजा * यावा नो है सहज दलाजा
दो० एक वर्ष के बीचमा, जो सुत जनमें होइ ।
डारहु मकल मराय तुम, आपुइ बची न सोइ ॥
सुनत बाला सि असुरसमूहा * कह्यो कि मारहु शिशु करिहूहा
चले जहां तह आयसु पाई * लागे बरन पाप अधिकाई
यह इतिहास कहौं मनमानी * अब गोकुलकी सुनो कहानी
रोदन नहं जब कीन मुरारी * जागी महरि शोर सुनि भारी
बालक देखि परम सुख पावा * गोमय चन्दन भवन लिपावा
गोपुर कलश विचित्र धराये * नवलबधुन मिलि मङ्गल गाये

ध्वज पताक तोरण पुरछाये * देवन हरषि सुमन बरषाये
नन्द सहस दश धेनु मगाई * विप्रन कहँ दीन्हीं हरषाई
मुदित नारि नर बीथिन डोलैं * जयति जयात जयसुतकी बोलैं
उड़त गुलाल सकल तनु सींचा * मारग मध्य मची दधिकीचा
बाजहिं बाजन नाचहिं नारी * हँसि हँसि देहिं नन्दकहं गारी
नारदादि सनकादि मुनीशा * कौतुक लखत फिरत अज ईशा
बहुत कहातक कहौं उछाहू * प्रकट भये जह त्रिभुवननाहू
जातक कर्म बेद विधि कीन्हा * बहुविधि दान याचकन दीन्हा
पुनि लै नन्द क्षीर दधि छेनू * कसे देन चले मिलि नेगू
मथुपुर आइ चढ़ानि भेंटा * सबन कहा इन के भा बेटा
बहुत नीक कहि भीतर तेरे * तहँ बैठाइ गयो उठि डेरे
तुरत लिहिसि पूतनहि बुलाई * आवहु मारि नन्दसुत जाई

दो० चली तुरत नवनारि बनि, साजि तन भूषण चीर।
जहर उरोज लगाइ कै, आई यशुमति तीर॥
पुरपतनी भौचकि रहीं, रूपवान लखि तासु।
बिन बूझे आसन दयो, बरणिभागिनिजआसु॥

सो० लालहि लखि दुलराइ, देखि दुचित्ती महरिको।
लीन्ह्यो गोद लगाइ, दीन्ह्यो मुख विषसहित कुच॥

लागे पियन कृष्ण करि जोरा * भागी करत छुडावत शोरा
लीन्हेसि खैंचि प्राण पुर पासा * योजन डेढ़माहिं बपु भासा
दीन्हीं गति जननी की ताही * को कृपालु अस भजिये जाही
कौन पुण्य या कीन्ह्यो भारी * जाने पीन्ह्यो दूध मुरारी
रतन दाम दुहिता बलि केरी * वावन बपु छलि लखि बहुतेरी
मन मे चाहिसि पियावों क्षीरा * सोइ इच्छा पूजी यदुबीरा

कृष्ण तासु कुचपर इमि राजैं * जिमिवनशिशु गिरिशृङ्गविराजैं
भयवश लोग निकट नहिं जावैं * दूरिहि ते पाषाण चलावैं
हाइ हाइ करि यशुमति धाई * लिहिनि ललहि लखि गोदउठाई
भवन आनि दीन्ह्यो बहु दाना * कह्यो बचायो हरि भगवाना
पुरवासी सुनि देखन धावैं * बकिहिनिलोकि विधिहिशिरनावैं
करि रक्षा मोहन तन केरी * कहे कि केहुँ दिहेउ मति फेरी
यहां नन्द नृप आयसु पाई * मित्रै मिलन चले हरषाई
कुशलप्रश्नकहि करिसनमाना * बोले पुनि बसुदेव सुजाना
कालाधीन देह नहिं नेमा * निकुरिमिले सम अपर न क्षेमा
भल कृपा करि दर्शन दयऊ * अतिसुखमिला सुना सुत भयऊ
जाहु बेगि निज मन्दिर ताता * करन फिरत तमचर उतपाता
रक्षा करत सुतन की रहियो * करुणादृष्टि राम की चहियो
गोकुल आइ दीन्ह सोइ हाला * लगे बतावन सब नर बाला
खण्ड खण्ड करि ताकर अङ्गा * जारत कढी सुगन्ध प्रसङ्गा
एक दिवस कागासुर आवा * पकरि तासु शिर तोरि नहावा
पूर्व विप्रवादी यह रहऊ * भइ गुरुशाप भुगति गति लहेऊ
जन्म नक्षत्र परा पुनि आई * पूजन हित बहुरे कुल भाई
श्यामहिं शकट तरे पौढावा * महरि काम में चित्त लगावा
गई भूलि मोहि निपट बिसूरा * मारी लात शकट भो चूरा
सुनिलरिकनमुखपितुअरुमाता * दौरि लगाइनि पुत्रहि गाता
अचरज मानि कहै नर नारी * टरी कान्ह की करिवर भारी
तृणावर्त तेहि पाछे भेजा * प्रभुहि परे देखा सुठि सेजा
गरु गोपालहि लखि महतारी * जागाते दिहिसि रहै तहँ पारी
बहिर है कीन्ह्यो अँधियारा * लीन्ह्यो गहि गा गगन मझारा

गरु भये प्रभु सका न भारू * गिरा महीतल गा सहारू
दलथमन नृप पण्डुर देशा * दुर्वासा दत मिट्यो कलेशा
छातीपर खेलत सुत पाइनि * नन्दमहरि निजभाग्य मनाइनि
बिप्रन बोलि दान बहु दीन्हा * गोपबधुन नव लेता लीन्हा
दइउ दीन सब के घर बारा * तुम्हें काम है बहुत पियारा
चौथेपन देख्यो सुत आसी * तदपि न प्रीति प्राणसम राखी
कहै रघुनाथ निरखि प्रभु ओरी * थकित होहिं जिमि चन्दचकोरी

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतश्रीकृष्णजन्मउत्साहपूतना-
कागासुरतृणावर्त्तवधवर्णनोनाम
द्वितीयाऽध्याय ॥ २ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं दशमकी रहसि कछु, कृष्णखण्ड की आनि ॥
कभू महरि मुख चुमिकै, बदन पयोधर देन ।
कभू झुलावत पालने, कभू लाय उर लेत ॥

यहि सुखमें कछु काल बितायो * अन्नपराशन को दिन आयो
नन्द बहुत सामा मगवाई * मधु मेवा पकवान मिठाई
सादतिसम्भ्रमि श्यामभुखदीन्हों * विप्रबन्धु पुनि भोजन कीन्हों
दिन दिन बढन लगे हरि कैसे * शुक्लपक्षकर निशिकर जैसे
प्रकटी तनु अति चञ्चलताई * गहै न एकौ क्षण थिरताई
अगिनिकीशशुरनखाँ-शृंगारण * धरतकरत तह महरि निवारण
बत्सपूछ गहि कभू भगावै * पुरजन पकरि मातु ढिग लावै
एक दिवस आये द्विज एका * किहिनि रसोई सहित बिवेका
पुनि तह भोग लगाइनि ओटा * पावत दीख नन्द का ढोटा

कथा महरि ते बहुरि कराई * भोग लगत पुनि पहुचे आई
तब रघुनाथ दयाल मुनिनेह * पनि पनि मोहिं बोलावत येह
दो० यहि झूठे संसार को, भावत झूठी भक्ति।
फुर आहि लखि रघुनाथ जिमि, भागहिं विषयासुशक्ति॥

कछु दिन गये गर्गऋषि आये * नामकरन वसुदेव पठाये
लखि ब्रजपति पूज्यो सबभाँती * कहिनिजभाग धन्य दिनराती
सुर सुख दुखप्रद तुम सुतदाता * आजु गोद देउँ दोउ भ्राता
सकर्षण बलभद्र रामा * कहे तानि अग्रज के नामा
वासुदेव अरु कृष्ण कन्हाई * इनके नाम अपर बहु राई
मातुलरिपु पर्गनियरन चोरा * होइहै निलज निडर बरजोरा
नाउ विप्र गोपालन करिहैं * अभिमानिनकी अहमिति हरिहैं
मात पिता को आनंद देहैं * नृप सरसमहित जगतयश लेहैं
आँसि फल बहु कहि बुझाई * आये भवन नविगा पाई
एक दिवस खाई हरि माटी * लरिकन कहा महरि सुनि डाटी
मुख पसारि देखराते भयऊ * उदरविलोकि बिसरि तन गयऊ
देखा सकल विश्व मुखमाहीं * कोनि सो बात जो वामें नाहीं
सुर नर असुर नाग नभचारी * सब शाग उडुसरिसरदवभारी
स्वर्ग नरक यम काल निहारा * विधि हरि हर बैकुण्ठ विहारा
इहिविधि सकल वस्तु दिखराई * मूर्छितिनि पुनि मदन कहाई
चकित भई मन मे देखा * साचो साच कि नयनन पेखा
भा विवेक उर ईश्वर चीन्हा * बहुरि कृष्ण मायावश कीन्हा
कहै रघुनाथ धन्य ते प्रानी * जे ऐसे प्रभुसो रति मानी
इक दिन इक ग्वालिनि घरजाई * लागे माखन खान चोराई
निज परछाहँ मुकुर लखि बोले * तुमहू खात कह्यो जनि डोले

सुन मृदुबचन हँसी सोइबाला * भीतर ते भागे नँदलाला
इकदिन गये अपर घर बारा * छाँके ते नवनीत उतारा
तेहिक्षण धनिआइनिचलिआई * बाले तासों बचन बनाई
कूदन रही एक मजारी * मैं उतारि कीन्हीं रखवारी
भले करत तुम दोष लगावा * जानि पड़ा अबहीं कलि आवा
तेहि तब कहा खाय तुमलेहू * मोहिं नीक नहि लागत येहू
इक दिन गे इक भवन बहारी * सींके लखि दधि पेंदी फोरी
आवत तासु बचन सुनि चीन्हा * निकसे तुरत पकरि तेहिलीन्हा
पूछत भइ कस भागे जाहू * बाले तब तेहि ते सुरनाहू
काहये कह दुख मैं दुख होई * मैं नरमुण्डित की गति सोई
दो० स्वेदज दुख बिन कच भयो, लग्योघाम अकुलाइ।
धस्यो बाग शिर बेल फल, गिर्योअधिकदुखपाइ॥
मैया मोहिं उठि मारन धाई * तेहि आयनु तब भवन लुकाई
तहँ देखी दाध खात बिलारी * सोइ डर इहौंते भागेन प्यारी
सुनि तेहि दीन तुरतही छाड़ी * दौरि उतारसि आइ दुधाड़ी
यक दिन धाम अपर के गयऊ * माखन घट लै भागत भयऊ
ते सब दिनप्रति देहिं उरहना * महरि न मानै तिनकर कहना
इक दिन गे कमला के धामाहू * धाइधरिसि तेहि देखतश्यामाहू
गोपी कहै चला जहँ माई * नित की कसरि निकारी जाई
बाले श्याम मोहिं नाहिं शङ्का * बिनकीन्हें नाहिं लगत कलङ्का
यशुमति निकट देखावन लाई * भये तासु पति तुरत कन्हाई
बोली महरि भईहसि बौरी * खसमैं पकरि देखावन दौरी
पतिमुख लखि लज्जित ह्वै भागी * कह्यो कहा मैं मन्द अभागी
इक दिन पकरि लै आई आना * ह्वैगे तासु तनय तब कान्हा

खात खसम सुत सब के चीन्हा * हमरे पुत्र निबल करि लीन्हा
यकदिन प्रभु सब सखा बुलाये * तिन ते कौतुक बचन सुनाये
अहो मित्र गोपिन घर चलिये * खाद्य दधि भाजन दलिमलिये
जो वे मिलि पकरैं बरजोरी * तुम सहाय हूव्यो तब मोरी
यकमति लखिकोउमकतनजूटी * निमिबुधिश्येन बिहँगगाछूटी
एकमते है पगुल अन्धा * बच्यो अग्नि ते चढि पर कन्धा
अस कहि कृष्ण चले अभिलाषी * लागे सब सखा भल भाषी
बदहिं परस्पर सुनिये मीता * चलत महीपर लागत भीता
एक कहैं तुम कादर भागी * हम हरिहैं करिहैं कह नारी
अपर कहैं भागव भय देखी * शून्य सदन प्रविशे इक पेखी
सौन खाइ अरु कपिन लुटाई * निकसि गये तब सो तियआई
देखि विनाश करत भइ शोरा * दिनही में को आयो चोरा
निकट जाइ बोली इक बाला * मैं पैठन देख्यो नदलाला
मन में मैं पुकारों तोहीं * गुझो केह करिदीन्हो मोहीं
इतने में ताहू के धामा * हरि गोरस खायो घनश्यामा
लगी पुकारन घर जब आई * नाहक मैं तब भवन सिधाई
जो कोइ बीच जबर के परई * लोमाडे सम दुख सोऊ मरई
दूधि माखन पकवान अनेका * खाइगयो राख्यो नहिं नेका
पुनि काहू के मन्दिर धसेऊ * देखिलीन तेहि सबका असेऊ
कह हरि साधु हमारे आये * बाबा भोजन हेत टिकाये
मैया मोहिं पठयो तब तीरा * मागिलाव दधि माखन चीरा
आये हमैं भई बहि बारा * मागों कामों शून्य अगारा
सखा बुलावन आये अबही * चलो चलो तैं आई तबही
जो चित चहै देहु अनुरागी * धन्यभाग परस्वारथ लागी

साधु सिंह सम चरित रहावै * भावहीन लखि मृतक न खावै
लाल बदन की सो सुनि बानी * बोली हँसि मनमें सकुचानी
प्यारे जो ऐसी है बाता * तो मेरो सो तुम्हरो ताता
सचित घृत दधि माखन छीरा * हरषिनआनि धर्यो हरि तीरा
चले सबन के शीश धराई * लागे सब मिलि चौहट खाई
यह कौतुक सब गोपिन देखा * वञ्चक धूर्त छली अति लेखा
बोली एक तासु घर आई * आजु भली तू गई ठगाई
सुनि सो कहत भई हे बाला * मति बौराय गयो लै लाला
जाय श्याम ढिग बोली बानी * झूठ बखानि वस्तु कत-आनी
लाल कही हम झूठ न भाषा * मैं महन्त ये सब शिषि साषा
ढीठ जानि सो मारन दौरी * भागे दधिमुख मारि हथौरी
यक दिन गये भवन मे आना * जाडि कपाट लागे दधि खाना
ताही क्षण धनिआइनि आई * टेरत बार बार अकुलाई
कह्यो श्याम भल टेरन देहू * निरभय वस्तु खाइ तुम लेहू
तेहि जब द्वारखुलत नहिं जानी * तब पर भागि निसेनी आनी
भीति लगाइ चढी छत जबहीं * कृष्ण खोलि पट भागे तबहीं
नष्ट भ्रष्ट गृह देख्यो जाई * लगी देखावन सखी बोलाई
बाहिर कढ़त भयो यह दाहू * कहो इहा किमि करिय निबाहू
जो यशुमति ते जाइ पुकारै * लखि नदान तह हमहीं डारै

दो० जिमि अबूझ नृप के रहै, बातन केर निआउ।
यतिहि चढ़ावत सूरिपर, चढ़्यो बात सुनिराउ॥

जो प्रथमें मोहिं होतो ज्ञाना * मेरे घर आयो है कान्हा
तो गहि भवन यशोदा लौती * सुतकी सब लीला दिखरौती
तब जागी मम साथिन रामा * बीते समय बुद्ध किस-कामा

एक दिन एकहि पकरि लुठाया * सुनि जननी मृदु वचन सुनाया
तुम्हरी ऐसा लखो मन मोहू * देहु असीस करौं सब छोहू
मोतें प्राण ते बहुत पियारो * बिन अपराध जात नहिं मारो
निज नयनन देखिहौं जब बोरा * देहौं दण्ड धरहु मन धीरा
पौर दण्ड तुम कछु न कीजै * एक दुइ बार धमकी दै दीजै
नृप बिन नीति प्रीति बिन सोरे * निर्गुण जात सुत बहुत दुखारे
नीति निपुण नर बातन लीजै * सूप बजाय सुतर न भाजै
दो० एक दिन मैं गृह एक के, बैठे देख्यो ताहि।
पाछे ते मूंदे नयन, सो सोवै को आहि॥
बूझे नयन सब मरन सो, लै गोरस समुदाय।
गये निकरि जब दृगि तब, आपहु भगे बिराय॥
जिनके घर नहिं जाहुँ ते, बिधिते कहैं निहोरि।
कब ऐहैं हमरे भवन, खैहैं माखन चोरि॥
तब ताही के मन्दिर जाहीं * प्रतिनमुंकि दधि माखनखाहीं
खटक सुनत तुरतै भजि जाहीं * उरहन के मिस देखन आवैं
सुनि सुत स्यामबदन की बाना * प्रमुदित होइ बात सो ठानी
एक दिवस मिल गाय लुगाई * भवन आइ बोली सुनु माई
आवै तो कान्ह परम पट करै * करत रहत छल बल बहुतेरे
बड़ भये धौं करिहैं काहा * यही अंदेश बढ़ो है राहा
चितवन जेहिननमृदु मुसकयाई * सो बिन मोलै जात बिकाई
छटी बस्तु फिरि ताहि न छाड़ै * माखन हित सब के घर माहीं
करि नाना बहु भांति बहाना * को धौं गुरु मिला नहिं जाना
धेनु बच्छ तजि धेनु पियाई * सोवत लरिकन देत जगाई
दो० कबहूं अंधेरे भवन में, आपौ रहत दुराय।

पाछे दीप जगाइ कै, भाजत ताल बजाय ॥
बोलीं महारे सुनो हे भैया * तुम्हरे विधि दीन्ही बहु गैया
दधि माखन भावै सो खाहू * परघर कत चोरन को जाहू
माखनचोर कहैं सब नारी * सुनि तोकों नाहिं लागत ख्वारी
फिरत धरावत मेरो नामा * मातु न देत होयगी धामा
पर अकाज कीन्ह का पावन * नाहक निर्मल पितहि लजावत
मातु वचन करि श्रवण कन्हाई * बोले तब नम्रता जनाई
हे मैया मैं खेलन जाहू * काहू के घर कछू न खाहू
येई मोहिं पकरि लै जावैं * नारि भेष करि संग पिसावैं
कबहू गोमय हेल धरावैं * कबहू घरकी टहल करावैं
कबहूंक छरिमांझ ठाढी होहीं * गावैं आपु नचावैं मोहीं
मारि गुलेचन मेहनति लहीं * तेहि पर आय उरहना देहीं
दो० मूरख कहत बुध बाम का पलटत लगै न देर।
तियछलख्यो पति कुपथ में, पतिहि करेउ तेहिजेर ॥
हमहू निरबल विप्रसम, कैं काल गुदरान।
आखिरआहि रघुनाथभनि, है न भेक कर जान ॥
औरो सुनो कर्म इन केरे * मैं सुयक्ष अक्षमा मेरे
कबहूंक पकरि भिजावैं पीठी * कबहूं तकैं निरखी कारे दीठी
कबहूंक हमैं टार बैठाई * आपु सहित पति पोढ़ि जाई
सुन बोली गोपी मुसक्याई * सुनो महरि निज सुनरी बाई
कहती हौ जाननि कछु नाहीं * भरे सकल गुण इन के माहीं
तुम्हरे निकट साधु ने दीसै * है खोटे अति विश्वा बीसै
झूठ कि सांचु मान को झूठी * कन्त रहन गह दिया मूठी
दो० सुनारहु कोउ चतुर नर, नृप की भेटि प्रमान।

अचिरायो घर बसत इन, तेहि के काटे कान ॥
सुनि यशुमतिकह सहितसनेहा * तुम जानौं की जानै येहा
तुम्हरी इन की बात अगूढी * बूझ न परत मोहिं मति बूढी
यक दिन महरि श्याम को लैकै * परी पलँग पर तकिया दैकै
लागी कहन कथा सुखदाई * जिमि अवतार लीन रघुराई
बाल विनोद विवाह उछाहू * विपिन गवन भूपतिकर दाहू
भरत सनेह लखण सबकाई * काहे खरदूषण केरि लड़ाई
कहेउ जानकी केर हरण जब * कह धनुशरकहि कृष्ण उठे तब
यशुमति डरपि उछंग लगायो * बोलि सयानेहि फूक डरायो
कबहूँ करावैं भोजन नाना * कबहु शृंगारैं रूप निधाना
कबहूँ वस्तु मागैं हठ ठानी * जेहि तेहि भाति देति सो रानी
कबहु धेनु रचि पसरु चरावैं * कबहु भूप बनि नीति सिखावैं
दो० जाके कुलकी रीति जस, गहतशिशुहि सोइबाट ।
नृपसुत सुत्री के गयो, तहउ टटे नृप ठाट ॥
यक दिन कयो मातु मोहिं डाऊ * अ जुसखन विचबहुतखिजाऊ
मासे कहैं मोल को लीन्हों * नन्दबदलि बसुदेवहि दीन्हों
मात पिता गोरे तें करो * वे सूधे तें कुटिल लबारो
सुनि मा हँसि अबल मुखनेरो * मैं जननी तव तें सुत मेरो
बहुरि कहेउ मोहिं विपिनलवाई * कहि हाऊ आवत कुलल्याई
हों डरि रोइ भगत तव तीरा * सखहु न नेक धरावत धीरा
बोली मातु बुरो नै जानै * फार क्यों खेल तासुसंगठानै
अब तें कहो रहव घर माही * तो मैं पकरि पिटावों ताही
तब कछु कान्ह न उत्तर दयऊ * कहँ रघुनाथ हरषि उरलयऊ
ब्रह्मादिक यशुमति सुख देखै * सबौराज्य धन करि लेखै

कह नृप कौन धर्म इन कीन्हा * कृष्ण बाललीला सुख दीन्हा
कह शुक बसु बसु द्रोण प्रवाना * धरा सप्रिय राधे भगवाना
विधि आये तिन ते इन काहा * सर्वाग्र्य होइ शिशु लाहा
एवमस्तु कहि विधि तेहि भावा * नन्द महरि सोई सुख पावा
प्रथम रहे दशस्यन्दन भ्राता * अब लाहेउ निखवरसुखताता

इति श्रीविश्रामसागरसर्वमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतकृष्णदधिचारीवाक्यविलास-
वर्णनोनामतृतीयोऽध्याय ॥ ३ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं दशम की रीति कछु, ब्रह्मबवर्तक जानि ॥

यक दिन सुनौ नन्द की रानी * मथत रही दधि लिये मथानी
पृथुकटि अति उत्तम पट धारे * तापर किंकिणिजाल सँवारे
सुत अनुराग स्रवत कुच क्षीरा * कर वर कुण्डल लोल शरीरा
श्रमकनतनप्रकण्ठ अति लसही * सुमन मालती शिरते खसही
आइ कृष्ण तह भोजन मागे * माँगि लीजै तब दीजै लागे
ताही समय दूध उतराना * दौरी तुरत उतारन जाना
तबै प्रभु निजमन कीन्ह विचारा * हमते भा पय बहुत पियारा
गहि पायन मेटुकी मह दयऊ * फूटि सकल गोरस बहि गयऊ
यशुमति देखि क्रोध कियो भारी * श्रम करि पकरत भई प्रचारी
ऊखल में पुनि बाँधन लागी * खैंची युगांगुल रज्जु पुनि भागी
यहि प्रकार रसरी बहु जारी * युगअंगुल घटि रही बहोरी
गोपी खडी कहैं सब नेरे * देख्यो आजु चरित सुतकेरे
अबनक कहो मोर सुत सूधा * काढत आजु छटीकर दूधा
जाना श्याम मातु रिसियानी * लीन बधाय एक रज्जुमानी

दो० करन गई अस्नान नय, महरि मुदित मन होइ।
यमलार्जुनकी सुरनि करि, चले घसीटत सोइ॥
धनपति के सुत जानिये, नलकूबर मणिकण्ठ।
नारद केरे शाप मे, भये दोऊ तरु ठण्ठ॥
लीलाविहार युवतिन विषे, देखि नगन मतवार।
होउ विटपकहि पुनिकह्यो, हरि करिहै निस्तार॥
निकसे प्रभु तिनतर ते जाई। उन्मल गिरन गिरे अरराई।
दिव्य पुरुष प्रकटे तह दोई। लागे करन विनय हमि सोई।

गेलाछन्द॥

जयति जयति जगदीश ईश तव चरित अनन्ता।
सुनत कहत अवतहन कहत हमि सब श्रुति सन्ता॥
जयति मच्छ वपुधरण सत्य व्रत प्रलय देखावन।
जय वराह बनि नाथ कनकदृग दलि महिलावन॥
जय कूरम गिरिधरन रतन चौदह उद्धारन।
जय नृसिंह हति हिरण्यकशिपु प्रह्लाद उबारन॥
जय वामन बलि छलन चरणनख सुरसरि लावन।
जयति परशुधर सहसबाहु अरि विप्र रिझावन॥
जयति राम सुरसुखद सन्त मुनि दशमुख गञ्जन।
जयति कृष्ण कंसारि असुर प्रणतारत रञ्जन॥
जयति बोध श्रुति दोष दनुजकृत पुण्य छुड़ावन।
जयति कलङ्की निधन नीच क्षिति करिहौ पावन॥
जयति व्यास वेदार्थ शोधि कृत विविध पुराने।
जय पृथु पृथ्वीदुहुन पूजि प्रतिमा सब ठाने॥
जयति हंस विधि सुतन प्रश्नकर उत्तर दीन्हो।

जय शम्भू मनु आदि अजय जिन परघट कीन्यों ॥
जयति ऋषभ अद्वैत मार्ग जरि दुधन देखाई ।
जय हय गरदर दनुज मारि निगमान्यो राई ॥
जयति धेनुप्रद काम प्रकट भे मुनिजन काजे ।
जय ध्रुव करि हरिभजन अचल अस्थान थिराजे ॥
जयति धन्वन्तरिरूप जगत त्रासै निरवारक ।
जय बद्रीपति शक्र केर मद मान प्रहारक ॥
जयति कपिलसुत सगर दहन गङ्गी दधिवासी ।
जय दत्तात्रय ज्ञान भक्ति वैराग के रासी ॥
जयति देव ऋषि जानि रमापति इच्छा ठानै ।
जय सनकादिक ब्रह्म निरत गुण मुनि सुख मानै ॥
जय इति चौबिस वपुष धस्यो निज भक्तन हेता ।
औरौ होत अमाप मापि को पावै तेता ॥

दो० जय प्रभु याही रूप मम, हृदय बस्यो छवि सिन्धु ।
शीश नाइ रघुनाथ निज, लोक गये छोड बन्धु ॥
जासु नाम जग जालते, देत विनय श्रम छोरि ।
सोइ प्रभुजनवशमातुकी, तजत न बाधी डोरि ॥
सग मृगादि गठ आपुते, कीन्हे अधिक महान ।
यस प्रभुको निजदंशता, तजि राखी जनमान ॥

सुनियशुमतिविरासतिडिगआई * बन्धन छोरि लिहिनि उरराई
कौसल्यादि लगी सब दूराय * गोरस हित बाधे मजभूराय
धन गोरस अरु जन्म तुम्हारो * जाने सफल ताहि तुम गारो
रामजननि कछु कह्यो न तेहू * मेरा जन सिच दाम न देहू
नारी सनग नन्द पर आये * सुनि यशुमतिको बहु रिसिआये

तवसबहिन मिलि कोन विचारा * इहा होत है विघ्न अपारा
चलो बसी वृन्दावन माहीं * सकलसुपास सहित सो आहीं
चले सकल वृन्दावन आये * बसे सुखल जेहिका जो भाये
श्रीवृषभानु खबरि यह पाई * सहित समाज रहे तहँ आई
वृषभानुकुँवरि नन्द घर आवै * न ढलाल कीरतिपुर जावै
बालक प्रीति परस्पर देखी * तात मात सुख लहै विशेखी
तहा एक दिन नन्दकन्हाई * गये खरिक लगवावन गाई
आई तह वृषभानु दुलारी * नाम राधिका छवि आधकारी
जानु अटर ते भयो विराटा * दीन चलाइ कृष्ण तेहि डाटा
कह्यो न अब तुम्हरे सुत होई * भली भान व्रज विहरत सोई
जाके नयनन मध्य निहारा * चौदह रत्न दशौ अवतारा
चारिचारि खग मृग फल फूला * लखत जासु वपु देखि समूला

दो० भजतबिबिधअवतारजब, बहुत जन्म करि यन्त्र ।
तब राधापद मिलत इमि, कह हरि लीलातन्त्र ॥

जे राधा राधा अस कहई * राम कृष्ण तिनके वश रहई
हरि ब्रह्माण्ड पुराण मँझारी * कह्यो राध आराध हमारी
तेहि प्यारी को जब हरि देखा * भये मुदित इत प्यारिउ पेखा
तेहिक्षण झुकि आये वनकारा * नन्द दीख जब आत अंधियारा
राधा ते बोले घर जाहू * श्यामै दिहौ सौंपि सबकाहू
कर गहि चलत भई धरि धीरा * आये दोउ यमुना के तीरा
तहँ लखि माया की प्रभुताई * मणिमन्दिर शुचि सेज सुहाई
श्याम सहित पर्यङ्क पधारी * परत पेखि तेहि तरुण विहारी
कह्यो कृष्ण ऐसी जनि कीजै * मानुष जन्म पालि सुख लीजै
इतना कहत स्वयम्भू आये * सुनि समस्त सामग्री लाये

मङ्गलमय मण्डप तहँ छायो * वेद रीति सब कर्म करायो
विधिवत ब्याह होन तब लागा * गावैं सुरी सहित अनुरागा
कन्यादान विधाता दीन्हा * विधिवत कृष्णचन्द्र सो लीन्हा
सबविधिब्याहिचलनजबलागे * टारहु भूमि भार वर मागे
कहि जब गये भये प्रभु योवन * पूज्यो प्रिया मनोरथ को मन
बालरूप ह्वै पुनि गृह आये * श्रीजयदेव चरित ये गाये
इकदिन कृष्णबूझिनिअच्छा * ग्वालन साथ गये लै बच्छा
लागे विपिन चरावन जबही * आयो असुर वच्छ बन तबही
कृष्ण पूछ गहि महि दैमारा * मरिगा जब तब सखन निहारा
एक दिवस यमुना के कूला * रहे चरावत वच्छ समूला
धरि बकरूप बकासुर आवा * लिहिसिलीलिश्यामहिंसहचावा
दीनिसे उगलि अग्निउरजारी * निकसे तुरत चोंच गहि फारी
बल बिलाकि सकल हरषाने * गावत गुण निजघरन तुलाने
इक दिन खेलत रहे मुरारी * आवा निकट प्रलम्ब मुरारी
खेलन लाग बालकन सङ्गा * जब तब करै सखन ते दङ्गा
जानि गय बलदेव कुमारा * पकरि ताहि पुहकर ते मारा
दिव्य रूप ह्वै हारेपुर गयऊ * मुनि दुर्लभ कैसे पद भयऊ
इन के पूर्व जन्म कर हाला * कहा सोऊ तुम सुनो भुवाला
बक प्रलम्ब केशी बत्सासुर * गन्धमदन गंधर्व के सुत फुर
मुनि दुर्वासा शिष्य किये सब * हित उपदेश दियो तिनको तब
पद्म सहस्र वरत तुम धारौ * विष्णुलोक में जाइ विहारौ
लगे करन सो धरि उरमाहीं * हरि मम प्राप्ति जनन में नाहीं
मिले न तब शिव शरते लाये * दीन्ह्यो शाप उमा लखि पाये
होउ असुर तुम चारौ भाई * पतिमुख कृतसुनि करुणा आई

बोली हरि कर मृत्युइ प्रैहौ * असुरयोनि तजि हरिपुर जैहौ
तेई असुर है यह गति पाई * अब सुनु अपर कथा सुखदाई
इकदिन सखन सहित नँदनन्दा * रहे विपिन फादन फरफन्दा
तहँ अहिरूप अघासुर आवा * इक इक योजन अङ्ग बनावा
बदन पसारि रहा तिन तीरा * करि विचार प्रविशे सब वीरा
श्याम गये जब तब मुख चापा * बाढत भये कृष्णकरि दापा
उदर फारि पुनि बाहर निकसे * सखनसहित विषधरलखि बिकसे

दो० भूप वन्तिकापुरी को, पुण्यकार मृगबद्ध ।
कीन देखि गौतम दियो, शाप होइ असरद्ध ॥
करी बीनती भांति बहु, वारे तन धन प्रान ।
दीनदुखितलखिलोलपुनि, बोले ऋषि सुजान ॥
एहैं जब गोलोक ते, ब्रज में कृष्णकुमार ।
मृत्यु पाइ तिन हाथ ते, होई तव उद्धार ॥

सोई भयो अघासुर आई * अपर कथा सुनिये ऋषिराई
एक दिवसगे पुलिन मझारा * निजनिज भोजन सबनउतारा
लागे खान स्वाद मुख गाई * सो सब चरित देखि विधि आई
चहुँदिशि उडुदव बाल अनन्ता * मध्य विराजत शशि भगवन्ता
देत श्याम सब का सब श्यामैं * तब तौ ब्रह्म रह्यो दुविधामैं
जिमि भुशुण्डिसँगखलत गेहा * भये भ्रमित तिमि कृत संदेहा
ये अवतार कवन विधि आही * सबहिन की जूठनि जे खाही
हमहूं विवाह गयन इकबारा * अब कछु नहीं प्रभाव निहारा
अस विचारि बछरा हरि लेगे * वृन्दन चले कृष्ण सब हरिगे
बालनहू को तब हरि लीन्हा * जग्नाश्याम चरित अज कीन्हा
सुरत चच्छ बालक रचिलीन्हें * ज्यों का त्यों कछु जात न चीन्हें

माता करै अधिक अस्नेहा * धेनु पियावै तजि नव गेहा
सन्तत करैं चरित प्रभु सोई * जाना राम अपर नहिं कोई
बर्षएक यहि बिधि चाल गयऊ * इनउतलखि अन बिस्मित भयऊ
पुनि सब बाल लखे हरिरूपा * सेवत पद बिधि भव सुरभूपा
ब्रजबासी सब बिबुध समाजा * बहुरि दीख प्रभु आप बिराजा
वस्तु गई सो चिन्ता भारी * लज्जित ह्वै अज हृदय बिचारी
दया आते मेरो अज्ञाना * त्रिभुवनपति तिनते छल ठाना
निकट आइ शिरनाइ बिधाता * लागे करन बरण पुलकाता
नमो नमो त्रिभुवनपति स्वामी * नमो सकल उर अन्तर्यामी
श्याम शरीर पीत पट काधे * गुञ्जाभूषण दोउ कर बाधे
बिम्बाधर आनन छबि सींवा * जलजमाल कौस्तुभमणि ग्रीवा
शीशमुकुट श्रुतिकुण्डललोला * अङ्ग अङ्ग प्रति बसन अमोला
अरुण अब्जि पदुमाच बिशाला * करिकरभुज तिलकावलि भाला
कुञ्चित कच नासिका सुहाई * बेणु बादपर पालक गाई
अस स्वरूप मानुषी तुम्हारा * भयो अनुग्रह हेतु हमारा
अहै सो इच्छामय बपुमाहीं * पञ्च भूत की रचना नाहीं
असिसमर्थ्यनहिं मोहिं मँझारी * जानी महिमा अगम तुम्हारी
यावत अस बपु हृदय न धरहीं * आतमरूप बिचार करहीं
तावत ज्ञान परिश्रम आही * अस बिचारि युव त्यागत ताहा
सुनिय सदा यशबिमलतुम्हारा * साधुनमुख निकसत जो सारा
काय बचन मन तुम को ध्यावै * तुम्हरे जन मन में अलिभावै
जीवनमुक्त अहै ते प्रानी * जे तव पदपङ्कज रति मानी
यद्यपि हौ तुम स्ववश अजीता * तद्यपि इन तुम का प्रभु जीता
तावत है रागादिक चोरा * यावत गृह के बन्धन घोरा

तावन मोह निगड़ परे सोई * यावन कृष्ण न तव जन होई
भक्तितुम्हारि सकलसुखदानि * है कल्याण करन मन भानि
तेहि तजि केवल बोधइ लागी * करत यत्न अनुदिन अनुरागी
तिनकर रहत परिश्रम शेखा * तरु अस्थूल सघन कस लेखा
हो स्वतन्त्र तुम अपनी माया * करि विस्तारत भुवन निकाया
तुमही शोभित हो जगभूपा * सृष्टिकाल तहँ ब्रह्मस्वरूपा
तुम जगपालन काल मुरारी * सहारण हित तुम त्रिपुरारी
भूरजकन नभ नखत जे आहीं * कालपाइ मापति होइ जाहीं
हितकारी तुम्हरे अवतारा * तिनके चरितनकेर न पारा
तेहिते करुणा दृष्टि तुम्हारी * है सब पर सामान्य मुरारी
आपन कीन कर्म हैं जेमे * अनायास भुक्त नर तेसे
नमस्कार तिनका बड़भागी * जिनकर मन नवपद अनुरागी
ते अनित्य भवसागर एहा * तरत बन्मपद सरिस सनेहा
तुम अनादि मैं आदि अजानी * मायापति ते माया ठानी
तुम्हरे आगे का मैं तनका * बृहद समूहकेरि जिमि कनका
कहँ मम सात विताकी काया * कहँ तुम अगणित अण्डउपाया
सकल सृष्टि तव उदर मँझारी * तेहि ते क्षमिये गनह हमारी
बाल गर्भ गत चरण चलावै * मातु शोचि अपराध न लावै
नहिं यह मिथ्या बात मुरारी * है तुम से उतपत्ति हमारी
जब मैं नाभिकमल ते भयऊ * तब फिरि ताके भीतर गयऊ
वर्ष एक शत खोज्यों तोही * तबहु न देखिपरेउ तुम मोहीं
तप करि तहँ देख्यों नव रूपा * कोटि भानुसम तेज अनूपा
तमकरि अन्धचन्द्र अभिमाना * तुम ते पृथक ईश मैं जाना
तुम सम नाथ दास मैं तोरा * क्षमहु देव अब अवगुण मोरा

दया योग्य मैं अहौं तुम्हारी * ईशन के तुम ईश सरारी
सुनि बिनती चतुरानन केरी * पोछे दृग प्रभु निजे पट फेरी
जाहु धाम कह कृपानिधाना * तजि मद मोह तर्क बिधिनाना
सुनिअजपदरजधरि शिरगयऊ * बच्छ बाल लै आवत भयऊ
जहँतहँ धरि निजलोक सिधाये * बरष बटोरि कृष्ण तब आये
बोले बालक सुनिये ताता * तुमबिन नहिं खावा दधिभाता
लागे बहुरि सकल मिलिखाना * बिधिछलबल काहु नहिं जाना

गीतिकाछन्द ॥

जाना न काहू मरम भोजन खाय अस बोलत भये ।
फल ताल लागहैं सब सखा मिलि खान के हित बलगये ॥
धरि रूप रासभकेर धेनुक असुर यक तहँ आयहू ।
पग पकरि पटकेहु बिटप पर बलराम सबहुन पायहू ॥

सो० बलिसुतसहसिकनाम, हरिजन बनअप्सरालखि ।
भा मुनिथल बशकाम, दीन शाप उद्धार कहि ॥

दो० सोई यह धेनुक असुर, भयो गयो गति पाइ ।
मातन ते रघुनाथ सब, कही कथा पर आइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसचमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
राममनेहीकृतकृष्णबलबन्धनयमलार्जुनउद्धारराधिकाबि-
वाहनब्रह्मावच्छहरणधेनुकवधकरनकथावर्णनो
नामचतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं दशम की रीति कछु, गर्गअदित मतआनि ॥

बाल चरित बरणे अतिपावन * और सुनो जे हैं मनभावन
इक दिन रामै भवन बिहाई * अपना गये चरावन गाई

पहुँचे जब कालीदह तीरा * पियत भये गो बालक नीरा
मरे तुरत पुनि कृष्ण जियाये * सुरभिन निजनिजबच्छपियाये
लागे खेलन गेंद कन्हाई * चढे विटप शिशु मारिसि धाई
उछरि गेंद कालीदह गिरेऊ * ताही सङ्ग कूदि प्रभु परेऊ
गये सपदि काली के तीरा * निरखि चिपटिगा सकलशरीरा
निबुकि चढे ताके शिर कूदी * गरुये ह्वै डारे फन रूदी
चला रुधिर मुख चञ्चुन तरे * शिथिल अङ्ग भे बिन मद करे
नाथि लीन तब कृष्ण कृपाला * बिनवत भई तासु की बाला
नौमि कृष्ण भञ्जन भयभारी * नटवर वेष सुभग सुखकारी
पति अपराध क्षमिय भगवाना * मोहबिवश महिमा नहिं जाना
सुनि बिनती बोले यदुराई * रमणक देश बसहु अब जाई
है हम ते खगपति ते रारी * अनत गये डरि है सो मारी
सब अहि देत रहै भोजन तेहि * बसरीपर हम दीन न हित यहि
भिरत भिरेन हमहू धरि धीरा * हारि पराय दुरेन यहि तीरा
इहा शाप सोभरि ऋषि केरी * तेहि ते गरुड़ करत नहिं फेरी
कबहुँ बैठि तरु उगिली माजरि * कह मुनि पुनि आवत जहाँ जरि
मेरो चरण चिह्न तव माथा * लखि अन बोलिनहिं खगनाथा
दो० पूर्व जन्म को भूप तैं, मदवश ममपद माथ।
लिह्यो दिह्यो तजिशिरसितेहि, भयोसर्पमदमाथ ॥
इहां निकट ठाढे ब्रज लोगा * रोदन करहिं सकल बश शोगा
यशुमतिनन्द न धीरज धरहीं * सकर्षण उपदेशहि करहीं
धरहु धीर गुण गुणि मनमाहीं * कतहुँ जाइ कृष्णहिं भय नाहीं
तेहि अवसर उछरे यदुनाथा * काली सहित चढे तेहि माथा
लागे कूदन निरत पुनि कान्हा * हरषे सकल मिले जनु प्राना

उतरे जब तब अहि शिरनावा * कुटुबसहित रमणहि सिधावा
कृष्णहि सब भेटे पुरबासी * तात मात प्रमुदित चरदासी
तेहि दिन रहे सकल तेहिघाटा * असुर एक यकटोरे ठाटा
चहुँदिशि झाखर रूधि बनाई * तेहिबनदाहिमि आगि लगाई
भये बिकल सब शरण पुकारे * करि दव पान तुरन्त उबारे
रोहित चिह्न न नेकु लखाना * आये भवन करत गुणगाना
तेहि अवसर बरषा ऋतु आई * सचराचर सब के सुखदाई
निज निजगृह सब छावनलागे * जिमि चेतहिं बुधजरपनआगे
उमड़िघुमडि नभ जलधर आये * दान देन जनु सुधनिक धाये
बगुल पाति सोहत यहि भाती * जिमि सुकृतिनउर टेकसुहाती
निर्तहिं मोर मुदित घन देखी * गृही विरक्त जिमि हरिजन पेखी
बरषत जलथल अलभय चीन्हे * जिमि सम्पति रघुपति के दीन्हे
भई कीच नर चलत निहारी * जिमि सज्जनजगमाहि विचारी
बोलन दादुर नहि अलसाना * जिमि शठकरत अकारण बाता
तडितचमकि फिरि जात बिलाई * जिमि जगतनधनसुततियभाई
बहुरि नीर आवत सरमाहीं * जिमि सद्गुण सब सज्जनपाहीं

दो० जोतहिबवहि किसानमहि, ऋतुकर बीजप्रमान।
जिमिशुभसाधनकरिकरहि, युगकर धर्मसुजान॥

प्रविट पाइ तृणसकुल जमा * विषयसगजिमि बहुविधिवामा
विविध जीव प्रकटे महि आई * प्रजा बढत जिमि नृपवर पाई
जरत जवास आपने दोषा * जिमि कुलनाशहोत द्विजरोषा
फलफूलिबिटपश्रवनि झुकिआये * जिमि सुसाधुसुखसम्पति पाये
लागत मधुर बचन पिकके * जिमि हरिचरित सन्तमुख तेरे
प्रकटत कबहुँ छिपत हिमभानू * यथा सुसग कुसगति ज्ञानू

दो० बरष्यो जल पर ना जम्यो, ऊषर में तृण कोइ।
हतभागिनि के ज्ञान जिमि, कथौ सुने नहिं होइ॥
चलीं क्षुद्रसरिता उमडि, जिमि थोरे धन नीच।
अचलहोतजलजलधिमहँ, यथा जीव हरिबीच॥
द्वै महिना की वृष्टि ते, भयो अन्न सम्पुष्ट।
राम नाम के रटे जिमि, होत भक्त जन तुष्ट॥

यहि विधि वरषाऋतु के माहीं * वनवछरू तिनमम कुदलाहीं
कबहु तोरि फल खेल गोली * बोलें कबहुँ द्विजन की बोली
कबहु कहँ पटपद गुञ्जारा * कबहु कीश बनि कूदहिं डारा
कबहु बक ह्वै बेणु बजावें * देवनारि तन सुधि बिसरावें
गो वृषभादि विपिन पशु जेते * मुखतृण दाबि सुनैं धुनि तेते
बत्स नहे मुख थन राहजावें * नचहिं मोर मुद थोर न पावें
खग-मृग शब्द सुनैं अनुरागे * यमुनाजल बहि सकत न आगे
आतप ते पावस ह्वै जावें * पावस से आतप दरशावें
उठ फूलि तरु शिला पहीनें * मुनिजन सकल प्रेमरस भीजें
ब्रजबासी सब रहैं निहारी * फरकिउठहिंशिरशिवशिरधारी
बन्द करहिं जब तब मन मारे * प्रमुदित ह्वै निज कारज लागें
यकदिन श्याम मखनयुतभाये * चलत चलत मुञ्जावन आये
चहुँ दिशि ते दावानल लागी * जाइ कितै गो बालक भागी
शरण भये तव नयन मुँदाये * देखे सब दव बाहर आये
मास दिवस भरि गोपकुमारी * देवी की पूजा अनुसारी
कात्यायनी कृपा अब कीजे * नन्दसुवन हम का पति दीजे
खात पियत अरु सोवत जागत * हरिपरिहरिराचेत अन्त न लागत
अजहु जासु मन होइमगनअस * कृपासिन्धु हरि होइँ ग्रास बस

दो० यक दिन सब करती रहैं, यमुना मे अस्नान।
चीर हरे तहँ आइकै, औचट श्याम सुजान॥

लटकाये पट कदम कि डारी * मागहिं सबमिलि गोपदुलारी
चीर देव तुम्हरो हम तबहीं * जलते बाहर ह्वैहौ जबहीं
निकसी सब कर तब करिओटा * बोले बिहँसि नन्द के ढोटा
दोउ कर जोरि विनय रविकीजै * करत भई सब तब अब लीजै
पूजेहु तुम जेहि हेत भवानी * सो हम प्रकट भयन वरदानी
जबतक जग की लाज न खोवै * तबतक मोहिं न प्रापत होवै
असकहि अमित बनाये अङ्गा * कीन्हीं केलि सबन के सङ्गा
कमला ललिता विमल विशेषा * चन्द्रावलि सुखमादिक शेषा
जब तब सब के सदन विहारी * जात कहत यक एकहि प्यारी
शयन बयन सुनि गोपिन केरे * करि ओढर आवहिं चलिनेरे
यक दिन गे राधिका निकेता * बैठारिनि निज ढिग करि हेता
श्यामवदन लखि आपनिछाहीं * अपर नारि जानी मनमाहीं
कीन मान हरि नेह जनावा * दूती बनि बहुभाति मनावा
कबहू बैठैं पानिघट जाई * काहू को शिर धरैं उठाई
काहू कर घट डारि फोरी * ते यशुमति ते कहैं निहोरी
यक दिन दधि बेचन के हेता * चलीं सकल ब्रजबधू सचेता
सखन सहित यदुनन्दन हेरी * मारग बांच लिहिनि सब घेरी
दीजै दान जान तब पैहौ * हठ कीन्ह पांछे पछितैहौ
डगर डगर मे चलहु कन्हाई * समुझि न लागै बहुत मोटाई
शिरपर कस कबहु सुनि पाई * सकल तुम्हैं बदिमाहिं डराई
कसहि मारि मिलैहौं ताता * उग्रसेन को करहु भुवाता
हरिहौं सकल भूमिकर भारू * याहीं हितभा मम अवतारू

मूढ़ बात मत बोलौ लाला * धेनु चरावत फिरत बिहाला
लकुटी हाथ कमरिया काँधे * माँगि खात दधि सब के राँधे
ते तुम ऐसे बनत हौ ठाढ़े * बातन ते नहिं भूपति होई
यह सुनतो पुनि आहिर गवारी * तुम का जानो भूति हमारी
अब्बा शिव आये नित हमही * ऐसी दशामई मिलि तुमही
तुरत चतुर्भुज रूप देखावा * लखि विश्राम सबनके आवा
बोलीं सब हम हैं तव दासी * भावै सो कीजै अविनासी
प्रमुदित कीन बिहार बिहारी * फिरि आइ निज भवन निहारी

दो० एक सखी उनमत्त है, टेरै नव के द्वार।
ले कोइ श्याममोल दधि, लीन्हों नन्दकुमार॥

अति बहुबेलि गोपिकन केरी * मंजेप मे कहुक निबेरी
सुनहु एकदिन एक ठिकाने * गये चरावन सखा बुलाने
चौबे करत रहे तह यागा * पठये लावहु माँगि बिभागा
जाय सखन जब भोजन माँगे * सुनि कटुवचन कहन सब लागे
आये सुमि रहिनि सब सोले * अबतुम जाउ तियनहिंग बोले
द्विज बानेतनते भाषिनि जाई * बिपिन भुखाने राम कन्हाई
तुम्हरे ढिग पठइनि है हमको * सुनि आनन्दभयो अतिसबको
बिबिधभाँति के भोजन कीन्हे * क्षिप्र चला थार कर लीन्हे
आइ कृष्ण के आगे राखे * प्रेमसहित सबहिनमिलिचाखे
एकैकर पति रोकेसि धाई * पतितजि मिली प्रथमसो आई
दरशन पाइ छकित भइ सारी * कहतभये तब बिपिन बिहारी
जाहु भवन अब टरेहु न राह * तव सेवा करिहै तव नाह
सुनि सगोद आई अरयाना * तब सब द्विज लागे पछिताना
हमरे सरग यज्ञ धिरकारा * धिक हमरे बलबुद्धि बिचारा

धिक बिद्या पढ़िबो सब जानो * धिक हमरे जप तप व्रत दानो
धिककुल मदअभिमाननिछमनू * होइ कृष्णते विमुख जो मयनू
धनि पत्नी ये हरि मनभावन * इन्हें परशि हम हूँहें पावन
धेनु चराय जाइ जब धामा * अवलोकहिंछवि मिलिसबवामा
कात्तिकवदी चतुर्दशि आई * घर घर व्यञ्जन करहि लोगाई
यशुमति भोजन विविध बनाये * कृष्णचन्द्रलखि वचन सुनाये
आजु कौन उत्साह तुम्हारे * सुरपति की पूजन है प्यारे
ब्रजवासिन के इष्ट विडोजा * जासु कृपा सुख बाढत रोजा
बर्षत जल तृण जामत जाते * चरत धेनु पय प्रकटत ताते
रहियो दूरि छुयो जनि लाला * रूसि रहेगो देव विशाला
बोले मनमोहन सुनु माई * यामें हरि की कौन बड़ाई
ईश रजाइ जाहि भय जोई * शिरधरि सदा करत सब सोई
कोइ सिरजै पालै सहारे * कोइ बरषै करषै कोइ जारै
इन्द्र कहा करि सकत विचारा * नीक जबून हाथ करतारा
बहुदिन ते पूज्यो सुरराई * काहुइ कबहु दिहिसि कछु आई
तेहि ते अब छाड़ो सुर दूजा * गोवर्धन की ठानहु पूजा
जाहिके ऊपर धेनु चरावत * सदा ताहि तुम सब बिसरावत
निकट रहत सब ते बड देवा * तेहि तजि करत आनकी सेवा
जबहीं तुम पुजिहौ मनमाना * ह्वै प्रसन्न देई बरदाना
याही बात चतुर्भुज रूपा * कही स्वप्न में पुरुष अनूपा
निज निज कर्म बचनका अच्छा * ताते तुम्हें चही गोरक्षा
सब ब्रज में यह बात प्रकासी * कौसल करन लगे पुरवासी
सब के मन आई सुनि लीजै * जो कछु कृष्ण कहैं सो कीजै
श्याम समान हितू नहिं कोई * प्रभुताई निज नयनन जोई

मुनिसब निजनिजआश्रम आई * शकटन में सब सौंज भराई
नानाविध पकवान मिठाई * विविध मूल फल फूल खटाई
मालन शाक अनेक सोहाये * जोनि जोनि सब शकट सिधाये
बाल वृद्ध यौवन नर नारी * चले सकल मन आनंद भारी
बाजे बाजन विविध प्रकारा * गावहिं गीत वधू मिलिसारा
पहुचे जब गोवर्धन पाहीं * टिके सम त्रय योजन माहीं
समाचार सुनि जह तहँ तेरे * आये औरो लोग घनेरे
कार्त्तिक सुदी प्रतिपदा के दिन * बोले कृष्ण नन्द ते यहि छिन
प्रथमैं तुम पूजो गिरिराजा * तेहि पाछे सब गोपसमाजा
पूजत भये नन्द हर बागे * पाछे सकल चढावन लागे
प्रकटे कृष्णरूप धरि दूजा * थूल विशाल अनेकन भूजा
श्यामशरीर मुकुट शिर नाका * कुण्डल माल मनोहर हाका
पीतबसन पहिरे सुठि भागा * चक्षु चपल अलकैं जनु नागा
लागे खान उठाइ उठाई * लखि हरषे मन लोग लुगाई
तिनते कृष्ण कहत भे तबही * देखे तुम ऐसे सुर कबही
जो प्रत्यक्ष तव पूजन खाना * तुम्हरी कृपा मिले अब ताता
ललिता सखी गई सब जानी * गया से बोली मृदुबानी
देखो श्याम केरि चतुराई * आपु पुजावत आपुहि खाई
दो० भली बस्तु रघुनाथ सोइ, जो लागे हित श्याम।
नतरु भई बादिहि गई, ज्यों पानी के दाम॥
एक सखी गृह भोग लगावा * कर पसारि ताहू कर खावा
भोजन करि बोले प्रभु याही * मागहु वर जो भावे जाही
जो जेहिरुचा सोई तेहि मागा * बोले नन्दसहित अनुरागा
नाथ देहु वर यह मम कामा * नीके रहैं कृष्ण बलरामा

सुनहु नन्द तव पुत्रन केरा * सदा होय कल्याण निवेरा
सहित समाज रहौ तुम आछे * एक बात होई मम पाछे
ताको तुम तनको मत डरियो * जो कछु कृष्ण कहैं सो करियो
असकहि दिहिनि बाटि परसादा * अन्तर्धान भये सहलादा
हनुमत बचन लागि यदुराई * परसि परब तजि दीन बड़ाई
दो० सेतु करत भा पूर सुनि, दीन्ह्यो ब्रजमे त्यागि।
मिलनदरशन मोहितोहिं, द्वापरमे थक लागि ॥
ऐसे प्रभु निज जन की बानी * करत साच सुनि को न प्रमानी
जयति जयति कहि करत बड़ाई * आये पुर लखि लोग लुराई
तब बासव अति कोपत भयऊ * बोलि मेघ परलय के लयऊ
ब्रजबासी सब गये मोटाई * देह बहाइ सहित गिरिजाई
टूक टाबर के कहे हमारी * दिहिनित्यागिमलगिरिहिजोहारी
कौनि बात बडि बरनि सिधाये * बन बृत बात नग्र ब्रज आये
घेरि घुमरि जल छाइन लागे * सकल गोप हरिपद अनुरागे
तुरत गोवर्धन लीन उठाई * ब्रजपर दिहिनि छत्रसम छाई
नख पर धरे देखि ब्रजनारी * एक एकते कहैं बिचारी
चोरि चोरि तब माखन खायो * सो सखिश्यामकाम अब आयो
यशुमति कहै निहारि निहारी * सब पर शक्र बिपति यह डारी
केहू नहि गिरिराजहि धारा * हमरे सुन भाऊ कह टहरा
लेहु लेहु अब ते कोइ लेहू * लाल हि नेक उसासी देहू
हौं अहीर को है कछु दाया * तब मोहन माते समुझाया
सप्त दिवस मुदिरन बन पीटा * काहू के तन परी न छीटा
त्रिभुवनपति जिनकर रखवारा * को करिसकै तासु अपकारा
बृतसब घन चलिगये लजाई * सहसअक्ष सुनि उठा उराई

आयो तुरत कृष्ण के पासा * चरण नाइ शिर वचन प्रकासा
नमो कृष्ण भञ्जन महि भारा * अखिल लोक नायक करतारा
जगतपिता गुरु अज भगवाना * रक्षक धर्म दलन खल नाना
मैं अपराध कीन अति भारी * क्षमहु नाथ अब चूक हमारी
जाना नहीं तुम्हें मैं ईशा * ताते करन चह्यो व्रज खीशा
जो जाते कछु पावन होई * मिलै न ताहि करै रिस सोई
हम तुम्हार सब भांति बसाये * कामधेनु लीजै प्रभु ल्याये
बोलें कृष्ण तजहु सब शोका * धेनु समेत जाहु निज लोका
भोग्यो निज अधिकार सदाहीं * भूले मोहि बहुरि सुख नाहीं
आये सुरपुर आयसु मानी * दखि प्रभाव सभा हरषानी
सब मिलि कहैं कृष्ण हैं रामा * टरहु जासु करत परनामा
गोवर्द्धन की आहि कृपारी * भुज भूमनि यशुमति महतारी
कहैं रघुनाथ चरित हरि केरे * भवसागर के बोहित बेरे

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
राममनेहीकृतकृष्णायनेचतुर्मासाचीरहरणदानलीलागो-
वर्धनलीलावर्णनोनामपञ्चमोऽध्याय ॥ ५ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणपतिगिरासुखदानि ।
कहौं दशम स्कन्ध की, रहसरीति कछुजानि ॥

इन्द्रहि श्याम स्वर्ग पहुँचायो * व्रजवासिनलखि आतसुख पायो
जैसे बहुरि सब निज निज गेहा * यक दिन तहां चरितभा येहा
नन्दहि वरुणदूत लै गयऊ * कृष्ण जाय पुनि लावत भयऊ
सुनी सबन प्रभुता अभिरामा * अब सुनिये जिमि जीत्यो कामा
यक दिन दोख शरद उजियारी * वन में आवत भये मुरारी
हरिहित गुनि ऋतुगणतहँ आये * सफल विटप नहिं जाहिं गनाये

डोलत त्रिविध पवन सुखदाई * लखि तहँ प्रमुदित ह्वै यदुराई
तिरभङ्गे ह्वै वेणु बजाई * सुनि गोपी सब आतुर धाई

दो० कोइसुत तजिकोइ सेजतजि, कोइभूषण कोइचीर।
कोइ पयतजि कोइपाकतजि, आई जहँ बलवीर ॥
बोले लखि ब्रजराज तुम, कीन नरक को काम।
सासु ससुर पितु मातुपति, तजि आइउयहिठाम ॥

तेहिते अबही जाहु पराई * सुनि गोपी बोलीं अकुलाई
यह तौ दोष नाथ तेहि लागै * अपर पुरुष ते जो अनुरागै
हमरे पति तुमही महराजा * यामें कहो कौन की लाजा
त्रिभुवननाथ प्राणपति देवा * फुर मिलि तजिये झूठी सेवा
जो इमि रहै हिये निठुराई * क्यों बशी तुम फूकि बजाई
आवै कोइ आसरा लगाई * लागै दोष देइ दुदलाई
तेहिते नाथ रहस अब कीजै * सूधे सूध जवाब न दीजै
बिलपत रुदत बदत इमि बाला * देख्यो कृपासिन्धु छवि जाला
माया ते तब कह्यो गोपाला * रचहु रहस मण्डल ततकाला
योजन पाच माहिं अभिरामा * रचत भई बशीवट धामा

गीतिकाछन्द ॥

छविधाम बंशीवट जहां मणिजटित कचन की नही।
तहँ रासमण्डल रच्यो मोहन जात सो कापै कही ॥
नव सात सहस जु गोपिका सजि साज सब ठाढ़ी भई।
एक एक के मधि एक मूरति काम की शोभामई ॥
रघुनाथ तिनके बीच जोड़ी राधिका नँदलाल की।
बहु एक रूप अनेक कीन्हे खबरि नाहिं यहि हाल की ॥
मिरदङ्ग ताल सितार बहु मुरचङ्ग वेणु सरङ्गिका।

सुरमन्द वान्त बोसुरी गति मिलत उठत तरङ्गिका ॥
करजोरि निर्तत छोरि कटु मुखमोरि शिर नीचे करैं ।
पगभूमि पटकनि बाहु झटकनि ग्रीव लटकनि मनु हरैं ॥
मृदु हँसनहिं हेरहिं घूमरि झुकि गति घघरुन की लावहीं ।
ततताथई ततताथई ततताथई कहि गावहीं ॥
कोइ डारि कर गर श्याम के मुरली छिनाइ बजावती ।
कोइ तान पूरन कान्ह सँग कोइ पकरि उर चपटावती ॥
हँसि लेत गोद उठाय मोहन हाथ अङ्गनि पै धरैं ।
लखि देव नभ परसून बरषैं हरषि सब जै जै करैं ॥
मणिकण्ठ उर बनमाल बर शिर मोरमुकुट विराजहीं ।
पटपीत किकिणि काछनी कटि कान कुण्डल छाजहीं ॥
अँगअङ्ग प्रतिबहुविधि विभूषणअलकअमकन झलकहीं ।
पदकञ्ज नूपुर बेणुकर मुखपान भर छवि छलकहीं ॥
यहिभाँति नाचत गोपिका सब थकित ह्वै झुकिझुकिरहीं ।
कहिं माल पायल चन्द्रिका खसिपरी नकबेसरि कहीं ॥
अति श्रमित लखि नँदलाल तिनपर सुपट पवन ढुरावहीं ।
उरझे विभूषण हार वेनी कमल कर सुरझावहीं ॥
अस प्रीति के बश श्याम लखि सुरअङ्गना मनमें कहैं ।
धनि धन्य गोपी धन्य जिनके संग हरि क्रीडत रहैं ॥
करजोरि हृदय निहोरि विधिते कहै यह वर दीजिये ।
हम होहिं दासी ब्रजवधुन की कृष्णपद रत कीजिये ॥
दो० कृष्णहि मारुत करत जब, देखत सब ब्रजबाम ।
मनमें भा अभिमान तब, है हमरे बश श्याम ॥
जानिलये सो मद भगवाना * तुरत भये तहँ अन्तर्धान ।

जेहिपर होत अधिक अनुकूला * दलत तासु हरिमद दुखमूला
एक सखी का कर गहिलीन्हा * गोपीवेष सग बन कान्हा
त्यहितबनिजमनमाझविचारी * मैं हौं श्यामहिं बहुत पियारी
बोली पग ते चला न जाई * लेहु मोहिं निज कन्ध चढ़ाई
लीजै चढि बैठे मुसक्याई * चरण उठावत गये हेराई
बिन प्रभु बाल विकल भे कैसे * जलचर बिनजल व्याकुल जैसे
शोचत हरिहि न पावत बामा * विकल पुकारत आरत नामा
हे ब्रजराज राज दुख मोचन * हे गोपीपति बारिज लोचन
चरण शरण मैं दासी तेरी * कृपासिन्धु लीजै सुधि मेरी
यहि विधि रुदतपरी तरुबाला * पाछलिनका अब सुनो हवाला
रुदत फिरहिं सकल उनमरना * जड़जीवन ते बूझहिं रटना
हे बट हे पाकरी करीला * तुम देखे मोहन गुणशीला
हे चलदल हे नीब पियारी * तुम कितहू देखे बनवारी
हे रसाल हे पनस सुजान्हा * तुम आवत देखे इत कान्हा
हे जामुनि हे गूलरि तूता * तुम देख्यो यदुपति के पूता
हे दाडिम हे कुन्द चमेली * तुम देखे गिरिधर अलबेली
हे गुलाब बेला कचनारा * हे बदरी हे हरसिंहारा
हे नींबू अंबरुत सरीफा * तुम देखे गोपाल हरीफा
मोमासिरी के कदम तमाला * तुम देखे नरहरि नन्दलाला
दो० हे कृष्ण उष्णा द्विजा, पथ्या क्रमुकाकन्द ।
हे बेरवालगूल अछ, तुम देखे नँदनन्द ॥
यहि प्रकार सब वृक्षन तेरे * भेंटि भेंटि पूछे हरि हेरे
जब न कछू उत्तर तह पावै * निदरि तिन्हें बासहि गरिआवै
हे बशी तें बड़ी गवारी * अपने कुलकी रीति बिगारी

सवैया ॥

चेमगद्रापग अंधन को तुम चालिवो आछेनहू को निवारेउ ।
त्रे जलथाह बतावत हैं तुम प्रेम अथाह के वारिद पारेउ ॥
त्रे बरबास बसाइ भलं तम बास छाड़ाइ उजारिमे डारेउ ।
को कहिये हरिकी बेसुरी तम आपन बंश को नाम बिगारेउ ॥
दो० बिरह बह्नि तो मे भरी, है तू बशी सांच ।
फूंकि फूंकि हरिगहतपरि तदपि आगुरी नाच ॥
जो तैं श्याम ते न हितानी * तो परपीर जाइ किम जानी
आगे चलि सो सखा निहारी * भेंटि कह्यो कित गये बिहारी
त्यहि तब आपनि कथाबखानी * कित धौ गये हमहु नहि जाना
बोलो तब ललिता मुख नाई * श्यामसंगिसखिनिटूर न कोई
कह राधिका श्याम का कीन्हा * कोहअभिमान दुख नहि दीन्हा
विधिकरि गर्व त्रिपुलविधि देखे * शङ्कर भये कामवश लेखे
लोमश लाख सिमराकी माला * बसे विपिन मे तशरथलाला
नारद बानर कर मुख पावा * यामर कर हनुमान बंधावा
हरिके कहे कथा नाह सुनेऊ * गरुड भुशुण्डि पुरहशिर धुनेऊ
दशमुख दराप पराजय पाई * कुश ते निज बलराम डुभाई
ज्ञान गर्व सनकादिक परेऊ * शाप देह जग मे अवतरेऊ
गिरे ययाति स्वर्ग ते भूमा * गज्बश ग्राह बहुत दिन झूमा
गिरिओरि गुण्या नमामदूजा * हरी तरय गोवर्द्धन पूजा
तापस धरा शिला शिर फेरे * जेर पङ्ख सम्पाती केरे
बसु बशिष्ठ मुनिने मद कीन्हा * तहि गाङ्गेय मनुजतन लीन्हा
द्रुपद द्रोण ते अहमिति ठानी * भइ तोह अर्धराज्य की हानी
विश्वामित्र जब कीनि बिमाते * रिस करि रम्भ जरायो ताते

शुक्रसुता अरु नृप तिय ओड़ी * मद ते भइ शरमिष्ठा लौंडी
करि कन्दर्प दर्प तनु जरेऊ * जह्नु पान गङ्गाकर करेऊ
दो० प्रभुहि दुखितलखि लपणके, भयो गर्व तेहि ठाम।
बिछुरत नारि सनेह वश, जरत निवार्यो राम॥
त्याहि ते श्यामहि दोष न दीजे * जस मद किह्यो तेन फल लीजे
बोली अपर सखी चलि के अब * रहस करो मिलहैं मोहन तब
आइ सबन कीन्ही सोइ रचना * विविध भांतिके बोलै बचना
कोई कृष्ण बनी कोइ प्यारी * आदिहि ते लीला विस्तारी
लागीं प्रेम सहित जब गावन * तुरतहिं प्रकट भये मनभावन
अपर कर्म तुष्टत चिरकाला * प्रेम ते प्रकट होत ततकाला
छबि अनपार सके को गाई * लखि ब्रजबधू उठी हरषाई
काहू प्रीतम कर गहि लीन्हा * काहू बाहु कन्ध निज दीन्हा
काहू कटि पट पद उर धारे * तृप्त न हो अस वचन उचारे
महाराज तुम व्यास बनो अब * सशय चित हम प्रश्न कर सब
तीनि भांत प्राणी जग बीचा * यक उत्तम मध्यम यक नीचा
बिन सेवा जो करै सनेहू * उत्तम प्रभु कर लक्षण येहू
सेवा लाख जे प्रीति बढ़ावै * ते मध्यम की पदवी पावै
अधम अनन्य दास बिसरावै * बिन सेवा तेहि कौन चलावै
इनके लक्षण कहौ बुझाई * जेहि सुख लहैं रु सशय जाई
गूढ गिरा सुनि गोपिन केरी * कृपासिन्धु बोले हँसि हेरी
बिन सेवा जे प्रीति बढ़ावै * ते सुकृती उत्तम गति पावै
उभय इये जहँ स्वारथ जानो * तहा न धर्म सनेह पिछानो
जो सेवा लखि अरु बिन सेवा * प्रीति न करै सुनो तिन भेवा
तिन महँ जानो चारि प्रकारा * आतम राम एक निरधारा

दूसर जानहु पूरण कामा * लहैं वस्तु तथापि निष्कामा
तीसर अतिशय मूढ़ बखाना * मलअनभलजेहि परत न जाना
चतुरथ गुरुद्रोही दुख पावे * जो शठ कृत उपकार मिटावे
तुर्य सुनत गोपी मुसक्यानी * समुझि श्याम बोले मृदुबानी
अहोप्रिये तुमजस चितआन्यो * तथा मोहिं कबहू मति जान्यो
मोहि सेवक प्रिय प्राण समाना * करौं वियोग तासु हित जाना
लखत रहौं मुख सुख जबतबही * तुमते उऋण नहीं मैं कबही
तजि दुर्जन गृह बन्धन घोरा * कीन्हो आय भजन तुम मोरा
कौन वस्तु असि है ससारा * जाहि दिये होई उद्धारा
दो० यहि प्रकार के बचन सुनि, पुनि गोपी हरषाय ।
लागी सोइ लीला करन कृष्णसहितसुखपाय ॥
कीन्हीं विविध भाति ते क्रीडा * सोइ बरणत मोहि लागत व्रीडा
भै यामिनि अरधारधि करी * शिथिल भई सब भामिनि फेरी
आई भवन होत भिनुसारा * बरणा कछु है चरित अपारा
जो यह चरित सुनै तजि मोहा * लहै सो प्रेम भक्ति सदोहा
इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामस्नेहीकृतकृष्णरासलीलावर्णनोनामषष्ठोऽध्याय. ॥ ६ ॥
दो० सुमिरि शर्मासिय सन्तगुरु, गणपतिगिरासुखदानि ।
बरणौं श्री भागवत की, कथा मनोहर जानि ॥
रहसचरित सुनि कह्योनृप, श्रुतिअविहितयहबात ।
कही हरी परतिय बरी सत्यसनौ सोहतात ॥
समरथ को नहिं दोष कछु, रबि बुध गङ्ग समान ।
जिमिविषकीन्ह्यो पान हर, पचैसकत कोउ आन ॥
सो० भावबश्य भगवान, कृपासिन्धुनिष्कामचित ।

तजि कुतर्क मतिमान. सुनोचरितहरिके सुखद ॥
केहू भाति हरि पद चित लावै * श्याम धाम सो निश्चय पावै
यक दिन सुनो गोप मिलि सबो * गये रहे हर पूजन कर्यो
तहां एक आयो चलि नागा * नन्दगेह को लीलन लागा
परो शोर हरि मारो लाता * छुवन भयो विद्याधर ताता
करि दण्डवत कथानिज भाखी * गो सुरपुर उर मुनि राखी
एक दिवस मोहन व्रजबाला * करहि केलि आवा तेहि काला
शङ्खचूड़ धनपति कर दूता * रो भागा यक सखी अबूता
वधकरि हरि तेहि त्रियसो लीन्ही * दीन सुभग मन गमहि दीन्ही
यक दिन कस असुर यक प्रेग * आवा धरि वपु बिरषभ केरा
डहकत फिरत उद्यान द्वारा * पकरि सींग तुरत प्रभु मारा
पुनि केशी आवा हयरूपा * देखि डरे अज लोग कुरूपा
घर बाहर निकसे कोइ नाही * तब गिरिधर आये तेहि पाही
दो० लाग चलावन चरणदोउ, पकरिलीन्ह पगश्याम ।
त्रिहिनिकेकिशतधनुपपर, गिराजाइ जनु धाम ॥
पुनि रिसकरि धावा मुसवाई * कुन्ध दीनि निज बाह चलाई
बाढ़ी भुजा तलफि मरि गयऊ * लखि सब ग्वालन केसुखभयऊ
यकदिन श्याम सखनके सङ्गा * खेलन रहे तहा धरि अङ्गा
बालक बान व्यामासुर आवा * खेलन लाग न जाने पावा
बूझवनि शिशु यक एक उठाई * सब गिरिगुफा दुराइसि जाई
तब यदुनाथ गये जिय जानी * लरि मारा तुरत अभिमानी
सुनेसुने बध सुभटनकर काना * तबसुरोजपति अतिअकुलाना
बोला सकल सभा ते ऐसा * रिपु बध हित अब करिये कैसा
कहत भये सब मह सेपाना * लेउ बुलाय यहा दोउ आना

एहि रङ्गभूमि चलि जबहीं * मल्लयुद्ध करि मारब तबहीं
सुनि बारता भूप मन भाई * तुरत लिहिसि अक्रूर बोलाई
मधुबन जाउ तात मम कामा * लावहु बोलि कृष्ण बलरामा
धनुषयज्ञ देखन के काजा * रथी बोलावनि तुमका राजा
नगरहि साजिनिज स्यन्दनदीन्हा * करिबहु विनय बिदा पुनिकीन्हा
कृतनिक बनी नयोदशि भाग * चढि अक्रूर चले ब्रज आगा
करत विचार आजु हरि चरणा * देखिहौं जाय सकल दुखहरणा
अङ्कुश कुलिश सहित ध्वजरेखा * यावन चिन्ह शम्भु अज शेखा
प्रथम शीश सं नावब जाई * तबहि मोहिं उर लेइ लगाई
दहिने मृग बिलोकि हरषाने * कस्त मनोरथ बन नियराने
निरा निरामय निरमल नीरा * परपद ते प्रिय त्रिभुवन पीरा
कहाँ पंर रथ ते तेहि बारा * लागे लोटन धूरि मझारा
यामें परे कृष्ण पद पावन * निरखि हरे धेनु चरावन
मेटहि पातक अघ जिन जानी * उनके तर बिहरे सुखदानी
चाले न सकननसुधि न परेखी * दृगजल बहत चहत कब देखी
प्रेम प्रचारि कृष्ण बलरामा * लै गोपे आये तेहि ठामा
पंर चरण अक्रूर निहारी * उर लगाइ तब लीन बिहारी
रूप निहारि छकित भये नयना * अतिसुख दीन बोलि मृदुबयना
लाये भवन हर्ष युत लीन्हा * नन्दमहरि बड आदर कीन्हा
रंग बिछाइ सुभग बैठाये * षटरस भोजन महरि बनाये
जेवत भये बैठि सब सगा * अचै बहरि आये परनगा
बोले तब दम्पति हरषाता * गमन कवन हित कीन्ह्यो ताता
नकुचै कहत रहत नहिं राखा * पठवा भूप हमें अस भाखा
सहित गोप नन्दहि लै आयो * दधि घृत क्षीर जहाँतक पायो

पुनि धनुमख देखन के काजा * हरि हल धरहि बोलाइनि राजा
सुन अस वचन बाण सम लागे * यशुमति दीख काल जनु आगे
बालत भई विकल ह्वै बानी * हे अक्रूर भूप मख ठानी
तहा कहौ मम बालन केरा * कौन काम है जो नृप टेरा
वहा चही भुजबल निज माहीं * त्याहि ते मोसुत जैहैं नाहीं
बोले कृष्ण जाव मैं माई * धनुषयज्ञ देखौं नहिं काई
गावव बेगि बबा के साथा * असकहि निठुर भये यदुनाथा
विकल महरि बहुबचन बखाने * एकौ अङ्ग रहत नहिं जाने
व्रजपति ते बोली बिलखाई * लायो सङ्ग फेरि द्वउ भाई
यहिविधिभई सकलनिशिनाशा * कृष्ण पिता ते बचन प्रकाशा
लै दाधे दूध चलौ तुम आगे * गोपन सहित सखा सँग लागे
चले नन्द शकटन चढ़ि गोपा * बाल वृन्द पथ तक सचोपा
कछुक बार बीते द्वउ भ्राता * रथ पर गे सवार हरषाता
त्याहि क्षण शोक रहा पुर छाई * महादिशा कछु बरणि न जाई
व्रज बनितन जब सुना हवाला * धाई सब ह्वै निडर बिहाला
आइ निकट बोलीं किन जाहू * चलहु घूमि जो निजभल चाहू
मुफलकमुन इनका का कहिये * नीति विचारि मष्ट ह्वै रहिये

दो० कामदार कामी कृपण, कन्या मांगन लोय।
ये परपीर न पेखई, होनी होय सो होय॥

सुनि गोपिन के बचन बिहारी * समयसाध्य सुरमुनि हितकारी
बोले विहँसि बनजकर जोरी * एक अरज अब सुनिये मोरी
धनुषयज्ञ कबहू नहिं पेखी * जो तुम कहो तो आई देखी
सुनि सब के मन करुणा आई * आवहु देखि कहैनि अकुलाई
चले तुरत रथ हाकि बिहारी * सकल चितवती रहीं निहारी

पादप ओट होइ रथ जबहीं * एक एक ते भागे तबहीं
देखो वो हरि को रथ जाई * कमलनयन कर पट फहराई
जब नभ गरद परी नहिं देखी * फिरी सकल मन शोच विशेखी
पुनिपुनिनिरखहिंदिशिवनमाली * कह वृषभानुसुता सुनु आली

क० पीछेहिक चितवत नैन मम बारबार, पाछे न परत पग काहि मन दीजिये । पवन न भई हो पताकहू अचर नाहिं, रथ के न भई अङ्ग कैसी अब कीजिये ॥ धूरिहू न भई हरि तन लागि जाती संग, खगहू न भई जो उड़ाय दर्श लीजिये । आई तिलखान जिमि माखी मधु जात छोरि, जियो नहिं जात पै दरश आश जीजिये ॥

गोपिन की कछु बिरह बखानी * अब सुफलकथा सुनहु कहानी
कृष्णहिंलखि युवतिन आधीना * तब अक्रूर विचारहि कीन्हा
इन्हें सुन्यो हम हैं अवतारा * गोपिन के वश निपट निहारा
यहि प्रकार की संशय आनी * जानि गये प्रभु अन्तर्यामी
लागे जब अक्रूर नहाई * यमुना में निजमूर्त्ति दिखाई
जल भीतर जब डुब्बी मारी * देखि परे तहं रामबिहारी
शिर निकारि पुनि रथपर पैठे * कयों बार यही विधि देखे
भये निमग्न द्वुक कर जोरी * दिव्य दरश तहं दीख बहोरी
सेवत सुरमुनि सिद्ध विधाता * लागे विनय करन पुलकाता
नामि कृष्ण अद्वय अविनासी * व्यापक ब्रह्म सकल घटवासी
माधवत्यक्त बिरज बागीशा * श्रुतिकह सर्व पाणि पदरीशा
यहिविधिकीन्ह विनयबहुजबहीं * भये अदृश्य बहुरि हरि तबहीं
व्याकुल ह्वै आये रथ तीरा * कह हरि किह्यो रमान गभीरा

तब सुफलकसुतगहिदोउचरणा * बोले प्रभु मैं तुम्हरी शरणा
तव प्रभाव प्रथमैं नहिं जाना * तेहिते मैं अभाव मन आना
करत नाथ तुम लीला कैसे * बहुविधि स्वांग सलूका जैसे
तब प्रभु दानपतिहि समुझावा * चल आय मधुपुर नियरावा
सुफलकसुत बोले कर जोरे * प्रथमैं चलहु नाथ गृह मोरे
आउब एक दिवस तव धामा * अस कहि उतरिपरे त्यहि ठामा
सहित समाज रहे पुरवासा * तेहि दिन तहा भई निशिनासा
दो० भोर भये प्रभु नन्द ते बोले प्रेम जनाय।
मधुपुर आई देखि अब, सखन सहित दोउ भाय॥
आवहु देखि तात हरुगाई * काहू ते जनि कहो लराई
आयसु पाइ चल हरषाता * श्रीदामादि रसा सँग भ्राता
नवल नारि सम पुरी निहारी * भये मुदित नख शिख शृङ्गारी
जात रजक के कहँ * दइ हमैं बर पट पाहराई
बोला निज मुख दखो नीरा * भूप बसन तुम जानि अहीरा
सुनि बलभद्र निकट कारेडारा * पाटा निपट चि जनु अनुहारा
दरजी बायक नाम विलोकी * बसन साजि तन भयो अशोकी
आग मिला सुदामा माली * रचि पहिरायनि हार सुजाली
लीन्हिमि माग कमलपद प्रेमा * ज्ञान विशुद्ध भक्ति दृढ नेमा
आगे लखी कूबरी जाता * कसाहि खबरि लगावन गाता
कहत भये तेहि ते यदुराई * देहु हमारे खबरि लगाई
छकितभई छबिदेखि गोपालहि * निरभयखबार लगायतिभालहि
तब मोहन पग ते पग चापी * चिबुक सुकरगहि ऊपर थापी
मिटिगा तुरतहि कूबर तासू * भया दिव्य तनु विमल प्रकासू
बोली चलहु नाथ मम गेहा * रोरे योग्य भयो बपु- एहा

पूरण प्रीति देखि कर जोरे * कह्यो अपर दिन आउब तोरे
आगे चलें नगर की नारी * अवलोकहिं छवि चढ़ी अटारी
भूषण पट पहिरे विपरीता * कोइ अंग अघट कोइ अगरीता
एक एक ते प्रमुदित कहई * ये देखो यशुमति सुत अहई
इनसम सुभग न कोउ ससारा * जनि गोपी सग किहिनि विहारा
कोइ वसुदेव देवकी केरे * कहत दुराइनि यशुमति सेरे
चहुँविधि विप्रपूजी निज इच्छा * श्रवण चित्र अरु स्वप्न प्रतिच्छा
एक कहैं अब कस कुचाली * मल्लयुद्ध हित बोलेसि आली
कहं मुष्टिक चाणूर विशाला * कहं ये मृदुल नन्द के लाला
अपर कहैं बल में आनमारी * विपुल असुर इन डारे मारी
भले प्राण कसहु के हरही * आपु राज्य मथुपुर की करहीं
यहि विधि आपुस मे बतलाहीं * बरसैं सुमन जहा चलिजाहीं
कोइ लक्षण नायक के तूला * दक्षिण धृष्टसग अनुकूला
द्वादश हाव भाव कोइ करहीं * निजस्वरूप कोइ रतिमद हरही
सखा जो रसिक शिरोमणि केरे * निरखहिं तियन भाति बहुतेरे

कुं० कोइ स्वकीय परकीय कोइ, कोइ सामान्या नारि।
वय, सधि मुग्धा कोई, मध्या प्रौढ़ा चारि ॥
मध्या प्रौढ़ा चारि, कोई श्रेष्ठा अनश्रेष्ठा।
कोई ज्ञाता ज्ञात, कोई ज्येष्ठा आज्येष्ठा ॥
कोइ धीरा अधीर, लक्षिता कोइ गुप्तायन।
मुदित विदग्धा कोइ, कोइकुलटाअनुसायन ॥
कोइ उत्कास्वाधीन, वासशय्या कोइ दुखिता।
कलहन्तरिता कोइ, विप्रलब्धा कोइरुखिता ॥
कोइ खण्डिताभिसारिका, आगतपतिका होइ।

प्रोषितपतिकाधीनपति, गर्वित देखी कोइ ॥
यहिविधिलखियुवतिनकेलक्षण * आपस में बतलाइ प्रतक्षण
रङ्गभूमि आये यदुराया * शक्रधनुष गहि तोरि बहाया
मारि निकोर रहे रखवार * आये बहुरि टिके जहँ सारे
नन्द गोद लै अशन कराये * पुनि सुनिदोउ भाइन समुझाये
दो० करौ अचगरी मति इहां, निरदै नृप को गाउ ।
भले तात रघुनाथ भाषि, मुखमन औरै ठाउ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतश्रीकृष्णमथुरायागमनवर्णनो
नामसप्तमोऽध्याय ॥ ७ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं दशम स्कन्ध की, केशव कथा बखानि ॥
रजकनिपातन धनुदलन, असुर शरण बरजोर ।
सुनि जहँ तहँ रघुनाथजन, परो नगर में शोर ॥
यह सब सबरि कंस जब पाई * तबतो अधिक उठा अकुलाई
लीन्हेसि बोलि मल्ल बलभूरी * आवे तब तुम डारो चूरी
द्वार कुवलयागज ठढ़िआवा * अयुत नागबल तामें पावा
कहिसि महावत तें गोहराई * प्रविशत तें डारे चपवाई
असुर सकल बैठाय ठिकाने * आपु बैठ उत्तम मचानें
तब बोलवाइसि राम गोपालू * नन्द सहित सब आवें ग्वालू
समाचार सुन सकल सिधारे * आये रङ्गभूमि के द्वारे
बोले कृष्ण टारिये पीला * सुनि तेहि दृष्टि सामने ढीला
लागे ताहि खेलावन दोऊ * दूरिहि तें देखत सब कोऊ
कबहुं तर ऊपर चलि जावें * कबहुंक पाछे ताहि हटावें

एक बार हनि मुष्टिक मारा * गिरा भवनि करि घोर चिकारा
मस्तक विथकि हृदगत भयऊ * राम उठाइ एक रद लयऊ
रङ्गथलनि तब भये सुभेरा * जेहि जस भाव तैस तिन हेरा
मल्लन मल्ल नियन रङ्गरूपा * गोपन सज्जन गृपन नरभूपा
पितृन शिशु गोविन्द विराटा * भोजराज निज कालहि डाटा
योगिन तत्व वैष्णवन इष्टा * यामें रही भावना जिष्टा
बैठे सकल शुभासन पाई * बोला तब मुष्टिक दिग आई
हे बल कृष्ण अखाड़े आयो * भूपहि निजरूपन देखरावो
मम तव धर्म यही है लाता * भूप प्रसन्न करी सोइ बाता
बोले प्रभु जानत सब कोई * मल्लयुद्ध बिन मेर न होई
जो विचार बिन भूप कराई * अपराधी राज्य नाशी मिलिजाई
दरत तबहि महाअघ लागे * देह सुनाह नशी उठि भागे
हम बालक तुम मेरु समाना * कुश्ती केर मर्म तब जाना
पुनि गनाव गो चाणूरहि * कहि विधि लरिये मग तुम्हरि
हमें कहा भटकायन इनही * खेलन रहन पुलिन में निनही
सुनी बाच कहि कल्पाता * ठाढ़ भये तब दोनों भ्राता
हरि चाणूर भिरे भुज ठोंकी * मुष्टिक राम रिस नाकी
लागे लग्न पेंच करि नाना * लचकत कटि हरिपदमुरझाना
अति सुकुमार दलित पुरनारी * कमहि दहि अनेकन गारी
हाय कृष्ट के दया न आवत * मृग सिंहन कर युद्ध कलावत
सभा मध्य ऐसो कहु नाहीं * मनुष्यायें कसहि छुटि जाहीं
इतने माहि कृष्ण चाणूरहि * पटकि दीन महि मरा हजूरहि
देखि राम मुष्टिकहि पछारा * शल तोशल तब भये तयारा
पटकिनि तुरत लिन्ह तेहि लागे * अपर मल्ल सब देखत भागे

बोला कस निगरि भय पाई * कन्हु नगर बाहेर दाउ भाई
दो० नन्दसंग जे गोप है, लूटि लेउ तुम झारि।
उग्रसेन बसुदेव को, अबही डारो मारि॥
गुनन कृष्ण ढिग पहुचे जाई * पकरि शिखा महि दीन गिराई
काढे प्राण घसीट घसीटी * डारे सकल निशाचर पीटी
लखि सुर हर्षि सुमन बरषाये * कहिलावन यमुनातट ल्याये
तहँ विश्राम कीन मन भावा * सोइ विश्रामघाट कहवावा
पुनि पुर आइ पिता अरु माता * छोरि बन्दि ते अति सनमाना
आपु आपु को धूगना दीन्हो * मात पिता की सेवा कीन्हो
सुनि बसुदेव दवकी हरषे * गोद लगाइ सकलमुख करषे
दीन्हो उग्रै राज बहारी * तब यदुपति बोले कर जोरी
कीजै राज्य कृपाकरि आपा * हमरे है ययाति को शापा
तरुण अवस्था पिताह न दयऊ * तोहने यदुकुल महिनिन भयऊ
कीजै तुम निधरक सुखभागी * मैं लेहौं सब काम सँभारी
बहुरि नन्द ते बोले आई * ग्वालन सहित आपु ब्रज जाई
हम कछुदिन रहिके यहि ग्रामा * आवब चले तुम्हारे धामा
निजसुत सरिस हमै तुम पाला * तेहिते नहिं बिसरब तिहुँकाला
जननी ते कहियो परनामा * बिसरिजाइ जनि गिरिधररामा
हम तिनको बहुभाति खिझावा * उनके कबहु अभाव न आवा
गोपिन ते कहियो कुशलाता * कछु दिनमें ऐहैं दोउ भ्राता
सुनि असबचन नन्द दुखपावा * ठगिसे रहे बचन नहिं आवा
श्रीदामा बोल्यो तब बानी * कृष्ण कहा तब बुद्धि हेरानी
अपने मात पिता को त्यागी * परघर रहिहो रोटिन लागी
कौन वस्तु कमती घर तेरे * जो नौकरी करो नृप केरे

धरवैहौं निज पितुकर नामा * तेहि ते चलौ आपने धामा
भल कीन्हो जो कंस मारेउ * उग्रसेन कर काज निचारेउ
राज्य पराई देखि लोभान्यो * यही एक अनरथ मन आन्यो
जो सुख है हमरे ब्रज माहीं * सो सुख तीनिलोक मे नाहीं
तन धन जाइ जाउ बरु प्राना * तबहू है परवश नहिं रहना
चाले कृष्ण तात तुम भाखी * सोइ सत्य हम हिरदे राखी
पर यह राज्य न है पर केरी * सब प्रकार तुम जान्यो मेरी
आगे चलहु सकल तुम याहे * राहित गोप हम अ.वत पाछे
सुनत गोप व्याकुल भे कैसे * गरमणिहीनि फणिककी जैसे
यद्यपि घट पट बहु पहिराये * तदपि विरहवश एक न भाये
तब प्रभु करि उच्चाटन दीन्हे * चले सकल मन आनँद कीन्हे
आये जब वृन्दावन माहीं * यशुमति दीख कान्ह बल नाहीं
लागी करन विलाप घनेरा * नन्द कह्यो कछु जोर न मेरा
जो जो यदुपति कहा सो गावा * तदपि न मनमे धीरज आवा

दो० यहा कृष्ण बलराम कहँ, यदुपति दीन जनेउ ।
पुनि पठये दोउ पढ़नको, पुर्यवन्तिका मेउ ॥

आये चलि सदीपन गेहा * लगे पढ़ावन महित सनेहा
प्रथम वेद विधि कीन विचारी * पुनि पढ़ाय विद्या दशचारी
कुं० ब्रह्मज्ञान यक जानिये, उभय रसायन कूर्य ।
तीसर स्वर धारण निपुण, वेदपाठ है तूर्य ॥
वेदपाठ है तूर्य, पञ्च ज्योतिष पहिचानौ ।
छठी कहत व्याकरण, धनुषविधि सप्तम जानौ ॥
जानो वसु जलतरण, नवम वैराक दिशि कूपिपर ।
रुद्र कोक रकि वाजि, चढ़न तेरही जु नृत्यकर ॥

बोध चतुरई चतुरदश, विद्या पाय अशर्म।
पढ़ी कृष्ण रघुनाथ अब, कहत कलाविधि ब्रह्म॥

चामरछन्द॥

वाद्य गीत नृत्य नाट्य लेख बज्र बेधनं।
तन्दुला मेपालि रङ्ग कार्यपर्पिक धन॥
पुष्प तल्प गन्ध कल्प दन्तचपल राग जू।
दाम धर्णि सेज कर्णि बारि वाद्य बाग जू॥
नीर घात चित्र जात माल इन्द्रजाल जू।
पट्ट पानि भूषणानि ग्रन्थ कीट भाल जू॥
पाककार कौचुमार बीन वेणु योग जू।
कर्ण बेधनी श्रृंगार पानरस प्रयोग जू॥
सूचिकर्म धातुमर्म सूत्र कीड नोलि जू।
वाकवक्ष कवललक्ष दुष्ट वंचि कालि जू॥
ग्रन्थपाठ छिन्नकाठ नृत्यज्ञान नायकं।
काव्य पूरकं नेवार रज्जु रीति नायक॥
तर्क रीति वास्तु प्रीति स्वर्णकार कार जू।
रङ्ग ज्ञान वृक्षवान मेख मुर्ग मार जू॥
कीर शालिका प्रलाप शत्रुधी उचाटनं।
केशमार्जन मकर्ष मुष्टि वस्तु डाटन॥
देख भाषिनी मलेच्छ फूल सदनानि को।
यन्त्र मन्त्र का विरोध मानसी पिछानि को॥
पिङ्गला विधान को शशोस कार्यसाधनं।
छल उपाय रक्षकाय जयद देवरायनं॥
द्यूत खेल बाल खेल और घेर तोपन।

वामदादि कृतविचार सर्वसार फोमन ॥
चौंसठे कला कहो मुनीश आदि मास जू ।
सो लिखी विश्राम सिन्धु मध्य देवदास जू ॥

चौंसठि दिनमें विद्या लागी * पढ़त भये श्रीकृष्ण मुरारी
विद्यानिधि विद्या अभिलाषी * सम्प्रदाय की सेवा राखी
विद्या लेत बोले हरि बेटा * गुरुदक्षिणा मांगि प्रभु लेहु
कहत भई तब गुरुतिय बानी * पुत्र हमार दीजिये आनी
बूड़यो मुनि सागर में गयऊ * पंचजन्य कह मारत भयऊ
मिला न तब कीन्हो पछितावा * चले बहुरि यमपुर में पावा
दीन आठ सौ बालक श्यामा * लहि अशीश आये निजधामा
भक्तवसल त्रिभुवनद्योतदीपति * सब उर अन्तर्यामी श्रीपति
एक दिवस कुविजाके गयऊ * अति अद्भुत गृह देखत भयऊ
विविध वस्तु संयुक्त सोहावन * धूप दीप मणिटन मनभावन
चन्दनमन उपधान विशाला * पानदान पुनि विपुल मसाला
श्यामहि देख उठी हरषाई * सात्वनसहित उठि सेजहि लाई
आपु सुतनु पट भूषण साजेके * तन्तखड़ी पांडशाविधि भजिके
प्रथम समागम समुझि लजानी * अपर अली गहि प्रभुपइँ आनी
प्रतिदिन करितेहिनँग भगवाना * रमे कृपा करि कृपानिधाना
कोक कला कर मरम विहारी * काम अपनि ताकेर निवारी
पुनि प्रसन्न ह्वै वचन उचारे * रमो कछुक दिन संग हमारे
प्रभु प्रेमाशिक रूप न गुनके * वचन विचारि प्रीतियुत उनके
एवमस्तु कहि निज गृह आये * उद्धव सहित तम्र गुण गाये
शूर्पणखा रामहि लखि मोही * काम सहित कुबरी भइ सोही
कौनेउँ भाव प्रभुहि जो ध्याये * लहै सही फल मृषा न जावै

दो० जो कछु लीला जगत में, सो सब रघुपति केरि ।
कला अंश कहुँ स्वयंवपु, धारिकरत हिय हेरि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतकृष्णखण्डकुबरीगृहआगमनो
नामअष्टमोऽध्याय ॥ ८ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणपतिगिरासुखदानि ।
भँवरगीत हरिमीत मत, शुकृतकहतबखानि॥

हे नृप जानि यदुन में श्रेष्ठा * सखा श्याम को भाग्य बरेष्ठा
शिष्य बृहस्पतिको बड ज्ञानी * कृपासिन्धु ब्रजकी सुधि आनी
तिन उद्धव कह लीन बोलाई * ज्ञान मान सोवन मन आई
बोले तात जाहु ब्रजमाहीं * लावहु खबरि मिली सुधि नाहीं
नन्द बबाके गहियो पाऊ * बिसरि जाइ जनि हमरो नाऊ
पालागन मैया ते कहियो * कृपा करत बलकन पर रहियो
गोपिन ते सुठि योग सदेशू * बरण्यो तुम तजि सकल अंदेशू
जो वै कहैं बचन सुनि सहवी * करि बिबाद पुनि जरी न दहवी
चरणपरसि चढ़ि रथहि सिधाये * ब्रजरबि अस्तसमय चलि आये
रज मण्डित पुर सुरभिन पाछे * नृप डोलत खग बोलत आछे
राम कृष्ण गुण गाव पुरजन * ध्रुप दीप कार पूरित लखिबन
प्रमुदित ह्वै प्रविशे पुरमाहीं * खबरि पाइ निज पुत्रन पाहीं
पुर नर नारि परम सुख माना * राम कृष्ण अच्युत हैं जाना
वैसे स्यन्दन वृषभ बिशाला * वैसे मुकुट पीतपट माला
निकट जाइ उद्धव को चीन्हा * हरण शोक मनमें तब कीन्हा
नन्द पैंवरि पहुँचे सुनि जबहीं * निकसि महरि आई ढग तबहीं
श्याम सखा लखि चरण पखारे * सुन्दर अष्टशिला बैठारे

मुदित बनाय अशन करवाये * अँचवन करि जब सेजहि लाये
तब यशुमति बोली जल डारी * हे नीके बल कुञ्जविहारी
पालि पोषि हम कीन्ह बहुरे * बाजत पुत्र देवकी केरे
जबते गये सुधिहु नहि लीन्हीं * धाइउ के नाते तजि दीन्हीं
लीन्हें छीनि प्राण बसुदेऊ * तब ते तात न आने केऊ
हमहीं जाइ तासु घर रहतीं * दासी ह्वै सुख देखन चहतीं
बैरी भये कुटुम्बी मेरे * जान न दीन्हेनि निरखि निबेरे
शूल होत नवनीत निहारी * मोहन के मुख योग बिचारी
प्राते खात रहे दधि रोटी * को अब देत होइगो ओटी
कीन्हे चरित लाल मन जोई * सुमिरि सुमिरि अब आवत रोई
निशि न नींद दिनलगत न भूखा * हन्त बदन ब्रजपति कर रूखा
गौ न खवैं पय तृण नहिं चरहीं * बछरनसहित सकल हुकरहीं
बालक तरुण जरठ सब लागा * भये क्षीण तनु श्यामबियोगा
हम आपनि किमि दशा बखानी * दीन्हीं काढि नयन निजपानी
ऐसे दुख देने को रहेऊ * तो कत दावा ते निरबहेऊ
इन्द्र कोप ते नाहक राखा * गिरिहि छाडदेते करि माखा
कठिन शोक निशि बासरकेरा * दीन लाल करि मधुपुर डेरा
जीवत सकल दरश के लागे * पुनि कबहू देखब हरि आगे
कह्यो तात कब ऐहैं भैया * कब मोहिं गाहरैहैं करि मैया
कब गहिहैं दधिमथत मथानी * कब मांगिहैं माखन हठटानी
एक दिवस मैं रिसवश बाधा * सो सुधिकार दुखहान अगाधा
कह्यो जाइ आवैं घर अपने * अब कबहू नहिं बाधब सपने
माखन खात न बरजब रोमी * उरहन देन न सुनब पगेसी
जलसुतारिजापति कर जोरा * तासु मानु सग पठवब नोरा

मैं जानत सुख तिन्हें न होई * हाठ राखन हूहैं सब कोई
काह करौं परवश मैं ताता * कहु कहुँ गुणहुँ होत दुखदाता
शुकसारिक जो पढ़त नाहीं * तौ कत परत पाजर माहीं
शब्द बेध शर जो न चलोने * अन्धशाप कत दशरथ पोते
रविशाश जो नहिं करत प्रकाशा * तौ सतत कत फिरत अकाशा
जो न होत रघुपति क दाया * तो बन दुख कत सहत निकाया
जो न लाल को आवत जान्यो * तब दवै ते वचन बखान्यो
जो रखनी हौ हम पर नेहू * तो सुत पठइ हमारे देहू
जा कोइ काटिन लाड़ लड़ावै * तदपि लाल हमते सचु पावै
तुम्हरे पुत्र सही सुनु माई * एकबार मुख जाइँ देखाई
याहीविधि बचन कहत बहुभाये * तेहि क्षण नन्द खारक ते आये
भेंट उठि उद्धव पुलकाई * लीहें निज आसन बैठाई
लागे बूझन कुशल सप्राके * हैं वसुदेव देवकी नीके
नीके रहत कृष्ण बलरामा * कछुआगमनकहिनि निजधामा
तोतल बचन बालि सुखलागी * बड़ेभये सुख दीन्हिनि त्यागी
हमहू ते कछु बना न जाना * जगतपिता बालक करिमाना
कोमल चरण खरक अधिकाई * तहँ उनते हम गो चरवाई
उन बाहू मैं करेउ न रोषा * गुणगहि लुखमाछिपाये दोषा
हरि की बात हरी ते बनई * थोरेहि में जरि उठले मनई
दो० नामलेइ जेहि यवतिको नहिं सुहाइ सुनि तासु ॥
रामजानकी के कहे, तुष्टन तेहि पर आसु ॥
याहीविधि नन्द करत पछितावा * तब उद्धव यम वचन सुनावा
अहो नन्द यशुमति तुम दोऊ * शील सुकृत की मूरति होऊ
क्योंकि राम कृष्ण भगवाना * प्रणतपाल दुष्टन के हन्ता

जिनके चरणकमल चित लाया * याहतेआधक न कछु श्रुतिगायो
हारिह आपु सुमिरत हौ जैसे * तन मन धन वारण करि तैसे
तुम ते तात न बाहर वोऊ * बेचो जहा बिकैं तहँ दोऊ
जब तब बात तुम्हारी गावैं * कहत कहत गदगद ह्वै जावैं
चलत कहिनि पालागन बाता * उऋण न हम तुमत पितु माता
प्रतिपालन तुम कीन हमारा * होइहै युगयुग सुयश तुम्हारा
देखौ त्रिभुवन पति गिरिधारी * चाहत करुणादृष्टि तुम्हारी
बातन हाः बोध वेहि भाती * जाको रहै सकल सुखजाती
हरिगुण कहन भई निशिनासा * बोले द्विज अलिलीन सुवासा
दीप जोरि गृह गोप लुगाई * लगा मथन दधि हरिगुण गाई
दो० तब उद्धव वृषभानु पुर, चले रजायसु पाइ।
मारगमें अवलोकि रथ, मिलीं गोपिका आइ॥
गिरिधर की अनुहार निहारी * बोलीं तब गोपन की बारी
आप गवन इत कितने काहों * जानि परत मोहन सुधि लीन्हों
बोले तब उद्धव हम आये * मधुपुर ते व्रजनाथ पठाये
परम मित्र हैं कृष्ण हमारे * हम हैं उनके बहुत पियारे
सुनि सब बैठि गई तेहि ठौरा * बोलीं कहो कान्ह कर ब्यौरा
उद्धव नन्दनन्दन हैं नीके * हम सबहिन के जीवन जीके
कब अइहैं कछु कहिनि बखानी * शोभा शील गुणन की खानी
गिरि अरि सुत रिपु पुरी बिताई * अजहु नहिं आये सुखदाई
उद्धव हम सब श्याम बिहीना * बिकलरहतजामि जलबिनमीना
निशि न नींददिन अशन न भावै * नयन पलकसम कलप बितावै
हरि बिन सेज भगानक लागी * कारागार सरिस गृह जागी
शीतल मन्द सुगन्धित वाई * लागत मनहुं अग्नि ते आई

बिरहअग्नि सब अङ्ग जरावत * जरि न जात लोचनजलनावत
हम ते श्याम करी है ऐसे * बधिक करैं पक्षिन ते जैसे
प्रथम प्रीति आपही जोरी * पाछे नाव माझसरि बोरी
तुम उद्धव आये भल कीन्हों * हम सबका अवलम्बन दीन्हों
सुनियत रहै सन्त परमारथ * करतरहत सोइ दीख यथारथ

दो० सजन स्वारथी नरन की, स्वारथही तक प्रीति।
खगमृगजार असारलखि, तजतसुथलसिखिरीति॥
बहुरङ्गी जित तितहि सुख, यक अङ्गीकर अन्त।
जिमिगणिकानिधरकरहत, दहतसती बिनकन्त॥

तिमि उद्धव हरि हम को जानैं * श्याम चहै मानैं नहिं मानैं
सुनि उद्धव गोपिन की बानी * योग सदेश न सकत बखानी
सुफलक सुतै परी कठिनाई * उत आज्ञा इत प्रेम अघाई
धरि धीरज पुनि काढ़ी पाती * बोले बाचि जुड़ावो छाती
हम ते नाहिन बनी बनाई * चितवन गली छुवतजरिजाई
आपु कृपाकरि बाचि सुनावो * श्याममुखामृत वचन सुनावो
सुनि उद्धव तब बाचन लागे * लागीं सुनन बैठि सब आगे
गोपी सकल सुनौ मम बचना * भूलहु मानि माया की रचना
जो कुछ गो गोचर में आवै * मायाकृत सो थिर न रहावै
छाड़ि देहु तेहि ते असनाई * निरगुण ब्रह्म जपहु मनलाई
पूरण है सब घट में सोई * कौनसे ठौर जहा नहिं होई
पाच पचीस तीन घट तेरे * पृथक रहत पुनि बिमलबसेरे
सो हम तुम तुमसे अरु मोसे * क्षणहूमात्र बियोग न होसे
आत्म आत्म से हम प्रकटावै * पालन करि पुनि नाश करावै
रचत सकल निज माया जाते * कार्य अन्त पुनि कारण ताते

कारज तजि कारण मनलावो * जेहि ते सकल परमपद पावो
निरमल नीर भरा नद नेरे * मरत पियास न तेहि बिनहेरे
तजि कुसंग एकान्त पर्मजे * द्वादश सयम नियम करीजे
सूक्ष्म भोजन स्वल्प पियासा * करहु त्यागिबसु भोग बिलासा
पद्मासननिरमल करि मनका * सोधन रहो सदा निजतनका
पूरक कुम्भक रेचक करहू * उलटि ध्यान त्रिकुटीको धरहू
सोह शब्द माहि चित राखो * मन ते सकल कामना नाखो
दशप्रकार अनहद सुनि पावो * कौतुक विविध देखि अकिलावो
यहि विधि योग ज्ञान जब गावा * तब गोपिन अरिको दुखपावा

दो० यथा वैद औषध करै, बिन पहिचाने रोग।
सो औषध लागै नहीं, उलटि बढै तेहि शोग॥
तेहि अवसरइकमधुपतहं, आयो करि गुञ्जार।
बैठि गयो राधिका के, चरणकमल लखिसार॥

तब सब गोपी मधुपर टारी * लगी कहन उद्धव ते सारी
मधुकर तुम पगते उडिजाहू * श्याम शरीर निठुर सब आहू
पहुँचत तहा फूल जहँ फूले * सूखी लतन जात नहिं भूले
रूप रहति सब निग्धिर करी * हे रोरे मे गुप्त न हेरी
आई बकी पियावन छीरा * डारिनि ताहि मारि बलबीरा
शूर्पणखा रघुपति पह आई * नाकान तेहि लिहिनि कटाई
बलि बावनहिं सुमर्बसु दीन्हा * तबहु तासु तनुबन्धन कीन्हा
व्याहुकिहिनि हरि हरका गासी * पुनिआपुहि मिलि ठानिनिहासी
कोयल सुतहि काग प्रतिपाले * ऋतुबसन्त तेहि तजि उडिचाले
उरगै दूध प्रीति ते प्यावै * उलटि अमी सो बिष ह्वैजावै
केचुलित्यागिनसुधिफिरिलीन्ही * तैसे श्याम हमै तजि दीन्हीं

यामें भूल न उन की भारी * कारेन की करनी है कारी
परकट जिन कीन्हे युग ताता * क्यों न कहैं यहि विधिकी वाता
तथा तुमहु कछु अघटित नाहीं * रूप छुड़ाइ गहावत छाहीं
उद्धव श्यामाहैं लाज न आवत * तेहिपर सुनियत दक्ष कहावत
हमका ज्ञानयोग लाख भेजा * आपु रहत कुबरी की सेजा
जिमि गणिका निज कसवै टानै * औरन तें बैराग बखानै
तेहि के वचन कहौ को माने * तैसे श्याम देत हैं ज्ञाने
यक तौ अन्धकूप मे डारी * हेरत पन्थ न पग्त निहारी
तेहिपर तुम निज ज्ञान सुनावा * मानहु मुख ऊपर ते तावा
उद्धव तुम हौ चतुर सुज्ञानी * देशकाल लखि कहिये बानी
जाके मलै अनल समतावै * तेहिके कहा गरल लगवावै
हम बनितन को चाहिय भोगा * तिनका आय सिखावन योगा
धरत मरालन सुन शिर मेरू * जिन ते चलै न पगभरि सेरू
उद्धव कछु तुम्हरी न लगाई * सङ्गति केर दोष लगिजाई
रस लम्पट गिरिधर न लबारा * क्यों न होउ तिनसगखुबारा

कुं० लम्पट की सगति किहे, द्वादश गुण नशि जात।
प्रथमसत्यपुनिस्वच्छता, अरु सयम की बात॥
अरु संयमकी बात मानव्रत माया जानौ।
शम दम दया सुबुद्धि, सहन शीलता पिछानौ॥
प्रभुता यश नाहिं रहत, बसत हिरदयमहँ कम्पट।
कपिल वचन बुध जान, करत नहि संगति लम्पट॥

दो० जो कहो ऐसे पुरुष ते, क्यो तुम कीन्हों प्रीति।
कर्म लिखा तेहि काकरै, जरै शलभ की रीति॥
प्रेमिहिं मरन न लखिपरै, करै हरषि तनु अर्प।

जिमि गजकुरंगपतङ्गअलि झष पिकपरिवासर्प ॥
मिलहि चैन न मित्र बिन, कैसो करै विगार ।
जिमि गृह जारै अग्नि पुनि, होत अग्निको प्यार ॥
बोली अरु सखी सनलेहू * नाहक दोष श्यामकर देहू
उन मे कछु लम्पटता नाहा * प्रीति पाय परवश ह्वै जाहीं
तदपि रहन निरागम विशेखा * पथ लहि यमुनामे तुम देखा
जा कहो अवका प्रीत न हमनें * रहन न कोउ इकरस हरदममें
जो कोउ है प्रभुता आगानें * ते परवेदन सुनै न जानें
देखो शीश धर महि कारी * सोये तोहपर जाय मुरारी
अब नैननन्द भये महराजा * जा कछु करै उन्हे सब छाजा
दिन प्रतिपालकमरिम सोहावन * बला अपर सखा यहि भावन
प्रभुता को कछु लाग न होई * चेरी सग गई मांन खोई
कैसा चतुर हाय किन कोउ * नीचसग करि विगरत सोऊ
परम प्रवाण केकयी रानी * चार सङ्ग ते मांन बौरानी
गृह जल गदपद पवन समाना * पाइ कुयाग न को विनशाना
उद्धव ब्रह्म सब तुम कहेऊ * अयहीं भयो कि आगेहु रहऊ
कुं० ऊधो जब जब पापते, उठति धरणि अकुलाइ ।
तबतबक्योंसुरमुनिसकल, हरिहि पुकारत जाइ ॥
हरिहि पुकारत जाइ, आप किन धरिधरि रूपा ।
हरैं विश्व को भार, होई जो ब्रह्मस्वरूपा ॥
तेहि ते बाद विवाद, त्यागि कहिये पथसूधे ।
बिन प्रभ सेवक भाव, तरयो भवनिधि को ऊधो ॥
माया बाद मदान्धकरि, भूषित भो जेहि ज्ञान ।
सोहं अस्मि ब्रह्म सो, पुनि पुनि करत बखान ॥

पुनि पुनि करत बखान, कुत्र ऐश्वर्य मतीते ।
कुत बिभुता कुत भूमि, कत्र सरवश गतीते ॥
तेहि ते ब्रह्म न जीव, अहौ तुम सुखबशकाया ।
बुन्द कहै मैं सिन्धु होइ, किमि बिन हरिमाया ॥
दो० जो कहौ पृथ्वी ब्रह्मसम, घटसम जीव अनेक ।
ताहि लखौ वा ना लखौ, अन्त होब सब एक ॥
एक भयो तो क्या भयो, पुनि नहि गदीकुखाल ।
तेहिते मायाबाद तजि, भजो नन्द को लाल ॥
उद्धव तस्कर कयद में, परो कहै हौं भूप ।
तौ का छूटै करम बश, त्यों तुम ब्रह्मस्वरूप ॥
ईश्वर आप स्वतन्त्र है, जित चाहै तित जाइ ।
सर्वशक्ति जाके विषे, भाव सरिस दरशाइ ॥
सोह सोह जपत हैं, जहँतक अगजग जीव ।
राम कृष्ण सुमिरे बिना, लहै न कोई पीव ॥
उद्धव तुम्हरी बात इमि, जिमि रोगी हितमाद ।
जो जेवत हैं सेर भरि, सो किमि होवै चाद ॥
कर्मयोग तब तक करै, जब तक प्रेम न होइ ।
प्रेम पाठ पढि क्यों पढ़ै, कक्का किक्की सोइ ॥
उद्धव तुम्हरी बात सुनि, भयो न हमरे रोष ।
अपनोइ खोटो दाम तौ, परखैये का दोष ॥
बोलो अपर सुना हम ऐसा * कहत श्याम है ब्रज धो कैसा
गोपिनको सुनि नाम लजाहीं * चितवनु लाजि सकुचत आहीं
भूलि गई माखन की चोरी * खात रहैं घर सकल ढिठोरी
जो यह बात रहै मनमाहीं * तौ कत निहिनि रहस हमपाहीं

प्रथम ज्ञान विराग सिखावत * जिहि ते कछु मनहू मे आवत
जब हम रंगी श्याम के रङ्गा * तब लिखि पठवा ज्ञानप्रसङ्गा
मधुकर को तजि सुरसरिवारी * कूप खोद जल पीवै खारी
जो तजि आक दुहे को बोरा * को तजि पारस मांगे कोरा
को तजि श्यामसगुणमणिचारू * खनन फिर कलि अगुणपहारू
रूप रेख कछु जाके नाहीं * तो का करब शून्यके माहीं
अगुण सगुण युग ब्रह्मकहावत * सो तेहि भजन जाहि जो भावत
दो० यथा विरोचन कुमुद दोउ, है विराट के नैन।
काहुहू भावत दिवसपति, काहुहू शशिमे चैन॥
तेहि प्रकार हम श्याम उपासी * है सबही विधि उनकी दासी
मुक्ति भुक्ति हमको नहि चहिये * प्रेम भक्ति किरपा करि कहिये
जो कछु ज्ञान कहे बिन नाहीं * तो चलि जाउ बनारस माहीं
हमरे तो मन एक रहावा * गयउ श्यामसंग बहुरि न आवा
को अब अगुण ईश अवराधै * को एकान्त मे आसन साधै
तलफत दृग बिनलखे किशोरा * को चितवै भृकुटी की ओरा
जरत रहत निशि बासर अङ्गा * कीन्हे बिन गिरिधरण प्रसङ्गा
तुम जो कहत हरि हिरदयमाहीं * शीतल हमै करत कत नाहीं
ब्रह्म अंश कैसे है कान्हा * मातै भुवन उदर मे नान्हा
मुख पसारि दिखरावत भयऊ * तबका ब्रह्म पृथक रहिगयऊ
कारण ते कारज है नीका * यथा कन्द ते दर रस फीका
कारण अगर रहत है सगा * कारज अतर विकल सो महँगा
तुमहीं कारण मे मन लागो * हमै श्याम मे प्रीति दृढावो
जो हरि तजि परिघासहिचन्हा * तो हमहू जप योगहि करहीं
दाग़हि हस मीन तजि मोती * तो हमहू सब प्यारे ज्योती

जो रणशूर तेग तजि दैहैं * तौ हमहू तुम्हरा मत लैहैं
अडल विहँग महि बैठैं हारी * तौ हमहू निर्गुण मत धारी
जो चातक सर कर जल पावैं * तौ हम ब्रह्मश्याम तजि ध्यावैं
पशु पक्षी निज टकहि न रहीं * हम मानुष कैसे परिहरहीं
ऊधा तुम विरही हौ नाहीं * नहीं दास नहिं मित्रन माहीं
विरही मीन जलहि अनुरागे * बिछुरत प्रीतम के तनु त्यागे
दास भाव पपिहा मे जाना * बिन स्वाती जल करै न पाना
गरजि तरजि रवि डारत मेहा * तदपि बढ़त दिनप्रति नवनेहा
मित्र कमल बिन लखे तमारी * तुरत जात है सम्पुट मारी
मधुकर हम चातक सम अहईं * बिना श्याम हम और न चहईं
यातन को विधि फेरि न दीजै * तबहू मोहन मोहन लावै
जो त्वच काढ़ दुदुभी साजै * सोऊ लाल लाल कहि बाजै
गाड़ि देइ मृतिका है जामैं * बिरछ फूल फल उचरै नामैं
मुये अङ्ग की है यह रीता * जीवत किमि छूटत है प्रीती
बाला अपर भली विधि हेरै * कांठन लोग हैं मधुपुर केरे
जिनकी सगात पारे नदलाला * सीखत भयो योग कर हाला
हमहू को आय बहकावन * फूकन चहत सुमेरु उड़ावन
मधुकर आपन योग दुरावा * हम पूछ सो बगण सुनावो
ब्रजमें कब एहैं बनवारी * कब हरिहैं चूनरी हमारी
कब दधिदान मागहैं रोकी * हमहू अब हठ करब न कोकी
करि हैं रहस केलि अब आई * खैहैं माखन कबै चुराई
कब बजाय मुरली मन मोहैं * कब दुरिकै हमरे घर सोहैं
जेहि सुखहितहम भइनकर्नोड़ी * सो सुख अब लूटति है लौंड़ी
कीन्हासे कौन तपस्या भारी * ज्याहते पाइस पति गिरिधारी

कब अब सुनब हमारे लागी * दीन्हों श्याम कुबरी त्यागी
कहिया मधुप श्याम ते जाई * कहा गई ब्रज की चतुराई
किहे सनेह सयानप दुक्खा * रहत न सुगनि सयानप सुक्खा
हम युवतिन कहँ लिखनविरागा * आप पर चेरी के रागा
अपना गुरू भय सयोगी * कहि प्रकार हम होई योगी
जो गुरुही निज मर्म न चीन्हा * तिनशिष्यनको कब सुख दीन्हा
जो गुरु कुटुंबजाल में बांधे * तौ शिष्यके किमि काटि फांदे
जो गुरु काम क्रोध में जरई * तौ शिष्यको कब शीतल करई
जो गुरु है तृष्णावश लोभी * सो शिष्यकोकिमि करै अछोभी
जो गुरु है पाथर की नावा * सो शिष्यको कब पार न पावा
जो गुरु को कछु पढ़ि नहिं आवै * तौ शिष्यको केहि भांति पढ़ावै
त्यहि ते आपु दशापर आवै * तब हमको लखि योग पठावै
ज्यहि ते कछु लागै उपदेशा * करहि सकल योगी कर भेशा
जो जल जरन आपही लागे * तौ तजि मीन कहा को भागे
लाख गोपिन को प्रेम प्रमाना * बिसारे गयो उद्धव को ज्ञाना
करत भयो गुरु गोपिन केहा * पढ़ाइन इक अनन्य मन तेहां
रहे मास षट तिन के पासा * दरवन डालैं कृष्ण विलासा
भै मधुबन की प्रीति बहोरी * बोल गोपिन ते कर जोरी
तुम सब अहौ प्रेम की खानी * क्याहेविधि हम उनकर्म बखानी
चातक मीन चकोर मृगाऊ * चारण किहिनि तुम्हार स्वभाऊ
हम ते जब तब प्रीति तुम्हारी * वर्णत रहै मुदित बनवारी
उद्धव हम तनु कोटि बनाई * करैं गोपिकन की सेवकाई
तबहूं कछु उद्धार न मानी * ऐसी मम सेवा उन ठानी
ज्ञानके मिसि तिन मोहिं पठावा * कौन तजि हरिरूपहि पावा

अब करि कृपा देहु वर एहू * बढ़ै कृष्णपद नित नव नेहू
तरु पशु बिटप लता तनुपाई * जन्म जन्म ब्रज बसिये आई
तुम्हरे चरण कमल की धूरी * प्रापत होइ भाग ते भूरी
दो० जो मैं कीन्ही ढीठता, हरि को आयसु मानि।
करेहु क्षमा अपराध सो, अनुग आपनो जानि॥
उद्धव तुम जानत सुखदायक * हम हैं कौन बड़ाई लायक
लोक वेद तजि करनव टाना * त्यहिते निन्दत सकल जहाना
तुमहीं तात सराहन योगा * क्षमावन्त सबभाति बिशोगा
हम अहीर बहुभातिन केरे * कहे कठोर बचन बहुतेरे
तुम्हरे माय न तनकहु आवा * धन्य धन्य जननी जिन जावा
उद्धव कृपा श्याम की चाहीं * निकटहु दरि उभय भल आहीं
दो० बनबरही वारिद वियत, लक्षान्तर रविपथ।
विलखकुमुदशशिसुखलहत, लखिसनेहनिजसथ॥
बिन सनेह उपजरि बिशेरी * युग अगुल श्रुति परत न देखी
चिरजीव रहे दोउ भाई * मधुपुर कगहिं राजसुख पाई
उद्धव हमरे दोउकर लाहू * मिलतो अनिभलहरितजिआहू
जो न मिलव तबहू भलजानो * भयो सुयश तिहुँलोक पिछानो
कह हम जाति वरण कुल हीना * श्रुतिमर्याद सोउ तजि दीना
कहे हरि श्रीपतिपालक सगरे * सो सबविधि कहवावत हमरे
इत उत फिरि फिरि ब्रजहाभावे * जिमि परिवा चतुर्थीपर आवे
सत्यवचन तव झूठ न आहीं * हरि निजजन वश सदा रहाहीं
यह उद्धव अब आज्ञा दीजे * तौ हम गमन मधुपुरी कीजे
तीनि दिवसपर आयसु भयऊ * त्यहि के भीति मास षट गयऊ
हमरी सुधि न बिसारब देवी * सब विधि जानि आपनो सेवी

बिछुरन विरह सबन के जागा * कीन्हेनि विदा सहित अनुरागा।
रथ चढ़ि चलि निजआश्रमआये * समाचार यदुनन्दन पाये
पठवन भये दूत यदुनाथा * आये भवन तुरत त्यहिसाथा
भेटे श्याम सबै मन लाई * बूझत में ब्रजकी कुशलाई
सुनि उद्धव सब बात प्रकासी * तुम बिन दुखितरहत ब्रजवासी
एक दिन आनो दरश दिखाई * सुनत बचन बोले यदुराई

गीतिकाछन्द ॥

यदुनाथ बोले सुनहु उद्धव घोटा वासी जे अहैं।
तिन पास मैं निन रहत हौं वे नेकु न्यारे ना रहैं॥
मम श्वास वेदन की अटा हैं गोपिकन के दुख कहा।
सुनि हैं जे कहि हैं चरित तिन के नाशि हैं सकट महा॥
जो कहौ रहत वियोग क्यहि हित सुनहु सोउ निकामहू।
एक दिन गयो एक सखीघरहौं द्वाररोखिसि दामहूं॥
तहँ आइ प्यारी चहत प्रविशो सखा रोकत रिसटहैं।
मोहिं मिलहिं हरि शतवर्ष तोहिं त्यहुँ कही सोइ सोई भई॥
सो० यद्यपि हौं निन तीर, तदपि न देखत शापवश।
धरिहौं विविध शरीर, करन चरित बहुभांतिके॥
दो० उद्धव गोपिनकेर कछु, कह्यो ज्ञान दृढ़ नेम।
पढ़ै सुनै रघुनाथ तौ, यहै इष्ट पर प्रेम॥
प्रेम बिना पावै नहीं, प्रीतम को दीदार।
ताते जन रघुनाथ ते, कह उद्यापन सार॥
प्रेम न बारी ऊपजै, दिये न आवै दाम।
प्रेम जगत रघुनाथ तब, जब सुमिरै हरिनाम॥

इति श्रीविश्रामसागरे कृष्णायनगोपीउद्धवसंवादेनवमोऽध्याय.९॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
दशमस्कन्ध भागवतकी, अब कहौं कथाबखानि॥
गये कृष्ण सुफलक सुत गेहा * पूजा लहि कहि सहित सनेहा
चाचा तुम हस्तिनपुर जावो * बाध देय कुन्ती को आवो
असमय परे पाण्डुसुत छोटे * परबश परि सुखलहत न पोटे
चल पाण्डु घर आये साई * देखि मिली कुन्ती उठि रोई
आसन देत भई अनुरागी * पूछन गति नेहर की लागी
नीके हैं पितु मातु हमारे * भाभी भ्रात कृष्ण बल प्यारे
करत कबहुँ सुधि भान करी * देत त्रास धृतराष्ट्र घनेरी
सुनि बोले अक्रूर बिहारी * सुखी सकल सुधिकरत तिहारी
कहिनि कृष्ण फूफूसे कहियो * चिन्ताकछु चितमें जनि गहियो
आवत हैं हम कछु दिन माहीं * चली गयार तिनकी तब नाहीं
पुनि धृतराष्ट्र पास चलिगयऊ * सुहृदवचन जस बोलत भयऊ
पाण्डु मरे तुम गही पाई * पालहु सबहि एकसम भाई
चलै अनीति अयश जग पेहौ * देह तजे ध्रुव नरक सिधैहौ
करै जा पाप सुमात भ्रम पाई * त्यहि फल होत ताहि दुखदाई
अपर जे अहैं कुटुम्बी सार * अन्त रहत हैं सबही न्यारे
खलभल पाप परत शिर अपन * त्यहि ते पाप करहु जनि सपने
इमि बहु कह्यो ताहु हितबानी * सुनि धृतराष्ट्र न हिये समानी
बोला तबे अन्ध बेमाना * होई जो करहैं भगवाना
दो० यहि बिधि सुनि समुझाइ पुनि, पँचहुँन का दुखहेरि।
बिदा भये धृतराष्ट्र ते, आये मधुपुर फेरि॥
समाचार यदुपतिहि सुनाये * त्यहि तब अपरनिमुकिआगे
रथचढ़ि उभय कंस की बामा * मगध देश आई पितुधामा

बांधव भांति ते रोदन कीन्हा * जरासन्ध सुन धीरज दीन्हा
यदुन साहत सब हरि बलरामा * पठवौं कस निकट तब नामा
अस काह दल तेइस अक्षोनी * लैके चला प्रबल है होनी
अक्षोनी द्वै भांति बखानी * लघु दीरघ सोउ दीजै जानी

लघुअक्षाहिणीप्रमाण ॥

ककुभीछन्द ॥

एकहससहस आठसौ सत्तरि रथी होइँ जहँ जानौ ।
तेतनेही गजनाथ अश्वपति छांछठि सहस पिछानौ ॥
एकलाख नव सहस तीनिशत साढ़े पदर जोई ।
जनरघुनाथ बिचारि कहत तब एक अक्षोहिणि होई ॥

दीर्घअक्षौहिणीप्रमाण ॥

दो० अयुत नाग त्रै अयुत रथ, योधा लख दशलक्ष ।
तुरग कोटिछत्तिस कहत, पदचर यह दिरघक्ष ॥

आइ मथुपुरी लीहिसि घेरी * सुनि पहुँचे हरिबल त्यहिबेरी
देखते कहनलगो कटुभावा * बन्धबाधक सुनि बचन सुनावा
तात सुनहु तुम नीतिनिधाना * हम सम क्षमावन्त नहिं आना
निर्ज बहुबार कस के टारे * अपन पाप गये पुनि मारे
परअपकार किहे दुख भारी * खनत गाढ़ तेहि कूप तयारी
त्यहिपर आपु चढ़े अतिरोसी * ह्यानछाडि कछु लाभ न होसी

दो० कीन्हि कुनह बिनगनह जिन, तिन सुख सुना न पाव ।
सहसबाहु सुरनाथ भृगु, अत्रसुत नृगराव ॥

त्यहिते स्वपुर जाहु फिरि अबने * बैला मूढ़ साधु भय कहते
शूर सुमुख नहिं सुयश सुनावै * पुरुषारथ करि प्रकट देखावै
जानो काल निकट तब आवा * ताते बोध विपर्यय पावा

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
दशमस्कन्ध भागवतकी, अब कहौं कथाबखानि ॥
गये कृष्ण सुफलक सुत गेहा * पूजा लहि कहि सहित सनेहा
चाचा तुम हस्तिनपुर जावो * बाध देय कुन्ती को आवो
असमय परे पाण्डुसुत छोटे * परबश परि सुखलहत न पोटे
चले पाण्डु घर आये साई * देखि मिली कुन्ती उठि रोई
आसन देत भई अनुरागी * पूछन गति नेहर की लागी
नीके हैं पितु मातु हमारे * भाभी भ्रात कृष्ण बल प्यारे
करत कबहुं सुधि भान करी * देत त्रास धृतराष्ट्र घनेरी
सुनि बोले अक्रूर बिहारी * सुखी सकल सुधिकरत तिहारी
कहिनि कृष्ण फूफूसे कहियो * चिन्ताकछु चितमें जनि गहियो
आवत हैं हम कछु दिन माहीं * चली गयार तिनकी तब नाहीं
पुनि धृतराष्ट्र पास चलिगयऊ * सुहृदवचन जस बोलत भयऊ
पाण्डु मरे तुम गद्दी पाई * पालहु सबहि एकसम भाई
चले अनीति अयश जग पैहो * देह तजे ध्रुव नरक सिधैहो
करै जा पाप सुमात भ्रम पाई * त्यहि फल होत ताहि दुखदाई
अपर जे अहैं कुटुम्बी सारे * अन्त रहत हैं सबही न्यारे
खलभल पाप परत शिर अपन * त्यहि ते पाप करेहु जनि सपन
इमि बहु कह्यो ताहु हितबानी * सुनि धृतराष्ट्र न हिये समानी
बोला तबै अन्ध बेमाना * होई जो करिहैं भगवाना
दो० यहि विधि सुनि समुझाइ पुनि, पँचहुँन का दुखहेरि ।
बिदा भये धृतराष्ट्र ते, आये मधुपुर फेरि ॥
समाचार यदुपतिहि सुनाये * त्यहि क्षण अपरनिन्नझुकिआये
रथचढ़ि उभय कन्त की बामा * मगध देश आई पितुधामा

विविध भाँति ते रोदन कीन्हा * जरासन्ध सुनि धीरज दीन्हा
यदुन सहित सब हरि बलरामा * पठवौं कंस निकट तब नामा
अस कहि दल तेइस अक्षोनी * लेके चला प्रबल है होनी
अक्षोनी है भाँति बखानी * लघु दीरघ सोउ दीजै जानी

लघुअक्षौहिणीप्रमाण ॥

कुकुभाछन्द ॥

एकहससहस आठसौ सत्तरि रथी होइ जहँ जानौ ।
तेतनेही गजनाथ अश्वपति छाछठि सहस पिछानौ ॥
एकलाख नव सहस तीनिशत साढ़े पदर जोई ।
जनरघुनाथ बिचारि कहत तब एक अक्षौहिणि होई ॥

दीर्घअक्षौहिणीप्रमाण ॥

दो० अयुत नाग त्रै अयुत रथ, योधा लख दशलक्ष ।
तुरग कोटिछत्तिस कहत, पदचर यह दिरघक्ष ॥

आइ मधुपुरी लीन्हसि घेरी * सुनि पहुँचे हरिबल त्यहिबेरी
देखते कहनलगे कटुभावा * बन्धबाधक सुनि बचन सुनावा
तात सुनहु तुम नीतिनिधाना * हम सम क्षमावन्त नहिं आना
निज बहुबार कंस के टारे * अपन पाप गये पुनि मारे
परअपकार किहे दुख भारी * खनन गाढ़ तेहि कूप तयारी
त्यहिपर आपु चढ़े अतिरोसी * ज्ञानछाडि कछु लाभ न होसी
दो० कीन्हि कलह बिनकलह जिन, तिन सुख सुना न पाव ।
सहसबाहु सुरनाथ भृगु, अत्रसुत नृगराव ॥

त्यहिते स्वपुर जाहु फिरि अबते * बैला मूढ़ साधु भय कबते
शूर सुमुख नहिं सुयश सुनावैं * पुरुषारथ करि प्रकट देखावैं
जाना काल निकट तब आवा * ताते बोध विपर्यय पावा

कह हल्लर यह सब कोइ जानै * लानक मनई बात नहिं मानै
कु० सुर तुष्टत हैं भक्तिते, द्विज तुष्टत लखि दान।
सुहृद तुष्ट उपकारलखि, खल तुष्टत पदत्रान॥
खल तुष्टत पदत्रान, प्रीति ते तुष्टत नारी।
सेवावश शुचि स्वामि, साधु आदरवश भारी॥
नृपतुष्टतगुणगणकथन, रिपुतुष्टत भुजबल प्रचुर।
व्याहिते यहिपरतोषिये, समरयुद्ध करि सुरेसुर॥
सुनत जगसुन उठा रिगाई * टारहु मारि सैन कहँ राई
चहुँदिशि घेरिलीहिनिरिपु केरे * गरिहि धूम घन पावक जैसे
लागे चलन विविध हथियारा * शक्ति शूल असि बाण कुठारा
इतउत भिरत गिरत कोइ लागे * कोइ भट गरत जरत कोइ आगे
चढ़ी अटारिन पुरनर नारी * लखि लखि सोचकरैं अति भारी
कोइ बाण इमपि खेलाये योधा * पुनि हौउ बाहु करत भे क्रोधा
छणमें दलि सब सैन सोवाई * जरासन्ध सो दीन बचाई
व्याहिते बहुरि लयावे पाछी * यहाँ रुधिरका सरित अनाछी
रथ सुरेत भुज मीन समाना * गिर कच्छप गज ग्राह प्रमाना
कच सेवारसम धनुष तरङ्गा * आयुध पंख विटप जनु भङ्गा
मेरुर चर्ममणि कङ्कणकारी * प्रकटी सरिता कृष्णविहारी
दैदै ताल योगिनी नाची * प्रमथनकी परधीसी माची
गृहप गोध गोमाय कलोलें * छाइन मुद कपाली टोलें
इमि दलदलि प्रभु मथुरहि आये * मात पितुन विजय सुनाये
बरषि सुमन सुरपुर नर नारी * बहुबलकारे आरती उतारी
मगधाधिपकी सुद्धि जो आई * सो सब नृपति गाम पठाई
नृप जो आहि दीन सो लयऊ * मनिया मन मम चहीनो भयऊ

जगसन्य निज नगरहि आवा * दलबटोरि पनि लरन सिधावा
दो० तेइस तेइस क्षौहिणी लै लै यकइस बार।
आयाचढि बलकृष्ण सब, करत भये संहार॥
यह यश कालयवन सुनिपावा * नीनि करोरि यवन ले धावा
तब विश्वकर्मा ते यदुराई * सागर बीच पुरी बनवाई
द्वादश योजन मधि हेमाले * त्रिविध बनास कालतिहुँ चाले
चौहट हाट सुगन्धन छिरको * लागे जह तहं फाटक खिरकी
दामिनिसों पनारु फहराहीं * जल थल बरणि जात सो नाहीं
बन उपबन बाटिका अनेका * रतन सुसर्व एक ते एका
सोवत यदु सब तहां पठाये * अपना राम यवनपह आये
कृष्णे जब देखिमि निज आगे * काढि खड्ग धावा प्रभु भागे
धवलागिरि कन्दर मे जाई * मुचकुन्दहि पट दीन ओढाई
आयु रहे छिनि सो चलि आवा * पीताम्बरलखि चरण चलावा
दो० जो नहि जानत जासु गुण, सो शठ निदरत ताहि।
सबजगपूजहियतिहिजिमि, श्वान देखि धरिखाहि॥
लागत लात खोलि दृग दयऊ * कालयवन तुरताहि जरिगयऊ
दरश दीन तब यदुपति आई * जटिन बसन भूषण छवि छाई
अद्भुतरूप निरखि नृप बोला * नाथ अहो तुम कौन अमोला
की ब्रह्मदेवन मे कोउ होऊ * की रवि अग्नि चन्द्रमा कोऊ
पूजन के तुम योग गोसाईं * महो निशिदिन तव शिरनाई
मोहि जगाय जरा कोइ प्रानी * भयो हमार परमहित जानी
कह प्रभु हे नृप प्राणपियारे * जन्म कर्म मे बहु विस्तारे
नाम अनन्त न सख्या कोई * गनत थके बहु कविता सोई
मेरेउ जाति गनने की नाहीं * कहत सुनत ऋषि भवतरिजाही

अब जनहित भञ्जन महिभारा * भयो आइ वसुदेव कुमारा
कस आदि बहु शत्रु निपाते * यवनेशहि लायो तेहि नाते
रिपु जराइ पुनि तुम्हैं निहारिउ * एक पथ द्वै कारज सारिउँ
अब वरु मागु रुचै जो तोहीं * नाथ भक्ति दीजै निज मोहीं
मैं निद्रा विषयासन करिकै * बादि बयरा खोई अवतरिकै
तब प्रभु भजन भाव समुझाई * पुनि बदरीवन दीन पठाई
कह नृप कौन रह्यो बडभागी * बोले व्यास सुवन अनुरागी
नृप मुचकुन्द अवध के जानो * पर उपकारी एकहिं मानो
कीहि देवतन केरि सहाई * बहुदिन गये रहा कोइ नाई
इन्द्र मुदित है कह वर लाजै * बोल्यो महिप मुक्ति ग्वहिं दीजै
भूपति मोक्ष कहा हम पावै * एतो हरि के पास रहावै
तो फिरि नींद घनेरी देहू * जेर जगावै सो सुनि लेहू
सुनि तिन एवमस्तु कहि दीन्हा * तबते यहा शयन इन कीन्हा
दो० निद्रहि कस सुख सेज महि, तृषितहि कह घट शुद्धि ।
कामिहि कस भय लाज जग, क्षुधितहि कस बल बुद्धि ॥
सोवत कालयवन पग मारा * त्यहि अरअधम भयो जरिक्षारा
पुनि प्रभु गे मधुपुर मिलि दोऊ * मारे मुसलमान सब सोऊ
तेहिक्षण जरासन्ध चढि आवा * रामकृष्ण सो दल लखि पावा
लरे कछुक पुनि भागत भयऊ * गोतमगिरि ऊपर चढि गयऊ
गेरा योजन केर निहारी * जरासन्ध तब दीन प्रजारी
निकरि द्वारके गे दोउ भाई * हूंगा भूधर भसम बनाई
जागे जरासन्ध अरजाना * आया बहुरि भवन हर्षाना
इहा सकल यदुवंशिन काहा * चहो कौन हलधरकर ब्याहा
शहर अरुणती रेवत भूपा * तासु सुता रेवती अनूपा

नाके मग दोन भग व्याहू * वेद विधान गहिन उत्साहू
दो० मंसकार आकर नहीं, मिलत मो ताहि विशेखि ।
जेना की कन्या वरी, द्वापर म बर लेखि ॥
इति श्रीजरासन्धसमरवर्णनोनामदशमोऽध्याय ॥ १० ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
नीतिसहितरुक्मिणिहरण हरिकृत कहत बखानि ॥
अब विवाह रुक्मिणिकर सुनहु * रमन सुभये कृष्ण हरि उनह
कुण्डिनपुर भीषम नृप हेरे * जनमी एक सुता तिनकेरे
रुक्मिणि नाम ज्योतिषिन गरा * मन गुणधाम श्यामपति भाखा
दिन दिन कन्या बर्धन कैसे * शुक्लपक्ष कर चन्द्रा जैसे
खेलन सङ्ग सखिनके लागी * इक दिन यक बोली अनुरागी
रुक्मिणि तुं नित खेल विभाग * लुकनिकिठौर करत उजियाग
सुनि हँसि गृहगमनी सुखपाय * गहिनत तह नारदऋषि आये
देखि रूप गुण मन में जाने * कृष्णचन्द्र से आइ बखाने
कुण्डिनपुर महं भीष्मकुमारी * रुक्मिणि इक सो योगविहारी
नवते बनी इन्द्र पति सुरकी * सुनहु कथा पुनि कुण्डिनपुरकी
यकदिन सुयश याचकन गावा * कृष्णकेर भूपति सुनि पावा
तब निजभवन गवावत मयऊ * सुनिरुक्मिणि निजउरधरिलयऊ
करत भई सकल्प अनङ्गा * बरिहौं मैं इनही के सङ्गा
यकदिन भीषम देखि विचारी * भई विवाहन योग कुमारी
तब भाइन ते पूछेसि बोली * बरिये काहि रुक्मिणी खोली
तब सब लोगन भूप गनाये * नाना देशन के नहि भाये
तब भ्राता बालक नृप केरा * रुक्मसेन बोला यहि बेरा
तात रुक्मिणी कृष्णहि दीजे * नवल नात वसुदेव ते कीजे

सुनि नृपसहित सकल पुरवासी * बोले बात कहीं इन खासी
सेवक सुत बड छोटहु जानी * हितकी बात कहे सो मानी
आदिपुरुष जिनके घर जनमे * मारिनि कस असुर बहु बन-मे
को मिलिहै इनते बल भाई * सुनि बोला बड पुत्र रिसाई
बोलहु बचन संभारि सुनीती * जानत तुम न कृष्णकी रीती
षोडश वर्ष नन्द के राहा * तब अहीर सब काहू काहा
ओढी कामरि गाय चराई * जातिहु तासु न जानी जाई
कोऊ नन्दकेर सुत गावै * कोऊ यदुपति केर बतावै
अबतक भेद न काहू पावा * यह धौं कृष्ण कौनको जावा
प्रभुता बेश न लेश मवासी * उग्रसेन की करत खवासी
दो० तिनके सङ्ग बिवाह करि, कहौ मिली फल कौन ।
लायकत कीन्हो चही, बैर प्रीति अरु गौन ॥
लोभसोभलजह फलअधिकाई * चाटे ओस पियास न जाई
नगन न्हाय सो काह निचोवै * ज्यहि धन नाहिं सो का कोउ खोवै
त्यहिते भूप चेदेली केरा * है शिशुपाल प्रतापी हेरा
ज्यहिघर परमपराते गादी * आवत होत राज्य नहिं बादी
ताको ब्याहि रुक्मिणी दीजै * कृष्णकेर अब नाम न लीजै
सुनिनृप सहितलोग पछिताने * रहे साधि चुप सकल टराने
सबल शत्रु नृप नीच गोसाउ * इनते हठ कीन्हे न भलाई
मरसते न कहीं हरि गाथा * गिरि खोदे पर पाथर हाथा
अस मनगुणि गमनेकहिबीशा * जबर कि राह कहत फुर शीशा
तब तहं रुक्म बोलि बहु लीन्हा * लगन शोधाइ पठै पुनि दीन्हा
जाइ विप्र शिशुपालहि दीन्हा * टीका बड भावते लीन्हा
दो० यदपि कह्यो बहु भीष्म नृप, चह्यो कृष्णको देन ।

तदपि न बूझेउ बैरथल, लालच ग्रसित सुखेन॥
तब शिशुपाल व्याहहित फूली * लोकवेदविधि करी समूली
देकर भेट विदा करि ताही * न्योत्यो बडे बडे नृप चाही
आइ विप्र भीषमै सुनावा * बडी धूमते आवन तावा
बेगि व्याहकी करहु तयारी * तुरत गुणीजन लीन हँकारी
अतिविचित्र माडौ तनवावा * मङ्गल गान सकल पुर छावा
एक सखी बोली मृदुबानी * रुक्मिणि भई बडी तुम रानी
अस सुनि कहत महीपकुमारी * मन बच कर्म मोपति गिरिधारी
क्षिप्रहि विप्र बोलि यक लीन्हा * लिखिकै पत्र तासु कर दीन्हा
दीजै जाइ कृष्ण के हाथा * बहुरि उन्हैं लायो निजसाथा
तौ मै बड तुम्हार हित मानो * रोरदीन कृष्णपति जानो
यह सुनि चला द्वारके आवा * कृष्णचन्द्र को पत्र दिखावा
महाराज सुनि सुयश नवीना * तबते मै तुमरा पति कीना
मिलन केर आशा दृढभावा * बेदनहू याही विधि गावा
जाकर प्रेम सत्य है जामें * सो त्यहि मिलत न सशय यामें
अवस्यहिं लेन चहत शिशुपाला * जिमि मृगपतिकरभाग शृगाला
त्यहिते सत्यवचन अविनासी * कीजै मोहिं आपनी दासी
जो नहिं लेहौ खबरि हमारी * तौ तन त्यागब शपथ तुम्हारी
दो० जिमि रघु रक्षी सुरभिवन, रक्षी मृगपति मेख।
त्यहि प्रकार म्वहि रक्षिये, प्रणतपाल प्रभु लेख॥
ऐसे वचन बाँचि बनवारी * आवा भरि नयनन मे बारी
तुरत उग्रते आयसु लीन्हा * रथचढिगमन सहित द्विजकीन्हा
पहुँचे जब कुण्डिनपुर जाई * उतरे भूपति की फुलवाई
त्रि० देखी बनवारी जनु तपनारी अचल अगारी थिर न रहै।

परिरहत दिगम्बर पुष्पवती वर निरखि रूप नर मोहलहैं ॥
लहैं गर्वित गर्भे दिनप्रति अर्भे अर्पत सर्वे पर्स करै ।
परसत पतिपावै तदपि सुहावै सवति न भावै भाग्य बरै ॥
बोलहिबहुबोलानिजनिजटोलाधरिधरिचोलाविपुलसखी ।
श्यामहि जनु सारी रही हँकारी हर्षित प्यारी प्रेमलखी॥
इहा रुक्मिणी करत विचारा * अजहू नाहिं आये करतारा
पुनि पुनि चढि महलोंपर जावै * चहुंदिशि चितै विकल फिरिआवै
इतने में द्विज आइ बखाना * मनहु लह्यो जल शालि सुखाना
प्रमुदित ह्वै दीन्ह्यो वरदानू * जाहु सदा रहिहो वनवानू
बहुरि कह्यो हरिने उर धरियो * देवीपूजन में स्वहिं हरियो
पाछे ते आये बलदेऊ * छपन कोटि यादव तेऊ
सुनिमहिपालमिलनचलिआवा * सो सबहाल रुक्म सुनि पावा
बोला नृपते ऐसे निकरा * कौन इहा बलायो इनका
जहा जात तहँ करत बखेरा * भीष्म कहा कछु मोहिं न घेरा
तिसरे पहर नगर दोउ भाई * आये लाख कहै लोग लुगाई
जस गुण रूप तैस सम्बन्धा * जिमि मुठि सोने माहिं सुगन्धा
इनके दरशमाहि सुख जैसो * मुक्तिह माहिं न होई ऐसो
दो० गौर श्याम सुषमासदन, बदन बिलोचन चार ।
सहित वसन भूषण बसहु, उरसि अहै जिमि हार ॥
यहिविधिकहिमवहिनसुखपावा * शिशुपालहि तब रुक्मजनावा
अब सब सबरदारते रहना * आये है उपाधि के गहना
तब शिशुपाल समूह सिपाही * पठै दिये रक्षाहित ताही
इत उत गई कनात तेनाई * देवीपूजन बुधरि सिधाई
सग सखी सोहै विधि बाग * कीन्हे तन षोडश शृङ्गारी

कुं० मञ्जनपट अञ्जन तिलक, स्रक कुण्डल ताम्बूल ।
बेसरि अँगिया किंकिणी, कङ्कण पायलमूल ॥
कङ्कण पायलमूल, सुनूपुर कुंकुम बेनी ।
यह षोडश शृङ्गार, त्रियनके औरहु श्रेनी ॥
श्रेनी मानहु मदन, केरि निकसी मदगञ्जन ।
गोन साथ रघुनाथ, करत सुनि मुनिमनभञ्जन ॥

रोलाछन्द ॥

कोइ पद्मिनि सुकुमारि लाजयुत सहित सुगन्धा ।
कोइ चित्रिनि सम रूप चहत उपबोध प्रबन्धा ॥
कोइ शंखिनि युत रोष दया बिन बेगि प्रचारै ।
कोइ हस्तिनि बड उदर पयोधर कमर करारै ॥
कोइ स्वकीय सुख दुःख माहि निज नाथहि जानै ।
कोइ परकिय परपुरुषकेर संग छिपिकै ठानै ॥
कोइ गुण रूपादिक प्रेम बश कोइ रस धावै ।
कोइ सामान्या द्रव्य लोभवश प्रीति बढ़ावै ॥
सन्धिभय कोइ अंकुच जनति यौवन कोइ मुग्धा ।
कोइ ज्ञाता अज्ञात वपुष बय भोग निरुद्धा ॥
कोइ मध्या सामान्य कामयुत लाज जनावै ।
कोइ प्रौढा परवीन अधिक रसकेलि सुहावै ॥
कोइ धीरा हतव्यग कोई आधीर रिसाती ।
कोइ ज्येष्ठा पतिपीय कनिष्ठा कोइ कम चहती ॥
कोइ गुप्ता गति अलख कोई परतीति लक्षिता ।
कोइ मुदिता मिकमिलन विदग्धा कोइ सुरक्षिता ॥
कोइ अनुशयना दुखित जास संकेत नशान्यो ।

कोइ कुलटा अतृप्तचित्त चिरठौर लोभान्यो ॥
कोइ स्वाधीना स्वबश कीन नाहै निजगुणते ।
कोइ उत्का के हेत न आयो प्रीतम सुनते ॥
बासकशय्या कोइ कन्त को आगम देखै ।
कोइ कलहन्तरितादि निदरि करि शोच विशेखै ॥
कोइ खण्डिता अपर पास लखि पतिहि रिझावै ।
द्विज लब्धा कोइ जौन पतिहि सकेत न पावै ॥
कोइ अभिसारिनि आपु जाइँ की हरिहि हँकारै ।
प्रवृत्तिपतिका कोइ जासु पति गमन विचारै ॥
कोइ प्रोषितपतिकाहि कन्त परदेशम जाको ।
आगमपतिका कोइ होइ उत्कण्ठा ताको ॥
कोइ दूखिता दुखित होत लखि बाधक जानै ।
कोइ गर्वित पतिरूप अधिक कोइ जठर प्रमानै ॥
आइ करत कलोल सकल देवी के पासा ।
पूजन कीन्ही कुँवरि कृष्णकी करि उर आसा ॥

दो० और सखी जे सगकी, करि प्रणाम कहैं बात ।
यहि कन्याको कृष्णपति देहु दयाकरि मात ॥
पूजन करत न पतिहि जब, परयो महिपकमारि ।
लगी करन अतिशोच तब, यहिविधिहृदयविचारि॥

कुं० वीसन बुडकी मै दई, मुकता लग्या न हाथ ।
सागरकेर न दोष यह, निज अभाग रघुनाथ ॥
निज अभाग रघुनाथ, नाथ ऋतु सबहि फुलाव ।
पात न लहै करील, ढीलको ताको गावै ॥
गावत सुनै न बधिर, भानु द्युति तमचुरदीसन ।

रहत-गन्ध बिन फेनु मलयढिगयहिविधिबीसन॥
मन चाहतहै मिलनको, मुख देखन को नैन।
श्रवणचहतसुखप्रदसुन्यो, श्यामसुंदर के बैन॥
श्यामसुँदर के बैन, सैन बश होन न पावत।
हाय दई का करौं, यतनएकौ न लखावत॥
आवत एक प्रतीत, अहैं प्रभु प्रणत पालवन।
शरण समुझि सुधि लेहै, लेहै पुनि लेहै टीकमन॥
दो० यहिबिधि मनमें ठीक दै, चली चहूदिशि हेरि।
इतने में हरि आइ तहँ परदा दीन्ह्यो चेरि॥
कुँवरि कुँवरको रूपलखि, भे मूर्च्छित भट सर्व।
कर गहि रथ बैठारि प्रभु, चले गाजि नृप गर्व॥
जोरावरते नहि चलत, छल बल बुद्धि उपाइ।
टटकन टरै न गाज जिमि, मेपन ते मृगराइ॥
इति श्रीरुक्मिणीहरणवर्णनोनामएकादशोऽ याय ॥ ११ ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
नीतिसहित रुक्मिणिकथा, हरिकृत कहत बखानि॥
यहि विधि जब श्रीकृष्णमुरारी * हरि चलिभे भीषमक कुमारी
तबतौ जरासन्ध अस कहई * धिग धाँवी हम सबको अहई
जिनके जियत गोप नृपवारी * हरिलैगो जिमि शिवहरिनारी
यशी पुरुष कहँ अपयश होई * मरण नीक भल जियब न सोई
असकहि गहि आयुध सबदौरे * धरु धरु मारु मारु कहि बौरे
इत हलधर यादव लैधाये * भिरिगे ठौर ठौर भट पाये
पैदर ते पैदर हयते हय * रथिनते रथी जुट गयते गय
छूटे चक्र बाण विकराला * तोमर परशु शक्तिसम काला

मुद्गर शूल भुशुण्डि सुहाई * पुनि कृपाणते मची लरोई
कोटिन मुण्ड धरणिपर गिरहीं * धरधरु कहि कबन्ध बहुफिरहीं
भूत प्रेत योगिनी कराला * मुदितभये खग श्वान शृगाला
यहिविधि सैन नृपनकी नाशी * शखशब्द कीन्ह्यो बलराशी
दो० जरासन्ध शिशुपाल दोउ, गये तुरतही भागि।
धीरज दै शठ रुक्म तब, चढा रुक्मिणीलागि॥
जैसे पाखीकी दशा, देखत पांखी आन।
तद्यपि कूदत दीप में, अस विमोह बलवान॥
आगे बढि कृष्णहि ललकारा * जात कहा करि विघ्न हमारा
रह्यो डहँकि कदरनके बीचा * जानहु आजु आपनी मीचा
अस कहि निकट आय प्रभुपाहीं * मारिसि गदा माझ उ म हीं
पकरि कृष्ण शिर काटनलागे * कह रुक्मिणी जोरिकर आगे
बन्धु भीख मोकहँ प्रभु दीजे * इतना कहा चेरि कर कीजे
मोछ मुडाइ राखि पुनि चोटी * पाछे बाँधि लिहिनिनिजजोटी
कटक निधनि आये बलभाई * सनोमान करि दीन छुडाई
बांधे हरिते उचित न कीन्ह्यो * बन्धु बिरूप विरचि दुख दीन्ह्यो
राजा सुत दुख पावा हेरि * लघुमति हम कहब सब कोई
बन्धु करे जो बनकर कामा * तदपि न हरिये हित परिनामा
जो बहुलाग कुसगम होई * तदपि न कीजे सगति सोई
होइ धनी धनरहित जो कीजे * तदपि ताहि लघुप्रकृति न लीजे
जो न होइ बल देन को दाना * तदपि न तजिये सम सनमाना
घटै प्रीति जो मित्रते कबहू * मुखते उघरि न जाइय तबहू
जोनिशिदिवस न हरिभजिपये * तदपि न साझ प्रात बिसरये
जो नर नारि होइ दोउ त्यागी * तदपि रहिये जिमि तृणआगी

परहित करत प्राण जो जाई * तदपि न तजिये कबहुं भलाई
दो० रारि रोग रिपु अग्नि नृप, करन तपोधन व्याल ।
जो ये होवैं लव तदपि, सजग रहिय सबकाल ॥
व्यभिक वाम बैरी विकल, व्यसनी चुगुल अजान ।
करैं कोटि सौहे तदपि, इन विश्वास न आन ॥
जो कामी नर कृपण कहि, करै आपनी निन्द ।
तदपि अकार्थ न दीजिये, विद्या विन्दरु जिन्द ॥
जो सुर भूसुर साधुकी, सधै न सेवा भाव ।
तदपि न निन्दा कीजिये, नाहि सुनिय करिचाव ॥
उत्तम विद्या नीचते, मिले जो दीन्हे मान ।
तदपि तासुते लीजिये, शिरपर धरि अहसान॥
जो कबहूं सतसंग ते, उदय होय बैराग ।
तदपि एकहीबार कुल, धर्म न कीजै त्याग ॥
जो सब तीरथ मिलै करारी * तदपि न तजिय हरिपद वारी
जो कबहूं गुरु रंह रिसाई * तदपि निहोरि चूक बखशाई
जो धन हित विद्या लघुकरी * पढि तदपि लीजै निजहेरी
जो शुचि दास कबहुं फिरिजाई * तदपि ताहि है नर्म मनाई
जो अपने ते बन न नेरी * तदपि अपर को करत न छेकी
जो श्रुतिशास्त्र सुखागर चाहिये - पढत सुनत नित तदपि रहिये
जो अति कष्टहु ते सतसंगा * मिलै तदपि नित करिय प्रसंगा
सुर सुसंत कछु कहे न यद्यपि * करिये अदब मान लखि तद्यपि
दो० कवि बुध गुरु तिय सुत सुहृद, द्विज भरमी शठ भाय ।
जो यह करै अनीति कछु, तदपि तरह दैजाय ॥
पुनि रविमणि ते गिरा उचारी * तजहु शोच निजवश विचारी

क्षत्रीकुल विधि अस निरमायो * अवनिरवनिधन धामलोभ गो
भ्राते भ्रात हते करि कोहा * भूपकने अस पातक मोहा
सो गुण हम में एकौ नाहीं * सबकर हित चाहैं मनमाहीं
हिनू प्राण ते प्रिय अधिकाई * शलभ जरै नहि दीप लगाई
बहुरि विवाह आठ विधि तेरे * धर्मशास्त्र में मुनिन निबेरे
दो० ब्राह्म दैव परजापती, आर्ष असुर गन्धर्व ।
राक्षसबहुरि पिशाचअय, सुनहु व्याह विधि सर्व ॥

कुकुंभीछन्द ॥

सालङ्कार दान कन्या को ब्रह्म कहावै सोय ।
दान दक्षिणा में कन्या को देत देव सो होय ॥
तुम दोउ मिलि सब धर्म करौ कहिदेइ प्रजापति जानौ ।
लै द्वै धेनु देत दुहिता जो सोई आर्ष परमानौ ॥
सुत प्रमत्तनकी कन्यनको हरिबो सोइ पिशाचा ।
बरै कुँवरि बधि बन्धु सो राक्षस नृपै परत यह राचा ॥
है सकाम कन्या कर पकरै व्याह सो गन्धर्व कहिये ।
असुर अनीति प्रीति नहिं पौरुष यह उत्तमहि न चहिये ॥
त्यहिते हम क्षत्रीके बालक * कीनि अनीतिननिजकुलघातक
सुनि बैदरभी अति सुख पायो * मोहजनित विषाद बिसरायो
रुक्म लाजवश भवन न गयऊ * निज दासन ते बोलत भयऊ
पहिले पुरुषने बात जो कहिये * कृतबिन मुख न देखावै चहिये
ताही ठौर नगर एक जारा * नाम भोजकट तापर धारा
सब जानी सनमानि बसाई * रह्यो तहां इन नारि बलाई
इन शिशुपाल कह्यो बिलसाई * अब हम जाब न निजपुर भाई
हँसी कि बात कही नहिं जाई * मुखराचन्द बने इन आई

जरासन्ध कह भूपन तीरा * हानि लाभ रहतें हे वीरा
हम नहिं प्रथमैं इनते हारे * पुनि दोउ बन्धु शैलपर जारे
त्यहिते तान तजहु गति मनकी * दारुयोषिता सम गति तनकी
समुझिसोकविमुखशोक न गहई * बर्तमान सब बर्तत रहई
मूरुख गई बस्तु को शोचै * द्रव्य पाय जेहि धर्म न रोचै
मूरुख करी कृत्य को माने * हित की बात न मनमें आनैं
मूरुख पन्थ चलन मे खावैं * मूरुख हसन माहिं बतलावैं
मूरुख शठने करै विवादा * खरचैं द्रव्य बिसते जादा
मूरुख करै सबल ते बैर * मूरुख बल राखैं अनगैरू
मूरुख विन मतलब कटु बोलैं * मूरुख पाप अपर के खोलैं
मूरुख द्वै बिच तीसर फादैं * मूरुख बान बाम की कादैं
मूरुख निर्धन के धन धरई * मूरुख वृद्धमाहिं तिय बरई
मूरुख बाहिनि सार सँग भेजैं * मूरुख जाइ पराई सेजैं
मूरुख कर्म क्रिया ते हीना * मूरुख चलैं न पनि आधीना
मूरुख मद मागत मे करई * मूरुख प्रीति जोरि पुनि लरई
मूरुख निजमुख निजगुणगावैं * मूरुख बालक मुहँ लगावैं
मूरुख त्यागी ह्वै धन जोरैं * मूरुख विन मतलब फल तोरैं
मूरुख दखल देई विन जाने * गहैं चपलता गुरु अस्थाने
सब ते बड मूरुख त्यहि चीन्हा * नरतनजिनहरिभजन न कीन्हा
त्यहि ते तुम मूरुख के लेखे * मिली न मिली बस्तु अनमेखे
यहि विधि सब भूपन समुझावा * तब लजात निजभवन सिधावा
पहुँचे कृष्ण द्वारका तीरा * सुनिके उग्र लई बहु भीरा
आगे लिहिनि धूम ते आई * राजमहल लाये सुख पाई
कीन्ह विवाह वेद विधि तेरे * लागे रहन सकल सुख मेरे

कह नृप रुक्मिणि पूर्व मँझारी * करी पुण्य भूमि कौनिउँ बारी
दो० तीनि अंश ते जानकी, लीन रहैं अवतार।
वेदवती स्वइ रुक्मिणी, सतिभामा महिभार॥
कृष्ण रुक्मिणी केर शृंगारू * कहत शेष नहिं पावहिं पारू
तो मैं किमपि कहौं मतिथोरी * पाय पिपाल कि सागर बोरी
कछु दिन बीते रुक्मिणीजायो * बालक नाम प्रद्युमन पायो
शोभासदन मदन अवतारा * हार प्रतिबिम्ब मनहु अतिप्यारा
दो० सम्बर राजा पवन है, हरिलैगा रिपु जानि।
दीन्हेसि डारि समुद्र महँ, लील लीन मीनानि॥
धीमर मीन पकरि स्वइ लीन्हा * जाइ भेट सम्बर को दीन्हा
चीरत सुत निकसा महिपाला * सौंपि दीन्ह रतिका तेहिकाला
पाच वरष का भा जब बाग * भेद पाइ सम्बर को मारा
लै रतिसङ्ग द्वारके आये * मानहुँ प्राण रुक्मिणी पाये
भा तब आनँद सहित विवाह * बसी सदन रति सह नरनाह
दो० श्रीगुरु देवादास के, चरणकमल धरि माथ।
कृष्णायन यह अयनको, पूर कीन्ह रघुनाथ॥
द्वितिया अयन कहौं समुझाई * पन्द्रह से पचास चौपाई
दोहा इकसै सतइस जानौं * सोरठ चारि सोउ पहिचानौं
रोलाछन्द नवै हैं सोई * नवै कुडलिया यामें जोई
कुकुभाछन्द तीनि हैं भ्राता * तीनि गीतिका यामें ताता
दो० भुजँगप्रयाता एक है, एक सवैया छन्द।
एक कवित चामर सुयक, एक - त्रिभङ्गीछन्द॥
इति श्रीरुक्मिणीमङ्गलवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः॥१२॥
इति कृष्णायनखण्ड समाप्त॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर ॥

श्रीरघुनाथदास रामसनेहीकृत रामायणबालकाण्डप्रारम्भः ॥

श्लोकः ॥

वपुवनजविनीलं लोकलावण्यधामं
सुखनिधिसमशीलं लोहिताक्षं विशालम् ॥
करधनुशरधारी कीटकं पिङ्गवस्त्रं
विधिहरिहरमीशं जानकीशं नमामि ॥ १ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं ब्रह्माण्ड पुराणमत, रघुपति खण्ड बखानि ॥
श्रीगुरु देवाराम के, चरण कमल धरिमाथ ।
वर्णत सीताराम गुण, सुखप्रद जन रघुनाथ ॥
कथाअलौकिक कुशलसुनि, करै न मन सदेह ।
राम अनन्त अनन्त गुण, कतहुं होयगो येह ॥
हाथ जोरि बोले वचन, पुनि शौनक अभिराम ।
कयहि कारण अवतार जग, लीन परात्पर राम ॥

सो० मुनि सुमन्त सुख पाय, बोले मुनिहरिगुण सुनहु ।
जो वरणे गिरिराय, गिरिजाप्रति सोई कहव ॥

एक समय कैलास मझारी * बैठे रहे उमा त्रिपुरारी
मन प्रसन्न शंकर कर जानी * बोली शिवा जोरि युग पानी
राम सच्चिदानन्द निकेता * नरतन धरनि नाथ कयहि हेता

कीन्हेनि चरित कौन विधिकेरे * सो सब नाथ कहौ हित मेरे
ज्ञानहु तेपि श्रवण सुख भारी * सनकादिक जहँ रमे बिचारी
सुनि शंकर बोले मृदु बानी * धन्य धन्य तुम धन्य भवानी
राम चरित पूछेउ सुखदाई * सो अब सुनो कहौं मैं गाई
कीन चहत लीला हरि जबहीं * ठाढ करत हैं कारण तबहीं
जैसे - बिशिख चलावै कोई * प्रथमै धरत निशाना सोई
उभय देव जाने अभिमानी * अरिकरि शरण भये भयमानी
तीसर हेतु मनुहि वरदाना * दीन रहे प्रभु कृपानिधाना
तूर्य युद्ध जानकिहि देखावन * पञ्चम जग बिराग उपजावन
षष्ठम मुनिजन सुमिरण कीन्हा * भक्तवछल लखि दरशन दीन्हा
सप्तम देखि धरम की हानी * अष्टम प्रीति जनककी जानी
नवम बचन बिधि के बहुतेरे * कीन्हे चहैं साच त्यहि तेरे
दशम दशानन सबै सताया * बधन हेतु प्रकटे रघुराया
यहि विधि हेत हजारन जानौ * इतनेही हित जन्म न मानौ
पुनि गिरिजा बोली कर जोरी * राम कथापर प्रीति न थोरी
नाथ कहौ केहिबिधि जगदीशा * बपुधरि निधन कीन्हदशशीशा
केहिबिधि भवन बसे सुखकारी * सुनि लागे तब कहन पुरारी

दो० इक रावण जय बिजय में, युगल जलन्धर आप ।
तीसर रावण शम्भुगण, चतुरथ भानुप्रताप ॥

यहिबिधि कल्पकल्पप्रति रावन * होत करत हरि बपुधरि पावन
त्यहि कारण साकेत बिहारी * प्रकटे तासु कथा सुनु प्यारी
नाम प्रताप सखा प्रभुकेरा * महि अवतरेउ आइ प्रभु मेरा
सत्यकेतु नृप केकय देशा * तरय भवन जनु उयउ दिनेशा
नाम प्रतापभानु बलधामा * कीन्ह राज रिपुदल अभिरामा

एक बार बन गयो शिकारा * तहां कपटमुनि असुर निहारा
निन्हें सोम बश चीन्यो नाहीं * गुरु बनि किहेसि पाक घरमाहीं
गोपित अशन भई नभबानी * विप्रन शाप दीह दुख मानी
राक्षस होउ कुटुम्ब समेता * ते जह भये सुनो सो हेता
ऋषि पुलस्त्य सुत ब्रह्मकुमारे * रहे करन तप मेरु के नेरे
नहं तृणबिन्दु राजऋषि रहेऊ * कन्या तासु कांतिकर कहेऊ
सखिन सहित सो दिनप्रतिआवै * कलकल मुनिके निकट मचावै
मुनिगण ध्यान बनै नहिं राई * तब पुलस्त्य अस कहा रिसाई
आसपास जो हमरे आवै * प्रमदा पुत्रवती ह्वै जावै
कन्या गई रहा अवधाना * जब तृणबिन्दु ध्यान परिजाना
तब सोइसुता मुनिहिं वरि त्यऊ * त्यहिते विश्रवा को सुत भयऊ
बड़े भये पितु आयसु पाई * करन लाग तप कानन जाई
दो० भरद्वाज मुनि के रहै, कन्या सुयशा नाम।
विश्रवसहिवरि दीनतिन, नेह सहित अभिराम॥
तिन के भये कुबेर विधाता * बीहेउ नाहि यदपति ताता
तदपि एलाबिल दिनप्रति आई * करहिं मातु पितु की सेवकाई
यहि विधि बीते बरष अठारा * तब कुबेर निज हृदय विचारा
जो मम पिता अपर त्रिय करही * तो दुनहुन की सेवा करही
मयदानव याच्यो अभिरामा * माया दवि सुवत्रा नामा
तिन के हित निज दूत पठावा * सुनि मयदानव बचन सुनावा
विप्र भिक्षा मागन चाहीं * हम निजसुता विवाहब ताहीं
औरो बचन कहे कटु नाना * दूत धनद ने आउ बखाना
सुनि कुबेर निज सेन बटोरी * चढ़े तहां भै आरु न थोरी
लाये निसहिं जीति यहि रीती * दीन्ही पितहि बरणि सह प्रीती

विविध भांति कीन्ही तिन सेवा * देखि प्रसन्न भये मुनि देवा
साझ समय लीन्हेनि रतिदाना * यद्यपि मुनिवर दोष बखाना
भई गर्भ सम्पुत यहि भावा * जन्म समयकर अवसर आवा
उलकापात होन तब लागे * गर्जे मेघ समय बिन आगे
रविशशिग्रहण पवनचलिजोरा * दिन की राति भई अति घोरा
कांपि उठी महि देव डराने * सब विप्रन के पेट पिराने
दुष्ट मुदित मुनि भये मलीना * अग्नि तेजहत नख द्युत छीना
उदित केतु नभ जम्बुक बोले * श्रुतिदल कोरलख बिधि खोले
प्रथमे सुत देवी युग जाये * रावण कुम्भकर्ण कहवाये
कहुँ कहुँ कहत केकसी माता * सो जय विजय समयकीबाता
भये सुवक्त्रा के सुत पाछे * त्रिजटा अग्र विभीषण आछे
माया सुत जन्मे कर लेखा * खरदूषण त्रिशिरा सुपनेखा
जब कछु भये सयाने नीचा * करै उपद्रव कानन बीचा
खग मृग एकहु वचन न पावैं * तपत मुनिन कहँ जाइ सतावैं

दो० मारन मोहन वशकरन, उच्चाटन अस्तम्भ ।
आकर्षण सब भांति के, पढ़े सदा करि दम्भ ॥

निश्चर प्रथम सुरन रणभाने * बचे ते रहे पताल दुराने
तिननिजवश अवनिपरजान्यो * छिपिकरि आवागच्छ सुठान्यो
यकदिन दनुज पूज्यअसकहेऊ * करहु तपस्या जो सुख चहेऊ
अमर बिना जग स्वप्न सरीखा * लागे तपन सकल सुनि सीखा
अर्ध अग्नि रवि दिशि दृगदयऊ * दिव्य सहसदश सवत गयऊ
महाकठिनतपलखि बिधिआयो * दशमुखखललखि बाग बुलायो
बैठे गिरा तेहि जीह मँझारा * तब विरञ्चि वर मागु उचारा
बोला सुनि रावण हम नाह * नरहरि तजि न मर कर बाहू

एवमस्तु कहि अज तहँ आये * जहा विभीषण ध्यान लगाये
सुजन जानि बोले अनुरागी * भावै सो लीजै वर मागी
कह्यो विभीषण दोउ करजोरी * हरिपद प्रीति बढै प्रभु मोरी
एवमस्तु कहि पुनि धरि धीरा * पहुँचे कुम्भकरण के तीरा
दो० ताहि देखि वागीश निज, मनमें कीन्ह विचार।
जो यह नित भोजन करी, नाशी सब ससार॥
सो० करि यहि भाति विवेक, प्रेरि गिरा फेरी उपल।
मागेसि बासर एक, जागहुँ सोवहुँ मासपट॥
कहि तथास्तु बहुरि विधि डोले * खर दूषण त्रिशिरा ते बोले
तिन मागा हम होई बैरा * अतसमय जाई हरि तीरा
देखि सो त्रिजटा शीश नवावा * होइ प्रीति हरिपद बर पावा
पुनि लङ्किनी नवायो शीशा * बोले तब त्यहि ते वागीशा
शाखामृग तुम का जब मारी * तब छूटी यह देह तुम्हारी
दिव्य रूप धरि हरिपुर बासा * होई तब निश्चर कर नासा
यहि विधि विधि सबकाबरदीन्हा * पुनि निज लोक पयानो कीन्हा
दशमुख जो अजते बर पावा * प्रमुदित ह्वै सोइ कबिहि सुनावा
कह्यो शुक्र ह्वैगे बडि भूला * नर बानर क्यो तज्यो समूला
बोला कौन चूक इन लागी * डरे वृथा तृण दारुहि आगी
अस कहि लाग करन ठकुराई * निश्चर निकर रहे तहँ आई
दो० मयतनया मन्दोदरी, हेमाने संजात।
वरि दीन्ही तेहि रावणै, समुझि सबल भलनात॥
नारि मनोहर पाइकै, उठा अधिक हरषाइ।
कुम्भकरण त्रिशिरादि पुनि, ब्याहे पांचो भाइ॥
सानदनि वृकदत कुमारी * सो भइ कुम्भकरण की नारी

नगदन्ती केहरि मख जाई * सो वल्लभा विभीषण पाई
रत्नमस के कन्या ने वरणी * खर दूषण त्रिशिरा की घरणी
बनितन सहित सो पाचो भाई * करहि भवन सुख शोक बिहाई
एकदिनदशमुख पितुपहँगयऊ * न्यहिचण धनपति आवत भयऊ
बैठे धनद पितहि शिरनाई * मनि कान्हो आदर अधिकाई
कछुक काल रहि आयसु मागी * गये कुबेर भवन अनुरागी
आदर अधिक पिताकृत दयी * रावण उर भा क्रोध विशेखी
खलन केर ये लक्षण आहीं * परप्रभुता लखि जरि बरि जाहीं
उठि ऋषि ढिगते मन्दिरआवा * जननी ते वृत्तान्त सुनावा
लहि तब कहा धनद ये अहहा * कमन की लङ्का मे रहही
चारो तरफ सिन्धु है जाके * अमरपुरी नहि सम सरि ताके
गा लङ्का तब नाना करी * बसे आपु मम पितहि खदेरी
सुनि दशमुख अति उठा रिसाई * दल ले लङ्क गगगसि जाई
प्रथम कुबेर युद्ध अति कीन्हा * पुनि ह्वै श्रमित त्यागिगढ दीन्हा
भागत देखि निशाचर राई * लीन्हेसि पुष्पक यान छिनाई
लङ्क विलोकि परमसुख मानी * कीन्ही तह रावण रजधानी
यथायोग्य पुनि निशिचर नाहू * दीन्हे भवन बाटि सब काहू
तब कुबेर निज कुटुँब समेता * अलकापुरी बसाइ सचेता
आपु गये सुरपति के तीरा * सकल व्यवस्था कही अधीरा
सुनि सुरेश सब देव बुलाये * हाने निशान लङ्कहि चढिआये
दशमुख ले निकसा कटकाई * होइ इन्द्र ते लगी लराई
अस्त्र शस्त्र छूटे विधि नाना * अगणित असुर होइँ बिन प्राना
वासव कोपि वज्र एक मारा * गिरा मूर्च्छि तब अवनि मँझारा
निज गज ते तनु मर्दन लाग्यो * मानहु श्रमित जानि अनुरागो

कुम्भकर्ण तब निरउ प्रचारी * व्याकुल भये आदिति सुत भारी
रविसुत सैन विचल निजजानी * सपटि दण्ड मारेउ उर तानी
रावण अनुज दण्ड गहि लयऊ * सहजे निजमुख मेलन भयऊ
राखि उदर शठ सोवन लागा * षट महिना बीते पुनि जागा
दो० भयो तासु उरदाह तब, उगिलि दिहिसि यमदण्ड।
तमकि लीन महिषेश पुनि, मारेउ दण्ड प्रचण्ड ॥
लागत शिर त्यहिपीर न व्यापी * भयो नीचवश पुनि खल पापी
तब हरि हने दण्ड अधिकाई * सोवन सो अधिकहु सचुपाई
मूरछा ते तब रावण जागा * पुनि देवन ते जूझन लागा
लख भुजदण्ड धनुष शर लीन्हे * मारि विचारुख व्याकुल कीन्हे
लखि दिग्गज चिक्करि दिग आये * धनुष बाण सब काटि बहाये
गहेसि तिन्हें तब भुजा पसारी * मरिद्वीरदन श्वान पचारी
दशमुख के उर लागहि कैसे * शिला माझ बिन फर शर जैसे
लखि रावण तन की कठिनाई * तब सब दिग्गज चले पराई
पवन इन्द्र तब गे विधि पासा * शीश नाइ सब हाल प्रकासा
कह विरञ्चि सुनु शक्र सुजाना * रावण है तपबल बलवाना
त्याहि ते तुम जीत करहु लराई * गिरिखोहनमा जाहु पराई
सुरन सहित सुमिरहु करतारा * बिन हरि को दुख मेटनहारा
स्रष्टा वचन सुनत मनमाने * देवन ने तब याइ बखाने
सीखि पुरन्दर की लहि काना * सबहुन गिरिनन कीन्ह पयाना
जाय दशानन सैन समेता * शोधिसि देवन केर निकेता
जो सुर पुर घर मारग पावा * तिन्हें पकरि निजलङ्कहि आवा
रावण लङ्कहि गा सुनि काना * बसे अमर पुनि निजनिजथाना
सुरपुर विबुध बसे सुनि पावे * तब खल दल लै आतुर धावे

रहैं सजग जब आवत जानैं * भागि जाहिं सुर समर न ठानैं
एक दिवस अहमिनि अधिकाई * श्वेतद्वीप में पहुँचा जाई

दो० युवतिन ते बोला बलकि, कहा गये सुर बङ्क।
तिन्हैं जीति संग्राम मे, तुम्हैं जाहुँ लै लङ्क॥

सो० सुनि इक जरठ रिसाइ, पकरि पछारि उछारि नभ।
दीन्हेसि सिन्धु बहाइ, ह्वै अचेत निकसा सुतल॥

पुनि धरि धीर टोकि भुजबीशा * बलिदिगजाय नवायहु शीशा
वैरोचनसुत आदर दयऊ * कुशल बूझि तब बोलत भयऊ
तव प्रसाद सब आनँद होई * सुर सन्मुख ह्वै सकत न कोई
तुमहूँ निज शत्रुहि गहि लीजै * चलि महिलोक राज निज कीजै
कहबलिकनकरिपुकेमण्डन * पहिरिलेहु तुम सुनदुखखण्डन
लाग उठावन उठा न कोई * याही पौरुष ते जय होई
जिन ये अलसब अङ्गन धारे * ते भट गे इक चणमा मारे
तेहि ते भवन जाहु लै प्राना * चला तुरत मनमाहि लजाना
वामन दीख जात अभिमानी * लीन बगट शिशुन के पानी
मारत लात जात गरिआवत * निज निज द्वारे फिरे देखावत
दीन देखि प्रभु दीह छुड़ाई * पग्गापुर तब गर्ज्जा आई
प्रथमै बालि बहुत समुझावा * सुनेसिननव गहि बगलचपावा
सन्ध्याकारे वर बाँधेसि आनी * छोरि दीन लखि तारा रानी
तब हरिपुर रेवातट गयऊ * सहसबाहु तह क्रीडत रहऊ
जलअस्तम्भकिहेसितेहिजाना * पकरि पाणि हयशाले आना
शिरन दीप धरि नृत्य कराया * सुनि पुलस्त्यमुनि जाय छुड़ाया
लज्जित ह्वै कुलगुरु दिग गयऊ * निज वृत्तान्त सुनावन भयऊ
कह कवि नर हरि दिहेऊ बराई * तेहिते तुम वर विजय न पाई

तासु शोच चित धरहु न ताता * मैं जो कहौं करहु सो बाता
अब तुम निज उर शिवपद धरहु * जप तप जाल भाल मख करहु
अभिमत वर शङ्कर ते लीजै * विश्व सुवश करि पुनि सुख कीजै
सुनि तुरते गा सिन्धुमर्यादा * लाग करन तप दनुज महीपा
बीस सहस्र वर्ष तप कीन्हा * भालयज्ञ में पुनि मन दीन्हा
वर्ष पांचशत निज कर नीचा * हुने शीश पावक के बीचा
यहिविधि मस्तक देखि पुरारी * कहेनि मागु वर रुचि अनुहारी
सुनि बोला बाला दशभाला * अजरअमर मोहि करहु कृपाला
कह शङ्कर सुनु वचन हमारे * विधिके अङ्क टरहि नहिं टारे
त्यहिते जा तप कीन्हो भारी * तुव तन बल होइ अधिकारी
शीश समर्पि दिन्हो तुम मोहीं * एक ते कोटि देव भे तोहीं
शिव वर अचल पाइ मनभावा * हर्ष सहित निज मन्दिर आवा

हरिगीतिका छन्द ॥

आवा भवन निज चटक माजि सुरेश पर बावत भयो।
गयभागि हरि वैकुण्ठ तजि लखि क्षीर दधिवलिदिगगयो॥
सोइ पहिरि भूषण सकलतनमनमाखि कपिपतिपुरढरयो।
मिलि चालि जोरी मित्रता सुनि सहस्रभुजहू सोइ करयो॥
सो० अनर नाग नर यक्ष, गन्धर्व किन्नर बरसुता।
जीति बरेसि परतक्ष, बचे न लागे हाथ जे ॥

इति श्रीविश्राममागरसचमन्त्रागरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथतारा
रामसनेहीकृतरावणोत्पत्तिअरुयुद्धविषेजयपराजयवर्णनो
नामप्रथमोऽध्याय ॥ १ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि।
कहौं बृहद सम्मत कछुक, कोकिल काव्यबखानि ॥

यहि विधिरावण विगतवियोगा * करै लाग सुर दुर्लभ भोगा
पल भर्च अरु मदिरा पावै * सतत सुर मुनि मनुज दुखावै
मयजहिपनिकृत रुचै न लेशा * जब तब करै नीति उपदेशा
सो सिख दशकंध नहि भावै * नीच नीचहीं कर्म सुहावै
एक दिवस नारद तह आये * प्रथम दशमुख सभा सिधाये
दण्ड दोय ताकी रुचि गाई * पुनि मयजा घर गे ऋषिराई
करि प्रणामसबविधि सनमाना * आसन दै बोली मृदु बाना
देव देखिमोहिनिजपनि करणी * संशय होत जात नहि बरणी
ताकर होई कौन हवाला * त्रिकालज्ञ फुर कहो कृपाला
बोले मुनि तप बल विधुधारी * करन और करिहै सब भारी
पुनि सुर मुनि हित त्रिभुवनराई * सूर्यवंश अवतरिहै आई
पितुनिदेश करिहैं वन पावन * तिन की रमणि हरी तब रावन
लङ्कहि जब जगदम्बा आई * तल सरिस कपि लङ्क जराई
सेतु बाधि ऐहै प्रभु पारा * कुटुंब सहित करिहै संहारा
होव सुखी सुरविप्र समाजू * करिहै अभय विभीषण राजू
असकहि कुम्भकरणटिग गयऊ * सुनि मयजा उरअतिदुखभयऊ
करि विचार मन राखिसि गोई * हरि इच्छा होई सो होई
कुम्भकरण तेहि अवसर जागा * मुनिहिदेखि उठि चरणनलागा
कछु हरिगुण ऋषि ताहि सुनाये * पुनि मुनिवर विधिलोकसिधाये
कुम्भकरण पुनि सोवत भयऊ * यहिविधिकछुककालचलिगयऊ
विपुल पुत्र भे रावण केरे * सब विद्या बल बुद्धि घनेरे
वारिदनाद जेठ सुत ताका * प्रथम जासु सुभटन महँ शाका
सो जब बीस अब्दकर भयऊ * तब तप करन हेतु बन गयऊ
वर्ष सहस्र किहेसि तप भारी * आय शक्ति तब गिरा उचारी

मांगु दान वर निज मन भाना * मेघनाद अस बचन सुनावा
आनहु रथ सब साज समेता * देहु एक मोहि कृपा निकेता
जोइपर चढि रहे मैदाना * जानहु सकल वीर बलवाना
सुनि रथ लेन सब दौड़ा देखी * बोली बचन जानि निज सेवी
यहि रथका तुम करेउ छिपाई * अतिरण कठिन परे जब आई
दोहा तब यहि पर आरूढ़ है, जायहु व्योम मझार।
युगलयाम करि युद्ध तहँ, जितिहौ सुभट अपार॥
जो त्यागी द्वादश वरष, नींद नारि अरु अन्न।
सो सुतमारी तोहि जग, अपर न मारी जन्न॥
सुनि शिरनाइ मुदित गृह आवा * रथ हरि गरि पुनि बनहि सिधावा
तप करि बा लीन्हसि शिवनेरे * समर समय भय होय न मेरे
एवमस्तु कहि गे गिरिजाई * पुनि आया गृह शौच विहाई
एक दिवस ल सुभट अपारा * सुरपति के वन टनिसि शिकारा
सुनि वासव मन बहुत गिमाना * चढि ऐरावत कीन पयाना
मेघनाद लखि चाप चढ़ाई * मारे शर सजि के बहु धाई
लागत शर विद्रुम करि क्रोधा * धावा पटल मरे तहँ योधा
पुनि गज झकपटि धरयो तेहि गयऊ * वारिदनाद तुण्ड गहि लयऊ
सुरपति मारे वज्र घनेरे * लागत मनहु कुसुम करि केरे
नाग सूँड़ि तेहि छाड़ी नाहीं * लावा गहि लङ्कहि पितु पाहीं
देखि पराक्रम निज सुतकेरा * दशमुख के सुख भयो घनेरा
बोलि सकल बाजन बजवाये * उत्सव करि बहु रत्न लुटाये
लङ्कहि गे हरि विधि सुनिकाना * आये जहँ रावण बलवाना
हंसारूढ़ विधातहि देखी * दशमुख उर भा हर्ष विशेखी
पुत्रसहित उठि नायो माथा * दर्शन दै मोहि कियो सनाथा

अब सो कहौ आयो जेहि हेता * तब बोले अज कृपा निकेता
वारिदनाद धन्य बल धामा * अब ते इन्द्रजीत भा नामा
शक्रहि देउ अमरपुर जाई * अब तुम ते नहिं करी लराई
ब्रह्म बचन सुनि कह्यो सुरारी * बचन तुम्हार सकै को टारी
कहिसि जाउ सुरपति निज गेह * प्रभु प्रसाद कछु पुत्रहि देहू
तब विधि बाण शक्ति यक्ष्यऊ * निष्फल होय न असकहिगयऊ
सुनि घननाद बहुत हरषाना * नागलोक तब किहिसि पयाना
जहँ वासुकी तहा चलि गयऊ * देखि नगर अतिगर्जत भयऊ
सुनिधुनिअहिपति व्याल बटोरी * आइ घेरि लीहेनि चहुँ ओरी
दोउ दिशि ते शर छूटन लागे * भीजे सकल रुधिर ते बागे
चौदह दिन तहँ भई लराई * तब सब पन्नग गये पराई
रहे अकेले अहिपति जाना * गहिसि झपटि लघुदामसमाना
तुरतहि निज लङ्कहि लै गयऊ * रावणका दरशावत भयऊ
पुनि लावा निज मन्दिर बीचा * बाधेसि सेज सिरहने नीचा
वासुकि उर भइ पीर अपारा * तब फणीश अस बचन उचारा
दण्ड चहो सो हम से लीजै * जीवत मोहिं छाडि अब दीजै
कह घननाद सुनहु अहिनाह * कन्यादण्ड देहु घर जाहू
उरगगर्ज तेहि जानि प्रचण्डा * देन कहो निज दुहिता दण्डा
सुनि घननाद छाडि तब दयऊ * हर्ष वासुकी के कछु भयऊ
ले आये निज लोकहि ताही * दीन सुलोचनि सुता विवाही
अतिसुन्दरि घरनी जब पाई * आवा तब लङ्कहि हरषाई
मात पितापद शीश नवावा * पुनि पत्नीयुत निज गृह आवा
लाग करन सुख शोच बिहाई * अपर सुनो अब ताकर भाई
अक्षयकुमार सघन बन गयऊ * महाकठिन तप साधत भयऊ

सहस बर्ष बीते हरि आये * मागु तात वर बचन सुनाये
तब तेहिं कहा सुनहु भगवाना * देहु मोहिं यक तीक्षण बाना
जेहिते रण रिपु जीतहुं भारी * दै कर शर अस कयो पुरारी
येहि विशिखै लै घर सुतजाहू * कपियक तजि जितिहौसबकाहू
सुनिसमोद निजमन्दिर आवा * त्यहिक्षण मन्दोदरि सुत पावा
बीस व्यालयुत मुनि विबुधारी * राखन योग न मनसि विचारी
श्वानानन ते कहेउ बुलाई * आवहु याहि गाडि कहुं जाई
दूत दाबि नैर्ऋत्य सिधावा * पृथ्वी खोदि तोपि तरआवा
रघुपति चरित करनहित आगे * मरा न सो बालक तेहि लागे
खायसि खनि माटी यकमामा * पुनिगा निकरि नीरनिधि पासा
त्यहिलखिराहु जननि अनुरागी * भवन लाइ निज पालन लागी
यक दिन तहा शुक्र चलिआये * बोले पुत्र कहा यह पाये
छाया गृहयि कह्यो तब आई * त्यहि विधि उदधितीरते लाई
दनुज पूज्य पुनि बचन उचारा * यह है रावण केर कुमारा
आदिहि ते सब चरित सुनाये * अहिरावण धरि नाम सिधाये
निज उत्पत्ति सुनी त्यहि जबहीं * कृदिपरा सागर महं तबहीं
निकसा तुरत वितलमहं जाई * तहा रहै अहिपुरी सुहाई
सत्तरि योजन बसत ललामा * चामीकरके अति सुठि धामा
दर्वाकर तहँ रहे गुवारा * सो बासुकी केर सग सारा
तासु पुरी लखि कौतुक नाना * पुनिगा जहँ नित होत पुराना
तप प्रभाव तहं सुनि अधिकाई * सपदि विपिन पहुँचा हरषाई
वनमें लखी नदी यक बहई * कामदना देवी तहँ रहई
सुथल समुक्तितहध्यान लगावा * सवत चौदह सहस बितावा
सबविधि देखि समाधि अडोली * बरम्यूहि तब देवी बोली

दुष्ट वचन सुनि बहु करजोरी * मागिसि वर करि विनय बहोरी
अमरन ते अधिकी सुख करहू * जीतहु त्यहि ज्यहिके सग लरहू
दो० शेश महेश दिनेश सुर, ईश अजेश अनन्त ।
मरौ न काहू हाथ मैं, होउँ निशाचर कन्त ॥
पितहि कीन्ह अपमान हमारा * सोऊ मोहि याचै यक बारा
सुनि देवी बोली सुनु ताना * करिहौ तुम बहु विधि सुखगाता
बैता शेष समय दशशीशा * याची तोहि जोरि भुजबीशा
मारी तुम्हैं न कोउ जग माहीं * कपिक मम बाचा बश नाहीं
तेहि प्रभुते जनि किहेउ कुचाली * तौ न अजर अमर कहिचाली
रहनलाग तहँ दनुज कुमारा * अगणित खग मृग कर अहारा
यहिविधि वर्ष पाचशत बीती * तब खल करनलागु अनरीती
विविध वेषधरि अहिपुर जाई * अज गज हय खर डारहि खाई
एक दिवस दर्बीकर राजा * चरनगये त्यहि सहित समाजा
अहिरावण करि कठिन लराई * दीन्हे सकल नाग बिचलाई
तब दर्बिक अनन्त पहँ गयऊ * सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ
सुनि बोले करि शेष विचारा * अहिरावण तप बल अधिकारा
त्यहि ते नहिं ऐहौ बरिआई * कन्या दे मिलि राहौ जाई
तब दर्बिक बुलवावा ताही * दीन्ही विधिवत सुता विवाही
कुन्दनि नाम पाय बर नारी * हरितनि ते तब गिरा उचारी
अब सब होउ बिगत सदेहू * करिहौ मैं कानन महँ गेहू
अस कहि कामदना दिगआवा * योजन नवकर नगर बसावा
असुरन सहित रहै त्यहिमाहीं * करनलाग सुख सागिन जाहीं
बासव चरित जौन मैं गावा * आदि रमायण मैं सो पावा
जो रिपु कर प्रभाव कह कोई * सो त्यहि घातक कर यश होई

स्थिति राम लषण हनुमतकर * वरण्यो वीर्यन असुरनकर वर
यहिविधि सुत दशकन्धर केरे * भये भूमि रिपु देवन केरे
जो सबहिन के चरित सुनावो * बाढै कथा पार नहिं पावो
औरो निकर निशाचर बीरा * मेघनाद आदिक रणधीरा
गुरुमुख खरमुख करिवर नादा * जम्बक भाल कुमुदकर बादा
कुलिशदन्त श्वानानन पापी * अग्रम केतु शूकर सुखदापी
कुम्भ निकुम्भ अकम्पन शूरा * केश प्रकेश महिष भपकूरा
कूटमहस्त समान न गेपी * तारा ऋस्त नखन भष दोषी
खर दूषण त्रिशिरा मनिअन्धा * बक विराध अतिकाय कबन्धा
कालनेमि सुबाहु मारीचा * ऊर्ध्वकेश मञ्जारा नीचा
इन्द्रकेतु लवणासुर मारे * एक एक जग जीतनहारे
इन सब के संयुत दशभाला * कर लङ्क बसि राज विहाला

इति श्रीविश्रामसागरेमेघनादअहिरावणविजये
द्वितीयोऽध्याय ॥ २ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बृहद रमायण कहौं कछु, कौशल चरित बखानि ॥

एकबार सग ले कटकाई * विश्वविजय हित चला बजाई
फिरि आया तीनो पुर माहीं * सन्मुख समर कीन कहु नाहीं
सब रावण मन कीन गुमाना * हमसम सुभट न जगमें आना
लव सब योधा लिहिसि बुलाई * आदर करि निज दिग बैठाई
त्रिभुवन भेद लेन के हेता * पठन लाग्यो देश निकेता
निशिचर अर्ब पचास समेता * काशमीर पठया खरकेता
सौरठ देश दशानन गयऊ * नब्बे अर्ब असुर सँग दयऊ
मुकरेश करनाटक दीन्हा * सर्ब सवार असुर सेग कीन्हा

मञ्जारा मालवै पठावा * उभय अर्व तमचर लै धावा
बकवकत्र निशिचरणाधीरा * खर्व अढाई संग लै वीरा
मारवाड वरकानन वीचा * आय रहा अधमाधम नीचा
भेषासन भट लै दश अर्वा * चला कलिङ्ग देश सह गर्वा
गेरह अर्व असुर लै तारा * वङ्गदेश कहँ मुदित सिधारा
वीस सहस्र अस्थि भष लयऊ * अरुण मृत्तिका देशहि गयऊ
अर्व ऊर्ध्व कच नरभष पाई * मगह देश आवा हरषाई
चौदह अर्व खुर्ज नख पाये * मुख विष लै गुजरात सिधाये
असितकोटि षोडशखल लीन्हेउ * आरव देश पयाना कीन्हेउ
अयुत कोटि भट लै मारीचा * सङ्ग सुवाहु ताडका नीचा
गाधिपुरी ढिग कानन भारी * रहे आय तहँ खल अघकारी
लक्ष अठारह सहस छियासी * लवणासुर लै खल बलरासी
घन बन कोलपुरी के पासा * हर्ष सहित तहँ कीन्हेउ बासा
मन सहस्र लै भट बलवाना * दण्डक बन इन कीन पयाना

दो० प्रथमैं खर दूषण उभय, तीसर त्रिशिरा वीर ।
चौथ विराट कवन्ध कहि, पञ्चम सब रणधीर ॥

शत शत योजन बन बिलगाई * रहे कटक लै पाचौ आई
यहिविधिसकलदेश दशशीशा * दीन्हे बाटि अधम रजनीशा
जहँ तहँ विविध वेष धरिचरहीं * हिंसा करत न नेकहु डरहीं
कोनिउ बात कतहु लखि पावै * तुरत आइ रावणहि सुनावै
भुजबलविश्वस्ववश करिराखा * सुभट स्वतन्त्र न एकहु राखा
मण्डलीकपात पाय प्रकासा * कीन्हिसि सकल देव निजदासा
आयसु जासु दिहिसि करि कोई * सन्तत सभय भजै तेहि सोई
सादर वेद विरञ्चि सुनावैं * दर्शन देन पुरातक आवैं

यम प्रतिहार पाक भय करई * शक्रा पयद छत्र शशि धरई
झाल्दार पवन बलगसी * महामृत्यु धोवत पग दासी
वरुण कुबेर नाग नर देवा * आय करैं सब यहिविधि सेवा
एकबार कैलासहि गयऊ * सुमन समान सुकर धरिलयऊ
मनहुँ जोरि भुजबल थलराखी * आवा भवन गवन अभिलाखी
यहि प्रकार बीते बहु काला * एक दिवसकर सुनहु हवाला
घननादादि रहैं जे बीरा * तिन्हैं बोलि बोला रणधीरा
सुनौ रहे सुर शत्रु हमारे * ते तौ मे सब विवश विचारे
विष्णु विबुध दिशि बारकबारा * आये तहँ मैं मुष्टिक मारा
शत योजनपर गरुड समेता * गिरे जाइ फिरि फिरे न खेता
सुख सहाय बिन सन्मुख तेऊ * कबतक रहिहैं दुरे दुखेऊ
अब यक बचा रहत भगवाना * जाहि जपत मुनिसन्तसुजाना
सो न परत कहुँ दृष्टि हमारी * त्यहि जीतन हित बात विचारी
साधुनवश सो रहै श्रुति गावै * जो वै अर्पन सो वो पावै
त्यहिते सन्त सतावा जाई * जप तप करन न पावैं भाई
जब ह्वैहै यहि बल ते हीना * तब तेउ मिलिहैं आइ अधीना
तब मरिहौं की छाडिहौं देखी * कीन चहौं रिपु स्ववशविशेखी
सुनि धाये जह तह तमचारी * लागे करन उपद्रव भारी
योग यज्ञ कोइ करन न पावै * विप्र धेनु जन धरि धरि खावैं
हरि हर घर पुर देहिं जराई * श्रुति पुराण कोउ सकै न गाई
जे जन दान पुण्य परकासैं * पकरि ताहि खल बहुविधि त्रासैं
जेहि विधि होय धर्मके हानी * सोइ करैं अहनिश अभिमानी
बाढे पतित पाप समुदाई * तबतौ अवनि उठी अकुलाई
धेनु धाम धरि गइ बिधिलोका * कहतभई निज विपति सशोका

धीरज दै अज कह्यो बुझाई * यामें कछु नहिं मोरि बिसाई
तेहिते सकल देव यकबेरी * करहु सप्रेम विनय प्रभुकेरी
दीनदयालु दीनजन जानी * करब कृपा मिलि अस्तुति ठानी
जय जय जय जगपतिसुखकारी * जय जय करुणासिन्धु मुरारी
जय जय मायारहित अनन्ता * जय जय दुरधर्ष भगवन्ता
जयजय अविगत अलखअनूपा * जय जय सतचित आनँदरूपा
जय जय वेद भूमि उद्धरता * जयजय विश्व सन्तहित करता
जय जय सृष्टि उपावनहारे * जय प्रभु सकट हरौ हमारे
रावण असुर दंत दुख भारी * पाहि नाथ हम शरण तुम्हारी
इमि अमरन जब विनय सुनाई * भई गिरा नभ गगन सुहाई

दो० अब सब निरभय होउ सुर, भूसुर सन्त सुभाय।
तुम्हरे हित कौसलपुरी, धरिहौं नरतनु आय॥
कौसल्या दशरथ भवन, लै स्वच्छन्द अवतार।
करि तहँ बालचरित्र पुनि, मरिहौ शत्रु तुम्हार॥

सुनि नभगिरा सकल दुखहाना * हरषे सुरमुनि सहित विधाना
तब ब्रह्मा देवन ते भाखा * अब सब होउ जाइ मृगशाखा
हरि हित सकल विविध हरषाई * करहु भये यपि बपु जग आई
जो अवतार सबन के कहऊ * जाहि अभ पार नहिं लहऊ
रहे पूरि महि गिरि बन नाना * प्रभु मारग चितवै बलवाना
यह सब चरित सुना विधुमारी * जन्मतहीं हत करब विचारी
बसत सकल गमनश रविवंशी * ते का सहिह मोहि विध्वंसी
तद्यपि सजग रहै का हाना * तिन असुरन कछु तहँ थाना
उत्पति मरण आदि कछु होई * करि सम्मत पहुचाव सोई
भये दिलीप भूप जब आई * जानि असुर सब तिन्हे दबाई

सुनि रावण चल देखन आवा * द्विज लखि सब रानिन बैठावा
पूजत पद प्रकटसि निजरूपा * भागी भवन भीरुमणि भूपा
तब रावण सरयूतट आयो * अचवन तन्दुल नृपति चलायो
पूछ्यो रोगन ते तब कहेऊ * धनुहि हरि इक मारन चहेऊ
सुमिरत सर्पादि शालहो प्रेरे * शत शर ह्वै लागे हरिकेरे
सुनि दशमुख मनअचरजआवा * देखा जाय मृतक बग पावा
समुझि प्रताप गयो निजधामा * नृपने हाल कहा नृप वामा

दो० रावणकृत सुनि अवधपति, चगुलभरि जललीन।
पवनमन्त्र पढ़ि क्रोध युत, दक्षिणदिशितजिदीन॥
भये बिशिख दशलाख लखि, कह नृप लङ्कहि जाहु।
सहित त्रिकूट समुद्र महँ, बारिफिरहुतेहिनाहु॥

सो० चले पवनगति मोरि, जात उलटावन लगे।
मघतनया कर जारि, दीन दुहाई नृपतिकी॥
इहां न कोउ नृप आहि, सुनिआये महिपालढिग।
अकनि कह्यो गुरुपाहि, यह मुनि रहौ चुपाइ अब॥

रामि दशसहस्र बर्ष चलिगयऊ * रघुराजा तब परचो दयऊ
मारुत बाण दहन गृहलागे * बनिता विनय वचन सुनिन्यागे
बहुरिभय अज अवनिप कानन * माझ देखि रणरच्यो दशानन
अनिल अस्त्र ते कटक समेता * दीन्हें ताहि पहुँचाय निकेता
तेजवान लगि रहा चपाई * तेहि पाछे भे दशरथ राई

दो० दशसहस्र रविकर लखे, दशौं दिशा रथ जाहि।
दशशिररिपु प्रकट सुवन, कहिये दशरथ ताहि॥
सुनि रावण निजदूतमुख, मांगि पठायो दण्ड।
हरिशर प्रेरे भूपकहि, जब्यो कपाट प्रचण्ड॥

जो रावण पट लेइ उघारी * तौ हम कर देई तिन रारी
मन्दिर द्वार गये सब मूंदी * रहा उघारि असुरपति खूंदी
टसक्यो पट न भटक मु वमारे * मिली मार्ग मयजा करजारे
तब रावण नभ बात विचारी * बिपिन जाइ कीन्हिसि तपभारी
वरबूहि ब्रह्मा जब भाषा * बोला तब दशमुख अभिलाषा
दशरथ नृप बीरज तें सोई * जगमें पुत्र न प्रकटै कोई
सुनि स्रष्टा मन में दुख माना * एवमस्तु कहि कीन पयाना
तब दशमुख कोसलपुर गयऊ * कौसल्यें हरिलावन भयऊ
सहित मँजूषा सागर जाई * रावन मच्छ दिहिसि सोपाई
चतुरानन धरि रावण रूपा * लाये मागि सुता सोइ भूपा
बनमें धरि बिधि गे निजलोका * तहँ सुमन्तु पट खोलि बिलोका
कन्या ते बोले मृदु बानी * तुमहो किनकी सुता सयानी
तब कौसल्या गिरा उचारी * हम हैं कोसलराज कुमारी
नहिं जाना को बन में लाया * सुनि सुमन्तु तुरंत उठवावा
लै आये कोसलपुर तामा * रोदन होत रहे नृपधामा
जाय मँजूषा भूपहि दीन्हा * जेहिबिधिमिलातो वर्णनकीन्हा
बोले नृप तुम को हो ताता * कह सुमन्तु सुनिये प्रभु बाता
अवधपुरी नृप दशरथ नामा * धर्मधुरन्धर सब गुणधामा
बलनिधि लैनिधि रघुकुलदीपा * तासु सचिव हम ब्रह्मनु महीपा
सुनि राजा बोला कहि धन्या * तब नृपका बरिहौं मैं कन्या
तुरते नाऊ विप्र पठावा * नृप के टीका आइ चढावा
चली बरात बिपुल नरनाहा * बड़ी धूम ते भयो बिवाहा
बिदा कराइ फिरे सब धामा * मग खरादि रोक्यो सुनि नामा
कौसल्यें पत मुनि थलराख्यो * शिव बरदान अभयगुरु भाख्यो

आप समरकरि असुर बिडारेयो * देखिविजयसुर जयनिउचारयो
दो० सहँ बिरधासन सुन सुता, नाम सागरा आनि ।
दीन्ही ब्याहि सुमन्तु कहँ, सुभग गर्गकुलजानि ॥
दीन्हो दायज विविध प्रकारा * भये मुदित मुनि सहित भुवारा
पुनि ह्वै बिदा निलय निजआये * बहुविधि दान याचकन पाये
तब ककयी सुमित्रा परनी * तन पाछे ब्याही बहु घरनी
करहिं सदा सेवा सब रानी * पालै भूप प्रजहि मनमानी
नवसहस्र सम्बत चलि गयऊ * तब नृपके मन विस्मय भयऊ
बयपन गे चौथो अब जाना * हम पुत्र नहिं दीन विधाता
बिन बालक सुख कौने काजा * सकल जानि दुखकर समाजा
जल बिनसर जिमि गृहबिनदीपा * तिमि बिनअङ्गजमलिनमहीपा
यहिविधिकरि विचार मनमाहीं * आये चलि बशिष्ठ के पाहीं
माता पिता गुरु बड़भाई * साधुन के ढिग आपुइ जाई
चरणनाइ शिर आयसु मागी * निज कामना कही अनुरागी
दुख सुख मन्त्र औषधी दाना * सुहृद बिना नहिं करिय बखाना
दो० मुनि बशिष्ठ बोले मुदित, भूप धरहु मन धीर ।
ह्वैहैं तुम्हरे चारि सुत, गुणसागर बर बीर ॥
अब तुम सुत बिभाण्डकेजावो * शृङ्गी ऋषे इहा ले आवो
हैं नृप निकट प्राग मे आये * लोमपाद मख हेतु बुलाये
पठे अप्सरा कानन माहीं * छल करि सो लाई नृप पाहीं
रहे अवृष्टि नासु के देशा * मख कराइ भे सुखी नरेशा
ऋषिहिशापडर जेहिविधि चाही * दीन्ही शान्ता सुता बिवाही
सुनतैं नृप निज मन्दिर आये * हय गज बाहन बिपुल सजाये
रहा सातसै साठिउ रानी * द्वादश-तीनि तायफा जानी

मन्त्री मित्रसैन अवगाहा * सबके सहित चले नरनाहा
पुर बाहर निकसे नृप जैसे * लागे होन सगुन तहँ ऐसे
देखा नकुल निडर दधिमत्सा * बिप्र तिलकयुत गोसहबत्सा
पूरण घट पटपीन निहारा * बाये मधुप करत गुञ्जारा
दीप अन्न गणिकाकृत नाना * अहिवाती तिय खाये पाना
नारि ससुवन फूल फल देखे * दहिने पग बग ठाढ़े पेखे
चील्ह श्वान मुखभक्ष समेता * श्रुतिधुनि आनँद होन निकेता
दहिने मृग मिल तीतर कागा * सारस मोर शोर भल लागा
खञ्जन उत्तर दक्षिण प्राची * बायेदिशि रव जम्बुक राची
मन महँ हर्ष चलतपर होई * त्यहिसम सगुन और नहिं कोई
हरि उत्पति कर कारण पाई * मानहु साच भये सब आई
यहि विधि दशरथ आगहि आये * लोमपाद मुनि लेन सिधाये
लाये निज मन्दिर सनमानी * तब नृप नृपते बात बखानी
लोमपाद सुनि अतिसुख पावा * शृङ्गीऋषि ते जाइ जनावा
तुम्हें लेन आये अवधेशा * जाहु नाग अब इनके देशा
राम जन्मकर आगम जानी * भूपसङ्ग चलिभे मुनिज्ञानी
अवधनगर आये ऋषिनाथा * पुरवासी सुनि भये सनाथा
सरयू तट तहँभा मख साजा * जुरे विपुल बरानस राजा

गीतिकाछन्द ॥

नृप सारयूके तट कियो आरम्भ जब मखकेरजू ।
सुनि रत्न नानाभांति हय गज भूप लाये ढेरजू ॥
तहँ लिये अगणित हेमघट द्विज भरे उदक ललामजू ।
यज्ञान्त के अस्नान कारक महामङ्गल धामजू ॥
अरु औषधिन को सुरस दीन्हो औषधीश पठाइजू ।

विधि विष्णु श्रीसलिलेश सिद्धी शम्भुगण सुखपाइजू ॥
दिशि पूर्व पश्चिम और दक्षिण सिन्धु को बरवारिजू ।
नवरत्न खचित सुकुम्भ आये भरे सहसन भारिजू ॥
धन दियो धनद पठाइ बहु रहै यदपि इत कम नाहिजू ।
अमरेश पठये देवता सब गुप्त रक्षक ताहिजू ॥
अतिऋद्धिमें महिपाल शोभित भयो बरण समानजू ।
जब तब यथोचित कर्मकृत किय गुरुनिदेश प्रमानजू ॥
महिदेव भोजन रत्न दान सुदेइ आहुति पर्मजू ।
यजि तृपित कीन्हो सुरन कहँ सब भातिनों सह धर्मजू ॥
सुर विप्र आदिक वर्ण चारो भरे मोद ललामजू ।
वसु अन्न दान महान आहुति पाइकै अभिरामजू ॥
ऋषि नारदादिक वेदविद बहु लसत वेदी पासजू ।
लखि पूर्ण मख दिन अग्निकी नृपकरी बिनय प्रकासजू ॥
जय यज्ञपति तुम देवतनके वदनहौ अभिरामजू ।
तुम करत पावन जगत ताते अहै पावक नामजू ॥
हौ वहत हव्य सुकहत ताते हव्यवाह समर्थजू ।
पुनि जातवेदस नाम याते भये वेद स्वदर्थजू ॥
हरि चित्रभानु सुरेश अनल हिरण्यरेता रामजू ।
हौ स्वर्ग के तुम द्वारदाता ज्वलनशिखि सुखधामजू ॥
विगेश विश्वानर प्रवर्ग सुभूरि तेजस सर्वजू ।
सुकुमार सूभगवान रुद्र हिरण्यगर्भ असर्वजू ॥
ऋषि विप्र देवत दनुज के तुम यज्ञकारक आमजू ।
जगधूमकेतु व हेतुहै तव पापनाशक नामजू ॥
हे सारभुक तुम वेहु हमका सुमन वाञ्छित पूरजू ।

करैं होम जो मन्त्र पढ़ि यह होय सोकर भल्लजू ॥
दो० श्रृङ्गी ऋषि तब प्रीतिते, दीन्ही आहुति सार ।
प्रकटे पावक तेजनिधि, लीन्हे हविकर थार ॥
बोले रवि नृप हवि यह लीजे * यथायोग निज रानिन दीजे
होहैं बालक चारि अनूपा * जो प्रथमे वरयो ऋषि भूपा
अस कहिभे भुक अन्तर्धाना * मुनि समाज सकलौ सुखमाना
तबनृपलीन्ह्यो बोलि विचित्रा * कौसल्या केकयी सुमित्रा
गुरु वशिष्ठ हरि बाट बनाये * चारि भाग भूपाल लगाये
उभय दीन कौसल्यै तहिया * तीसर भाग केकयी कहिया
चौथ भागके युगल बनाये * कौसल्या केकयी गहाये
तिनमन मुदित सुमित्रहि दीन्हे * निज निज भाग पाइ सोइ लीन्हे
यहि विधि रूपशीलगुणखानी * भई गर्भ सयुत तिहु रानी
दिन दिन तेज बढत तन जाई * मनहु उगे बिधु मन्दिर आई
सुख समेत कछु काल बितावा * रामजन्मकर अवसर आवा
भे अनुकूल सकल शुभयोगा * प्रमुदित विश्व चराचरलोगा
बन उपवन फूले तरु नाना * शीतल मन्द चलै पवमाना
ब्रह्मादिक नभचर नभ धाई * बरषि सुमन दुन्दुभी बजाई
गावहिं गुण गन्धर्व सुरागा * अस्तुति करहिं देवमुनिनागा
चैत्रशुक्ल शशि फर्क प्रमाना * नवमत पुनर्वसु अगिनतजाना
मध्य दिवस विश्रामद जानी * प्रकटे नव त्रिभुवन सुखदानी

चौपाईछन्द ॥

चैत्रमास सितपक्ष चपाकर धारजू ।
नौमीदिन श्रीराम लीन अवतार जू ॥
नील जलद तनश्याम काम छविकोटिजू ।

अरुण अलक बिच सुमन धरे जनखोटिजू ॥
शीश मुकुट मणि जटित जगमगत जालजू ।
श्रुतिमें कुण्डल ललित तिलक दिहे भालजू ॥
कमलनयन नासिका समेत बुलाकजू ।
जनु कवि कुज गुरु राहु बसे शुक हावजू ॥
बिम्बाधरबर बदन रदन दमकैं घनं ।
भृकुटी कुटिल कपोल गोल गहवर घनं ॥
कम्बु कण्ठ कल बचन बिशद कौस्तुभ लसै ।
उर मोतिनकी माल मनहु घनमें बसै ॥
भुजग भोग भुजदण्ड चण्ड धनु शर लिहे ।
कटि निषङ्ग सब अङ्ग अलंकृत हैं किहे ॥
पटदेहीं पटपीत पिछौरी पाटकी ।
दुगल जरकसी जाम दाम अनघाटकी ॥
चरणकमल मुनि बिमल जिन्हें नित ध्यावहीं ।
अंकुशादि बहु चिह्न सदा मोहि भावहीं ॥
देखि अलौकिक रूप भूपकौसलसुता ।
बोलीं जय जगदीश चरित तव अद्भुता ॥
बरणि न जानै वेद भेद बिन खेदजू ।
प्रणतपाल सबकाल कुटिलकृत छेदजू ॥
जय अनन्त सुरसन्त कन्त भगवन्तजू ।
जन मन मानस हंसबम बिचरन्तजू ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड रोमप्रति जासुजू ।
सो मम जठर निवास बड़ी उपहासजू ॥
तब प्रभु पूरब केरि कथा सकलो कही ।

पुनि ह्वै बालकरूप लगे रोदन सही ॥
सुनि नृपरानी सकल उठी हरषाइकै ।
कौसल्या पहें तुरत पहूंची आइकै ॥
दीख सवन सुखराशि सकल सौन्दर्यकी ।
कीन कृतारथ हमें कृपा गुनिवर्यकी ॥
खबरि पाइ अवधेश परम आनंद लह्यो ।
बाजहि बाजन बोलि बजनिहनते कह्यो ॥
आप सुमन्त समेत गये चलि धाम को ।
शिशुमुख सुखद बिलोकि करेउ परनामको ॥
पठये कुलगुरु बोलि सहित मुनि आयहू ।
त्रिभुवनपतिहि निहारि महासुख पायहू ॥
करि मज्जन महिपाल लीन कुशहाथ में ।
मुदित लगायो तिलक द्विजनके माथमें ॥
नन्दीमुख निज पितर पुजाये हितबरे ।
गुरुजन द्विज पहिराइ पाय सबके परे ॥
गा गज हय रथ हेम रत्न बाञ्छित दये ।
बहुरि बन्धुवर मित्र मानमण्डित भये ॥
मागध बन्दी सूत जाहि जिन याच्यहू ।
सोइ सोइ दीन्ह्यो ताहि न कोई बाच्यहू ॥
बिप्र वैश्य नृप शूद्र निधन वा धनमये ।
राम निछावरि लेन भिखारी सब भये ॥
नगर नारि नर वृन्द बिलोकन धावहीं ।
सहज श्रृंगार सँवारि मनोज लजावहीं ॥
अन्तःपुर धुर जाइ उतारे आरती ।

निरखि पुत्र को रूप स्वरूप बिसारती ॥
धन्य आजु को दिवस धन्य अबकी घरी ।
धनि रानी की कोखि जहां जन्मे हरी ॥
धन्य हमारे भाग लाग फल फूल में ।
करैं निछावरि छोरि गहन अनुकूल में ॥
पुरुषोत्तम परसाद चुके नहि नेकहू ।
याचक ह्वै ह्वै भूप गये बहुनेकहू ॥
बाजैं बाजन विपुल अप्सरा नाचहीं ।
गावैं गन्धर्व गीत समय सुषमा चहीं ॥
देव दुन्दुभी देहैं सुमन बरसावहीं ।
मृगमद कुंकुमगीर अबीर उड़ावहीं ॥
वन्दनवार पताक केतु सजवायहू ।
गोपुर कलश सुरङ्ग अधिक छवि छायहू ॥
बालक बृद्ध जवान जहां तहँ डोलहीं ।
सुर धरि मानुषरूप भूप जय बोलहीं ॥
तेहि क्षण डावरकेर ढाढि थक आयहू ।
राजहि शीश नवाय सुवचन सुनायहू ॥
सुनि रारेकर सुयश पैज हमहूं करी ।
निज भूषण सब देहु रुरुम गेराधरी ॥
चलत देखि बड़ पुत्र कह्या अस टेरिकै ।
दशवन्ती मम हेत लयायो हेरिकै ॥
बोला मांगिल तनय तुरंग तेतीसजू ।
लायहु मम हित मांगि ग्राम गुरु बीसजू ॥
पाछे छोटा दिन्न कह्यो ढंढ भरनको ।

लायहु महिपी मांगि बयालिस लरनको ॥
तब बोली माता मु ऐन्हीं आयहू ।
मम हित नेरहु धान पालकी लायहू ॥
पानदान परधान टहलुई तीनिजू ।
सुनि नृप हर्षसमेत सौज सब दीनिजू ॥
यहिविधि दानी देखि दास रघुनाथजू ।
लीनि भक्तिवर मांगि लागिगे हाथजू ॥
जो यह मङ्गल गावै सुनै सप्रीतिजू ।
बसै सो हरिपुर जाइ मिटै भवभीतिजू ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतरामजन्मउत्सववर्णनोनाम
तृतीयोऽध्याय ॥ ३ ॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौंभुशुण्डीचरित कछु, लोमश भणित बखानि ॥
रामजन्म के समय को, उत्सव शोभा सुक्ख ।
वरणि सकै नाहिं शेष मैं, कहा कहौं यक मुक्ख ॥

जो यह नवमी रहै उपासा * सो नर बसै रामके पासा
बेद पुराण कहत सब कोई * यहि सम बरत अपर नहिं होई
जन्मस्थान दरश जो करई * सो रविसुतपुर पाव न धरई
जन्म भवन के उत्तर कोना * बीस धनुषपर महल सलोना
तामें पुत्र केकयी जावा * दशमी के दिन परम सुहावा
दक्षिण ओर सुमित्रा धामा * तीस धनुषपर अति अभिरामा
जन्मे उभय सुवन निन तामें * रुचिर दिवस हरि तिसरे यामें
षट तिल यव त्रैअंगुल होई * चतुरंगुलकर मुष्टिक सोई

गट मुष्टिक का दण्ड बखाना * अष्टदण्डका धनुष प्रमाना
केकयि भवन सुमित्रा केरे * भई भीर मग मिलत न हेरे
यहि अवसर मुदमङ्गल शोभा * कहि को सकै देखि मन लोभा
दशस्यन्दन उरभा सुख जैसा * बरणि सकै को जग मे ऐसा
तेहि क्षण जो जन मागन जोई * ताहि देत हँसि भूपति सोई
देश देश के याचक आये * हय गय रत्न अनेकन पाये
भये रङ्क त सब धनवाना * जहँ तहँ करैं बडाई नाना
अतिप्रसन्न ह्वै देहिं अशीसा * जियें सकल शतकोटि बरीसा
अवधपुरी शोभा अधिकाई * जनु देखन बरषाऋतु आई
अगर धूम घन घटा समाना * बाजत बाजन गरजन जाना
बन्दीगण गुण बरणत मोरा * भवन वेदध्वनि दादुर शोरा
बरषत सुमन देवरंग भूरी * कर्दम मन कुङ्कुम कस्तूरी
विविध जीव नर सकुल राजे * विपुल विटपतृणहरित विराजे
जहँ तहँ कलश दामिनी चमकै * मन्दिरमणि खद्योती दमकैं
सुदिन धेनु सुर नर मुनि धरनी * आरु जवास असुर क्षय करनी
सम्पतिपाथ बढ़ारि पुरलागा * याचक पूरण भये तड़ागा
बचन बदत सब जहँ तहँ डोलैं * झन झन जनु झींगुर बोलैं
यह सब चरित जाय तब जाना * जब उर बसैं आय भगवाना
निज निज नगर देवगनि भूले * देखत फिरैं वीथिकन फूले
नाचहिं चपल अप्सरा नाना * हर्ष समेत देहिं नृप दाना
रत्न जटित पलना लै आवा * बढ़ई नेगु सुइच्छित पावा
कजरौटा लै दीन लुटावा * देखि भूप नग दये अपारा
मालाकार अग्र धरि डाली * पाये जलज थार भरि माली
सुपेकर बालसुवनिकमगाला * मन भावत वर दीन भुवाला

यहि प्रकारने सब पुरवासी * पायनि नेगु दास अरु दासी
कौतुक देखि भूलि रवि गयऊ * मास एक कर बासर भयऊ
खबरि पाइ उर धरि नृप ढोटा * बिमन गये रवि परबत ओटा
अस्त भये रजनी तब आई * बाजहिं घर घर अवध बधाई
गई रोशनी सब पुर साजी * लागी छूटन आतशबाजी
जरे कमल फन्नूसैं झाड़ैं * मानहु भये न दिनमणि आड़ैं
स्वांग अनेक विदूषक करहीं * सबनर मगन बिलोकत फिरहीं
जासु उदर बस भवन अपारा * सोवत सो प्रभु सूप मँझारा
सपनेहु जेहि मन खेद न होई * कहा कहा करि रोवत सोई
पालत बिश्व सकल सुख पावन * कौसल्या त्यहि क्षीर पियावत
महिमा जासु जात नहिं जानी * तिन्हें गोद लै बैठत रानी

दो० जाहि महेश बिरञ्चि मुनि, सुमिरत ध्यान लगाइ ।
तिनके तन नित सरगरी, तेल लगावत आइ ॥

सुनौ शिवा सन्तन सुखदाई * भक्तिवछलता प्रभु दिखराई
यहिविधि बासर पाच बितायो * छटवे दिवस छठी करवायो
जाति बन्धु नृप नेवति जेंवाये * भूसुर सकल दक्षिणा पाये
देखि महोत्सव सुर मुनि सारे * प्रमुदित निजनिजभवन सिधारे
बरहे दिवस जो बरहों कीन्हा * पुनि बहुदान द्विजनकहँ दीन्हा
कछुककाल सुखसहित बितावा * नामकरण का अवसर आवा
गुरु बशिष्ठ नृप बोलि पठाये * बिप्रनसहित तहा चलिआये
उठि नरेश सबहिन शिरनावा * षोड़श भाति पूजि सुखपावा
लोक बेद विधि मुनि करवाई * शिशुन सहित तिहुँ रानि बुलाई
आई मुदित सुवासिनि सङ्गा * उमा रमा शारद धरि अङ्गा
मिलि ललननमा गई शरीका * देखैं बाल विनोद हरीका

चारु चौक बैठीं सब रानी * शोभा शील सुकृतकी खानी
गोद मोदनिधि बालक लीन्हे * चितवत बड़भागी मन दीन्हे
रचा ऋचा ऋषिन उच्चारी * गणप गौरि द्विज साधु पुरारी
सब सबविधि पुजाइ अनुरागे * गणिगुणि नामधरन मुनिलागे

दो० जासु तेज चर अचरमें, व्यापक व्योम समान।
तासु राम अस नाम जो, सुखसागर भगवान॥
विश्वभरतसोइ भरतभनि, भवभञ्जन गुण जासु।
जेहि सुमिरे रिपु होइ हत नाम शत्रुहन तासु॥
सब लक्षण युत होइ जो, जानै जिय के काम।
रामानुजप्रिय भूमिधर, तस्य लषण अस नाम॥
ते बड़भागी जीव जे, करिहैं इनते प्रीति।
पैहैं बिन श्रम सकल फल, जैहैं जग रिपु जीति॥
यहिविधि सुन्दरनाम सुनि, हरष्यो सब रनिवास।
दीन दान सनमान निज, गे मन मुदित निवास॥

सो० पुनि कछु दिनमें आइ, पहुँच्यो प्राशन अन्नकर।
सुनि पुरलोग लुगाइ, हर्षसहित सबसे कहैं॥

छन्द॥ सखि आजु श्रीअवधशसुतको अन्नप्राशन आहिजू।
चट चलहु चलि अवलोकिये चपचकृत चाहत काहिजू॥
सुनि सकल साजि शृंगार आइं अमित मुद मङ्गल जहां।
लखि लालकिलिन्ह्यो लाइ रानिन दीन आसन जस चहां॥
बहुभांतिके भये सकल व्यञ्जन विविध बिधि मिष्टान्नजू।
नृप जातिबन्धु बोलाइ पठये परत पहुँचे कानजू॥
तब कौसिला कैकै सुमित्रा सुवन निज निज उबटिकै।
अन्हवाइ तन पहिराइ भूषण बसन सुन्दर दुपटिकै॥

पुनि कनक थार भराइ जाउरि धरी घृत मधु लाइकै।
महिपाल लैलै मुख जुठारत उठीं युवतिन गाइकै॥
परकार पटरसकेर जहँलौं सकल अधर छुवायहू।
पुनि तनक जलते पोंछि आनन जननि ढिग पहुँचायहू॥
हिय हरपि शिशुमुख चूमि सुंदरि सकल दुलरावलगीं।
अनपार भे जेवनार निज रचि सरस तहँरहै का लगीं॥
यहि भांति सुख दिन राति भोगत धन्य पुरनरनारिजू।
रघुनाथ कोसलनाथ सुत छबिनामपर बलिहारिजू॥

दो० बरष गांठि पाछे भई, गई दगाई बादि।
बिप्रन दीन्हीं द्रव्य बहु, लीन्हीं कीरति गादि॥
बारेहिते पति भृत्य ज्यों, राम लषणके प्रीति।
भरत शत्रुहनकी रहत, तेही तरहकी रीति॥

श्याम गौर जोरी दोउ देखी * जननि जनक सुखलहैं विशेखी
लै उछङ्ग बहुविधि दुलरावैं * छबि बिलोकि तृणतोरि बहावैं
रूप शीलनिधि चारो भाई * तदपि राम शोभा अधिपाई
मेचक मुदित कलेवर पीना * पहिरे पीत झांगुली झीना
उनमुख चिकुर चिकने सोहैं * शिर चौतनी अमोलिक मोहैं
ललित भाल मोरि बिन्दु बिराजै * भृकुटीकुटिल श्रवणअति भ्राजै
कठुला कण्ठ बाघनख नीका * नीरज नयन मयन शर सीका
द्वैद्वै दशन कपोल अनूपा * बिम्बाधर आनन द्विजभूपा
चिबुक चारु नासिका सुहाई * लटकनकी लटकनि मोहि भाई
पङ्कज पाणि पहुँचिया राजै * नख द्युति लसि मुक्ताहल लाजै
उरवर बाल बिभूषण पेखा * नाभि गँभीर उदर अरेखा
कटि किंकिणी कुधरि दृग जोलै * झुनु झुनु झुनु झुनु नूपुर बोलै

दम्पति प्रेमविवश भगवाना * बालविनोद करत विधिनाना
एकदिवस करि मातु विवेका * अशन सँवारे भाति अनेका
इष्टदेव श्रीरङ्ग सभावा * वसन ओटकरि भोग लगावा
तेहिक्षण तहँ शिशु पावन देखा * पलना निकट गई तहँ पेखा
पुनिदतलखिपुनिउत लखिपावा * कौसल्या के मन भ्रम छावा
मातहि विकल जानि रघुवारा * दिखरावा निज धूल शरीरा
साढे तीनि कोटि वपु धारा * कचकच प्रति ब्रह्माण्ड निहारा
अण्ड अण्डप्रति आन विधाता * अपर विष्णुशिवसुरदिशिभ्राता
अगणितरविशशिसरिततडागा * किन्नर खग पशुनरमुनि नागा
पितर पिशाच निशाचर जाती * कालकर्म गुण नाना भाती
देखी माया सब नचावै * लखी भक्ति जो तिन्हें छुड़ावै
देखे द्वीप उदधि तरुखण्डा * देखी अवधि सकल ब्रह्मण्डा
अण्डकोष प्रति आपन रूपा * देखा सोइ शिशु चरित अनूपा
हाथ जोरि तब विनती ठानी * जय प्रभु गुणातीत गुणखानी
जगतपिता तुम अज भगवाना * मैं बिन ज्ञान पुन करि माना
सुनि विनती बोले रघुराई * हमैं छाड़ि केहि पूजत माई
हम तव भक्ति विवश तव तीरा * गइउ भूमि लखि बाल शरीरा
तेहिते मैं निज भूति दिखाई * काहूते जनि दिह्यो बताई
कौसल्या तब वचन सुनाया * अबमोहिं जनिव्यापै तव माया
एवमस्तु कहि पुनि भगवन्ता * हौंगे बालक रूप तुरन्ता
देखि मातु फिरि दूध पियावा * ईश जानि अति प्रेम बढ़ावा
कबहुँक लै पौढ़ि सुटि सेजा * कबहुँक लेहि लगाय करेजा
कबहुँक कहै नींद किन आवै * हितकरि मेरा लाल बुलावै
कबहुँक करि सब तन शृङ्गारा * पठवै जहा भूप दरबारा

देखि नरेश लेहिं उरधारी * चितवैं नर सब पलक बिसारी।
जो कोई निज निकट बुलावै * प्रीति परारि ताके ढिग आवै।
मुनिजन ध्यान लगावत जाही * पुरजन अछत खेलावत ताही।
सबै सुलभ तिनका सब तीरा * जिनपर कृपा करैं रघुबीरा।
यक दिन काकभुशुण्डी तेरे * किये चरित अति अद्भुत हेरे।
कछु दिनमें कनछेदन आवा * हरषि सखिनते सखिन जनावा।

गीतिवाछन्द ॥

सखि आजु नृपसुतकेर है कनछेदनो चलिदेखिये।
दस दान हरिगुण गान जीवन जन्मकर फल लेखिये॥
नव सात साजि श्रृंगार आईं अयन जेहि रचना रची।
चहुं भाइ करन गहाइ दीन्ह्यो मालपूरी गुरसची॥
हरि हँसत बिहसत ग्रह्य लखि धकधकी मातनके हिये।
भरदेत रोचन मीकते श्रुति नीर धूरे करिलिये॥
अतिचतुर लीन्हे छेदि क्षिप्रै उठे शिशु अकुलाइकै।
भरि नयन नीरज नीर जननी लीन हृदय लगाइकै॥
मणि अन्न मुक्ता करि निछावरि दीन महिदेवन घने।
पहिराइ पुरजन सकल मानहु मार रति बपु बहु बने॥
सुर अङ्गना भी अवधबासी सरसदासी के नहीं।
रघुनाथ उपमा देइ तब जब होइ त्रिभुवन में कहा॥
यहि प्रकार जब चारिउ भ्राता * बढ़े भये परिजन सुखदाता।
चूड़ाकर्म आइ गुरु कीन्हा * नृप बहुदान द्विजनकहँ दीन्हा।
अनुजसखा सब मिलिनिजसंगे * खेलैं खेल महीपन केरे।
भूप रसोई जेंवन आवैं * जब तब मातु बुलावन जावैं।
क्रीडामुक्त देखि सब भाई * बोली तब कौसल्या मा

अहो लाल हे लक्ष्मण भैया * भरत बन्स रिपुसूदन छैया
अब क्रीड़ा दिशि चित्त न दीजै * देर भई चालि भोजन कीजै
बैठे बाट विलोकन राजा * क्षुधित भये सब सखा समाजा
इमि सुनि प्रेम वचन चालआवैं * बैठि भूप दिग भोजन पावैं
कौनेउ दिन आवैं नहिं टेरे * जननी धरन जात तब नेरे

दो० मातहि आवत देखि प्रभु ठुमकुठुमुकु चलिदेत ।
झपटि गहत तब भूप पहँ, ल आवत करिहेत ॥

सुभग शरीर सुरभि रजलागी * झारि सुअञ्चलतें अनुरागी
लखि नृप निकट लिये बैठाई * मिलि जेंवत तब चारिउ भाई
इत उत चितै चलै पुनि भागी * अरुण अधर हँसिजाउरिलागी
पुनि आवैं जहँ बालक सारे * देखि मातु पितु होहिं सुखारे

दो० नृपरानिन कर भाग सुख, सम्पति सुयश सुभाउ ।
मैं का बरणौं एक मुख, कहि न सकै अहिराउ ॥

खेलत देखि नारि पुर केरी * जाइ भवन भजि आवैं फेरी
पुनि घरघूमि सखिन त कहईं * जे कोइ पैंवार परोसे रहईं
जबते मैं नृपतनय निहारा * तबते रुचत न जग व्योहारा
अस मन होय खेलावहि करहू * टरौं न परिगुरुजनकहँ डरहू
कबहुँक निकसि दुवारे आवैं * लै उछङ्ग पुरजन धरि लावैं
बदन चूमि कर राखि मिठाई * रुखलखि महल देइँ पहुँचाई
कबहुँक चुनत विहंग लखि पावैं * हाथ पसारि धरन तब धावैं
उड़ि जब जात करत मचलाई * शुक सारिक दै राखत माई

इति श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतेविश्रामसागरेश्रीरामचन्द्र-
बाललीलावर्णनोनामचतुर्थोऽध्याय ॥ ८ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
कहौं भुशुण्डी के चरित, कछु रघुबंश बखानि ॥

यहिविधि बालचरित प्रभु करहीं * देखि लोग उर आनँद भरहीं
यक दिन एक सलूका आवा * नृपके द्वार कीश नचावा
देखि राम ठानी मचलाई * कहे कि म्वहिं कपि देहु मँगाई
भूप मँगाइ देन बहु लागे * तदपि न लेत रुदत पुनि आगे
तब नृप भाप्यो गुरुने जाई * सुनि बशिष्ठ बोले हरषाई

दो० जेहि हित रोवत रामजी, सो मरकट है आन ।
सुनौं तासु उत्पत्ति मैं, तुमने करौं बखान ॥

उत्तर दिशि सुमेरु गिरि भारी * तह केशरी रहत बनचारी
तासु परम पतिव्रता नारी * नामअञ्जनी छवि अधिकारी
तेहि यकबार कीन शृङ्गारा * ठाढ़ी गिरिपर पवन निहारा
बपुधरि तन अस्पर्श सु कीन्हा * लखि सो चही शाप कष्ट दीन्हा
बोले तब नभसुत सुनु प्यारी * मम अस्पर्श सकलतनु धारी
तेहिते मोहिं शाप जनि देहू * हम बरदान देहैं सो लेहू
होई तुम्हरे सुत बलवाना * रामभक्त गुण रूप निधाना
असकहि अनिल अदर्शित भयऊ * सुखयुत कछुककाल चलिगयऊ
कार्तिक बदी चतुर्दशि बारा * शनिके दिन भा प्रकट कुमारा
लखि पितु मातु कीन उतसाहा * लागे सुन सेवन जस चाहा
प्रात अरुण रवि निरखि फलङ्गा * प्रमत्त भयो फल सरिस पतङ्गा
झपटि बज्र मारा सुरराई * चिबुक मध्य तिहि मूर्च्छा आई
देखि पवनसुत लीन उठाई * राखी राखि समीर रिसाई
चढ़े उदर सब देवन केरे * आये तब आशुग के नेरे
करि विनती सुर सकल सुजाना * लागे देन सुतहि बरदाना

कह ब्रह्मा होई बजरङ्गी * लगी न मम शर शक्तिअभङ्गी
बोले बृहद जरी नहिं आगी * इन्द्र कह्यो मम कुलिश न लागी
हर त्रिशूल यमदण्ड सुनावा * वारि न बूड़ै वरुण बतावा
बोली शक्ति भक्ति लखि नेकी * वचन मोर यहि सकै न छेकी
दो० यहिविधिसबविबुधनदये, बरवरदान निहोरि।
सुनि प्रसन्नभे श्वसन तब, छूटी पवन बहोरि॥
प्राणदान देवन जब पाये * महावीर कहि भवन सिधाये
हनूमान हनि दुरमति नासा * लागे रहन मातु पितु पासा
जब तब जाइ मुनिन के तीरा * डारै फोरि कमण्डलु नीरा
बिटप तोरि गिरिशिखर ढहावै * बल अतिभूरि अङ्ग धुनिहावै
ऋषिन शाप तब दीन विचारी * भूलि जाहु निज पौरुष भारी
जब जब कोई सुरति कराई * तब फिरि तुम्हरे बल ह्वै आई
रहे तहा कछु दिन हरि आसा * पुनि ते पवन सहसगो पासा
लागे पवन जोरिकर आगे * करन सुखागर उन्मुख मागे
बिद्या सकल पाइ अस भाषा * मागौ जो तुम्हरे अभिलाषा
बोले रवि मम सुत सुग्रीवा * ऋष्यमूक पर रहत सदीवा
तिनके तीर रहो तुम जाई * मिलिहैं तहा तुम्हें रघुराई
गुरु अनुशासन मानि बिधाता * रहत भानुसुत के ढिग ताता
राम लषण बोले तिहि हेता * लेहु मगाइ ताहि करि चेता
तुरत भूप भट भूरि पठाये * सकल सुकण्ठ पास चलिआये
जो नृप कह्यो सो बर्णन कीन्हा * सुनि सुकण्ठ तुरतै कपि दीन्हा
लै आये मन्दिर हरषाई * देखि राम उर लीन लगाई
हनूमान के अतिसुख भयऊ * मिलि लघुरूप तहा ह्वैगयऊ
जह जहँ खेलैं राम सुरङ्गा * तहँ तहँ कपि राखै निजसङ्गा

दो० यक दिन यक शिशु अन्धको, डारी रज प्रभु मूठि ।
उरहन दै रघुनाथ तिहि, देखरायो दै विठि ॥

एक दिवस यक बानिक आवा * बचन हित नग नृपहि देखावा
लै रघुनाथ कूप में डारा * देहु वह हँसि भूप उचारा
तुरते वृक्ष कूप ते जामा * लागे लाल अमोलक नामा
फरत झरत पुनि लागत भारी * लैलै जान सकल नर नारी
सात दिवस भे लूंट विशेखी * पुनि सो विटप परा नहि देखी
यह लीला लखि भूपति शाहू * चकित रहे मन परम उछाहू
यकदिन एकबधिकचलिआवा * अद्भुत पर्ची नृपहि दिखावा
देखि राम लेढोन उडाई * बोला खग स्वइ देहु मँगाई
सुनि प्रभु ताहु पक्ष महि गाडा * भा तरु तुरत जमे जलडारा

दो० लागत फल फूटत तुरत निकसत उडत विहङ्ग ।
बैठत महलन पर घरन, धावत बालक सङ्ग ॥
पुरवासिन पाले सबनि, देखे विहँग अनूप ।
सुनि सुनि तहँ लै लगये, देश देशके भूप ॥
बधिकै दीन्ही दबि बहु, भा सबके सुख सात ।
यह प्रभुता कछु बहुतनाह इच्छा ते जग होत ॥

यहिविधि सानुज राम सुशीला * आठ वर्ष कीन्हीं शिशुलीला
जब पौगण्ड भये सब भाई * पढन हेतु पठये रघुराई
गुरुपद जाइ नवाये शीशा * लगे पढावन मुदित मुनीशा
पढन भये प्रथमै बिन खेदा * साम दाम अरु दण्ड विभेदा
मिलि सनेह कीजे खट सामा * खान पान धन दीजे दामा
भेद सो सब लहि फेरि मिलावै * दण्ड मार दुख त्रास दिखावै
राजनके लक्षण ये जानो * तिन पाछे अस पढ़ो बखानो

दो० वर्ण वेद उपवेद अँग, आदिशास्त्र उपशास्त्र ।
सकल पुराणै सहिता, तन्त्र सुमन्त्र कलास्त्र ॥
निकस्यो नहीं तवर्गके, अन्तक अक्षर शुद्ध ।
जान्यो तब रघुनाथ सुनि, हैं गुण विषे विरुद्ध ॥
अचिरकाल सब विद्या लीन्ह्यो * बहुविधि गुरुहि दक्षिणा दीन्ह्यो
भये मुदितमन पितु अरु माता * खेलन जाहिं जहा सब भ्राता
देखि लोग सब होहिं सुखारी * थकित विलोकें छवि नर नारी
यौवन जरठ अपर जे बारे * लागहिं सबन प्राण ते प्यारे
सुदिनसमुझियकदिन नरनाहा * दीन जनेऊ सहित उछाहा
नित्यानन्द निरोधि अपारा * घण तण बादत अवध मँझारा
पुरबासी सब ताके माहीं * रहैं निमग्न सुरति कछु नाहीं
नारदादि मुनि दिनप्रति आवैं * चारु चरितचहि चहुँदिशिगावैं
सुनि सुर सकल सराहहिं प्रेमा * सुमन चढ़ावैं हित निज क्षेमा
दो० यकदिन ध्यान वशिष्ठ मुनि, करत देखि नृपदेव ।
कह्यो विघ्न करवाइकै, प्रकट गोद किनलेव ॥
एक दिवस प्रभु सरयू माहीं * अनुज सखनयुत मुदित नहाहीं
असुर एक रावण कर प्रेरा * मगर रूप धरि मुखमें गेरा
निकसे सपदि ताहि हरि मारी * सुनि पुरजन सब भये सुखारी
जिनजिनके व लक त्यहि खाये * दीन्हे काढ़ि मनहु धरिआये
मानन दीन्ह्यो दान अपारा * गुरु प्रसाद कल्याण हमारा
इमि पौगण्ड अवस्था माहीं * किये चरित बहु बरणि न जाहीं
पुनि सब बन्धु भये कैशोरा * रूपराशि पुरजन चितचोरा
दिनप्रति सरयू करि अस्नाना * बहुविधि देहिं द्विजन कहँ दाना
कबहुँक चढ़िनिज नाउ मँझारा * खेलैं दमाजा मध्य निवारा

कबहुँक सानुज मत्वा सुजाना * खेलैं गेंद जाइ चौगाना
फर कर कन्दुक घूमत कैसे * हरिपद विमुख जीव जग जैसे
कबहुँक चढ़ि बरबाजि नचावैं * पुरबासी लखि अतिसुख पावैं
कबहुँक चढ़ि ठानैं घुड़दौरा * धरि निज निज मोहैं यकठौरा
भरतसंग जब बाजी लागै * तब प्रभु कसि रहैं निज बागै
कहैं सपल हारे रघुराई * जीते भरत भाव ते भाई
सुनि बकमत हय गय पट हीरा * प्रमुदित होइ पाइ सब बीरा
कबहुँक अनुज राखनके साथा * बिचरहिं पुर धन शर गहिहाथा
एकदिन एक मज्जन कृत नारी * देखन लगी तासु महतारी
बोली बसन बिना कोइ देखी * हौ असरन्हें छाड़ि मोहिं पेखी
ते नृपतनय न अंब निहारैं * परे दृष्टि तेहि अङ्ग हमारे
कबहुँक जाइ अम्बाग्रन लरहीं * अनुज सखनयुत कसरत करहीं
कबहुँक गनि निशाना मारैं * मज्जनकरि पुनि गृह पगु धारैं
देखि मातु अतिशय सुख पावैं * नृपयुत भोजन हेतु बुलावैं

मञ्जुघन्द ॥

जेवन बैठे भूप मौलि निज सग सुवन लै चारीजी।
सहित सनेह परोसन लागी लषणलाल महतारीजी ॥
मोहनभोग मखानेकी हवि मधुर मलाई धारीजी।
खोवा खाड खरिक खरजूरी खाजा खुरमा खारीजी ॥
मालपुवा माधुरि मधु मिश्री मलि माखन में डारीजी।
पकी पूप पटपरी पापर पाक पिराँक पनारीजी ॥
मोतीचूर मूरके मोदक ओदककी डलियारीजी।
सेमई सेव सैंजना सूरन सोवा सरस सोहारीजी ॥
उज्ज्वल भातु भटाकर भरता भांतिभांति तरकारीजी।

मूग माष मरहटकी पहिती चनक कनक समद्दारीजी ॥
बरी बरीक बरा बहुविधिके बकरा कटु बटहारीजी ।
पापरि पली फली मुनितरुकी कृपमाण्ड कचनारीजी ॥
पावर पोइ पकौरी पालक पेटा मन रुचिपारीजी ।
अरुई आव अंबिरती अदरख अचरा अमित अथारीजी ॥
रोटी रुचिर मिहीं मैदाकी घृत मे बोरि निवारीजी ।
मेथी मरस सेमिदल मरसो सोवा शुचि सुखारीजी ॥
चौराई तोराइ तोरई मुरइ मुरब्बा भारीजी ।
दुभकौरी मुंगछौरी रिकवछ इंडहर आर ढेंढ़ारीजी ॥
लट्टी बड़ी करेला कुंदुरु केला फल फलहारीजी ।
गरी बदाम छुहारा किशमिश पिस्ता दाख अपारीजी ॥
खेखसा खीच चचेंडा घेवर गनगुना गुदियारीजी ।
फेनी फूल निमोना छिछरा रुपरतालु ग्वारीजी ॥
जलित जलेब अँदरसा दुदुम दधि चटनी चटकारीजी ।
यहिविधि चारि भांति षटरसके व्यञ्जन बिरदमैगारीजी ॥
कनकथार मणिजटित कटोरिन भरिभरि धरे कुमारीजी ॥
पञ्च बयर करि जेवन लागे लखि करषी गृपनारीजी ।
शीतल जल सरयूकर बारिन पीवत मातुपारीजी ॥
कहत कौसला भोजन दीजे बहुरि न पैहे बारीजी ।
गयन अघाइ माइ अब हमरो मनको टरत न टारीजी ॥
बलस्यन्दन नन्दन सुख कन्द लखि उठे इष्टिबिचारीजी ।
अनुग आइ अंचवन करवायें कर अँगुठायो झारीजी ॥
दीन तैयुन अरगजा कुमकुम लीन्हों अवधविहारीजी ।
सीय प्रसाद दास दासिन मिलि पायो राम पहारीजी ॥

जेहि जूठनिका सुर मुनि तरसत परसत कबहु न टारीजी ।
सोई जन रघुनाथ माथ धरि पावत बारहुबारीजी ॥
देव दनुज नर नाग रागयुत जन जगदीश अगारीजी ।
जो जेवनार रामकी गावै तामुखकी बलिहारीजी ॥

तोटकछन्द ॥

कबहू बन जाय शिकार ठनै, मृग आदिक साउज नाहिहनै ॥
जब शूकर नाहर दृष्टि परैं। तुरते निज बाजिनते उतरैं ॥
लखि राम कहै हथियार धरो यहिते अब एवहि एक लरो ॥
करियुद्ध पछारत औन सखा तेहि देत इनाम श्रीरामलखा॥
निज धाम पठावत साउज सो घर आवत गावत राउज सो॥
रघुनाथ कहैं यहि भाति प्रभू। नवनित्य चरित्र करैं बरभू ॥
एकदिन एक शूकर बन आवा * घुरघुराः प्रभु सन्मुख धावा
गहि पद पटक्यो भूमि भुजाम् * छूटनभयो दिव्य वपु तासू
अस्तुति करि अस बचन उचारा * पूरव प्रभु म रह्यो भुवारा
एक दिवस तव जन लरि पावा * वश अभिमान न शीश नवावा
निन्दाकरि निज मंदिर आयो * तेहि अपराध कोलतनु पायो
अब तव दरश दूरि दुख भयउ * अस कहि परमधाम कहँ गयऊ
एक दिन मैं नाहरते भेटा * तिहि शठ प्रभुपर कीन झपेटा
साधि बाण मारा रघुराया * तनु तजि सो हरिलोक सिधाया
यहिविधि बनशिकार मिलिजाई * पावन करै जीव रघुराई
खगमृगनिरखि निकटचालआवैं * तिन्हैं न कबहू भूलि सतावैं
जे उतपात करैं गति हेता * तिन्हैं देइ हति कृपानिकेता
दो० एक दिवस इक सिहने, बधी बिप्रकी गाय ।
गरजत डोलै पुर निकट, कोइ पास नहि जाय ॥

सुनि रघुपतिकसि कटिपटबाधा * धनुष चढ़ाइ पाणि शर साधा
मुदित जाइ सन्मुख ललकारा * खल हो सजग तोहिं मे मारा
इतना सुनि सन्मुख सो धावा * पञ्च बाण मुख मारि गिरावा
तुरत भयो सो गन्धर्व रूपा * विनती करि निज हाल निरूपा
महाराज मैं गन्धर्व अहऊ * इन्द्रसभा नित गावत रहऊं
एक दिवस नारद तहं आये * नाथ चरित तव बरणि सुनाये
तेहि समाज मैं हँस्यो ठटाई * सुनि मुनि बोले बचन रिसाई

दो० सिंहनादसम करत शठ, होउ जाहु हरि हार।
मरिहैं निज्कर राम जब, तब होई उद्धार॥
यहि तन पायों अमित दुख, अब सब नाशे शोक।
अस कहि पद शिर नाइकै, जात भयो निजलोक॥

तब नृप पहँ आये रघुराई * तहां विप्र ठानी मचलाई
कहत सुरभि सोई मम दीजै * भूपति मनत अपर बहु लीजै
तब राघव बोले सुनु ताता * झरि तरु बहुरि न लागै पाता
गई बीति बय पुनि कहु आवै * समय चूकि फिरि का पछितावै
तेहिते तजहु आश तिहिकेरी * अपर धनु लीजै बहुतेरी
तदपि न विप्र तजी हठताई * देखा चहत राम प्रभुताई
तब प्रभु कहा लषणते जावो * विप्र समेत दूहि गौ लावो
चढ़ि रथ गये प्रथम यमलोका * लाख उरभा तिनके सुखशोका
षोडश भांति पूजि सनमानी * हाथ जोरि बोले मृदुबानी
नाथ कौन हित आयहु आजू * आयसुहोय करिय रघुराजू
बोले लषण विप्र की गाई * दीजै आनि होइ जो आई

सो० सुनि बोले यमराय, पांच कोस तक अवधमें।
जो कोई मरिजाय, सो नहि आवत धाम मम॥

करम करत भल पोच घनेरे * तिनकर न्याय हाथ हरिकेरे
जैसे राजसभा कर कोई * तिहिते कछुभल अनभल होई
तासु निसाफ करै रवइ राजा * नाहिंन कछु कुतवालते काजा
सुनि रथचढि चलिभे ततकाला * जाइ बिलोके सकल पताला
पुनि चढि सातो स्वर्ग ढुँढ़ाये * तिहि पाछे बैकुण्ठहि आये
रहत जहा श्रीपति भगवाना * कीन दण्डवत तिन सनमाना
पूछिते बरणा निज हेना * तिन तब कहा जाउ साकेता
योजन कोटि पचास अगारा * रहत राम इच्छा आधारा
दो० जहा न पावक पवन पवि, चन्द्र सूर्य नहि कोय ।
रहत एकरस सर्वदा, राति दिवस नहि होय ॥
सुनि चलिभे देखा स्वइ जाई * बसत रतनमय छवि अधिकाई
चारि द्वार त्यहि पुरके हेरे * बाजत बाजन भाति घनेरे
उत्तर बसत महा बैकुण्ठा * महाविष्णु जह रहत अकुण्ठा
बिरजा बिमल बहत पुरतीरा * मज्जन सन्त सकल मति धीरा
ज्योति एक जहँ जरत निराशा * कोटि भानु सम तेज प्रकाशा
योगीजन जिहि सादर ध्यावैं * अन्तसमय त्यहि माहि समावैं
पूरब द्वार जनकपुर मांहे * दक्षिण चित्रकूट मन मांहे
पश्चिमदिशि गालोक निहारा * जहा करत गोपाल बिहारा
षोडश सहस करि अवरथा * बपुआबलरिव को हाथ न मस्था
पहिरे भूषण बसन अमोला * मृदु मुसक्यानि मनोहर बोला
दो० पीतबसन बनमाल उर, कर मुरली मुखपान ।
परिकर सहित समूह सखि, सोहत इमि भगवान ॥
रहती है सुरभी त्यहि माहीं * पूछा जाइ लषण तिनपाहीं
नाम्नाकी कपिला इत आई * सुनि दीन्ही गिरिधरन मँगाई

गुंदित मध्यसाकेते आये * मन्दिर विपुल विचित्र सुहाये
जो रचना निरखी कहुं नाहीं * सो सब देखी ताके माहीं
दिव्यरूप सब तहांके वासी * षटविकार बिन नित्य सुपासी
आगे सीतहि देख्यो जाई * रूप अनूप अमित प्रभुताई
जासु अंश उपजे गुणखानी * अगणित लक्ष्मि उमा ब्रह्मानी
अगणित सखी करैं सुठिसेवा * अगणित अली लिहें कर भेवा
अगणित अनुग करैं परणामा * अगणित सन्त उच्चारहिं नामा
अगणित शक्ती हरिगुण गावैं * तिनमा तीनस मुख्य कहावैं
रो० छ० । श्रीभू लीला कान्ति कृपा योगी ईशाना ।
उत्कृष्णा भीषनी चन्द्रिका कूरा जाना ॥
पुण्या परवी कला कीर्ति अहलादिनिक्रान्ता ।
भाविन्या शोभना लम्बिनी विद्या साता ॥
ईलानग्रह महोदया उन्नती सुविमला ।
छाला नन्दनि शुभद सत्य सो काहित विमला ॥
ये शक्ती तेंतीस सदा सिय भृकुटी दिशि लखि ।
करैं विश्वकर काज सबनके सहससहससखि ॥
इन सबहिनकी कीरति करणी * महारमायणमें शिव बरणी
सहित विप्र लक्ष्मण शिरनावा * करि सनमान निकट बैठावा
प्रीतमके गुण पूछन लागी * कहे सकल लक्ष्मण अनुरागी
हाथ जोरि द्विज बूझत भयऊ * स्वामी कौन कहा तब गयऊ
हमरे पति महि अवध मझारा * लीन जाय नृप गृह अवतारा
कछु दिनमें हमहू तहँ आई * जनक नगर प्रवेश अगनाई
सुनि शोभन अतिशय हरषाना * रामै सकल लोकपति जाना
अब तुम जनि भरमौ सब धामा * मूदहु नयन जाहु निज आमा

नयन मूंदि देखे तहँ नाहीं * बैठे राजसभा के माहीं
बोले राम पेनु निज पायो * तब शोभन चरणन शिरनायो
धन्य धन्य तुम धन्य कृपाला * धन्य तुम्हारे चरित कृपाला
प्रथमें मैं तव सुना प्रभावा * जड़मति मन विश्वास न आना
ताही ते टार्यो हठ भारी * देख्यो प्रभुता अमित तुम्हारी

दो० तव सम ईश न ईश कोइ, तव पुर सरिस न ग्राम।
तव चरितन सम चरित नहिं, तव जु नाम सम नाम॥

मैं प्रभु कीन ढीठता भारी * सो क्षमिये जन जान अनारी
सुनि रघुपति प्रभु बहुविधि सनमाना * तात करहु जनि अनत पयाना
भले नाथ कहि निज गृह गयऊ * पुरबासी सब हर्षित भयऊ
यहि विधि राम चरित्र निकेता * करत चारुन भक्तन सुख हेता
एकदिन मुरचषि आवत रहेऊ * मग मिलि लोमशसे अस कहेऊ
चलो आजु श्रीरामहि देखो * जीवन जन्म सुफल करि लेखो
सुनि मुनिकह्योमहित अभिमाना * थिर ह्वै करो बजाकर ध्याना

दो० यहिविधि आवत जात बहु, विश्व विषय रघुराय।
इनते तौ हमहीं भले, अचल ब्रह्म रहे ध्याय॥
परमब्रह्म श्रीराम हैं, हरण अखिल दुखभार।
सुन्यो न जब तब देवऋषि, आये अवध मँझार॥

व्याप्त भयो तहँ रामकी माया * व्यापी लोमशको नहि भाया
उमड़े सिन्धु सकल दिशिनेरे * बह ऋषि परि तिनके फेरे
प्रथम प्रलय सम बढ्यो विचारा * पेरत आये प्राण मँझारा
लख्यो अक्षयवटमें हरिख्या * कह्यो मोहि राखो सुरभूपा
बोले हरि सासन दिन तुमको * है न रामकी आज्ञा हमको

इतने माहिं लहरि के साथा * अपर अण्डमें गे ऋषिनाथा
तहाँ अक्षयबट पर हरि पाई * त्यहू कह्यो नहिं राम रजाई
दो० इमिअगणित अण्डनबिषे, गे लखि कह्यो न कोय ।
यम यातना शरीर सम, पायो दुख अति सोय ॥
तब मनि कह्यो कि रामको, जिनकी आज्ञा नाहि ।
लीन्हो जिन साकेतपति, जन्म अवधपुर माहि ॥
तिनकी जाय विनय जब करिहौ * तब तुम दुखसागरते तरिहौ
नामरूप अरु लीला धामा * रहत नित्य ये होत न खामा
हमें न इहे मिली कृपाला * लहरि सग पठयो तब काला
जल आवरण अवध चहुँ फेरा * तम्बू सम तानो तहँ हेरा
पुरवासी सब सुखसो जहँवा * रहत चहतनहिं दुख परा कहँवा
तब लामश आये रघुपतिपेगी * कीन्हीं विनय गनि बहुतेरी
सुनि प्रभु सेवकने बुलवायो * रामहिं लखि मुनि शीशनवायो
कह्यो नाथ बिन कृपा तुम्हारी * कोउ वस्तुनि न सकै उबारी
तुम सब नाथन के हो नाथा * जीव दशा सब तुम्हरे हाथा
चहो मशक को ब्रह्म बनावो * विधिहिमशकरिशोक प्रमानो
दो० असकहिलहिआनन्दमुनि, गाने निजथल फेरि ।
पंथ स्वयंशिर लखि कियो, नारदको गृह हेरि ॥
सो० राम मन्त्रको पाठ, आठ चरित रघुनायके ।
चरण तब ऋषिराठ, अस प्रभाव श्रीरामको ॥
एक दिन - राम पतङ्ग उड़ाई * देवलोक सो पहुँची जाई
तहँ हरिसुत जयन्त की नारी * अतिविचित्र त्यहि चङ्गनिहारी
दो० मनमें किहिसि विचारहमि, चासुगुडी अमिधाहि ।

सो पूरुष कस होइ धौं, हँसिगहिलीन्हेसिताहि॥
तब प्रभु हनूमान ते भाखी * देखौ क्यहिं पतङ्ग गहि राखी
तुरत पवनसुत जाइ निहारी * देहु छाड़ि निज गिरा उचारी
वाली जासु चङ्ग यह आही * दरशन तासु कीन हम चाही
ताहीते याको हम गह्यऊ * आइ अनिलसुत प्रभुते कह्यऊ
सुनि हरिकहा कहौ तुम जाई * चित्रकूट महँ देव दिखाई
हनूमान चलि तासों भाषा * दीहसिछाड़िमनकरअभिलाषा
तब रघुनाथ खैंचि सो लीन्ही * निशा गृहआय वियारू कीही
मणिमय पलँगागयो बिछावा * वारिफनु सम बसन स्वहावा
कीन शयन तापर जगत्राता * प्रात जाय बोली दिग माता
भोरभये जागहु रघुराई * मुखछबि पर जननी बलिजाई
रवि है विलोकि गयो तमभागी * ज्ञानउदय जिमि मोह विरागी
शशि नक्षत्र भे मलिन सुभाये * जिमि सब गुण दारिद के आये
लागे लुकन निशाचर कैसे * हरिसुमिरण ते पातक जैसे
उठे फूलि सरसिज रवि देखी * जैसे सुजन सुजन कहँ पेखी
तिनपर मधुप करत गुञ्जारा * जनु नम वपु धरि शरण पुकारा
बोलत विहँग विविधविधि टेरे * मानहुँ मुनि बहु गुणगण तेरे
प्रमुदित कोककुमुद विलखाने * हानि लाभ जिमि पाइ अयाने
अनुज सखा बोलत यहि भाती * जिमि चातक चाहै जलस्वाती
बन्दीगण विरदावलि भाषै * याचक द्वार खड़े अभिलाषै
सुनत उठे तब अवधविहारी * देखि मातु आरती उतारी
मित्र बन्धु स्यवकन पदबन्दे * दान पाइ याचक आनन्दे
पुनि सरयू तट जाइ नहाने * सबविधि साधु विप्र सनमाने
जहँतहँ सुनि कथा करि नेहा * करि प्रणाम आवै पुनि गेहा

दो० एकबार रघुनाथ लै, सग सुजन समुदाइ ।
तीर्थाटन करि सबनको, दीन्ही विशद बढ़ाइ ॥

इति श्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतेविश्राममागरे रामचरित-
वर्णनोनामपञ्चमोऽध्याय ॥ ५ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि ।
घटज संहिता केर मत, कहौं कछु गरुडचखानि ॥
यकदिन प्रभु लागे करन, निज स्वरूपकर ध्यान ।
पवनतनय अवलोकिइमि, मनमें कृत अनुमान ॥

इन्हें सुना हम सबके स्वामी * ब्रह्मादिक जाके अनुगामी
सुमिरण ध्यान करत हैं सोऊ * इनहुनके ऊपर है कोऊ
पूछत प्रभुते तिन हँसि काहा * परब्रह्म किमि जानै चाहा
निकटौ दूरि निबाहु न होई * जेहा शिप्र न मग कहकोई
मुँदरी दै उत्तर दिशि तेरा * कुधरराण्ड बन हले घनेरा
लोकालोक अद्रि के आगे * अन्धकार पारक थल त्यागे
शतसवत पर गये निकेता * बुढ़िया एक मिली तहसेता
ब्रह्म कहा मृतलोक पधारे * सह समाज गे दशरथ बारे
पुनि देखे रघुपति आसीना * विधि हरि हर सेवत पद लीना
दो० करन दण्डवत पुनि तहा, कोई पर्यो न देखि ।
पीताम्बर को खूंटलै, आये अवध बिशेखि ॥

करत प्रणाम राम हमि कहेऊ * आयो देखि ब्रह्म कम रहेऊ
कह कपि तुमहीं हो सबठौरा * तुमते परे न है कोइ औरा
बोले प्रभु तुम पहुचे नाहीं * अबहीं फिरि आयो ग्वहिंपाहीं
तब पवन न पट चिह्न दखाया * रघुपति कर खण्डित तस पाया
गिरेचरण कहि धनि तव लीला * जन मन सशय शमन सुशीला

दो० एक दिन पद चापत गन्यो, इनश्रुति कहै अरूप ।
है अरूप पुनि सुनि विनय, दिखरायो निजरूप ॥
एक दिन सखन सहित रघुबीरा * खेलत भे सरयू के तीरा
विहंगरूप धरि रावण आवा * घात पाय शठ चहत उठावा
जानि राम बिन फर शर मारा * गिरा जाइ निज लङ्क मँझारा
सात दिवसपर मुरछा जागी * समुझि प्रताप लाज उर लागी
तब दूतनते कहिसि बुलाई * तपसिनते लावहु कर जाई
आयसु पाइ आइ हठ कीन्हा * सुनि भरिकुम्भरुधिरतिनदीन्हा
कह्यो जाइ रावण के पासा * यहि घट ते होई कुलनासा
गगन जाय दशमुखै सुनाई * आवहु गाडि जनकपुर जाई
शम्भुसभा श्रुतिवाद मँझारा * प्रथमै रहा जनकते हारा
तेहि गसते तहँ कुम्भ पठावा * दूत गाडि मिथिलापुर आवा
हरि इच्छा तहँ परेउ दुकाला * बिन जल भे सब जीव बिहाला
लखि विदेह बुध लीन बुलाई * भ्रमे ते तिन युक्ति बताई
उदक हेतु शुभयज्ञ करावो * कनक केर लै हल बनवावो
जोतो अजिर सहित निजरानी * होई वृष्टि सकल सुखदानी
दो० सुनि नृप कीन्ही युक्ति स्वच्छ, जोतत अजिर मँझार ।
प्रकट्यो सिंहासन सुभग, अद्भुत तेज अपार ॥
चारि सखी चारों तरफ, लीन्हे मुरछल हाथ ।
मध्य बिराजत भूमिजा, रूप राशि रघुनाथ ॥
वेदवती रिपुवधनहित, तजन होत महि अंश ।
एकरूप है प्रकट भइ, आदि शक्ति निर्मिवंश ॥
देखि विदेह विनय तब टानी * भई तुरत कन्या लघु जानी
सखिन सहित सिंहासन सोई * अन्तर्धान भयो तब होई

रोदन सुनत सुनयना रानी * लीन उठाइ गोद सुखमानी
सुनि पुरजन सब भये सुखारी * देखन उठि धाये नर नारी
भूपति दान दीन विधि नाना * यथा मनोरथ जाचक जाना
दिन दिन कन्या बाढ़न कैसे * शुक्लपक्ष वर चन्द्रा जैसे
छठी बारहीं अन्न पराशन * कीन नरेश निगम अनुशासन
नामकरण दिन नाम कढ़ावा * बुधन जानकी नाम बतावा
नारद आइ धर्यो तब सीता * जगत जननि सब भाति पुनीता
सुररञ्जन भञ्जन खल हेता * प्रकट भई नृप तव संकेता
सकल लोकपतिप्रभु सुखराशी * मिली इन्ह वर जो अविनाशी
औरौ लक्षण युक्ति समेता * कहि मुनिवर गे ब्रह्मनिकेता
सुनिऋषिवचनगाल गुहिली ही * सोनिजउर सिय धारण कीन्ही
जनक बन्धुजा सखिन समेता * खेलै जहँ तहँ रूप निकेता
बाल वृद्ध यौवन नर नारी * लागहि सबै प्राणते प्यारी
पुनि नृप निपुण पढ़न बैठाई * अचिर काल सब विद्या पाई
यह चरित भाष्यो भव सेतू * अब सुनु सिया स्वयम्वर हेतू

दो० एक समय मिथिलेश अति, शंकर कर तप कीन।
आइ कह्यो हर मांगु वर, तब नृप बोलय लीन॥
नाथ इष्ट जो आपकर, ज्यहि श्रुति नेति बखान।
तेहि देखौं भरि नयन मैं, यह वर देहु न आन॥
सुनि शिव दीन्ह्यो धनुष जो, मिलारहै विवसाथ।
कह्यो कि पूजप्रहु याहिते, मिली आइ मम नाथ॥

सुनि विदेह प्रभुहित अनुरागे * नित्यनेम करि पूजन लागे
एक दिन सिय सेवा ढिग जाई * लीलै लीन्ह्यो धनुष उठाई
देखि जनक अतिअचरज माना * त्यहिक्षणतहा कठिन प्रणठाना

जो तेई शिव चाप चढ़ाई * सो नृप मम कन्या बरिपाई
लिये बोलि कारीगर भूरी * रङ्गभूमि निरची तिन रूरी
चहुँ दिशि चामीकर अस्थाना * तासु मध्य मणिमय मञ्चाना
दशसहस्रमिलि मञ्च विशाला * लावतभये धनुष मखशाला
देश देश प्रति पत्र पठाये * सुनि सुनि भूप अनेकन आये
बन उपवन पुर पन्थ निकेता * उतरे निज निज सैन समेता
सुनि दशमुख बाणासुर आवा * प्रथमैं निज निज पौरुष गावा
रावण धरयो धनुष तब जाई * बहुविधि बलकरि रहा उठाई
उठा न नेकु चप्यो कर गाढ़े * अतिबल कीन कढ़ा तब काढ़े
सभा मध्य करि कपट बहाना * जात भये निज निज अस्थाना
भूपहु दिन प्रति विपुल उठावैं * टरै न जब तब दुन्दि मचावैं
यहि विधि बीते कयो मामा * अब सुनु मुनिवर की इतिहासा
गाधिसुवन नन्दन बन रहहीं * यज्ञारम्भ कीन जब चहहीं
तब तब असुर करहिं अपकारा * लखिमुनिवरनिजहृदय विचारा
गातुवंश प्रकटे रघुराई * लोचन सफल करहुँ तहँ जाई
लावहुँ मांगि सु मग दोउ भ्राता * ते दलि खल हैहैं मखत्राता
कारकृष्ण ऋषि दिवस सिधाये * नौमी दिन कोशलपुर आये
देखी बनानि अवधपुर केरी * तीनि लोकते सकल अनेरी
पुर चहुँओर कनक कर घेरा * उपवन बाग मनहुँ मधु तेरा
बसु दिशि बसु दरबार बिराजैं * आठ आठ सेनापति राजैं
रहै बेद घटिका परमाना * जाहि भवन जब आवै आना
बिरि हरि हर धनपति रवएका * बसत मनों धरि रूप अनेका
बापी कूप तडाग घनेरे * मणि सोपान मधुर मधु नेरे
विप्र प्रसून बिकसे बहुरङ्गा * कूजत खगगण गुञ्जत भृङ्गा

मणिमयमहल विशाल अपारा * मानहुँ नभ तिन ऊपर धारा
चित्र विचित्र अनेक बनाये * कनककलशशशिरुरिसरनहाये
ध्वज पताक तोरण नव ठाटा * देहरी विद्रुम कुलिश कपाटा
चहुँहट हाट फराकन हीची * बीथीसकल सुगन्धिन सींची
आवत जात निकरनर नीके * गज रथ बाजि भावते जीके
बाजन विविध भांतिके बाजैं * मत्त गयन्द अनेकन गाजैं
कतहुँ मल्लगण भिरैं प्रचारी * कतहुँ गीत गावैं मिलि नारी
कतहुँ विप्र बर वेद विचारैं * कतहुँ सन्त जन नाम उचारैं
कतहुँ हंस शुक सारिक बोलैं * कतहुँ केकि पारावत डोलैं
मध्य ग्राम नृप धाम अनेका * बनानि विशाल एकते एका
भूप सभा शुचिकी रुचिराई * देखत बनै बरणि नहिं जाई

दो० आवैं जाइँ अनेक नृप, झुकि झुकि करैं प्रणाम ।
राजत कोशलराज जहँ, सुरपतितें अभिराम ॥

उत्तर दिशि सरयू सरि बहई * अमल अपाप आप गो अहई
आप अवोगति कुचि तब चाले * औरहि देत ऊर्ध्वपद हाले
बांधि घाट मनोहर नाना * जह तहँ जाल करैं अस्नाना
निकट निवास मुनिन के रूरे * सुमन बाग तुलसिका इजोरे
देखत मुनिवर पुरकी शोभा * सरयू तट आये मन लोभा
मज्जन कीन मुदित जल खावा * ऋषि आगमन नृपति सुनिपावा
सचिवसहित तह आवन भयऊ * करि सनमान सदन लै गयऊ
नाये सब रानिन पद शीशा * दीन्ही मुदित मनोश अशीशा
गहे चरण पुनि चारो गाढ़े * पृथक पृथक ह्वै आशिष पाढ़े
भये प्रेमवश रामहिं देखी * चपल नयन परिहरी निमेखी
पाँइशभाति पुनि महिपाला * बोले वचन नाइ पद माला

भूरि भाग हम तुम्हें निहारा * आपु कहौ केहि हित पगुधारा
सुनहु नरेश तपोवन माहीं * करन देत मख निश्चर नाहीं
त्यहिं हित याचन आयो ताता * दीजे राम लषण दोउ भ्राता
सुनि मुनि वचन बाणसम लागे * बोले भूप बहुरि भय त्यागे
दो० याचक जन नाहक किये, जगतपिता ससार।
हित अनहित न निबाहकछु, मांगनही को कार॥
विविध यतन कीन्हे मिले, चौथेपन सुत चारि।
निपट निठुर निरमोह तुम, मागेहु नाहिं विचारि॥
कह सुकुमार सुवन मम बारे * कह गिरिसरिस असुर भयकारे
जे धनुशरगहि जानत नाहीं * ते कैसे लरिहैं रणमाहीं
रामसनेह सहित सुनि बानी * हे प्रसन्न पुनि कह मुनिज्ञानी
तब देखत हैं राम नदाने * अहहिं सबल अतिचतुर सयाने
इनकर रूप प्रताप जहाना * जानत तव गुरु सरिस महाना
त्यहिते देहु लेहु करि नामा * याही हेतु धरेउ वपु रामा
दो० तुम कहँ याचक जगतमें, बादि विधाता कीन।
सो नहिं भूषण दानिके, को बरणत लघुपान॥
कह नृप सत्य झूठ कछु नाहीं * राम प्राणप्रिय दिये न जाहीं
हम तव सग चली सजि साजा * तुमते नहिं होई यह काजा
धरणि धाम धन चहो सुलीनै * केवल त्यागि राम कहँ दीजै
मोह विवश ह्वै करत विषादा * त्यागत निजकुल की मर्यादा
इतना कहत क्रोध उर जागा * महिपताल नभ हालन लागा
सुर नर-अहि सब उठे डराई * चाहत होन प्रलय का भाई
तब वशिष्ठ मृदुवचन प्रकासा * कीजै कृपा जानि निजदासा
राजा ते बोले सुनि लेहु * बालक इन्हें मुदित मन देहु

दो० इनहीं के तपतेज बल, बधि तमिचर मख राखि।
ऐहैं अलमङ्गल सहित, सर्ब विजय शिवसाखि॥
सुनि नरेश तब सहित सनेहा * दीन्हे सौंपि सुवन कहियेहा।
नाथ हाथ धर बन मग जाता * तुमहींहो इनके पितु माता।
विश्वामित्र लहे दोउ भाई * मानहु रङ्क महानिधि पाई।

छन्द॥

मानो महानिधि पाय तब मुनिराय है संतुष्टजू।
बोले अहो तुम धन्य नृप निज राजनयमें पुष्टजू॥
है अर्थ सब तब सिद्ध याते धर्म रक्षति जो अहो।
पुनि सुखासीन स्वधीन दीनमलीन पथ नाहीं गहो॥
जो पूर्व पितृ पितामहादिक की रही सदवृत्तिजू।
सो अर्थधर्म सुकाम मे तब भई नहि निरवृत्तिजू॥
मोहि देत रामहि किहेउ कष्ट सो नष्ट पथ नाहीं रहै।
रघुनाथ प्रेम बिहीन कौने धर्मफल पायो अहै॥
तुम गहतहौ नहि काल कीन्यो मूढ़ मूढ़नकी दसा।
पल्लवत फूलत फलत सुखसों सर्बरस तुम्हरी रसा॥
सत शौच धीरज दया मृदु तप तोष क्षमा गँभीरहो।
निरमान मति बलवान ज्ञान निधान हर पर पीरहो॥
बशकरन भीति दिखाइ भीरुह श्रेष्ठहित गहे बिनयहो।
समनूनको करि तेज राखत स्ववश तुम दिन दिन यहो॥
तुम भ्रात पितु गुरु मित्रको रिपु ओर लखि बध करतहौ।
अरिअन्ततक समसन्त सतति बचनप्रिय अनुसरतहौ॥
तुम मारि प्रतिपक्षीन पाछे कृपा करि कृतबोधहो।
पुनि चपल पथको कर्म लायक देत फल करिशोधहो॥

विश्वासहूके नरनते नाहि रहत क्वहुँ निशङ्कहौ ।
है जासु नहिं विश्वास तासों सदा शङ्कित अङ्कहौ ॥
जे चारलागक तिन्हैं करिकै चार भेजत देशहौ ।
बहुभेष धरि ते खबरि लावत लखत तेहि तुम बेशहौ ॥
तुम सदा रहत प्रसन्न सबसे निडर कारज कालहौ ।
करि मन्त्र राखत गुप्त सन्नत सावधान नृपालहौ ॥
तुम जात दीनन दीनपै कृत कार्य कहत न साथहौ ।
निःशेष कार्य न करत परको रखत कछु निज हाथहौ ॥
तुम प्राप्तभयको देखि तासों होत अभय सँहारिहौ ।
जो कार्य आगे होइगो तेहि प्रथम लेत विचारिहौ ॥
पुनि देश काल स्वभाग्य माफिक कार्यमें मन देतहौ ।
करि साधु विप्रन तोष आशिरवाद निनसों लेतहौ ॥
तुम त्यागि मत नास्तीकतालम लखत आमद खर्चहौ ।
गज अश्व गढ़ भट काम कारक आदि स्वरकी अर्चहौ ॥
श्रम थोर फल बहुविधि सो जानत प्रजनके पुरनामहौ ।
रघुनाथ मालाकार सम तुम करत जगको कामहौ ॥
जल अशन वनपटअस्त्र अनुपम किये बहु अर्जित सहौ ।
हैं भूप जे तव वश्य तिनको सग नित लीन्हे रहौ ॥
निरबन्धु पशु अनाश्रयिनको करत नित पालन अहौ ।
युध बेदमन्त्रनकाभिवादन करत करि लालन चहौ ॥
करलेत बनिकनते तिन्हैं घर कुशल पहुँचावत अहौ ।
रणदानमें नहिं गहत लालच चपलता मनमें गहौ ॥
हौ लेत कारज जासुसे ताहि देत संपति भूरिहौ ।
हरिभक्त मन वच कर्म रहत अधर्मते नित दूरिहौ ॥

निज कुटुंब पाल समान सुखप्रद भये सुत निज केहरी।
हों सकत त्यहि न प्रशंसि देत अशीश जविहु बयचरी॥
पुत्रन हित करु शोच न किनका * कोउ न है दुखदायक इनका
सुनिकै सकल मातु अकुलानी * करिहैं विघ्न रामजिय जानी
तुरतै प्रभु निजमाया प्रेरी * त्यहिं तन हरी प्रीति सबकेरी
द्वादशी दिन पारण करिकै * पुरवासिनको धीरज धरिकै
पहिरि बसन भूषण प्रतिअङ्गा * कटि तरकस कर शरशारङ्गा
जननि जनकपद शीश नवाई * पाइ अशीश चले हरषाई
चलत दीन हनुमानै छोरी * कछु दिनमें बन मिलन बहोरी
कहत सुनत इतिहास हरीका * देख्यो आइ तपोबन नीका
परिवादिवस ताड़का धाई * रामहिं मुनिबर दीन दिखाई
रुकिकै प्रभु अवलोकत नारी * द्विजद्रोही बध दोष न मारी
बैरी बनजा दीरघ जिह्वा * सुरपति त्यहि माख्योलखिलिह्वा
भृगु भामिनि निशचरहितकारी * नारायण त्यहि आपु सँहारी
परशुराम गञ्जी निज माता * तिमि तुम याहि हतौ गतिदाता
गुरु आयसु सुनि नीतिनिधाना * बरजि त्रोणते काढ़यो बाना
दो० कढ़त एक धनु चढ़त दश, कर्षत भे शत बाण।
तजत सहसतन लाग है, लक्ष गये त्यहि प्राण॥
तनु छूटत भे सुन्दर भामा * अस्तुति करत गई हरिधामा
लखि प्रभाव मुनिमाया कीन्ही * विद्यानिधिका विद्या दीन्ही
ज्यहिते लाग न छुधा पियासा * अस्त्र शस्त्र विधि तेज प्रकासा
पुनि मुनि ते बोले रघुराई * निरभय यज्ञ करो तुम जाई
आयसु पाइ करन मख लागे * बैठे प्रभु रक्षा हित आगे
खबरि पाइ, सुबाहु मारीचा * धावा विपुल संग लै नीचा

गीतिकाछन्द ॥

धावा विपुल लै नीच बीचहि राम बिन फरशरहयो ।
मान योजनाग्र विचारि कारज पार सागरके गयो ॥
पुनि अग्नि अस्त्र सुबाहु जाग्यो लषण सब सेना हनी ।
हरष सकल सुर सन्त बरषि प्रसून कहि रघुकुलननी ॥

इति श्रीविश्रामसागरसचमनआगरत्नगउजागरथीरघुनाथदास-रामसनेहाकृतविश्वामित्रमत्तरक्षणनामसप्तोऽध्याय ॥ ६ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
अगिनवेशमत कहौं कछु, पद्मपुराण बखानि ॥
करि अविघ्न मख आप गेउ. भैयन दीन अशीश ।
रहे तहां निजदूत सुनि, पठयो निरहुत ईश ॥

दूत आइ मुनिवर सुनायो * सहित समाज विदेह बुलायो
हेतु समुझि बोले मुनि बाता * देखन चलहु धनुषमख ताता
भली नाथ कहि कृपानिकेता * चले साथिगुरु अग्नि समेता
हरि दिन एक शिला राखि पाई * वह मुनि पद प्रभु देह दुखाई
कारण कौन सकल मुनि बरणी * गौतम शाप पाइपि परणी
एक दिन इन्द्र सुरनते गहेऊ * मम तियसंग बर तिय कहं चहेऊ
देवनरवि रवि शशिहि बतायो * अधिक अहल्या मुनिहं भायो
सुनि मुनिगे तमउर सम बानी * गौतमवपु वासव रति ठानी
कहेउ मन्त्र छल तुम्हरे गेहा * भवन आय लखि कह बन्देहा
एक भगहित तुम आयो हमरे * हाहं मारसमग मन तम तुम्हरे
कहेउ अहल्यापे पविरूपा * हे सब कष्ट सहौं सुरभूपा
विनय सुनत बोले हरिचरणा * तुमहि मोर तोहि निरवरणा
दनमुनि मुनि कह मुनि भाखी * धनुषुनि सुनि हर्ष सब आखी ॥

बहुदिनते पथ लखत बिचारी * सुनि प्रभु पदरज दीनिनिहारी
परसत चरण भई बर नारी * सन्मुख ह्वै अस्तुति अनुसारी
दो० जय जगदीश्वर सर्व पर, प्रेरक प्रकृति प्रभाव।
अद्वै ब्रह्म अनादि सुर, राम अकाम सुभाव॥
त्वत्पद पल्लव महत्पद, पुण्य यशाश्रित येपु।
भवधि बत्सपद परम्पद, पद बिपदा नहिं तेपु॥
जे विषयिक जगजीवजड, कर्म क्रिया युत मान।
ताही के मदते छके, मायामोहित ज्ञान॥
ते नर आश्रित होत नहि, तव पदपङ्कज नाथ।
भूली सुधि शुभ पन्थकी, विषय कुपन्थ सुहाथ॥
शमि करि विनय भक्ति बर पाई * हर्ष सहित पतिलोक सिधाई
मुदितसकललरिगतिअभिरामा * जाय गङ्गतट कीन्ह प्रणामा
पूछा प्रभु किमि आई गङ्गा * कौशिकमुनि कह सकल प्रसङ्गा
भूप भगीरथ तप करि लाये * पुरिखा जेहिविधि स्वर्ग सिधाये
जासु प्रभाव मुनिन बहु गावा * सोइ सुबोधिनाम्यहि नहिपावा
मुनि ससमाज सप्रेम नहाने * दान दान भूसुर सनमाने
पुनि सब ऋषिन सहित रघुबीरा * पहुँचे जाइ जनकपुर तीरा
दो० देखे बन उपवन विविध, बापी कूप तडाग।
मणि सोपान पियूषजल, पान करत श्रम भाग॥
चामीकर घर सबनके, चौहट हाट अनूप।
धनिक वणिक बैठे मनहु, धनद धरे बहुरूप॥
मिथिलापतिके महलकी, शोभा किमि कहि जात।
जहँ विहरत श्रीजानकी, अखिल लोककी मात॥
दमयन्ती रति विधुमती, मातरूप सुतिगात।

लाजत मदन मयङ्कलखि, सीताजूकी मात ॥
रवि ते मणि शशिशम्भुते, ज्यों पावनते गङ्ग ।
लही अधिकछवि त्यों लही, निमिकुल सीय प्रसङ्ग ॥
जहँ तहँ टिके नरेश बहु, बलवाहन जिन साथ ।
शुचिआश्रमलखिमुनिनयुत, उतरे तहँ ऋषिनाथ ॥

सो० खबरि पाइ मिथिलेश, सहित सचिवभट भूरिद्विज ।
आये जहां ऋषेश, नाये मुनिपद शिरसबन ॥

दीन अशीश निकट बैठाये * बूझी कुशल दरश तव पाये
राम लखन कर रूप निहारी * जनकसहित सब भये सुखारी
जोरि पाणि बोले मुनितेरे * नाथ कहौ ये सुत किनकेरे
मुनिकुलतिलक किनृपकुलजाये * की दोउ ब्रह्मरूप धरि आये
इन्हें देखि मोहि भा सुख जैसा * नहि प्रियलाग ब्रह्मसुख तैसा
कौ, भरि जन्मयोग हम कीन्हा * ताका फल विधिवत विधि दीन्हा
कह मुनि सत्य कह्यो तुम नाता * ये प्रिय सबै जहांलग गाता
कोशलेश दशरथ बल जाका * जानत दशमुख सुरपुरशाका
तिनके तनय मनोहर चारी * लक्ष्मण राम भरत रिपुआरी
उभयवंश अवधेश निकेता * लायौं मागि मिथुन मखहेता
असुर मारि मम यज्ञ कराई * पदपरसत मुनितिय गति पाई
धनुषयज्ञ सुनि तव पुर आये * भले नाथ दृग सफल कराये
निज समाज ते पुनि सुरानी * गाधिसुवनकी कथा बखानी
इलकर बिमख जान नहि जाना * तेजपुञ्ज अतिक्रोध महाना
जासु समुझि तप तेज विधाना * अजहू डरत रहत सुरताना
मुनि वशिष्ठके पुत्र अनेका * जिन मारे नहिं छोड़े एका
जन्मि सातिकुल भे द्विज वर्णा * सृष्टि दूसरी लागे कर्णा

तपबलते जिन नदी अमाना * करी कौशिकी पुण्य महाना
गो त्रिशंकु करि गुरु अपराधा * दियो शरण ताको निरबाधा
ऐसे जिनके कर्म अनेका * मुनि मुनि बोलें सहित बिबेका
दो० एक लोक परलोक नहिं, यक परलोक न लोक।
एक सुखी दोउलोक में, तिन मा तुम गत शोक॥
सुनहु भूप सब भूप कहावैं * निजरक्षा कोउ करि न सकावैं
तुम साधे नृप दुनहुं लोका * करतभयो सब प्रजा बिशोका
नाथ कृपा कहि सहित समाजा * आनि उतारे शुभथल राजा
षोडशभांति पूजि सहचेता * हरष सहित तब गये निकेता
दो० पहर तीसरे कह्यो प्रभु, मुनिपद शीश नवाइ।
लषण दीख चाहत नगर, आवहु तात देखाइ॥
आयसु पाइ चले दोउ भाई * खबरि सकल पुरबासिन पाई
बालक बृद्ध तरुण नर नारी * धाये निज निज काज बिसारी
देखैं जब रघुपति बपु आई * अङ्ग अङ्ग प्रति रहे लोभाई
करहिं बात सब आपुस माहीं * इनसम रूपवन्त कोउ नाहीं
बिधि हरि हरहैं बिश्वबिशाला * ते मुख चारिभुजा बिकराला
मदन अतनु शशि रहत न पूरा * अपर जीव अस कहिं रूरा
कोइ कह धन्य नगर इनकेरा * सतत जहँ ये करत बसेरा
धन्य सकल पुरबासी अहहीं * जब तब जे अवलोकत रहहीं
कोइ कह धन्य मातु जिन जाये * कोइ कह धन्य दरश हमपाये
कोइ कह भागवती नृपजाई * बिधि जमका तस देत मिलाई
कोइ कह अबै कठिन है कामा * कोइ कह धनुष तोरिहैं रामा
कोइ कह ये बालक महि घोरा * देखत छोट अहैं बरजोरा
जिन मग शिला उधारी एका * मरसहित मारे असुर अनेका

कोइ कह ऐसहि करै विधाता * तौ हमका सबका सुखदाता
दो० बाणी रूप अनूपबर, बरण बाम ते बाम ।
कहैं बामबिधि बिधि करी, बामदेव धनुबाम ॥
कोइ कह इन्हैं भूप जब देखी * तजि प्रण करी विवाह विशेखी
कोइ कह प्रथम नरेश निहारे * प्रण नहिं तजी लाजके मारे
कोइ कह धर्म कर्म भल सोई * ब्यहि पाछे पछितावन होई
कोइ कह मनमें करौ उछाहू * होई राम सियाकर ब्याहू
कोइ कह जो विधिवश असहोई * तौ कृतकृत्य होइ सब कोई
बारबार नृप सुता बुलैहैं * देखब तब जब चालन ऐहैं
कोइ कह हम चाहैं नृप ढोटा * होइ न कबहू नयनन ओटा
कोइ कह भागचही असमाई * सूती में नहिं सिन्धु समाई
जो न होत बडि भाग्य हमारी * तौ न मिलत मिथिलापुर प्यारी
दो० फिरकीसी थिरकी फिरैं, खिरकिन प्रति नवनारि ।
सिरकिनतजिरघुनाथछबि, निरखै पलक बिसारि ॥
जब ब्यहि नयनओट चालिजावैं * भई हानि अस बचन सुनावैं
एक कहै तुम भले निहारे * भइ सखि बैरिनि लाज हमारे
आवत निकट बदन पट दीन्हा * भरि नैनन अवलोकि न लीन्हा
एक कहै बरबस मन मोरा * हरि लीन्हो सावरो किशोरा
एक कहै अस जगमें कोई * इन्हैं बिलोकत जो न बिमोहैं
कोइ कह सत्य बचन सखि तेरे * इन चित चोरि लिये सब केरे
अबधौं बिधि कब दरश देखाई * रङ्गभूमि फिरि देखब जाई
कोइ कह सपनेकी निधि जानौ * बिन सम्बन्ध बादि सुख मानौ
कोइ कह जो बिधि होइ दाहिन * तौ इनते बनु उबरै चाहिन
नाहिंत दरश दूरि इनकेरे * अबला बपु कछु होत न हेरे

यहिविधि निजनिजमतिअनुहारी * करै बात जहँ तहँ नरनारी
शोभासागर अनुज समेता * सुलभदरश सब पाइ देता
रङ्गरास पुनि देख्यो जाई * अति विचित्र रचना मनभाई
बालक जो ज्यहि ओर बुलावै * प्रेमविवश प्रभुत्यहि दिशिजावै
सबके नाम कहै मृदुबचना * तुम भलि तान देखायो रचना

दो० जाकी इच्छाते रचत, माया अण्ड अनेक।
सोप्रभु चितवत चकितचित, भक्तवछलहित एक॥
लोचन सबके सुफल करि, लषणसहित रघुनाथ।
उतरे जहँ तहँ आइकै, मुनिपद नायो माथ॥
शर्वनिशा सोये सकल, शौच क्रियाकरि प्रात।
समय पाय आयसु चले, सुमन लेन दोउभ्रात॥

त्रिभङ्गीछन्द॥

पहुँचे नृपबागा सहअनुरागा देखत लागा अतिनीका।
जामें ऋतुराजा सहितसमाजा रहतविराजा नितहीका॥
नानातरु फूले सकलसमूले मधुकरभूले गुंजारैं।
खग विविधकलोलैं जहँतहँ बोलैं जनुनिजटोलैं हकारैं॥
सरमध्यसोहाना मणिसोपाना जलचरनाना कमललसैं।
त्यहितटअतिनीकासदनसतीकाछवि जनजीकाचोरिबसैं॥
अद्भुत फुलवाई सकलमँगाई पुनि दोउभाई प्रेमपगे।
मालीगणजेता पूछिसचेता मुदित सुमन दल लेनलगे॥

दो० त्यहि अवसर सीता तहां, आई सखिन समेत।
मातु पठाई मुदित मन, गिरिजा पूजन हेत॥
मज्जनकरि सर सखिनयुत, गई गौरि के धाम।
पूजि यथोचित मनहिंमन, मांग्यो वर अभिराम॥

सो० एक सखी तजि सङ्ग, देखे बालक आय दोउ।
आई सहित उमङ्ग, बूझेते बोलत भई॥
सुनहु सखी यहि बाग मझारा * आये हैं द्वय सुभग कुमारा
गौरश्याम छविधाम किशोरा * चितवतचित चोरो जिन मोरा
रूप अनूप सखी किमि भाखी * नैन अवैन बैन बिन आखी
कह्यो एक हूँहैं सखि सोई * जिन मोहे पुरजन सब कोई
वर्णन जहँ तहँ रूप विशेखी * देखनयोग चलहु सखि देखी
आगेकरि सोइ सखी पियारी * चलीं सकल चहुँ ओर निहारी
विटप ओट जब देखे जाई * गई अपनपो सबै भुलाई
वैदेही जब रामहि देखा * गिरीमूर्च्छि महि प्रेम विशेखा
रूपविशिखविष बिछुरन लागा * जो न गिरै अघ तौ नहिं लागा
धरि धीरज तब सखिन उठावा * लेहु देहु नृपसुत सुनि भावा
पुनि सन्मुख दरशे दो भ्राता * सहज सोहावन पावन गाता
दो० शारँगदण्ड सुखपाशिपद, शारँग कटिवपुधार।
शारँगधर रघुनाथछवि, शारँग मोहनहार॥
धनुष यज्ञ छवि देखि उदारा * पितुप्रणसमुझिबहुरिपछितानी
सकलसखिननिजमन असचाहा * हठपरिहरि नृपकरै विवाहा
तौ सब के मन होइ अनन्दा * अपर अधिपसँग कारज मन्दा
इत जानकिहि देखि रघुवीरा * बोले लक्ष्मण ते धरि धीरा
दो० तात तकहु छविराशि यह, जनकसुता है सोइ।
ज्याहि हितधनुमखहोतसुनि, बटुरे नृप सब कोइ॥
जासु अलौकिकरूप लखि, सहज स्वच्छ मन मोर।
भयो क्षुभितनिज सींवतजि, सो गति जानै कोर॥
छन्दो लक्षण होतव्य जो, सो प्रथम दरशात।

करत बात इमि तातन, मनअटक्यो सियगात ॥
इतैसखिन लखिगहरुनिज, उर हरि मूरति लेखि।
आई गौरि निकेत पुनि,खगमृगमिसिदिशिपेखि॥
यथा पुत्र पितु प्रोक्तते, चिन्तामणि म्वहि देह।
दरशै दीरघ धामकहु, फिरि आवै कह येह ॥
कमलछन्द ॥ तिमिसीया। लखिपीया॥हितबर्ण।लगिकर्ण॥

त्रिभङ्गीछन्द ॥ जय जय भव भामिनि त्रिभुवन-स्वामिनि मृगपतिगामिनि ज्ञानानिलं। तदिताङ्ग अनूपं अद्भुतरूप मुखद्विजभूप पाकदिलं ॥ भुजचण्डचिकालं धृतकरबाल कृतजनपाल कामप्रद। सुरनरमुनि वन्दनि असुरनिकन्दनि भूधरनन्दनि कूटकृद ॥ जय जलजबिलोचनि रतिमदमोचनि परहितशोचनि कक विधे। भव बिभवप्रकाशिनि कलिमलनाशिनि स्वयशबिलासिनि नीतिनिधे ॥ अतिअमितप्रभावा बेदनगावा तदपि न पावत पारकुत। विघ्नेशषड़ानन ममममतिमानन ऋधि सिधिशासन नेमयुतं ॥ जेजे तवचरणं स्मृतिनिरणं तेपर बरणं लब्धफल। पतिपदरतिलागी नियअनुरागी सो बड़भागी होतहलं ॥ अब मोपरदाया कन्महमाया प्रकट न गायागुणजानी। सुनि इत्य वचन गौरिसुरचनं बोलीं वचनं मृदुबानी ॥

जय जय श्रीमिथिलेश दुलारी * जय जगजननि जनकमनहारी।
जय जगमगन विभूषणचीरा * तड़ित बरण वपुछबि गम्भीरा।
जय जगदुस्तर दरश तुम्हारे * करि कृपा विचरत नृपद्वारे।
जय भवभय भञ्जनि सुखदेनी * विधि हरि हर बन्दत सुरसेनी।

जो जगजननि परिसुगति अवहीं * बिन तव कृपा न सपनें लहहीं
सबके परे देव जेहि गावैं * सो तव सुमरणते कर आवैं
दिव्यवर्ष शत शंकर गायो * रामगुरु दै पथ बतायो
तव बल दरशन ते सुन राहेऊ * इमपि अगस्त्य सहिता कहेऊ
सेतु सहसमुद्रा दशमुखजाना * तव महिमा नहिं सकत बखानी
हम सम्मान तव ओटिन दासी * लगन निरखि नित करैं खवासी
सो तुम मातु विलंब मम कीन्हीं * निज जननी बड़ाई दीन्ही
चतुर दास काहे जब जैसा * तब तहँ नाच देखावै तैसा
त्यहिते लेहु अशीश हमारी * पुनि मनकामना तुम्हारी
नारद वचन सदा उर धरेऊ * पाइ परीक्षा पुनि परिहरेऊ
सुनि सियसकुचसहित उरसाखी * चली पूजि पुनिगृह अभिलाखी
सांवहि जान जानि रघुराई * चित्रचारु हरु लीन बनाई
अनुज सहित आगे गुरुपासा * सुमन दीन सबहाल प्रकासा
अर्चन करि मुनि वचन उचारे * होहु मनोरथ सिद्ध तुम्हारे
सुनि मनमुदित गये दोउभाई * भा गत दिवस निशा तब आई
प्राचीदिशि शशि देखिसोहाना * सियमुखसरिस न पुनि अनुमाना

दो० बढ़त घटत नित मदत नभ, दिन मलीन रिपुराहु ।
सियमुखसमकिमिहोइशशि, दीन दुखद सब काहु ॥
गौरिगिरासम कहिय किमि, शैलसुता वाचाल ।
रति अनङ्गपति सिन्धुजा, चपलानुज जेहि काल ॥
छवि पयोधि गिरिप्रेम अहि, सामा सुरसम जोइ ।
इमि मथि काढ़ै लक्षि जो, सोउ न सियसम होइ ॥
इहि विधिते अंगअङ्गकी, उपमा करत विचार ।
भई निशा सब नाश पुनि, देखि परा भिनसार ॥

बोले लक्ष्मण ते लखहु, अरुण उदय भे तात ।
काहुइ तौ अतिसुखद है, काहुइ दुखद लखात ॥
सुनि सौमित्र कह्यो, मृदुबानी * प्रभुप्रताप पूषण पर आनी
जिमि रवितम गञ्ज्यो करिदापा * तिमि तववल विदली भवचापा
उठिहैं फूलि कमल सब सन्ता * होइहैं पुरजन मुदित अनन्ता
भृगुपति गति मयकद्युति हीना * नृपगण ह्वैहैं नखत मलीना
खलउलूक दुरिहैं तजि धीरा * ह्वैहैं चक्रवाक यक तीरा
गूढगिरा सुनि प्रभु मुसक्याने * एक दिना बन जाइ नहाने
नित्य नेम करि सहित समाजा * त्यहि क्षण बोलि पठाये राजा
शतानन्द तहं आइ बखाना * ऋषिनसहित मुनि कीन्ह पयाना
लागे लोग अनेकन सङ्गा * धाये विपुल प्रथम महिरङ्गा
चहुँदिशि फिरत विचार समेता * त्यहि अवसर आनन्दनिकेता
रङ्गभूमि आये दोउ भाई * जनु शोभामधि शोभा आई
जिन जेहिभाति भावना आनी * तिन तस देखे शारँगपानी
योगिन तत्त्व नृपन नृपश्रेष्ठा * बुध विराट भक्तन निज इष्टा
सुरननाथ असुरन समकाला * शिशुनसुहृदमनसिज वपुवाला
जनक जनकरानिन जामाता * मिथिलापुर वासिन बहुनाता
बैदेही देख्यो त्यहि भाती * उर अनुभव तिनसो कहिजाती
सबके मन भरोस अस आया * अवशि चाप त्वरिहैं रघुराया
दो० भई भीर अति जनक लखि, सेवक दिये पठाइ ।
यथायोग्य सब काहु तिन, आसन दीन्हो जाइ ॥
रङ्गभूमि मुनिनाथ कहँ, सकल दिखाई भूप ।
बोले कौशिक धन्य नृप, रचना किन्हो अनूप ॥
सब मञ्चनमें मञ्च यक, अद्भुत बननि विशाल ।

त्यहि ऊपर सब मुनिनयुत, बैठाये नरपाल ॥
धनुषध्वंस नभ रङ्गमहि, उडुगणलोग अपार ।
रामलषण युग चन्द्र सम, ऊगे सभा मझार ॥

चितवै सकल रामकी ओरा * जिमिमयङ्क दिशि विपुलचकोरा
कोइकोइ नृपन नृपनते भाषा * बलहुभवन परिहरि अभिलाषा
धनुदलि सिय बरिहैं रघुराई * तुम कत तजिहौ मान बडाई
बिनहुं दले पैहैं जयमाला * सुनि बोले तब कुटिल नृपाला
टूटे धनुष कठिन है व्याह * बिनभञ्जे को बरी कुआहु
कालहु कस न होइ यकजोरा * सियहित समर करब हम घोरा
सुनि बोले तब सज्जन राजा * गाल बजावत तुम्हैं न लाजा
कनक कशिपुस्वर नावकबीरा * सहसबाहु मधुकैटभ धीरा
जिनते बिजय न काहू पाई * तुम जितिहौ अब बलअधिकाई
परम सुभट अवधेश कुमारा * बरिहैं सिय मथि मान तुम्हारा
जीतनहार न कोउ जग जावा * करै चहै सो गाल बजावा
जगतपिता रघुपति कहँ जानो * जगजननी जानकिहि पिछानो
त्यहिते दुरबासना नेवारी * भरि लोचन छबि लेहु निहारी
नहिं मानौ तौ खधक जाहू * हमैं मिला नरतन कर लाहू
त्यहि अवसर मिथिलेश पठाये * सभामध्य बन्दीगण आये
भुजउठाइ बोले तहँ दोऊ * सुनहु सुभग नृपकर सबकोऊ
भवन चतुर्दश केर भुवाग * बैठे हैं यहि सभा मँझारा
जो लेई शिवचाप उठाई * सो बर विजयसहित सिय पाई
सुनि हरषे अबिवेकी भूपा * कसिकासि कमर चले अहिरूपा
निजनिज इष्ट सुरन शिरनाई * हमकि बरहिं धनु उठै न राई
नलबिबेक गुरुबातम शोभा * फिरहिं हारि धनुकरबशलोभा

दो० लज्जितह्वै दशसहसनृप, मिलिकरि किहिनिविचार ।
लावहु डारी तोरि धनु, पुनि लखि लेब पछार ॥
दश सहस्र यकसग भुवाला * रहे उठाय न नेकहु हाला
हँसन योगभे ते नृप कैसे * बिन बिराग सन्यासी जैसे
जे नृप रहैं चतुर मतिधीरा * ते नहिं जायँ शरासन तीरा

गीतिकाछन्द ॥

नहिं जाय ते धनुतीर देखि बिदेहबद गह्वर हियो ।
सुर नाग नर नृप असुर आये सुनत जो हम प्रण कियो ॥
को कहै कर्पनिकेर काहु न अवनि अल्प छोड़ायहू ।
बर बिजयकीरति कुँवरि पावनहार ब्रह्म न जायहू ॥
त्यहिते सकल तजि आश निज निज भवन गवनहु सबजू ।
भटहीन महि कहि अब न कोई बीर ठानै गर्बजू ॥
जो बात यह जनत्यों प्रथम तो नेम नहि करत्यों इद ।
किनरहै कुँवरि कुमारि कर्म न धर्म त्यागत कोबिद ॥

सुनत बचन पुरजन अकुलाने * सकल सभाके नृप सकुचाने
शरसम बचन लषणके लागे * बोले उठि रघुपति के आगे
नाथ जनकअति अनुचितभाखी * काहू की कछु बानि न राखी
तेहिते जो तव आयसु पावौं * तौ इनको बौरता देखावौं
कन्दुकदव कर गहि ब्रह्माण्डा * धनुष समेत करहुं शतखण्डा
नाथ शपथ जो अस नहिं करह * तो फिरि हाथ न धनुशर धरहू

दो० यहिप्रकार के बचन जब, बोले लषण सरोष ।
डगमगानि महिकुधरसुनि. पायो सुर मुनि तोष ॥
जनमन मुदित जनक सकुचाने * सिय समेत पुरजन हरषाने

सैनन प्रभु अनुजहि चुपवावा * सहित सनेह निकट बैठावा
तब बोले ऋषि प्रभुते बाता * अब उठि शिवधनु तोरहु ताता
उठे तुरत गुरु आयसु पाई * सहज स्वभाव चले शिरनाई
हरषे सुनि मुनिजन प्रभुकेरे * देखि विदेह कहो ऋषि तेरे
नाथ रामजीते मनलोभा * त्यहिते भई अधिक तन शोभा
धनुके कर्षण योग न आही * बरजिलेहु त्यहिते जनि जाहीं
भूप करहु मति विस्मय कोई * इनते कठिन कोदण्ड न होई
रामहिं चितै जनककी रानी * बोलीं बिलखि सखिनते बानी
देखो सखि यहि सभा मझारा * बैठे हैं बुधिमन्त अपारा
यहि अवसर सबकी मति खोई * उठि रघुपतिहि न बरजत कोई
गरुव कठोर कहा शिवचापा * हारे सकल भूप करि दापा
त्यहि हित अब बालकै पठावै * हस सुवन कहुँ मेरु उठावै
सुनि बोली गुरुतिय तिनपाहीं * तेजवन्त लघु गने न जाहीं
कहँ पावक वन दहत प्रचण्डा * कहँ वामन नाप्यो ब्रह्मण्डा
कहँ रवि कहँ तम तोम विनासै * कहँ आकुश कहँ करिहिसत्रासै
प्रणव मन्त्र यक अक्षर जाके * विधि हरिहर सुर सब बश ताके
भृगुसुत च्यवन पेटते कढ़िकै * असुर पुलोमहि जाएँ बढ़िकै
बालखिल्य अगुष्ठ प्रमाना * सुरपतिको मरयो तिन माना
जिमि कुम्भज दधिपीनपिछानो * त्यहिविधितुम धनुरामहि जानो
सुनि भरोस रानी मन आवा * तब तहँ लखि सीता दुख पावा
कमठ पृष्ठ सम धनुष कठोरा * कहँ सांवल मृदुगात किशोरा
प्रथम जाइ धीरज उर आना * कहत तात प्रण दारुण ठाना
हे गणेश गिरिजा गिरिराई * राम भुजनपर होउ सहाई
हे पिनाक तव काज विशेखी * होउ हलुक रघुपतितन देखी

दो० जो हमरे मन क्रम बचन, गति न अपर सुरकेरि।
तौ करिहैं भगवान म्वहिं, रघुनन्दन की चेरि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसवमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-रामसनेहीकृतरामरङ्गभूमिआगमनोनामसप्तमोऽध्याय ॥ ७॥

दो० वेदनमुख रघुनाथ सुनि, करी निवेदन देह।
बेदन मग भेदनकरौं, जो बेदनसों नेह ॥

जो निज चेरि करव प्रभु नाहीं * तौ तजि तनु मिलिहौं तुमकाहीं
यहिविधि सियप्रणकी-न्योजवहीं * धनु दिशि प्रभु अवलोके तबहीं
लषण लख्यो अब चाहत तोरा * दिये सजगकरि कुधर कठोरा
आपु चापि महि व्योम सुहावा * तब रघुपति हरचाप उठावा
प्रथमसोशशिमण्डलसमभयऊ * पुनि त्यहि तीनिखण्ड ह्वै गयऊ
एक गयो नभ एक पताला * एक गिर्यो त्यहि ठौर कराला
गहत उठावत तोरत माहीं * रहे सब ठाढ लखा कोउ नाहीं
यह शीघ्रता बहुत नहिं तासू * पलमा करै निश्व चहु नासू
पाछे तासु भई धुनि घोरा * रह्यो पूरि त्रिभुवनमहं शोरा
गडगडान गिरि तरुमहि खसेऊ * कमठकोल अहिपति कसमसेऊ
दिग्गज गिरन भिरन नभलागे * सुरविमान रवि चलत न आगे
चापिगे महि लखि सकलभुवारा * जनकहृदय सुख भयो अपारा
हरषे सब पुरजन नरनारी * सियहिय भा अतिआनद भारी
जय जय जय कहि सुरसमुदाई * बरषि सुमन दुन्दुभी बजाई
तब बिदेह रामहिं सह प्यारा * सिंहासन ऊपर बैठारा
पुनि तहं तनया बोलि पठाई * सखिन समेत सभामहं आई
पहिरे बसन विभूषण नाना * दहिने कर जयमाल सोहाना
सियशोभालखिसकलभुवाला * भये अपनपो रहित बिहाला

राम चकृत चितव चँदेही * कहा गये मम परमसनेही
रघुपति दिग लैगई सहेली * देहुमाल प्रीतम उरमेली
प्रभुछविलखि सियकछुनमाही * रही टेकि कर टारत नाही
धरि धीरज पुनि माल उठाई * सकुच सहित हरिउर पहिराई
देखि देखि रघुपति उरमाला * सुर नर मुनि सब भये निहाला
पुनि सियकर गहि कञ्चनथारी * हर्ष सहित आरती उतारी
सखिन कहाँपतिपद गहु बाला * छुवत न मुनिगुनि नियकरहाला
दो० पहिरे कर नवरतन प्रिय, तियभय धरत न हाथ ।
प्रीतिअलौकिकसमुझिकै, मन रिझैसे रघुनाथ ॥
सखिनसहित पुनि चली निकेता * तब सब भूपनके भा चेता
कुटिल महीप इमान ज्यों जागे * जहँ तहँ गाल बजावन लागे
कोइ कह सीतहि लेहु छिनाई * कोइ कह धरि मारौ दौउभाई
जो बिदेह बरजै कछु लेशा * लेहु लूटि तिनहू कर देशा
सुनि अनन्तकरिसरिसमनकहीं * सारंग बन्धुभयबोलि न सकहीं
बोले तब नृप साधु सयाने * समुझि बूझि मति होउ अयाने
जो लक्ष्मण सुनि पैहैं कबहीं * भये न रहौ मनो तुम तबहीं
दो० वारण ते वारण कहू, होइ जु वारण नाहि ।
लागीवारण वचन रिपु, इन्ह सुवारणमाहिं ॥
द्युति दिमाकबल बांकपन, मानसहित तवनाक ।
कीन्ही नाश अनाशही, ढँके हाक बिनाक ॥
स्वहिते तजि कटुवचन उठाहू * देखौ राम सियाकर ब्याहू
यहि बिधि बादि बिपुल नृपाला * अब सुनु परशुरामकर हाला
दो० छं० । गाधिराजकी सुता रूपकेशी अस नामा ।
भृगुसुत ऋचि कहँ जाइ अश्वदेवरी ललामा ॥

भृगु बोले वर मागु उभयसुत दीजै देवा।
यक हम का यक पितहि भले करि यज्ञ करेवा॥
हथिकर करि द्वै भाग कह्यो याको तुमखायो।
होई सुत द्विज प्रकृति मातुके नृपगुणगायो॥
देत भागगा बदलि बहुरि तपसी वर माग्यो।
सोई भये जमदग्नि जननिके कौसल राग्यो॥
तिनको सदल बशिष्ठजेवायो नन्द निवलते।
गो मागतगे हारि भयो तापस त्यहि चलते॥
तप प्रभाव भृपिराव ऋषिनमें प्रकट कहाये।
रच्यो स्वर्ग मखहेतु मागि रामें जे लाये॥
जमदग्निहि परसेन रेणुकासुता विवाही।
भेसुतशरमें बडे परशुधर विष्णु कलाही॥
यकदिन तिनकी मातु चित्रसेनहि लखिमोही।
कह्यो पिता शिरकाटु केहू नहिं काव्यो वोही॥
होउ सकल जडरूप रामसुनि शीशनिपाता।
बरलै चेतन बन्धुकरे ज्याई पुनि माता॥
यकदिन सहजसुभाय हरीगोराम हत्योत्यहि।
पितुअरिभोसुत तासुतेहीतेविपुल बारमहि॥
बिनु क्षत्रिनके करीबरी विप्रनकहँ सोई।
रहि महीन्द्रगिरि मध्यसिन्धुतेसनत चलोई॥

इत नृप मृढनकी गलमदरी * मिटन न पाई जबतक सगरी
यहि अवसर आये भृगुनाथा * लीन्हे धनुशर फरसा हाथा
गौरवर्ण शिर जटा विशाला * अरुण नयनउर तुलसिकमाला
सहजहु चितवें जासु कि ओरा * सो जानै जिव लीन्हेंसि मोरा

जहँ तहँ देखि देखि नृप भाजे * बहुतेन रूप नारि के साजे
बहुत सभय चरणन शिर नावैं * पिता सहित निजनाम बतावैं
जनक सहित सिय नायो शीशा * भृगुनन्दनलखि दीन अशीशा
कौशिक ऋषि लै दोनो भाई * मुनि पद मेले नाम बताई
रामहि देखि रहे ठगि ऐसे * बोले पुनि अनजानत जैसे
जनक जुरी केहि हेत समाजा * सीय स्वयम्बर है महराजा
आगे धनुष टूट महि देखा * बोले तब करि क्रोध विशेखा

छप्पय ॥

रे जड जनक बताउ धनुष कौने यह तोरा।
सो तजि सपदि समाज निकसि आवै मम ओरा॥
नाहिंत नृप सब मारि देश सब चौपट करिहौं।
तीनिलोकमें ढूढ़ि तासु करमद सहरिहौं॥
सुनि बिलखे पुरनारिनर हरखे कुटिल नरेश सब।
हृदय न हर्ष विषाद कछु बोले श्रीरघुनाथ तब॥
सुनहु नाथ सब साथ प्रबल भावी लखि परई।
जो कृत तिनकै कुलिश कुलिश तिनकासम करई॥
कहा शम्भु कोदण्ड कहा हम बालक बारे।
होनहारकर रोष दोष शिर पर्यो हमारे॥
यथा तारफल पाकिकै पतित होत खगनाम भव।
जो भावै सो कीजिये सब प्रकार हम दास तव॥
सुनहु राम सोइ दास सदा जो सेवा टानै।
करै शत्रुकर काम ताहि को दास बखानै॥
त्यहिते हरकोदण्ड आजु जेहिं खण्डा होई।
सहसबाहुसम समुझि तासु गति करिहौं सोई॥

भृगुपतिकेर स्वभावसुनि भई सिया अतिशोचवस ।
तब तिनते मुसक्याइकै बोले लषण कुमार अस ॥
सुनहु विप्र पनबाल बहुत धनुही हम तोरी ।
तब न किहेउ रिस कबहुँ आजु कहिहेतु न थोरी ॥
तब जननीकर पाप पाप त्रिपुरासुरकेरा ।
अपर नृपनकर पाप चापचित चेति सबेरा ॥
रघुपतिभुज तीरथविषे तजेसि प्राण रतिहेतु त्यहिं ।
बिनसमुझे रघुनाथपर करत रोष परितोष नहिं ॥
रे बालक मतिमन्द मोहि तू ज्ञान सिखावत ।
सब धनुहिनकी सरिस शम्भु कोदण्ड बतावत ॥
सहित रामसिय तोहिं खेदि बन माझ जकैहौं ।
नृप दशरथै मारि सकल पुरननहि रोवैहौं ॥
मरतै भूतल तोपिकै बहुरि तपैहौं तापबहु ।
जो न करहुँ अस शिवशपथ तौ न कहावौं नामयहु ॥
सुनि बोले पुनि लषण नृपा कत मारत गालै ।
ईश चहै सो करै अपरते रोम न हालै ॥
सब धनु एक समान कौन यामे अधिकाई ।
छुवतै टूट पुरान घुनन डारा रहै खाई ॥
जो नहिं प्रिय यह नामतौ लीजै अपर धराइ मुनि ।
विप्रनकी कछु कमी नहि सुनि बोले भृगुनाथ पुनि ॥
रे नृपबालक मन्द देखु परशा की ओरा ।
ज्यहितें बधि बहु भूप छीनि छोनी बरजोरा ॥
को जानै कैबार सौंपि विप्रन कह दीन्ही ।
तोको बालक समुझि ढील इतनी हम कीन्ही ॥

अचते परख प्रभाव मग यमजनि पितर रोवाउ निज।
नाहिंत डरिहौं मारि फिरि निपटहि जान न मोहिद्विज॥
हे मुनि कत हरवार देखावत मोहिं कुठारी।
फूंकनते तृण उडत उडत नहि भूधर भारी॥
जो तुम होतिउ सुभट तदपि हमरे कुल माहीं।
विप्र धेनु सुर साधु लरत इनते कोइ नाहीं॥
बधे पाप हारे अयश सब विधि भला जो खाइ गम।
अस बिचारि मन मारि तव सहियतहैं कटुवचन हम॥
गाधिसुवन सुनि लेहु अहै या बालक खोटा।
जान चहत यमलोक ललित परिहरि निज जोटा॥
त्यहिते लीजै वरजि कछुक कहि सुयश हमारा।
नाहित सबके अछत आजु खल जाई मारा॥
कौशिक समुझ्यो मनविषे मुनि जानतहैं बाल ये।
अस न विचारत जगतपति हैं कालहुके काल ये॥
हँसि बोले पुनि लषण सुनत मुनि सुयश तुम्हारा।
तुम्हैं अछत को कहै अहै अस को सरतारा॥
जो न एक मुख चुकै करो दशबीस मंजूरा।
ज्यहिते सब सुनि लेइँ सपदि है जावै पूरा॥
शूर न बरणत शूरता कादर करत कलाप घर।
समुझि परत म्वहि कछुक दिन कीन सरहँगी आपबर॥
सुनि लक्ष्मणके बचन जनक मनमाहि डेराहीं।
पुरवासी है विकल वदै आपुसके माहीं॥
देखौ भूपकिशोर गोर जेतनाहै छोटा।
तेतनो खोट लखात डरत नहिं मनकर मोटा॥

भृगुनन्दन करि कोप तब परशु सुधारेउ हाथ गहि।
रे बालक करु समर इत नाहित धरु धनुबाण महि॥
कह अनन्त यहिभांति हमैं जो अपर प्रचारत।
तौ फिर दिखत्यो समर चहै सो द्वैमा हारत॥
पूजेपर रिसकरै गुरू करपद लोपै पुनि।
पदपरिरोपै पांव नीचके करम मित्र सुनि॥
बोले बिश्वामित्र तब क्षमहु जानि अज्ञानजू।
बालकके गुण दोष दोउ गनत न जे बुधिमानजू॥
सुनि बोले भृगुनाथ याहि जो अबतक राखा।
सो सब शील तुम्हार भारतेकीन न भाखा॥
नाहित काटि कुठार उऋण होतउ गुरु तेरे।
तब मनमें सुख होत शोक मिटते उर केरे॥
गाधिसुवन मनमें कह्यो मुनि सम अज्ञ न आनकोउ।
इन्हैं बिचारत खाड़मय अयमय जानत नाहिं दोउ॥
कहेउ लपण पितकेर करज जननी शिर दीन्हेउ।
गुरुकर ऋण रहिगयो चहत हमते सो लीन्हेउ॥
गये बहुत दिन बीति ब्याज बढ़िगा बहु भाई।
लीजै ब्योहरु बोलि तुरत मैं देहुं गनाई॥
चरहिसकतकरि अचर प्रभु अचरहि जो करि देत चर।
तासु अनुज पर परशुधर कैसे सकै चलाइ कर॥
सुनो जनक मुखतनक अहै बालक कटुबादी।
मरन कहत मम हाथ चहत नहि देखन शादी॥
बेगि करो दगयोट चहौ जो याहि बचावा।
पाछे दिहेउ न दोष काल याकर चलिआवा॥

परम कठिन मम नाम सुनि गर्भ स्रवैं नृपरवनि सब ।
ताहि जरावत जन्तु जड सुनि बोले हँसि लषण तब ॥
सुनो विप्र जो तुम्हैं नीक उतमाह न लागे ।
तौ लीजै दृग मूंदि देखि बोइ परै न आगे ॥
नाहिन धन भजि जाहु बोलि पठवा नहिं काहू ।
जरत होय जो गात पैठि जलमाझ नहाहू ॥
बदहि बोलि देखाइये ज्वरकर होइ न दोष उर ।
सुनि कोपे भृगुनाथ अति डरे नारि नर जानि फुर ॥
लखि बोले तब राम कामहा नाथ बिगारा ।
मोपर कीजै रोप दोष बिन बालक बारा ॥
देखि धरे धनुबाण कहिसि कटुजात सुभायन ।
जो औल्यो मुनिबेष परत प्रमुदित तब पायन ॥
हमरे कुलकी रीति यह कालहु ते नाही डरै ।
क्षमहु चूक अनजानकी सन्त सदा दाया करैं ॥
सुनि बोले भृगुनाथ राम रिस जावै कैसे ।
श्रवहू तक तव बन्धु बिलोकत टक्कर जैसे ॥
जो न याहि फल दीन कीन करि रोप कहा हम ।
गर्भ स्रवैं नृपनारि निकट ठाढ़ो बैरी मम ॥
बहत न करबर दहत तनु कटु कुठार कुण्ठित भयो ।
किधौं बसी करुणा हिये की स्वभाव सो फिरि गयो ॥
सुनि बोले पुनि लषण नाथ मैं दास तुम्हारा ।
टूट धनुष नहि जुरी किहे रिस बारहिबारा ॥
जो अतिशय प्रिय होय कछुक तौ करिय उपाई ।
बोलि गुणी द्वैचारि बहुरि दीजै जोरवाई ॥

बैठि जाहु करि कृपा अब पायँन के रिपु होउ जनि।
नयन तरेरे राम तब गे गुरुपहँ तजि कटुबकनि॥
सुनि भृगुपति तब कोपि बचन रघुपतिते भाखा।
इत शठ विनवत मोहि भूरे उत सोदर राखा॥
करु मम सन्मुख समर नतौ त्वहिं डरिहौं मारौं।
निपटै विप्र न जानु अहौ मैं रिपुमदहारौं॥
धनुपतोरि अहमिति भई मानहुँ जीत्यो जगत सब।
सो तव अकड मिटाइहौं मुनि बोले रघुनाथ तब॥
हे मुनि कहौं बिचारि बढ़ौ जनि अब अधिकाई।
जो हम निदरब विप्र अरार को शीश नवाई॥
परसत टूट पिनाक करब हम मद क्यहि हेता।
स्वामिहि सेवक समर कहाँ कस हेत निकेता॥
यह प्रभुता प्रभु बशकी अभय होय तुमते ढरै।
गूढ़ गिरा सुनि रामकी भयो ज्ञान परशाधरै॥
तब बोले हे राम धनुष श्रीपतिकर येह।
आकर्षहु गहि पाणि मिटे जेहि मम सन्देहू॥
छुवते चढ़्यो पिनाक देखि भृगुपति पछिताने।
मारहु ममगति कूट छूट शर सकल नशाने॥
जान्यहु रामप्रभाव तब पुलकि गात युगजोरिकर।
लागे पुनि अस्तुति करन जय रघुकुलमणि मानहर॥
जय जगदीश दयाल जयति सुर द्विज प्रतिपालक।
जय मुनि मानस हंस जयति तमचर कुलवालक॥
जय शोभा सुखसिन्धु जयति करुणा गुणआगर।
जय बल विपुल बितंस जयति रघुवंशउजागर॥

जय जग यावत जीवकी सबपद प्रीति न होइहै।
तावत संसृत शोकते छूटि न सुखमें सोइहै॥
दो० जो मैं अनजाने कहा, सो क्षमियो दोउ भ्रात।
असकहिशीशनवाइमुनि, मुदित भये बन जात॥
हरषे लखि पुरलोग सब, बरषे खेचर फूल।
बाजेबाजन विविधबिधि, भाजे प्रति अनुकूल॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतपरशुरामघ्नयात्रावर्णनोनाम
अष्टमोऽध्याय ॥ ८ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
वर्णौं मानस मत कछुक, नाटक चरित बखानि॥
तब विदेह मुनिते कह्यो, होय जो आयसु नाथ।
करौं सो सुनि कहगाधिसुत, भयो व्याहु धनुहाथ॥

हरिगीतिकाछन्द॥

भयो व्याह यद्यपि साथ धनुके तदपि दूत पठाइकै।
लीजै दशरथहि बोलि सहित बरात व्याहैं आइकै॥
भलदेव कहि लिखि भेव दीन्हो पत्रलै धावन चले।
कार्त्तिकबदी प्रतिपदा दिन लिय बोलि कारीगर भले॥
तिनते कह्यो पुर सकल साजहु सुभग भवन वितानजू।
शिररखि मनअभिलाष लागे करनगुणिनिरमानजू॥
विरचे कनकमय रम्भ खम्भ अचम्भ मरुमणिपातजू।
तिमिधवरिघनिफणिबोहिलोहितसुमनमञ्जुलखातजू॥
सुर चित्र मित्र सरोजधारे द्रव्य कलि अलि धेनुजू।
असतार बन्दनवार मुक्ताहार हरित सुबेनुजू॥

चहुँओर दीपअजोर कुल किरिगुलिक चौक पुरायहू ।
ध्वज कलश चामर छत्र सौरभ परिसतरण तुरायहू ॥
दो० जिमि सुरगत सोपानमणि, जटित लसे दिशिचारि ।
विधिचतकीन बितानतिमि, तिष्ठनहित नर नारि ॥
कहँतक कहौं तहाकी सामा * जहँ दुलहिनि दूलह सियरामा
नृप गृह सरिस सबन निज साजे * शोभा निरखि देवपति लाजे
बसत लखि जहँ कपट सरूपा * तहँकर बिभव कि जाइ निरूपा
कोसलनगर सकल नरनारी * रामलषण बिन रहे दुखारी
कौसल्यादि कहैं नृपरानी * बीर जननि सुत बादि बियानी
राजहु के रहैं प्रिय अधिकारी * मुनि लैगयो ठगोरिसि डारी
तबते मिली न खबरि यथारथ * दलनदोष दुखप्रद परमारथ
यकुतौ बन पुनि अनुगण लीन्हे * ऋषिप्रसन्नहित हमहु न दीन्हे
क्यहि पठई जो खबरि लयावै * भे दिन बहु अब कछू न भावै
त्यहि क्षण दूत अवधपुर आये * फणिदिनमुनि नृपनिरटेवलाये
करि प्रणाम पाती तिन दीनी * लागे पढन प्रेम रस भीनी

चौबोलाछन्द ॥

स्वरित श्री श्रीपत्री शुभ अस्थानजी ।
कोशलपुरधुर पहुंचे नृप करकानजी ॥
लिखी बिदेहनगर ते विश्वामित्रकी ।
मिलि बाचने अशीष सहित सुर पितृकी ॥
कुशलक्षेम तव तनय अहैं ममनाथजू ।
तिनहू केर प्रणाम चरण धरि माथजू ॥
रौरे पुण्य प्रताप अचल मम मग्य करी ।
तारिनि पद रज डारि अहल्या अघभरी ॥

धनुषयज्ञ पुर जनक जुरे नृप भूरिजू।
गजइव पङ्कज राम सो डार्यो तूरिजू॥
सीताहू जयमाल तिन्हें पहिरायहू।
भृगुपति करि अभिवादन बनहिं सिधायहू॥
अब शुभ साजि बरात आइ सुत परणिये।
सुनि नृप मुद यश लह्यो सो कैसे बरणिये॥
जिमि काहू के क्षेत्र छीन सब लैलये।
है प्रसन्न तिन सहित आग कैयो दये॥
धरि धीरज पुनि कह्यो जनक कैसे लखे।
महाराज कहुँ द्विपत कुमुद पङ्कज सखे॥
सुनत भरत रिपुदवन दौरि आये तहाँ।
पूछत प्रिय दोउ बन्धु कुशलयुत हैं कहाँ॥
तब भूपति पत्रिका दई सो बाँचेऊ।
भये प्रफुल्लित गात अधिक सुख माचेऊ॥
लगे निछावरि देन मुकुर कानन दये।
लखि प्रमोद नृप सचिवसहित गुरुपहँ गये॥
दो० दीन पत्रिका वन्दिपद, बाची मुनि सहमोद।
कथोकि सुकृती नरनकहँ, श्रवनि अम्बकी गोद॥
जिमि सब सरिता सिन्धु में, जाहियदपिअनयास।
तिमि सुख सम्पति आवहीं, धर्मवान के पास॥
तुमसम सुकृती पुरुष को, भयो अपर तनु धारि।
राम सरिस सुत जासु युग, कौसल्यासी नारि॥
अपदि सजाइ बरात वर, चलहु भले कहि तत्र।
पुनि आये निवास सब, बाँचि सुनायो पत्र॥

भई मुदित रानी सकल, दीन्हिनि विप्रन दान।
पुरबासिनके हरष सुख, को करि सकै बखान॥
ह० करिसकै कौन बखान सरिसबिमान गृह सबहिन सजे।
रचना अलौकिक देखि निज चितलेखि चतुरानन लजे॥
नृपधाम अति अभिराम तामधि बन्यो दिव्य वितानजू।
बिधुबदनि शोभा सदनि सुन्दरि करहिं मङ्गल गानजू॥
कतहूं पढ़ैं बटु वेद कतहू बन्दिगण बिरदावली।
कतहू टिके श्रवनीप आये नेवत नृत्य करावली॥
देखत फिरैं पुरलोग बन्दनयोग सुरमुनि गातको।
तब अवधनाथ बोलाइ सचिवन कह्यो सजौ बरातको॥
त्रि० दीन्ह्योजबआयसुमन्त्रिनकायसुपायरजायसुसबधाये।
लागेहरपातहि सजनबरातहि बरणिनजातहिजोल्याये॥
कुअर बहुकारे बड़मतवारे परे बहारे लकलकैं।
गजघण्ट जो बाजैं जनुघनगाजैं अतिछबिछाजैं धकधकैं॥
कञ्चनकीढारी कसीअँबारी मणिमयसारी पैंचरङ्गी।
बैठे तिनमाहीं नृपहरषाहीं देखि लजाहीं निरअङ्गी॥
बरबाजिअनेका एकतेएका चलानिबिबेका जिनमाहीं।
कबरे कोइकारे श्वेत ललारे बिबिधरंगवारे छहनाहीं॥
छमछममछमकैं छवतिचमकैं फुरकिधमकैं पगभुमैं।
भरतादिनबीले कुँवरछबीले धनुशरकीले चढ़िघूमैं॥
गजरथ बहुतेरे अश्वनकेरे वृषभ घनेरे अति सोहैं।
सुखपाल अपारा शुतरसवारा परे बहारा मनमोहैं॥
भालेबरछारे झंडिनवारे अगणितधारे फुलगाहैं।
लीन्हेबहुताजी आतशबाजी बिपुलसमाजी गुणगाहैं॥

सुन्दरचौपाला एकविशाला जलजप्रवाला मणिनमयो।
तामध्य बिराजैं बालकछाजैं चमरढराजैं इतउतयो॥
बाजैंबहुवाजन विविधअवाजन आणिकताजनपैधमकैं।
बांधेहथियारा वीरअपारा तुपकतयारा असिचमकैं॥
पकवान मिठाई रुचिर बनाई शकट लदाई निजसङ्गा।
चौपै समियाना तम्बूनाना छकडनपाना अरुभङ्गा॥
रेशमीगलीचा दीरघबीचा छकड़न बीचा लदवाये।
कञ्चनके थैला अतरभरैला सुमन सजैला लँधवाये॥
धनविपुलसँदूखन भेरविभूषन बसनअदूषन अतिनीके।
अप्सराअनेका नृत्यकरैका भांडभदेका दृढजीके॥
यहिभांति बराता सजिभे ताता चलीसमातानहिमगमें।
सुनिसुनिनरधावहिदेखनआवहिंशशिनवावहिंनृपमनमें॥
भवेसगुनअनन्ताहितभगवन्ता सुरमुनिसन्तातिनमाहीं।
गुरुसहितनरेशा मनहुंसुरेशा लसतविशेशा लघु नाहीं॥

क० ॥ करत बरातको पयान नरनाह जब, सुरगण आसमान देखत बहारहैं। डेढकोटिहैं मतङ्ग औ तुरङ्ग तीसकोटि, पालकी पचीसकोटि पैदर अपारहैं॥ भार-बरदार सवासातकोटि ऊंटजाति, सेवक समूह पांचकोटि बाजदारहैं। रथ सवातीनकोटि दशरथरायजीके, साठि लाखनौहजार साडिया सवारहैं॥

दो० जहँतहँ करत निवास मग, पहुँचे पुर मिथिलेश।
लेन चले अगवान सुनि, साजि समाज सुवेश॥
कनक कलश कोपरन भरि, भोजन विविधप्रकार।
दधि चूरा भूषण बसन, लैलै चले कहार॥

वर बरात अगवानिन देखी * इत उत भये अनन्द विशेखी
हर्षि परस्पर भे यकमेला * पुनि कछु दूरि चले बगमेला
जनु पश्चिम पर सागर भागी * आवत ताहि चला लैंटारी
सकल सौज नृप आगे कीन्ही * लीन्ही हर्षि याचकन दीन्ही
पूजन करि सबभाति सुहावा * जनवासे महँ आनि टिकावा
सुनि सिय सिद्धिनसकल बुलाई * भूप पहुनई करन पठाई
सुरपुरके जे भोग बिलासा * दिये पूरि तिन सबके पासा
सिय प्रभुता रामहि लखि पाई * अपर जनककी करैं बड़ाई
पितुआगमन जानि दोउ भाई * मुनिवर सग चले हरषाई
आये जह जनवासे भूपा * चले बिलोकि तृषित जनु कूपा
कीन प्रणहु मुनिपद धरिशीशा * नृपहि गाधिसुत दीन अशीशा
पुनि पितु चरण परे दोउभाई * मुदित भूप उर लिये लगाई
विप्रन सहित वशिष्ठहि बन्दे * पाइ अशीश भये आनन्दे
भरत सबन्धु मिले सुखमानी * सकल समाज भेटि हरषानी
कुशलप्रश्नकहि तिष्ठत भयऊ * सहित देव जनु मन्दिर नयऊ
नाकनटी नृत्यहि करि गाना * कौतुक करहिं विदूषक नाना
भूप निकट सोहैं सुत चारी * मुदित भये लखि पुरनरनारी
विधिके बेद भये कोउ कहई * अपर बदे अब आये अहई
दहिने दिशिहैं लक्ष्मण रामा * बाये भरत शत्रुहन नामा
धन्य भूप भल देव मनाये * जो सुत चारि मनोहर पाये
धन्य विदेह सुनयना दोऊ * धन्य सुनासुत हम सब कोऊ
जिन सियसहित सुवन चहुहेरे * पुनि देखब विवाह इन केरे

दो० उनतालिस दिन लगनते, आई प्रथम बरात।
त्यहिते पुर आनन्दधति, सकललोग हरषात॥

बिधिते बिनय करें यहिभाती * देहु बढ़ाय दिवस अरु राती
गये बीति बासर यहि भाता * लग्नकेर दिन जादिन आवा
हिमऋतु मार्गमास सुखमूला * अह निशि लखन योगअनुकूला
लगन शोधि बिधि नारदहाथा * पठे दीन जह तिरहुत नाथा
गनी जनकके गणकन खोली * हर्षि कही तिन अहे अमोली
सुनि बिदेह बोले सुख पाई * अवधपतिहि लै आवहु जाई
शतानन्द तब साजि समाजा * आये जह जनवासे राजा
कौसलेशकर विभव बिलोका * अतिलघुलाग तिन्हे सुरलोका
भयो समय पग धरिये नाथा * साजि समाज चले तिनसाथा
लखि सुरसकल सुमन बरषाये * चढ़िचढ़ि यान जनकपुर आये
पुरशोभा लखि देव लुभाने * निज निजलोक सबन लघुजाने
बिधिहिभयो अचरजअतिभारी * निजकरणी नहि कतहु निहारी
शम्भु कहेउ जनि भर्म भुलाहू * देखहु रामसियाकर ब्याहू
जासु किये हम तुम सबकोई * यहि पुर आजु बिराजत सोई
सुनिसुनचनसुखलह्यो बिधाता * आगे दीख दशरथ जाता
सबन बीच नृप सोहत कैसे * अमरन मध्य अमरपति जैसे
चढ़े तुरग तबरन माही * बिबिकर कनक लुटावत जाहीं
चौपाले मधि रघुपति सोहैं * बिधिहरिहर सुर देखि बिमोहैं
बिष्णु बिधिहिं बिधिभव सराहैं * बसुटगलखि दिशिसुरमुनिकाहैं
बड़भागीभे चक्षु हजारा * अमकहि मिले बरात मझारा
रामहिं देखि नगर नरनारी * करहि आरती हाथ पसारी
आवत जानि बरात सुनयना * लागीसाज सजावन अयना
बिबुध बधू धरि कपट स्वरूपा * मिली आय रनिवासे भूपा
देखि सबन सनमान्यो रानी * चीन्हे बिना प्राणसम जानी

समय समुझि सब सखिनसमेता * चली मुदित बर परछनहेता
गावैं गीत मनोहर नाना * सुनि छूटैं तपसिन के ध्याना
दुलहै देखि अधिक हरषानी * भई प्रेमवश प्रफुलित रानी
लोकवेद विधि करि सुखपाई * अर्घ्य देत तर मण्डप लाई
प्रीतिसहित आसन बैठारी * कनकथार आरती उतारी
मणिमयमाडव छवियहि भाती * देखिपरी तह अगणित बाती
भूषण बसन निछावरि करहीं * याचक पाइ मोद उर भरहीं
मिले मुदितमन समधी दोऊ * सो उपमा कहि सकै न कोऊ
देत पावडे अर्घ्य सुहाये * सादर जनक मण्डपै ल्याये
आसन दीन्ह सबहिं सनमानी * पूजे बिप्रबृन्द मुनिज्ञानी
सहित बरात दशरथै पूजा * मानि ईशसम भाव न दूजा
रामचन्द्र मुखचन्द्र सुहाना * चितवैं सकल चकोर समाना
समय समुझि बोले ऋषिराई * बेगि कुवरि अब आनहु जाई
सुनि उपरोहित की बर बानी * चली सियै लै सखी सयानी
पदकसना रमना रव छाई * मनहुँ मदन मोहनी सुहाई
चन्द्रमुखी तडि इव मृगनयनी * सकल मनोहर कोकिल बयनी
सियशोभा नहिं जाइ बखानी * जगदम्बिका रूप गुणखानी
आवत देखि बरातिन सीता * कीन मनहिं मन प्रणत पुनीता
सुनत सहित दशरथ हरषाने * बरषि सुमन सुर हने निशाने
पहुँची जब मण्डप बैदेही * लागे शान्ति पढन मुनि तेही
कुलगुरु गौरि गणेश पुजाये * प्रकट लेन पूजा सुर आये
सुर पुजाइ शुभआसन दीन्ह्यो * पुनि मुनि बोलि सुनयनैलीन्ह्यो
जनक सव्य दिशि सोहत सोई * मनहुँ सुकृत छवि मूरति जोई

दो० कनक कलश कोपर रुचिर, भरि पियूष निजपानि ।

लागे धोवन वरचरण, नृप रानी सुख मानि ॥
जे पद बसत महेश उर, ध्यावत मुनि जन ढेर ।
ते पदपद्म पखारहीं, धन्य भाग नृपकेर ॥
करतल जोरि कुवरि वर दोऊ * शाखोचार कीन मुनि सोऊ
पाणिग्रहण त्यहि पाछे भयऊ * कन्यादान भूपवर दयऊ
करि सुहोम गठिबन्धन रागी * प्रमुदित होन भावरी लागीं
मणिमयथम्भ रही छवि पूरी * निरखत मनहुं मदन रति भूरी
भये छकित सब देखन हारे * फेरा फेरि ऋषिन बैठारे
राम सिया शिर सेंदुर दीन्हा * मनहुं उरग शशि भूषित कीन्हा
पुनि दोउ यक आसन बैठारी * देखि लोग सब भये सुखारी
कह रघुनाथ तहावी शोभा * वरणिसकै जग अस कविकोभा
दो० बनी बनी जाकी जनी, लगत जनी दधिकेरि ।
बनो बनो जाको जनो, कृष्ण जनो जनु हेरि ॥
तब बिदेह मुनि आयसु पाई * लीन्ही तीनिहु कुवरि बुलाई
नाम माण्डवी गुणमय चीन्ही * सो नृप ब्याहि भरतकहं दीन्ही
परम सुशील उरमिला नामा * सो लक्ष्मणहिं बरी अभिरामा
श्रुतिकीरति छवि जाइ न वरणी * रिपुसूदनहिं भूप सो परणी
राम सरिस भे सकल विवाहा * त्रिभुवन में भरि रहा उछाहा
सबर सुन्दरी राजहिं कैसे * जिययुत त्रिभुन अवस्था जैसे
कुं० अपुप वितान विचित्र मधि, जीव अवध अवधेश ।
जाग्रद्वस्था श्रुति सुयश, बिभुविश्वकरिपु देश ॥
बिभु विश्वकरिपुदेश, स्वपनमाण्डवी बिमलमति ।
बिभुतेजैक सो भरत, उरमिला उदित सुखीपति ॥
उदित सुखीपति केर बिभु, प्रागै के लक्ष्मणअदुप ।

तुरीसियाबिभु रामजी, अन्तरयामी दिविषपुष ॥
कुँवरि कुवर अनुरूप निहारी * मुदित भये सुर नर मुनि नारी
अवधराज लखि अतिमनभाये * कियनसहित जनुचहुफलपाये
दो० अर्थ क्रिया आधीनता, धर्म कि श्रद्धा शक्ति ।
काम क्रिया करतब्यता, मोक्षकि केवल भक्ति ॥
श्रुतिकीरति रिपुहनअरथ, भरत माण्डवीकाम ।
धर्म धरणिधर उरमिला, मोक्ष जानकी राम ॥
नृप मणिदायजु दीन अति, हय गज रथ हथियार ।
भूषण पट गो रतनगण, दासी दास अपार ॥
लीन अवधपति मुदितमन, दीनजाहिजो आस ।
उथरि रह्यो याचकन ते, सो आवा जनवास ॥
तब-विदेह तहँ सबनकी, बहुविधिविनतीकीन्ह ।
सुनिसनमान्योअवधपति, मुनिन आशिषा दीन्ह ॥
पुनि दशरथ जनवास सिधाये * देवन दीख सुमन बरषाये
तब बनिता मुनि आयसु पाई * लग्निनकोहबर चली लिवाई
गौर श्याम छबि अमितअनङ्गा * ब्याह साज सोहैं सब अङ्गा
कमलनयन चितवन चितचोरैं * देखि देखि युवती तृण तोरैं
कोहबर लाय सकल अनुरागीं * लौकिक रीति करन तहँ लागीं
प्रभुइच्छा लहकरि सिखावैं * सीतै श्री शारदा बतावैं
निजकरमणि बहुरूप निहारी * प्रेम विवश सिय सबन न टारी
हासविलास भयो बहु भाती * पुनि आये जहँ सकल बराती
बहुरि रसोई भई तयारा * नोलि पठाये जनक भुवारा
परन पावके मन्दिर आये * चरण छालि चौकिन बैठाये
सुननसहित दशरथ पग धोये * आसन देइ सुवारन जोये

लागे ते परसन पनवारा * षटरस व्यञ्जन बिविधप्रकारा
नाना भांति पकवान मिठाई * दधि गोरस फल फूल खटाई
बरणि न जात देखि अनुरागे * पञ्च कौरकरि जेवन लागे
बधूबिलोकि लगा नगियावन * सुनहु राम दूलह मनभावन
दो० बने फिरत जो आपके, गुरुही बिश्वामित्र ।
तौ क्यहिबिधि रघुनाथ तुम, कारज करौ पवित्र ॥
जनकसुताके जनकको, जनक कहत सब आहु ।
कौन कौन के जनक ये, याको करहु निबाहु ॥
सुनियत यज्ञकेसुत दशरथनन्दन * दशरथ दनके भे अजनन्दन
यह अवंरवपगे क्यहि भांती * समुझि परतअस सकलबराती
मुदित होय सबमुनि हमि गारी * अमुके परसो कहैं पुकारी
यहि बिधिसबहिनभोजनकीन्हा * आदर सहित आचमन लीन्हा
देइ पान पूजे मिथिलेशा * जनवासे आये अवधेशा
इति श्रीरामचन्द्रविवाहवर्णनोनामनवमोऽध्याय ॥ ९ ॥
दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहा कलेउमत कछुक, कोशलखण्ड बखानि ॥
निशा निरखि सबसोवन लागे * बडे प्रात कोसलपति जागे
प्रातक्रिया करि आयसु पाई * चारि लाख बर धेनु मँगाई
बिप्रन का दीही नरनाहा * गजरथबाजिजाहि ज्यहिचाहा
कीन्हे याचक सकल सुखारी * यथा अम्र दै लेवन वारी
त्यहि अवसर नृप मन्त्री आये * करन कलेवा भूप बुलाये
उठे कुंवर पितु आयसु पाई * चढि चढि घोडन चले सिधाई
कोइ अरबी जङ्गली पहारी * चिरचेचक चम्पा कधारी
कोइ कबुली अँबोज कोइ कच्छी * बोत मेमना मुजी लच्छी

कोइ किसमी भुठार फुलवाई * गर्रा गुण्ठ जुमिल दरियाई
श्यामकरण कुम्मैत पठानी * टावन तुरकी पचकल्यानी
मुसकी सबज इराकी पांचे * पीन नवीन विशाल अदोषे
सकल अलकृत चलनि सुठोका * सबते तुरँग रामकर नीका
विश्व विमोहन हेतु बिचारेउ * बाजिबेष जनु मनासिज धारेउ
पहिरे पट भूषण तनमाहीं * चपल तुरग नचावत जाहीं
मनहु मेघयुत उडुगण दामा * जात नचावत शिपिअभिरामा
देखैं जहँ तहँ लोग लुगाई * कहैं जातहैं चारौ भाई
पहुचे जब सब जनक अगारे * कनक पलग रानिन बैठारे
बहु बिधिके भोजन धरि आगे * नेग पाइ निज जेवन लागे
अचवनकरि बैठे तिन पासा * लगीं करन तियहास बिलासा
एक सखी बोली तुव माई * क्याहे हित सुत जनमे हबिखाई
कह्यो राम कत बूझन येहू * निकट नरेश परीक्षा लेहू
अपर बसन करप्यो निजचोरा * मिले चोर तुम सब चितचोरा
त्याहि क्षण लक्ष्मीनिधि कीनारी * सिद्धि नाम ले सखिनसिधारी
सहजानन्दनि मदन मञ्जरी * चन्द्रकला कमलाक्ष अञ्जरी
चन्द्रमुखी चन्द्रावति योगा * बिमला उतकर्षीनि प्रियभोगा
चित्रा चितरेखा ईशाना * कृपा काचनी सत्या ज्ञाना
मुदङ्गसा चन्द्रानानि हसी * सुधामुखी सुखमञ्जु प्रशसी
माधुर्या उज्ज्वल विशदाक्षी * चरुशीला अतिशीला साक्षी
औरौ अली अनेक अनूपा * सहित सिद्धि आई अलभूपा
रघुपतिछवि अवलोकि जुड़ानी * बोलीं बिहँसि हासकी बानी
सुनियत लालकाम अतिनीका * तवअम्बनि कीन्ह्यो त्याहिपीका
हम चितचोर सासु पहँआयो * तुमहीं देखन बदन दुरायो

बोलीं सिद्धि रावरे भगिनी * ऋषि किमि वरांहरीनतमागिनी
कह्योलषणजस लिख्योलिलारा * तैसे होत टरत नहिं टारा
हम नरेश सुत जनक योगीशा * भयो व्याह भावीवश दीशा
कबते राजकुमार कहाये * पाल्यो ऋषै ऋषै उपजाये
हलते भल तापस सबदिनके * बोले लाल हमहुँ सिख तिनके
बोली कलावती सिधि भगिनी * लक्ष्मीनिधि की सारिसुलगिनी
दो० इक कुमार पुनि मुनिनसँग, रहि यहिरसकी बात।
सिख्यो कहां ऋषितियनपहँ, की दारकढिगतात॥
कहेउ शत्रुहन सत्यपर, तुमहुँ कुमारी आहु।
तुम कहँ पायो ज्ञान यह, की कोइकरि असनाहु॥
बोली चन्द्रकला कर टेकी * तुम साधुन के बन्धु बिबेकी
रोरेको रस हास न चाही * परस्वारथी सन्त गति आही
हमहू सुनि अस्नेह तुम्हारा * दरशहेत द्वारे पगु धारा
सइउ चीहि बिनकहे पतीजै * तन धन ते सेवा अब कीजै
सर्प डसित को जो नहिं झारै * लगै दोष नत मन्त्र बिसारै
याहिविधि बदिबातें सुख लेवैं * निजनिज रुचिसब रामहिसेवैं
कहेउ सिद्धि हम नारि अपावन * पर यक गुणहु दीनजगजावन
ब्यहिते नेह करैं अनुरागी * सर्वसु जाहु सकै नहिं त्यागी
तिमि तुमते ठानी हम प्रीती * करौं निबाह समुझि निजरीती
कह प्रभु मोहिं सनेह समाना * प्रिय न कछू यह जान जहाना
तुम प्रियप्राण सरिस माहिंमासे * मांगि बिदा गमने जनवासे
बोली बहुरि जीत हम लीन्हा * दिहलफेरिभुखहम तजि दीन्हा
यहि बिधि बातन सबन हराई * जनवासे आये सब भाई

इति श्रीरामविवाहकलेऊबिधिवर्णनोनामदशमोऽध्याय ॥१०॥

दो० राम रमत जो सबनमें, सब जहँ रमै सो राम।
रामहिं लखि रघुनाथजन, लहत स्वबाञ्छित काम॥

नित नव आदर करै नरेशा * भूप चलन देत नहिं देशा
कौशिक कही जनक सुनि लीजै * बहुदिन भये विदा अब कीजै
भले नाथ कहि सभा मेझारी * जहँतहँ लागी होन तयारी
सुनि निश्चय पुरजन अकुलाने * जिमि चकवाकजात-रविजाने
जनक विविध मेवा पकवाना * दीन्हे पठै पन्थ अस्थाना
बीससहस्र सिन्धुर सजवाये * स्यन्दन सहस पचीस सुहाये
तुरंगलाख सुरभी युगलाखा * महिषी लक्षसवा भाखा
कनकवसन मणि भूषण भूरी * अनगनभाजन शिबिकारूरी
औरौ बरतु अनेक प्रकारा * प्रथम पठाई अवध मेझारा
तब विदेह गुरु सचिव बुलाई * कह्यउ लयावो भूपहि जाई
सुनि मन्त्री तित जाइ सुनायो * विदा हेत मिथिलेश बुलायो
दशरथ सुनि लै दूलह सङ्गा * तथा बरात सजि बहुरङ्गा
राजभवन गवने लखि लोगा * हर्ष शोचवश भये वियोगा
एक एकते कहैं विशेखी * आनु लेहु भरि दृग छबि देखी
भूरिभाग विधि दरशन दीन्हे * सो अब जात तयारी कीन्हे
भूप भवन जब पहुँचे जाई * बैठारे सबहिन सचुपाई
बिनती भई परस्पर नाना * सम समधी तिनसम को आना
जनक बिदा हित सौंज मगायो * देखि सभा सब अचरज पायो
मणिअनमोल अनेक अपारा * कनक गनै को कितने भारा
भूषण सुभग एकते एका * भरे मँजूषा चित्र अनेका
बसन, रूमपट पाट अपारे * परम रम्य अतिशय गुणभारे
भाजन मणि हाटक रजुकेरे * अतिविचित्र बहुभाति घनेरे

मेवा चिर उत्तम पकवाना * धरे कूट इव सुखप्रद नाना
सब सकल दायन गजपाती * शिविका शुतर सुहे सबजाती
और वस्तु भाँति बहु गनी * हाथजोरि अस्तुति तब भाखी
हे अवधेश विमल यशकेतू * सकल काम परिपूरण सेतू
मैं निलज्ज यह सोज दिखाई * जिमि कोइ स्वर्णसुमेरहि लाई
पर प्रभु ईश बड़े जे अहहीं * तिनकी रीति वेद इमि कहहीं
दास फूल फल जल जो देही * प्रभु त्यहि अधिक प्रीतिते लेहीं
अनविचारि मोहि दइविश्वासा * पुजिहौ मम मनकी तुम आशा
सुनि नरेश निजकर शिरमारी * गद्गद है अस गिरा उचारी
करिय कहा मिथिलेश बड़ाई * जिनपर हमहु प्रतिष्ठा पाई
निजसमसबविधिमोहिं कलीन्हे * उभयलोक अनवधि यश दीन्हे
यामें अचरज अहै न कोई * मलय समीप कुनरु हरि होई
जोगुरु लघु लघुता न नेवारी * सोउ ओट कछु होत न भारी
मिले परस्पर कण्ठ लगाई * जयजय धन्य धन्य धुनि छाई
यथातथा विधि विविधिलगाने * बरसे सुमन देव सुख माने
तब विदेह लहि आनद भारी * निजकर सब दूलह शृङ्गारे
मणि भूषण पट परम सुहाये * नग शिल कुबेर विचित्र रचाये
यद्यपि सब अनप्राकृत सामा * तदपि लगत लघुतनु अभिरामा
पुनि नरेश प्रभुपदसद गहेऊ * नयनन धरे केर फल लहेऊ
मन में कहत लोग सुन चाहै * कन्यादान कछु कमनी आहै
जो जानकी न होत हमारे * रामचन्द्र किमि औते द्वारे
विप्र वेद मुनि करि हरषाने * दान मान दे नृप सनमाने
सकल बरातो तब पहिराये * यथायोग्य जो जेहि जस भाये
बन्दीजन गण गुणी अनागा * रुचि लखि दान दीन अनपारा

ते तहँ सकल अनूप सुहाहीं * लोकपाल लखि जिन्हैं लजाहीं
रघुपति छवि माधुरी अनन्ता * रहे देखि सुर नर मुनि सन्ता
बहुरि सुनयना धाम हँकारे * मित्र मण्डली सहित पधारे
रानिन देखि लहेउ सुखभारा * बैठारे सब करि सतकारा
दिव्यजलजमणि कनकाभरना * बसन रम्य उत्तम बरबरना
नख शिख दूलह सकल सजाये * सखन समेत विचित्र सुहाये
नारिवृन्दजिमि शशिहिचकोरी * निरखहिं प्रभुछवि पलकनमोरी
सियामातु करजोरि रसाला * कहेउ वत्स तुम दोउकुल पाला
सुनिये जीवन प्राण अधारा * विनती यह मम बारहिं बारा
भूप सचिव हम सब चरदासी * जाति बन्धु जहँतक पुरबासी
सबहिं प्राणप्रिय सुता हमारी * कबहू लागि न ताति बयारी
दृगपुतरीइव सब दिन पाली * निरखतरहिन यथामणिव्याली
तुम्हरे कर निबाहु तेहि केरा * करहु सो मोद लहैं मन मेरा
अस कहि कुँवर लगाये छाती * कीन निछावरि नाना भाती
परी चरण समुझाइ सुभाये * पाइ अशीश मण्डपे आये
तब नृप विदा किये शिरनाई * जनवासे आये हरषाई

दो० अन्त पुर रानी सकल, विकल नारि लै सङ्ग ।
मणिपट दिव्य अमापवर, सजे सुतन के अङ्ग ॥
नखशिखसाजिस्वरूपसखि, लखि वारे तन प्रान ।
चलन निकट गुणिलहैं दुख, कोटिन मरण समान ॥

सो० सासु श्वशुर गुरुदेव, भूसुर सन्त अनन्त हित ।
करेहु नृपतिकी सेव, असकहि लिहिनिलगाहउर ॥

जे मतिधीर नारि बयं भारी * तिन मन अति कठोरता धारी
कीन्ही विलग सुता महि तेरे * रोवैं मिलैं अपर स्वर टेरे

सुनि धुनि द्रवैं दारु पाषाना * चेतन की को करै बखाना
सुता कहै मेरी महतागी * लीजे सुधि लखि दीन हमारी
सुनि महि मातु गिरी मुरझाई * दौरि रवनि टेकिनि समुदाई
शुक सारिक जे पिंजर भीरा * हाय सिया कहि तजैं शरीरा
तिन की दशा अनैसी देखी * दिये सग करि प्रेम विशेखी
पुरजन विकल वियोग घनेरे * मृत्यु मिलै मागें विधि तेरे
जनकहि देखि मिली लपटाई * हूं अधीर धरि धीर छुड़ाई
मन्त्रिन दिव्य विमान सजाये * मनहु महिप गृह अपर सुहाये
असनबसन आदिक बहुसामा * सेज पीठि लोवर सुखधामा
वस्तु समस्त अनूपम सारी * आनि यानमहँ धरी सुधारी
तिनमा आनि कुँवरि बैठाई * त्रयलख नृप जाहित सेवकाई
अरु दीन्हे बहु दास पुनीता * विकल लोग गावहिं गुणगीता
उठे विमान देखि सुर हरषे * हनि निशान कुसुमावलिवरषे
पाछे भूप चले पदचारी * पठवन कन्या प्राण पियारी
मन्त्री पुरजन जे गुण भारे * नृप सँग सकल जात मनमारे
आवत पुरपथ चले विमाना * शिविका करि हरि घेरे नाना
नगर नारि नर निरखि मनावैं * हे विधि कुँवरि बेगि फिरि आवैं
बाहर नगर रुक्यो जब याना * नृप ढिग जाइ कीन सन्माना
बत्स न रोवहु रहौ चुपाई * बेगि लेव मैं तुम्हैं बुलाई
ज्यों त्यों करि धीरज उरधारा * बिदा कीन मन कष्ट अपारा
पूजि विप्र अवधेश सिधाये * मङ्गलमूल सगुन बहु पाये
जय जय कहि सुर वर्षहिं फूला * बाजे बाजन विविध समूला
नृप करि विनय महाजन फेरे * याचक सब परितोषि निबेरे
तब विदेह बोले अनुरागी * नाथ मोहिं कीन्हो बड़भागी

कोसलेश समधिहि सन्माना * पुनि प्रभुते मिलि वचन बखाना
राम करहुँ किमि सुमुख बड़ाई * चिदानन्द तुम सब सुखदाई
सेवकसमुझिदरश स्वहिंदी यो * सबविधिते आपन करिलीन्यो
तदपि एक वर दीजै अबहू * मन तव पद परिहरै न कबहू
सुनि रघुपति श्वशुरसनमान्यो * पितुवशिष्ठ कौशिकसम जान्यो
दो० भरत लषण रिपुसूदनहिं, मिले विनय करि राय ।
शीश नाइ वर पाइ सब, बन्धु चले हरषाय ॥
कौशिक मुनिपद नाइशिर, बोले तिरहुतराज ।
नाथ कृपा तव दास के, भये सिद्ध सब काज ॥
सो० सकल मुनिन शिर नाइ, पाइ अशीष विदेह तब ।
फिरे भवन पछिनाइ, प्रमुदित चली बरात इत ॥
गी० इत मुदित चली बरात बालक बाजि जात नचावहीं ।
मगलोग लखि रघुनाथ छवि निज जन्मको फल पावहीं ॥
वरबास करत निवास शुभदिन अवध पहुँचे आइके ।
पुरनारि नर सुनि सकल जहँ तहँ चले देखन धाइके ॥
नृपधाम अति अभिराम कौसल्यादि रानिन जानेहू ।
अनुरागवश है शिथिल मङ्गलचार पुनि सब ठानेहू ॥
दधि दूब तन्दुल तुलसिदल फलफूल घनानिशि आरती ।
धरि थार रवनिअपार गावत चली मानहु भारती ॥
जब द्वार गहँ बरात प्रमुदित मातु सब परछत भई ।
करि वेदविधि कुलरीति पाँवड देत मन्दिर लै गई ॥
नहँ चारि सिंहासन सु तिन पर कुँवरि कुँवर पधारेऊ ।
पग धोइ करि आरति निछावरि बिबिध वस्तु उतारेऊ ॥
अवलोकि सुत अरवधुन युत आनन्दवश जननी भई ।

जिमि मूक पावै वाक्य पारस रङ्क अन्धांखी गई ॥
मिलिकरैं लौकिकरीति तब सुन अस्नुषा सकुचावहीं ।
सुर पितर पूजि पुजाइ मांगैं नीक सकल रहावहीं ॥
महिपाल बाल बरात दीन्हे यान पट भूषण भले ।
शिर नाइ पाइ रजाइ रामै राखि उर निजपुर चले ॥
पुरनारि नर पहिराइ सेवक छकिन सब याचक भये ।
तब भूप सहित वशिष्ठ भृगुर सन्त अन्त पुर गये ॥
शिर नाइ सब अन्हवाइ रानिन विविध अशन जेंवायहू ।
करि दान आनन्दमान देत अशीष सकल सिधायहू ॥
पुनि पूजि गुरुहि नवाइ शिर सुत सम्पदा आगे धरेउ ।
निज नगु मांगि वशिष्ठ रामहि राखि उरधर कादरेउ ॥
तब भूप रानिन सहित विश्वामित्र की पूजा करी ।
करजोरि दीन निवाम भीतर भवन निरखब हरघरी ॥
पुनि पूजि प्रियपाहुन अमरगण सुमन बरषि सिधायहू ।
तब बोलि द्विजगुरु ज्ञाति सुतन समेत भोजन पायहू ॥
गावैं वधू मिलि गीत अचवन कीन निज धामन गये ।
तब भूप रानिनने सकल मिथिलेश गुण बरणत भये ॥
भये मुदित सब तब कहेउ लरिका श्रमित उसनीदे अहैं ।
करवाइये अब शयन गे विश्राममन्दिर जहँ रहैं ॥
मणि जटित पलँग बिछाइ पटु मृदु शुभ्र सोचि सुगन्धलो ।
पौढ़ाइ चारो भाइ बोलो भाइ करुणाकन्दसों ॥
किमि तात मारेहु असुरगण किमि विप्र वनिताह तारेहू ।
किमि कठिन भञ्जेहु शम्भुधनु किमि परशुधरहि नेवारहू ॥
भे काज सब मुनिकृपाते बलि जाहुं भुज चापनलगी ।

परितोपि प्रभु सब मातु पुनि भे नींदवश ते रेग रेगी ॥
वर वधुनले सब सासु सोइ नागमणि सम गोइकै ।
भे भोर लागे ण्डन बन्दी राम जागे सोइकै ॥
करि शौच विप्रन दान दै सहबन्धु नृप जहँ तहँ गये ।
अवलोकि विधिसुत गाधिसुत सब सभायुत हरपतभये॥
शिर नाइ बैठे गुरु पितै इतिहास मुनि लागे कहै ।
बहिभांति नित नव होत मङ्गल बरणि को पारे लहै ॥
मागी बिदा ऋषिनाथ दिति करि बिनय रघुपति राखहीं ।
समुझे बिशेषि तबार तब करजोरि नृप अस भाखहीं ॥
सुत धाम धन तव नाथ रानिन सहित मै सेवक सदा ।
प्रभु करत रहियो छोह सब पर दरश देव यदा तदा ॥
पुनि परे चरणसनेह सहित अशीष मुनि सबको दई ।
सियराम छवि उर राखि ऋषि गन चले बरणत पहुनई ॥
रघुवीर पन्द्रह बरषके पट अष्ट की श्रीजानकी ।
भये ब्याह द्वादशवर्ष रहि पुर रामलीला आनकी ॥
महिदेवसन्तन होत सो समुझत सुखद मनभावनी ।
अविवेकवन्तन मोहप्रद त्रैविदन विरति बढ़ावनी ॥
सियराम जन्म विवाह मङ्गल मुदित सुनहि जे गाइहैं ।
रघुनाथ तेपर कृपाकरि हरि जग हम सुखपाइहैं ॥
दो० श्री गुरुदेवादास के, चरणकमल धरि माथ ।
बालकाण्ड संक्षेप करि, बरणा जन रघुनाथ ॥
दधिसुतभगिनीपतितनय, तासुत जननी अन्त ।
शैलसुतापति आदि भुज, कह रावचसुत सन्त ॥
इति श्रीबालकाण्डसमाप्तनामएकादशोऽध्याय ॥ ११ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर ॥

अयोध्याकाण्डप्रारम्भ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बरणौं मानसमत कछुक, अध्यातमहि बखानि ॥
जबते आये ब्याहि प्रभु, नित नव मङ्गल होत ।
मुदित रहत पुर नारि नर, तात मात गुरु गोत ॥
इक दिन बिश्वाबसु तहां, कियो गान गन्धर्ब ।
सुनि प्रसन्नह्वै सुपुरतेहि, कह्यो रहन हित सर्ब ॥
तेहि कह इन्द्र निदेश बिन, मैं न सकत रहि अन्त ।
कह्यो केकयी बसत है, हमरे बल सुरकन्त ॥
हमरे आवत रिस करत, अस तुम गये घुटाइ ।
पठइ पत्रिका बानकर, लखि नृप रहे चुपाइ ॥
मनमें समुझे केकयी, लिखि पठये यचयङ्क ।
हमरिउ लागी घात तब, हमहू देब कलङ्क ॥
लिखि पठये बिश्वाबसुहि, कह्यो जो कहै भूप ।
यह सत्योपाख्यान की, मैं कहि कथा अनूप ॥

यहि विधि द्वादश बर्ष बीती * एक समय की सुनिये रीती
केकयनृप सुत केकय नामा * अवध आइ कह्यो नृपते कामा
खरमुख देश हमार उजारा * न्यहिहित दीजे भरतकुमारा
कृत निदेश सुनि भरत दीन्हा * केकयसुवन गवन तब कीन्हा
बिदा होत पर राम लषण दोउ * सचिवसुवनसंगसुखानन्दसोउ
गे कछु दूरि पठे फिरि आये * नातुन भरत नगर नियराये

केकय चलि आगे लै गयऊ * लखि आनन्द मगन उर भयऊ
विप्रन ते तब होम कराया * खरमुख सुनत सैन लै आया
भरत समर करि मारो ताही * निरभय भये देश जग चाही
नेह विवश ह्वै मातुल केरे * रहत तहां सो चरित निवेरे
दो० यहां रामसिय लषण लखि, मगुन कहै यह बात ।
समुझिपरत आवत भरत, भये बहुत दिन जात ॥
वरष अठारह की भिया, सत्ताइस के राम ।
कीन्हीं मन अभिलाष तब, करनो है सुरकाम ॥
ताही क्षण तहं देवऋषि, विधिमेंदेश कह्यो आय।
पूजो प्रतिमा सहितप्रभु, बिदा किये समुझाय ॥
एक दिवस श्रीअवधपति, मनमें कीन बिचार ।
रामहि दीजै राज्य अब, भा पन चौथ हमार ॥
गुरुहि पूछि नृप कीन तयारी * मङ्गल सामा सकल सँवारी
जो कछु नृप अभिषेकम चाही * फल फल जल मगवायो ताही
बाजहिं पुर गहगहे निशाना * नाकनटी नाचैं करि गाना
सेवक सचिव कहैं नर नारी * धन्य भूप भलि बात विचारी
प्रमुदित बदैं एक ते एका * देखहु काल्हि राम अभिषेका
अमरन सो उत्साह न माई * बालि विघन हित बाक पठाई
नाम मन्थरा केकयि चेरी * आइ गिरा ताकी मति फेरी
पुररचना त्यहि दीख नवीनी * पूछे ते कह कहि दीनी
राम राज्य सुनि शरसम लागे * अनमन गई केकयी आगे
दो० मम सोदरकी राज्य जिन, वामन ह्वै हरिलीन ।
करौं विघ्न तिमि महू अब, ज्यहिलगि सेवा कीन ॥
यहिविधि करत विचार कुबुद्धी * तजतआशु करि प्रथम कि शुद्धी

भरत मातु बोली वा भयानी * जानिपरत लक्षमण सिखदयनी
हमे साल देई बन कोई * तब दुखलखि भा ग्यहिदुखसोई
भरत आनि शिर ऊपर आई * सो तुम अभय जानि नहिं पाई
बीन बृहद बीते दिन आजू * पैहैं कालिहि राम युवराजू
सुनि रानी अतिशय हरषानी * लगीदेन नृपण निजपानी
जो तव वाक्य सत्य यह होई * फिरि देहौं जो मँगिये सोई
हमें रीझ तुम देहौ कारा * तुमही का नहिं होई लाहा
रामचन्द्र जब राजिहि पैहैं * कौसल्या तब तुम्हैं सतैहैं
जिमि कद्रू विनते दुख दीन्हा * चित्रकेतुतिय अनभल कीन्हा
सुरुचि सुनीता को सुन बनमें * पठैदीन सुख नाहिं सपनमें
शुकरुना शरमिष्ठै कष्टा * दीन कीन निजपति को नष्टा
सहित गरल मे सगर सयानी * भई रांक सब शशिकी रानी
यद्यपि सवति तव सरलस्वभाऊ * परपरिकृअमि करत बनघाऊ
भूपकरत तव आदर भारी * देखिसकी नहिं सवति तुम्हारी
तव सुत पटै बन्धुरे दीन्हे * लेन राज्य निजपुत्रहि लीन्हे
सुवन सहित कीन्हौ सेवकाई * नाहिंत रहिहो पितुघर जाई
समुझि परत ग्यहिं विस्वा बीसा * परी विपति सब तुम्हरे शीसा
जो कहौं राम चहत अति मोहीं * निरबल में रिपु मिलहु होहीं
दो० जिमि बन जारत अग्नि तब, पवन सखा होइ जाय ।
सोइ मारुत कृश देखिके, दीप देत बुझाय ॥
सो० सुखद दुखद शशि होइ, लहि रवि वसु श्रुति चौथग्रह।
मृगमधुजहि बिन तोइ, दहत कहत मगछतजजम ॥
ग्यहिते अबहीं करहु उपाऊ * ज्यहि न होइ पाछे पछिताऊ
है वर नृप थाती सो लेहू * सुतहि राज्य रामै बनै देहू

यकर्ता दुखितकाज गुरु डागी * दूसर सुर सग्राम मँझारी
सुनि प्रतीति रानी मन आई * हरि इच्छा तुम जानहु भाई
कोपभवन पहुँची तजि माजा * भावीवश आये तहँ राजा
कोपभवन मन्थरहि बनावा * सुनि नरेश मन में भय पावा
सुरपति सुहृद दनुज अरिजोई * कालहु ते न डरहिं रण सोई
तिय रिस सुनिभे कम्पित गाता * कामकृपाण निशित अति ताता
धरिधीरज रानी दिग गयऊ * शीश परशिकर बोलत भयऊ
क्यहिकारण कीन्ह्यो रिस प्यारी * को तव दूसर है तनुधारी
दो० कहु क्यहि रङ्कहि नृपकरौं, नृपै रङ्क करिदेउँ ।
तव अरि अमरहु होइ त्यहि, बध करि पाथैपेउँ ॥
कहौ खोलि निज कोप प्रसङ्गा * भूषण सजहु मनोहर अङ्गा
हँसि प्रसन्न चितवहु मम ओरा * आजु भयो मनभावत तोरा
कहहु काल्हि राम युवराजा * हरषसमय तुम दुख उपराजा
सुनि नृपवचन भयो दुखभारी * दिहिमिपाणि निजशिरते टारी
पुनि धरिकर बोले अनुरागी * जो भावै सो लीजै मागी
तव हित कछु न अदेय हमारे * सुनि कैकयि तव बचन उचारे
मागु मागु बर जब तब कहऊ * लेन देन फिरि कछू न अहऊ
आगे दीन कह्यो बर दोई * अबतक मोहिं मिले नहिं सोई
सुनि नरेश हँसि बोले लीन्हा * कबमागेहु कब हम नहिं दीन्हा
हमरे कुल यह प्रकट प्रशंसा * बचन न जाइ जाइ बरु हंसा
झूठे दोष देहु जनि प्यारी * लेहु मागि किन द्वैके चारी
जो पति शपथ रामकी कीजै * तो हम मागि उभय बर लीजै
हँसि नृप राम शपथ तब खाई * सुनि बिग सरिस उठी हरषाई
प्रथम देहु बर यही समाजा * भरतहि बोलि करहु युवराजा

दूसर राम धाम तजि राई * चौदह वर्ष बसैं वन जाई
सुनि नरनाह मूर्च्छि महिपरेऊ * मनहु तरङ्गिनि ते तरु गिरेऊ
धरिधीरज पुनि आखि उघारी * पुर किरातिनि सरस निहारी
बोली बहुरि सुनौ नरनाहा * भरत तनय तव होइ न काहा
जासु राज सुनि भा दुखभागी * प्रथम देन कत कह्यो पुकारी
कह नृप सत्य कहौं तोहिं पाहीं * भरतराज सुनि दुख ग्वहिं नाहीं
दूसर बर मागेहु दुखरासी * साचहु साच कि कीन्ह्यो हासी
त्वहि प्रिय राम रहैं अति आगे * आजकठिन क्यहिकारण लागे
जो कृत बैरिहु कर उपकारा * सो किमि करी मातु अपकारा
ज्यहि दुख दुसह देत सब काऊ * मैं तासे निज कहौं स्वभाऊ

दो० रहै भानु बिन दिवस वरु, रहैं मीन बिन नीर।
रामबिना मम प्राण नहिं, रहिहै सुमुखि शरीर॥

छं० नारद ऋषै प्रभाव नृप, सञ्जय सुत मलहेम।
होत जानिहरि हरिहतन, करि कछु लह्यो न नेम॥
करि कछु लह्यो न नेम, तरकि तलके पुनि भलते।
हरिपरिभव हित गोप, गृहप पाल्यो गोपलते॥
ते श्वा सिंहहि देखि, दवकिबिलमाहिंलुकान्यो।
मिल्यो सुरभिको पाप, समुझि पाछे पछितान्यो॥
पछितान्यो तिमि तुम्हैं, शोचता परी बिशारद।
मूरख की रघुनाथ, इमपि कृत होत न नारद॥

त्यहिते पुनि मागहु ग्वहिं पाहीं * रहै राम पुर बन नहिं जाहीं
ज्यहिते हमहुं बरष दुइ एका * देखैं भरत राज्य अभिषेका
सुनि बोली औदर जनि करहु * निज कुल रीति हृदय मह धरहु
देखा शिबि दधीचि हरिचन्दा * सहे धर्महित दुख अतिमन्दा

मधुकैटभ शिर विष्णुहिं दयऊ * विटवहुलै कछु कष्ट न भयऊ
बोलि वचन जिन नहिं प्रतिपारे * कहत बेद तिनके मुख कारे
त्यहिते तजहु सत्य जनि नाथा * पठवहु जाहिं विपिन रघुनाथा
जो न प्रात जैहे मुनिवरणा * तुमहिं अयश होई मम मरणा
सुनिपुनिनृपवहुविधिसमुझावा * होनहार त्यहि तनक न भावा
गिरयो भूमि ह्वै विकल भुवाला * जानेहु तियमिस आयहु काला
हृदय मनावत शम्भु विधाता * करहु कृपा त्यहि होइ न प्राता
गुरु गणेश शारदा भवानी * रहैं राम तजि घर मम बानी

दो० भेषज सुर अभिषेक जन, नेक न निरफल जात।
कालविवश जगजालजिमि, नौचढि जल बहिजात॥

यहिविधि विलपत भयो विहाना * बाजे जहे तहँ द्वार निशाना
बन्दीगण गुण गावन लागे * प्रमुदित प्रिय पुरवासी जागे
सुनि नरपतिहि न नेकु सुहाई * सगर समय जिमि गारी गाई
प्रात वशिष्ठ सभामहँ आये * लखि सुमन्त ते वचन सुनाये
सदा प्रथम आवत नरनाहा * आजु गहरु भै कारण काहा
वेगि खबरि तुम लावहु जाई * चले सुमन्त परम चपलाई
गये कोप मन्दिर सुनि वाता * सभय उलटी ड्योढी साता

दो० प्रथम तरुण युव जरठ पुनि, बालक क्लीवा चारि।
पञ्चम यौवन विरध पट, सप्तम गौरी नारि॥

आगे जाय केकयिहि देखा * परे विकल तहँ भूप विशेखा
शीश नाइ बोले मृदुबानी * भूप परे कस विकल रानी
रामहि प्रथम लयावहु जाई * भूप कुशल तब बूझ्यो आई
नृप रुख पाय सुमन्त सिधाये * बमन रामके मन्दिर आये
देखि पितासम प्रभु सनमाना * पूछेते तिन हाल बताना

चले तुरत प्रभु अङ्ग उघारे * देखि लोग सब भये दुखारे
पहुँचे जाइ जहा नृप रानी * बोले राम जोरि युगपानी
जननिजनक क्यहि हेत दुखारी * करियसोकृति ज्यहिहोइ सुखारी
सुनहु राम दुख मूल सनेहू * बढी न सुख यदि कढी न गेहू
हानि लाभ सुखदुख किन होई * कहिय देन ज्यहि दीजे सोई
विधि वर मै मागे इनपासा * भरतहि राज्य तुम्हे बनवासा
धर्मकेतु कछु कहन न बानी * तुमने सधे करो सोइ जानी
सुत सोइ जो पितुसुयश बढावै * अयश देइ ज्यहि सुत को गावै
सुनि कैकयिके बचन कठोरे * बोले राम अमी जनु बोरे
अनिलघु बात पिते दुख भारी * अपर हेतु कछु है महतारी
भरत शपथ मैं सत्य बखाना * कारण आन मोर नहिं जाना
तब रघुपति गहि नृपहि उठावा * हाथ जोरि अस बचन सुनावा
तात तरकितन तजहु गलानी * मङ्गल समय मोद उर आनी
जो जननी याचे बरदाना * तामे अति हमार कल्याना
दो० यकतौ वन मुनिजनदरश, भरत प्राण प्रियराज ।
पुनि निदेश पितुमातुकर, म्वहिविधिदाहिनआज ॥
ऐसेहू पर निज करहु न काजा * जानेहु म्वहिं मृदनकर राजा
मृद सो सत्रह विधिके जानो * कहे पूर्व मनु तैस बखानो

महिपरीछन्द ॥

कहँ इमपि पूरव मनु स्वयम्भु मृद सत्रह होतजू ।
जन जो अशिष्यहि करत शिक्षा तौन पहिले पोतजू ॥
है जौन सेवत दारदिहि धन देत दूजो तौनजू ।
करि तौन तो जो रक्षि शत्रुहि कुशल चाहत जौनजू ॥
है सो चतुर्थ जो कथत निजमुख कर्म कारज पूर्वजू ।

जो वैर ठानत प्रबलसों है निबल पञ्चम मूर्खजू ॥
मूढ़ छठवों करत कुत्सित कर्म जो गुरु ज्ञानजू ।
गुण कहत श्रद्धाहीनसों सो मूर्ख सतवों ख्यातजू ॥
गुरुगोत्र तियसों करत निन्दित कर्म अठवों तौनजू ।
जो पुत्रातियगति मान चाहत नौम सो अघ भौनजू ॥
निजबीज जो परखेत डारे दशम मूरख खेदजू ।
है सो एकादश मूर्ख तियसों कहत जो निजमन्त्रजू ॥
अरु देन कहि नहि देत जो सो मूढ़ द्वादश ग्रन्थजू ।
जो भेद जाने बिना जलपत तौन तेरहों अन्यजू ॥
जो चतुर्दशवों मूढ़ गुणत न कर्म को फल पायजू ।
अरु पञ्चदश जो याचकनसों कहत कटु रिस छायजू ॥
जो दान भोग न करत सोरहों मूढ़ सो धनवानजू ।
निज बन्धु भागहि हरण चाहत सप्तदशम नदानजू ॥
जो लखत लोक प्रलोक नहि सो मूढ़ सबमें श्रेष्ठजू ।
सोउ पाइ ऐसो समय तजय न भजत है असपष्टजू ॥

दो० धृति शम दम शुचिता दया, सतिप्रिय वचन सुनेम ।
आनँद वर्धन शमन अघ, दोउदिशि दायक क्षेम ॥
मोह दीनता भूपके, करत सकलगुण नाश ।
ताते दोउ तजि राखिये, स्वधरम सहितहुलास ॥
सुत तिय तन धन धाम मोह, जासों सधै स्वधर्म ।
ताते देहु निदेश स्वहि, बनहिनपरिहरि भर्म ॥

सनि नरेश अतिशय अकुलाने * मोह विवश रघुनायक जाने
करि प्रयोग पर्यङ्क सोवाये * विदा होन हित हर्षे सिधाये
आये प्रथम जानकी पासा * देखि सीन आगन अभिलाषा

बोले प्रभु स्वहिं पितु अरु माई * आयसु दीन बसहु वन जाई
धर्म हेत धर्मज्ञ नृपाला * प्रकट सुआयसु चाहिय पाला
चौदह वर्ष वास करि प्यारी * ऐहो फिरि तुम रह्यो सुखारी
सासु श्वशुर की सेवा करेऊ * नारि धर्ममा हिरदय धरेऊ
कानन भय दुख नाना रङ्गा * नाहिन लै लेयो निज सङ्गा
जो हठ वश चलिहौ सग प्यारा * तो गालव सम होव दुखारी

दो० गालव कौशिक केर शिषि, कह्यो दक्षिणा लेहु ।
सेवाते सतुष्ट हम, हमें तुष्ट नहिं येहु ॥
श्यामकरण हय आठशत, हठ लखि बोले लाउ ।
सुनि मुनि गयो ययातिनृप, निकट विचारि न भाउ ॥
पूछि प्रयोजन तिन दई, कन्या सो लै विप्र ।
नृप हर्यश्वने कह्यो यह, लेहु देहु हय क्षिप्र ॥
एक सुवन जनमाह तिन, दीन्हे दुइ शत बाज ।
तिमि काशीशउशीर्यपति, अरप्यो अर्भक काज ॥
दुइ शत मिले न तेहुपर, तब मुनि मानि गलानि ।
रोये विश्वामित्र ढिग, अस है हठ दुखदानि ॥

सुनि बोलीं तब जनकदुलारी * सुनहु प्राणपति विनय हमारी
अनुज अम्ब पितु सुत सुखनाना * प्रिय बिन प्रमदै प्रेत समाना
त्यहिविधि नाथ माहिं जगमाहीं * तुम बिन सुखद कतहुं नाहीं

दो० रहै चन्द्र बिन चन्द्रिका, रहै मीन बिन पाथ ।
तौ घरमें मोहि राखिये, बहुत कहौं का नाथ ॥
देखि प्रीति बोले चलहु, सङ्ग चली हरषाइ ।
सुनेहु लषण बनजात प्रभु, ढिग आये बिलखाइ ॥

शीश नाइ शोचत मनमाहीं * स्वहिं प्रभु सग लेहैं की नाहीं

देखि विकल बोले रघुराई * धरि उर धीर रहौ घर भाई
भवन भरत नहिं प्रियरिपुआरी * तात मातु मम बिरह दुखारी
जो मैं तुमहिं चलौं ले साथा * ह्वैहैं पुरजन निपट अनाथा
ज्यहि नृप राज्य प्रजा दुखपावै * अवशि अघिप सो नरक सिधावै
अस विचारि रहिये गृह भाई * करहु मातु पितुकी सेवकाई
भवभयहरण मातु पितु सेवा * विमुख निरय भाषत महिदेवा
सुनिलक्ष्मण अतिशय दुखपावा * पद शिरधरि अस बचन सुनावा
दो० नाथ बात जो कही तुम, ताहि करै नर सोइ।
कीरति सुगति बिभूति तिय, तनुज जाहि प्रिय होइ॥
मोहिं एक प्रभु तुमते नाता * अपर न जानहुं गुरु पितु माता
त्यहिते तजौं न किंकर जानी * सुनि रघुपति बोले मृदुबानी
दो० तात मातुते बिदा ह्वै, आइ चलौ मम साथ।
जाय सुमित्रा के चरण, भययुत नायो माथ॥
बोली देखि दुखित कस ताता * तव तुहँ लषण कही सब बाता
सुनि गइ सहमि सुमित्रा रानी * धरि धीरज बोली मृदुबानी
तात राम सिय तव पितु माता * रहिहैं जहा अवध सुखदाता
जो बन जात राम सुकुमारा * तौ घर मे का काज तुम्हारा
त्यहिते बन तिनके सग जाहू * लेहु वत्स जग जीवन लाहू
मोहिं समेत भयो बडभागी * जो तव रामचरण रति जागी
करेहु तात सोइ बात बिचारी * ज्यहि न रामसिय होइँ दुखारी
सुनि लक्ष्मण उठि शीश नवायो * पाइ अशीष रामढिग आयो
तब प्रभु सहित जानकी भ्राता * आये जहँ कौसल्या माता
चरण छुवत निजउर बैठारि * भई गहर कत बचन उचारि
बोले तव रघुपति सुनु माता * बनकी राज्य दीन मोहिं ताता

आयसु देहु मुदित मन ताते * कुशल आइ पद देखिय जाते
कौसल्यहिसुनि अतिदुखभयऊ * मनहु छीनि सुखमरवसु गयऊ
बोली कयहि अपराध भुवाग * राज्य देन कहि बिपिन निकारा
साचिय सुवन तव बात बखानी * सुनि व्याकुल ह्वै बोली बानी
दो० सुरअरिने दधि भक्षते, रण बन पिता निकेत ।
हे विधि राखे मोहि तू, यही देखावन हेत ॥
धरि धीरज बोली बहुरि, तात कयो अतिनीक ।
पितु आयसु सब धर्ममय, बकत बेद है ठीक ॥
जो मैं कहौं रहौ सुत परमा * बढ़ै बैर शिर चढ़ै अधरमा
त्यहिते अवशि जाहु बन भैया * आयहु बेगि जाइ बलि मैया
मिय एकहु दुख जानत नाहीं * इनकर लाइ सखो बनमाहीं
मैं बहुभांति सिखावन दीन्हा * तदपि चलनहित हठप्रणकीन्हा
लखणलाल अतिशय सुकुमारे * रहन न तेउ सग जात तुम्हारे
सुख भुख मुख इनकर देखी * सहिनसक्योसुधिलियोविशेखी
ह्वै स्वतन्त्र बन दूनौ भ्राता * करेउ न कबहुं जीवकर घाता
चलेहु मोह जितना चलिजावै * कहेउ सँदेश इते कोइ आवै
ग्वहिसम नारि अभागिनि कोई * भई न अहै न आगे होई
जो जननिउँ आगे दुख येहा * तौ नहिं करतिउ नृपते नेहा
जान विपिन मम बालक बारे * देखि न निकसत प्राण हमारे
असकहि अवनि गिरी मुरझाई * प्रभु जननी बहुविधि समुझाई
पुनि धरि धीर भाषि सुत बच्छा * लागिकरन अङ्गन की रच्छा
रो० छं० नमो विष्णु पद पातु जानु त्रिविक्रम वीरा ।
कटिहि रक्ष गोविन्द नाभि अच्युत रणधीरा ॥
गुह्य पातु पद्माक्ष उदर हरि उर श्रीनाथा ।

भुज मधुसूदन पातु कुक्षि पृथ्वीधर साथा ॥
कण्ठ जनार्दन पातु कृष्णमुखमण्डल सोहै ।
करणमूल बाराह घ्राण दामोदर जोहै ॥
नेत्र निरञ्जन पातु भाल लक्ष्मी नारायन ।
केशव पातु कपोल सर्वतन चक्रधरायन ॥
पूर्व पातु पुरुषोत्तम सदाग्नेय गरुडध्वज ।
दक्षिणदिशि नरसिंह पातु नैर्ऋत्य चतुर्भुज ॥
वासुदेव वारुण्य पातु वायव्य विश्वम्भर ।
राम रक्ष कौबीर्यशख ईशान गदाधर ॥
कमलनाभि अव ऊर्ध्व पातु जल गिरिवर बावन ।
व्याघ्र सिंह ते पातु सदा शङ्कर मनभावन ॥
भूत प्रेत बैताल ब्रह्मराक्षस छलकारी ।
अग्नि चौर विष बीछि सर्प ते पातु मुरारी ॥
परविद्या उर यन्त्र मन्त्र परतन्त्र जहांलौं ।
माधव सकल निवारु मारु रुज शूल तहांलौं ॥
यहिविधि रक्षाकीनि दीनि पुनि सुखद अशीशा ।
सहित लषण सिय चले नाइ जननी पद शीशा ॥

इति श्रीनिश्रामसागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतेवनयात्रा-
नृपविषादवर्णनोनामद्वादशोऽध्याय. ॥ १२ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वर्णौं मानस सहित कछु, अगिनिवेशकृत आनि ॥

कछुक शोचचित कछुकउछाहा * आये बहुरि जहा नरनाहा
भे सुनि विकल सकल पुरवासी * मनहु दशहुदिशि लागिदवासी
कर शिरधुनहिं भागिविनजानी * मन मलीन तनदशा अुलानी

कोइ कह भल न कैकयी कीन्हा * कोइ कह नृप काहेक बर दीन्हा
कोइ कह बिधि चाहै सो करई * कोइ निजकर्मन के सिर धरई
कोइ कह भरतहु कर मन होई * सुनि कर कान राखि कह कोई
लागत अघ अस किये बखाना * राम भरत कह प्राण समाना
अगिनि होइ जल नग नभफूला * भरत न होव राम प्रतिकूला
यहिबिधि कहत सुनत सब धाये * बिरह बिकल नृप मन्दिर आये
भइ अतिभीर भूप दरबारा * बरणि न जाइ बिषाद अपारा
त्यहि अवसरके सुधि जब आवै * अजहुँ दरार अवनि उर जावै

दो० तब रघुबर सिय लषणयुत, नृपपद शीश नवाय ।
कह्यो बिदा त्यहि कीजिये, तात बिषाद बिहाय ॥
निरखि भूप शिशुरूप उठि, लीन्हे हृदय लगाय ।
हे बश धर्म सनेह कछु, बरणो न रह्यो चुपाय ॥
देखि कैकयी तमकि कै, मुनिपट भाजन दीन ।
बोली पहिरहु जाहु बन, जो चाहौ हित कीन ॥
अनुजसहित बलकल पहिरि, करि पितुमातु प्रणाम ।
कृष्णपक्ष बैशाख दिन, छठे चले बन राम ॥
बिप्रवधू बर कैकयिहि, रही बहुत समुझाय ।
ते नाहिं कीन्ह्यो कान तब, चलीअधिकदुखपाय ॥
कह्यो भूप तब सचिव ते, रथपर लेहु चढ़ाय ।
बन देखाय अन्हवाय सरि, लावहु तात फिराय ॥
तुरत बाजि रथ साजि कै, गये राम के तीर ।
सुनि बिनती आरूढ़ भे, सियासहित द्वौ बीर ॥
चले अवध शिरनाय सब, पुरजन लागे साथ ।
प्रभु फेरत नाहिं फिरत सो, खगमृगबिकलअनाथ ॥

जाइ रहे तमसा निकट, प्रथम दिवस बिननीर।
करुणामय भे दुखित तब, देखि सबन कै पीर॥
लोग श्रमित गे सोइ तब, कह्यो सचिव ते राम।
खोज मारि रथ हाकिये, नाहित बिगरत काम॥
आयसु पाय चढाय रथ, हाक्यो खोज दुराइ।
जागि लोग भे बिकल तब, जब न लखे रघुराइ॥
राम राम कहि खोजन लागे * रथकर चिह्न न देख्यो आगे
फिरि आये धृग आपुहि जानी * करदम मीन धन्यकरि मानी
राम दरश हित जप तप नेमा * लगे करन पुरजन युत प्रेमा
इहा राम सिय सचिव सभाई * शृङ्गवेरपुर पहुँचे जाई
उतारे कीन सुरसरि अस्नाना * इतने माहिं भीलपति जाना
लै फल फूल भेट तहँ आवा * कीन्ह दण्डवत लखि सुखपावा
उठि रघुनाथ लीन उरलाई * पूछी कुशल पास बैठाई
नाथ कुशल सब बात हमारे * पदपङ्कज दुखदलन तुम्हारे
आपु कहा इत कीन पयाना * तब रघुपति सब हाल बखाना
सुनि निषाद मन भयो बिषादा * बोल्यो बहुरि सहित अहलादा
तुम प्रभु होउ इहा के राजा * हम सब सेवक सहित समाजा
चलहु भवन प्रभु कह निनपाही * ग्राम जान की आज्ञा नाहीं
तब शिंशपा तीर लै गयऊ * कुश साथरी बिछावत भयऊ
त्यहितर उतरि सबन फलखाये * शयनकीन पुनि सहज सुभाये
सोवत प्रभुहि निषाद निहारा * दुखित लषणते बचन उचारा
दो० जे सोवत रहैं मणिपलँग, पुरट महल के माहि।
ते पौढ़े कुशसाथरी, बिधिजुबामक्यहिनाहि॥
सुनि बोले सौमित्र कछु, बिधिकर दोष न होय।

निज कृत कर्म शुभाशुभ फल, भोगत हैं सब लोय ॥
राम सच्चिदानन्द घन, रहित समस्त विकार ।
करत चरित सुर सन्तहित, धरि स्वतन्त्र अवतार ॥

अस विचारि दुख परिहरि नेहा * करहु रामपद पद्म सनेहा
मृगतृष्णा सम जग व्यवहारा * सत्संगति हरि सुमिरन सारा
तात परम परमारथ नोई * जो रघुबीर चरण रति होई
यहिविधि कहत सुनत भा भोरू * जागे सकल सुनत खग शोरू
करि अस्नान शिर जटा बनाय * लरत सुमन्त्र तब बचन सुनाये
नाथ कह्यो स्वहिं कोशलनाथा * बन दिखाय ले आयो साथा
कह प्रभु तात सकल सब जाना * धर्म न दूसर सत्य समाना
सो मैं सत्य तजहुं किमि जानी * अयश होय पुनि धर्म कि हानी
स्वहिते तात जाहु घर आजू * नाहिंत होई अवध अकाजू
कह्यो पितासन विनय हमारी * ममहित करै न संशय भारी
जननिन ते कहियो शिरनाई * आवन सपदि फिरे द्वउ भाई
कह्यो भरत जब मन्दिर आवै * करहु राज ज्यहि सब सुख पावै
गुरु पितु मातु बचन अनुहारी * करत कछू तेहि लागि न स्वारी
यदु जमदग्नि गयेश हरिके * चरित चारु जग प्रचुर परीके
तुम पितुसम मम विनय तुम्हारी * करहु सो ज्यहि नृपरहै सुखारी
अस कहि चले सबै शिरनाई * सुरसरितट आये रघुराई
मागी नाव न केवट लावा * कह तुम्हार मरम मैं पावा
पाहन ते कीन्ह्यो मुनि नारी * स्वहिते कठिन न नाव हमारी
यहि ते पलत मोर परिवारा * नाथ न जानहुँ अवर प्रकारा
सुरसरि पार जान जो चहहु * तौ प्रथम कलेश कछु सहहु
लेन देहु स्वहि पदरज धोई * मानुष करण मूरि है सोई

धोये बिन न देहुँ जलयाना * लषण कोपि किन मारहिं बाना
सुनि बाणी प्रभु केवट केरी * बिहँसे सिय लक्ष्मणतन हेरी
बोले पुनि लजि परछाली * कमटपृष्ठ लावा जल हाली
पद पखारि जल कीन्हो पाना * सुरन देखि बड़भागी जाना
नाव चढाइ पार तब कीन्हा * शीश नाइ जब चाले लीन्हा
सिय मुद्रिका देन प्रभु लागे * बोला सहित जोरि कर आगे
तुम केवट भवसागर केरे * नदी नाव के हम बहुतेरे
हमरी तुम्हरी कसि उतराई * नापित नापित की बनवाई
सुनि प्रभु ताहि भक्तिबर दीन्हा * पुनि सुरसरिमहँ मज्जन कीन्हा
करि बिनती सिय नायहु शीशा * दीन मुदित मन गङ्ग अशीशा
तब प्रभु सखै कह्यो घर जाहू * बोला तब भीलन कर नाहू
जैहौ जहँ तहँ तक पहुँचाई * फिरिहौं तब प्रभु कुटी बनाई
सुनि चलिभे प्रभु सहितहुलासा * त्यहि दिन भयो पन्थ मे बासा
नौमी दिन तीरथपति गयऊ * तिरबेनी जल मज्जत भयऊ
बिप्रबृन्द सनमानि सिधाये * भरद्वाज के आश्रम आये
कीन दण्डवत सहित समाजा * उर लगाय बोले ऋषिराजा
आजु सुफल मम जप तप ज्ञाना * तीरथ बरत योग मख दाना
धन्य जन्म जगजीवन भारी * भयो कृतारथ तुम्हें निहारी
अब करि कृपा देहु बर मोहीं * काय बचन मन सुमिरौं तोहीं
जब तक तव पद प्रेम न होई * तब तक सुख न लहै नर कोई
अस कहि मधुर मूल फल दीन्हे * सबन सहित प्रभु भोजन कीन्हे
त्यहिनिशि रहिकर प्रातस्नाना * मुनिहिं नाइ शिर कीन पयाना
ग्रामनिकट ज्यहि निकसहिं जाई * थकितहोहिं लखि लोग लुगाई
एक एक ते कहैं बिचारी * ये बालक बनयोग न प्यारी

दो० कोइ कह इनके मातु पितु, हैं कठोर मम जानि ।
कोइ कह होयँ न होये हरि, निकसे मानि गलानि ॥
कोई कह नृपसुवन शिकारी * वन विचरत मिलिगे सुरनारी
कोइ कह बरबस भप कुमारी * करि भागे वन भवन बिसारी
कोइ कह राम वाम लै रूठी * चढ़े शम्भु पर बैर बिसूरी
कोइ कह विप्र शापवश आहीं * सिद्धिसमेत सिद्ध कोइ जाहीं
कोई कह ठग लिये ठगोरी * ठगतफिरत मन मतिकरि भोरी
कोइ कह ये सुकृती हैं कोई * निज परलोक सुधारत सोई
उदय भये कछु भाग हमारे * भरि नयनन जो इन्हें निहारे
यहि विधि की तरकै करि भूरी * पूछै निजनिज जाइ हजूरी
कहो राम सतिबचन तुम्हारे * फलत भाप जस और हमारे
त्यहि अवसर तापस एक आवा * करि विनती हरिधाम सिधावा
दो० मगवासिन सुखदेन इमि, उतरे यमुना जाइ ।
मज्जनकरि हरि मखहिं तब, विदा कीन बरिआइ ॥
चले लषण सियसहित प्रभु, करि यमुनहि परनाम ।
उतरे सीतहि श्रमित लखि, वट तरुतर विगग्राम ॥
एक अली लखि गइ निजगेहा * कहत सखिन से सहित सनेहा
सखि यहि ग्राम पथिक द्वै आये * गौर श्याम छविधाम सुहाये
दो० तिन सँग सुन्दरि एक जेहि, लखि लाजत जगसेव ।
चारि सुमन फल चारि पशु, विहँग चारि श्रुतिदेव ॥
सुनि पुरजन सब देखन धाये * उतरे प्रभु जहँ तहँ चलिआये
नखशिख सुभग स्वरूपनिहारी * सीताढिग आई मिलि नारी
पूछहिं हे स्वामिनि सुकुमारे * ये दोउ बालक कौन तुम्हारे
देवर लषण कह्यो सिय बैनन * निजपति प्रभुहि बतायो सैनन

कौशलपुर है इनकर धामा * नृप दशरथ के सुत अभिरामा
कारण कौन फिरत वनमाहीं * कोमल पद पदत्राणहु नाहीं
सासु सवांने कीन्ह्यो उनपाता * दिय बन बर्ष सात अरु साता
सुनिसियबचनसकलबिलखानी * बोलीं बिधिगति जात न जानी
निपट निठुरचित करत जो भावै * नीके माहि जबूने लगावै
शशिशीतल घट बड सकलङ्की * कोमलकुवल किहिसि कटङ्की
रूख कल्पतरु जलनिधि खारा * नीचधनिक बड विप्र भिखारी
इनकर रूप अनुपम कीन्हा * त्यहिपाछे कानन लिखिदीन्हा
जोपै इन्हैं दिहिसि बनबासा * तौ कत कीन्हेसि भोग बिलासा
यहिबिधि कहिसब आपुसमाहीं * बोलीं पुनि रघुपति के पाहीं
आजु रहौ चलि हमरे धामा * आखिर रहा दिवस ज्यकयामा
कह प्रभु हमैं दूरि है जाना * असकहि उठि बन कीन्ह पयाना
लखि सब लोग उठे अकुलाई * मनहुँ गई गृह सम्पति आई
दृगजल पूरि कहत करजोरी * फिरत करेउ इत कृपा बहोरी
हरिइच्छा जस समय बिलोकी * करब तथा थल पठये रोकी
प्रभुसियलषण जात इमि लागा * भक्ति सहित जनु ज्ञान बिरागा
मग में देखि ज्योतिषी कहई * राजचिह्न सब तुम्हरे अहई
सो बन बिचरत बिन पदत्राना * ज्योतिष झूठ हमारे जाना
बहुरि बिचार करहिं गनि आछे * होई राज कछुक दिन पाछे
जो देखै सो सग सिधावै * घूमहि तब जब बहु समुझावै
जिन सियराम बटोही हेरे * भव दुख दूरि भये तिन केरे
अजहुं जासु उर वह छबि आवै * निश्चय सो परधाम सिधावै
मग निवासकरि प्रात सिधाये * बालमीकि के आश्रम आये
दो० कीन्ह दण्डवत मुनिहि प्रभु, लीन बिप्र उर लाय।

लषण राम सिय रूप लखि, भये मुदित ऋषिराय ॥
कन्दमूल फल अमी सम, दीन्हे करि सनमान ।
भोजन करि परिभृत्य ते, बोले राम सुजान ॥
नाथ चतुरदश बरष मो, वन दीन्ह्यो महिपाल ।
सुथल बतावहु निरविघन, तहां रहौं कछु काल ॥
कह मुनि नाम नरेश शिर, धरहु करहु निजतन्त्र ।
अद्भुत चरित तुम्हार लखि, को न भूलिहै मन्त्र ॥
अकथ अलौकिक रूप तव, तर्कि सकै नहिं केउ ।
जानै सोइ करि कृपा तुम, जाहि जनावो देउ ॥
निज रहिबे हित बेश्म जो, पूछेउ सो सुनिलेहु ।
कहैं सुनै तव चरित जे, तस्य हृदय तव गेहु ॥
मन्त्रराज तव जपहिं जे, रटैं निरन्तर नाम ।
निर्द्वन्द्वी निस्पृह सदा, तस्य उरासि तव धाम ॥
परत्रिय जानैं जननि जिमि, परधन गरल समान ।
सम लोष्टा सम काचनहिं, तस्य मनसि तव थान ॥
जाति पाँति धनधाम तजि, तुम्हे रहैं लवलाय ।
तिनके मनमन्दिर बसहु, सियासहित दोउभाय ॥
जिनके मान न मोह मद, तव दासन में नेह ।
काम क्रोध कटु रहित जे, ते मानस तव गेह ॥
तव उच्छिष्ट भोजन करैं, तव प्रसाद पट लेहिं ।
बसहु तासु उर राम जे, क्षुधितहि भोजन देहिं ॥
दुख सुख समुझैं एकसम, शान्त शुद्धचित मौन ।
जगत रीति तें रहित जे, तस्य उरासि तव भौन ॥
पट विकारमय वपु लखैं, आतम रहित विकार ।

करैं सदा सतसंग जे, तिन उर भवन तुम्हार ॥
श्रीसम सेवैं गुरुचरण, नावैं द्विजपद माथ ।
बरणैं नामप्रभाव नित, तहां बसहु रघुनाथ ॥
तप तीरथ व्रत दान करि, मांगहि तवपद प्रीति ।
बसहि तस्य उर पद्म जे, चले रागरस जीति ॥
औरहु इमि बहु आश्रम अहईं * बसेउ राम तुम लखि सुरा तहईं
यहिअवसर समसुथलजोचहउ * तो चलि चित्रकूट में रहउ
बरणत सुर मुनि सन्त बिधाता * चित्रकूट चिन्तित भलदाता
भले राम कहि कीन पयाना * आइ कीन पयसरि अन्नाना
हरिदिन कामद गिरि प्रभु आये * समाचार सुर सन्तन पाये
आइ सबन पद नाये माथा * नाथ आइ हम भये सनाथा
परणकुटी युग सुभग बनाई * निज निज लोक गये सुखपाई
पुनि मुनि आये कोल किराता * कन्द मूल फल धरि धरि पाता
देहैं भेट उबहारि उबहारी * निरखि रामछबि होइ सुखारी
करि सनमान राम बैठारे * तिन तब प्रभु ने बचन उचारे
पतितपानि प्रभु दरशन दीन्हो * हम सब काहु कृतारथ कीन्हो
अब तुम रहैं बसहु सब मासा * सकल मोन कर अहैं सुपासा
हम तब दास सहित परिवारा * आयसु देत न करब बिचारा
करि परितोष बिदा प्रभु कीन्हे * चले भवन चरणन चित दीन्हे
जबते राम बसे बन आई * तबते भयउ सकल सुखदाई
फूलहिं फलैं बिटप बहुभाती * सुखतरु सम बिटपन सरिपाती
दो० करि हरि कपि भूक कोल मृग, बिचरत बैर बिहाइ ।
प्रेमबिबस चलि जाहिं तहँ, जहँ दरशन होइ भाइ ॥

गीतिकाछन्द ॥

चलि जाहिं जहँ तहँ बन्धु दोउ तब देखि सुर तापस कहैं ।
ये अहैं बडभागी सकल जे प्रभुइ अवलोकत रहैं ॥
हिमशैल सुरतरु जह्नुजा गिरि गहन पयसरि देखहीं ।
तहँ भाग्य जानहिं तुच्छ आपहि तिन्हैं बडकरि लेखहीं ॥

इति श्रीविश्रामसागरेरघुनाथदासकृतेरामचित्रकूटागमन
त्रयोदशोऽध्याय ॥ १३ ॥

दो० समिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वरणौं मानस मत कछुक, अग्निबेशकृत आनि ॥
चित्रकूट प्रभु जिमि बसे, सो मैं कह्यों बखानि ।
अब सो सुनहु सुमन्त्र जिमि, अवध गये दुख मानि ॥
केवट ह्वै हरि ते विदा, जब आयो निज ग्राम ।
देख्यो परे सुमन्त्र महि, रटै राम हा राम ॥
जाइ निषाद विषादवश, लीन्हो गोद उठाय ।
चर्चि चढ़ाये रथबिषे, बहुत भाति समुझाय ॥
लीन्हे सेवक बोलि निज, दीन्हे करि तिनसाथ ।
चलतनहय हिहिनातदिशि, देखि देखि रघुनाथ ॥
इतउत ऐंचत अटत मग, लेत जो हरि को नाम ।
चितवतत्यहितनहरि दिवस, पहुँचे कोशलग्राम ॥
पुरप्रबेश नहिं करि सकत, तक्तसचिवनिशिओर ।
जैसे जाइ चोराइ गृह, सबकर समझा चोर ॥
मनमें करत विचार म्वहिं, देखि पूछि है लोग ।
कौन उतरु देहौं तिन्हैं, नृप रानिन तब भोग ॥
निकसतनिठुर न प्राणमम, रहत कौन सुखलागि ।

धृग, जीवन रघबीर बिन, जरत न वपु विरहागि ॥
उभय घरी निशि गत गये, कौसल्या के धाम ।
सुनि नृप उठि उर लाइ कह, कहु सुमन्त्र कहँ राम ॥
तब सुमन्त्र बोले समुझि, धीर धरहु उर नाथ ।
हानि लाभ जीवन मरण, दुख सुख सब के साथ ॥
सबको कीन्ह प्रणाम प्रभु, सीता लषण समेत ।
आपु गये बन बचन लगि, मोहिं पठै दुख हेत ॥
सुनि महिपाल बिहाल ह्वै, गिर्यो धरणि पछिताइ ।
अन्ध शापकी सुरति करि, कही सबन समुझाइ ॥
क्षत्रियधिरव देवान्धसुत, श्रवण बध्यो जगजानि ।
तजिहौतन सुतबिरह हमि, दिहिनि शाप दुखमानि॥
पतङ्गिका के पूछमे, सींक चलाई जौन ।
लह्यो तासु फल महामुनि, शूल तहा हम कौन ॥
कर्यो शम्भुको लिङ्ग जहँ, जलजामन को माथ ।
मिटत कर्मवश भानुजहँ, तहँ हमका रघुनाथ ॥
सत्य कहत श्रुति कर्मविन, भोगे छूटत नाहिं ।
रामरटनि ते मिटत जिमि, चूनापरि निशि माहि ॥
राममात बोली बिलखि, नाथ धरहु उर धीर ।
तौ मिलिहैंसियराम फिरि, शोभ सुनिय रघुवीर ॥
हायराम सिय लषण कहि, हाय राम बश शोक ।
तृणसमहरिहितत्यागितनु, भूप गयो सुरलोक ॥
लखि लागीं रोदन रवनि, गुण बल तेज बखानि ।
बिलपहि दासी दास सब, पुरजन परिजन जानि ॥
यहिविधिबीती रानि सब, प्रातकाल मुनि धाइ ।

शोक मिटायो सबन कर, विविध प्रसंग सुनाइ ॥
कह वशिष्ठ मन धीरज धरहू * धर्म विचारि शोच परिहरहू
जो जनमत सो मरत विशेखी * देह दशा यह अघटित देखी
कनककशिपु हिरण्याक्ष सरीखे * गुणिनकेर गुण गुणियत लीखे
सगर सहस्रभुज आदि नरेशा * सुमिरन मात्र रह्यो अतुलेशा
जिनके रथ पहियन ते सागर * भयो सो भये कालवश नागर
पूर्व कर्म अनुसार जहाना * हरत मौत करि विविध बहाना
प्रथम सृष्टि जब रची विधाता * लहै न कोइ तहँ जीव निपाता
तब रचि मौत बधायसु दीन्हा * अयशमभुक्त्यहि रोदन कीन्हा
आँशुन ते भय रोग घनेरे * यह विधि ये सब सचर तेरे
इन के ओट हरौ तुम प्रानी * करत सोइ विधि आज्ञा मानी
दो० मेदिनि मेरु अआदि सुर, सो इक दिन नशिजात ।
गज श्रुतिसम नर आयुचर, ताकी कौन बिसात ॥
लही बडाई भूपवर, हरिहित परिहरि देह ।
पटविकार परते परे, आतम आनेद गेह ॥
छेदिसकै नहि शस्त्र ज्यहि, पावक सकै न जारि ।
मारुत सकै न शोष यहि, बोरि सकै नहि बारि ॥
जिमि विहाइ जीरणवसन, धारत मनुज नवीन ।
तिमि देही तनु जीर्ण तजि, नूतन गहत प्रबीन ॥
आदि अन्त अव्यक्त है, मध्य जासु कछु व्यक्त ।
तेहि आतम के हेतु की, करहु कल्पना त्यक्त ॥
रोये जो मिलिजाइ त्यहि, रोवै भले पुकारि ।
जो न मिलै रघुनाथ तौ, धीरज धरै बिचारि ॥
सज्जन के संसर्ग ते, कस्य न मानस ताप ।

मिटी मिटतमिटिहै न सुनि, त्याग्यो सवन कलाप ॥
तेलनाव तनु राखि नृप, लिये दूत युग बोलि ।
वेगिहि लावहु भरत कहँ, कहेउ न तुम कछु खोलि॥
चले चार इत पवन जिमि, उतै भरत दोउ भाइ ।
दीख भयावन स्वप्न निशि, धावन पहुँचे जाइ ॥

भूता दिन तहँ पहुँचे जाई * गुरु निदेश सुनि दूनहुँ भाई
चपल बाजि चढि तुरत सिधाये * कुछ दिवस निजनगरहि आये
पुर प्रविशत भे अशकुन भारी * परे देखि सब जीव दुखारी
लोग मिलैं नहिं कुशल सुनावैं * गर्व ज्वहारि ज्वहारि सिधावैं
गे चलि प्रथम केकयी गेहा * बैठारे तिन सहित सनेहा
पूछि कुशल निज नैहर केरी * बोले भरत तासु तन हेरी
भूप कहा सुरलोक पधारे * कारण राम बिरह के मारे
दुःख कि देत रहै युवराजू * काहेन दिहिनि किहेउँ मैं काजू
कौन काज नृपपद तव हेता * लिहेउँ दिहेउँ राम बन चेता
राम कौन सुत सवति के जानी * सवति कौन कौसल्या रानी
बोलत कस कह राम सभाई * गे बन बन्धु सहित महिजाई
सुनि महि मुरछि गिरे दोउभ्राता * कहि हा राम लषण सिय ताता
हा पितु स्वर्ग लागि प्रिय तोही * रामहिं सौंपि गयउ किन मोही
हा सिय राम लषण मम पाछे * सहिहैं दुख बन मुनिपट काछे
कू जननी तैं अस बर मागे * हरे सकल सुख एकहि लागे
जो तैं यह रहै उर धारे * जनमत मोहिं मारि किन डारे
राम सबहिं प्रिय प्राण समाना * तैं किमि तिन्हैं कहे बन जाना
भूप प्रतीति कीन भल तोरी * मरणकाल बहु भइ मतिभोरी
भूप लगाइ न दोष तुम्हारा * दुखकर मूल अभाग हमारा

अब दृग ओट बैठु उठि जाई * त्यहि क्षण तहा मन्थरा आई
लखि रिपुदवन लात दकमारी * गिरी भूमि हा हाय पुकारी
पकरि केश इत उत घसिलावा * पर अपकार केर फल पावा
भरत मातु लखि दीन छुडाई * कौसल्या गृह गे दोउ भाई
राममातु उठि हृदय लगाये * जनु बन राम लषण फिरिआये
रोदन करि पुनि हाल सुबरना * रामगमन बन भूपति मरना
जन्ममरणफल भल नृप लीन्हा * म्वहिंबिधिबिरचिबज्रकरिदीन्हा
मातु गिरा सुनि दुखरस वोरी * बोले भरत बिलखि करजोरी
मातु मृषा म्वहिं बिधि जनमावा * मम पाछे सबहन दुख पावा
केकयिसुत अपयश अधिकाई * मातुमते म्वहिं कौन बताई

दो० जो अघ गो द्विज मातुपितु, सत तिय मारे होइ ।
जो मम सम्मत होइ तौ, म्वहिं अघ लागै सोइ ॥
शिवनिरमायल पल भखी, मद व्यभिचारी चोर ।
जो गति पावै सोइ म्वहि, मिलै मानि मत मोर ॥
जे श्रुतिनिन्दक हरिबिमुख, सतसगति न सुहात ।
तिनकीगतिम्वहिं मिलहिजो, होइ मोर मत मात ॥
मातु भरत के बचन सुनि, बोली शुचि सुखधाम ।
रामहि प्रिय तुम प्राण सम, तुम्हैं प्राणसम राम ॥

सो० तात मातुमत माहिं, तुम्हैं कहैं मतिमन्द ते ।
सुगति लहैंगे नाहि, अस कहि लिये लगाइ उर ॥

यहिबिधि विलपत रैनिसिरानी * होत प्रात आये मुनि ज्ञानी
करि प्रबोध भरतहिं समुझावा * उठे तुरत गुरु आयसु पावा
नृपतन झालि विमान बनाई * राखी मातु सकल समुझाई
गन्धसार समिधे बहुलीन्ही * दाहक्रिया सरयूतट कीन्ही

पाण्डुपीर वाते श्रुति रीती * दीन तिलाञ्जलि सयन मर्प्रीती
गौरपक्ष ग्यारसि दिनजाना * कीन भरत दशगात्र विधाना
द्विजहिं दान दीन्हेउ बहुभाती * तिसरे दिन भइ त्यरहीशाती
पितुहित भरतकीनि जसकरणी * सो मुख सहसहु जाइ न बरणी
दो० एकादिन गुरुजन सकल, जुरे सभामधि आइ।
शोच बिवश लखि भरत ते, तब बोले ऋषिराइ॥

चामरछन्द॥

सुवन सुनि लीजिये। सयन सुख दीजिये॥
दृगन जल पोछिये। नृपहि कत शोचिये॥
छं० शोचिय द्विज निज धर्म, त्यागि जो रहै विपरत।
शोचिय नृप नयरहित, सहिततम तोप पोप गत॥
शोचिय वणिक वजाइ, पाइ धन धर्म न ठानहि।
शोचिय तिय पिय छलनि, शूद्र विप्रहिं अपमानहि॥
शोचियपती बिराग बिन, तियनशोचिसबभांतिभल।
सुर दुर्लभ तनपाइ जिन,भजेउ न रामहिं छाडिछल॥
शोचन योग न जनक तुम्हारे * नीतिनिरत त्रिभुवनउजियारे
प्राण पुत्र तजि राखे बचना * प्रकटी प्रेम प्रीति की रचना
असजिय जानि शोच परिहरहू * पितुआयसु सो शिरपर धरहू
तुम्हे राज्य देगे नृप ज्ञानी * पालहु प्रजहि परमहित मानी
सुरपुर नृप परितोष पैहैं * राम लषण सिय सुनि हरषैहैं
यामे दोष न निगम बताई * ज्यहि पितु राज्य देइ सो पाई
सुनि सुमित्र कौसल्या बोली * गुरु आज्ञा सुत अहै अमोली
पुनिपितुवचन जाइ बलिअम्बा * होउ तात सबका अवलम्बा
सुनि मृदुवचन भरत अकुलाने * बोले सबन नेह बश जाने

दो० यदपि मातु पितु गुरुवचन, बिन बिचार चहि कीन ।
तदपि मोहबश उतरु मैं, देत क्षमहु लखि दीन ॥
प्रथम पिता प्रण पूर निबाहा * रामलक्ष्मणसिय बन भल चाहा
जो मोहिं राज देत बरजोरा * यामें हित तुम्हार की मोरा
मम हितसों रघुपति पद सेवा * अपर उपाय न जानहुँ देवा
हित तुम्हार हमते किमि होई * केकयि सुवन जान सब कोई
ब्यहिउदगरिसबकादुख दीन्हा * कारण ते कारज कटु चीन्हा
मनमुखमूल सरिस दुखदायक * धर्मशील चाहिय नरनायक
तेहिते सबै कहौं शिर नाई * आयसु याहि देहु हरषाई
प्रातकाल रघुपति पहँ जावौं * जरनि मिटै जब दरशन पावौं
भरतबचन सुनि सब हरषाने * बोले मुनि तब परम सयाने
शोक सिंधु बूड़त अवगाहू * तुम अवलम्ब दीन सब काहू
मातुमते जो तुम्हैं बनाई * सो शठ कीट नरक दुख पाई
अवशि चलहु बनजहँ अवधेश * गे निज निज गृह पाइ निदेश
भरतबोलि शुचि सेवक लीन्हे * भवनभँडार सौंपि सब दीन्हे
सचिवहि दीन तिलककरसाजू * बिपिन देउ गुरु रामहिं राजू
होत प्रात चढ़ि पुरजन याना * सबन कीन बन ओर पयाना
ब्यहि राखहिं गृहरक्षा हेता * सो कह हरि बिन जरै निकेता
शुक शारिका पिंजरन बाँधे * अधिक उचाट कपाट न खोलै
चढ़िचढ़ि रथ ऋषिद्विजनसमेता * चले सकल बन रघुपति हेता
शिबिका सुभग समूह सँवारी * चढ़ि गवनी मुनितिय नृपनारी
जेष्ठादौ बिबेक कहि सादे * भरत शत्रुहन चले पयादे
भरतहिं देखि लोग अनुरागे * तजितजि यान चलन पगलागे
दो० कौसल्यादिग जाइकै, कह्यो चढ़ो रथ तात ।

समुझिपरत म्वहिंअसनिरवहेऊ * रामकृपा मूरति तुम अहेऊ
बालक बिधिसम सुयशतुम्हारा * हरण ताप तम पाप अपारा
भरिनयननछवि निरखितुम्हारी * हम आपनि बड़ि भाग्य बिचारी
दो० सब साधन कर फल लहा, लषण रामसिय दर्श ।
तेहि फलकर फल अब भयो, भरत त्वया अस्पर्श ॥
सुनि मुनिबचन भरत तब बोले * पुलकि गात जललोचन लोले
नाथ मोहिं नहिं पितुकर शोचा * नहिं दुखजियजगकहैं कि पोचा
बिगरे परलोक लोक न शङ्का * नहिंकछुडर बिधिभयो कि बङ्का
एकहि कष्ट हृदय मम भारी * लषण राम सिय होत दुखारी
यहि आमय की औषध आवै * तब कछु और बात मन भावै
कहमुनि करहु न शोच तुम्हारे * सब दुख मिटिहैं प्रभुइ निहारे
आजु होउ तुम अतिथि हमारे * भले नाथ कहि कटक सिधारे
तब मुनि करि बिचार सुख पाई * ऋद्धिसिद्धि अणिमादि बोलाई
कह्यो करहु सबहिन की सेवा * हरषीं सकल पाइ बड़ देवा
प्रथम कनकमय महल सुहाये * कैयो योजन माहिं बनाये
दीन्ह्यो बास सुरुचि सब काहू * सुभग सेज सक सरसउ काहू
अशन बसन बर भोग अनेका * दिये तोपि तिन यक पर एका
दासी दास अप्सरा नाना * बाग तडाग बिबिध पौमाना
सुर दुर्लभ सुख लहि सब लोगा * बिसरे घर बन बिरह बियोगा
भरत बिलोकि मुनीश प्रभाऊ * भयो रामपद अधिकहु चाऊ
चक्रबाक सम रैनि बितायो * प्रात नहाइ मुनिहिं शिर नायो
बर बिराग बिप्रेन्द्र निहारी * मुदित दिये सँग सेवक चारी
आयसु पाय सुसैन सिधाये * बीचबास करि यमुनहिं आये
रघुपति बरण निरखि बरबारी * हरषत भये सकल नरनारी

सम्मुखिपरत म्वहिंअसनिरवहेऊ * रामकृपा मूरति तुम अहेऊ
बालक विधिसम सुयशतुम्हारा * हरण ताप तम पाप अपारा
भरिनयननछवि निरखितुम्हारी * हम आपनि बडि भाग्य विचारी
दो० सब साधन कर फल लहा, लषण रामसिय दर्श ।
तेहि फलकर फल अब भयो, भरत त्वया अस्पर्श ॥
सुनि मुनिवचन भरत तब बोले * पुलकि गात जललोचन लोले
नाथ मोहिं नहिं पितुकर शोचा * नहिं दुखाजयजगकहै कि पोचा
बिगरे परलोक लोक न शङ्का * नहिंकछुडर विधिभयो कि बङ्का
एकहि कष्ट हृदय मम भारी * लषण राम सिय होत दुखारी
यहि आमय की औषध आवै * तब कछु और बात मन भावै
कहमुनि करहु न शोच तुम्हारे * सब दुख मिटिहैं प्रभुहि निहारे
आजु होउ तुम अतिथि हमारे * भले नाथ कहि कटक सिधारे
तब मुनि करि विचार सुख पाई * ऋद्धिसिद्धि अणिमादि बोलाई
कह्यो करहु सबहिन की सेवा * हरषी सकल पाइ बड देवा
प्रथम कनकमय महल सुहाये * कैयो योजन माहिं बनाये
दीन्ह्यो वास सुरुचि सब काहू * सुभग सेज एक सरसउ काहू
अशन बसन बर भोग अनेका * दिये तोपि तिन एक पर एका
दासी दास अप्सरा नाना * बाग तडाग विविध पौमाना
सुरदुर्लभ सुख लहि सब लोगा * बिसरे घर बन बिरह बियोगा
भरत बिलोकि मुनीश प्रभाऊ * भयो गमपद अधिकहु चाऊ
चकवाक सम रैनि बितायो * प्रात नहाइ मुनिहिं शिर नायो
बर बिराग विप्रेन्द्र निहारी * मुदित दिये सँग सेवक चारी
आयसु पाय सुसैन सिधाये * बीचबास करि यमुनहिं आये
रघुपति वरण निरखि बरबारी * हरषत भये सकल नरनारी

सुनि सुरपति उर धीरज आना * मरषि सुमन पदप्रेम बढ़ावा
पूछन प्रभु भरतहि चलिआये * नय निवासकरि प्रात सिधाये
सबके उर अभिलाष विशेसी * बच सियरामलषण मुख देखी
नव निषाद गिरिवरहि देखावा * प्रेममगन सबहिन शिरनावा
सुमिरत नाम दरशकी आसा * उभयकोस चलि कीननिवासा
प्रातकाल उठि चले विशेखा * इत सिय स्वप्न प्रात अस देखा
पुरजनसहित भरत जनु आये * सासु आनविधि सबदुख तायें
सुनि प्रभु कह्यो स्वप्नभलनाहीं * कीन स्नान शोच मनमाहीं
उत्तर दिशि देखी नभ धूरी * दूरे आइ खग मृग तहँ भूरी
तबतो चकित उठे रघुराई * आइ किरातन खबरि जनाई
भरत आगमन सुनि रघबीरा * भये प्रेमवश पुलक शरीरा
पुनि मन शोच कीन रघुराऊ * उत सुरहित इत बन्धु दबाऊ
बहुरि समुझि मन भये सुखारे * भरत कहँ महँ अहैं हमारे

दो० लषण लख्यो प्रभु शोचवश, उठे धनुष शरसाधि।
बोले सन्मुख जोरिकर, सहितक्रोध अहलाधि॥

नाथ कनक रसना प्रभुताई * पावत पुरु जात बौराई
बेनु नहुष भुजसहस सुरेशा * शशिविशक्रयशविदितत्रिदेशा
अरु कृतवीर्य दक्ष गति जाई * सुरनी मे नहि सिन्धु समाई
भरत साधु बड़ रहे सयाने * तेउ राज्यपद पाइ भुलाने
विपिन यकाकी समुझि सुहाये * करन अकण्टक राज्य सिधाये
जो मनमें यह बात न आवत * तौ केहि करिहरि कटकसुहावत
प्रथम मातुमिस किहिनि खुटाई * समय पाय फल लागत आई
भरतहि आजु सबन्धु प्रचारी * नाथ शपथ रण डरिहौं मारी
अतिअपमान रजहि नहिं सोई * हम नृपतनय कराबधु योंहैं

सुनत बचन लोकप भयमानी * नव तहँ भई गगन इमि बानी
ऐसे बल है तात तुम्हारे * परशुध करत न कछु अविचारे
सकुचे लषण राम सनमाने * तात बचन तुम सत्य बखाने
भरत सरिस शुचिबन्धु जहाना * भयो न अहै तात तव आना
गरुडहिं चहु रजु अहि गहिखावै * गोपद वूडि घटज बरु जावै
भरतहि होय न नृप मद भाई * विनशक्तिपयनिधि इषदखटाई
गुणअवगुणमयजगविधिकीन्हा * भरत हंसजल तजि पयलीन्हा
यहिविधि इत प्रभु करत बडाई * उत भरत पय सरित नहाई
सकल समाज राखि तेहि तीरा * आपु चले जहं सिय रघुबीरा
सग निषाद नाथ लघु भ्राता * विविध कुतर्क करत मगजाता
कैकयिसुत लखि चहै तजिदेही * सेवक समुझि अपन करिलेही
तनेहु अतजेहु मोहिं गति याही * शिशुतजिमातुपितहिकितजाही
यहिविधि टटकत बडन अधीरा * आये चलि प्रभु आश्रम तीरा
फूले विटप अनेक प्रकारा * खग मृग मधुकर करत विहारा

दो० पाकरि जम्बु तमाल चुत, तामधि बटतर श्याम।
तेहितर सरितातट बनी, परणकुटी अभिराम॥
बहु तुलसी तरु सुमनचरु, रुचिर बेदिका एक।
होत कथा नित आद्र तहँ, बैठत साधु अनेक॥

थल शोभा जब भरत निहारी * मिटे सकल दुख भये सुखारी
चले प्रणाम करत दोउ भाई * पहुंचे जब रघुपति पहँ जाई
उठे तुरत प्रभु जब निहारा * कहुँ धनुशर कहुँ तूण बिसारा
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्यो * मिलननिरखिसुरजयजयकीन्यो
प्रीतिप्रतीति भरत रघुबर की * विधिहरिहर सुरसकहिं न तरकी
हौं केहिभाति कहौं मतिथोरी * मिले लषण ते भरत बहोरी

राम सखहिं भेटे हरषाई * मिले शत्रुहन प्रेम बढाई
केवट लषण शत्रुहन भेटे * पुनि दोउ बन्धु सियापद लेटे
दीन अशीष सहित बैठारे * भे अनुकूल बिलोकि सुखारे
तब केवट वर बचन सुनाये * प्रभु मुनि मातु लोग सबआये
गुरु आगमन सुनत रघुबीरा * गये जहा सरितट सब भीरा
मुनिहिं प्रणाम कीन्ह दोउभाई * प्रेम समेत लिये उर लाई
विप्र विप्र बनितन शिरनावा * आशिरवाद सबन ते पावा
आरत लोग समुझि सुरत्राता * पलमा सबै मिले दोउ भ्राता
पुनि देखी सब मातु बिहाला * प्रथम केकयिहि मिले कृपाला
पदपरि प्रभु तेहि कीन सुखारी * बहुरि सकल भेटी महतारी
मिले सुमित्राहि पुनि दोउभाई * कौसल्या भेटे अकुलाई
दो० अतिसनेह बश मातु दोउ, बन्धु लिये उरलाय ।
तेहिक्षण भयो बिलाप जस, तस कापै कहिजाय ॥
सो० भेटि सबै दोउ भाइ, गुरुहि कह्यो पग धारियो ।
मुनिकर आयसु पाइ, उतरे जल थल देखि रुच ॥
द्विजगुरु-सचिव मातु लै साथा * आये निज आश्रम रघुनाथा
सिय उठि मुनिपद नायो माथा * उचितअशीष दीन्ह ऋषिनाथा
पुनि गुरुत्रियद्विजप्रियपदलागी * दीन अशीष सबन अनुरागी
सासुन-सकल मिली बैदेही * लखि लखि सबै लाइ उरलेही
तब मुनीश सब का बैठाये * प्रथम कछुक हरिचरित सुनाये
पुनि नृप सुरपुर गमन जनावा * सुनि सियराम दुसह दुखपावा
करहिं बिलाप लषणयुत रानी * सो करुणा नहिं जाइ बखानी
तब विधिसुत दीन्ह्यो बहुज्ञाना * सबहिन जाइ कीन्ह असनाना
दशमी दिवस रहा तेहि चीन्हा * बरत निरजला-सबहिन कीन्हा

प्रानहि जो श्रुति आयसु दिन्हेउ * सो प्रभु सहित प्रीति ते लिन्हेउ
करि पितुक्रिया वेद विधिरीना * मदन दिवसमे शुद्ध पुनीना
सो० परम पुनीता जोइ, कोइ न जानत तासु गति।
नरनाटक कृत सोइ, करत निजानुग भावबश ॥
इति श्रीविश्रामसागरेश्रीरघुनाथदासकृतेपञ्चदशोऽध्यायः ॥१५॥
दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु, गणपतिगिरा सुखदानि।
वर्णौं मानस मत कछुक, अगिनिवंशकृतआनि ॥
कोसलपुर वासी सकल, सुखप्रद परवत पास।
बसतकसततनुलग्नतलरवि, नमत अगतकी आस ॥
तब रघुपति गुरु ते कह्यो, नाथ विकल सबलोग।
लखिमाहियुगसमजानपल, नहिफलभक्षणयोग ॥
बोले मुनि तुम सुनहु कृपाला * प्रथम लोग सब रहे विहाला
जबते कीन्हेनि दरश तुम्हारे * तबही ते सब भये सुखारे
तेहिते रहन कछुक दिन देहू * भले नाथ कहिगे निज गेहू
लागे रहन मुदित नर नारी * देखि शैल सब होय सुखारी
पयसरि करहि निकालसनाना * कन्दमूल फल लेहु नाना
कोल किरात मुदित ले आवै * धरि धरि आगे शीश नवावै
देहि लोग धन लेहि न सोई * कहै हमार भला किमि होई
तुम सुकृती हम वनचर पापी * रामकृपा भय दरश कृतापी
प्रिय पाहुन तुम सब सुखदाता * सेवा योग न कीन विधाता
फल दल लेहु दीनजन जानी * रीझत साधु प्रेम पहिचानी
सुनि मृदुवचन सकल अनुरागे * तिन के भाग सराहन लागे
प्रीति विलोकि लेहि फल फूला * खुशीहोहि तब लखिअनुकूला
यहिविधि लोग सकलहरषाही * वासर बीति पलकसम जाहीं

सबके मन इच्छा यह होई * जहँ सियराम तहँ सब कोई
सिय करि सबसासुन पद सेवा * किहिनिसुवशकोइजान न भेवा
याहिविधिअधिवासरचलिगयऊ * द्वितिया दिन सब बटुरतभयऊ
भरत वशिष्ठ राम मुनिरानी * निजमतिसरिस कहै सब बानी
तेहिक्षण जनक दतपुग आये * प्रभुइ देखि भे दुखित सुभाये
बूझत गुरु विदेह कुशलाई * बोले तब सुचार शिर नाई
प्रभुअवकहहुकुशल किहिलागी * कुशल हेतु सो भयो बिरागी
नतरु कुशलगे अजसुत साथा * मिथिलायुत भइ अवध अनाथा
नृप परलोक सुना जब राजा * भये विकल तब सहितसमाजा
दो० पुनि धीरज धरि अवधपुर, दूत पठाये चारि ।
खबरि कहीं तिन आइ तब, आपुइचलेबिचारि ॥
किहिनि निवास न मगकहू, चलतभये दिनतीनि ।
आइपहूचे खबरिहित, तब ग्वहि आज्ञा दीनि ॥
जनकागमन सुनत रघुबीरा * आनन चले सङ्ग बहु भीरा
पुरजन सुनि सब भये सुखारी * कहैंकि रहब बहुरि दिनचारी
गिरिवर देखि जनक रथत्यागा * कीन प्रणाम सहित अनुरागा
मगश्रम स्वल्प न काहू पावा * मनु प्रभु पास प्रथमहीं आवा
इत उत लोग सकल नियराने * लागे मिलन प्रेमरस साने
जनक मुनिनपद नायउ माथा * ऋषिन प्रणाम कीन रघुनाथा
मिले विदेहैं बन्धु समेता * लै आये सहप्रीति निकेता
द्वौसमाज मिलि भये बिहाला * रह न ज्ञान धीरज तिहिकाला
भूप रूप गुण शील बखानी * रोवहिं सकल विकल नृपरानी
रामहिं देखि अधिक उर दाहा * हाय बामबिधि कीन्हें काहा
सुर नर मुनि सब भये दुखारी * नृप विदेह की दशा निहारी

भाइ निमेश भे जनक सुजानी * यह रघुपतिपद प्रीति पिछानी
जप तप योग विरति विज्ञाना * रामप्रेम बिन व्योम समाना
मुनिवर सबहि बोध यह दीन्हा * रामघाट तब मज्जन कीन्हा
उतरे सब जहँ नह जल तीरा * त्यहिदिन सकल रहे निनर्नीरा
प्रात सबन उठि कीन सनाना * कोल किरात बात सुनिजाना
कन्दमूल फल सरस सुहाये * भरिभरि भार भूरि भट लाये
मुनिवर पठे जनक पहँ दीन्ह * सनसहित नृप पारण कीन्ह
यहिविधि भे नव बासर चारी * प्रभुहि देखि सबलोग सुखारी
दो० दोउसमाज कहँ नारिनर, अब न जाय घर दूरि।
सियरघुपतिसँग रहब बन, सुरपुर ते सुख भूरि॥
ज्येष्ठशुक्ल जिष्णुगदिवस, जनकराज रनिवास।
आयहु सुनि सबकाशतहँ, जहँसियबी सबसास॥
कौसल्या सादर बैठारी * बरत नयनजल सकलदुखारी
सियामातु बोली विधि करुणी * परमकठिन कछु जात न बरणी
देराहु विप बायस बहुतेर * मधु मराल कहुँ मिलन न हेरे
जन्म विवाह उछाह अपारा * कह यह सुख कह यह दुखडारा
लक्ष्मणमातु कह ऐसे अहई * बालचरित सम कत जो रहई
कौसल्या कह विधिहि न दोषू * निजकृत कर्म केर सब रोषू
ग्यहिं न शोच भूपति कर कोई * नहि बनजात राम सिय तेई
गूढ सनेह भरत कर देखी * यहीं एक ग्यहिं शोच विशेखी
तेहि ते देखि कहेउ नृप पाहीं * बहुरे लक्ष्मण भरत सँग जाहीं
भरत शील गुण प्रेम बड़ाई * कहँ शेष पर सकै न गाई
जय तप मोसे बदे महीपा * भरत भये हमरे कुल दीपा
कनक कसौटी चढ़ि खुलिजाई * पुरुष परखिये अवसर पाई

निचरवचन सकल बिलखानी * धरहु धीर पुनि कह्यो सुबानी
लखण मातु तब कह्यो सप्रीती * देवि दण्डयग यामिनि बीती
कौसल्या कह अब थल जाइ * हमरे तनपति हाथ निबाहू
सुनि बोली अम काहेन कहह * राममातु दशरथ प्रिय अहहू
अङ्गीकार करे गुरु जाही * तृण गिरिसम प्रतिपालत ताही
तबहित हरि कोउ का अनुसरई * रविसहाद कहु दीपक करई
दो० रामलषणसिय जाय बन, करि सुरमुनिको काज ।
फिरि पुहैं निज नगर तब, पैहैं त्रिभुवन राज ॥
याज्ञवल्क्य नारद शमि काहा * झूठ न होव सत्य हम चाहा
अमकहि सियहित विनयसुनाई * आई निजथल करत बड़ाई
प्रियपरिजनहिं मिलीलसिसीता * मे सब विकल मोहमद जीता
जनक सियहि उरलीन्हो लाई * बोले पुनि धरि धीरज राई
पुत्रि पवित्र द्वऊ कुल कीन्हो * पावन सुयश सकल उरलीन्हो
सुनि पितुवचनसियासकुचानी * रनिरहे भल यहा न जानी
लखि रुख मे प्रसन्न पितु माता * पठ्यान तब तहं भेंटि सुगाता
सियामातु तब पतिहिं सुनाई * कौसल्या कृत भरत बड़ाई
सुनि पुलकित तन बोले राऊ * ऐसे हैं प्रिय भरत प्रभाऊ
हम बशिष्ठ मुनि बहु अवगाहा * मिली न भरतबुद्धि की थाहा
योग भोग युत नय मय राऊ * किमि जानों हरिजनकर भाऊ
भरतभाग्य गुणशील बिचारा * शेष कहैं पर लहैं न पारा
महिमा भरत केरि सुनु प्यारी * जानैं राम न सकैं उचारी
तौ फिरि अपर सकै को गाई * चिरिया उर कहुं सिन्धु समाई
दो० लषणहि फेरहु भवन तब, कहो भरत बनजान ।
जो मे पावहुँ थाह कछु, प्रीति प्रतीति असान ॥

राम भरत कै बात प्रमाना * जानैं राम भरत नहिं आना
इमपि भरत की करत बडाई * हर्ष सहित सब रैने बिताई
प्रातकाल करि मज्जन नीरा * जनक बशिष्ठ भरत रघुबीरा
कौशिकादि पुरजन अधिकाई * बैठे सब बटतरु तर आई
बोले तब राघव ऋषि तेरे * नाथ सहत दुख लोग घनेरे
जो आयसु मोहिं होइ गुसाई * सो मैं करौं दास की नाई
बोले मुनि तुम धर्म जहाजा * कस न कहौ यहिबिधिमहराजा
असकहि बहुरि भरतते भाषा * कहो तात निजमनअभिलाषा
बोले भरत जोरि कर दोऊ * अवसरसमुझि कहत सबकोऊ
बैठे जह प्रभु त्रिभुवन त्राता * पुनिकौशिकमुनिउभय बिधाता
तुम प्रभु बिधिगति छेकनहारे * सचिव जनक तुम ठौर हमारे
औरहु ऋषि बैठे बहु ज्ञानी * तहहौंलघु किमि सकहुँ बखानी
जो तुम सबकर आयसु होई * सोइ हित मानि करैं सबकोई
कह मुनि ममसम्मत सुनिलीजै * जो कछु राम कहैं सोइ कीजै
त्रिगुण आदिदै जहलगि प्रानी * रामरजाय सबन शिरजानी
कौशिक सचिव भरत सबिदेहा * सबनकहेउ भल सम्मत एहा
जानि राम निज ऊपर भारू * बोले पुनि मुनिते श्रुतिसारू

दो० नाथशपथ सुनि सोहजग, भरतसरिस शुचिभाइ ।
भयो न है नहिं होन अब, बहुत कहौं का गाइ ॥
जो गुरु पदरज शिरधरै, लोक बेद बड़तौन ।
तेहि पर रौरेकी कृपा, भरत सरिस जगकौन ॥

मुखपर क्यहिबिधि करौं बडाई * सकुचतिसुमति समुझिलघुभाई
भरते पोच कहै जो कोई * महामूढ़ पापी है सोई
मातहि दोष देइ सो मूढ़ा * जानि न जाइ ईश गति गूढ़ा

मातन में अतिप्रिय स्वइ माता * भाइन मे प्रिय भरत सुभ्राता
भरत देइँ ग्यहि आयसु जोई * शम्भु शपथ मैं करिहौं सोई
सुनि प्रभु बचन डरे सुरराई * पठवत शारद सो नहिं आई
तब बासव शठ पर अपकारी * निजउच्चाट सबन शिरडारी
जनक भरत मुनि सचिवत्यागी * सुरमाया सो सबके लागी
मन उच्चाट भये सब केरे * क्षण सुहात घर क्षण बन हेरे
दो० बोले तब मुनि भरत ते, तात कहौ अब सोइ ।
ज्यहि ते यावत जीवजग, सबहिनकर हित होइ ॥
सुनि मुनिते बोले भरत, देव कह्यो सतिभाव ।
मैं जानत निजनाथ कर, अतिशय सरलसुभाव ॥
जननि जनक सोदर सखा, सेवक सचिव परोस ।
काहु न देख्यो आजुतक, प्रभुकर बदन सरोस ॥
सब पर कृपा कटाक्ष लखाई * तदपि प्रीति मोपर अधिकाई
शिशुपन मे खेलत प्रभु सङ्गा * कबहुँ न किहिनि मोरमन भङ्गा
जो कछु बस्तु अनोखी पावै * मोहिं दिये बिन आपु न खावै
मैंहूँ आजतक अतिपृथु जानी * प्रभुसम्मुख कछु बात न ठानी
निशिदिन रहीदरशअभिलाखा * सो सनेह विधि मोर न राखा
सेवक धर्म स्वामि सेवकाई * सो तजि गयो करन अधमाई
पुनि प्रभु मातु पिता गुरु बानी * परिहरि पहुचेउ पासप्रमानी
ऐसेउ अब प्रभु गने न राई * शरणजानि लीन्ह्यो अपनाई
ऐसे प्रभुहि न हौं अनुसरहू * सेवक ह्वै सम्मुख हठ करहू
दो० निज स्वारथहित स्वामि ते, हठै सो सेवक पोच ।
जो ग्यहि आयसु देहि प्रभु, सोइकरौं तजि शोच ॥
सुखद बचन सुनि सब हरषाने * भरतहि धर्मधुरधर जाने

राम भरत ते बचन उचारे * तात रहत महि पुण्य तुम्हारे
जो हमहीं पर राख्यो बाता * तौ अब कहौं सुनौ हे ताता
जो प्रथमें पितु आयसु दीन्हा * हमैं तुम्हैं सोइ चाहिय कीन्हा
जिन गुरु पितुपतिगिरा न धारी * तिन जानहु तेहि दाखो मारी
अस जियजानि मानिहित भाई * पालहु प्रजहि अवधिभरिजाई
होइहि तुम्हैं न लेश कलेश * शिरपर गुरु सुमन्त मिथिलेश
मह विपिनरहि अवधि बिताई * एहौं सपदि भवन सुखपाई
दो० सुनि रघुपति के बचनमृदु, भा भरतै सतोष।
मनहुँ लह्यो फल जन्मकर, मिटे सकल दुखदोष॥
बोले बहुरि जोरि युग हाथा * तिलकसाज सब लाये नाथा
सो अब कहा करिय रघुबीरा * कह प्रभु चलहु चलौ ऋषितीरा
अत्रै मुनि जह देइ बताई * तह धरिदेहु काम फिरि आई
अस कहि चलेगये मुनि धामा * करतभये सब दण्डप्रणामा
आदर करि मुनिबर बठारे * भरत अत्रिते बचन उचारे
नाथ नीर सब तीरथ केरा * धरिय कहा सो करहु निबेरा
कह मुनि है यक कूप रसाला * लोपत सोपि न कीन्यउकाला
ताही में जल राखहु ताता * मुनि तब भरत कीनि सोइबाता
भरतकूप कहवावत सोई * पावतजल निरमल मन होई
दो० पुनि प्रभु ते बोले भरत, नाथ जो आयसु होय।
आवहु तीरथ देखि सब, राम कह्यो भल सोय॥
पाइ रजायसु चले तब, जहा जहा चलिजात।
नेम प्रेम लखि भरतकर, मुनिजन मन सकुचात॥
पांच दिवसमें सकलवन, देख्यो भरत हिढोरि।
हरिदिन प्रातस्नानकरि, प्रभु ते कह्यो बहोरि॥

दीजै मोहिं अधार कछु, ज्यहिलखिअवधिसिराय ।
सुनि दीन्हीं निजपादुका, भये मुदित मन पाय ॥
जननिजनकगुरुसचिवप्रिय, पुरजन सखासुभ्रात ।
भेटि सबन कीन्हें बिदा, चले सकल बिलखात ॥
त्यहिक्षण माया सुरनकी, सब का भई सहाय ।
नाहिंत रघुपति बिरह ते, घर न सकतकोउजाय ॥
बैठे प्रभु सिय अनुजयुत, परणकुटी के माहि ।
करत बडाई भरत की, इत बरणत सब जाहिं ॥
त्यहिदिनरहियमुनानिकट, उभयभील पतिग्राम ।
तीसर वासा गोमती, चौथल अवधमुकाम ॥
भूतादिन आये अवध, जनक रहे दिनचारि ।
जहँतहं सबनि बसाइ के, निजपुरगये सिधारि ॥
भरतसुदिवसशुधाइकै, पुनि गुरुआयसु मांगि ।
सिंहासन प्रभुपादुका, बैठारी अनुरागि ॥

गीतिकाछन्द ॥

बैठारि प्रभुपदपादुका शिरनाइ अनुज बुलाइकै ।
सौंपाइ पुरजन मातु सब तब आपु आयसु पाइकै ॥
पुरदक्षिण योजनएक नन्दिग्राम गुफा बनायहू ।
लागेरहन फलपातभखि जग भोग सब बिसरायहू ॥
सुनि अवधसुखसुरराजलाजत धनद धनलखिरागहीं ।
त्यहित्यागिदीन्होभरतकिमिजिमिमधुपचम्पकवागहीं ॥
रघुबीरपियपुनि बन्धु त्यहि जड़ मोहिमायाकिमिसकैं ।
जे अहैं सम्मुख रामके तेउ तासुतन नाहीं तकै ॥
यह भरत चरित पुनीत पावनकरन मुनि वर्णनकर्यो ।

रघुनाथ करि सक्षेप कछु बिश्रामसागर मे धर्यो ॥
कहिहैं जे सुनिहैं मुदित तिनकी प्रीति प्रभुपदयाहिहै ।
नशिहैं सकलदुख रामधाम न जात कोऊ आहिहै ॥

दो० श्रीगुरुदेवादास - के, चरणकमल धरि माथ ।
भरतचरित सक्षेपकरि, कहा कछुक रघुनाथ ॥

सो० हरिहरजन गुण गूढ़, मूढ़ न लखैं बिमूढ़बिन ।
जिमि सश्रित आरूढ़, मूढ न जानत जीवगति ॥

इति श्रीबिश्रामसागरेअयोध्याकाण्डेषोडशोऽ याय ॥ १६ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बिश्रामसागर ॥

आरण्यकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वर्णौं नाटकमत कछुक, आदि रमायण जानि ॥
भरत चरित्र कहे कछु ताता * अब सुनिये रघुपति की बाता
सीता अनुज समेत कृपाला * बसत कामता पर सब काला
चहुँदिशि सघनलता तरु नाना * मनहुँ काम रति रचित बिताना
शीतल मन्द सुगन्धित बाऊ * डोलत बोलत बयकरि चाऊ
तामधि फटिकशिला अतिसोहै * उपमा देनहार अस कोहै
तहँ यकदिन प्रभु निजकर तेरे * चुनि प्रसून अक रचे घनेरे
सीतहि पहिराये सुखमानी * तिलककरनि किमि जाइ बखानी
त्यहियकार मिथिलेश कुमारी * प्रभुके अङ्गन सजे सँवारी
बैठे सहित सनेह सानकी * आश दोउदिशि प्रेम पानकी
करहिं प्रकाश पास मनि झारी * रही छिटिकि पूनो उजियारी
त्यहि निशि नारि जयन्ता केरी * आई तहँ लै सुमुखि घनेरी
रघुपति रूप बिलोकि जुड़ानी * नृत्य गान कीन्हो कलबानी
मन भावन बर मागि सिधाई * सो सुधि कतहुँ जयन्त पाई
इरषावश वायस बपु बनिके * मारयो सियपद चञ्चुल भरिके
रुधिर देखि प्रभु तृण यक्लीन्हा * ब्रह्ममन्त्र पढ़ि पाछे दीन्हा
ज्यों ज्यों भागत जात जयन्ता * त्यों त्यों बढ़त बाण बलहन्ता
दो० ब्रह्मा बेधा विरूपाक्ष, यक्षपादि सब पास ।
गयोदयो नहिं रहन क्यहुँ, किमपि जानिनिजनास ॥

सुखद दुखद हुजात तब, जब रोपत रघुवीर।
विकलदेखि त्यहि देवऋषि, कहि पठये प्रभु तीर॥
है निराश दुरवासमम, आइ नाइ शिर बैन।
बोल्यो सम्मुख जोरिकर, जय प्रभु करुणा ऐन॥
जय जगजीवन जगतपति, प्रणतपाल तुम एक।
रक्षिसकत नहिं विपति में, अपर जो ईश अनेक॥
दीनवचन सुनि शत्रु के, समुझि बाणगति भेद।
एकनयनकरि तज्यो त्यहि, ज्यहि न होइ फिरिखेद॥

यहि प्रकार प्रभु सहित सुपासा * शास मास तहँ कीन्यो वासा
अवध लोग तह भेंट रहावें * बीसक जाइ पचीसक आवें
तब प्रभु निजमनआन्यो ठीका * बनकर नगर भयो नहिं नीका

दो० मागि विदा सब ऋषिन ते, फाल्गुन मास शुभ जान।
सहितलषण सिवरामदिशि, दक्षिण कीन पयान॥
प्रथम गये अत्रै भवन, कीन्हो दण्डप्रणाम।
लीनलाइ उर विप्र लखि, छवि पूजे सब काम॥
प्रमुदित आसनदीन शुचि, फल दल मूल पवाइ।
लागे पुनि अस्तुति करन, मुनिवर प्रेम बढ़ाइ॥

नाराचछं०। नमामि राम राघवेश देशनाथ नायकं।
महेश शेश ब्रह्म धर्म सेव्य मानदायकं॥
दयालदासदुःख दोष दर्प दम्भ गञ्जनं।
मुनीन्द्रवृन्द भूमि साधु देव धेनुरञ्जनं॥
भजन्ति ये न ते पदारविन्दवाञ्छि तर्कमं।
पतन्ति ते प्रभ्रान्ति सञ्चितादि अन्त नर्कमं॥
त्वमेक सर्व काल विश्वपालमुर्विजापति।

दद्मामि जे त्वदाश्रितं सुयोगि दुर्लभं गतिं ॥
अनूप श्यामसुन्दरं स्वरूप कोटिकामते ।
चरन्ति शक्रि सानुजं परार्थं स्वर्गनाश्रिते ॥
स्वच्छन्द सानुकूल ऊक्ष मूल भक्तवत्सलं ।
भवांत्रिमध्यमें सदा वसन्ति बुद्धि निर्मल ॥

सुनि मुनिविनय राम सुखपावा * तब सियमुनितियपद शिरनावा
अनसूया लखि मिली सयानी * दीन असीश सुखद जसि रीती
उप पमारि पट भूषण काढे * जे पाये हरि ते निज गाढे
सीतहि पहिराये हित जानी * रहत नवल नित बोली बानी
सुनु स्वामिनि जगभामिनिकेरा * पतिही देव न दूसर हेरा
अंध बधिर किन होइ निकामा * करि अपमान पतै तम बामा
पतिव्रत करै छांडि छल जोखा * बिन श्रम परपद लहै न धोखा
तुम्हैं प्राणप्रिय राम सुजाना * यामैं जगहित कौन बखाना
सुनि सिय सुखलहि नायो माथा * तब मुनि ते बोले रघुनाथा
सो० नाथ जाउँ बन आन, आयसु दीजै जानि जन ।
सुनि मुनि-परमसुजान, नाइ शीश बोले बहुरि ॥
दो० तुमसम नाथ न नाथ कोउ, सुन्दर सरल सुभाव ।
मैं सेवक कैसे कहौं, नयन श्रवन स जाव ॥
मुनिपद पङ्कज नाइ शिर, विनयवचन बहुभाखि ।
चले लषण सियसहितप्रभु, निजमूरति उरराखि ॥

प्रभुहि चलत लखि गिरिमग देही * घनसुछाह महिमृदु ह्वै लेही
जहँ तहँ मुनि आश्रम बहु भावै * जाइ जाइ सबके शिर नावै
पूजैं सकल सुरुचि भव भाती * चलैं प्रातबसि सुथल सुराती
अग जग मगबासी लखि कहई * कुतिमा भवन श्रवन ये अहई

निकसि गये गुण कहि बिसूरी * जब ते देखे पथिक हजूरी
तब ते मारग मननाचे अटूरा * खरांगोष्ठ नहि लागत लटका
यहिविधि बन नापत-प्रभु जाहीं * मिला विराध असुर मग माहीं
महाविशाल रूप विकराला * हाथ त्रिशूल गहे मृगजाला
प्रभुहि पेखि बोला कुविचारी * साधुभेष तुम हौ छलकारी
हरि आन्यो वाहू की बामा * लिहे फिरत बनमग ललामा
असकहिगहिसियसपदिसिधारा * लखि रघुबीर दुसह दुख पावा
दो० प्रभुइ बोधदै लषण तब, छाड़े विशिख कराल ।
उर लागत भो विकल तजि, सिय धावा जनु काल ॥
धावत लखि त्यहि देव डराने * खग मृग मुनि लै जीव पराने
गिरिसम वपुष वेग पवमाना * फूटहिं पवि टूटहिं तरु नाना
लषण मारि तन जर्जर कीन्हा * महिगिरि उठतमरतनहिंचीन्हा
तब प्रभु मुनिशर मारि गिराया * दिव्यदेह दै स्वपद पठाया
अस्थितासु खनि गाड़ि कृपाला * सीतै लै पुनि चले रसाला
सुरपति लै तह स्यन्दन आये * करि प्रणाम निजलोक सिधाये
विचरत प्रभु सिय लषण समेता * पहुंचे ऋषि शरभङ्ग निकेता
निरखि रामछवि अतिसुखमाना * मनहुंक्षुधितलहि अशनअघाना
करि हरि विनय भक्तिवर मागी * योगानल तनु तजि बड़भागी
चढ़ि विमान बैकुण्ठहि गयऊ * भेदभक्ति हित मोक्ष न भयऊ
आगे मुनि बहु मिले प्रवीना * भेटि भेंटि सबका सुख दीना
सो० कुम्भज शिष्य सुजान, नाम सुतीक्षण रामजन ।
प्रभु आवत सुनि कान, धायो करत मनोर्थ बहु ॥
दो० बिसरी तनसुधि प्रेमलखि, उर प्रकटे सियराम ।
गौर श्याम बहु काम छवि, निरखिलह्योबिश्राम ॥

तब प्रभु तिनदिग जाइ बखाना * उठहु प्राणप्रिय विप्र सुजाना
उठते न जब जान्यो भगवन्ता * भये चतुर्भुज हृदय तुरन्ता
रामरूप जब उर नहिं देखा * उठेविकलजिमिमणिबिनेशेखा
आगे सानुज सिय रघुराई * लखिहरष्योजिमि गतनिधिपाई
झांनि दण्डवत प्रभु उर लाये * आश्रम आनि पूजि मनभाये
करि विनती माग्यो वर एहा * बढै नाथपद नित नवनेहा
सीता लषण सहित तुम स्वामी * बसहु स्वान्त मम अन्तरयामी
एवमस्तु कहि राम सिधाये * मुनि समेत कुम्भज पहँ आये
राम प्रणाम कीन ऋषि देखी * लिये लाय उर प्रेम विशेखी
कुशल पूछि आसन बैठारे * पूजन करि मृदु वचन उचारे
आज भयो म्वहिं आनँद कैसे * चातक पाइ स्वाति जल जैसे
बैठे प्रभु सब दिशि मुनि वृन्दा * चितवैं मुख चकोर जिमि चन्दा
कह हरि मन्त्र देहु म्वहिं वोही * ब्यहित मुनि मारो सुरद्रोही
बोले मुनि म्वहिं बूझत काहा * तुम्हरे भजन ज्ञान कछु लाहा
ब्यहिवश सुरमुनिअजत्रिपुरारी * सो माया किंकरी तुम्हारी
काल कराल सकल जग खाई * सो तव डर डरपत रघुराई
ते तुम बूझत मनुज समाना * दीन्हो मोहिं सुयश मैं जाना
ऐसे आप अनुग हितकारी * तिन्हें त्यागि सुर अपर सँभारी
भवनिधि पार चहै पुनि लीना * श्वानपूछगहि जिमि मतिहीना
पर वह पार न पावै कबहीं * तिमि तवभजनविना नर सबहीं
देहु सुभक्ति मोहिं रघुराई * अब सो कहउँ बसहु जहँ जाई

दो० पञ्चवटी गुणगण जटी, टटनि टटी नटराम।
अघटघटी दुख सुखपटी, कुटी करौ तहँ वास॥

सो० दण्डकनृप मुनि जात, भोगीसुनि दियशापतिन।

गिरि बालू दिन सात, जरेउ देश सो रक्षिये ॥
मुनि अनुशासन पाइ, पञ्चवटी सिय अनुजयुत ।
आये कौसलराइ, भे प्रसन्न शोभा निरखि ॥
कुं० राम लषण सियपद परत, मिटी शाप ऋषिकेरि ।
भयो दिव्यतन विटप तहँ, मिले गीधपति हेरि ॥
मिले गीधपति हेरि, पिताहव प्रीति बढ़ाई ।
गोदावरी समीप, रहे दल कुटी बढ़ाई ॥
कुटी डारि जबते परे, सरे सबन के काम ।
बरणि सकै को तासु यश, जह राजैं नित राम ॥
आवैं तह अनेक ऋषिराजा * होइ सदा सतसङ्ग समाजा
एक दिवस लक्ष्मण शिरनाई * बोले प्रभु ते आयसु पाई
नाथ बात सब विधि तुम जानौ * मैं पूछौं सक्षेप बखानौ
जग समुद्र मधि को आधारा * गुरु कृपालु पदपोत निहारा
गुरुको जो देवै हित बोधा * शिष्य कौन जो सुनै प्रबोधा
वेधित को विषया अनुरागी * कौन मुक्ति विरत जिन त्यागी
नरक सो कौन गौर निज देही * तृष्णा त्यागि स्वर्ग नर गेही
नमोऽहार किं किंकर नागी * मोक्षमार्ग सतसङ्ग विचारी
सोवत को जग रहे जे टेरी * जागत कि सद असद विवेरी
कौन शत्रु निजेन्द्री मीता * सोई सुन्द निहे जिन जीता
रङ्क कौन ज्याहि तृष्णा चोखी * धनी सो जो सब विधि सन्तोखी
महाअन्ध का जो मदनातुर * निज भल करै सोइ बड़ आतुर
समायन्त को ज्याहि श्रुति बहरे * परुष वचन सुनि जो नहि दहरे
मृतक कौन ज्याहि कीरति नाहीं * जीवत जासु सुकरम जगमाहीं
दीरघ रुग कि यह ससारा * औषधि तासु अमृत विचारा

दो० कोहौं आयो कहांते, कित जैहौ का सार।
को मैं जननी को पिता, याको कहिय विचार॥

किं अनीति जहँ बेद विरुद्धा * परम तीर्थ किं निज मन शुद्धा
चिन प्रतीति को कञ्चन काता * सेवा करन योग को साता
किं ज्वर चिन्ता चितकी जानौ * शठ को जो बिन धर्म पिछानौ
लाभ कौन बडि भक्ति हमारी * हानि न भज्यो मोहिं तनुधारी
कोवा शूर स्वभावै जीते * भूषण किं जो शील न रीते
विद्या किं जो भेद मिटि जाई * भेद अविद्या है दुखदाई
लज्जा किं नहिं करै विकारा * महावीर जिन मनहिं प्रहारा
धीरजवन्त वली अति को वा * सुमुखि कटाक्ष न मोहै जोवा
दुख किं अनित्य वस्तु में नेहा * सुखप्रद को मम चरण सनेहा
पातक मूल लोभ लखि परई * पढन सुनन की कुपथ बिसरई
त्यागी का जो मन बच काया * करि सतकर्म भजैं फल पाया
सत्य बचन किं जो मोहिं लीन्हे * पण्डित किं बिकार तजि दीन्हे
मम स्वरूप जानै सोइ ज्ञानी * मूरख किं सुदेह अभिमानी
पन्थ कवनि जामें मोहिं पावै * दानी जो मम भक्ति बतावै
महा पतित को हिंसाचारी * धन्य कौन जो पर उपकारी
कोवा श्रेष्ठ निरत हरिकर्मा * नीच कौन जो करै कुकर्मा
सग्रह योग कहा गुण मेरे * जाइनि कितै कुसगति नेरे
तप किं विषयभोग परिहरई * दया जो भूतद्रोह नहिं करई
किं यमजाल सुतामस मोहा * प्रम कहा जहँ नहिं तन छोहा
साधु कौन जाके उर दाया * हरिते विमुख करै सोइ माया
दुख सुख सम सबकाल तितीक्षा * किं विज्ञान विवेक परीक्षा

दो० हा नहिं तनमन वचनबुधि, जाति बरण कुलएक।

मैं ही चेतन सदन मैं, याको करन विवेक ॥
याकर जहम सदन मैं, जहँ तक जीव जहाम ।
समलरूप निश्चय भयो, सोहं अलख विज्ञान ॥
जीव द्रव्य मैं भेद जि, सतनाइ कहि सदीप ।
बद्ध दशा मैं जीव कहि, सोपुरुषा मैं कीव ॥
चौपाय । जो जानो चिनरूप, जो उपजा सहज कीन विधि ।
सो सुनिय हे लाल, जीवका वृत्त परम निधि ॥
नाम सुपरा किन इंद्र, विहंगमुख कहयाहि जब ।
चिनमन नाव आइ, होत सुमरण प्रकट तब ॥
सुधा आसनाभगवाहिन, इ जो रूप उपजी हाँस ।
सुमरण कर्म कीन हिलहि, सोहंकार रूपी विहसनहि ॥
दो० जैसे महाकाल मैं महाकाल जो भेद ।
तैसे जिव उपाधि के, जीव ब्रह्म निरभेद ॥
चौपाई । [illegible]

निष्ठा किं करिये जहँ प्रीती * लखि न अभाव होय विपरीती
रुचि किं रहित शौच सुख पाये * भाव दमादि सकल गुण आये
आसक्ती किं प्रिय विन देखे * रुचत न कछुतनधनकिहिलेखे
भोजन किं जग तीनि प्रकारा * उत्तम मध्यम नीच निहारा
मधुर मञ्जु मृदु सात्त्विक जानो * तिक्त तात रजगुणी पिछानो
भक्ष्याभक्ष्य तामसिन केरे * तिमि त्रैविधि के मनुज निबेरे
पूजा तीनि भाति की हेरी * प्रतिमा वैष्णव आतग केरी
उत्तम आतम मध्यम साधू * कछु कनिष्ठ प्रतिमा अवराधू
शान्ति सो कौन विकार विहीना * निर अभिमान ज्ञान किं दीना
वशीकरण किं कोमल बानी * मारण मन्त्र क्षमा बड़ जानी
जीन उभय किं बन्ध विमोक्षा * सहित रहित वासना असोक्षा
भाग्य सुबाम कुमति पर केरी * जगत मान्यता आशा बेरी
परिमल किं प्रणधन किं धर्मा * करणी विन वादे वेशर्मा
ईश्वर सबपर प्रकृति नियन्ता * बहु विधि कह्यो जानकीकन्ता
सुनि प्रभु बचन लषण हर्षाने * बैठे पुनि निज जाइ ठिकाने

दो० रत्नमालमत जाल लै, भगवतगीता साथ।
रामगीत नवनीत यह, बरण्यो जन रघुनाथ॥

सो० सुनि गुनिहैं जे जीव, पैहैं परमानन्द ते।
पुनि महिमा के पीव, करिहैं तापर अतिकृपा॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतरामदण्डकवनआगमनप्रश्नोत्तरवर्णनोनाम
सप्तदशोऽध्याय ॥ १७ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणपगिरा सुखदानि।
वर्णौं मानसमत कछुक, नाटकरीति बखानि॥

बीरासन शरचापगहि, चहि चहुँदिशि सौमित्र।
लगे बिचारन मनविषे, रघुपति बचन विचित्र॥
जनकनन्दनीसहितप्रभु, परणकुटी के बीच।
राजतलाजत लक्षलखि, रतिपति प्रिययुतनीच॥
तेहिअवसररावणस्वसा, सुपनेखा तहँ आइ।
रामरूप मोहित बचन, बोली गर्व बढ़ाइ॥

त्रिभङ्गीछन्द॥

सुनिये नृपनन्दन सुरमुनि बन्दन मैं हौं राजदुलारी।
निज सम सुखमाते पुरुष न ताते अबतक रहिउँकुमारी॥
तुमका जब देखा कछुमन लेखा विधिकृत यह संयोगा।
त्यहिते निज दासी करु बनवासी जो चाहौ परभोगा॥
सुनिसियदिशिदसिकैकहप्रभु हँसिकैहमसमअनुजकुमारा।
सितततन तिनकेरी हूजै चेरी सोइ सयोग तुम्हारा॥
हरितानितियलागकशशा न नायक दुखदायक दुखहरणी।
पद्मिनिमोहिंचारौ निरस निवारौ नेति नेति प्रभुबरणी॥
तब सो गई धरणिधर पासा * कह लक्ष्मण मैं उनका दासा
भूपै बरणि कहै हौ रानी * नाहिंत जग टहलुई बखानी
यामें कौन सुयश सुख लाहू * त्यहिते महाराज पहँ जाहू
सुनि पुनि गई जहा भगवन्ता * तिन फिर पठई पास अनन्ता
बोले लषण तोहि सो ब्याहै * जो लोकौ परलोक न चाहै
दो० तब लजाइ प्रकटत भई, निज बिकराल स्वरूप।
बदन खोह गिरिश्रृङ्गगिर, नाक कान जनु सूप॥
बोली तुम दोउ साधु न अहऊ * परपत्नी घरवाला चहऊ
मोहिं देखि जो कीओ हासू * सो फल तुम्हैं देखौं आसू

सुनि सिय सभय राम गे जानी * बेद बाद नभ कह्यो बखानी
गये सम्मुखि लक्ष्मण ततकाला * नाक कान बिन कीन कुबाला
हाय हाय करि भवन सिधाई * रुधिर स्रवत गै जहँ सब भाई
बोली धिग तव बीर प्रभावा * तिन पूछा छलकरि समुझावा
दो० सुनि खरदूषण क्रोधकरि, असुर सहस दश चारि।
लिये बोलि सँग सबचले, शस्त्र अस्त्र भट धारि॥
कज्जलगिरि सम जिनके अङ्गा * गर्जहिं तर्जहिं सहित उमङ्गा
बाजैं विविध जुझाऊ बाजा * अशकुन होत न मानैं राजा
कोउ कह धरि मारौ दोउ भ्राता * लैलीजै ललना भलि बाता
कोउ कह निधनि न आई उनहीं * बुपरहि चहि दनुजेश न सुनहीं
यहिविधिवदतनिकटचलिआये * लक्ष्मणते प्रभु बचन सुनाये
सीते लै गिरि कन्दर जाहू * आवा चढि शिर निश्चरनाहू
लै सिय लषण गये तिहि आगे * चाप चढाइ चले प्रभु आगे
जिमि केशरी द्विरद दल हेरी * आइ लिहिनि बगमेल गरेरी
देखि अकेले अति सुख माना * बढे शमापर जिमि परवाना
प्रभुछबि देखिचकित सबभयऊ * खरदूषण मन्त्री ते कह्यऊ
दो० ये कोउ नृपबालक अहैं, नरबर रूपनिधान।
अस शोभा भरिजन्म हम, देखी सुनी न कान॥
सो० यद्यपि किहिनि कुकर्म, तदपि न मारण योग ये।
जाइ कहौ तुम मर्म, देहुँ नारि फिरिजाइँ घर॥
आइ सचिव रघुपति ते काहा * सुनत विहँसि बोले सुरनाहा
हम क्षत्री मन शङ्क न आनैं * कालहु तें सम्मुख रण ठानैं
सुर रञ्जन खल गञ्जन हेता * विचरत हम बन त्यागि निकेता
जो तुम्हरे पति होइँ डराने * फिरैं न हम रण हतैं पराने

दूतन खरदूषण ते भाखा * बोला सुनि मारो करि माखा
धाये तब तमचर करि शोरा * लखि प्रभु कीन चाप टंकोरा
भये बधिर पुनि धीरज धारा * लगे बिबिध बरसन हथियारा
शर तोमर तरवारि त्रिशूला * चक्र परिघ पवि शक्ति समूला
तिल समान प्रभु काटि निवारे * निज नराच सधानि पँवारे
जाइ असुर दल काटन लागे * हाइ हाइ करि भट बहु भागे
कोइ कह खरदूषण मति हीना * इनते आइ समर ज्यहिं कीना
सुनि सकोप बोले तिहुँ भ्राता * फिरी जो तेहिहौं करब निपाता
मरण जानि घूमैं अनुरागी * चहुँदिशि मारु मारु रट लागी
देखि देव सब होइँ अधीरा * निश्चर निकर एक रघुबीरा
राम बाण लागहिं खर भारी * खण्ड खण्ड ह्वै गिरहिं सुरारी
शिर धरि धरौ धरौ कहि धावैं * गगन उडैं बहु भगन चलावैं
बहु मरिगे बहु करहत डारे * बहु कहैं कहं पितु मातु हमारे
बहुतन कङ्क काक शृग श्वाना * भक्षत करत कटकटी नाना
अन्त्रावलि गहि बहु नभ जावैं * बिपुल बाल जनु गुड़ी उड़ावैं
भूत रु प्रेत पिशाच पिशाची * खप्पर भरे योगिनी नाची
सो० निजदलबिचलनिहारि, खरदूषण त्रिशिरादिभट ।
अगणित अस्त्र प्रचारि, प्रभुपर डारे एकसँग ॥
रघुपति सब निज शरन निवारे * दशदश त्रिशिख सबनके मारे
कहि कहि राम तजे तिन प्राणा * बिन श्रम पायो पद निरबाणा
चणमा सकल कटक सहारी * सुमन बरषि सुर जयति पुकारी
सीता लषण आइ शिर नावा * निरखिश्यामवपुअति सुखपावा
तब सुपनेखा गइ जहँ रावन * जनु दनुजनकी मौत भयावन
करि रोदन बोली तकि ताही * तोहिंजियत मम असगति चाही

समुझि परत अब रही न राजू * नहिं देखत निज काज अकाजू
दो० सुनि अकुलानी सभा सब, कह रावण कहु हाल ।
केहि काटे श्रुति नाक तव, काकर आयहु काल ॥
अनुज गिरा सुनि बोली वचना * अति अतर्क अवलाकी रचना
है तपसी तपसी बन आये * सुन्दरि सुन्दरि सुन्दरि लाये
हौलखि हौलखि हौलखि बोली * राम न योग न राम न जोली
दो० सोकरि कान न कान तव, करी न करी न आन ।
गो बिन काम नकान बिन, करी सो करी न कान ॥
खरदूषण सुनि लाग गोहारी * क्षणमा तिन सब सैना मारी
त्रिशिरादिक बध सुनि दनुजेशा * मनहुँ जरे मम भयो कलेशा
शूर्पणखे प्रयोधि बल भाखी * भवन गयो विस्मय मनराखी
सुर नर-अहि त्रिभुवन महँ सोई * मम अनुचरै न निदरत कोई
खरदूषण मोहिं सम बलधामा * तिन्हें को मारे बिन श्रीरामा
जो प्रकटे सुर मुनि हितकारी * तौ करि बैर तरौं भव भारी
तामस तन कछु भजन न बनई * राम विमुख गति वेद न भनई
जिन नहिं निज परलोक सुधारा * तौ त्यहि बुधि बल जनमेछारा
दो० जो नृपसुन कोउ जाइ तौ, हरि लेहौं तिन धाम ।
चला अकेले यानचढ़ि, गा मारीच के धाम ॥
पूछा करि सनमान त्यहि, तात चलेहु केहिहेत ।
कही कथा दशमुख सकल, सुनि बोला सिखदेत ॥
सो० मुनिमखभंग्यहिं राम, बिनफरसारेउविशिखयक ।
शतयोजन यहिठाम, आयो क्षणमा विकल है ॥
खरदूषण करि बैर, भे बिनाश ताते सबल ।
जो चाहो कुल खैर, तौ फिरिजाउ निकेतनिज ॥

सुनिदशमुखकरिक्रोध, बोला म्वहिंसम सुभटको ।
गुरु इव करत प्रबोध, चलत न आई मीचुतव ॥
करि विचार रबिपाथ, चला मुदितसँगमनगुणत ।
मरों न राघवहाथ, चला मुदितमनसँगगुणत॥
भरि नयननछबिआज, देखिहौं प्रभुसियलषणकी ।
तब होई मम काज, जब बधिहैंमृगरूपलखि ॥
दो० इत सियते कह राम तुम, करौ उरागिनि बास ।
जबतक करि नरचरित मैं, करौं न निश्चर नास ॥
सो० स्वामि रजायसु पाइ, बेदवती वपु राखि तहँ ।
आपु हृदागिनि जाइ, कीन बास हरिपास नित ॥
यह रहस्य लक्ष्मणहु न जानी * मायाधीश सकलगुण खानी
बैठे प्रभु सिय परणकुटीचा * आयो तहँ रावण मारीचा
हेम हरिण ह्वै निकसा आगे * लखि जानकी कह्यो अनुरागे
हे स्वामी मृग पकरहु पारी * नाहिंत बनी आल भलमारी
कह प्रभु हिंसा अघवड जाना * होनहार बश सिय हठ ठाना
भक्तवछल प्रभु धनुशर लीन्हा * आश्रम सौंपि शेष कहँ दीन्हा
अपना चले कपट मृग पाछे * आवत देखि भाग सो आछे
तब शर सजि धाये रघुराई * थकनिनवनिचितवनिम्वहिंभाई
प्रकटत दुरत लखत छबि भूरी * लैगा इमि रघुबीरहि दूरी
तब प्रभु ताहि तहा तकि मारा * हाइ लषण अस आदि पुकारा
पाछे कहि हरगे सियरामा * तनु तजि गा मुनिदुर्लभ धामा
इत सीता सुनि आरत बानी * बोली लक्ष्मण ते छल जानी
सो० संकटबश तव भ्रात, जाहु बेगि सुनि शेष कह ।
प्रभुहू न दुख कहुँ मात, तुम्हैं सौंपिगे किमि तजहुँ ॥

सुनिसियवचन कठोर, कहे लक्ष्मणकहँ लषणतव ।
रेखखैंचि चहुँ ओर, चले चकितचित रामपहँ ॥
दो० सूनवीच लखि रावण, यती स्वरूप बनाय ।
मागी भिक्षा सुनत सिय, लगी देन हरषाय ॥
बोला कुटिल बँधी यह भीखा * सो न लेव मैं मानो सीखा
माघ शुक्ल भूता दिन जानो * वृन्द मुहूरत मे पहिंचानो
भावी बश सिय बाहर आई * चरण बन्दि लैचला उठाई
दो० जीवज्योति तन में यथा, अगिनि धूमके माहँ ।
तिमि रावणके करपरी, सियस्वरूप की छाहँ ॥
गगन जात रथ बिलपनि सीता * हा रघुपति हा नाथ पुनीता
हा करुणाकर हा रणधीरा * आरतिहरण हरहु मम पीरा
हा बलसिन्धु लषण सुखदाई * परी तात गोमर कर गाई
कहे बचन कटु रेख मँझाई * सो क्षमि करि म्वहिं लेहु छिनाई
तुम्हैं कलङ्क दीन बिन दोखा * ताकर फल पावा अति चोखा
जे पतिबचन कराहि नहिं काना * तेउ भरैं दुख हमैं समाना
हा पितु मातु दूरि तव धामा * भा केकयी केर अब कामा
पठै देउ बन देउ कृपाला * हरिपलिहि चहै बरा शृगाला
सीताकै सुनि आरतवाणी * भे सब विकल चराचर प्राणी
गीधराज जाना बैदेही * लीन्हे जात असुरपति तेही
चला कहत पुत्री धरु धीरा * नीच मीच मैं आयो तीरा
रे रे रावण सुनु मम बाता * तजि जानकिहि जाहु कुशलाता
नाहिंत सकुल नाश तव होई * सुनि तेहि कान न कीन्यो कोई
तब खेग चपरि चोच गहि केशा * रथ ते महि पटका लङ्केशा
सियनिजानिलयराखिफिरिआवा * अरिकर धनु शर काटि गिरावा

चाप चपलन तन पिन्हयो • गन्धिका हू पुनि आमि सै धायो
पर कहि नाँ ए भागा • नवराग मोहिगिरि शोचनलागा
हमते कछु न भनी भोलाना • फर्यो कन्त भयो बपु गाता
दशरथ सम मुनि प्रेम न पाता • राख्यो सिर्ये न हटि यहिकाला
भरत राम गुण देति न पाता • समकरतब नहि प्रभुहि सुनावा
एकै बात भई मति एहा • राम निहोरि छूटी देहा

दो० इतसिय विलपतजात नभ, नगपर कपिन निहारि ।
तिये डारि निजभूषणन, रघपति नाम पुकारि ॥
आगे लाम्बि सपाति सुत, गहि रथ लीन्ह्यो छोरि ।
यहि विधि जाया लङ्क तव, योला सिये निहोरि ॥
समुझि न सोचे नरनाहिन, उनमें कौन प्रभाव ।
पितु प्रेरित वन सहत दुख, निरबल रङ्क न राव ॥
अकलअजातिकुजातिपति, गतिमतिरहित सभीत ।
जटी कपाली प्रिय प्रणत, तव दोषिनकर मीत ॥
नहिं जानी कयहि कर्म करि, परिउ नरन के हाथ ।
अब जागे यह भाग तव, जो आइउ मम साथ ॥
हमसम सबल न शूर कोउ, जेहि वश सुरमुनि सर्व ।
त्यहि ते मेरी भारया, होउ त्यागि दुख सर्व ॥
सुरकन्या कैयो सहस, मन्दोदरी समेत ।
हैं हैं तेरी टहलुई, हौं सेवक कहि देत ॥
सुनि सियशोचसकोपवश, कछू न उत्तर दीन ।
तव तेहि निज ऐश्वर्यसुख, सकल देखावै लीन ॥
अधिक विकलभइजामकी, विभव नीचकर देखि ।
यथा विरहिनी दुख लहै, शरदचन्द्रमहिं पेखि ॥

सो० पुनि बोला दशशीश, देखे मम ऐश्वर्य प्रिय ।
तव सीता करि रीस, कहत भई तृण ओटकरि ॥
सुनु दुष्टन शिरमौर, बिन मराल सर हंसिनी ।
निरखि काककर ठौर, मुदित होत कहुँतिमिमहूं ॥
सुनि सियवचन सरोष, डरकरि विपिनअशोकमंह ।
राखिसि हितनिजमोष, दुरिहवि गयेखवाइ हरि ॥

इहा लषण मृगअरि तह गयऊ * अनुजे लखि बोलत असभयऊ
द्वादश वर्ष मास शर बाते * इहा रहत सिय तजी न रीते
आजु जनकतनया तुम खोई * कहा लषण मम दोष न कोई
आश्रम दीख जाइ बिनसीता * भये विकल जनु योषितजीता
इत उत हेरि हाके हँसि बोली * आवहु निकसि न करहु ठठोली
तुम्हरे कहा बीन मैं जाई * अब केहि कारण रहिउ कुहाई
लषण अरोष लखो जब नाहीं * तब प्रभु मुर्च्छिगिरे महिमाहीं
कतहुँ बाण धनु पट तूणीरा * लषण उठाइ किये यकतीरा
बोले नमि हे नाथ उदारा * सुरमुनि हेतु लियो अवतारा
ज्ञाननिधान सबल बुधि माई * भूतल मूढ मनुज की नाई
बन्धु बचन सुनि धीरज धारा * बहुरि अज्ञ इव बचन उचारा
को बोलत लक्ष्मण तव दासा * हमको तुम राघव बनवासा
करत कहां दूषन प्रिय प्यारी * हाहा सीते जनक दुलारी

दो० कहा लषण मिलिहैं बहुरि, उठि ढूंढौ बनमाहिं ।
धनुशरतरकस साजितन, पूछि चले सबपाहिं ॥
केहरिकरिकुजदुज दखिल, सब परमारथ रूप ।
तुम देखी मम प्रियतमा, देहु बताय अनूप ॥
हे सीते जेहि नेहकहि, तजि पितु आरज गेह ।

हठि आइउ ममसाथ अब, कहाकियों सोइ नेह ॥
भृङ्ग जलजशुककुन्द पिक, करि हरि श्रीफलकेर ।
मुदितमनहुअरिजीतिकिन, हरौ मान इनकेर ॥
यहिबिधि खोजतकुञ्जबन, गण गिरि गुफा तड़ाग ।
गये जटायू खग जहा, शोणितलखि दुखलाग॥
आगे परा गीधपति चीन्हा * हा पितु हा कहि उरधरिलीन्हा
पूछा हाल सकल तेहि काहा * ग्वहिबाधि सिय लैगा खलनाहा
रहे प्राण तव दरशन हेतो * चलन चहत अब कृपानिकेता
सुनि प्रभु पद्म नयन जल ढारी * बोले पासु जटा ते झारी
हे सौमित्र आइ इनशरणा * ग्वहिलखिपल्योनपितुकरमरणा
सहि न सक्यो सो ओतुबिधाता * पक्षिपक्ष लखि कीन्हिसि घाता
पुनि कह तात राखिये देहा * बोला तब खग सहितसनेहा
कृपासिन्धु तुम शीलनिधाना * मोहिखगखलहि पितासममाना
अस तुम तेहि न भजै नरजोई * महामूढ हतभागी सोई
जासु नाम अगणित गतिदाता * कस न मरहुँ तिनके कर ताता
चारिउफल न मरणसम मेरे * असकहि मुदित प्राण निजछोरे
रामरूप है अस्तुति कीन्ही * अविचल भक्तिमागिसोइलीन्ही
कहप्रभु सिया-हरण पितु तेरे * कह्यो न दुख होई सुतु सेरे
दो० तुम्हरे पुण्य प्रतापते, कछु दिनमें रिपुमारि ।
सकुल पठइहौं आइ सोइ, सुमुख कही विस्तारि ॥
भले नाथ कहि नाइशिर, प्रभुसुरति उरराखि ।
चल्यो गगनलखिसुमनसुर, बरषे जय जय भाखि ॥
पितु ज्यों दीन्हों धामनिज, मृतककर्म सब कीन ।
ऐसे प्रभुहि बिसारि मन, तैं चाहै सुख लीन ॥

सहित शोक सियकी सुधि आई * बोले लक्ष्मणते अकुलाई
यावत मैं यदि जीवत ताता * तावत जीवत विश्व लखाता
नाहिंत सुर नर असुर समेता * करिहौं भस्म अखिल जग जेता
सुनिप्रभुवचन सभयभवकापा * लागे होन अरिष्ट अमापा
सहित शङ्क लक्ष्मणगहिचरणा * बोले अहो दीन दुखहरणा

कु० मान्धाता इक्ष्वाकुहुभ, भागीरथ नृपमाथ।
रघु दिलीप अज आदिदै, यावत तव पितुनाथ॥
यावत तव पितुनाथ, लोक तिहुँ तनय समाना।
पालत आये सदै, सुयश सकलौ जग जाना॥
तिनकुल कीरति बर्द्धहित, प्रकटे आपु सुजान।
सोकिमिजारिहौजगअखिल, निरपराध श्रीमान॥

सो० बन्धुवचन सुनि राम, लजितह्वै लखि लषणकहँ।
लिये लाइ निजधाम, बोले पूरब देखि शशि॥

कु० लषण तकहु तरु उयेरवि, नाथ मलिन है चन्द।
निजकुलके अकलङ्कते, तरणितेज भो मन्द॥
तरणि तेज भो मन्द, कमल नहिं फूले ताता।
अहोमित्र दुख दुखी, खिलै कैसे जलजाता॥
अहँनखत प्रफुलित कुमुद, शत्रु बिपतिलखिहँसतसन।
पुनि न दीन उत्तर चले, घन तरुतररघुपतिलखन॥

यहिविधि प्राकृत मनुजसमाना * दूढत कीन्ह्यो पुर पयाना
मिला विराध ताहि गति दीन्हीं * चले बहुरि शबरी सुधि कीन्हीं
पूछत फूल भरे मुख तेरे * निवसत बडभागिनि केहिसेरे
जासु भजन बल बन सुखदाता * करब देखि तेहि शीतलगाता
इहा प्रात शबरी जब जागी * लखिशुभशकुनसमुझिअनुरागी

राम लषण प्रियपाहुन मोरे * ऐहैं आजु अनुजयुत जोरे
ब्रह्मादिक पूजित पद पूजी * मोसम को बडभागिनि दूजी
लहिहौं हौं प्रभु प्रभु निजवाना * दोउदिशिलाभ न लाभसमाना
दोनन राखि कन्द फल फूला * चितवत अम्ब सरिस अनुकूला
छिन द्वारे छिन भीतर जाई * प्रीति परखि पहुँचे दोउभाई
शबरी देखि परी तब पायन * सनमानी प्रभु मा समचायन
आश्रम आनि पूजि जसरीती * दिये रुचिर फल दल कग्रिीती
लगेखान प्रभु पुलकित गाता * स्वाद सराहि सराहि न जाता
मागत देत देखि सुर सन्ता * बरषि सुमन कहि जय भगवन्ता
त्रिभुवन नाथ नरेश कुमारा * पावत फल तजि ऋषि अपारा
असाबेचारि रघुनाथ अरूखे * जान्यो राम प्रेमके भूखे
अचै उठे तब शबरी बोली * हाथ जोरि दोउ गिरा अमोली
नाथ रहिउँ मैं अवगुणखानी * कीन्ह्यो तुम मुद मङ्गलदानी

दो० कहप्रभु तैं निजकर्म ते, भई श्रेष्ठ जग बीच।
जो न भजै मम चरणप्रिय, सोइ शमली सोइ नीच॥
शबरी के सुनि मुनि निकर, आये दिग अनखाइ।
पूछेउ सरवर शुद्धकिमि, होइ कहाँ रघुराइ॥
कहप्रभु पावन पुरुषको, परसि कीन तम रोप।
गये स्वच्छ हित स्वच्छहू, भयो रुधिर तेहि दोप॥
अबते शबरीके चरण, धोइ तोइ ता मध्य।
देउलेउ पावित्र पुनि, करत भयो शुचि मध्य॥

सो० ऐसे प्रभु को और, जो निज लघुता दासकी।
करै कीर्त्ति सब ठौर, तब हरि शबरी ते कह्यो॥
अब सुधि सीताकेरि, कहिये करिगामिनिसुखद।

सुनि शबरी मुखहेरि, कहेउ जाउ पम्पासरहि ॥
तहँ मिलिहैं सुग्रीव, करेउ मिताई तासुते ।
सो हितकरी सदीव, मिलिहैं हमि सीता तुम्हैं ॥
यहिविधि यदि सबहाल, राम धाम गइ त्यागि तनु ।
तेहिकी क्रिया कृपाल, कीन यथोचित जननि जिमि ॥

गीतिकाछन्द ॥

जिमि जननिकी गति करै कोउ तिमि राम शबरी की करी ।
अस और कौन कृपालु स्वामी शरण जाकी अनुसरी ॥
प्रभु कहत शबरीकेर यश सहप्रीति पम्पासर गये ।
मन मुदित मज्जन कीन शोभा निरखि मुनि हरषत भये ॥

दो० भये मुदित मुनिवृन्द तहँ, मिले देवऋषि आइ ।
पूछिनि प्रभुते मोह निज, राम कहा समुझाइ ॥

सो० सकल दोष दुख दानि, जानि हर्यो अभिमान तब ।
सुमुखि शोककी खानि, तेहिते लिहेउ बचाइ पुनि ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरअ यउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतआरण्यकाण्डसम्पूर्णनाम
अष्टादशोऽध्याय ॥ १८ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ बिश्रामसागर ॥

किष्किन्धाकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बरणौं कोकिल मत कछुक, बृहद चरित्र बखानि ॥
नारद अबिचल भक्तिबर, पाइ चले हरषात ।
तब सानुज रघुबंश मणि, रीकमूक भे जात ॥
सबल पुरुष सुग्रीव लखि, डरि पठये हनुमान ।
द्विजह्वै पूछा जाइ निजु, हाल कहा भगवान ॥
सो० सुनि मारुतसुत बैन, प्रभुह चीन्हि चरणन परे ।
लाये कपिपति ऐन, मुदित भये सुग्रीव लखि ॥
कीन मित्रता भाव, जनकसुताकी बात सुनि ।
सिय भूषण कपि राव, दिये लिये उरलाय प्रभु ॥
कह्यो लषणते चीन्हो ताता * सुनि सौमित्र कही बरबाता
कङ्कण कुण्डल मैं नहिं जानौं * नूपुर नित पद बन्दन ठानौं
प्रभुह दुखित लखि कह्यो सनेही * तजहु शोच मिलिहैं बैदेही
हरषि प्रीति हरि हरि पति पाहीं * तुम क्यहि हेतु बसहु बनमाहीं
तब सुग्रीव कहा सब हाला * ज्यहिहित बालि बैर प्रतिपाला
सुनि बोले अवधेश कुमारा * मैं मारिहौं रण शत्रु तुम्हारा
मित्र मित्र दुख दुःखी न होई * बदन बेद शुचि सखा न सोई
सुनि सुभाय बोले कपि नाहू * बालि बली बधयोग न काहू
अस्थि दुन्दुभी केर समूहा * महा कठिन लागे दश धूहा
तिन्हैं एक शर बेधे जोई * मुनिवर बालिहि मारै सोई

दो० दूसर दुन्दुभि निधन सुनि, इन्द्रताल फल सात ।
पठये होइहैं सप्तदिन, अजर अमर इनखात॥
नारद आय बालि कहँ, दीन्हे गहन मँझार ।
महिधरि लगे नहान सो, करिगा भुजंग अहार ॥
हरिसुत लखि बोला बचनेहा * सात ताल जामैं तव देहा
कह भुजङ्ग जो हमैं उबारी * त्यहि निशिनाथ तुम्हैं सोइमारी
सर्पाकृत सो ताल बिशाला * को यकबाण ढहावनवाला
तीसर बर बासव कर साधा * रिपुबल सम्मुख पावत आधा
यहि ते बालि बधन के माहीं * आवतग्वाहिं प्रतीति प्रभु नाहीं
दो० हँसिबोले भगवान तब, चलौ दिखावो मोहिं ।
बेधि गिरावौं सुशर ज्यहि, निश्चय आवै तोहि ॥
भले नाथ कहि प्रभुइ लवाई * दीन्हे गिरिसम अस्थि दिखाई
बेधे सकल एकहीं बाना * दशयोजन शिरराखि सवाना
नभ माहितल सब तीर्थ नहाई * रामतूण प्रविशे पुनि आई
तब सुग्रीव देखाये ताला * सर्पाकृत सब ढहे कृपाला
छूटि भुजङ्ग चला जय भाषी * बरषे देव सुमन अभिलाषी
दो० प्रभुप्रभाव बल विपुल लखि, कपिपति प्रीति बढ़ाइ।
निश्चय भइ बधबन्धुहित, बोला पद शिरनाइ ॥
सुनो नाथ तव कृपा ते, मिटे सकल मम शोक।
शत्रु मित्र दुख सुख समधि, मनकृत नहि परलोक ॥
त्यहिते त्यागि मोह मद माया * भजब सदा तव पद रघुराया
बालि हमार परम हितकारी * मिले आइ ज्यहि आपु अधारी
मोहित बच सुनि कहेउ खरारी * मृषा होत नहिं गिरा हमारी
तब सुग्रीव जाइ पुर गरजा * चला बालि सुनि तारा बरजा

रामाश्रित सुग्रीव न जाहू * यह हरिसुतसब विधि मोहिलाहू
अस कहि आगा अकेल तीरा * भिरे क्रोधकरि दोनो बीरा
बालि हृदय बिचु मुष्टिक मारी * निकस भाग सुग्रीव पुकारी
मैं जा कहा केसरि तुम पाहीं * बालि मोर रिपु कोउ नाहीं
कह प्रभु तुम यकनम दोउ भाई * ब्यहि भय मैं मारा नहिं काहू
कृपादृष्टि ताकि तुरत मिटावा * सुमनमाल पहिराइ पठावा
बैर चतुरंगि मिलनचित चाहू * निरे बालि भुज पुनि पुर जाहू
बिनवा यतनकरि जुगत जोटा * प्रभु पेखत ठाढ़े तब ओटा
नाना जब सुरुष्ट हिय लागा * साधि बाणवर बालिहि मारा
गिरा भूमि व्याकुल है बीरा * तब सारा भतिगे व्याहि बीरा
प्रभुहि बिलोकि गुहित उठि लागा * बोला बचन [illegible] जागा

दो० राम तुम्हार प्रभाव यस, मैं पर सुना अपार।
देखा पर्म किरात कर, आरथा रहित बिचार॥

सो० ब्याहि मिलाएँ यहि भाँति, तुरतमिलौंगोआलिसंग।
करि कादरसे प्रीति, नाहिंडबिनअपराधपरहि॥

यह प्रभु हम निरबलके सखा * अभिमानी जिन कहँ न पसंदा
भरपदाल कृपा रीति हमारा * यथा तोहि लिपि [illegible] मारा
अनुज बधू बाहे निज पन्ना * जाहिमय मूढ़ पतित को बानी
प्रभु अजाह अब बने हमारे * अनुदास भ हमा मुद्रारे
सुनि कृपाल कह गाँठ देहा * अनुहि बाँधि बोला सकेहा
दो० जासु नाम त्रपि जीव जब, मरै कहै कुमिध्याम।
ते तुम मम आगे खड़े, कहत हमा निज नाम॥
देहिं लगाएँ लिखाकिसम, गाँठ बसन बाँधेउ।
सुनतहि बालिरिपु बधुर, ओ बाल कह रघुबीर॥

त्यहिते अब जैहौं हरि धामा * पर यह वर दीजै अभिरामा
कर्माधीन जहां मैं रहऊं * तहँ तव चरण नेह निरवहऊं
अङ्गद मम समान बलवन्ता * त्यहि कीजै निज दास अनन्ता
सो० प्रभुपद शीश नवाइ, बालि गयो हरिधाम तब ।
पुरजन सुनि दुख पाइ, आये जहँ कपिपतिमृतक ॥
तारा शिर उररापि, लागी इमि रोदन बदत ।
मैं जो रही पति माखि, मान्यो सीख न कालवश ॥
राम विकल त्यहि जोइ, बोले करहु न शोच प्रिय ।
मिलि बिछुरत सबकोइ, आनु अकेल न सग कोउ ॥
मातु मही पितु शालि, कालकृपी करसर समुझि ।
बोलिप्रथम पुनि पालि, लूनि खात ब्रह्मादि सब ॥
असविचारि शोचत नहिं ज्ञानी * कर्माधीन देह गति जानी
सबदिन यक थल थमत न कोई * पथिक मेघ इव सगति होई
भूमि विकार घटादि यथाई * उपजत विनशत वपुष तथाई
रहत एकरस धरणी जैसे * जीव अनित्या होत न तैसे
जो यह भेद न नीके जानै * सो देहादिक सत्य प्रमानै
तासु वियोग योग जब लहई * ससृतपरि भुगतै दुख सहई
ईश कृपा जब होत विशेखी * नित्यानित्य परत तब देखी
नित्य वस्तु भगवत सनबन्धी * और सकल ममता मतिबन्धी
सो० इमि बहु दीन्ह्यो ज्ञान, बोध भानु प्रकट्यो तुरत ।
मिटा तिमिर अज्ञान, लिहेसि मांगि हरिभक्ति वर॥
तब सुग्रीव रजायसु पाई * मृतककर्म सब कीन बनाई
प्रभु लक्ष्मणहिकहोसजिसाजा * करि आवहु सुग्रीवहि राजा
जाय लषण पुरलोग बुलाये * विप्र महाजन चलि सब आये

राज तिलक सुग्रीवहि दीन्हा * बालि सुतहि युवराजा कीन्हा
सब बिधि सबै सीख दै धीरा * सह सुकण्ठ आये प्रभु तीरा
ढिग बैठाइ दीन उपदेशा * जाहु भवन तजि सकल अँदेशा
मैं सहबन्धु शैल पर जाई * रहिहौं भरि बरषा तहँ छाई
तुम युत अङ्गद कीन्यो राजू * दीन्यो जनि बिसारि ममकाजू
भले नाथ कहि निलय सिधाये * राम प्रवर्षण गिरि पर आये
प्रथम सुरन रचिकदर राखे * राम रहन हित चित अभिलाखे
जबते प्रभु प्रविशे तहँ आई * सकलसाज सुख सपति छाई
नानारूप विराचि मुनि देवा * करहिं सदा रघुपति की सेवा
सतत होय सुभग सतसङ्गा * सशय समाधान बहु रङ्गा
निगमागम मत विषय पदारथ * कहत सुनत सम बोध यथारथ
प्राविट काल कन्द नभ घेरे * गर्जत चलत पवन के झेरे
जनु रविते वासव महि बोरा * है टान्यो सगर अति घोरा
की पावस ऋतु रवनि नवीली * प्रभुइ रिझावन चली अबीली
की सबत की तरुण अवस्था * की अवनी की अम्ब बिसस्था
राम अनुज ते ताकी करणी * कही जगत जीवन परवरणी
शरद सुन्दरी सुमति समाना * आइ प्रकाशी पन्थ प्रमाना
शुगत तासु गति मात बिसराई * बदत बन्धु ते मोह जनाई
तात तकत बरषाऋतु नासी * सियसुधिकछु न मिलीकटुत्रासी
जियत वियत कैस्यो सुधि पावो * बलकरिवयहि जीति महिलावो
जिनममहित सुख सकलविसारे * तिनबिन हम किमिहोयँ सुखारे
सुग्रीवहु कहि काज बिसारा * पाइ राज पुर सम्पति दारा
दो० जो हमहूं अब बदलिकै, बधौ बालि सम ताहि ।
तौ सुनि सब मूरख हमै, कहैं न सके नियाहि ॥

विरहवचनसुनिलषणतय, तमकि लीन धनुबान।
लखि प्रभुपुनि परबोधिकै, पठयो कृपा निधान॥
इत हनुमान बिचार करि, कह सुकण्ठ ते जाइ।
राम काज लहि राजसुख, दीन्हो तुम बिसराइ॥
सुनि सुकण्ठ हरि यों कह्यो, बिषय हरो मम ज्ञान।
अबते पठवहु दूततें, लैआवैं कपि आन॥

सो० कह अङ्गद यह काम, हनुमानै ते होइहै।
नाहिंत दूरि मुकाम, चले तुरत सुनि पवनसुत॥

पारियात्र गिरि प्रथमहिं गयऊ * गव गवाक्ष ते भाषत भयऊ
राम काज लगि मरकट नाह * बोल्यो बेगि सहित दल जाह
सुनि कपि असी शकुशत साता * लै संग चले सुभट हरषाता
पुनि रैवत कदली बन आये * दुर्धर गजंत बचन सुनाये
सात पुत्र कपि असी बरोरी * लै दोउ चले तुरत हरिओरी

सो० पुनि पहुँचे बलवीर कै, सुनि कपि तेइसलाख।
साठि सहस रन संगलै, चले करत अभिलाख॥
धुन्धमाल गिरि पुनि गये, मिले शिखण्डी नाम।
सुनिकपि छप्पन कोटिलै, चले कहत जय राम॥
पुनि पहुँचे अर्जुनी गिरि, कुमदे दीन हुकुम्म।
कपि सत्तासी लाख लै, गवन्यो चारि पदुम्म॥
पुनिचलिआयोताचगिरि, मिले नील बलवन्त।
सुनि कपिषोडश लर्ब लै, चले बहुरि हनुमन्त॥

सो० बहुरी परबत जाय, गन्धमदन ते सब कह्यो।
सुनत चले हरषाय, लै संग गेरा अर्ब कपि॥

पुनि पहुँचे अर्जुन गिरि जाई * तारा बखत चले सुधि पाई
नब्बे लाख सतासी कोटी * सग सकल मरकटमति मोटी
पुनि सुमेरु परबत पगु धारा * मिले केशरिहि हालु उचारा
सुनि दशकोटि लाख नव कीशा * लै सँग चले सहस षटबीशा
पुनि कैलास पुलिन्दै कहेऊ * जयअरुबिजयअखण्डसुधिलहेऊ
सत्रह शकु कोटि यक कोरी * चय कपि चले चाह नहिं थोरी
पुनि बिन्ध्याचल भूधर आयो * बाणबसन्त सुनत सुख पायो
हरिहर कोटि सहस सत लैकै * चले चपल चित चञ्चल कैकै
तड़पे बहुरि बिजय गिरिगयऊ * मिलि रति मुखते भाषत भयऊ
आठ पदुम नौ सै इक्यासी * लै कपि चले सहित सरमासी
कूदे बहुरि कास गिरि पावा * मुदमयन्द ते हाल सुनावा
तिन कपि पदुम कोटियक लीन्हे * चले सपदि प्रभुपद चित दीन्हे
जामवन्त भूधर पुनि गयऊ * जामवान सुनि सागतभयऊ
धूमकेतु निज सोदर तेरे * बाण बृद बसु शंकु सुडेरे
छप्पन कोटि अपर मरु लाषा * लै सग चले भालु करि भाषा
पुनि धवलागिरि आइ बिधाता * बरणी सकल द्विविद ते बाता
एक कोटि कपि लाख पचीसा * गवने सङ्ग सूमलै तीसा
पुनि उदयाचल पनसय लहेऊ * सर्वासर्व सल्य ते कहेऊ
अर्बुद आठ पदुम मुनि लैकै * मरकट चले चहू चित दैकै
यहि बिधि सबै बुलाइ कपीशा * आइ सुकण्ठै नायो शीशा
यह मैं गिनती जौन गनाई * बृहद रमायण महँ सो पाई
बालमीकि मुनिपुनि कछुजानी * युद्ध काण्ड में कह्यो बखानी

इति श्रीविश्रामसागरेश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतेसुग्रीवमित्रता-रामप्रवर्षणनिवासवर्णनोनामएकोनविंशोऽध्याय ॥ १९ ॥

दो० सुमिरि रामसियसन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सर्व रमायणकेर मत, जो सो कहौं बखानि ॥
पवनतनय जहँ जहँ कहिआयो * किह्यो सो सुनिसुकण्ठमनभायो
त्यहि अवसर लक्ष्मण तहँ आये * देहु जारि पुर बचन सुनाये
डरे लोग सुनि बालिकुमारा * आइ पाय परि क्रोध निवारा
सुनि सूरज सुत उठे डराई * हनूमान ते कह्यो बुझाई
तारा सहित शेष पहँ जावा * करि प्रबोध मन्दिर लै आवा
भले ईश कहि शीश नवाई * बिनती कीनि लषणकी जाई
तारा हँसि बहु बचन सुनाये * करि सनमान भवन लै आये
मिले सुकण्ठ सप्रेम प्रवीना * चरण पखारि बरासन दीना
दो० कहा लषण सियकेरि सुधि, लीन चाहिये भ्रात ।
बोलि पठाये बिपुल कपि, आवन चाहत तात ॥
अस कहि शिबिकारूढ़ह्वै, आये जहँ रघुबीर ।
बैठे जनु कैलासपति, सोहत श्याम शरीर ॥
सो० देखि नवायो माथ, हाथजोरि करि बिनय बद ।
तव मायावश नाथ, जीव सदा भरमत फिरत ॥
बिषयबिबश मुनिदेव, मैं पशुकपि कामी महा ।
कीन्हे बिन तव सेव, मिटत न इन्द्रीजनित दुख ॥
सुनि प्रभु बैठायो सनमानी * सियसुधि लीन चही सुखदानी
व्यहिहित त्यागि जालतनुराखा * सो न भई अब तक अभिलाखा
त्यहि अवसर आये कपि यूथा * नाना वर्ण बिशाल बरूथा
शीतोरक्त बिसगम नाला * करधर थूलाथूल घुमीला
सात ताल सम पृथुल कराला * जिन्हैं बिलोकि लहै भय काला
सब कपि युद्ध बिशारद बीरा * स्वामी हितकारक रणधीरा

मिलि लँगूलपति आयसु दीन्हा * सबन प्रणाम रामकहँ कीन्हा
भयेछकितछवि नखशिखदेखी * धन्य भाग्य अनुराग विशेखी
राम कुशल बूझी सब केरी * बोले तब सूरज सुत टेरी
सुनहु सकल मरकट ममभ्राता * जाते जीव करि कुशलाता
जप तप दान ज्ञान बहु करई * बिनहरिभजन न भवनिधि तरई
दो० विद्याबुद्धि विवेक वित, धर्म कर्म भरा सोइ ।
अन्तर्यामी रामप्रभु, जाते परस न होइ ॥
मुख भुज कटि पदते भये, बरणाश्रम हरि सूत ।
जो न भजै त्यहि चारि महँ, त्यहि जानिये कपूत ॥
बरणाश्रम ते भ्रष्ट है, सोइ परत भ्रम कूप ।
पुनि पावत यमयातना, निज अघ के अनुरूप ॥
अस विचारि छल छाडिकै, करहु रामकर काम ।
मास दिवस महँ आयहु, लै सिय सुधि अभिराम॥
आई अवधि बिताइ जो, सो पाई बडदण्ड ।
गव गवाक्षते कह्यो तुम, जावो पूरवखण्ड ॥
भले नाथ कहि माथ नवाये * सात पदुम कपि पाइ सिधाये
तारा अखत सुसेन मयन्दा * कह्यो जाहु उत्तर सह नन्दा
गेरा पदुम कीश लै साथा * खोजतचले बिपिन गिरि पाथा
पुनि बसन्त शत बीर बुलाये * कह्यो जाहु पश्चिमहि सिधाये
सारह कोटि कीश लै भारी * तब अङ्गद ते कह्यो हँकारी
जामवन्त हनुमत नल नीला * सब दक्षिण दिशिजाहु सुशीला
दश करोरि वानर संग लैकै * चले सकल प्रभुपद चित दैकै
हनूमान जब नायो माथा * कर मुद्रिका दीन रघुनाथा
कहिनि दिह्यो सीतहि सहिदानी * फिरो बेगि मम बिरद बखानी

सुनि प्रभु बचन चले शिरनाई * ढूढत गिरि बन कपि समुदाई
बज्रदन्त दानव एक आवा * अङ्गद ताहि रण मारि गिरावा
मग में तृषित भये कपि भारी * बिवर देखि प्रविशे हित वारी
भवन एक तहँ बिना निकासू * बैठि वाम तप पुञ्ज प्रकासू
सबहिन जाइ ताहि शिरनावा * पूछे ते वृत्तान्त सुनावा
सुनि बोली फल दल जलखाहू * खात भये सब सहित उछाहू
पुनि आये जहँ तापस बाला * तब सो कहत भई निज हाला

कुं० हेमाप्सरा की सखी हौं, स्वयप्रभा मम नाम।
हरि आनी भय स्वर्ग ते, दुरिराखी यहि ठाम॥
दुरिराखी यहि ठाम, इन्द्र सुनि लै गयो ताही।
मैं रहिगइ यहि अयन, राखि राघव मन माही॥
मन माहीं प्रभु राखि, नाम सुमिरयों नित नेमा।
अब कारज ह्वै गयो, भयो पारस मिलि हेमा॥
अब तुम मूदहु नयन निज, जाहु बिवरके पार।
मैं जैहौं रघुबीर पहँ, सुनि झापे दृग तार॥
सुनि झापे दृग तार, लखैं तो सिन्धु किनारे।
आपु गई प्रभु पास, बहुरि बदरी पग धारे॥
यहाविचारहिं कीशमिलि, बादिहिबीतीअवधिसब।
मिली न सीताकेरि सुधि, समुझिपरतभइमीचुअब॥

सो० सुनि कपिशनके बैन, निकसा कहिसम्पाति तब।
मिला अशन निज ऐन, देखि पराने कीश सब॥
कह अङ्गद अनुरागि, धन्य जटायू सम न कोउ।
रामहेतु तनुत्यागि, गा हरिपुर ह धिग हमैं॥
अनुज नाम सुनि सोइ, ठाढ़ किहिसिकपिशपथकरि।

जामि उठे पर दोहू, भागे अमित उनमीदिवस ॥
निजगतिबरणनकीन, और पंथ जिमि ज्यहि भयें ।
पुनिमिलपो सुभिदीन, है भरवस पुर विप्रन सर ॥

सात कहि सीय मनजनिजोहा • सब सब कीन भयो गोहा
सत सोजन मागर हिन कला • निजनिज बस सब लाहु भला
पार जान हित मकल मकाने • जमकत तब बचन बखाने
है हनुमान आन हुमाना • हैं सब तुमहीं ते कामा
लावे लनकम अनुन सोभारी • हनुमदकी जनि बाट निहारी
सुनि हनुमन हर्ष उर कीन्हा • तरह सोजन पर तन दीन्हा
सीतो अपनी एनि सीमें • या अब दर्शी सीमें निवारीमें
कोन सपर्ष आपा मारी • कहु पै आपहुँ जनकदुलारी
हमको कान करहु तुम आसा • रीं राहि देखि कहो कुसलाता

गीतिकाछन्द ॥

कुसलात श्रीमियकेरि तात सुनाइये सुधि आइकै ।
ज्यहि जानि राघव पीन लै गह लङ्क हेरि पाइकै ॥
करि समर मारहिं रावणाहि सुर सापु बन्दि छुड़ाइकै ।
भवसिन्धु तरिहैं जीव जड़ यह सुयस सुनि अरु गाइकै ॥
दो० सब रामायणके विषे, देख्यो जौन विचित्र ।
सोई जन रघुनाथहू, बरण्यो कछुक चरित्र ॥

इति श्रीविश्रामसागरसचमनसागरमध्यजागरश्रीरघुनाथदास-
रामगनेशीकृतौ रिन्धाकाण्डसम्पूर्णनाम
विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर ॥

सुन्दरकाण्डप्रारम्भ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं आदिकवि कहनिकलु, नाटक रीति बखानि ॥
जामवन्त के बचन सुनि, हनूमान बलवान ।
चले लङ्क कहँ हरि दिवस, जिमि रघुपतिको बान ॥
सुर प्रेरित बल लखनहित, सुरसहि रोंक्यो आइ ।
बदन पैठि पुनि निकसिकै, चल्यो आशिषा पाइ ॥
राहुजननि रहि सिन्धुमहँ, गहि खग करै अहार ।
सोइछलजखिहनुमानतेहि, मारि भये दधिपार ॥
शिवा शापयुत शैलपर, गयो भयो नहिं बाल ।
यह नहिं प्रभुता प्रवेगकी, प्रभु प्रताप बश काल ॥
सो० गिरि चढ़ि देखी लङ्क, अतिविचित्र सुनिमलहरनि ।
फिरत असुर बहु बङ्क, चहुँ दिशि रक्षा हेतु पुर ॥
करि विचार कपिशेश, दण्डधारि वपुधारि तब ।
निशि गढ़ कीन प्रवेश, लखि बोलत भइ लङ्किनी ॥
जानत ग्वहिं न अयान, मम अहार है लङ्ककर ।
सुनि मुष्टिक हनुमान, हनत मरी भइ दिव्य वपु ॥
कहत भई कर जोरि, भयो सत्य वर ब्रह्मकर ।
जाहु नगर भय छोरि, सुमिरिरामपद कपि चल्यहु॥
सब घर हेरे पौन, कतहुँ न देखी जानकी ।
गये दशानन भौन, अति विचित्र पुष्पक जहां ॥

दो० सर्व काममय मयकमल, सर्व काल उपहि माहिं।
सर्व सीत देमन बसै, परसि जाल सो नाहिं॥

महँ निराह दशमुखि निवास * सोइ गयो बस परम विरास
पौढ़ि सहस सुन्दर कुमारी * जहँ महँ कनकलतानी डारी
देखि गयो हनुमानहि शोचा * नाहक हरिगि जानकिहि पोचा
अस्त देह गहि गो सीता * तौ न होइ यहि दुष्ट रिपुता
राम काम तजि मन दिन दहो * जनकसुता सो कबहु न पैहो
सुनि मैं भवन विभीषण केरे * समुझा तहँ अधिक हेरे
तब सुनि मन परम विशेषा * जानि विभीषण नाम उचारा
भयो हर्षित पवि हनुमान ज्ञानी * यहिसे मिलै न होइहै हानी
लागे कहन राम गुण गीता * सुनत विभीषण आयो तीता
पूछा हाल पवनसुत भाषा * छठ दिशिमा पूरण अभिलाषा

चौ० कह्यो विभीषण जोरि कर, कबहुँक अरिपुनाथ।
करिहैं कृपा कृपानिधान, जनपर जानि अनाथ॥
तामस तनु कछु भजन नाहिं, नहि पदकमल समेहु।
बिन हरिकृपा न दरश तव, भयो भरोसो येहु॥
कह कपि परम कृपालु प्रभु, सचिव किये कपिभाल।
आज न बुद्धि न रूप कुल, तोष हेतु तिहुँकाल॥

सो० ऐसे प्रभुहि विसारि, करत न परहि नरनिरयमहँ।
सुनत भयो सुख भारि, पुनि पूछ्यो कहँ जानकी॥
दीन्ही युक्ति बताइ, ये अशोकवन विशद जहँ।
कनक विटप समुदाइ, नाना चित्र विचित्र फल॥
शोभत सुमत प्रभात, नये शिशपा विटपतर।
बैठी जहँ जगमात, मनहु विरह मूरति धरे॥

देखि नवायो शीश, मनहीं मन रहे बैठि तरु ।
त्यहि अवसर दशशीश, अगणिततहँसँगसुमुखिसब॥
बोला जनकसुता ते बानी * सुनहु प्राणप्रिय सुमुख सयानी
मैं सुर असुर नाथ बलधामा * मन्दोदरी आदि सब मामा
मेघनाद आदिक सुत जेते * तिनकी रवनि रहत जन तेते
करहुँ सकल शुचि सेवक तोरे * एक बार निरखौ दिशि मोरे
तोरे योग सकल सुख आहीं * तृणधरि नद सीता त्यहि पाहीं
छप्पय । रे रावण जे अहैं, रामचरणन अनुरागी ।
ते सरिपति चुल्लवत, लखैं ललना सम आगी ॥
चिन्तामणिअशमवत, सरिस खद्योत तमारी ।
स्वर्ण मेरु लोष्टवत, भूप भृत्यवत विचारी ॥
कल्पविटपतिर्नवतजग, राशि भारवत देह ।
तो तैं काह देखावई, म्वहिं लघु लङ्का येह ॥
दो० होत प्रफुल्लित कमलिनी, कहुँ खद्योत प्रकाश ।
कहत बचन मर्याद तजि, हेतु आपने नाश ॥
सुनि सीता के बचन बर, मगहु लगे उर बान ।
काढ़ि खड्ग मारन उठ्यो, तैं मम कृत अपमान ॥
सो० मन्दोदरि गहि पानि, समुझायो बहुभांति तब ।
बोलि बकी अघ खानि, कहिसिकित्रासहुजनकजहि ॥
मास दिवसके बीच, जो नहिं मानी बचन मम ।
तौ कटिहौं शिर नीच, लज्जित ह्वै गा भवन निज ॥
दो० त्रिविधरूप धरि राक्षसी, लगीं लियै दुख दैन ।
त्रिजटा तब समुझाइकै, जात भई निज ऐन ॥
राम विरहवश जानकी, सबनि निहोरि निहोरि ।

मातादि पावक रेनु पेखि, सिंह विपति अति मोरि ॥
सुनत पावनसुत हरष बिसाला * दान सोहाग मनमुख डारी
मातु मातु मातु करि करि * बाजा कनक जाय मन देखी
सीता मन हरष भए गद गीते * मन की कहिहि विनय पतीता
कहु रे सुमुख सुनु मातु * रेम ने आई मन मीता
सब हनुमत कीन्ह गद गाद * मातु आनन्द रामाल नाद
विनवे हनुमान सुनुमाता * आगे कर भेदहो माता
माहिने तेरे सो सुमा कीन्ह * हरन हिरे विनिन मद लीन्ह
मीरसनो मारि जब आई * तरु ते अधिक बड़े चतुराई
मारि मारा सुमीनाहि मीन्हे * लगा पाय धाइली लीन्हे
बरषा सुमुनि रहे मन माहे * अब कहि अनिल बड़े आई
पड़ये चहुँदिस पावन भुजा * मैंने कहिनि नगनजन पूजी
रो मुन्दरी मातु मुख माहा * सोनहि देखि कहो पुराणा
कहेउ मातु मैं लड़हि मामा * सोना आत दरस तव पाया
रामचरित गाहिपिसुनि मा ॥ * भई गदिन दरा दाहाग बीना
बोला जेहि मद बचा सुनाई * मो अब प्रगट होत दिन माई
दो० सुनि सीताके वचन कपि, आयो पुरह लजाल ।
चूके अवसर सुजान जिमि, सज्जन सन्मुख आल ॥
कपि-लक्षण लखि सीय सयानी * रामदूत मैं सत्य सयानी
तिनक गुण कछु करा बखाना * शीश नाय बोले हनुमाना

एकुभासुन्द ॥

प्रथम दया दुख देखि सकै नहिं उभय कृपाकरि गहई ।
अनुकम्पा हित करत न स्वागत करुणा कष्ट न सहई ॥
आनुयास गुण सहित दोषहू ताकी रक्षा चाहै ।

अनुक्रोश निज शरणिकेर कलि करतब पुनि पुनि काहैं ॥
दम गुण इन्द्री दमन दर्प परिभव दानव संतापा ।
समगुण सुमन विरोध बोध वपु परिपूरण निष्पापा ॥
सत्य सदा सच कहत गहत लखि प्रीति प्रतीति अपावन ।
क्षमा छिद्र लखि क्षमहि सदा प्रापति सौलभ्य सुहावन ॥
सौशिल्या तज दीन खीन बुधि सुधि शरणागत पालै ।
प्रणत बिधुर बातसल्य भोगकृत प्रमुदित आपु कृपालैं ॥
सब उर फुर सर्वज्ञ अघट घटनाकर शक्ति स्वरूपं ।
रजकृत गणन कृतज्ञ मेरुसम सुमिरत भक्ति अनूपं ॥
गुण गँभीर रहि तीर जासुकी गति मति जात न जानी ।
चतुरबिचित्र विचित्र रचत रचना अगणित विचयानी ॥
थिर सुनाम गुणधाम अचल अर्पत अनहेतु उदारा ।
धैर्य धार रिपुमार मोह मधि मानस टरै न टारा ॥
शूर समर सुख लहत तेज जग जीवनि निज बश राखैं ।
बड बड़ कारज करत होइ श्रम स्वल्प न पद्धति नाखैं ॥
सौन्दर्याखिल अङ्ग सुभग चप चाहत चाहन डोलैं ।
महामिठि माधुर्य साम्य सौरभ सबते भल बोलैं ॥
भागवान ब्रह्मादि धनी बहु जाके धनते भयऊ ।
सिरस सुमन सकुमार्य आर्य आज्वलि अजीत अरिजयऊ॥
शुद्ध सुवेष किशोर सौर्य मार्दव बिरक्त बिज्ञानी ।
धर्म धाम निष्काम राम रघुनाथ अनाथ अमानी ॥
दो० कहिकै कहत न गहत गहि, दैके देत न काहु ।
बधिकै बधत न तजत तजि, भजेहि भजत तवनाहु॥
संग सुमित्रा सुवनते, अधिक भरतमें प्रीति ।

कइक बार मोसे कहिनि, कुटिल कागकी रीति ॥
सुनि हनुमान वचन बैदेही * जायो मन क्रम रामसनेही
बोलीं अहैं कुशल दोउ भाई * हमते तात न कछु बनिआई
साशु ससुर पति वचन निवारी * आइन सग सनेह पुकारी
अछत देह जब भयो बिछोहा * तजे न प्राण कौन बड़मोहा
यहो सह्यो दुख दुसह अभागी * जीर न गयो बपु बिरह दवागी
तेहिते तात प्रीति की बाता * जानत रूप करदम जलजाता
आरज सुवन दया के सिन्धू * सरल सुभाव दीन के बन्धू
निज दिशि देखि चहे सो करहीं * हमरे करम सदा दुख भरहीं
सुनि पवनज कहपुलकितगाता * दीन बचन कत भाषत माता
जनके दुख रघुनाथ दुखारी * तव वियोग सभव दुखभारी
ऋतु अनरोध शोध बिन पाये * ज्योत्यों इतने दिवस बिताये
नाहिंत कहँ रघुपति शर भानू * तम बरूथ कहँ निशिचर भानू
जो मैं हठि लै जावों आजू * बिन निदेश बिगरै सुरकाजू

दो० त्यहिते कछु दिन धीर धरु, कपिनसहित दोउ भाय।
आइ तुम्हैं ले जाइहैं, अरि हरिपुर पहुँचाय ॥
सुनिबोलीसिय कीशसब, है सुत ताहिं समान।
तबतौ कीन्हेउ स्वर्णगिरि, सरिस स्वतनु हनुमान ॥

सो० बिन कीन्हे करतूति, कथत ताहि लघु जानिये।
काल्हि कहौंगो भूति, धोइसमर सरिबदनमसि ॥
मैं जु सुने कटु बैन, कहे जो निशिचर नीचने।
धरि राखे उर ऐन, समय पाय सब काढ़िहौं ॥
भइ सीतहि परतीति, ढोखि बुद्धि बल कीशकर।
दीन्ह अशीश सप्रीति, अजरअमरसुत होउ प्रिय ॥

सुनि कपि नायो माथ, हाथ जोरि बोल्यो बहुरि ।
क्षुधा लागि म्वहि मात, हर्षि कहेउ सुत खाहु फल ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतमारुतनन्दनश्रीसीताप्राप्तिश्रीराम-
सन्देशवर्णनोनामैकविंशोऽध्याय ॥ २१ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
कहौं आदिकबि कथनिकछु, नाटक रीति बखानि ॥
मेघनाद ते अधिक प्रिय, पुरुहुत ते बर बाग ।
दशमुखदुखहित खाइ फल, कपि तरु तोरनलाग ॥
बरजत मारे असुर कछु, कछुक गये गृह भागि ।
कछुन जनायो रावणहि, सुनतलागिजनु आगि ॥
तुरत बोलि मन्त्रीसुत लीन्हा * लखि किन्नर कहँ आयसु दीन्हा
असी सहस्र सुभट सँग लैकै * आवा निकट दुन्दुभी देकै
हरषे हरिसुत सैन निहारी * बोले जय रघुनाथ खरारी
जय लक्ष्मण सुग्रीव कपीशा * लखि किन्नर मारे शर बीशा
तब हनुमतहँसितरुयक लान्हेउ * तेहियकविशिखखण्डत्रैकीन्हेउ
कपि योजन की शिला उपाटी * लक्ष बाण करि किन्नर काटी
तब बजरङ्ग रोष करि धायो * पटकि पानि शिर मारि गिरायो
पाछे अपर निशाचर मारे * भागि बचे ते जाय पुकारे
सुनि तब अक्षय कुवर पठावा * उभय लाख भट लै सो आवा
देखि ताहि गरज्यो कपि भारी * भागे हय गय हहरि पछारी
दो० साधि सकल आये निकट, कहि कहि बाणी विङ्ग ।
कूदेहु कपि तिन मध्य इमि, जिमि मेषन महँ सिङ्ग ॥
कछुक नाय कांढ़े करनि, कछु भाढ़े धरि पाइँ ।

कछुक मिलाये धूरि महँ, भूरि मगनकी नाँह ॥
निज दलब्रलखि असगकुमारा * तोड़ खम्भ लै कीशहि मारा
लागत सो मरुद्धा सी आई * मार तब लाखन शर धाई
भयो चेत तन पूरित दन्यो * भानुकिरणजनुचहुँदिशिलन्यो
भिटिकि देह सब बाण गिरायो * गहि गिरि यक अक्षयपर धायो
आवत तासि मारे बहु बाना * दहिने करत खस्यो पषाना
तुरत नाम गहि शिर दै मारा * सहित सूत रथ भा सहारा
ताहु रुचिर सुत पान प्रचारे * कछु खेलाय पुनि सोऊ मारे
बैठे बहुरि महल पर जाई * बोल लङ्कादिशि गोहराई
मैं हौं कोशलेन्द्र कर दासा * बेद लखा बन कीन्हे नासा
जाहु सुभट मन होइ खुशाली * आइ करै सो समर कुचाली
अक्षयनिधनसुनि निशिचरराई * मेघनाद यह लिहिसि बुलाई
कथो बाँधि बानर कह लावा * मारेहु जनि सुत मोहिं दिखावो
आयसु मानि अनी लै सङ्गा * आवा जहँ तहँ कपि रणरङ्गा
लखि पवनज कायो तिनबीचा * मारे छिटकि अनेकन नीचा
पुनि प्रचारि बृषारिपुने भिरेऊ * मृगपतिसममहि कोउ न गिरेऊ
भरि अनङ्ग दिन भई लराई * जाना यह हरि जीत न जाई
ब्रह्मअस्त्र तब साधि चलावा * करि विचार हनुमान बँधावा
लीले लैआये जहँ रावन * देखा कपि जनु कुधर भयावन
अरुणनयन रिसबशअंगजरहीं * सभय देव सब आयसु करहीं
लखिप्रभाव कपि शङ्क न आनी * बोला तब दशकन्धर बानी

गीतिकाछन्द ॥

कपि कौन तू सुत अक्षघातक कौन बल रघुनाथके ।
रघुनाथ को खरदूषणान्तक अनुज लक्ष्मण साथके ॥

लषण को तव भगिनि जानत परशुधर मद जेहि हरेउ ।
परशुधर को सहसभुज रिपु दीप जेहि तव शिर धरेउ ॥
पठवा जु केहि सुग्रीव को हरि बालि सोदर जानिये ।
कपि बालि को तुम रक्षो जाकी काखमें सुधि आनिये ॥
किमि सिन्धु नांघे गोपद ज्यों केहिहेतु सिय चौरै लखै ।
सिय कौन कन्या जनककी तुम बाण गे जाके मखै ॥
कल बाण सोइ बलिसुवन जेहि त्वहि बाधि नाच नचायहु ।
को कहत यहिविधि पत्निनी जेहि जलधि मांझ चलायहु ॥
शठ बांधि आयसि यही बातन बात यह नहिं शानहु ।
तव त्रियन लखि अब लाग पुनि तोहि देन शिक्षाशानहु ॥
दे कौन शिक्षा देत याही बैर प्रभुसे जनि करो ।
परि पाइँ सीतहि देहु सब बिन मौत जाते ना मरो ॥
को मारिहै त्वहि कर्म तेरे कौन तिनते राखिहै ।
श्रीराम करुणाधाम जब ते शरण मुखते भाखिहै ॥
मम शरण त्रिभुवन आजु तो हम शरण काकी जाहिरे ।
नहिं जाइहै तौ पाइहै फल कटुक कछु दिन माहिरे ॥
मृगनारि द्विज कपिनाहहो खरदूषणान्धक निरबली ।
त्वहि भेंटि जब फिरि जाइहै तब बात कछु आगे चली ॥
जब समर रुलिहैं राम तब को सुभट शायक सहिसकी ।
सुनि समुझि बूझत नाहि बीसहु नयन फूटे बरबकी ॥
रे पोच कपि नहि डरत काको मोहि तू शठ है कहा ।
नहिं दीन आयसु ईश नातरु ख्याल करत्यों जम चहा ॥
रसराज तोहि करि सुभट रसयुत लङ्क खल खलतो स्वयं ।
पुटपाक करि सुरपतिहि देतो धने घर घलतो त्वयं ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अनेक बाल बालकी सुतात मात बोलहीं।
बचाइ लीजिये हमैं समै समान डोलहीं॥
अनेक नारि मारि रिंभ डिंभ काढ़ि लावहीं।
अनेक डारि डारि बस्तु वारि लेन धावहीं॥
अनेक कन्त बीरते पुकारि बैन यों कहैं।
उठाय लेहु लाल माल जाल दे परो तहैं॥
बिलोकि देव यों कहै कपीश यज्ञसी ठनी।
सुरारि सौज लङ्क कुण्ड हाक स्वाहसी भनी॥
किधौं बिराट के सुरारि राजरोग जानिजू।
निमित्त तासु बेद ज्यों जस्यो मृगाक ठानिजू॥
मथन्ति मन्दराज की मनोज फागु खेलहैं।
बिराग धूत्य बोधको बिमोह बन्धु ठेलहैं॥
गिरै कँगूर दूरते तबै कहै मँदोदरी।
बिहाइ लोकलाज कानि भागती न क्यों अरी॥
अरे अकम्पनादिकाय कण्टकी महोदरं।
लवाइ लेहु अङ्गगाति पूत नाति सोदरं॥
अनेक बार मैं कही बुझायहू बिभीषणं।
न मानि दाढ़िजार को कुठार बंश तीषणं॥
निकेत द्वार अर्ध उर्ध्व हाट बाट में जहा।
लुकात जाय नीर कीश तीर देखिये तहा॥
घने स्वबक्षजात के निशात स्वस्ति पावहीं।
बोलाय शेश राघवेश जानकी कहावहीं॥
बधू जो कुम्भकर्णकी पसारि पाणि भाखिये।
दुहाइ रामचन्द्र केरि मोर कन्त राखिये॥

अनेक धाइ धाइ जाइ रावणै सुनायहू ।
विचार बीर मेघनाद से बली पठायहू ॥
अनेक अस्त्र शस्त्र लाय आय मारने लगे ।
घुमाइ दीनि वालधी पुकारि कूरसे भगे ॥
सुमन्त्र जाय यों कही बड़ो बलाइ कीशहै ।
निशङ्क बङ्कहू बडो सुनो न ऐस दीशहै ॥
बिशाल ज्वाल जानि कोपि मेघ बोलि यों कही ।
बुताइ देहु आगि रे बहाद जन्तुको सही ॥
भले सुनाय चाप आय पुञ्ज पाथ छाडेऊ ।
यथा सनेह पाइ चौगुनी कृशानु बाढेऊ ॥
लगे जु अङ्ग अङ्ग बाण प्राण लै भगे सबै ।
निहारि रीति मालवान स्यान बोलि यों तबै ॥
न आहि याहि आपि सूम आहि ईश बामता ।
समीर श्वास सीयकी जु रामरोप मामता ॥
बिडौज ब्रह्म बिष्णु रुद्र आदि देव जौन है ।
डेरात मोहि सर्व बङ्क ईश और कौन हैं ॥
बोलाइ कालते कह्यो लंगूल लाव मारिकै ।
बटोरि भूत प्रेत यक्ष दण्ड चण्ड धारिकै ॥
बिलोकि बातजात घात कीनि सैन तासुको ।
उठाय गाल में धर्यो पर्यो खँभार जासुको ॥
समेत शम्भु भास रामदास पास आयहू ।
सभीत पङ्कजासनादि बीनती सुनायहू ॥

दण्डकछन्द ॥ जयति श्रीवातसंजात विख्यात बल विपुल पन बाल रवि गाल धर्ता । लोक लिपिकर्ता

श्रुति शास्त्र विद्या निपुण निरसि संसार महिभारहर्त्ता ॥ जयति वज्रङ्ग रणरङ्ग अरिभङ्ग कृत कर्म नहिं भर्म अकमूक बासं । सत्य सुग्रीव सुख हेतु वृषकेतु वपु वचन मन काय रघुनाथदास ॥ जयति गुणज्ञान विज्ञान बैराग निधि नाम बसु याम उरधाम धारी । साधु सुररक्षनं असुरगणगञ्जन दुष्टमुखभञ्जनं विपतिहारी ॥ जयति कपि शिष्ट परमिष्ट पावक परम धर्मधुर धर्ण हरिदर्प हन्ता । स्वर्णशैलाभ जलदाभ विग्रह बरण बिमल यश शूर बीराग्रगन्ता ॥ जयति जनकात्मजा शोच मोचन विपिन निधन निर्द्वंद्व दशग्रीव जाता । निपट निरशङ्क गढलङ्क दाहक काम क्रोध मद देवतानन्ददाता ॥ जयति शिर श्रवण दृग देत कटि उदर कर शूल निरमूलनाभिष्ट ग्राम । पातु पूरब दक्षिविदिशि पश्चिम उत्तर ऊर्ध्व अध सर्वदा सर्व ठामं ॥ जयति परयन्त्र परमन्त्र नेवारण शाकिनी डाकिनी घोरमारी । भूत यमदूत बैताल पावक प्रेत चौर बिगबिच्छ अहिबन्धनारी ॥ जयति सुरसिद्ध मुनिवृन्द वन्दित चरण शरण भयहरण धृत कुधर हाथं । अञ्जनी आनि दोहाइ श्रीरामकी हरहु दुख सपदि रघुनाथनाथ ॥

दो० देहु छांडि यमराज कहं, यही बीनती मोरि ।
परवश आयों लरन सुनि, दीन गालते छोरि ॥
जरत देखि पुर जानकिहि, भयो शोच कपिहेत ।
लागीं सौंपन सब विबुध, बिष्णुहि प्रीतिसमेत ॥
वैदेहीकी सुरति करि, हरिहु लाग पछितान ।

पुनि अपनी दिशि देखिकै, दूरि कीन अज्ञान ॥
बच्यो विभीषण भवन अरु, कुम्भकरणकर द्वार ।
अपर लङ्क सब जारि कपि, कूद्यो जलधि मँझार ॥
पूंछ बुझाइ बनाइ लघु, वपुष आइ सिय तीर ।
कह्यो चिह्न कछु देहु मोहि, जिमि दीन्ह्यो रघुवीर ॥
सुनि सहप्रीति उतारिनिज, चूड़ामणि तब दीन्ह ।
गहवर बोली तात तुम, भले समय सुधि लीन्ह॥
जिमिमणिबिनुव्याकुलभुजग,जलबिनुव्याकुलमीन।
तिमि देखे रघुनाथ बिनु, तलफत हौं मैं दीन ॥
कह सुत अब कब आइहैं, दीनबन्धु यहि पार ।
देहैं राज बिभीषणै, करि निशिचर संहार ॥
विजय पाइ कब राजिहैं, मोहि सहित दल माहिं।
देव बन्दिते छूटि कब, विनय करब प्रभु पाहिं॥
कब धौं विधि पहुँचाइहै, फिरि कोशलपुर तात ।
भरत शत्रुहन लोग सब, कब लहिहैं मुद मात ॥
ह्वैहैं मङ्गल काज कब, पुजिहै याचक काम ।
नखशिख कबअवलोकिहौं, रघुपति छवि अभिराम॥
शीशमुकुटमणिगणजटित, श्रवणन कुण्डल लोल ।
जगमगात कब देखिहौं, टोपी दिये अमोल ॥
अलकैं सींची अतरसों, निकट कपोलन मुक्त ।
भरि लोचन कब देखिहौं, कुसुम कलिन सयुक्त ॥
भाल तिलक भाखितउरध, भृकुटी धनु अनुहारि ।
भूरिभाग कब देखिहौं, नयनन पलक बिसारि ॥
चञ्चल चारु विशाल विधि, लोचन मोचन मान ।

चितवत दिशि कबदेखिहौं, मनको करि कुरबान ॥
कीर तुण्ड सम नासिका, लटकन की छबि भूरि ।
कब चकोर सम देखिहौं, मुख मयङ्क वृण तूरि ॥
अरुणअधर दाडिमदशन, रसन चारु मृदु हास ।
हे हरि कब अवलोकिहौं, शशि कर सरिस प्रकास॥
मधुर वचन जन मन हरण, कब सुनिहौं निजकान ।
चिबुकचारु कब देखिहौं, चितवनि अमी समान ॥
कम्बु कण्ठ तुलसी सुभग, मणि मोतिनकी माल ।
उर दीरघ अवलोकिहौं, कब त्रिवली सुखजाल ॥
भुजबिशालकरिकरसरिस, करतल कमल समान ।
सहित विभूषण देखिहौं, कब लीन्हें धनुवान ॥
झीन झँगा पहिरे ललित, ता ऊपर पट पीत ।
कब निज नयन सेराइहौं, देखि उदर उपवीत ॥
कटि केहरि हरि करधनी, पट परदनी सुरङ्ग ।
कब पदपद्म पलोटिहौं, जानु पाणि सब अङ्ग ॥
मैं सुत कन्त अनन्तकर, जानत सरल सुभाउ ।
तातें कहत न सहत दुख, तुमते कौन दुराउ ॥
बिरह अग्निते देखि त्वहिं, शीतल भय निज देह ।
सोउ कहत तुम जान फिर, सोइ दुख सहब अनेह ॥
दीन वचन सुनि सीय के, भयो बिकल कपिराय ।
नीक न लागी अमरता, छलबलकछु न बिसाय॥
दीन्हो मातु प्रबोध तब, होइ तुव मन जौन ।
चल्यो नाइशिर नाद करि, कूद्यो सागर लौन ॥
आवत जानि लँगूल सब, चढ़े बिटप गिरि धाय ।

देखत पहुँचे आइ हनु, कहू दिवस सुखदाय ॥
भये छीनते पीन सब, शाखा मृग यकसाथ ।
बृहद्रामायण केर मत, कहा कछुक रघुनाथ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतहनुमत्कृतलकापुरीविजयवर्णनोनाम
द्वाविंशोऽध्याय ॥ २२ ॥

दो० सुमिरिरामासिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सार रमायण कहौं कछु, गीतावलि मत आनि ॥
सियैराज्ञि वनभञ्जि पुनि, पुर जराइ मणि पाइ ।
आयो मारुतसुतहि लखि, हरषे कपि समुदाइ ॥
भेंटि भेंटि पूछा सबन, हाल कहा हनुमान ।
सुनत चले सानन्द ह्वै, जहँ सुकण्ठ भगवान ॥
मार्ग पञ्चमी शुक्र दिन, मधुवन पहुँचे आइ ।
खाये फल दल मधु सबन, रखवारे बिडराइ ॥
षष्ठीदिनकपिपतिहि मिलि, मुदित कहा सब हाल ।
सतयं दिन आये अखिल, जहँ रघुनाथ कृपाल ॥

चरण परत भेंटे रघुबीरा * सानुज बैठारे निज तीरा
जामवन्त तब सकल बखाना * जेहिविधि काज कीन हनुमाना
सुनत समोह गोदभरि अङ्गा * हनुमानहिं भेंटे श्रीरङ्गा
उपपधारि बूझी कुशलाता * किमिसियखबरि लयायो ताता

गीतिकाछन्द ॥

किमि तात लायहु सीय सुधि सुनि पवनसुत पदगहि कहा ।
प्रभु पासते जब चलेन ढूँढत दूरि यक सागर चहा ॥
शत योजनहि तेहि नाघि चालिस कोसतक आरामहै ।

पुनि हेमके वैकृत लङ्क सुबेल सुन्दर नाम है ॥
तहँ पांच लाख पपान के गृह दारु के नव लक्ष हैं ।
पुनि ताम्रके पुनि कोटि घर श्रुति कोटि रजके स्वक्षहैं ॥
तितनेहि कञ्चन केर केवल कोटि पङ्कज राग के ।
पटकोटि तृणके बंश छदके कोटि शत बहु भागके ॥
अस्फटिकके नव कोटि मेचक दाम कोटि सहस्र सै ।
मैं दीख इतने निलयलङ्का दुर्ग शत योजन बसै ॥
दश शीश ताको ईश जाके कोपते त्रिभुवन कँपै ।
उपचाग तामें जानकी तव विरह पावक में तपै ॥
जहँ रहत तहँके विहँगनिजानिजभवननजिभजिभजिगये ।
अह मेंट श्वास समीरते तिन फिरि न तिहुँ महँ पग दये॥
कृशगात सो जरिजात तजि दृग वारि निज हित राखही ।
तव नाम सुमिरत याम आठौ और कछु नहिं भाखहीं ॥
जब प्राण मीन समान बिन जल जानि तव त्यागोचहैं ।
तब सींचि प्रभुगुण राखि त्रिजटा जाय मैं देखी तहैं ॥
शिरनाय दीन्हो मुद्रिका कहि कुशल बन भञ्जन कह्यो ।
बधि अक्ष लङ्क जराइ चूडारत्न सीताते लह्यो ॥
सो लीजिये रघुनाथजी निजहाथ हृदय लगायहू ।
भे प्रेम पुलकित गात शिथिल न बात मुखते आयहू ॥
सुनि शोक सीय वियोग सागर मांझ बूडन लागेहू ।
हनुमान बोहित सरिस लीन उठाइ आतुर जागेहू ॥
शीश नाइ बोले हनुमन्ता * केतनि बात करौ प्रभु चिन्ता
कहौ रावणहिं दल युत मारौं * कहौ आनि तव चरणन डारौं
कहौ लङ्क ले सागर बोरौं * कहौ त्रिकूट घट इव फोरौं

देखत पहुँचे आइ हनु, कुछु दिवस सुखदाय ॥
भये छीनते पीन सब, शाखा मृग यकसाथ ।
बृहद्रामायण केर मत, कहा कछुक रघुनाथ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतहनुमत्कृतलकापुरीविध्वंसवर्णनोनाम
द्वाविंशोऽध्याय ॥ २२ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सार रमायण कहौं कछु, गीतावलि मत आनि ॥
सियैरञ्जि बनभञ्जि पुनि, पुर जराइ मणि पाइ ।
आयो मारुतसुतहि लखि, हरषे कपि समुदाइ ॥
भेंटि भेंटि पूछा सबन, हाल कहा हनुमान ।
सुनत चले सानन्द ह्वै, जहँ सुकण्ठ भगवान ॥
मार्ग पञ्चमी शुक्ल दिन, मधुबन पहुँचे आइ ।
खाये फल दल मधु सबन, रखवारे बिडराइ ॥
षष्ठीदिनकपिपतिहि मिलि, मुदित कहा सब हाल ।
सतयं दिन आये अखिल, जहँ रघुनाथ कृपाल ॥
चरण परत भेटे रघुबीरा * सानुज बैठारे निज तीरा
जामवन्त तब सकल बखाना * जेहिविधि काज कीन हनुमाना
सुनत समोह गोदभरि अङ्का * हनुमानहिं भेटे श्रीरङ्का
उपपधारि बूझी कुशलाता * किमिसियखबरि लयायो ताता

गीतिकाछन्द ॥

किमि तात लायहु सीय सुधि सुनि पवनसुत पद्गहि कहा ।
प्रभु पासते जब चलेन ढूँढत दूरि यक सागर चहा ॥
शत योजनहि तेहि नांघि चालिस कोसतक आरामहै ।

पुनि हेमके त्रैकूट लङ्क सुबेल सुन्दर नाम है ॥
तहँ पांच लाख पषान के गृह दारु के नव लक्ष है ॥
पुनि ताम्रके पुनि कोटि घर अहि कोटि रजके स्वच्छहै ॥
तितनेहि कञ्चन केर केवल कोटि पङ्कज राग के ॥
पटकोटि तृणके बरा छदके कोटि शत बहु भागके ॥
अस्फटिकके नव कोटि मेचक दाम कोटि सहस्र से ॥
मैं द्वीप इतने निलयलङ्का दुर्ग शत योजन बसे ॥
दश शीश ताको ईश जाके कांपते त्रिभुवन कँपै ॥
उपवाग तामें जानकी तव विरह पावक में तपै ॥
जहँ रहत तहँके विहंगनिजानजभवनतजिभजिभजिगये ॥
भइ भेंट श्वास समीरते तिन फिरि न तिहुँ महँ पग दये ॥
कृशगात सो जरिजात तजि दृग वारि निज हित राखहीं ॥
तव नाम सुमिरत याम आठौ और कछु नाहिं भाखहीं ॥
जल प्राण मीन समान बिन जल जानि तव त्यागोचहै ॥
तव सींचि प्रभुगुण शम्बि त्रिजटा जाय मैं देखी तहँ ॥
शिरनाय दीन्ह्यो मुद्रिका कहि कुशल बन भञ्जन कह्यो ॥
बांधि अक्ष लङ्क जराइ चूड़ारत्न सीताते लह्यो ॥
सो लीजिये रघुनाथजू निजहाथ हृदय लगायहू ॥
से प्रेम पुलकित गात शिथिल न बात मुखते आयहू ॥
सुनि शोक सीय वियोग सागर मांझ बूड़न लागहू ॥
हनुमान चाहित सरिस लीन उठाइ आतुर जागहू ॥
शीश नाइ बोल हनुमन्त * कैतनि बात करौ प्रभु चिन्त
कहौ रावणहि दल युत मारौ * कहौ आनि तव चरणन डार
कहौ लङ्क लै सागर बोरौ * कहौ त्रिकूट घट इव फो

कहौ लाइ गिरि सागर तोपौं * कहौ पान करि जलउर लोपौं
कहौ परौं मैं देह बढाई * तापर सैन उतरि सब जाई
कहौ तुम्हैं ले सियै देखावों * कहौ जानकी आनि मिलावों
तव प्रतापते सब कछु करिहौं * विन निदेश पथ पाउं न धरिहौं
ताते जो भावै सो कहऊ * कह प्रभु तुम सुत ऐसे अहऊ
सब विधिहौं निजमन अनुमाना * तुम सम मोर हितू नहिं आना
प्रति उपकार योग्य मैं नाहीं * त्यहितेहौं ऋणियाँ तुम पाहीं
सुनिहनुमानसकुचि असभाखा * तव प्रताप मैं वा मृगशाखा

दो० धूरि मेरु शोपद जलधि, जल पावक भय प्रीति।
नाथ कृपा जापर करहु, विपरीते विपरीति ॥
सुनिप्रभु लीन लगाय उर, बोले सम्मत नीक।
मांग्यो जौन रजाइ तुम, तात रहै सो ठीक ॥

पर मैं निज शायक वरि राखे * रहिहैं क्षुधित तुम्हारे भाखे
अरु जगहित लीला नहिं वादी * मिटी आह दशमुखकी गादी
कर्मप्रधान विश्व मैं कीन्हा * देव चहै निज बदला लीन्हा
सो सब फिरि रहिजाई ताता * ताते अब कीजै यह बाता
लै कपि भालु चलहु चढिलङ्का * देखौं महू कैस गढ बङ्का
कह कपि नाथ बेगही कीजै * अभिजितसमुझि कृत्यकरिदीजै

दो० सवदिन यह साइत सुभग, जहँ अपयोग न आन।
सुनत अष्टमी दिवस प्रभु, रविलखि कीनपयान ॥

गीतिकाछन्द ॥

प्रभु कीन लङ्क पयान जब तब धनुष निज टकोरेहू।
सुनि शब्द घोर कठोर चौंके शम्भु विधि मुख मोरेहू ॥
भयो काम सकल निकाम शिरसे गङ्गधारा वहि चली।

धरि धीर हृदय विचारि निज निज काज लागे विधिभली॥
भये विकल सब दिग्पाल चौदह भुवनके वासी डरे।
दशमौलि सभय विहाल पुरजन गर्भ तिनके गिरिपरे॥
कपि भालु ठोंकहिं ताल अति विकराल रद कट कट करैं।
यदि वाद कूदहिं नाद करि हरि सप्त उपरोपर परैं॥
अति पीन परम विशाल कर गिरि विटप धृत चञ्चल महैं।
मुख विकट लोचन पिंग जिन्हैं विलोकि भय कालहु लहैं॥
धरु मारु भुजा उखारु अरिदल डारु सागर तोपहैं।
तेहि दोष देखव ताहि जो तेहि हेत तनको कोपहैं॥
यहि भांति मर्कट कटक बोलत चलत मरु पंगुल भये।
शशि भानु लोपे थान नभ थल धूरि पर सर पटि गये॥
अनिमेष चहत निमेष मातलि सहस दृग अकुलानेहू।
सुनि हांक श्रीहनुमानकी पर शपन काहु न जानेहू॥
बल खात दिग्गज कोल कूरम शेष शिर हालत मही।
मुख मुहुरमुहुरामर्षि कर्षत गई तन करकस सही॥
श्रीराम राजत पवन पर जिमि उदयगिरि पर रविलसै।
सौमित्रि अङ्गद कन्ध मानहुँ अग्निघर चेदा बसै॥
कसमसत हाम मग बसत बिसयें दिवस दधितट आयहू।
उतरे निरखि जल राशि फल दल फूल सबहिन खायहू॥
इत रहत असुर सशङ्क जबते लङ्क-गो कपि जारिकै।
सुत सचिव रावण बोलि बूझेउ मन्त्र कहौ विचारिकै॥
सुनि घटश्रुति बोला अहँकारी * कोहै त्रिभुवन सरिस हमारी
जा सन्मुख सक नयन मिलाई * असकहि चला विवश औंघाई
तब सक्रोध बोला अतिकाया * आयसु मोहि देहु करि दाया

अबहींसिति नर हरि बिन करहूँ * और मन्त्र का बहुत उचरहूँ
काम रूप बोला घननादा * मम प्रभाव जग जानत जादा
बिधि हरिहरवश किहेउँ जुझारू * नरबनरन हित कौन बिचारू
कुम्भ निकुम्भ दम्भ छलकारी * बोले बिभुता बिदित हमारी
कृपा दृष्टि सब देव निहारैं * देखत उच्चासन बैठारैं
भोजन हित कहियत तिनपाहीं * हम काहूकर छुवा न खाहीं
डाटत बोलि सकै नहिं एकू * कपि मानुष हम गनैं न नेकू
मत्सररूप अकम्पन कहई * हमैं जियत अस को सिय लहई
कहा उपाय करौं अब सोई * नर बानर जेहि बचैं न कोई
अपर कथा कहिये का लोभी * तब भा भनत महोदर लोभी
जो आवै अनगन्त करोरी * डारौं खाइ भरै महिझोरी
तौ कपि सहस लाख केहि लेखे * जैहैं घूमि न अब हम देखे
बोला तब दुर्मुख पाखण्डी * छलकरि हरि आनौं द्वौ दण्डी
जो चाह्यो सो कीन्ह्यो पाछे * बदमकराल कपट बपु काछे
बिपुल बिप्र जो मैं बरिआनी * भूसुरबनि कोइ सकै न आनी
जनिबौ करत सकत करिकारा * सो किमि जीत जासु नरनाहा
सुनि प्रहस्त बोला डरपाई * मम मत सीतहि देहु पठाई
नारि पाइ जो फिरि चढिआवैं * करहु युद्ध जेहि जान न पावैं
यामें नहिं अधरम की बाता * बोला तब हिंसक नरघाता
सकल बस्तु भोगन हित आवै * धर्माधर्म कहा कहवावै
करत बतकही कादर केरी * यह नहिं मारिहि सबन खदेरी
नीति कहत हम कादर ठहरे * जाना अब तुम सोइहौ छहरे
दो० कह्यो सुमति मन्दोदरी, सुनहु कन्त मम बात ।
करजामय रिपु अग्निनृप, लघु करि गने न जात ॥

भुवनेश्वर सर्बज्ञ जो, गनत छोट तुम ताहि ।
मीचु बेसाहत सुकर यह, भलीबात नहिं आहि ॥
सुवन सचिव तव मन्दमति, कहत वचन मुख पेखि ।
नगर जरत तव सवन कर, लीन पराक्रम देखि ॥
तेहिते श्रीमत जानकिहि, पठइ देउ सनमानि ।
नाहिंत दूषण बालिकी, होई गति सति जानि ॥
नारि वचन सुनि मोह बश, बोला मोहिं समान ।
सबल कुटुम्बी नृप धनी, परतापी को आन ॥
भागत सुर जेहि नाम सुनि, सकी को ताते जूझि ।
जान्यों तेहि हैं काल बश, परै न ताते सूझि ॥
कहत बिभीषण नाइशिर, तेहि अनुशासन पाइ ।
जो चाहौ निजभद्र तौ, सीतहि देउ पठाइ ॥
तात राम नहिं नर अधिप, अखिल लोक करतार ।
गो द्विज सुर महिसन्तहित, लीन मनुज अवतार ॥
जप तप तीरथ ध्यान करि, जिनके दरशन दूरि ।
सो प्रभु आयो अछत अधि, धन्य भाग तव भूरि ॥
मेघनाद भट आदि जे, बैठे मारत गाल ।
तेकि सक्व धरि धीर जब, छुटिहैं बाण कराल ॥
त्यहिते सकल विकारतजि, नाउ राम पद शीश ।
मिटैं सकल अपराध जेहि, बने रहैं भुजबीश ॥

सो० सुनि तिरछे करि अक्ष, बोला शठ जीवत यहा ।
करत शत्रुकर पक्ष, जा उत कहि मार्‍योचरण॥
करि बिचार शिरनाइ, आयो घर निज मातुढिग ।
कही कथा सब गाइ, सुनि बोली सनमानि सो ॥

कहा भयो जो लात, मारी पितु सम भ्रातवड ।
इहां रहे कुशलात, वहा गये नाहिं नेकु भल ॥
समुझि विमोहित वैन, चलेउबन्दिसचिवनसहित।
आये धनपति ऐन, लखिकीन्ह्योसनमानतिन॥
कह्यो सकल निज हेतु, सुनि कुबेर शोचन लगे ।
बोले तब वृषकेतु, तात किह्यो अतिनीकतम॥
दो० औषधिहित उपदेश बहु, करत न लागत जाहि ।
रुज असाधि शठ जानिकै, तजत सुजन जन ताहि ॥
पर अब शरण रामकी जाहू * सपदि मन्त्र बूझो मति काहू
सुन सुत रामविमुख जे प्रानी * भूले भव बन गज चढि मानी
आगे वृद्ध राक्षसी देख्यो * पाछे सिंह भयानक पेख्यो
तबतौ गज वहँ गयो विलाई * आप कूपगृह गिरो डराई
दो० तेहितर ताक्यो काल सम, अजगर छाँडी नाहि ।
तब गहि दूर्वा आरवल, लटकिरहा तेहि माहिं ॥
तहँ सुन्दरि मधु लागि निहारी * प्रमुदित ह्वै तेहि गहेसि अनारी
सहित कुटुम्ब उड़ीं सब माखी * लपटि गई पग कटि मुखआखी
पर यक बूद किहिसि मधुपाना * सो सुख मूढ परम सुख माना
श्याम श्वेत विधि मूषक खूबा * लागे निशिदिन काटन दूबा
चुकिगे जबै गिरा हहराई * तुरतै अजगर लीन चबाई
यह गति सब जीवन की जानो * बिनहरिशरण न कतहुँ ठिकानो
दो० रामशरण बिन कालते, बचा रहै भाजि आन ।
सो शठ अहि भय गरुडतजि, दादुर पक्ष लुकान ॥
राम विमुख जग जीव जे, तपत पाप त्रयमाहि ।
तेहि दुख नाशन हित यतन, वद श्रुतिमो हमियाहि॥

जिमिशिशुहितपितुरोगगद, नीरतरन हित नाव।
पालत पावत चढ़तपर, चिरकर होत अभाव॥
याते साँचे शुचि सुखद, शरणपाल रघुबीर।
केवल ताके शरण बिन, मिटै न भव भय भीर॥

सुनि सुखपाइ शिवहिशिरनावा * मंत्रिन सहित समोद सिधावा
अन्तःकरण साहिन जिमिजीवा * हरि हित कै दुख समुझिअतीवा
करत मनोरथ मग इमि जाहीं * शम्भु मिलन शुभिअतिहरषाहीं
अहोभाग्य मम उदय अपारा * कौन कौन अस शुभ आचारा
साधु विप्रकरका अस दीन्हा * कौन अपूरब तप हम कीन्हा
जो सबोंपरि प्रभु सुख अयना * देखिहौं जाइ आजु भरिनयना
निज जन हित श्रीवपु प्रकटाये * धरा भार भञ्जन महि आये
शोभा सिन्धु दरश जब पैहौं * तब का परमानन्द न लैहौं
जेहि पद पद्म भजैं सब सन्ता * विधि हरि हर सनकादि अनन्ता
जिनके चिह्न धरा दुखहारी * रज कण परसि तरी ऋषिनारी
जासु वारिभवनिज शिर धारा * जेहि तारे जग अधम अपारा
निज पद पीठि गरत मन रञ्जा * धरिहौं मैं शिर तिन पदकञ्जा
जेहि कर कमल असुर बहु मारे * धर्म साधु श्रुति रक्षण हारे
ज्यहिकरगहि भञ्ज्यो भवचापा * परसत मिटत काल परितापा
करत प्रणाम नाथ मोहिं जानी * मम मस्तक धरिहैं सोइ पानी
पूंछिहैं जब तब कहिहौं नामा * नाथ होव मैं तोर गुलामा
बिन चित निज करिहौं सेवकाई * छाडि कपट हठ मान बड़ाई
पाहिरब पट उतरे जो पैहौं * बची बचाई जूठनि खैहौं
सुनि लेहैं अपनाइ कृपाला * तब होइहौं सब भांति निहाला
निशिदिन देखिहौंप्रभुकीझांकी * तब का रही करन को नाकी

मरतो जाइ कहा बिललाई * यह गति शम्भुकृपा हम पाई
निज दिशि देखि शङ्क मन धारै * हरषै जब प्रभु रीति विचारै
दो० यहि विधि करत मनोरथ, आये जहँ हरिसैन।
करि विचार नभ दूरिते, बोले गदगद बैन॥
जय सर्वज्ञ कृतज्ञ प्रभु, कृपासिन्धु गुण गाथ।
शरण भये पालेउ विपुल, अब स्वहि पालहुनाथ॥
नाम विभीषण असुर कुल, रावण रिपुकर भ्रात।
श्रवणसुयश सुनि शरण तव, आयों लै निज गात॥
सुनि प्रभु बोलिसचिव तब लीन्हा * बूझ्यो यहि का चाहिय कीन्हा
कह कपिपति रिपुसोदर येहू * भेद लेन आवा गहि लेहू
कह अङ्गद आखिर बध करना * अबही क्यों न हतत है शरना
जामवन्त कह रिपुकर भ्राता * अब हमते यहिते कस नाता
सीय हरी तब क्यों नहिं आवा * देहु जान मुख प्रणत सुनावा
कह नल दूत पठै मत लीजै * ऐसेहि कैसे बिदा करीजै
उत्तम होइ तो राखहु पासा * नाहिंत हत तब नील-प्रकासा
साचेहु यह शरणागत आवा * राखिय देव मोहिं अस भावा
सभय तजे अब लाग अनन्ता * होइ जो मात पितादुलहन्ता
कह हनुमन्त सुनहु रघुराया * राक्षस है न शरण जो आया
बलि प्रह्लाद सुकण्ठ यथाधू * जानहु तुम तिनसम यह साधू
छली न प्रभु तव सन्मुख होई * फिरे सभीत द्वारते कोई
बहुरि बात कछु कहन न पाई * बीच विभीषण गिरा सुनाई
दो० अबतक आवत दीनके, हरत रह्यो दुखभार।
अस अभाग बड़ मोर जेहि, सुरतरु करत विचार॥
दीन बन्धु सुनि दीन के, बचन उठे अकुलाय।

कह्यो लपण हनुमानते, अबहीं लावहु जाय ॥
सो० लाये करि सनमान, पूस बदी भूतादिवस ।
प्रभुछवि देखि जुडान, कीन्हिदण्डवतत्राहिकहि ॥
प्रभु उठाइ भेटे उरलाई * बैठे निज समीप बैठाई
पूछी कुशल कहौ लङ्केशा * दुष्ट सग सम कछु न कलेशा
बोले नाय बिभीषण भाला * सुमिरण जे तव करत कृपाला
तिन्हें कुशल मङ्गल कल्याना * देत विरञ्चि बिनय करि नाना
जो मूरति मुनि जन मन मारी * करहिं ध्यान नहिं सकैं निहारी
तेहि मूरति अङ्ग मिल्यों मैं आजू * यहिते अधिक कौन सुख साजू
कहु प्रभु सत्य कहौं मैं तोहीं * दास सरिस प्रिय अपर न मोहीं
जिनके हों हित अनत न नेहा * तिन हित आय धरौं मैं देहा
अस कहि जल सागर करलीन्हा * तिलक बिभीषणके शिर कीन्हा
सुनि सुभाव लखि कपिसबहरषे * जय जय कहि प्रसून सुर बरषे
दो० जो पुर कलह कलेश करि, रावण शिव पहँ लीन ।
सो प्रभुकुदिन बिभीषणहि, तृण आश्रम सम दीन ॥
ऐसे प्रभुहिं बिसारि जे, करत आन की आस ।
तेशठधनहित धनिहितजि, भजत दासको दास ॥
चन्द्रोदय परबोध मत, मूलसार शुक गाथ ।
बरण्यो सुन्दरकाण्ड शुभ, सुखप्रद जन रघुनाथ ॥

इति श्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतसुन्दरकाण्डसम्पूर्णनामत्रयो-
विंशोऽध्याय. ॥ २३ ॥

श्रीगणेशाय नम ॥

अथ बिश्रामसागर ॥

लङ्काकाण्डप्रारम्भः ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बरणौं कोकिल कहनि कछु, अग्निबेश मत आनि ॥
प्रात पञ्चमी दिवस प्रभु, पूछा सचिव बुलाइ ।
किहिबिधिउतरियउदधिसुनि, बोले निशिचर राइ ॥
नाथ आपु कर एक शर, सोखै सागर कोटि ।
तदपि नीति असि सिन्धुते, मागहु सागर बोटि ॥
कह्यो तात भल होइ हित, जो कर दैव सहाइ ।
लषण बूहि शर मारिये, ईशन सोकी आइ ॥
बोले प्रभु नहिं रुचत म्वहि, साधु अवज्ञा तात ।
त्यहिते यह करि लीजिये, पुनि वह ठानब बात ॥

अस कहि दर्भ डासि दधि तीरा * बैठे करि प्रणाम रघुबीरा
बिनवततीनि दिवसचालिगयऊ * तब प्रभु कोपि शरासन लयऊ
अग्नि बाण सधायो जबहीं * लाग्यो जरन बारिनिधि तबहीं
बिप्ररूप धरि हार ढिग आवा * रतन भेंट दै पद शिरनावा
नाथ सृष्टि सब तुम्हरी अहई * त्यहि जस कीन्ह्यो सो तस रहई
अब जस आयसु होइ तुम्हारा * सोइ करौं मैं परम उदारा
कहो सुखाय जाउँ यकबारा * मरिजैहैं जल जीव अपारा
कृपासिन्धु बोले हँसि बाता * कपि दल तेर करौ सोइ बाता
त्यहि तब कहा नील नलकीशा * तिन परसे जल तरत गिरीशा
आयसु देहु रचैं ते सेतू * महू सहाय करब तव हेतू

अस कहि नौमी दिन सो गयऊ * परारम्भ दशमी ते भयऊ
चहुँदिशि शैल देहिं कपि आनी * सो नल नील लेहिं निज पानी
रचहिं सेतु अति सुदृढ बनाई * शिव स्वरूप थाप्यो रघुराई
कह्यो महातम चिर जग हेतू * तरसि दिवस सिद्धभा सेतू
विस्तारण दश योजन केरा * दीरघ कोस चारिशत हेरा
प्रभु नल नीलहिं बहुत सराहा * पूज्यो भुजा सहित उतसाहा
प्रात चतुर्दशि लाग उतारा * प्रभु छवि देखत जीव अपारा
राजत हनूमान के काधे * लक्ष्मण बालितनय के राधे
दो० विपुल चले जल चरणि कपि, विपुल सेतु असमान।
जैसे भवनिधि तरण हित, कर्म उपासन ज्ञान॥
इमि उतरत निशिदिन इकधारा * द्वितिया दिवस भये सब पारा
पाइ रजाय निकट फल खाये * तृतिया दिन सुबेल गिरि आये
कोष्ठा टालक गोपुर शृङ्गा * दशमी तक उतरे पलवङ्गा
हरि दिन रावण दूत पठाये * दल देखन शुक सारण आये
चरचि चपल गहि मारन लागे * राम शपथ दीन्हा तब त्यागे
आये तब दशमुख के तीरा * बोला लखि कहु कपिदल भीरा
काल विवश आये यहि पारा * होइहैं एक दिवस कर चारा
पुनि कहु रहे विभीषण भीरू * जानि बूझि भा यव कर कीरू
बहुरि भाषु तपसिनकी बाता * जिहैं निकारिदीन पितु माता
सुनि बोले शुक सारण ऐसे * सुनो कृपाकरि बूझेउ जैसे
कुं० सहसलाख कर कोटियक, सहस कोटिकर शंकु।
सहस शंकुकर अर्बुद, सहस अर्बुद विदंकु॥
सहस अर्बुद विदंकु, सहस कर पद्म प्रमाना।
सो अष्टादश सुने, संग यूथप बलवाना॥

बलवाना कपि जालसब,कालसरिसहमलखिगहस।
कहत मिलावनलङ्क तव, पङ्कमाहिं ऐसे सहस ॥
दो० आयसुमिलत न पिलतपुर, भये बिभीषणराज।
तिनते सम्मत बूझिकै, करत आपहू काज ॥
सुनि बोला हँसि वादि क्यों, करै बडाई भूरि।
जासु बिभीषण से सचिव, परी कि तिनते पूरि ॥
तब शुक कह कछु दूरि न भारी * चढि अट्टालक लेहु निहारी
सहित सुमुखभट चरतिहिबारा * चढिदेखी कपिकटक अपारा
शुक सारण कहि नाम बताये * अङ्गदादि जे भट सँग आये
दो० वै अङ्गद हनुमान वै, वै सुकण्ठ नलनील।
वै सुखेन वै ऋक्षपति, वै दधिमुख समशील ॥
जटा मुकुट मुनिपट धरे, धनुर्बाण तूणीर।
अस्थित हरि मृगचर्मपर, सेवत पद बहुबीर ॥
गौरश्याम छविधाम वे, सहित लक्ष्मण राम।
बैठि बिभीषण पुरहलखि, कीन्होसि मन परणाम ॥
औरो कपिदल दरशिकै, बोला बिहँसि निशंख।
देख्यों कौतुक कालकर, दिहिसि पिपिलिकनपख॥
इत प्रभु छत्र समेत तकि, मार्यो शर यक सङ्ग।
मुकुट प्रसून गिराइ पुनि, प्रविशा आइ निषङ्ग ॥
देखि अचम्भि रहे सब लोगा * कोइ कह प्रथम भयो अपयोगा
बोला यामे अशकुन काहा * शिरहु खसे भट करैं उमाहा
तेहिते शयन करहु अब जाई * चलिभे सकल रजायसु पाई
तब मयसुता कह्यो भयभीता * हे पति काल भयो विपरीता
जे तव सन्मुख सकैं न बोली * ते अब तुमते करत ठठोली

जिहि पुर सकैं बिष्णु नहिं आई * ताहि तुच्छ कपि गयो जराई
जिहि जग नाघि सकै नहिं कोई * तामें सेतु कि गिरिकर होई
जासु नाम सुनि सुर भजिजावैं * तापर कीश अशन चढि आवैं
जो सादर निज करत विलासा * सोकि जाइ फिरि शत्रुन पासा
तुमहूं अम हठ कबहुँ न ठानी * तिहिते परत बाम बिधि जानी
अबते परिहरि हठ शठताई * करहु काम किन होइ भलाई
जिहिं प्रभु मधुकैटभ सहारा * हिरणाकुश हिरण्याक्षहि मारा
जिहिं खरादि बहुभट बध कीन्हे * बालि प्राण इक बाणहि लीन्हे
सोइ प्रभु सेतु समुद्र में बाधा * बीसहु नैन होहिं जनि आधा
म्वहि समेत जगदम्बहि लैकै * पायन परहु रामकह दैकै
प्रणतपाल प्रभु कृपा अगाधू * तुरतहि क्षमिहैं तव अपराधू
बोला सत्य बचन तव प्यारी * पर इकबात न जानि तिहारी

कं० शिव निर्मालय शीश ये, रघुपति लायक नाहिं।
तिहिते इन्हैं निवारिहौं, समर रसाके माहिं॥
समर रसाके माहिं, प्रथम बल तिन्हैं दिखैहौं।
प्रभु आये जिहि हेतु, तस्य मन साध मिटैहौं॥
साध मिटैहौं तस्य मैं, आपन छांदि शरीरशव।
मिलिहौं निज न थैवसों, यश गैहैं सनकादि शिव॥

दो० चौसठियुग निज बाहु बल, किह्यो अकण्टक राज।
तिन्हैं अहत अरिपद परौं, धिग कादर कर काज॥

मम बश सकल जीव जग जेता * ते यहि भाति डरत केहि हेता
जासु बिनाश निकट जब आवै * तिहि बिपरीत क्रिया अतिभावै
अस कहि सो सोई नृप साधी * जागत निशि बीती सोउ आधी
प्रातकाल उठि सभा सिधावा * आपन बल सब भटन सुनावा

सुनि शठ सचिव सेनपति हरषे * लगे कहन कादर जन करषे

इति श्रीविश्रामसागरे रामसुवेलआगमनोनाम
चतुर्विंशोऽध्याय ॥ २४ ॥

दो० सुमिरिरामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
बर्णौं मानसमत कछुक, कोकिलकाव्य बखानि ॥
दशमुख दशहूदिशि दरशि, दीन्हें दलपति फेरि ।
आपु जानकी पास ह्वै, आयो त्यहि थल फेरि ॥

दहा माघ पांचवा दिन प्राता * अङ्गद ते बोले सुरत्राता
बालितनय बल वृद्धि निशाला * लङ्कहि जाहु जहां दशभाला
हित उपदेश दियो तुम भूमी * नहिं मानै तौ आयो घूमी
भले नाथ कहि माथ नवाई * चले राखि उर प्रभु प्रभुताई
पुर प्रविशत रखवारन रोका * सुनि युवराज सबन कहं टोका
रावणसुत विषमुख तिहि दीशा * बोला बढ़ि तैं काकर कीशा
राम केर को जाकी भामा * हरिलायो हितु अपने धामा
सोइ राम जिनके लवु भ्राता * तव फूफूका रूप निपाता
इतना सुनि तिहि पाव उछारा * अङ्गद पकरि भूमि दै मारा
देखि असुर सटके तिहि काला * एक एक ते कहैं न हाला
पुरजन चहि चटपट दै लेही * बूझै बिन बताइ मगु देहीं
मन मे कहैं दशानन नीचू * सिय का आनी सबकी मीचू
आवा प्रथम नगर जिहिं जारा * यह धौं काह करै करतारा
जह अब निशि दिन मचीलराई * तिहि पुरबसि पुनि कौनि भलाई
आवत कपि रावण सुनि पावा * दूत पठै निज सभा बुलावा
दशमुख बैठ दीस कपि आई * सहित हस जनु गज गिरिराई
सुर मुनि असुर नाग गन्धर्वा * चितवततिहि भृकुटीदिशि सर्वा

हरि लखि उठे सकल इकबारा * बोला तब रिसकरि प्रतिहारा

छप्पय ॥

पढ़ै न क्यों विधि विनय, शम्भु कत दरश न देवै ।
जीवै करै कत शोर, धर्म क्यों चरण न सेवै ॥
रहै न दूरि दिनेश, देव ऋषि स्वर लै गावै ।
यक्षन सहित कुबेर, बेर करि क्यों नित आवै ॥
चन्दन बोले मन्दमति, मातलिसभा न यह अहै ।
बैठि जाहु गे बैठि सब, तब रावण कपिते कहै ॥
रे वानर तू कौन, दूत हम रघुपति केरे ।
इत आयो क्यहि हेतु, अह रक्षाहित तेरे ॥
कौन विपति शठ मोहिं, शत्रु शिरपर प्रभु आये ।
ईश कोपि रघुनाथ, जासु तुम तिय हरिलाये ॥
कौन कहत हनुमान को, जिहि तेरी लङ्का दही ।
करुणासिन्धु सर्वज्ञ सो, सुनि व्याकुल ह्वै यों कही ॥
जाय जाय कोइ जाय, धाय रावणै सुनावै ।
जिहि सिय देइ बताइ, रङ्क कर जिउ बचि जावै ॥
सुनि बोले सब सुभट, नाथ जो हम चलि जैहैं ।
उजुर करी कछु शत्रु, ताहि बिन बधे न ऐहैं ॥
तब प्रभु नहि पठयो तिन्हैं, मोहि कह्यो लखि साधु सुनि ।
मोरेहु मन आई दया, निजपितुकर तोहिमित्रगुनि ॥
ताते आयों तात, बात अब मानहु मेरी ।
जाते तब भल होइ, बचै सब रैयत तेरी ॥
श्रीमद महिप सुभाव, जान अथवा बिन जानेहु ।
हरिआन्यो जगदम्ब, आदि भल यहै न ठानेहु ॥

सो जसभातसभाअजहुँ, सीतै लै निज नारियुत।
जाहु शरण श्रीरामके, मिटिहैं सब अपराध उत॥
रे बानर रहु चुप्प, बादि बकवाद न ठानै।
विश्व बिदित तैं मोर, अभय परभाव न जानै॥
सुर नर मुनि पशु नाग, जीति सब निज बश कीन्हों।
शिवै दिह्यों शिर स्वकर, गिरिहि कन्दुक इवलीन्ह्यों॥
अस मैं पुनि भ्राता सुभट, जिहि देखत दुनिया दुरै।
मेघनाद अस सुवन जो, गहि आन्यो सुरपति धुरै॥
कह अङ्गद सो सत्य, अहै ऐसें बल तोरा।
पर नाहिं राघव साथ, सिंह हित जिमि गजजोरा॥
जे जे भे प्रतिकूल, परी नहिं किसी कि पूरी।
शठ ताडुका सुबाहु, मिले खरदूषण धूरी॥
विश्वसुभट बल शम्भुधनु, हरि बैठ्यो तिहि धरि दलो।
ताकोमिल तजि मानमद, जो चाहै आपन भलो॥
रे मर्कट मम सरिस, अहै को सुभट अनारी।
सो कहु को तव पिता, बालि कपिनाथ विचारी॥
रहा रहा कपि रहा, भले कहु है सो नीके।
कछु दिनमें तहँ जाइ, कुशल पूछ्यो निज प्रीके॥
रामविमुख कर जौन फल, होत सो सब नीके पढ़ी।
जानि बूझि बातैं गढ़त, रढ़त मौत तव शिर चढ़ी॥
दो० मर्म बचन युवराजके, सुनि रावण रिस रोंकि।
बोला मुखमुरभेदहित, प्रथम सुकरमहि ठोंकि॥

छप्पय॥

हे अङ्गद बलवन्त, बालिसुत तोहीं आही।

तव सम जाके पुत्र, तासु ऐसी गति चाही ॥
जन्मत क्यों नहि मरेउ, बालिकर नाम धरायो ।
जिहि टारेउ पितु मारि, तासु शठ दूत कहायो ॥
अबते मम दल ले सकल, कपितुव करु निजराजचलि ।
हनि रन भलेसुशत्रु जे, आठ आठ दिशि देइ बलि ॥
कह अङ्गद रे नीच, मीचवश मति बढि बोलै ।
मम मन ठानत भेद, पवनते गिरि कहुँ डोलै ॥
जासु भृत्य ब्रह्मादि, तासु हम ह्वै करि दासा ।
बोरि दीन कुल कहसि, अहसि ते निशिचरखासा ॥
तोहि कछु करत विचार नहिं, सो फल पैहै सपदि बरु ।
आवत आवत अवधि नहि, तावत भावत सोइ करु ॥
रे रे कपि जग माहि, मोहिं को है फलदाई ।
लोकपाल यम काल, नमत मोको नित आई ॥
चहौं जाहि नृप करौं, चहौं त्यहि रङ्क बनावौं ।
उजुर न करता कोइ, बहुत का तोहिं सुनावौं ॥
कह अङ्गद तैं अजित अस, सो रावण आरैवियो ।
जठर सहसभुज बालिबलि, अवधनृपन जेहि दुखदियो ॥
सुनि अङ्गद के बचन, मूढ़ लज्जित ह्वै बोला ।
बालपने की बात, गात तब निरबल होला ॥
कोशल नृप सब जीति, प्रथम अपने बश कीन्ह्यो ।
जबतें भये दिलीप, छांड़ि तबते कर दीन्ह्यो ॥
ताहि तजे कछु घटि गयो, भयो न मनमें एक तिल ।
विदितबरेहुशिवशिवहिशिव, गिरिकरधोरउयथाशिल ॥
कह अङ्गद का भयो, शीश जो निजकर काटे ।

बाजीगर बहु करैं, बैठि कौडी हित हाटे ॥
कहा भयो गिरि लयो, भालु कपि धारे डोलैं ।
तहाँ न पायो सुयश, आजु रोठना सब बोलैं ॥
कहा भयो सब जग जयो, भयो न जो रघुनाथ जन ।
तो सब जानो स्वप्न सम, अवनि रवनि सुतधामधन॥
कह रावण हँसि राम, दास तुमहीं जो भयऊ ।
दिहिनि काल सुख आइ, लाभ यामें का लयऊ ॥
तीन लोक परलोक शोक, सब तन के नासे ।
मिलिहैं तौ तब बियत, जियत जब जाव इहा से ॥
तहँऊ तव सुग्रीव रिपु, तासु विभीषण केर मैं ।
अपर कीश खैहैं असुर, ऐहैं तपसी घेर मैं ॥
कह अङ्गद रे चोर, घालि जिन यक शर मारा।
भृगुपति कर बल दर्प, सर्प लीलै सहारा ॥
खर दूषण त्रिशिरादि, दनुज चढि बचे न भागे ।
तोरि चाप सिय बरी, सकल भूपन के आगे ॥
यस्य अनुग इक लङ्क दहि, चतुर अंश तव भट दले ।
तिनसों तैं लरिहै कहा, गाल मारिले चहु भले ॥
कह रावण जो अहै, सबल अस स्वामि तुम्हारा।
तो पठवत किहि हेत, बसीठी बारे बारा ॥
कराहि आइ कलि कर्म, धर्म जो क्षत्रिनको है ।
रिपुते ठानत प्रीति, लाज नहि लागत जोहै ॥
मन कटराहू तौ जाइ फिरि, भागे को नहि हम हनै ।
चढि आवै जो मौत बश, सकल कौनपनको बनै ॥
दो० शशि समुद्र बाधे कहा, अभय परे भुज बीश ।

द्वन्द्व न बांधनहार कीउ, सुनि बोल्यो पुनि कीश ॥
कारन ज्ञान अज्ञानका, बल निर्बल कर अन्त ।
कारज ते खुलिजातजिमि, नारि कपट सुत पन्थ ॥
नारि कपट सुत पन्थ, तुम्हैं हम तबहीं जान्यो ।
जब धरि तापस रूप, बिपिनसियतेछलठान्यो ॥
ठान्यो लखा गृहप, गयो धनु रेखा पार न ।
आयो मैं न बसीठ, राम पठयो यहि कारन ॥

छप्पय ॥

बांधि कपि सब आजु, चलौ प्रभु शत्रुहि मारी ।
कह हरि तेहि वध किहे, कौन होई यश भारी ॥
जिमि मृगपति हति मेष, शेष सर्पप शिर लीन्हे ।
तिमि लघुता लघु दान, ज्ञान मूरख कह दीन्हे ॥
यद्यपि यह जानत तदपि, क्षत्रि जाति कर रोष अति ।
तातें अबहूं दीन ह्वै, सीतै लै मिलु मन्दमति ॥
कह रावण नृप सुवन, संग सब कीश लयारा ।
प्रथम आवा एक, झूठही जाय पुकारा ॥
हमहीं दीन छुड़ाइ, और मैं मस्यो अक्षय सुत ।
लागिगई गृह आगि, कहिसि मैं कीन काम उत ॥
तेसे तोहू नरन को, करत बड़ाई कूर गति ।
सोको जानत छोट करि, बिश्वविदित जो शूरसति ॥
कह अङ्गद मतिमन्द, द्वन्द रत बोलु बिचारी ।
कल्पबिटप सम बिटप, सकल सीता सम नारी ॥
चिन्तामणि पाषाण, सरित सर गङ्ग समाना ।
अभयदान बिज्ञान, सरिस लौकिक कर ज्ञाना ॥

पगली बातैं अकनि तव, अस मन होत हमार हरि।
तोहिं सहित सब लङ्क लै, बोरौं उदधि मँझार परि ॥
कुं० शोच न शालत साधु फिरि, राज करी केहि भौन।
मोहिं जियतकिमिहोइनृप, तोहिं जियत कहै कौन ॥
तोहि जियत कहै कौन, कामवश अयशी मूढ़ा।
जीवत मृतक समान, सरुजहरिविमुखतिबूढ़ा॥
तव शोणितके तृपित पुनि, रघुपति के नाराच।
तेहिते राखत रोंकि रिस, नाहित बनत्यों साच ॥

छप्पय ॥

कह रावण जो होतहि रिस यहि विधि बल तेरे।
तौ कत करत्यो आइ चेराई पितुअरि केरे ॥
करत मातु सँग भोग शूरसत सो तप जानै।
मरत न शठ विष खाइ बात हमते बढ़ि ठानै ॥
नर बनरनकी कौन गति तीनि लोक मिलि जो चढ़ैं।
करौं समर सनमुख तभू कभू न पग पीछे परैं ॥
तब अङ्गद करि कोप पटकि दोउ भुज महि दीन्हे।
गिरा अधर मुख मूढ मुकुट कर में श्रुति लीन्हे ॥
प्रेरे प्रभु के पास धरे पवनज गहि आगे।
भूरिभानु सम तेज तराकि कपि देखन लागे ॥
राम विभीषण के शिरसि भूषित किये सँवार तित।
देखि देव बोले विमल जय जानकिपति प्रणतहित ॥
तव तमचरपति तमकि कह्यो धरि धरि हरि खाहू।
मिलि मारो दोउ बन्धु बङ्क कपि कलमत जाहू ॥
अब तक नीति विचारि बचन सुनि रोष न कीन्हा।

आखिर चढ्यो कपार अधिक अधमैं मुख दीन्हा ॥
निजबल वादत बलकि बल तिनकेअहै न अलप तन ।
पर तिय पर धन पर अहित करत डरतजो छामछल ॥
कं० तव अङ्गद कह चरण मम, जो कोइ देवै टारि ।
फिरैं राम निज धाम मैं, जाहुँ जानकी हारि ॥
जाहुँ जानकी हारि, सुनत घननादिक योधा ।
लगे उठावन भूरि भूरि, बल करि करि क्रोधा ॥
डगमगातमहिसुतलनभ, उछरसिंधुसुर बिकल सब।
बालि बलीके सुवन कर, पग नहिं हाल्यो नेकु तब ॥

छप्पय ॥

लखि रावण हिय हारि, आपु उठि कपिहि प्रचाल्यो।
चरण छुवत तेहि देखि, वचन युवराज उचाल्यो ॥
मम पद परे न ठीक, गहै किन हरिपद जाई ।
सुनि सिंहासन सपदि, बैठ मन माहिं लजाई ॥
कहसि कौनपनते इसे, क्यों नहिं डारत खाइ खर ।
हँसि कपि कुनप गहाइ निज, कहिकै चल्यो उड़ाइ अर ॥
सो० दीरघ एक प्रसाद, परपद परशत पतेहु सोउ ।
बहुरि चल्यो करि नाद, प्रभु पद नायो आइ शिर॥
दो० लखि बोलेरघुनाथहँसि, तात किहेउ भल काम ।
कह अङ्गदमम माननहिं, तव प्रभाव सब राम ॥

इति श्रीविश्रामसागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतअङ्गदरावण-
संवादोनाम पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
वर्णौं मानस मत कछुक, कोकिल कहनि बखानि॥

इहां दशानन अभय निशि, निवसित उरधा खार।
लागे निरतन निर्तकी, कौतुक करै अपार॥
राम लषण कपि भालु सब, हँसे समुझि अभिमान।
सहि न सके सुग्रीव बिन, बूझे कीन पयान॥
दश योजन कर बीच तहं, पहुँचे एक कुलाच।
सिंहासनते अवनि पर, पटक्यो मारि तमाच॥
गिरा न नीचे संभरिकै, भिरा क्रोध करि सोउ।
कर पद मुष्टिक पेंच शिर, निज निज मारे दोउ॥
यहि विधि बाजे याम भरि, पर कोउ सका न हारि।
लाग्यो माया करन तब, कपिपति चले विचारि॥

इहां न प्रभु सुग्रीवै देखा * भये शोच वश शोधि निशेखा
इतने में सो पहुँचो आई * बूझे ते सब बात जनाई
कह प्रभु अस अधिपै नहिंचाहीं * सो कछु होत रहा गहि काहीं
हम सिय लै ना करतेन ताता * देतेन त्यागि तुरत निजगाता
सुनि नाशत भव कुटुँब हमारा * नाथ कृपा को मारनहारा
अस कहि पाय रजायसु सोये * उठि प्रभात पुनि हरिपद जाये
द्वितियादिनकरि कटक निचारा * लङ्का घेरो चारिउ द्वारा
पूरब दिशि नल नील बिराजा * दक्षिण सेन सहित युवराजा
पश्चिम पवनपुत्र बलधामा * उत्तर रहे अनुजयुत रामा
मध्य सुकण्ठ सोह सँग योधा * चहुंदिशि लेत विभीषण शोधा
यहिविधि पुरनिरोध सुनिरावन * चहुंदिशिनिजभटलागपठावन
प्राची दिशा प्रहरत पठावा * याम्या द्वार महोदर आवा
मेघनाद दिशि गयो प्रतीचा * रहा दशानन द्वार उदीचा
विरूपाक्ष तिष्ठा मधि देशा * नारान्तक चहुं ओर प्रवेशा

हि विधि राखि रावनते बोला * गहि गहि लाउ भालुकपिलोला ॥
अंग बाधु कहि हाथ गहि, परशुमिरुद्ध असि सांग।
तोमर मुद्गर शूल सब, धाये दै दै धांग ॥
बाजे दाजन युद्धके, सुनि भट गने न बोध।
धावत तमिचर चाहिके, धाये कपि करि क्रोध ॥

गीतिकाछन्द ॥

करि क्रोध धाये भालु कपि गहि विटप परवत अनगने।
दौड़ि घोरते लागे चलावन अस्त्र शस्त्रादिक घने ॥
कोउगिरत कोउउठिभिरत कोउपुर फिरत कोउललकारई।
कोउदुरत कोउ भट गुरतनहिं कोउ हटत कोउ चाँदमारई॥
एकमाथ सब रघुनाथ बल पलवग गढ़ पर चढ़िगये।
बिकलाय असुर निकाय मरदे अपर लखि भागत भये ॥
पुर परेउ हाहाकार विपुल कुमार बनिता रोयहीं।
दुरि देहि गारी दशमुखे अब जासु हम दुख जोयहीं ॥
दशशीश निज दल विचल लखि सबते कहिसि गोहराइहै।
घर आइहै जो भागि सो मम हाथ मरा जाइहै ॥
सुनि सुभट मानि गलानि घूने जानि बध द्रोउ घोरते।
करि युद्ध कीन्हें असित वानर भगि चले गढ़ घोरतें ॥
एक एक दितिसुत दाबि कूदे ताहि नीचे राखिके।
बिन प्राण करि हरि बीर बोले बचे अरति भाखिके ॥
हनुमान पश्चिम ओर सुनि घमनादके पग मीरहू।
रथसूत हति त्यहि बिकल करि पुनि लङ्क आय प्रचारेहू ॥
इत कपि आयो बालि बच मिलि उभय रावण गृह गये।
लागे दहावन भवन जहँ तहँ रामगुण गावत भये ॥

कपि खेल करि डरवाइ राम कहाइ तिन्हैं निवारेहू ।
फादे बहुरि रिपु सैन महँ अगणित निशाचर मारेहू ॥
खरभर परी सब ग्राम तमिचर बाम शिर धुनि यों कहैं ।
उतपातके घर कीश दोऊ आजु घर आये अहैं ॥
कितनेक खग गहि पटकि रावण निकट दीन चलाइकै ।
कितने झिके प्रभु पास गति तेहि देत राम बजाइकै ॥
निशि जानि आये नाथ पहँ दोउ देखि प्रभु विनश्रमकरे ।
हनुमान अङ्गद गये थल सुनि भालु मर्कट सब फिरे ॥
अतिरोष पाइ प्रदोष बल धाये असुर जय बोलिकै ।
कपि देखि भिरे प्रचारि पुनि सब चले निशिचर डोलिकै ॥
निजहारि लखि अतिकाय आदिक अनिप निजमायाठनी ।
भयो निमिषमें अँधियार सूझ न हाथ भागी कपि अनी ॥
चहुँओरते मग मिलत नहिं कच रुधिर बरषत बालुका ।
लखि राम मारेउ विशिख यक मिटि गई माया मालुका॥
कपि रीछ पेखि प्रत्यक्ष लपटे बहुरि रिपु भागत भये ।
तब त्रसित आये रामपहँ पग परत सबके दुख गये ॥
यहि भाति बासर आठ निज निज घाट कपि कौनप लरे ।
तब कही रावण सचिवते कस करिय इत बहु भट मरे ॥
सुनि मालवन्त सुमन्त्र बोलेहु आपु जबते सिय हरी ।
तबते कियो बहु बात एकहु तात नहिं पूरी परी ॥
अबते समुझि भल जानकिहि गहि पाइँ प्रभु कहँ दीजिये ।
भये मूढ़ मारहुँ तोहिं का पर ओट मुख करिलीजिये ॥
कछु रीति पुछियत जाहि सो शठ अधिक भांति देखावई ।
जिमि कहै कोइ गिरि मेरुते झुकि जाहु आँधी आवई ॥

तेहि तुरत जान्यो कालबश रथ ।हि उठि घरका गयो ।
तब भैवनाद सदर्प सन्मुख आइ अस बोलत भयो ॥
देख्यो पराक्रम कालिह मम बहु आजु को निजमुख भनो ।
सुत बचन सुनि हरषान मन रण शूर सुनि करखा मनो ॥
उठि प्रात नौमी दिवस रथ चढि सुकृत कपिदल आयहू ।
कहँ राम कहँ सौमित्रि कहँ हनुमान कहँ कचजायहू ॥
सुनि भालु कपि धाये कुधर गहि देखि सो मारनलगा ।
लखि तासु बीनावरी सब अकुलाइ मर्कट दल भगा ॥
तब गिरे लषण प्रचारि बाणन मारि तेहि व्याकुल कियो ।
जब भयो बिन रथ सूत जानिसि मारि हुन मोको लियो ॥
तब ब्रह्मदत्त प्रचण्ड शक्ती लषण के हिरदय हनी ।
महि मुरछि गिरे अनन्त रहा उठाय कोर माया घनी ॥
किमि उठैं जगदाधार लखि हनुमान मुष्टिक मारेहू ।
पुनि लात मारे अचेत कोर धरि लङ्क ऊपर डारेहू ॥
निशि जानि तब हनुमान शेषहि लादि प्रभु तहँ लायहू ।
लखि राम हृदय लगाइ आतहि बिरह बचन सुनायहू ॥
हा ईश जगत न दीश मैं इक पोततें विरचा रहे ।
घटभङ्गि भायप मित्र गुणनि चढ़ाइ अब चोरा चहैं ॥
हा तात तजि पितु मातु बन मम बिपति आइ बटायहू ।
तिन साथ हौं सुरलोक लौं हँसि प्राण नाहिं पठायहू ॥
निज कर्म निज करतूति ते तुम तात सब सुकृती जये ।
मैं राखि तुम बिन देह दीरघ लादि शिर अपयश लये ॥
अस समुझि भरत कठोरता मम हृदयतें कुलिश भई ।
जो समुझि आप सनेह तुरतै दरकि दरज न ह्वै गई ॥

पितु मरण भामिनि हरण खग बध दहिन भुजा गँवायहू ।
सब भाति अपने बश शुचिमें कालिमा मैं लायहू ॥
जिन तुम्हैं सौंप्यो मोहिं तिनसों काह कहिहौ जायकै ।
प्रियबन्धु खोयो वाम हित तेहि लख्यो नाहीं लायकै ॥
कपि भालु जैहैं गिरि गुफन तब सग मोको रोच है ।
ह्वैहै विभीषणकी कबनि गति यही बड मोहि शोच है ॥
दुख देखि एकत न रह्यो मम अब हेत केहि करुणा तजी ।
जेहि देत नहि उठि बोध वीरन कौन बल धनु शर सजी ॥
धन धाम सुत तिय कुटुँब जग ह्वै जात पुनि पुनि आवहीं ।
पितु मातु सोदर जन्म भरि नहिं मिलत जबते जावहीं ॥
प्रभुवचन नर अनुहार सुनि कपि भालु सब हिय हारेहू ।
तब ऋक्षपति हनुमान कहँ तेहि समय जानि प्रचारेहू ॥
कह हनुमन्त जोरि युग हाथा * लषण शोच जनि कीजै नाथा
कहौ चन्द्रमै पट इव गारी * अबहीं देहुँ अमिय मुख डारी
कहौ बिनुधबैद्यहि गहि आनौं * मौत मारि सबके दुख भानौं
कहौ फोरि नभ रविहि निकारौं * रिपु तेहि द्वार राहु बैठारौं
कहौ ब्रह्म हरि हर का आनी * अमर अमर बुलवावौं बानी
कहौ पताल जाय हति नागा * आनौं अमी कुण्ड यहि जागा
कहौ देहुँ निज देहै त्यागी * अबहीं उठौं लषण घट जागी
दो० जो कछु तव मनमें रुचै, सो ह्वहिं आयसु होइ ।
नाथ शपथ क्षणमें करौं, प्रभु प्रताप बल सोइ ॥
पवनतनयके बचन सुनि, सहित राम कपि भालु ।
उठेजागिजिमिमन्त्रसुनि, सर्प ग्रसित द्रुम जालु ॥
बोले श्रीपति सत्य सुत, सब लायक तुम आहु ।

चाही वैद्य सुखेन है, अरिपुर आनन जाहु ॥
पहुँचे तुरत बिचारि तेहि, ल्याये सदन समेत ।
तासुवचनसुनि पुनि चले, शीघ्र सजीवनि हेत ॥
कालनेमि मग मारिकै, सब गण साठि हजार ।
रोंकत लूम लपेटि सोइ, देखा जाइ पहार ॥
देखी जहँ तहँ औषधी, तब मन मांझ बिसूरि ।
लीलै चले उठाइ गिरि, दलि दशमुख भट भूरि ॥
किधौं अपत्र पलाश बन, किधौं प्रभात लखाइ ।
छाँडि शम्भुगण बहुरिमग, दह्यो अवध पर आइ ॥

देखि भरत मन असुर बिचारा * बिनु फर बाण हृदय महँ मारा
कपि महि गिरत रामसुख भाखा * पवन साधि द्रोणाचल राखा
तेज तासु पुर गयो समाई * ज्यों सरिता सागर महँ जाई
दौरि भरत गहि हृदय लगावा * जाग न जब तब बिलखिसुनावा
जो रघुपति पद प्रीति हमारी * बहुरि होइ अनुकूल खरारी
तौ कपि होउ बिगत श्रमपीरा * सुनि उठबैठ राम कहि बीरा
भरत रिपुहनै लखि श्रम छायो * का घर राम लषण फिरिआयो
पुनि पहिंचानि पुलकिशिरनावा * पूछा सब वृत्तान्त सुनावा
व्याकुल ह्वै बोले धिग हमहीं * प्रभुके काज न आयों कबहीं
कुसमय जानि कह्यो धरिधीरा * चढ़ि शर सपदि जाहु प्रभुतीरा
सुनि सह गर्व बैठ शर जबहीं * सुमन समान उठायो तबहीं
देखि प्रभाव उतरि कपि परेऊ * शीश नवाइ प्रशंसा करेऊ
तव प्रताप उर धरि रघुबीरा * जैहौं अतिलाघव प्रभु तीरा
भले भरत कहि बोले ताता * पाछे सुनि दुख पैहैं माता
तेहिते चलि दीजै समुझाई * आइ भवन सब कथा सुनाई

सुत घायल सुनि साधु सुमित्रहि * भयो हर्ष अरु शोच विचित्रहि
बोली धन्य सुवन मम आजू * जूझेऊ समर स्वामि के काजू
पर इक कलक होत बडि ताता * कुसमय भये राम विन भ्राता
पुनि सुभाय रिपुहन ते कहेऊ * जाहु तात तुम प्रभु पहँ रहेऊ
सबविधिकिह्यो भजन सोइसच्चा * नरतन को फल याही बच्चा
सुनत उठे मुद सहित प्रकासा * विधिवश सुटर टरे जनु पासा

दो० अम्ब अनुज गति देखि मन, मानी सबन गलानि।
बोल्यो रघुपति मातु तब, कपिते धीरज आनि॥
प्रथम भेंटकहि कह्यो हमि, कह्यो कठिन उर अम्ब।
लाल लक्ष्मणते ललित, लागत अहो कदम्ब॥
बोले मारुतसुवन तब, सकल धरहु मन धीर।
कुशल जानकी लषण युत, ऐहैं घर रघुबीर॥
अस कहि चले समेत गिरि, आये जहँ भगवन्त।
औषध कीन सुखेन उठि, बैठे तुरत अनन्त॥
कृपासिंधु बन्धुइ मिले, मिट्योसकल दुख भार।
मुदित भालु कपिजन लह्यो, समर पयोनिधि पार॥
भेंटि सचिव बूझन लगे, बड दुख पायो तात।
कहत न क्षत मेरे लग्यो, पीर भई प्रभुगात॥
होत पदिकके कान्ति जिमि, दुख सुख लहै सुवार।
शुक मुख जानत पाठ करि, अर्थ पढ़ावन हार॥
विमल वचन सुनि शेषके, कहनलगे सब बीर।
राम लषणकी प्रीति कै, उपमा क्षीर न नीर॥

इति श्रीविश्रामसागरेलक्ष्मणहितविरहवर्णनोनाम
षड्विंशोऽध्याय॰ ॥ २६ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु, गणप गिरा सुखदानि।
वर्णौं मानस मत कछुक, सार रमायण जानि॥
पुनि वाही थल पवनकुमारा * धरि आये गिरि वैद अगारा
सुनि रावण मन परेउ खँभारा * प्रात लगे कपि चारिहु द्वारा
मेघनाद पुनि रथ चढि आवा * वर्षि बाण कपिदल विचलावा
दश दश विशिख सबनके मारे * जहँ तहँ भट करहत हैं डारे
पुनिविधिवचन लागि दोउभाई * नागफास ते लीन बँधाई
मुदित पिता ढिग लङ्कहि लावा * रावण देखि परम सुख पावा
विविध प्रशंसा करि सुत केरी * सीतहि जाइ देखाइसि टेरी
प्रभुबन्धन लखि सियअकुलानी * गरुड़ै तब पठयो विधि ज्ञानी
आइ सकल पन्नग विचलाये * पुनि दोउ बन्धु कटक महँ लाये
अस्तुतिकरि सुनि रघुपतिवचना * हरिपुर गये गुणत प्रभु रचना
इहा विभीषण हनुमत दोऊ * शोधा दल अचेत सब कोऊ
कह्यो विभीषण ऋक्षप तेरे * है कछु चेत चलहु गे शेरे
जामवन्त तब वचन बखाना * कहो अहैं नीके हनुमाना
सुनि हनुमेश कह्यो धरि धीरै * पूछेउ नहीं लषण रघुवीरै
तजि कपिपति युवराज समेता * हनुमानै बूझेउ केहि हेता
जो होइहै जीवत हनुमन्ता * तौ जानो सब जियत अनन्ता
जो कदापि गिरिगे हनुमानौ * तौ तुम मृतक सबन कहँ जानौ
सुनि लङ्केश सरस सुख पावा * पवनतनय चरणन शिरनावा
आयसु होइ करी सोइ बाता * लावहु चारि औषधी ताता
दो० इक विशल्यकरनी अहै, युगसांवरिनी नाम।
तीसरि संजीवनि पुरत, सधानी अभिराम॥
सुनि मारुतसुत तुरतै धाये * आनि जरी सब सुभट जिआये

भये सबल सब गाजन लागे * देखि राम लक्ष्मण अनुरागे
हरिदिन चढि घुमराच मुरारी * आइ कीन अतिसगर भारी
भये विकल कपि भालु अपारा * द्वादशी दिन पवनज मारा
आवा बहुरि अकम्पन योधा * महासमर कीन्हिसि सहक्रोधा
तेरसि दिन गर्जेहु युवराजा * बहुरि प्रहस्त आइ रणगाजा
किहिसि मारि शर जर्जरगाता * परिवादिन तेहि नील निपाता
तीनि दिवस तब लरा कपीशा * पचम्यादिन सुनि दशशीशा
कुम्भकर्ण कहँ आनि जगावा * नानाविधि करि कुटिल उपावा
पुनि बहुभाति कराइसि भोजन * बोला सो निज कहो परोजन
कह रावण हैं मानुष आये * शत्रु समुझि हम तिय हरिलाये
सेतु बाधि उतरे यहि पारा * सुभट समूह किहिनि सहारा
मिला विभीषण जाइ अपाना * मोहिं तोहि नहिं नेकु डराना
कपिन सहित तेहि भक्षण कीजै * सहित कुटुम्ब मोहिं सुख दीजै
सुनि घटकर्ण कह्यो सुरशाली * प्रथमपूछि किन किहेउ कुचाली
यक दिन बात जनाई थोरी * प्रकटी नहिं सीताकी चोरी
त्रिभुवनपति सों बैर बढ़ाई * पुनि सुख चहत कहा अब भाई
ताते त्यागि कुटिलपन येहू * जगदम्बा लै रामहि देहू
जेहिते करौ सकल सुख भेरी * सुनि बोला रावण मुख हेरी
कितौ करौ चलि सगर भारी * कितौ रहौ पुनि सोइ सँभारी
नाहिंत भीरु विभीषण जैसे * परो पाइँ रिपु पायन तैसे
मैं निजबल विरोध यह ठाना * करिहौं तिमि सब कर कल्याना
सुनि घटकर्ण काल कृत जानी * प्रभु दर्शनहित मनमें आनी
अनुज भेटि समोद सिधावा * लखि रावण बहु सुरा पियावा
करि मदपान भयो मतवारा * चला कहत कहँ भूपकुमारा

हाय हाय करि खेचर भागे * लखि तेहि मिले बिभीषण आगे
चरण परसि निज नाम बतावा * सुनि सराहि प्रभुपास पठावा
कहिनि नाइ रघुपति पदमाथा * कुम्भकर्ण यह आवत नाथा
रावण बन्धु विपुल बल लाहू * जो त्रिभुवनमें गनत न काहू
उडैं अकाश व्योमचर मारे * धँसे पताल फणिक फण फारे
मणि उतारि लावत है कैसे * उपवन ते पुष्पन को जैसे
बिनही प्रलय प्रलय करिदेतो * जो षटमास न सूतत येतो
पर प्रभु भृकुटी कुटिल निहारी * लोप होत भव का तमचारी
सुनि कपि भालु चले करि हूहा * डारिनि तेहि शिर शैलसमूहा
सुमन सरिस बर्षत जिय जानी * धावा मुख पसारि दोउ पानी
कोटिन कपि चपिगे तर ताके * कोटिन कर समेटि मुख फाके
कोटिन श्रवण नाक मग माखी * निकसहिंजिमि बाबिनते पाखी
कोटिन दिशा दिशा उडि भागे * कोटिन प्रभुके पाछे लागे
कोटिन हनुमन्तादिक बोले * कोटिन गुणपट्ट रावत डोले
कोटिन गये समुद महँ बूड़ी * कोटिन काटि चलाये मूड़ी
आगे लखि रघुनाथै पावा * करि प्रणाम मन बचन सुनावा

दो० ना मैं आहौं ताडका, ना मैं अहौं सुबाहु।
ना हौं धनु मारीचमृग, ना हौं खर कपिनाहु॥
मैं हौं देवनकेर रिपु, आइ करौ रण राम।
ज्यहि चढ़िआयोगर्वकरि, सो अब पूजौ काम॥

सुनि सुग्रीव लात यक मारी * पसरि तिन्हैं पुर चला प्रचारी
लखि सब हनन लगे यक साथा * सास पाइ निकस्यो कपिनाथा
श्रवण नाक कर मुख ते काटी * गयो राम पहँ असुरै डाटी
चला रुधिर तब देखि लजाना * फिरकपिनिकरकिहसिबिनप्राना

हनूमान निज लूम लपेटी * डारिन सिंधु माझ जिमि फेंटी
धावा तब करि क्रोध कराला * मारि कीशसब किहिसिविहाला
नारद आइ कही असि बाता * वधउ वेगि प्रभु प्रोक्त बिधाता
शीश नाइ जब कीन पयाना * तब हरि धनुष बाण सधाना
मारे शायक विपुल प्रचारी * धावा मुख पसारि गिरिधारी
लखि राघव भुज काटि गिराई * लिहिसि बामकर रोउ उड़ाई
बिनभुज गिरिमन्दर सम धावा * शीश काटि प्रभु लङ्क बहावा
लुण्ड मुण्डबिन चल्योप्रचण्डा * तब प्रभु काटि किये युग खण्डा

दो० देखि देव बरषे सुमन, हरषे मुनिन समेत।
मुदित भालु कपि कटक मधि, सोहे कृपानिकेत॥

अनुज शीश लखि रावणशोचा * अशनबसन त्यहि भये अरोंचा
रोवहिं रमणि बरणि गुण ताके * चला महोदर लै भट बाके
कपिदल आइ समर अति ठाना * एकौ दिवस हता अनुमाना
फाल्गुन कृष्ण आदि दिन भोरा * चढा नरान्तक लै भट घोरा
नाना बिधि त्यहि युद्ध मचावा * जाना कपिन काल निजुआवा
हरिबल पाइ लरत तेहि चीन्हा * फनिदिन निधनशरासनकीन्हा
तब अतिकाय आय रणठाना * अष्टम्यादिन भे गत प्राना
कुम्भकरण सुत कुम्भ निकुम्भा * आइ किहिनि दोउ युद्ध अरम्भा
लरत लरत दिन पाच बिताये * तेरसि दिवस गये दोउ पाये
तब खर सुत मकराक्ष सिधावा * कपिदल दलतलषण पहँ आवा
मारे अस्त्र शस्त्र भट नाना * कटै न बपु बिधिकर बरदाना
झपटिलषणकहँनिगलिसिधावा * मनहु मयकहि तुदन दुरावा
हाहाकार भयो दल भारी * निकसे लषण उदर तेहि फारी
फाल्गुन शुक्ल प्रथम दिन जूझा * भा रावणै मोह यश बूझा

मेघनाद लखि बचन सुनावा * केहि हित तुम अस खेद बढ़ावा
जब लग मैं जीवत सुत तोरा * तब लग करहु राज्य बरजोरा
देखौ आजु मोर सग्रामा * अस कहि चला दिव्यरथ तामा
इकअट्ठ्यपुनि निशि नभगामी * आवा जहा भालु कपिस्वामी
गर्जा प्रलय पयोद समाना * सुनि कट्ट शब्द सबनभय माना
अस्त्र शस्त्र पुनि बर्षन लागा * मघा नखत सम असि शर सागा
गहि गिरितरुकपिजाहिं अकासा * मिलै न कोउ तब फिरैं उदासा
भये विकल कपि भागन लागे * जहा जाइँ मग मिलै न आगे
अङ्गद हनूमान नल नीला * शेष सुकण्ठ विभीषण कीला
औरौ दुर्धरादि जे बीरा * मारि सबनकहँ किहिसि अधीरा
पुनि अतिसमर रामते ठाना * नागफास बश भे भगवाना
जासु नाम भव बन्धनहर्ता * सो कि होइ परवश यशकर्ता
समय समान चरित प्रभु करहीं * अस विचारि बुध भर्म न परहीं
देखा सबन विकल घननादा * तब भा प्रकट कहत दुर्वादा
देखि शत्रुपति चले प्रचारी * तब तेहि तीव्र शक्ति ताकि मारी
जामवन्त सोइ मारि गिरावा * चरण पकरि पुनि लङ्क पठावा
गरुड़ आइ प्रभुबन्धन काटा * भे सब सकल राम जब डाटा
गहि गहि गिरि गुरुपादप धाये * मारि सकल निश्चर बिचलाये
मेघनाद मूरछाते जागा * जाय अजयमख करन सो लागा

दो० जानि विभीषण प्रभुहिसों, कह्यो जोरि यग पानि ।
इन्द्रजीत नि कुम्भ ले, गा मख हित रिस आनि ॥

सो० जब लगि होइ न सिद्धि, तबतक ताको मारिअपु ।
पाछे पाइ प्रसिद्धि, बेगि न जाइहि जीतिरिपु ॥

सुनि प्रभु कहा लषण ते तबहीं * जाहु तात लै कपिदल अबही

मख विध्वंसि पुनि मारेहु ताही * भले नाथ तव आयसु आही
अस कहि सजि धनु शर तूणीरा * चले सग हनुमत युत बीरा
जातहि कपिन भङ्गमख कीन्हीं * मारत लखि धनुही तेहि लीन्ही
द्वै शर जामवन्त के छेदे * तीनि बाण अङ्गद के भेदे
चारि विभीषण अङ्गन फारे * पाच विशिख पवनजके मारे
एक एक शर सबके दयऊ * पुनि लक्ष्मण पर छाड़त भयऊ
सकल अनन्त काटि महि डारे * पुनि निजबाण कराल पँवारे
आवत लखि शरभयो अलोपा * छाड़िसि बहुरि शूल करि कोपा
तुरत कीन शतखण्ड अहीशा * तबयकगिरिगहि डारिसि शीशा
रज सम करि सोऊ महि पारा * अस्त्र शस्त्र पुनि तजेसि अपारा
सो तब लषण निवारत भयऊ * यहिविधि बीति मासदिन गयऊ
महायुद्ध लखि सुर मुनि सारे * हर्ष शोचवश होंइ बिचारे
तब लक्ष्मण करि कोप कराला * छाड़ेउ एक नराच विशाला
जातहि शिर भुज काटेउ तासू * गर्जत पुनि मारे शर आसू
राम लषण कहि सह अनुरागा * तेरसि दिवस भयो तन त्यागा
सुनि बोले अङ्गद हनुमाना * धन्य मातु तव तोहिं बलवाना
कटि तनु परेउ समर महि तामा * दहिनी भुजा गई तेहिधामा
शिर लै कीश राम पहं आये * अनुजहिलखि प्रभु हृदयलगाये
फेरि कमलकर छत हरिलीन्हा * बरषे देव सुमन जय कीन्हा
पुनि रघुपति कपि भालु बिलोके * भये सकल श्रमरहित बिशोके
अरिपुर मेघनाद की नारी * पति भुज लखि मन सशय धारी
दीन्हिकमल सर कर गहिलीन्हा * लक्ष्मण की कीरति लिखिदीन्हा
कोटि कलप जो योग कमावै * सोउ न लषणकि समसरि पावै
सुनत सखिन युत रोवन लागी * आजु दशानन भयो अभागी

करिहैं कीश मुदित पुर फेरी * छूटि बन्दि सब देवन केरी
कोइ जय लहै हमैं का करना * जलो जगत जो आपन जरना
अस कहि मुज पालकी चढ़ाई * आपु बैठि रावण पहँ आई
साशु श्वशुर पद शीश नवाई * रोदन करि सब कथा सुनाई
जो पावौं निजपति कर माथा * तौ रचि चिता जरहु तेहि साथा
मयतनयादि जहा तक रानी * लगीं विलाप करन दुख मानी
सुनि दशमुखहु मुरछिमहिपरेऊ * पुनि धरि धीर बचन अनुसरेऊ
सुमुखिसमुझिजियकरहुनशोका * प्रकट नाम याको मृतुलोका
मातु भूमि पितु नीज बेसारा * काल किसान जीव तृण भारा
पालत पुनि लूटत सोइ खाई * कौन कौन हित रावै धाई

दो०, रह्यो न कोई रहैगो, पुनि कछु जाइ न साथ।
धन्य भाग इन सबनके, जो जूझे प्रभु हाथ॥
सब सम जानत मोहि तू, मैं हौं अतिबलवान।
देखौ कालिहि कपिन कर, मेटिहौं जाइ गुमान॥
बालिबिभीषणपवनविधि, तापस नील कपीश।
इन सब शशिन सहित तव, आनौं पतिकर शीश॥
बड़ विमोह वश जानितेहि, कछु न उत्तर दीन।
नारदके वर बचन तव, मयजा वरणन कीन॥
ताते निजहित राम पहँ, जाहु सकल तजि शङ्क।
होइ भूप धर्मज्ञ जहँ, तहँ कोउ रहै कि बङ्क॥
बहुरि रहततहँश्वशुर तव, भय न कछु शिर नाइ।
चली यान चढ़ि भटन युत, पहुँची कपिदल जाइ॥

सो० लखि हरषे कपि भालु, बिन श्रम आइ जानकी।
मिटा सकल जञ्जालु, भयोसुयशहमसबनकहँ॥

यहि विधि गई जहा रघुराई * नखशिख लखि दोउबन्धुलुनाई
कीनि दण्डवत विनय समेता * तब लङ्केश कहा सब हेता
सुनि कृपालु बोले अनुरागी * जो मावै सो लीजै मागी
कहौ देहुँ पति तोर जिवाई * भोगहु राज्य कल्प भरि जाई
सुनि सुर मुनि कपि भालु डराने * बहुरि सुलोचनि बचन बखाने
कृपासिन्धु मैं दीख बिचारी * यहि मरने ते जीवन खारी
बिष बदले जो अमृत पावै * लेइ फेरि सो मूढ़ कहावै
ताते नाथ देहु पति शीशा * दीन देवाइ तुरत जगदीशा
दो० मस्तक पाइ हँसाइ तहँ, लाई सागर पास।
भई सती पति सहित पुनि, किहिसि सत्य पुरबास॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास-
रामसनेहीकृतमेघनादवधसुलोचनासतीवर्णनोनाम
सप्तविंशोऽध्याय ॥ २७ ॥

दो० सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
बर्णौं मानस मत कछुक, सार रमायण जानि॥
तेहि दिन भयो न समरकछु, दशमुख शोचै लीन।
अहिरावणको याद करि, आकर्षण जप कीन॥
दण्डचारि महँ सो तहँ आवा * रावण लखि निज हाल सुनावा
सकल सैन कपि भालुन मारी * तात रही यक आश तुम्हारी
सुनि बोला यह केतिक बाता * जैहौं लै पताल दोउ भ्राता
देहौं बलि कामद कहँ सोई * जानेहु नभ प्रकाश जब होई
अस कहिविरचि विभीषणरूपा * गयो जहा लक्ष्मण सुरभूपा
सोवत लाइ लै गगन उडाना * दशमुख देखि सत्य तेहि जाना
यहिविधि सो लैगयो पताला * प्रभु बिन भे कपि भालु बिहाला

तब सब हाल विभीषण काहा * अहिरावण लैगा नरनाहा
रहत नागपुर जो कोइ लावै * सो सबको दे प्राण जियावै
कह हनुमान तजहु सब शोका * लैहौं प्रभुहि ढूंढि तिहुँ लोका
चले खबरि मग लगते पाई * क्षणमहँ अरिपुर पहुँचे जाई
द्वारपाल मकरध्वज ठाढा * तासु पूछ तेहि बाध्यो गाढा
पुनि लघु बनि देवीमठ गयऊ * होत होम तहँ देखत भयऊ
तब तहँ विकटरूप धरि लीन्हा * गै धँसि शक्ति सुथल थल दीन्हा
देवि सहित कुल हरषा राजा * प्रकटी देवि भवा अब काजा
नाना विधि मेवा पकवाना * आनि चढ़ावैं पुरजन नाना
पावनि वस्तु सकल कपि खाई * पुनि बलिहित आने दोउ भाई
बाजहिं बाजन गावहिं नारी * सुनि निश्चर सब होहँ सुखारी
तब प्रभुते बोले शठ सोई * सुमिरौ जो कोइ तुम्हरे होई
सुनि रघुपति तब कीन बखाना * यहि अवसर चहिये हनुमाना
मारन हित शठ भे सब ठाढे * घनसमान कपि गर्जेहु गाढे
निश्चर डर अस कहत विशेखी * क्रोध कीन देवी नर देखी
बहुरि गर्जि कपि वपु प्रकटावा * दोउ भैयन दोउ कन्ध चढावा
निजलँगूर कर कोट बनाई * असि लै मारहु खलसमुदाई
अहिरावण शिर काटि कुमारा * देवी की आहुति में डारा
औरो असुर मिले ते मारे * पुनि लै प्रभुइ चलहु लखि द्वारे
विनय कीनि मकरध्वज भाये * राज्य देइ निज सैनहिं आये
लखिकपि भालुमुखीसब भयऊ * बूड़त मनहु थाह मिलिगयऊ
हनुमानै सब लगे सराहै * कह प्रभु इन विन को सम आहै
बोले पवनतनय शिर नाई * आपु चहै तेहि देउ बड़ाई

दो० यहा दशानन दूतमुख, सुनि अहिरावणनास।

एकादिन निज सैन लखि, चढ़ा समर बिनत्रास ॥
बाजहिंबाजन विविध विधि, अशकुन होइँ अपार ।
गनहिं न एकहु गर्बवश, महिसहिसकत न भार ॥

निज निजनाथ केरि जयभाषी * धाये इत उत भट अभिलाषी
कपिकर मुगदल सगम भयऊ * जनु घनश्यामश्वेतमिलिगयऊ
गर्जहिं मनहुँ बाजने बाजैं * चमकहिं खड्ग छटासी राजैं
बर्षहिं बाण बूद जनु भारी * छूटैं तोप गाज जनु पारी
भयो अँधेर उडी रज कूरा * इन्द्रधनुष बहु लस लगूरा
गिरहिं सुभट मन्दिर हहराई * शोणित सरित चली उमडाई
भुज अहि कच्छप चर्म सुहावे * कुञ्जर अश्व ग्राह द्युति पावै
फिरत चक्र आवर्त अनेका * उछरहिं शीश सूसि ढिग एका
भूषण भेक उपल सम रेनू * धनुष तरङ्ग बहै पट फेनू
कर पद मीन जु केश सेवाला * दोउदल कूल बिटप रथ जाला
बहु भट बहैं चढे खग नीचा * जनु नेवार खेलहिं सरि बीचा
खैंचैं आत गीध गहि तीरा * बशी मनहु लगाई कीरा
भूतरु प्रेत पिशाच पिशाची * मज्जहिं मुदित योगिनी नाची
बीर विनोद लहैं सर देखी * कायर त्यागहिं प्राण विशेखी
देखि कठिन कोपेहु हनुमाना * मर्दन लगे निशाचर नाना
गज ते गज घोरन ते घोरा * खरते खर रथ ते रथ तोरा
महिष ते महिष ऊट ते ऊटा * पैदर ते पैदर दल कूटा
कोटिन कर शिर लातन मारे * कोटिन पटकि सिन्धुमहँ डारे
कोटिन हाथ पायँ बिन कीन्हे * कोटिन फेंकि गगनमहँ दीन्हे
हँसि प्रभु कहैं लषण ते हेरी * देखहु लरनि पवनसुत केरी
निजदलविचलदेखिदशशीशा * धावा लै धनु शर भुजबीशा

जहँ तहँ उड़े कीश भय पाये * यथा पात बौंडर के आये
अङ्गद हनुमदादि भट भारी * लै लै गिरि मारे यकबारी
फूटहिं पर्वि सो मुरै न नेका * लाग निपातन कीश अनेका
दीन्हिंसिपूरि दशहुदिशि बाना * भागत कतहुँ न मिलै ठिकाना
बिकल पुकारहिं जहँ तहँ ठाढे * पाहि राम लक्ष्मण दिन गाढे
सुनि लक्ष्मण धनुबाण सिधारा * सरिस आइ सन्मुख ललकारा
होउ सजग अब सुनु दशमालू * पहुँचेउँ आइ तोर मैं कालू
सुनि तेहि अस्त्र शस्त्र बहु मारे * सकल काटि सौमित्रि निवारे
पुनि छाडे निज बाण अहीशा * सूत समेत भयो रथ खीशा
शत शतविशिखदशौ शिरमारे * मनहु चले बहि रुधिर पनारे
पुनि शतशर छाती महँ दीन्हें * बीसहु भुज बरही सम कीन्हें
धावा बिकल क्रोध करि भारी * बिधिकीदीन्हि सागि तकि मारी
लागत उर लक्ष्मण महि परेऊ * रहा उठाइ न नेकहु टरेऊ
व्यहिशिररजसमभुवनअपारा * तेहि उठाइ किमि सकै लबारा
देखि पवनसुत मुष्टिक हनेऊ * ह्वै अचेत अवनी ठनमनेऊ
प्रभु लै गयो जहा भगवाना * देखि दशानन अचरज माना

दो० चैत्र कृष्ण नौमी दिवस, अनुजै लखि रघुबीर ।
कहौ कालके काल तुम, सुनत उठौ रणधीर ॥
पुनिरिपुसन्मुखजाइतेहि, बिकल कीन शर मारि ।
लखिअचेतनिजनगरतय, लैगा सूत निकारि ॥

भवन दीख जब रावण जागा * निज सुमन्त्र कहँ खोजन लागा
रे मतिमन्द भीरु धिग तोहीं * रणते निमुख कराये मोहीं
अस कहि दशमी दिवस सचेता * लाग करन मख बिजयके हेता
सुनि प्रभु भट पठये बहु आसू * करहु निध्वस जाय मख जासू

अङ्गद हनुमदादि कपि बीरा * कौतुकही आये तेहि तीरा
लखि लागे सब मारन लाता * उठै न सो स्वारथ मन राता
तब कपि करन उपद्रव लागे * दिये छोरि हय गय मृग भागे
फारे पट बितान घट फोरे * छत्र चमर व्यञ्जन गहि टोरे
लखि मन्दोदरि उठी रिसाई * दुरी चित्रशाला महँ आई
अङ्गदहू घुसि गे तहँ फूले * विविध चित्र पुतरी लखि भूले
धाइ धरैं पुनि तर्जैं निहारी * पावै किमि सुन्दरि बनचारी
देखि हँसी सुरकन्या एका * गहत बताइ सुनारि अनेका
तिहीं दिखाई रावण रानी * असुर निकट लाये गहिपानी
भूषण बसन परे सब छूटी * कामपुरी जनु शिवगण लूटी
आरत बचन पतिहिं लखि कहई * जो जस करै सो तस फल लहई
सीतहि दिह्यो झूठ दुख भारी * देखहु निरगति साच हमारी
नारि बचन सुनि उठा रिसाई * गये भागि कपि जहँ रघुराई

त्रिभङ्गीछन्द ॥

गे भागिकपीशा तब दशशीशा गहि भुज बीशा धनु तीरा।
सँग सेन अपारा चलेउ जुझारा मद मतवारा रणधीरा ॥
इत प्रभ सुर तीरा कह्यो अ रीरा मेटहु पीरा वेगि भले।
कटि कसि पटबांधा धनुशर साधा दलत प्रबाधा हेतु चले॥
लखि इन्द्र अजाना स्यन्दन आना पवन समाना देखिप्रभू।
हरिदिन तेहिमाहीं चढ़िसबपाहीं कहो कि नाहीं नीकअभू ॥
सुनिसब बनचारी भये सुखारी देखि मुरारी कोप ठन्यो ।
कहि बचन कठोरा शायक घोरा तजिचहुँओरा कीशहन्यो ॥
ह्वै बिकलपराने सकलठिकाने लखिअकुलाने विशिखभरे ।
तब राम सुजाना पावक बाना छांडे नाना सकल जरे ॥

दशमुख दिशि देषऊ रथ बिन भषऊ दूसरलषऊ क्रोधयुतं।
मुनि शरवर पाटे सब प्रभु कटे निशिचर डाटे बालिसुत ॥
कटिकटिसटपरहींपुनिठिलरहीं बलकरिधरहीं यकखलै ।
कोटिन बिनमाथा धावहिंसाथा कहँरघुनाथा शिरबोलै ॥
धरुधरुधरु मारू पकरि पछारू करहु अहारू कोउ न बचै ।
अति चञ्चलकीशा बधवनरीशा जो बागशा भूलि रचै ॥
धाये कपि भालू जनु वपु कालू मारिबिहालू असुर किये ।
नख उदर बिदारैं आंत निकारैं निजगर डारैं हर्ष हिये ॥
लखि रावण कोपा प्रभु रथ तोपा देखि अलोपा देवडरे ।
हय सारि गिराये राम उठाये सन्मुख धाये क्रोधकरे ॥
करपेउ शरदावा श्रुतितक आवा तब करवावा यों बोला ।
भाजन हित हारू रहन अगारू राम पछारू क्यों डोला ॥
सुनि कहौं जु आहू पूछन जाहू दशशिर डाहू की एका ।
प्रभु सकल बताये अस कहि धाय जाइ गिराय शिर तेका ॥
फिरि भये नवीने पुनि प्रभ बीने पुनि हर दीने पुनि काटे ।
पुनि पुनि इमिजामैं राम गिरामैं दशदिशितामैं भरिपाटे ॥
जब अगर रिसाई साग चलाई लषि रघुराई आपु सही ।
चहिचल्योबिभीषनजटेरिपुतीषनवदतसुशीषननीचगही ॥
अस कहि ललकारा गदा प्रहारा लगत पहारा सरिस गिरा ।
मुखश्रवणनिदाहाशोणितबाहाउठिकरिहाहाबहुरिभिरा ॥
मारे यक एकै अस्त्र अनेकै हरिबल छेकै अमित लखा ।
पवनज तब धायो मारि गिरायो प्रभु दिग आयो रामसखा ॥
रावण हनुमाना मेरुसमाना भिरत बहाना असुर ठने ।
नभ सुर मुनि हेरी दुनदुन केरी जय जय टेरी टेरि भने ॥

कपि भालु निहारे हनुमत हारे गिरि तरु धारे सबै धाये ।
लखि निशिचर भूपा धरिबहुरूपा कीश अनूपा बिचलाये ॥
भागत भट घेरहिं आतुर टेरहिं मुखमें गेरहिं भुज बीशा ।
दुरि देव पराने बहु रिपु जाने रहे ठिकाने अज ईशा ॥
व्याकुललखिबन्दरहँसिकमुकन्दरसबदशकन्धरनाशकियो।
पुनि एक निहारा मर्कट धारा धाइ अपारा असुर छियो ॥
दो० पुनि छाडे निज बाण प्रभु, काल सरिस बध हेत ।
लागे काटन असुर के, यथा हाथ तृण खेत ॥
सो० सात दिवस दिन राति, बाजेउ घण्टा धनुष कर ।
हरि पूजा की भांति, भये सुभट सहार सब ॥
कुं० घण्टा की परमान अब, सुनु जेहि संगर बीच ।
नाग अयुत दशलाख हय, रथी डेढ़ शत मीच ॥
रथी डेढ़ शत मीच, लहै पैदर दश कोटी ।
तब यक्ष नटै कबन्ध, कोटि पर खेचर चोटी ॥
खेचर नाचहिं कोटि, बिना शिरके निष्कण्टा ।
तब राघव के धनुष केर, बाजत यक घण्टा ॥

श्लो० ॥ नागानामयुत तुरङ्गनियुतं सार्द्धं रथीना शत पत्तीनां दशकोटिसङ्खियतमे नृत्य कबन्धारिणे । एव कोटिकबन्धनर्तनविधौ नृत्येत्तथा खेचरस्तेषां कोटिकनर्तने रघपतेःकोदण्डघण्टारव. ॥१॥ एव सप्तदिनं ख्यात स्वर्गे मर्त्ये रसातले । भवेद्भूरिभटध्वंसो रामरावणसङ्गरे ॥ २ ॥

दशमुख आपुहि जानि अकेला * लाग करन माया कर खेला
भूत पिशाच प्रेत बैताला * अमित जन्तु प्रकटे त्यहि काला
लीन्हे धनुष शिलीमुख चोखे * मारु मारु धरु बोलहिं रोखे

नितहि कराहि सिंधुर कर पाना * गहे कपाल योगिनी नाना
मुख पसारि दौरे हम खावा * भागे कपि तहँ देखहि दावा
ऊपर ते बरषै बहु बालू * भये थकित सब मर्कट भालू
शप सहित कंत होय खरारी * मुनि प्रभु माया सकल निवारी
देखि सुभट धाये करि हूहा * प्रकटे तेहि कपि भालु समूहा
सन्मुख चले विटप गिरिधारी * देखि ईश बोले हिय हारी
सब मर्कट ह्वैगे रिपु ओरा * कौन कुशल जो विधि परफोरा
आपुहि आपु लखै नहिं कोई * भागे अब कछु जीति न होई
बहुरि हरी माया भगवाना * तब तेहि रचे लषण हनुमाना
लखि कपि भालु सकहिं नहिं मारी * घेरिनि रामहि धनु गिरिधारी
डर देवन कपि प्रभु हर्षाने * पुनि समूह शायक सन्धाने
काटत रिपु शिर काटन लागे * जनु समूह शर ते खग भागे
रहे पूरि नभ केतु समाना * छेदे निकर एक एक बाना
लोकलोक गिरि गिरिवन जहँ हैं * भयो राम रावण रण तहँ हैं
सुर नर नाग सबै अकुलाने * जाय कहा कोउ सुखद ठिकाने
मारु मारु धरु धरु शिर बोलै * काल व्याल से खेद डोलै
प्रभु काटत शिर बारहिं बारी * मनहु अनार उड़ै फुलवारी
सो० यहिविधि क्षीणत माथ, बीते अष्टा दिवस तब।
बोले श्रीरघुनाथ, सुयश देन हित घटजसे॥

इति श्रीरामरावणसमरवर्णनोनामअष्टाविंशोऽध्याय ॥ २८ ॥

दो० सुमिरि राम शिव सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि।
सार रमायण केर मत, कहा इतिहास बखानि॥

नाथ थकित भे भुजा हमारे * तद्यपि असुर मरत नहिं मारे
ताते यतन करहु जेहि छीजे * कह अगस्त्य मुनि प्रभु सुनि लीजे

प्रथम तुम्हारे पितर दिनेशा * जासु प्रताप विदित सबदेशा
तिनकी विनय करहु कर जोरी * होइ विजय आनन्द बहोरी
सुनि प्रभु देन बडाई हेता * बोले रवि दिशि प्रीति समेता

भु० छं० नमो मार्तण्ड प्रचण्ड तमारी ।
नमो कल्मपामै दुखातङ्कहारी ॥
नमो भानु मे पातु प्राच्यादि वासं ।
नमो पातु वेदाङ्गयाम्यार्त नासं ॥
नमो पातु तापेन्द्र देव प्रतीचं ।
नमो मे रवि रक्ष रक्षेंदुदीचं ॥
नमो रक्षिगर्भासि ईशानदेशं ।
नमो संयमा पातु देग्नेसुवेशं ॥
नमो पातु नैर्ऋत्य हीरन्यरेत ।
नमो पातु वायव्य देवार्कमेत ॥
नमो मित्र मूर्धानि संधिष्णुमर्ध ।
नमो चारुण पातु सर्वत्र बर्ध ॥
नमो पातु सर्वाङ्ग सुर्या सतोपं ।
नमो जन्म मृत्युर्जरा व्याधि शोपं ॥
नमो धर्म कामार्थ निर्वाणदाता ।
नमो दोष दारिद्र संतापहाता ॥
नमो विश्वभूताक्ष भूतात्मभूप ।
नमो ज्ञान विज्ञानरूपं अनूपं ॥
नमो लोक नाथादि मध्यान्तमेकं ।
नमो तीव्रतेजार्क नामं अनेकं ॥
नमो मेकचक्र रथ दिव्यगामी ।

नमो कंदकालश कारुण्य स्वामी ॥
नमो निर्मलं निर्विलोकं विरालं ।
नमो भूषितं भूषण रत्नजालं ॥
नमो स्वर्ण संकाशमाकाशबासी ।
नमो सज्जनानन्ददा वेग रासी ॥
नमो सूक्ष्म भाविक्क प्रागल्भमीशं ।
नमो ब्रह्म विद्या विभौ वै बलीशं ॥
नमो त्रैगुण त्वं त्रिमूर्ति त्रिकालं ।
नमो त्वं तुरीयं निरीह निराल ॥
नमो त्वं सुरा सुमृतासेव्य मानं ।
करो सो कृपा ज्यों तजै शत्रुप्रान ॥
यही बीनती दास रघुनाथ की है ।
यथा बालबाणी लिखो जानिही है ॥

श्लोक ॥

सूर्याष्टकं योनुदिनं पठेन्नरो मध्यह्नकाले शुचिनेमयुक्त ।
नश्यन्तिसर्वाणिरुजानितस्य प्राप्नोतिमोदार्थजयाभिरामम

यहिविधिकरि बिनतीजगदीशा * छाड़े शर रिपुदिशि इकतीशा
यक शर नाभि सरामृत शोषा * बीस भुजा काटे करि रोषा
दश शिर काटिदशौ दिशि माहीं * धरि आये रघुनन्दन पाहीं
बिनभुज शिर धावा करि कोपा * कहा राम रण करहुँ अलोपा
तब प्रभु काटि किये युग खण्डा * गिरत भूमि हाल्यो ब्रह्मण्डा
तासु तेज प्रभु बदन समाना * देखि देव नभ हने निशाना
जय धुनि पूरि रही चहुँ ओरा * तिनमधि कोसलराज किशोरा
कुसुमित किंशुक तरुके बीचा * राजत तरुतमाल जनु सींचा

जटा मुकुट सोहत मुनि बीरा * कर कमलन फेरत धनु तीरा
राजिव दृग करि कृपा निहारे * सुर नर मुनि सब भये सुखारे
यह छबि सुखद बसै उर जासू * मोह असुर तब होइ बिनासू
पतिबध सुनि मयआदिक रानी * आई तहँ शिर पीटत पानी
रावणगति लखि देह बिसारी * लागी कहन तासु गुण भारी
जेहि भुजबल जीतेउ सुर सर्वा * तन सुख किहेउ सकलसहगर्वा
सोइ बपु बाहु श्वान शिव खाहीं * राम बिमुख कछु अचरजनाहीं
जासु कर्म फल चाहिय शोका * तदपि कृपाल दीन निज लोका
देखि बिभीषणहू दुख पावा * प्रभु प्रेरित लक्ष्मण समुझावा
अनुज क्रिया कीन्ही जस चाही * द्वितिया दिन आये प्रभु पाही
तबरघुपति लिय बोलिअनन्तहि * कपि ऋक्ष अङ्गद हनुमन्तहि

दो० कह्यो बिभीषण जाइ पुर, राज्य देहु जस रीति।
भले नाथ कहि नाइ शिर, कीन्ह्यो तिलक सप्रीति॥
बाजे बाजन बहु किये, युवतिन मङ्गल गान।
सहित बिभीषणलषणपुनि, आये जहँ भगवान॥

तब प्रभु कह्यो पवनसुत तेरे * जनकसुतहि लावहु ढिग मेरे
सुनि पवनज अङ्गद लङ्केशा * आइ मातु पद नायो शीशा
पूछी कुशल कुशल सब भाषी * पुनि पवनज बोले मनमाषी
मातुतमचरित तोहिं दुख दीन्हा * तेहिते इन्हैं चही बध कीन्हा
कह सीता जनि मारिय ताता * ऋक्ष मनुजकी बरणी बाता
सुनि सुखसहितबिभीषण भावा * षोडश बिधि शृंगार करावा
शिविका सुभग माझ बैठारी * लाये सादर जहाँ खरारी
पावकते प्रकटन के हेता * कहे बचन दुर्वाद समेता
सुनि जानकी बहुरि दुख पाई * लक्ष्मण ते पावक मँगवाई

चिता रचाइ कह्यो तेहि पाहीं * रघुपति तजि गति दूसरि नाहीं
तौ जिल सरिस होउ तुम केशा * अस कहि तामें कियो प्रवेशा
विप्ररूप धरि पावक लाये * प्रभुइ सौंपि अस बचन सुनाये
राम नाम दिशि आसन दयऊ * देखि भालु कपि हरषित भयऊ
लषण राम सिय शोभा रूरी * निरखि सुमन बरषे सुरभूरी
दशरथ सहित राम पहँ आये * लषण सहित प्रभु शीश नवाये
बोले तव प्रसाद रिपु मारे * सुनि बिनती सुरलोक पधारे
तब बिरचि बिनती बहु कीन्ही * प्रभुपद प्रीति मांगि सो लीन्ही
आइ बिनय तब कीन पुरारी * भल कीन्हो प्रभु बध्यो सुरारी
मन वाञ्छित बर मागि सिधाये * तब सुरेश बर बचन सुनाये
नाथ कृपा करि सुर मुनि रक्षे * दास जानि सब के दुख भक्षे
अब मोहिं जौन रजायसु देहू * करहुँ सो सुनि बोले प्रभु येहू
तात देहु कपि भालु जियाई * दिये जियाय अमी बरषाई
तब लङ्कापति बचन उचारा * नाथ करिय कछु अङ्गीकारा
कह प्रभु तोर कोश गृह मोरा * मोर कोश गृह तव न निहोरा
करहु कल्प भरि गजभिरामा * अन्त समय आयो मम धामा
पुनि बोले पट भूषण लाये * कपि भालुन चहिये बरताये
कह प्रभु होई गहरु विशेखी * मम मन है भरतहि कब देखी
ताते लै अकाश महँ जाहू * देहु बरषि मिलिहैं सब काहू
जाइ विभीषण नभ बरषाये * पहिरि पहिरि सबप्रभुपहँआये
नाना जिनिसि देखि कपिभालू * बिहँसि सकलते कह्यो कृपालू
तुम्हरे बल मैं रिपु रण जीता * मे लङ्केश मिलीं ग्वहिं सीता
होई त्रिभुवन सुयश तुम्हारा * पुनि पैहौ परधाम हमारा
अबहिं जाहु निजनिज गृह भाई * सुनि कपिभालु चले हरषाई

दो० सहितजानकी लषणयुत, गुरुथप सब लंकेश।
फणिदिन पुष्पकयान चढि, चले आपने देश॥
लखत लखावत वास निज, आये दण्डक तीर।
मिलिचटजादिकमुनिनकहँ, पुनि गमने रघुवीर॥
सो० चित्रकूटमें आइ, परितोषे मुनि साधु सब।
पुनि तीरथपति पाइ, न्हाइ दान दीन्हो द्विजन॥
भरद्वाज कहँ मिलि सनमाना * शृङ्गबेर पुनि आयउ यानां
मिला गुहा अति प्रीति समेता * पवनज ते कह कृपा निकेता
जाइ अवध भरतहि सुधि देहू * तिनकै रहसि कहेउ ग्वहिंतेहू
सुनि चलिमे कपिकरि परणामा * आइ रहे तेहि निशि तेहिग्रामा
इहा सकल शोचहिं पुरवासी * आवतहैं की नहिं सुखरासी
रघुपति बिरह अनल सब जरहीं * सगुण समुझि शुभधीरजधरहीं
अवधि बीच एकहि दिन जानी * कौसल्यादि मातु अकुलानी
फणिदिन रवि भरणी सहचावा * तिसरे पहर गणिक बुलवावा
पग परि पूछेहु सह अनुरागा * मुनि ज्योतिषी विचारै लागा
कुं० तिथिरुपहर सयुक्तवरि, बारहु तार मिलाय।
देहु सातकर भाग जो, बचै तासु फल गाय॥
बचै तासु फल गाय, एकते तेहि अस्थाना।
द्वैते आवन कहत, तीनि ते मगमें जाना॥
चतुरथपहुँच आइदिग, पञ्चम पुनरावृत्ति बिथि।
षष्ठे व्याधि समेत मुनि, मृतककहैइमि विष्णुतिथि॥
दो० यहि विचार ते जानिये, आये प्रभुपुर पास।
सुनि सब मातन दान बहु, दीन्हे सहित हुलास॥
इति श्रीरावणवधारामायोध्यागमननामैकोनत्रिंशोऽध्याय २९॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ विश्रामसागर ॥

उत्तरकाण्डप्रारम्भः ॥

सुमिरि रामसिय सन्तगुरु, गणप गिरा सुखदानि ।
सार रमायण केर मत, कहौं इतिहासबखानि ॥
रहा एक दिन अवधिकर, भरतसमुझि मनमाहिं ।
लागे शोचन विरह बश, धीरज आवत नाहिं ॥
तेहि अवसर हनुमान तहँ, आये विप्र स्वरूप ।
पटत नाम अवलोकि कै, बोले वचन अनूप ॥
जासु विरह शोचत अहौ, आवत सो समरत्थ ।
लषणजानकी सहितसुनि, प्रमुदित मिले भरत्थ ॥
तात कह्यो सन्देश जस, तस कछु नाहिं जो देहुँ ।
तासे ऋणिया आप कर, हौं मैं उऋण न लेहुँ ॥
देखि भरतकी प्रीति कपि, कही रामते जाय ।
सुनत चले प्रभु याम चढ़ि, पुर दिग पहुँचे आय ॥
भरत शत्रुहन सहित गुरु, पुरजन सचिव समाज ।
लेन सिधाये रघुपतिहि, कहि जननिनते काज ॥
जहँ तहँ सुनि पुर नारिनर, धाये दरशन हेत ।
एक एक ते कहैं तुम, देखे कृपानिकेत ॥
कोटिनचढ़िगिरितरुअटनि, निरखैं व्योम बिमान ।
कोटिन मङ्गल द्रव्य लै, करहिं राम गुणगान ॥
अवध बिराजत यामिनी, जिमिबिरहिनिनिरियचारु ।
पतिआवतसुनिमुदितमन, करि सुतन, शृङ्गारु ॥

कीन सुतन शृङ्गारु, कोटि कटिकिंकिणिजानौ।
मणि विद्रुम मय भवन, अङ्गप्रति भूषण मानौ॥
साजे बसन सुरङ्ग, सङ्गसखि चित्र अनेका।
पग नूपुर पुर शोर, घोर गति बाजत एका॥
चञ्चल अञ्चलपानि, पताका ध्वज फहराहीं।
ग्राम धामके लोग, सकल धाये प्रभु पाहीं॥
ऊंच अटनि पर छत्र, उचकि चितवतमगफूली।
कनक कलश कुच प्रकट, मोद वश कञ्चुकि भूली॥
भूली कञ्चुकि मोद वश, नेत्र झरोखा खरय बध।
यकटक रहै निमेष तजि, नारिरूपभय इमिअवध॥
दो० भरतहि आवत देखि प्रभु, त्याग्यो तुरत बिमानु।
सन्मुख चले सनेह वश, पठै धनद पहँ यानु॥
प्रथममिले गुरुद्विजन पुनि, गहे भरत प्रभु पाय।
बल करि तुरत उठाय हरि, भेंटे हृदय लगाय॥
राम शत्रुहन मिले पुनि, भरत लक्षमण दोउ।
पुरबासी क्षणमें मिले, बाल वृद्ध सब कोउ॥
भरत शत्रुहन सीय पद, परसे पाय अशीश।
पुनि भेंटे सब कपिन कहँ, बिप्रन सहित मुनीश॥
बाजहिं बाजन बिपुल सुर, बरषहि सुमन सराहि।
द्वार द्वार प्रति आरती, करहिं लोग सब चाहि॥
सुनि सुनि धाई मातु सब, ज्यों बच्छाहित धेनु।
प्रथम केकयी भेंटि पुनि, मिले सबन सुखदेनु॥
एकै दिनगे सबन गृह, सब के भोजन कीन।
केहु न जानेहु मर्म यह, कच उतराये लीन॥

प्रातः सप्तमी दिवस मुनि, कह्यो राज्यमद देत।
सुनो रघुनंदन अपिनते, बोले कोमल बैन॥
नाथ द्रव्यमद राज्यमद, विद्यामद बपुलोल।
यौवनमद तह राज्यमद, सब ते यहै विशेखि॥
तेहि प्राप्त कुछ सुख नहीं, केवल निरय निवासु।
पुनि चञ्चल नहिं होत निजु, तातें च० न दासु॥
१० नरतन कर फल एक, कहतवेद बुध आपु सम।
परिहरि काम अनेक, भजै सदा जगदीश कहँ॥
सुनि बोले अपिनाथ, तुम बिन अस को कहै प्रभु।
सो माया तव हाथ, काल कर्म गुण जासु बश॥
जो सुमिरत तव नाम, ते छूटत अभिमान ते।
प्रभु परिपूरण काम, तेहिक होइ श्रीराज्यमद॥
तेहि ते लेहु राज्य पद गाता * पूजै हम सब की अभिलाषा
भले भाँति पट भूषण साजे * घरघर मोद बधाये बाजे
मंडल दण्ड धनक प्रकारा * लै लै आये अनुग अपारा
योजन एक कनक की छानी * तामधि चन्द्रवदिका तानी
ताके तीन मंडल एक रम्या * मणिमय चहुँदिशि द्वारस्तम्भा
जोनित अति सुरतरु तहँ आसन * तेहि गृह मध्य रतनसिंहासन
तेहि पर कमल अष्टदल केरा * धरे विविध भाजन चहुँ फेरा
पुरुषशिष्ट शुभ सम्मत चाहा * तेहि ऊपर बैठने हित काहा
कुं० विप्रन शीघ्र बचायके, सिंहासन श्रीराम।
बैठे श्रीसीतासहित, मानौ रतियुत काम॥
मानौ रतियुत काम, किधौं श्रीयुत भगवाना।
किधौं तडितयुत मेघ, किधौं विद्यायुत ज्ञाना॥

किधौं सिद्धियुत बृहद्रवि, कल्पलता प्रट क्षिप्र ।
छविशृंगारुध्रमकीर्तिलखि, वेद उचरैं विप्र ॥
शशिसम छत्रसुकण्ठकर, चंवर विभीषण हाथ ।
लषण लिहे आदर्शवर, अङ्गद पावन पाथ ॥
अङ्गद पावन पाथ, पान रिपुदलन पवावै ।
व्रिञ्जन करत निषाद, भरत सब काढ़िगलावै ॥
जामवन्त हनुमन्त कर, छुरी छुर्वाला शक्ति असि ।
बचन सुधा रसतरनितन, चन्दनशिरचन्द्रिकाशसि ॥
नाच नटी गनगम जटी, लटी न छूटी अनूप ।
ठटनि ठटी नहिं कछु घटी, मन निपटी पटरूप ॥
मन निपटी पटरूप, टाहिविघटहि गति ऊपर ।
झटकि सुकर कटिमटकि, लटकिपटकहि पगनूपुर ॥
नूपुरपटकहिलटकि छवि, लखि मटकै बुधिवाक ।
तान कटी सुनि चटपटी, लहै मनुज मुनिनाक ॥
जान्यो जब अविशेष की, आई घटिका शिष्ठ ।
प्रथमैं श्रीरघुनाथ शिर, कीन्हों तिलक बशिष्ठ ॥
कीन्हों तिलक बशिष्ठ, अपर सब तिनके पाछे ।
करहि आरती मातु, निछावरि पटअलिआछे ॥
विप्रन दीन्हों दान, सोई ज्यहि जो मनआन्यो ।
नृपन धरी बहु भेंट, बन्दिव्रिभुवनपतिजान्यो ॥
तब विरंचि कर जोरिकै, बोले सम्मुख बैन ।
जय रघुनाथ अनाथपति, प्रणतपाल सुख-ऐन ॥
प्रणतपाल सुख ऐन, मैन छवि कोटि बिराजै ।
धन्य भाग्य बड तासु, लखा जिन याहिसमाजै ॥

लखा समाजै आजु मोहिं, दान देहु निजभक्ति अब ।
सुनि तथास्तु बैठे पुर., आये मुदित महेश तब ॥
वन्देहं त्वत्पद प्रभो, संश्रिताब्धि दृढ़ पोत ।
परिभवाब्धि ध्येयं सदा, तीर्थास्पद सुख सोत ॥
तीर्थास्पद सुखसोत, नुतंकमलज हरि ईसं ।
प्रणतपाल आभीष्ट, द्रोह भृत्यारत खीसं ॥
खीसंकृत अघ ओघ, सव्य श्री मुनिमानन्दे ।
गुणागार मे पातु, शरणिश्य हं वन्दे ॥
विप्ररूप धरि वेद तब, बोले गिरा अनूप ।
जय जगदीशअजीशपति, निर्गुण सगुण स्वरूप ॥
निर्गुण सगुण स्वरूप, भूपभव पार उतारण ।
जे नर तजि तव भक्ति, यचत जग सुखके कारण ॥
सुर दुर्लभ तनु पाइ ते, पतत नरक महँ क्षिप्र ।
चरणकमलर.तेदेहुसुनि, सबहिंन जाने विप्र ॥
बोले विश्वामित्र तब, जय जनयनमनहस ।
रघुकुलकुमुद चकोरशशि, शिवधनु कृत विध्वंस ॥
शिवधनु कृत विध्वंस, वंशयुत असुर निकन्दन ।
जय सुर नर मुनि पाल, काल सब दशरथनन्दन ॥
दशरथनन्दन भक्ति देहुं, निज मोहिं अडोले ।
तब तहँ बाल स्वरूप, आइ सनकादिक बोले ॥
जय भगवन्त अनन्तअज, अनघ अनामय एक ।
करुणासिंधु सर्वज्ञ शिव, सुखप्रद नाम अनेक ॥
सुखप्रद नाम अनेक, करम तव पावन्कारी ।
काम क्रोध मद मोह, लोभगज सिक्खखरारी ॥

जगदधितारन पोतदृढ़, कहतसुनत हरिलेतभय।
बसहु सदा मम उरअयन, सीता लषण समेत जय॥
कह बशिष्ठ करजोरि तब, जय प्रभु रूप तुमार।
बचन अगोचर बुद्धिपर, जाने कहा गंवार॥
जाने कहा गंवार, परशुधर सके न जानी।
प्रगट विष्णु अवतार, बेग निजकीन्हिनिहानी॥
शिवअरधंगिनि दक्षजा, भ्रमबश बहु संकट सहा।
खगपतिकाकभुशुण्डिसे, भूले तौ जड नर कहा॥
दो० आपु जनावहु जाहि सो, बिनश्रम लेह पिछानि।
ममउरकरहुनिवासनित, यहि समाज सुखदानि॥
कुं० यहि बिधिसुरनरनागनृप, सबहिंन बिनती कीनि।
तबरघुपतिसबकपिनकहँ, निज परसादी दीनि॥
निज परसादी दीनि, मुकुट लङ्कापति पावा।
कुण्डल लहे सुकण्ठ, माल हनुमत गर नावा॥
पीताम्बर युवराज कहँ, दीन्हो जामा ऋक्षपहि।
औरौ गहन मँगाइ बपु, बच्यो न कोई भांति यहि॥
सबविधिसबहिप्रसन्नकरि, बोले मुनिते राम।
बिपति माझ ये सखा सब, आये मेरे काम॥
आये मेरे काम, नाम जिन केर बतायो।
तिन जो कीन पुरुषार्थ, तासु मह प्रीति सुनायो॥
भरतहुतेमोहिंअधिकप्रिय, देहुकहाअसकवननिधि।
लषणचरितकाकहउँजिन, सेवाकीन्ही सकलबिधि॥
सो० सुनत सभा हरषानि, जयकहि सुर बरषे सुमन।
शरण सुखद प्रभु बानि, पहिरे पट भूषण बहुरि॥

छं० पुरबासी नरनारि जे कहैं कि आज विशेखि ।
नयन सफल करि लीजिये रघुपति छवि देखि ॥
नीलनलदमनि सरिस वपु दिनकरमणि समतेज ।
कोटि मनोभव ते रुचिर राजत मणि मेज ॥
रतनजटित मणिमुकुट शिर जगमगत अपार ।
श्रुतिकुण्डल निज केतुके दीन्हें जनु मार ॥
भृकुटी ललित ललाटमें दिहे तिलक सुभास ।
जनु लाये अलि रवि करिनि हित कमल प्रकास ॥
चञ्चल चारु विशाल दृग मधिप्राण सुहाव ।
मानहुँ विधि खञ्जन लरैं सुखकर तव राव ॥
श्याम सुकेश प्रसून घर जनु मणियुत नाग ।
उतरे मुख शशि अमीहित लखि रिपु डर लाग ॥
विम्बादाड़िम दशन मधिरसन सुरङ्ग ।
कमलकोश में कुलिश जनु वसे दामिनि सङ्ग ॥
मन्दहास बोलत मधुर खाये मुख पान ।
धर कृपादृष्टि की वृष्टिसों करै अमी समान ॥
कम्बुकण्ठ कौस्तुभ लसै मुक्तन की माल ।
पयद मध्य सोहीं मनो बगपांति विशाल ॥
भुज आजानुबर जनु वही युग यमुनाधार ।
धनुशर तट भूषण भँवर करकञ्ज उदार ॥
असित शयल उपवीत उर ओढ़े उपवीत ।
लसत क्षीर सरिता मनोत्वपला लखि मीत ॥
नाभि शिरस त्रिवली सुपथ रोमावलिसे बाल ।
कटिकेहरि हरि किंकिणी जनु सुरवर मराल ॥

कदलिजङ्घ युग फबर नूपुर अनमोल।
पुरट पदुमके कलिन में जनु अलिगन बोल॥
अरुण चरण चिर चिह्न युत युगपदजनखाभ।
श्याम रक्त हरिदलनि जनु बैठे जलदाभ॥
बिधि हरि हर ध्यावत जिन्हैं मुनिगण तजिसाथ।
तिन पायनमें प्रीति दृढ़ चाहै जन रघुनाथ॥

दो० यहिविधिनखशिखरूपलखि, मुदित होयँ सबकोइ।
एक एकते आइ गृह, बोली बूझेउ सोइ॥

हे सखि आजु रामछबि देखी * नयनन मम परिहरी निमेखी
तहँ पुनि बसत अङ्ग प्रभुकेरे * अद्भुत रचना हेरी नेरे
युगल कञ्ज दश दल तिन माहीं * बसत मराल उडत ते नाहीं
पिक बक कीर लाल मिलिडोलैं * बैठे घेरि चहु दिशि बोलैं
तिन के मध्य मयन रथकेरे * चक्र बिराजत मणिमय हेरे
कमलनाल रति गललीहासा * रम्भातरु तेहि ऊपर बासा
तेहि पर गज करिपर मृगराई * दिव्य बसन ते दीन उढाई
हरिपर सर मधि भँवर बिराजैं * बिबिध बरण के पक्षी राजैं
सरपर कनक केर गिरि दोई * तिनपर रहा नील घन सोई
तेहि पर सुमन पञ्च रग फूले * तामधि बैठि परेवा भूलें
तेहिपर कुसुम कुसुमपर अलिसुन * तेहिपर युग बिम्बाफल अद्भुत
तेहिपर शुक अतिशै लागतभल * लीन्हें पल्लव चोंच सहित फल
शुकतरपिक ऊपर बिबिखञ्जन * खञ्जन पर घन पर शशि रञ्जन
इत उत दिनमणि उदित सुहाये * मानहुँ शशिसहाय हितआये
शशि ऊपर बहु नखत सुहावन * इन्दुम इन्दुलसत मन भावन
तेहि पर गिरि गिरिपर बन सोहै * तेहि बिच लाल पन्थ मन मोहै

तेहि पर मणिधर नागिनि देखी * तेहि अघ दीरघ सरिता पेखी
तेहि ते बही सरित युग जोई * जलचरविपुलविविध विधि सोई
फूले कमल मिथुन इक सङ्गा * क्रीडत विहँग जानि बहु रङ्गा
सुनत सखी सो देखन धाई * मुदित भूप के मन्दिर आई
दम्पति रूप देखि हरषानी * आई भवन तोरि तृण पानी
दो० यहिविधि सायंकाल भो, रहे दीप पुर पूरि।
मनहुँ शेष आये मिलन, किधौं धरणि सुत भूरि॥
तब मुनि मुदित रजायसु दीन्हा * सन्ध्या वन्दन सबहिन कीन्हा
राजसभा पुनि बैठे आई * हरषि पहरभरि रैन बिताई
सेवक आइ कही तब बाता * चलहु भवन प्रभु बोलत माता
उठे तुरत पुरजन शिरनाई * गे निज भवन रजायसु पाई
आये रघुपति जहँ महतारी * अनुज सिया युत कीन बियारी
आचवन करि पुनि बीरा खाई * हनुमदादिजन लिहिनि प्रसादी
बोला सुख चलि सोवहु श्यामा * आये तब प्रभु कञ्चन धामा
देखि सखिन हँसि पाँय पखारे * मणिमय अठसिल्या बैठारे
खाज, सुगन्ध, मेवा पकवाना * धरे कनक भाजन भरि नाना
सुर नर नाग मुता अनुरागी * नृत्यगान मिलि करने लागी
देखत ही गे सोइ कृपाला * लखि प्रभात बोला तब साला
उठहु नाथ जगनाथ हमारे * विधि हरि हर मुनि ठाढे द्वारे
मिलि सबहिन कहँ दरशनदीजे * याचक सकल अयाचक कीजे
विहँग बचन सुनि उठे खरारी * देखि सखिन आरती उतारी
प्रीति सहित दातुनि कराई * मिले सबन पुनि द्वारे आई
विप्रन दान देइ बहु रङ्गा * सेवक सखा अनुज लै सङ्गा
जाइ कीन सरयू अस्नाना * देखि लोग सुख लहैं निदाना

पूजन करि पुनि मन्दिर आये * मुदित मातु तब अशन कराये
कछुक बार करि शयन कृपाला * पुनि सर्वामलि आये नृप शाला
राम राज्य बैठे जब तेरे * त्रिभुवन दुख मिटे सबकेरे
कामधेनु भइ भूमि सुहाई * मांगे मेघ देइ जल आई
चारिहु वर्ण धर्म निज चरहीं * कोउ काहू ते बैर न करहीं
बाल वृद्ध यौवन नर नारी * सबकै प्रभुपद प्रीति अपारी
रघुपति चरित सुनै नित कहई * परमानन्द मगन सब रहई
अजहू जे हरिपद मन लावैं * राम राज्य कर सुख ते पावैं
रघुपति चरित सुनैं जे कहहीं * निश्चय ते अव्ययपद लहहीं

दो० रामचरित्र विचित्र अति, कहि कोइ लहै कि पार।
सुखप्रदनिजमतिसरिस में, तुम्हैं सुनाये सार॥
सुनि हरषे श्रोता सकल, धन्य भाग्य निज जानि।
कहत दास रघुनाथ अब, सहित जोरि युग पानि॥
हे प्रभु सीतानाथ तुम, जस फुरमायो मोहि।
तस मैं भाष्यों ग्रन्थ यह, सो अर्पत हौं तोहि॥
श्री गुरु देवादास के, चरणकमल धरि माथ।
रामचरित सुखप्रद कछुक, बरणे जन रघुनाथ॥

तो० छं०॥ श्रीरामचरण प्रताप। कछु कीन किरपा आप॥
तेहिनाथचरितसिखालि।अबकहतगुरुपरनालि॥

कबित्त ॥ श्रीरामानुज संप्रदाय द्वारा अग्रदासजूके, तहां के महन्त भे गोबिन्दराम जानिये। तिनहीं केशिष्य सन्तदास तस्य कृपाराम, कृपारामजू के रामचरण पिछानिये॥ रामचरणजूके रामजन तस्य कान्हरभे, कान्हरके शिष्य हरिरामको बखानिये। हरीरामजूके देवादास

राम नाम भाल, देवादामजके रघुनाथ मोहि जानिये ॥
दो० इष्ट हमारो राम सिय, राम नाम प्रियभाल ।
राम रकार, मकार है, बिन्दु जानकी लाल ॥
पावन को पावन करन, शिव को धनु मुनिपर्ण ।
शुचि सन्तन के प्राण हैं, रामनाम दोउ वर्ण ॥
विविधग्रन्थबहुविधिसुमन, मम मति माखीजानि ।
विश्रामोदधि ग्रन्थ मधु, कीन इकट्ठे आनि ॥
स्वच्छ मधुर आरोग्य शुचि, आवत सबके काम ।
यत्न किहे सहजे मिलै, नाहिंत महँगे दाम ॥
कथा रसिक जे सन्तजिमि, गुणग्राही रस चोर ।
ते आदरि हैं ग्रन्थ यह, देखि परिश्रम मोर ॥
लहिहैं सुख सम्पतिविविध, जहँ मिटि तिहुँ ताप ।
चारों युगमें प्रबल है, रघुपति भक्ति प्रताप ॥
छं० अतिप्रबलभक्ति प्रताप सब पर इश जाहि निजवशकरे ।
कलिकालहू हरिभजन कारि बहुजीव भवसागरतरे ॥
सबत शम्भु बिराग मुनि जप योग तप प्रेमीजने ।
शठ कोपजा मुनि वाजे शुचि नवनन्द गोपादिकघने ॥
अहिनाथ सुरतरु तरणि नीचादिव्यतम भ्रम हरिहू
सम मेव मध्वाचार्य स्वामी विष्णु बोहित तारेहू ।

गुरुनिष्ठ लालाचार्य्य रामानन्द श्री रँग रंगियो ।
पयपान कृत कीलाग्र शंकर नाम सुर पारस वियो ॥
जयदेव श्रीधर बिन्द मङ्गल ज्ञानदेव त्रिलोचनं ।
भय जासु सेवक आइ श्रीपति प्रेमवश दुख मोचनं ॥
पृथु रूप बल्लभभूपजन जेहि राम सिय बृधिमें लखे ।
बिबिसूर कूबा गदाधर हर प्रेमनिधि मङ्गल सखे ॥
गति गूढ़हरिअनुकरणराजहिपाणि पुरिखातम दियो ।
प्रिय लालिकर्माकेरिखीचरिवालि निज मन्दिरलियो ॥
सिय टूकभजिनिज सुतन बिप दै प्रभुह पियवाईभई ।
हरि हंस मामा भानजे सदवृत्ति को कसनी लई ॥
भइ भुवनकी असिसारिकी सितकेश देवाहितकरे ।
दियो दाह कामध्वज कलेवर आइ जे मल दिशिलरे ॥
घरदीन महिषी गोपकी द्विज हेतु चलि साखीभरी ।
शिरनयो गणिका काज शक्तीदास लगिनिज उरधरी ॥
सुख पाव सुन्दरि रामकहि रैदास हरिहि बुलायहू ।
बहुबार राम कबीरहित धनु टीन बरदी लायहू ॥
बिन बीज जामेहुधनाको शशि सैनहित छुर हरिगही ।
रघुनाथ माधवदास जनको शौच करवायो सही ॥
हरि व्यास देविहि टीनि दिक्षा नरहरी समधी लई ।

त्रिपुरारि तत्त्वाजीव नित्यानन्द नाभा अनभई ॥
भूगर्भदेव मुरारि गज गोविन्द गिरिवरको सखा ।
गोपालरूप सनातना तद दीने नग लीन्हे लखा ॥
विठलेश लाला भक्त नरसी खलन बहु परचै दिये ।
परमार्थ के रस रूप पीपा पतित बहु पावन किये ॥
कोतल्ल केशव भट्ट मीरा लीन गिरिधर मे भई ।
रतनावती करमैति भक्ति गणेश दै दृढ़करि गई ॥
चतुरोग तुलसीदास पावन रामयश जिन उर धरेउ ।
कवि कृष्ण लपण प्रयाग जूड़े युगल हरिजन आदरेउ ॥
भे औरहू बहु सन्त अब जे अहु आगे होइहैं ।
रघुनाथ तिनके चरित सब कहिसकै नहिं असकोइहैं ॥
जिमिक्षीरसिन्धुअपार खग निज चोंचसमभरिपावहीं ।
तेहिभातिकविनिजमतिसरिसहरिसन्तजनगुणगावहीं॥

कुं० अहोसन्त भगवन्त गुरु, विनय करहु मम कान ।
चहौं न महिसुख देवसुख, बिधिसुख पुनि निरबान ॥
बिधि सुख पुनि निरबान, ऋद्धिसिधि सकल धरीजै ।
जहँ राखो प्रभु मोहिं, तहा निज पद रति दीजै ॥
दीजै पुनि सतसङ्ग जहँ, तव गुण सुन वाको लहौं ।
भक्तिविमुखकरयङ्गनमनि, दिखरायो सुखप्रद अहौं॥

अयन तीसरे सख्या गाई * युग सहस्र नवसै हैं भाई
और सतत्तर जानो जोई * इतनी हैं चौपाई सोई
दोहा साठि पञ्चशत जानो * नव्वे सोरठ सोइ पिछानो
हैं छप्पै बावन यहि माहीं * गितिका छन्द उन्तालिस आहीं
चौबोला युग यामें होई * मञ्जु छन्द यक सुन्दर सोई
छदैं हैं मुनि कहा सुहाई * कुण्डलिया म्वहिं बीस लखाई
तोटक यक यक दण्डक जानो * कमल एक यक तोमर मानो
रोला बेद बेद अश्लोका * रुद्र त्रिभङ्गी छन्द बिलोका
एक मालिका यामें भाई * सख्या अयन कहा मैं गाई

सो० महिखर छन्द जो एक, युगनराच छन्दैं अहैं।
भुजँग प्रयाता एक, एक कबित्त यामें बिशद ॥

दो० जो कछु देख्यो चूक मम, क्षम्यो जानि अज्ञान।
पराधीन जग जीव सब, ज्ञानी इक भगवान ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीमज्जगज्जननि-
जनकजानकीरामस्यानुगानुगोहथीरघुनाथदासराम-
सनेहीनिर्मितविश्रामसागरग्रन्थ समाप्त ॥

(१)				(२)			
कमल	कुन्द	निवारी	दुपहरिया	गुलाब	निवारी	कदम्ब	दुपहरिया
महादेव	यमराज	हनुमान्	इन्द्र	हरि	हनुमान्	सूर्य	इन्द्र
हंस	गरुड़	पपीहा	गीध	सुवा	पपीहा	हरिल	गिद्ध
बेला	केवड़ा	गुल्दावदी	पियावासा	बेला	मोतिया	गुलाचीन	गुल्दावदी
राम	गणेश	शनैश्चर	भैरव	राम	कृष्ण	शत्रुहन	शनैश्चर
भैना	कोयल	खूसट	बया	भैना	बाज	मुरैला	खूसट
कलगी	सुदर्शन	गुल्मेहँदी	नरगिस	चमेली	जूही	अनार	गुलाबास
भरत	पवन	जल	शारदा	ब्रह्मा	पावक	नरसिंह	बृहस्पति
टिटीरी	भरदूल	खड़रैचा	चहूल	काग	चकोर	तीतर	शार्दूल
कँदयल	मरुवा	गुलफिरग	सेवती	कनयर	मरुवा	नरगिस	गुलफिरग
अन्न	शुक	अश्विनीकुमार	स्वामिकार्तिक	अन्न	शुक	शारदा	अश्विनीकुमार
गरगवा	कटनाश	तूती	सारस	गरगवा	कटनाश	चहूल	तूती

(८)

गेदा	केवडा	कदम्ब	दुपहरिया
लक्ष्मी	गणेश	सूर्य	इन्द्र
बकुला	कोयल	हारिल	गिद्ध
गुलाला	मोतिया	पियावासा	नरगिस
गुरुजन	कृष्ण	भैरव	शारदा
कठफोर	बाज	बया	चण्डूल
कलगा	चम्पा	केतकी	सेवती
भरत	बुध	मुनि	स्वामिका०
टिटीरी	बुलबुल	बटेर	सारस
कनैर	अनार	गुलाबास	गुलफिरंग
अन्न	नरसिंह	बृहस्पति	अश्विनीकु.
गरगवा	तीतर	शार्दूल	तूती

(४)

चादनी	कुन्द	गुलाल	मोतिया
सीता	यमराज	गुरुजन	कृष्ण
लाल	गरुड	कठफोरा	बाज
चमेली	निवारी	कलगा	गुलमेहँदी
ब्रह्मा	हनुमान्	भरत	जल
काग	पपीहा	टिटीरी	खञ्जरैचा
गुञ्जहल	जूही	केतकी	सेवती
देवी	पावक	मुनि	स्वामिका०
महरि	चकोर	बटेर	सारस
कनैर	मरुवा	गुलाबास	गुलफिरंग
अन्न	शुक्र	बृहस्पति	अश्विनीकु.
गरगवा	कटनाश	शार्दूल	तूती

हरिसिंह	सुदर्शन	गुलाचीन	गुल्दावदी	अंगुली रखकर इस प्रश्न को निकालते हैं					
चन्द्रमा	पवन	शत्रुहन	शनैश्चर						
कबूतर	भरदूल	मुरैला	खूसट						
गुञ्जल	गुलमेहँदी	पियाबासा	नरगिस	१	२	१३	८	२६	२४
दवीजी	जल	भैरव	शारदा						
महरि	सइरचा	बया	चण्डूल	३१	२३	२८	११	७	०
जूही	चम्पा	केतकी	सेवती	१७	१४	२०	२७	१६	०
पावक	बुध	सुस्वर	स्वामिका०						
चकोर	बुलबुल	बटेर	सारस	६	१८	४	२२	५	०
मरुवा	अनार	गुलाबास	गुलफिरंग	३	२९	१६	६	३०	०
शुक्र	नरसिंह	बृहस्पति	अश्विनीकु०						
कटनाश	तीतर	शार्दूल	तूती	१५	१०	१२	२५	२१	॥

दो० बन्दिगणाधिप शारदा, रामसिया गुरु विष्णु ॥
हरिप्रेरित रघुनाथजन, बरणत मानस प्रष्णु १
कह महेश प्रभुपद कमल, भजकुरि भेष मराल ॥
ह्वै है मङ्गल लाभ बहु, मिटिहैं सबदुख हाल २
जैसा रङ्ग गुलाब का, तैसा यह संसार ॥
कह हरि मति भूलै सुवा, यामें दुःख अपार ३
पढ़ि मैना बँदि में पर्‍यो, अबते सुमिरहु नाम ॥
जब वह बेला आइहै, तबही सरिहै काम ४
कह सिय पिय गुनलालसे, सुयश चाँदनीछाय ॥
मिलत मोद गावत सुनत, गनत विपति सब जाय ५
कुन्द सरिस तन आउबटि, लक्ष्मण भल कुल नीक ॥
कहत धर्मकरि गरुडपति, भजे होइ सब ठीक ६
काक भक्षको त्यागिकै, लीन चमेली बास ॥
कह बिधि अस सतसंगहै, करु पूजी सब आस ७
सुमिरि नाम चातक सरिस, मन का मैल निवारि ॥
करतल तेरे चारि फल, कह हनुमान पुकारि ८
जिनकरि तूं सुख चहत है, तिन ते होई दुक्ख ॥
बक गेंदा सम कुटिल अति, श्रीपति सनमुख सुक्ख ९
बुद्धिमान गणपति सरिस, बोलत कोकिल बैन ॥

भजहु हरिहि है केवडा, तुम सबको सुख ऐन १०
मित्र मिली होरिल मिली, सम्पति मिली कदम्ब ॥
भूलेहु जनि रघुनाथको, मतिहि दुखायो अम्ब ११
क्रीन त्रिया जिमि गीधकी, तज्यो इन्द्र सुत जानि ॥
तासुचरण दुपहर सरिस, भजु तू सुखकी खानि १२
सेवहु गुरुजन प्रीति करि, फूली मुद गुलाल ॥
कठफोरवा सम रिपु मिटी, मिली सुहृद सुतबाल १३
भरतरहनि धरु हृदय महँ, तनु टोदी लुत मूल ॥
कलगाभक्ति श्रद्धाहये, निशिदिन मङ्गलमूल १४
गई ताहि अब झखै मति, रहीते भजु नँदलाल ॥
कालवाजिशिर सूझितहिं, पस्यो मोतिया जाल १५
कर्म कृषी भलि कीजिये, ज्यहि उपजे सुख अन्न ॥
चुगहि गरगवा जीव तब, होइ न कँदर्यल मन्न १६
सोम परेवा का लखै, करु तू हरि श्रृङ्गार ॥
देखु नयन भरि सुखद छबि, यहि अवसर यहिवार १७
भरुही के अण्डा बचे, बच्यो पवनसुत जानि ॥
तिमिते बचि सुख भोगिहैं, सुमिरु सुदर्शन पानि १८
गुलाचीन करहार करि, रिपुहन्तहिं पहिराउ ॥
पैहैं विजय विनाद यश, मोर तोर मतिगाउ १९

वसै शनिश्चर पाय तेहि, फिरै दावदी जैस ॥
विन हरि सुमिरे सुख नहीं, खोउ न खूसट बैस २०
गुड़हलसमतनहरिभगति, देवी शीश चढ़ाउ ॥
होइ सिद्धि कल्याण जेहि, महरि सुवन यश गाउ २१
दुख सुख आवत समय पर, ज्यों खञ्जन ऋतु पाइ ॥
आनद जल बर्षत उठी, गुलमेहँदी हरियाइ २२
जूही अपने मित्रहित, पावक खात चकोर ॥
जो हरि सुमिरै प्रीतिते, क्यों न होइ फल तोर २३
नारि खहेरियासरिस है, छूमति मन कटनाश ॥
मरवा पकरि झुलाइ है, कबि कौडी की आश २४
ज्यों मधुकर चम्पहि तजै, त्यों तू तज यह काज ॥
नुलनुल से लड़िजाइहौ, कह बुध फिरि बनराज २५
बिन बर्षा घन समुझि घर, दीन्हे बयन बिसारि ॥
पियाबास तब तिमितजा, भैरव आश निवारि २६
तीतर त्यागे प्राणनिज, गा अनार तरु सूखि ॥
नरसिंहको करु यादि अब, तू मति काहुइ दूखि २७
सुमिरि शारदाके चरण, चढै न क्यों चण्डूल ॥
नरगिसकरि क्या करहिंगे, जो ईश्वर अनुकूल २८
रहिये रहनि बटेर की, चहिये सुयश गजारि ॥

लहै केतकी वास किमि, मुनिवर कहत विचारि २९
सारस बदको याद करु, है सो मङ्गल खानि ॥
स्वामिकार्त्तिक रटत जेहि, शम्भु सेवती मानि ३०
गुलाबासकी आश तजि, शारदूलको ध्याव ॥
होई सुख परदेश में, कहत बृहस्पति जाव ३१
गुल फिरङ्ग फूली विपिन, भई कृपण के दर्बि ॥
कह रविसुतहरि विनवृथा, तूती बोलै अर्बि ३२
श्रीगुरु देवादास के, चरणकमल धरि माथ ॥
बरणो मानस प्रश्न यह, पूरण जन रघुनाथ ३३
देवसुमन अरु खगनके, नाम जानि यकतीश ॥
पञ्चधाम कोठा असी, अङ्क पांच तिन शशि ३४
सकल सुनावै नाम जो, धाम मध्य ठहराइ ॥
अङ्क जोरि दोहा समुझि, सगुनहिं देउ बताइ ३५

इति ॥